Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७१०
दा१च्म

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६१०
दा१८म

४६,६१६

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार
वर्ग संख्या 690 दा१८म आगत सख्या 86,694
पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अकित है।
तिथि सहित २० वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकाल
वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा १० पैसे के व
से विलम्ब-दण्ड लगेगा।
25 MAY 1987
21 DEC 1988
26 SEP 1989
17 OCT 1995
A-1389/34

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

६१०
दा १८म

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपया पुस्तक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६,६२६

COMPILED

धर्मदत्त वैद्य
कमला फार्मेसी Kamla Pharmacy.
कमलाल यू० पी० Kankhal U.P.

47716
710
दा 18म

६९०

CHECKED 1973
Initial .....

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

291.13,T48SV.2
47716

अंक ५७ ॐ [द्रोण

॥ १ ॥

॥ २ ॥

महाभारत।

॥ ३ ॥

॥

(भाषा-भाष्य-समेत)

संपादक — श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

तैय्यार हैं।

(१) आदिपर्व । पृष्ठ संख्या ११२५. मूल्य म. आ. से ६) रु.

(२) सभापर्व । पृष्ठ संख्या ३५६. मूल्य म. आ. से २) रु.

(३) वनपर्व । पृष्ठ संख्या १५३८ मूल्य म. आ. से ८) रु.

[४] विराटपर्व । पृष्ठ संख्या ३०६ मूल्य. म. आ. से १॥)

[५] उद्योगपर्व । पृष्ठ संख्या ९५३ मूल्य. म. आ. से. ५) रु.

[६] भीष्मपर्व । पृष्ठ संख्या ८०० मूल्य म० आ० से ४) रु.

[५]महाभारत की समालोचना

१ प्रथम भाग मू.॥)वी. पी. से॥।=)आने।२द्वितीय भाग। मू.॥)वी.

महाभारतके ग्राहकोंके लिये १२०० पृ[illegible] ६) रु.

[illegible] पीडित करन

[illegible] वंही [illegible]

[illegible]ख्य मुख्य योद्धाओंको

चित्रपुंखयुक्त बाणोंसे काटते हुए रण-

[illegible]गाचार्यने क्रुद्ध होकर

शिलापर घिसाहुए स्वर्णपुङ्खवाले पन्द्रह

बाण बृहत्क्षत्रकी ओर चलाये॥ बृहत्-

क्षत्रने हर्षित होकर द्रोणाचार्यके धनुषसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
291.13,T48SV.2
47716

सञ्जय उवाच— अपराह्णे महाराज संग्रामः सुमहानभूत् ।
पर्जन्यसमनिर्घोषः पुनर्द्रोणस्य सोमकैः ॥ १ ॥
शोणाश्वं रथमास्थाय नरवीरः समाहितः ।
समरेऽभ्यद्रवत्पाण्डूञ्जवमास्थाय मध्यमम् ॥ २ ॥
तव प्रियहिते युक्तो महेष्वासो महाबलः ।
चित्रपुङ्खैः शितैर्बाणैः कलशोत्तमसम्भवः ॥ ३ ॥
वरान्वरान्हि योधानां विचिन्वन्निव भारत ।
आक्रीडत रणे राजन्भारद्वाजः प्रतापवान् ॥ ४ ॥
तमभ्ययाद् बृहत्क्षत्रः केकयानां महारथः ।
भ्रातॄणां नृप पञ्चानां श्रेष्ठः समरकर्कशः ॥ ५ ॥
विमुञ्चन्निशिताँस्तीक्ष्णानाचार्यं भृशमार्दयत् ।
महामेघो यथा वर्षं विमुञ्चन्गन्धमादने ॥ ६ ॥
तस्य द्रोणो महाराज स्वर्णपुङ्खाञ्शिलाशितान् ।
प्रेषयामास संक्रुद्धः सायकान्दश पञ्च च ॥ ७ ॥
तांस्तु द्रोणविनिर्मुक्तान्क्रुद्धाशीविषसन्निभान् ।
एकैकं पञ्चभिर्बाणैर्युधि चिच्छेद हृष्टवत् ॥ ८ ॥

द्रोणपर्वमें एकसौ पच्चीस अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! अपराह्ण समयमें बादलके गर्जन समान शब्दसे युक्त फिर सोमकोंके सङ्ग द्रोणाचार्यका महाघोर संग्राम होने लगा ॥ महाधनुर्द्धारी महाबलवान् अत्यन्त प्रतापी द्रोणाचार्यने तुम्हारे प्रिय और हितके कार्यमें रत होके सावधानीके सहित लालवर्ण वाले घोडोंसे युक्त अपने रथ पर चढके मध्यम वेगके सहित पाण्डवोंको आक्रमण किया । वह पाण्डवोंकी सेनाके बीचसे मुख्य मुख्य योद्धाओंको चित्रपुंखयुक्त बाणोंसे काटते हुए रणभूमिमें क्रीडा करने लगे ॥ (१-४)

केकय राज पाचों भाइयोंके बीच युद्धमें पराक्रमी बडे भाई बृहत्क्षत्रने द्रोणाचार्यके समीप युद्ध करनेके वास्ते गमन किया ॥ जैसे गन्धमादनपर्वत पर बादल जलकी वर्षा करते हैं, उस ही प्रकारसे वह अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करके द्रोणाचार्यको पीडित करने लगे ॥ (५—६)

महाराज ! द्रोणाचार्यने क्रुद्ध होकर शिलापर घिसे हुए स्वर्णपुङ्खवाले पन्द्रह बाण बृहत्क्षत्रकी ओर चलाये ॥ बृहत्क्षत्रने हर्षित होकर द्रोणाचार्यके धनुषसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदस्य लाघवं दृष्ट्वा प्रहस्य द्विजपुङ्गवः।
प्रेषयामास विंशिखानष्टौ सन्नतपर्वणः ॥ ९ ॥
तान्दृष्ट्वा पततस्तूर्णं द्रोणचापच्युताञ्शरान्।
अवारयच्छरैरेव तावद्भिर्निशितैर्मृधे ॥ १० ॥
ततोऽभवन्महाराज तव सैन्यस्य विस्मयः।
बृहत्क्षत्रेण तत्कर्म कृतं दृष्ट्वा सुदुष्करम् ॥ ११ ॥
ततो द्रोणो महाराज बृहत्क्षत्रं विशेषयन्।
प्रादुश्चक्रे रणे दिव्यं ब्राह्ममस्त्रं सुदुर्जयम् ॥ १२ ॥
कैकेयोऽस्त्रं समालोक्य मुक्तं द्रोणेन संयुगे।
ब्रह्मास्त्रेणैव राजेन्द्र ब्राह्ममस्त्रमशातयत् ॥ १३ ॥
ततोऽस्त्रे निहते ब्राह्मे बृहत्क्षत्रस्तु भारत।
विव्याध ब्राह्मणं षष्ट्या स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः १४॥
तं द्रोणो द्रुपदां श्रेष्ठो नाराचेन समार्पयत्।
स तस्य कवचं भित्त्वा प्राविशद्धरणीतलम् ॥ १५ ॥
कृष्णसर्पो यथा मुक्तो वल्मीकं नृपसत्तम।
तथाऽत्यगान्महीं बाणो भित्त्वा कैकेयमाहवे ॥ १६ ॥

छूटे हुए एक एक बाणको अपने पांच पांच बाणोंसे काट दिया ॥ द्विजसत्तम द्रोणाचार्यने बृहत्क्षत्रका हस्तलाघव देख, फिर हंसकर आठ बाण उनकी ओर चलाये ॥ बृहत्क्षत्रने द्रोणाचार्यके धनुषसे छूटे हुए तीक्ष्णबाणोंको अपनी ओर आते देख, आट बाणोंसे उन बाणों को निवारण किया ॥ महाराज बृहत्क्षत्र को ऐसा कठिन कर्म करते देख तुम्हारी ओरके योद्धाओंके चित्तमें विस्मय उत्पन्न हुआ ॥ (७—११)

तब महातपस्वी द्रोणाचार्य ने युद्ध में केकयराजसे अधिक पराक्रम प्रकाशित करनेकी इच्छासे ब्राह्म दिव्य अस्त्र प्रकट किया ॥ महाराज महा पराक्रमी बृहत्क्षत्रने द्रोणाचार्यके चलाये हुए ब्राह्म अस्त्रको ब्रह्मास्त्रसेही निवारण किया॥ उन्होंने ब्राह्मण द्रोणाचार्य के ब्रह्मास्त्र को निवारण करके फिर शिलापर घिसे हुए साठ तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध किया ॥ (१२–१४)

अनन्तर पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्यने बृहत्क्षत्रकी ओर एक तीक्ष्ण बाण चलाये; वह बाण बृहत्क्षत्रके कवचको काटके पृथ्वीमें गिरा ॥ जैसे काला सांप छूटने पर बिलके बीच प्रवेश करता है वैसेही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोऽतिविद्धो महाराज कैकेयो द्रोणसायकैः ।
क्रोधेन महताऽऽविष्टो व्यावृत्य नयने शुभे ॥ १७ ॥
द्रोणं विव्याध सप्तत्या स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः ।
सारथिं चाऽस्य बाणेन भृशं मर्मस्वताडयत् ॥ १८ ॥
द्रोणस्तु बहुभिर्विद्धो बृहत्क्षत्रेण मारिष ।
असृजद्विशिखांस्तीक्ष्णान्कैकेयस्य रथं प्रति ॥ १९ ॥
व्याकुलीकृत्य तं द्रोणो बृहत्क्षत्रं महारथम् ।
अश्वांश्चतुर्भिर्न्यवधीच्चतुरोऽस्य पतत्रिभिः ॥ २० ॥
सूतं चैकेन बाणेन रथनीडादपातयत् ।
द्वाभ्यां ध्वजं च च्छत्रं च छित्वा भूमावपातयत् ॥२१॥
ततः साधुविसृष्टेन नाराचेन द्विजर्षभः ।
हृद्यविध्यद् बृहत्क्षत्रं स च्छिन्नहृदयोऽपतत् ॥ २२ ॥
बृहत्क्षत्रे हते राजन्केकयानां महारथे ।
शैशुपालिरभिक्रुद्धो यन्तारमिदमब्रवीत् ॥ २३ ॥
सारथे याहि यत्रैष द्रोणस्तिष्ठति दंशितः ।

वह बाण बृहत्क्षत्रके शरीरको भेदकर पृथ्वीमें घुसगया॥ महाराज! केकयराज अस्त्र विद्या जाननेवाले द्रोणाचार्य के बाणसे अत्यन्त विद्ध होकर महाक्रुद्ध हुए और क्रोधसे दोनों नेत्र लाल करके शिलापर घिसे हुए स्वर्ण पङ्खवाले सत्तर बाणोंसे द्रोणाचार्य को विद्ध किया, फिर भल्लसे द्रोणाचार्यके सारथीकी भुजा और मर्मस्थलमें प्रहार किया ॥ (१५-१८)

द्रोणाचार्यने बृहत्क्षत्र के बाणोंसे जहां तहां विद्ध होके अत्यन्त चोखे बाणोंको बृहत्क्षत्रके रथपर चलाकर उन्हें व्याकुल कर दिया, फिर चार बाणोंसे उनके रथ के चारों घोडोंका वध करके एक बाणसे उनके सारथीका संहार करके रथसे पृथ्वीमें गिराया; अनन्तर दो बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा और छत्रको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया॥ तिसके अनन्तर एक तीक्ष्ण बाणसे द्रोणाचार्यने बृहत्क्षत्रके हृदयमें प्रहार किया; उस ही बाणकी चोटसे बृहत्क्षत्र प्राणरहित होके पृथ्वीमें गिर पडे ॥ (१९-२२)

हे राजेन्द्र ! जब केकयवीरोंमें महारथी बृहत्क्षत्र द्रोणाचार्यके हाथसे मारे गये; तब शिशुपालपुत्र अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने सारथीसे बोले, हे सारथी! तू जहांपर पराक्रमी द्रोणाचार्य वर्म धारण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनिघ्नन्केकयान्सर्वान्पञ्चालानां च वाहिनीम् ॥ २४ ॥
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सारथी रथिनां वरम् ।
द्रोणाय प्रापयामास काम्बोजैर्जवनैर्हयैः ॥ २५ ॥
धृष्टकेतुश्च चेदीनामृषभोऽतिबलोदितः ।
वधायाऽभ्यद्रवद् द्रोणं पतङ्ग इव पावकम् ॥ २६ ॥
सोऽविध्यत तदा द्रोणं षष्ट्या साश्वरथध्वजम् ।
पुनश्चाऽन्यैः शरैस्तीक्ष्णैः सुप्तं व्याघ्रं तुदन्निव ॥ २७ ॥
तस्य द्रोणो धनुर्मध्ये क्षुरप्रेण शितेन च ।
चकर्त गार्ध्रपत्रेण यतमानस्य शुष्मिणः ॥ २८ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय शैशुपालिर्महारथः ।
विव्याध सायकैर्द्रोणं कङ्कबर्हिणवाजितैः ॥ २९ ॥
तस्य द्रोणो हयान्हत्वा चतुर्भिश्चतुरः शरैः ।
सारथेश्च शिरः कायाच्चकर्त प्रहसन्निव ॥ ३० ॥
अथैनं पञ्चविंशत्या सायकानां समार्पयत् ।
अवप्लुत्य रथाच्चैद्यो गदामादाय सत्वरः ॥ ३१ ॥

करके पाञ्चाल और केकयदेशीय योद्धाओंका वध कर रहे हैं; तुम उस ही स्थानमें मेरे रथको ले चलो ॥ २३-२४

सारथी उनका वचन सुन काम्बोज देशीय वेगशील घोडोंसे युक्त उनके रथको द्रोणाचार्यके समीप लेगया ॥ महाबलवान रथियोंमें श्रेष्ठ चेदिराज धृष्टकेतु द्रोणाचार्यकी ओर इस प्रकार दौडे जैसे पतङ्ग अपने प्राणनाशके वास्ते अग्निकी ओर दौडते हैं ॥ अनन्तर चेदिराज धृष्टकेतुने साठ बाणोंसे द्रोणाचार्यको घोडे सारथी ध्वजा और रथके सहित विद्ध किया, तथा निद्रित व्याघ्र को जगाने की भान्ति धृष्टकेतुने फिर द्रोणाचार्य को तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया । (२५-२७)

द्रोणाचार्यने हंसके चार बाणोंसे उनके चारों घोडोंका वध करके उनके सारथीका सिर काट डाला और फिर महाबलवान् द्रोणाचार्यने धृष्टकेतुके धनुषको बीचों बीचसे काट दिया ॥ महारथ शिशुपाल पुत्रने दूसरा धनुष ग्रहण करके द्रोणाचार्यको अपने कंक पत्र युक्त बाणोंसे विद्ध किया ॥ तब द्रोणाचार्यने चार बाणोंसे उनके चार घोडे मारकर हंसते हंसते एक बाणसे सारथिका शिर काटा और पचीस बाण धृष्टकेतुकी ओर चलाये । (२८–३१)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
291.13,T48SV.2
47716

भारद्वाजाय चिक्षेप रुषितामिव पन्नगीम् ।
तामापतन्तीमालोक्य कालरात्रिमिवोद्यताम् ॥ ३२ ॥
अश्मसारमयीं गुर्वीं तपनीयविभूषिताम् ।
शरैरनेकसाहस्रैर्भारद्वाजोऽच्छिनच्छितैः ॥ ३३ ॥
सा छिन्ना बहुभिर्बाणैर्भारद्वाजेन मारिष ।
गदा पपात कौरव्य नादयन्ती धरातलम् ॥ ३४ ॥
गदां विनिहतां दृष्ट्वा धृष्टकेतुरमर्षणः ।
तोमरं व्यसृजद्वीरः शक्तिं च कनकोज्ज्वलाम् ॥ ३५ ॥
तोमरं पञ्चभिर्भित्त्वा शक्तिं चिच्छेद पञ्चभिः ।
तौ जग्मतुर्महीं छिन्नौ सर्पाविव गरुत्मता ॥ ३६ ॥
ततोऽस्य विशिखं तीक्ष्णं वधाय वधकांक्षिणः ।
प्रेषयामास समरे भारद्वाजः प्रतापवान् ॥ ३७ ॥
स तस्य कवचं भित्त्वा हृदयं चाऽमितौजसः ।
अभ्यगाद्धरणीं बाणो हंसः पद्मवनं यथा ॥ ३८ ॥
पतङ्गं हि ग्रसेच्चाषो यथा क्षुद्रं बुभुक्षितः ।

चेदिराज धृष्टकेतु घोडे सारथीसे रहित रथसे कूद पडे और क्रुद्ध सांपिनके समान भयङ्करी एक गदा ग्रहण करके द्रोणाचार्यकी ओर चलाया। भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यने उस सुवर्ण भूषित, काल रात्रीके समान आयीहुई लोहकी महा घोर गदाको संमुख आती देख सहस्रों बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ वह गदा द्रोणाचार्यके सहस्रों बाणोंसे कटके घोर शब्दके सहित पृथ्वीमें गिर पडी ॥ (३१–३४)

गदाको कटके पृथ्वीमें गिरती देख धृष्टकेतुने सुवर्णभूषित तोमर और सुवर्ण से प्रकाशमान शक्ति द्रोणाचार्यकी ओर चलाया ॥ महा बलवान् प्रतापी द्रोणाचार्यने हस्तलाघवके सहित पांच बाणोंसे उस तोमरको काटकर गिराया; और उस प्रकाशमान शक्तिको अपने तीक्ष्ण पांच बाणोंसे काट दिया । तब गरुडके द्वारा छिन्नभिन्न हुए सर्पोंके समान वह शक्ति और तोमर छिन्न भिन्न होकर पृथ्वी पर गिर पडे ॥ (३५—३६)

अनन्तर द्रोणाचार्यने मारनेके लिये आये हुए चेदिराज धृष्टकेतुके वधकी इच्छा करके एक तीक्ष्ण बाण उनकी ओर चलाया ॥ वह बाण अत्यन्त बलवान् धृष्टकेतुके कवच और हृदयको भेदकर पद्मवनमें हंसकी भांति पृथ्वीमें गिरा ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा द्रोणोऽग्रसच्छूरो धृष्टकेतुं महाहवे ॥ ३९ ॥
निहते चेदिराजे तु तत्खण्डं पित्र्यमाविशत् ।
अमर्षवशमापन्नः पुत्रोऽस्य परमास्त्रवित् ॥ ४० ॥
तमपि प्रहसन्द्रोणः शरैर्निन्ये यमक्षयम् ।
महाव्याघ्रो महारण्ये मृगशावं यथा बली ॥ ४१ ॥
तेषु प्रक्षीयमाणेषु पाण्डवेयेषु भारत ।
जरासन्धसुतो वीरः स्वयं द्रोणमुपाद्रवत् ॥ ४२ ॥
स तु द्रोणं महाबाहुः शरधाराभिराहवे ।
अदृश्यमकरोत्तूर्णं जलदो भास्करं यथा ॥ ४३ ॥
तस्य तल्लाघवं दृष्ट्वा द्रोणः क्षत्रियमर्दनः ।
व्यसृजत्सायकांस्तूर्णं शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ४४ ॥
छादयित्वा रणे द्रोणो रथस्थं रथिनां वरम् ।
जारासन्धिं जघानाऽऽशु मिषतां सर्वधन्विनाम् ॥४५॥
यो यः स्म नीयते तत्र तं द्रोणो ह्यन्तकोपमः ।

जैसे भूखा चाष पक्षी छोटे छोटे कीट पतङ्गोंको ग्रास करता है, वैसे ही पराक्रमी द्रोणाचार्यने उस महा घोर युद्धमें धृष्टकेतुका वध किया ॥ (३७-३९)

धृष्टकेतुका पुत्र अस्त्रविद्यामें अत्यन्त निपुण था वह अपने पिताके मरने पर उसकी सेनाके विभागका अधिपति बनगया और क्रोधके वशवर्ती होकर द्रोणाचार्यसे युद्ध करने लगा ॥ द्रोणाचार्यने हंससे हंसते अपने तीक्ष्ण बाणोंसे इस प्रकार उसका वध करके उसे यमपुरीमें भेज दिया जैसे भूखा व्याघ्र हरिणके बच्चेका वध करता है ॥ (४०-४१)

हे भरतर्षभ! जब पाण्डवों की सेनाके योद्धाओंका इसप्रकार नाश होने लगा तब जरासन्धपुत्र हंसकर पराक्रम प्रकाशित करते हुए द्रोणाचार्यकी ओर दौडे ॥ जैसे बादल सूर्यको छिपा देते हैं, वैसे ही उन्होंने अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षासे द्रोणाचार्यको छिपा दिया ॥ (४२-४३)

उसके वैसे हस्तलाघवको देख क्षत्रियोंके नाश करने वाले द्रोणाचार्य एक एक बार एक एक सौ और सहस्र सहस्र बाण उसके ऊपर चलाने लगे ॥ और सब धनुर्द्धारियोंके संमुखहीमें द्रोणाचार्यने जरासन्धपुत्रको अपने बाणोंसे छिपाकर उसका वध किया ॥ जो पुरुष उस समय द्रोणाचार्यके संमुख उपस्थित हुए, वे उनके अस्त्रोंसे प्राण त्यागकर इस प्रकार नष्ट हुए जैसे प्राणी यमराजके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदत्त सर्वभूतानि प्राप्ते काले यथाऽन्तकः ॥ ४६ ॥
ततो द्रोणो महाराज नाम विश्राव्य संयुगे ।
शरैरनेकसाहस्रैः पाण्डवेयान्समावृणोत् ॥ ४७ ॥
ते तु नामाङ्किता बाणा द्रोणेनाऽस्ताः शिलाशिताः ।
नरान्नागान्हयांश्चैव निजघ्नुः शतशो मृधे ॥ ४८ ॥
ते वध्यमाना द्रोणेन शक्रेणेव महासुराः ।
समकम्पन्त पञ्चाला गावः शीतार्दिता इव ॥ ४९ ॥
ततो निष्ठानको घोरः पाण्डवानामजायत ।
द्रोणेन वध्यमानेषु सैन्येषु भरतर्षभ ॥ ५० ॥
प्रताप्यमानाः सूर्येण हन्यमानाश्च सायकैः ।
अन्वपद्यन्त पञ्चालास्तदा सन्त्रस्तचेतसः ॥ ५१ ॥
मोहिता बाणजालेन भारद्वाजेन संयुगे ।
ऊरुग्राहगृहीतानां पञ्चालानां महारथाः ॥ ५२ ॥
चेदयश्च महाराज सृञ्जयाः काशिकोसलाः।

कराल ग्रासमें पडके फिर नहीं निकल सकते ॥ (४४--४६)

तिसके अनन्तर महाधनुर्धर द्रोणाचार्य रणभूमिके बीच अपना नाम सुनाकर सहस्रों बाणोंकी वर्षा करके पाण्डवोंको मोहित करने लगे ॥ स्वर्णपङ्खवाले शिलापर घिसे हुए द्रोण नामसे अङ्कित अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे उस समय सैकडों घोडे हाथी और मनुष्य मरके पृथ्वीमें गिरने लगे ॥ जैसे महा बलवान् असुरोंकी सेना इन्द्रके अस्त्रोंसे पीडित होकर कम्पित हुई थी उसी प्रकार पाञ्चाल योद्धा द्रोणाचार्यके बाणोंसे इस प्रकारसे दुःखित हुए; जैसे शीतसे जकडे हूए गौवोंका समूह ठिठुर के कांपने लगता है ॥ (४७–४९)

हे भारत ! उस समय पाण्डवोंकी सेना द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित होकर महा घोर आर्त्तनाद करने लगी ॥ उस समय पाञ्चाल योद्धा लोग सूर्यकी तीक्ष्ण धूपसे तपके और द्रोणाचार्यके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर भयभीत होगये॥ महाराज ! वे सम्पूर्ण योद्धा भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यके बाणोंसे मोहित होगये; पाण्डवोंके महारथ योद्धाओंके पांव मानों मकरों से पकडे जानेके समान उनको आगे बढनेसे रोकने लगे ॥ (५०–५२)

महाराज ! तिसके बाद चेदी सृञ्जय और काशि कोसल योद्धा लोग हर्षित होकर युद्धकी इच्छासे द्रोणाचार्यकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यद्रवन्त संहृष्टा भारद्वाजं युयुत्सया ॥ ५३ ॥
ब्रुवन्तश्च रणेऽन्योन्यं चेदिपञ्चालसृञ्जयाः।
हत द्रोणं हत द्रोणमिति ते द्रोणमभ्ययुः ॥ ५४ ॥
यतन्तः पुरुषव्याघ्राः सर्वशक्त्या महाद्युतिम्।
निनीषवो रणे द्रोणं यमस्य सदनं प्रति ॥ ५५ ॥
यतमानांस्तु तान्वीरान्भारद्वाजः शिलीमुखैः।
यमाय प्रेषयामास चेदिमुख्यान्विशेषतः ॥ ५६ ॥
तेषु प्रक्षीयमाणेषु चेदिमुख्येषु सर्वशः।
पञ्चालाः समकम्पन्त द्रोणसायकपीडिताः ॥ ५७ ॥
प्राक्रोशन्भीमसेनं ते धृष्टद्युम्नं च भारत।
दृष्ट्वा द्रोणस्य कर्माणि तथारूपाणि मारिष ॥ ५८ ॥
ब्राह्मणेन तपो नूनं चरितं दुश्चरं महत्।
तथा हि युधि संक्रुद्धो दहति क्षत्रियर्षभान् ॥ ५९ ॥
धर्मो युद्धं क्षत्रियस्य ब्राह्मणस्य परं तपः।
तपस्वी कृतविद्यश्च प्रेक्षितेनाऽपि निर्दहेत् ॥ ६० ॥

ओर दौडे। चेदी पाञ्चाल ओर सृञ्जय योद्धालोग "द्रोणाचार्यका वध करो, द्रोणाचार्यको मारो!" ऐसे ही वचन आपसमें कहते हुए द्रोणाचार्यके संमुख उपस्थित हुए॥ हे राजेन्द्र! वे सम्पूर्ण योद्धा लोग पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य को यमलोकमें भेजनेकी इच्छासे अनेक भांतिसे यत्नवान होकर युद्ध करने लगे॥ (५३-५५)

परन्तु भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य उन यत्नवान् योद्धाओंमें विशेष करके चेदीदेशीय सेनाके मुख्य मुख्य शूरवीरों का वध करके यमपुरीमें भेजने लगे॥ जब चेदी देशीय सेनाके मुख्य मुख्य योद्धाओंका नाश होने लगा, तब पाञ्चाल योद्धा लोग द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित होकर कांपने लगे॥ वे सम्पूर्ण योद्धा द्रोणाचार्यके ऐसे कठिन कर्मको देखकर भीमसेन और धृष्टद्युम्नको सुना कर चिल्लाते हुए यह वचन कहने लगे, इस ब्राह्मणने अवश्यही अत्यन्त कठिन तप किया था उसही तपके प्रभावसे क्रुद्ध होकर ये क्षत्रिय योद्धाओंको भस्म कर रहे हैं॥ (५६-५९)

क्षत्रियोंका धर्म युद्ध और ब्राह्मणोंका श्रेष्ठ धर्म तपस्या है। बुद्धिमान् तपस्वी ब्राह्मण अपनी क्रोध रूपी दृष्टिसे देखकर ही भस्म कर सकते हैं॥ उस ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोणाग्निमस्त्रसंस्पर्शं प्रविष्टाः क्षत्रियर्षभाः ।
बहवो दुस्तरं घोरं यत्राऽदह्यन्त भारत ॥ ६१ ॥
यथाबलं यथोत्साहं यथासत्वं महाद्युतिः ।
मोहयन्सर्वभूतानि द्रोणो हन्ति बलानि नः ॥ ६२ ॥
तेषां तद्वचनं श्रुत्वा क्षत्रधर्मा व्यवस्थितः ।
अर्धचन्द्रेण चिच्छेद क्षत्रधर्मा महाबलः ॥ ६३ ॥
क्रोधसंविग्नमनसो द्रोणस्य सशरं धनुः ।
स संरब्धतरो भूत्वा द्रोणः क्षत्रियमर्दनः ॥ ६४ ॥
अन्यत्कार्मुकमादाय भास्वरं वेगवत्तरम् ।
तत्राऽऽधाय शरं तीक्ष्णं परानीकविशातनम् ॥ ६५ ॥
आकर्णपूर्णमाचार्यो बलवानभ्यवासृजत् ।
स हत्वा क्षत्रधर्माणं जगाम धरणीतलम् ॥ ६६ ॥
स भिन्नहृदयो बाहान्न्यपतन्मेदिनीतले ।
ततः सैन्यान्यकम्पन्त धृष्टद्युम्नसुते हते ॥ ६७ ॥
अथ द्रोणं समारोहच्चेकितानो महाबलः ।
स द्रोणं दशभिर्विध्वा प्रत्यविद्धयत्स्तनान्तरे ॥ ६८ ॥

कारणसे बहुतेरे मुख्य मुख्य क्षत्रिय योद्धा अग्निके समान स्पर्श करने वाले द्रोणाचार्यके महाघोर तीक्ष्ण अस्त्रोंसे पीडित होकर भस्म होरहे हैं ॥ द्रोणाचार्य अपने बल, पराक्रम, उत्साह और सामर्थ्यके अनुसार सम्पूर्ण प्राणियों को मोहित करके सेनाके समस्त योद्धाओं का वध कर रहे हैं ॥ (६०—६२)

महाबली क्षत्रधर्मा उन योद्धाओंके ऐसे वचनको सुनकर क्षत्रिय धर्ममें निष्ठावान् हो अत्यन्त बली क्रुद्ध द्रोणाचार्यके धनुषको बाणके सहित काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ तिसके अनन्तर क्षत्रियोंके नाश करनेवाले द्रोणाचार्यने क्रुद्ध होकर एक महावेगशील दृढ धनुष ग्रहण किया; और उस पर एक शत्रुओंके नाश करनेमें समर्थ भयङ्कर बाणको रखके क्षत्रधर्माकी ओर चलाया । वह बाण धृष्टद्युम्नपुत्र क्षत्रधर्माके बाणको नाश करके पृथ्वीमें गिरा । क्षत्रधर्मा प्राणरहित होकर अपने रथके उपरसे पृथ्वीमें गिर पडे । धृष्टद्युम्न पुत्र क्षत्रधर्माके मरने पर सम्पूर्ण योद्धा द्रोणाचार्य के भयसे कांपने लगे ॥ (६३—६७)

अनन्तर महारथ चेकितानने द्रोणाचार्यको आक्रमण करके अपने दश बाणों-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्भिः सारथिं चाऽस्य चतुर्भिश्चतुरो हयान्।
तमाचार्यस्त्रिभिर्बाणैर्बाह्वोरुरसि चाऽर्पयत् ॥ ६९ ॥
ध्वजं सप्तभिरुन्मथ्य यन्तारमवधीत्त्रिभिः।
तस्य सूते हते तेऽश्वा रथमादाय विद्रुताः ॥ ७० ॥
समरे शरसंवीता भारद्वाजेन मारिष।
चेकितानरथं दृष्ट्वा हताश्वं हतसारथिम् ॥ ७१ ॥
तान्समेतान्रणे शूरांश्चेदिपञ्चालसृञ्जयान्।
समन्ताद् द्रावयन्द्रोणो बहुशोभत मारिष ॥ ७२ ॥
आकर्णपलितश्यामो वयसाऽशीतिपञ्चकः।
रणे पर्यचरद् द्रोणो वृद्धः षोडशवर्षवत् ॥ ७३ ॥
अथ द्रोणं महाराज विचरन्तमभीतवत्।
वज्रहस्तममन्यन्त शत्रवः शत्रुसूदनम् ॥ ७४ ॥
ततो ब्रवीन्महाबाहुर्द्रुपदो बुद्धिमान्नृप।
लुब्धोऽयं क्षत्रियान्हन्ति व्याघ्रः क्षुद्रमृगानिव ॥७५॥

से उनके दोनों स्तनोंके बीच प्रहार किया, और उनके सारथीको चार बाणोंसे विद्ध कर फिर उनके रथके चारों घोडोंको चार बाणोंसे विद्ध किया। द्रोणाचार्यने तीन बाणोंसे चेकितानकी दोनों भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार करके सातबाणोंसे उनके रथकी ध्वजा काट दिया; और तीन बाणोंसे उनके सारथीका वध किया। सारथीके मारे जानेपर चेकितानके घोडे उनके रथको लेकर दौडते हुए दूसरी ओर भाग गये॥ तब भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यने अपने बाणोंसे उसके उन दौडने वाले घोडोंको मार डाला। (६८–७१)

चेकितानके रथको घोडे और सारथी से रहित देख वहांपर इकट्ठे हुए चेदी पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धाओंको चारों ओर तितर बितर करके द्रोणाचार्य युद्धभूमिमें अत्यन्त ही शोभित होने लगे॥ पचासी वर्षकी अवस्थावाले वृद्ध द्रोणाचार्य उस समय सोलह वर्षवाले युवा पुरुषकी भांति युद्धभूमिमें भ्रमण करने लगे। महाराज! उस समय शत्रुनाशन द्रोणाचार्यको शत्रुओंको नाश करते हुए युद्धभूमिमें निर्भयचित्तसे घूमते देख शत्रु सेनाके योद्धा लोग उन्हें वज्रधारी इन्द्रके समान बोध करने लगे॥ (७१—७४)

उस समय बुद्धिमान् महाबाहु द्रुपद कहने लगे, जैसे व्याघ्र पशुओंका वध करता है वैसेही यह लुब्ध ब्राह्मण मुख्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृच्छ्रान्दुर्योधनो लोकान्पापः प्राप्स्यति दुर्मतिः ।
यस्य लोभाद्विनिहताः समरे क्षत्रियर्षभाः ॥ ७६ ॥
शतशः शेरते भूमौ निकृत्ता गोवृषा इव ।
रुधिरेण परीताङ्गाः श्वशृगालादनीकृताः ॥ ७७ ॥
एवमुक्त्वा महाराज द्रुपदोऽक्षौहिणीपतिः ।
पुरस्कृत्य रणे पार्थान्द्रोणमभ्यद्रवद् द्रुतम् ॥ ७८ ॥ [२०८६]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि द्रोणपराक्रमे पञ्चविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१२५॥

सञ्जय उवाच— व्यूहेष्वालोड्यमानेषु पाण्डवानां ततस्ततः ।
सुदूरमन्वयुः पार्थाः पञ्चालाः सह सोमकैः ॥ १ ॥
वर्तमाने तथा रौद्रे संग्रामे लोमहर्षणे ।
संक्षये जगतस्तीव्रे युगान्त इव भारत ॥ २ ॥
द्रोणे युधि पराक्रान्ते नर्दमाने मुहुर्मुहुः ।
पञ्चालेषु च क्षीणेषु वध्यमानेषु पाण्डुषु ॥ ३ ॥
नाऽपश्यच्छरणं किञ्चिद्धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
चिन्तयामास राजेन्द्र कथमेतद्भविष्यति ॥ ४ ॥

मुख्य क्षत्रियोंका युद्धभूमिमें वधकर रहा है । नीच बुद्धिवाले पापी दुर्योधनके लोभही के कारण सैकडों सहस्रों क्षत्रिय श्रेष्ठ पुरुषोंका वध हो रहा है। कितने ही पुरुष कटे हुए और रुधिर लिपटे हुए शरीरसे युक्त हो कुत्ते और सियारोंके भक्ष्य होकर पृथ्वीमें शयन कर रहे हैं; इससे इस पापी दुर्योधनको कष्ट जनक नरकमें जाना पडेगा ॥ ऐसा कहके एक अक्षौहिणी सेनाके नायक राजा द्रुपदने शीघ्रताके सहित पाण्डवोंको आगे करके द्रोणाचार्यके निकट युद्ध करनेके वास्ते गमन किया ॥ (७५–७८) [२०८६]

द्रोणपर्वमें एकसौ पचीस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ छब्बीस अध्याय ।

सञ्जय बोले, हे, भारत ! जब पाण्डवोंकी सेनाका व्यूह इसी प्रकार चारों ओरसे तितर बितर होने लगा, तब सोमकोंके सहित पाण्डव लोग द्रोणाचार्यके समीपसे दूर हट गये ॥ उस प्रलय कालके समान महाघोर संग्रामके समय पराक्रमी द्रोणाचार्य बार बार सिंहनाद कर रहे थे; और उनके बाणोंसे पाञ्चाल योद्धाओंका नाश और सोमकोंको पीडित होते देख, राजाओंमें श्रेष्ठ धर्मराज युधिष्ठिर किसीको भी अपना परित्राण करने वाला न देख कर चिन्ता करने लगे "इस समय कौनसी उपाय करी जावे।" (१–४)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो वीक्ष्य दिशः सर्वाः सव्यसाचिदिदृक्षया ।
युधिष्ठिरो ददर्शाऽथ नैव पार्थं न माधवम् ॥ ५ ॥
सोऽपश्यन्नरशार्दूलं वानरर्षभलक्षणम् ।
गाण्डीवस्य च निर्घोषमशृण्वन्व्यथितेन्द्रियः ॥ ६ ॥
अपश्यन्सात्यकिं चापि वृष्णीनां प्रवरं रथम् ।
चिन्तयाऽभिपरीताङ्गो धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ ७ ॥
नाऽध्यगच्छत्तदा शान्तिं तावपश्यन्नरोत्तमौ ।
लोकोपक्रोशभीरुत्वाद्धर्मराजो महामनाः ॥ ८ ॥
अचिन्तयन्महाबाहुः शैनेयस्य रथं प्रति ।
पदवीं प्रेषितश्चैव फाल्गुनस्य मया रणे ॥ ९ ॥
शैनेयः सात्यकिः सत्यो मित्राणामभयङ्करः ।
तदिदं ह्येकमेवाऽऽसीद् द्विधा जातं ममाऽद्य वै ॥ १० ॥
सात्यकिश्च हि विज्ञेयः पाण्डवश्च धनञ्जयः ।
सात्यकिं प्रेषयित्वा तु पाण्डवस्य पदानुगम् ॥ ११ ॥
सात्वतस्यापि कं युद्धे प्रेषयिष्ये पदानुगम् ।
करिष्यामि प्रयत्नेन भ्रातुरन्वेषणं यदि ॥ १२ ॥
युयुधानमनन्विष्य लोको मां गर्हयिष्यति ।

वह अर्जुनके देखनेकी इच्छासे चारों ओर दृष्टि करके, अर्जुन या कृष्ण किसी को भी न देख सके॥ बन्दर चिन्हवाली ध्वजासे युक्त पुरुषसिंह अर्जुनको न देख, और अर्जुनके गाण्डीव धनुषके शब्दको न सुन कर राजा युधिष्ठिर दुःखित हुए; और वृष्णिवंशीय महारथ सात्यकिको भी न देखकर राजा युधिष्ठिर अत्यन्तही व्याकुल होगये, पुरुषसिंह अर्जुन और सात्यकिकी उपस्थिति न देखकर किसी प्रकार भी वह धीरज न धर सके, विशेष करके लोकनिन्दाकी भयसे सात्यकिके निमित्त चिन्ता करने लगे ॥ (५-८)

मैंने इस तुमुल युद्धमें मित्रोंको अभय देने-वाले सात्यकिको अर्जुनकी पृष्ठरक्षा करनेके वास्ते भेजा है;इससे पहिले मेरा मन अकेले अर्जुनही के वास्ते व्याकुल था, अब इस समयमें सात्यकिके वास्ते मेरा मन अत्यन्त ही व्याकुल होरहा है ॥ अर्जुन के वास्ते मैंने सात्यकि को भेजा है, इस समय सात्यकिकी पृष्ठरक्षा करनेके वास्ते किसे भेजूं ? (९-१२)

यदि सात्यकि की खोज न कर के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रातुरन्वेषणं कृत्वा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ १३ ॥
परित्यजति वार्ष्णेयं सात्यकिं सत्यविक्रमम् ।
लोकापवादभीरुत्वात्सोऽहं पार्थं वृकोदरम् ॥ १४ ॥
पदवीं प्रेषयिष्यामि माधवस्य महात्मनः ।
यथैव च मम प्रीतिरर्जुने शत्रुसूदने ॥ १५ ॥
तथैव वृष्णिवीरेऽपि सात्वते युद्धदुर्मदे ।
अतिभारे नियुक्तश्च मया शैनेयनन्दनः ॥ १६ ॥
स तु मित्रोपरोधेन गौरवात्तु महाबलः ।
प्रविष्टो भारतीं सेनां मकरः सागरं यथा ॥ १७ ॥
असौ हि श्रूयते शब्दः शूराणामनिवर्तिनाम् ।
मिथः संयुध्यमानानां वृष्णिवीरेण धीमता ॥ १८ ॥
प्राप्तकालं सुबलवन्निश्चितं बहुधा हि मे ।
तत्रैव पाण्डवेयस्य भीमसेनस्य धन्विनः ॥ १९ ॥
गमनं रोचते मह्यं यत्र यातौ महारथौ ।
न चाऽप्यसह्यं भीमस्य विद्यते भुवि किञ्चन ॥ २० ॥

भाईकी खोज करें तो सब कोई यह कहके मेरी निन्दा करेंगे, कि "धर्मराज युधिष्ठिरने सत्य पराक्रमी सात्यकि की खोज न करके भाईकी खोज किया।" इस लोकापवादके भयसे महात्मा सात्यकिकी खोज के वास्ते अपने भाई भीमसेनको भेजूं। (१२–१५)

शत्रु नाशन अर्जुनके ऊपर मेरा जैसा प्रेम है, यदुकुल भूषण पुरुषसिंह सात्यकिके ऊपर भी मेरा वैसाही प्रेम और प्रीति है। शिनिपौत्र सात्यकिके ऊपर मैंने बहुत बडे भारको अर्पित किया है, उस पाप रहित पराक्रमी सात्यकिने मित्रकी सहायता और मेरी गौरव रक्षाके वास्ते इस प्रकारसे भारती सेनाके बीच प्रवेश किया है, जैसे मकर घडियाल समुद्रके बीच प्रवेश करते हैं॥ पराक्रमी सात्यकिके सङ्ग युद्धभूमिमें संग्राम करनेवाले तथा युद्धसे पीछे न हटने वाले शूरवीर पुरुषोंका शब्द सुनाई दे रहा है॥ (१५–१८)

मैंने अनेक भांतिसे विचार करके देखा, इस सङ्कटमें जिस स्थानपर ऊपर कहे दो महारथी गये हैं, उस ही स्थानपर भ्राता भीमसेनका गमन करना ही उचित बोध होता है। पृथ्वीके बीच भीमसेनसे कोई कार्य असाध्य नहीं है॥ वह अपने बाहुबलके आसरेसे यत्नवान्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तो ह्येष रणे यत्तः पृथिव्यां सर्वधन्विनाम् ।
स्वबाहुबलमास्थाय प्रतिव्यूहितुमञ्जसा ॥ २१ ॥
यस्य बाहुबलं सर्वे समाश्रित्य महात्मनः ।
वनवासान्निवृत्ताः स्म न च युद्धेषु निर्जिताः ॥ २२ ॥
इतो गते भीमसेने सात्वतं प्रति पाण्डवे ।
सनाथौ भवितारौ हि युधि सात्वतफाल्गुनौ ॥ २३ ॥
कामं त्वशोचनीयौ तौ रणे सात्वतफाल्गुनौ ।
रक्षितौ वासुदेवेन स्वयं शस्त्रविशारदौ ॥ २४ ॥
अवश्यं तु मया कार्यमात्मनः शोकनाशनम् ।
तस्माद्भीमं नियोक्ष्यामि सात्वतस्य पदानुगम् ॥ २५ ॥
ततः प्रतिकृतं मन्ये विधानं सात्यकिं प्रति ।
एवं निश्चित्य मनसा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ २६ ॥
सारथिमब्रवीद्राजा भीमं प्रति नयस्व माम् ।
धर्मराजवचः श्रुत्वा सारथिर्हयकोविदः ॥ २७ ॥
रथं हेमपरिष्कारं भीमान्तिकमुपानयत् ।

होकर पृथ्वीके बीच सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके व्यूहके विरुद्ध अकेले ही शत्रुसेनाके सङ्ग युद्ध कर सकते हैं ॥ इसी महात्माके बाहुबलके आसरे हम लोग वनवासके सम्पूर्ण दुःखोंसे पार हुए हैं; और किसीके सङ्ग कभी युद्धमें पराजित नहीं हुआ हूं ॥ (१९-२२)

जब मेरे भाई भीमसेन यहांसे गमन करके सात्यकिके समीप उपस्थित होवेंगे, तब सात्यकि भी अर्जुनकी सहायता करनेमें समर्थ होगा ! परन्तु अर्जुन और सात्यकि चिन्ताके विषय नहीं हैं; क्यों कि कृष्ण उनकी रक्षा कर रहे हैं, और वे दोनो स्वयं भी सब अस्त्रशस्त्रोंकी विद्याके जाननेवाले हैं ॥ तब मेरे चित्तमें जो चिन्ता उपस्थित हुई है; उसे अवश्य निवारण करना चाहिये । इससे सात्यकिकी रक्षा करनेके वास्ते भीमसेनको नियुक्त करूं, उससे बोध करता हूं, सात्यकिके वास्ते यथा उचित कार्यका विधान होगा । (२३-२६)

धर्मपुत्र युधिष्ठिर अपने मनही मन ऐसा निश्चय करके सारथीसे बोले, हे सारथी ! तुम मुझे भीमसेनके समीप ले चलो । घोडोंके चलानेमें निपुण सारथी धर्मपुत्र युधिष्ठिर के वचन को सुनकर उनके सुवर्णभूषित रथको भीमसेनके पास ले गया । कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमसेनमनुज्ञाप्य प्राप्तकालमचिन्तयत् ॥ २८ ॥
कश्मलं प्राविशद्राजा बहु तत्र समादिशत् ।
स कश्मलसमाविष्टो भीममाहूय पार्थिवः ॥ २९ ॥
अब्रवीद्वचनं राजन्कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
यः सदेवान्सगन्धर्वान्दैत्यांश्चैकरथोऽजयत् ॥ ३० ॥
तस्य लक्ष्म न पश्यामि भीमसेनाऽनुजस्य ते ।
ततोऽब्रवीद्धर्मराजं भीमसेनस्तथागतम् ॥ ३१ ॥
नैवाऽद्राक्षं न चाऽश्रौषं तव कश्मलमीदृशम् ।
पुराऽतिदुःखदीर्णानां भवान्गतिरभूद्धि नः ॥ ३२ ॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ राजेन्द्र शाधि किं करवाणि ते ।
नह्यसाध्यमकार्यं वा विद्यते मम मानद ॥ ३३ ॥
आज्ञापय कुरुश्रेष्ठ मा च शोके मनः कृथाः ।
तमब्रवीदश्रुपूर्णः कृष्णसर्प इव श्वसन् ॥ ३४ ॥
भीमसेनमिदं वाक्यं प्रम्लानवदनो नृपः ।
यथा शङ्खस्य निर्घोषः पाञ्चजन्यस्य श्रूयते ॥ ३५ ॥

भीमसेन के समीप पहुंच कर उस समयके उपस्थित विषयको कहनेके वास्ते उस कार्यको फिर स्मरण करके शोकित हुए ॥ (२६—२९)

वह शोकित होके भीमसेनको बुलाकर यह वचन बोले, हे भीमसेन ! जिन्होंने अकेले ही रथपर चढके देवता, गन्धर्व और असुरोंको पराजित किया है, मैं तुम्हारे उस ही भ्राता अर्जुनका कुछ संवाद नहीं पाता हूं । (२९–३१)

अनन्तर भीमसेन धर्मराज युधिष्ठिरको इस प्रकार मोहित देखकर उनसे यह वचन बोले, हे राजेन्द्र ! तुम्हारी ऐसी कातरता पहिले न कभी देखी और न सुना ही था; पहिले जब हम लोग दुःखित होते थे, तब तुम हमलोगोंके दुःखको दूर करके धीरज धारण कराते थे ॥ आप उठिये ! सावधान होईये; मुझे आज्ञा दीजिये, मैं तुम्हारे निमित्त कौनसा कार्य करूं ? हे मान पानेके योग्य महाराज ! मुझसे कोई कार्य भी असाध्य नहीं है । हे कुरुश्रेष्ठ ! आप अपने चित्तसे शोक दूर कीजिये; कहिये मुझे कौनसा कार्य करना होगा ? (३१–३४)

राजा युधिष्ठिर आंखोंमें आंसू भरके अत्यन्त दुःखित होकर काले सांपके समान लम्बी सांस छोडते हुए भीमसेन से कहने लगे; हे भीमसेन ! यशस्वी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरितो वासुदेवेन संरब्धेन यशस्विना।
नूनमद्य हतः शेते तव भ्राता धनञ्जयः ॥ ३६ ॥
तस्मिन्विनिहते नूनं युध्यतेऽसौ जनार्दनः।
यस्य सत्ववतो वीर्यं ह्युपजीवन्ति पाण्डवाः ॥ ३७ ॥
यं भयेष्वभिगच्छन्ति सहस्राक्षमिवाऽमराः।
स शूरः सैन्धवप्रेप्सुरन्वयाद्भारतीं चमूम् ॥ ३८ ॥
तस्य वै गमनं विद्मो भीम नाऽऽवर्तनं पुनः।
श्यामो युवा गुडाकेशो दर्शनीयो महारथः ॥ ३९ ॥
व्यूढोरस्को महाबाहुर्मत्तद्विरदविक्रमः।
चकोरनेत्रस्ताम्रास्यो द्विषतां भयवर्धनः ॥ ४० ॥
तदिदं मम भद्रं ते शोकस्थानमरिन्दम।
अर्जुनार्थे महाबाहो सात्वतस्य च कारणात् ॥ ४१ ॥
वर्धते हविषेवाऽग्निरिध्यमानः पुनः पुनः।
तस्य लक्ष्म न पश्यामि तेन विन्दामि कश्मलम्॥४२॥

कृष्णके पाञ्चजन्य शंखका शब्द इस समय जिस प्रकारसे सुन पडता है, इससे बोध होता है, वह क्रुद्ध होकर अत्यन्त बल पूर्वक अपने शंखको बजा रहे हैं, मुझे बोध होता है, तुम्हारे भाई अर्जुन अवश्य ही युद्धभूमिमें मारे गये। उन के मरने से श्रीकृष्ण स्वयं युद्धकर रहे हैं। (३४—३७)

जिस महातेजस्वी पुरुषसिंह कृष्णके बल, पराक्रमका आसरा करके पाण्डवलोग जीवित हैं, जैसे कोई भय उपस्थित होनेसे देवता लोग इन्द्रकी शरणमें जाते हैं, वैसेही कुछ विपद उपस्थित होने पर पाण्डव लोग कृष्णकी शरण चाहते हैं। उस पराक्रमी अर्जुनने सिन्धुराज जयद्रथके वधकी अभिलाष करके भारती सेनाके बीच प्रवेश किया है। परन्तु उस महाबाहू, श्यामवर्ण, युवा, जितेन्द्रिय, सुन्दर, महारथी, विशाल वक्षस्थलसे युक्त, मतवारे हाथीके समान पराक्रमी, चकोरलोचन, शत्रुओंको पीडित करनेवाले और ताम्र वदनसे युक्त अर्जुनके गमनको मैं नहीं जान सकता हूं; वह जो फिर लौट कर मेरे समीप आवेंगे वह मुझे नहीं मालुम होता है; यही मेरे शोकका मुख्य कारण है॥ ३७-४१

हे महाबाहो! अर्जुन और सात्यकिके वास्ते मेरी शोकाग्नि मानो घृतके पडने से प्रज्वलित हुई अग्निके समान बार बार बढ रही है। उस महाबाहु अर्जुनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं विद्धि पुरुषव्याघ्रं सात्वतं च महारथम् ।
स तं महारथं पश्चादनुयातस्त्वयाऽनुजम् ॥ ४३ ॥
तमपश्यन्महाबाहुमहं विन्दामि कश्मलम् ।
पार्थे तस्मिन्हते चैव युध्यते नूनमग्रणीः ॥ ४४ ॥
सहायो नाऽस्य वै काश्चित्तेन विन्दामि कश्मलम् ।
तस्मिन्कृष्णो हते नूनं युध्यते युद्धकोविदः ॥ ४५ ॥
न हि मे शुध्यते भावस्तयोरेव परन्तप ।
स तत्र गच्छ कौन्तेय यत्र यातो धनञ्जयः ॥ ४६ ॥
सात्यकिश्च महावीर्यः कर्तव्यं यदि मन्यसे ।
वचनं मम धर्मज्ञ भ्राता ज्येष्ठो भवामि ते ॥ ४७ ॥
न तेऽर्जुनस्तथा ज्ञेयो ज्ञातव्यः सात्यकिर्यथा ।
चिकीर्षुर्मत्प्रियं पार्थ स यातः सव्यसाचिनः ॥ ४८ ॥
पदवीं दुर्गमां घोरामगम्यामकृतात्मभिः ।
दृष्ट्वा कुशलिनौ कृष्णौ सात्वतं चैव सात्यकिम् ।
संविदं चैव कुर्यास्त्वं सिंहनादेन पाण्डव ॥ ४९ ॥ [५१३५]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि युधिष्ठिरचिन्तायां षड्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१२६॥

रथचिन्हको न देखकर मैं अत्यन्त दुःखित हुआ हूं, और पुरुषसिंह सात्यकिको तुम महारथी कहके जानते हो; वह जो तुम्हारे भाईकी पृष्ठरक्षा करनेके वास्ते गये हैं, इससे उस महाबाहु सात्यकिको भी न देखकर मैं शोकित हुआ हूं॥४१-४४

अर्जुनके मरनेसे अवश्य कृष्ण युद्ध कर रहे हैं; परन्तु उनका कोई सहायक नहीं है, इससे भी मैं व्याकुल होरहा हूं। जिसके बल पराक्रमके आसरेसे पाण्डव लोग जीवित हैं, वह महाबलवान् पराक्रमी कृष्ण अवश्य अकेलेही शत्रुओंके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं॥ जो हो उन दोनो पुरुषसिंहोंके निमित्त मेरे चित्तमें शान्ति नहीं होती है। हे धर्म जाननेवाले! मैं तुम्हारा जेठा भाई हूं; मेरे वचनोंको मानना यदि तुम्हारा कर्त्तव्य कार्य होवे, तो अर्जुन और सात्यकिके पास तुम भी जाओ। (४५-४७)

सात्यकि मेरे प्रिय कार्य करनेकी इच्छासे महाभयङ्कर अपरम्पार सेनाके बीच अर्जुनकी सहायताको गया है। इससे अर्जुनसे भी अधिक सात्यकिके समाचारको मालूम करना तुम्हारा कर्त्तव्य कार्य है। तुम कृष्ण अर्जुन और सात्यकिका कुशल देखकर अपने सिंह-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमसेन उवाच—ब्रह्मेशानेन्द्रवरुणानवहद्यः पुरा रथः।
तमास्थाय गतौ कृष्णौ न तयोर्विद्यते भयम् ॥ १ ॥
आज्ञां तु शिरसा बिभ्रदेष गच्छामि मा शुचः।
समेत्य तान्नरव्याघ्रांस्तव दास्यामि संविदम् ॥ २ ॥
सञ्जय उवाच— एतावदुक्त्वा प्रययौ परिदाय युधिष्ठिरम्।
धृष्टद्युम्नाय बलवान्सुहृद्भ्यश्च पुनः पुनः ॥ ३ ॥
धृष्टद्युम्नं चेदमाह भीमसेनो महाबलः।
विदितं ते महाबाहो यथा द्रोणो महारथः ॥ ४ ॥
ग्रहणे धर्मराजस्य सर्वोपायेन वर्त्तते।
न च मे गमने कृत्यं तादृक्पार्षत विद्यते ॥ ५ ॥
यादृशं रक्षणे राज्ञः कार्यमाचार्यकं हि नः।
एवमुक्तोऽस्मि पार्थेन प्रतिवक्तुं न चोत्सहे ॥ ६ ॥
प्रयास्ये तत्र यत्राऽसौ सुमूर्षुः सैन्धवः स्थितः।

नादके शब्दसे मुझे संवाद प्रदान करोगे ॥ (४८-४९) [५१३५]

द्रोणपर्वमें एकसौ छब्बीस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ सताईस अध्याय ।

भीमसेन बोले, महाराज ! जिस रथ पर पहिले ब्रह्मा, शिव, इन्द्र और वरुण ने गमन किया था; कृष्ण-अर्जुन उसी रथ पर चढके शत्रुसेनाके बीच प्रविष्ट हुए हैं; इससे किसीसे भी उन्हें भय नहीं हो सकता ॥ तब तुम्हारी आज्ञा-को माथे पर चढा कर मैं उन लोगोंकी सहायताके वास्ते गमन करता हूं; आप शोक न कीजिये; मैं उन पुरुषसिंहोंके समीपमें पहुंचके आपको संवाद दूंगा ॥ (१-२)

सञ्जय बोले, हे राजन् ! महाबली पराक्रमी भीमसेन ऐसा वचन करके धृष्टद्युम्न और दूसरे सुहृद्पुरुषोंके निकट राजा युधिष्ठिरको समर्पण करके धृष्ट-द्युम्नसे बार बार यह वचन बोले, हे महाबाहो ! महारथ द्रोणाचार्य जिस प्रकारसे उपाय रचकर धर्मराज युधिष्ठिर को ग्रहण करने के वास्ते युद्धभूमि में स्थित है, वह तुम्हें विदित है। हे पार्षत ! इससे हम लोगोंका द्रोणाचार्यके समीप से धर्मराज युधिष्ठिरकी रक्षा करना जैसे प्रयोजनीय कार्य है, कृष्ण-अर्जुनके समीप गमन करना उतना आवश्यक कार्य नहीं है। (३-६)

परन्तु महाराजने मुझे अर्जुनके समीप जानेके वास्ते आज्ञा दिया है, मैं उनकी आज्ञा भङ्ग करनेका उत्साह नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मराजस्य वचने स्थातव्यमविशंकया ॥ ७ ॥
यास्यामि पदवीं भ्रातुः सात्वतस्य च धीमतः ।
सोऽद्य यत्तो रणे पार्थ परिरक्ष युधिष्ठिरम् ॥ ८ ॥
एतद्धि सर्वकार्याणां परमं कृत्यमाहवे ।
तमब्रवीन्महाराज धृष्टद्युम्नो वृकोदरम् ॥ ९ ॥
ईप्सितं ते करिष्यामि गच्छ पार्थाऽविचारयन् ।
नाऽहत्वा समरे द्रोणो धृष्टद्युम्नं कथञ्चन ॥ १० ॥
निग्रहं धर्मराजस्य प्रकरिष्यति संयुगे ।
ततो निक्षिप्य राजानं धृष्टद्युम्ने च पाण्डवम् ॥ ११ ॥
अभिवाद्य गुरुं ज्येष्ठं प्रययौ येन फाल्गुनः ।
परिष्वक्तश्च कौन्तेयो धर्मराजेन भारत ॥ १२ ॥
आघ्रातश्च तथा मूर्ध्नि आवितश्चाऽऽशिषः शुभाः ।
कृत्वा प्रदक्षिणान्विप्रानर्चितांस्तुष्टमानसान् ॥ १३ ॥
आलभ्य मङ्गलान्यष्टौ पीत्वा कैरातकं मधु ।

कर सकता; क्योंकि धर्मराजकी आज्ञा को सम्पूर्ण शङ्काओंको त्यागके पालन करना ही उचित है। इससे जहांपर आयुरहित जयद्रथ स्थित है, मैं उस ही स्थान पर अपने भाई अर्जुन और बुद्धिमान् सात्यकिकी सहायता करनेके वास्ते जाता हूं। आप युद्धभूमिमें यत्नवान् होकर सब प्रकारसे महाराज युधिष्ठिरकी रक्षा करना। इस युद्धमें सम्पूर्ण कार्योंके बीच राजाकी रक्षा करना ही मुख्य कार्य है। (६–९)

महाराज! धृष्टद्युम्न भीमसेनसे बोले, हे पार्थ! मैं तुम्हारे अभिलषित कार्य को पूर्ण करूंगा। तुम कुछभी विचार न कर के अर्जुनके समीप जाओ; तुम कुछ भी चिन्ता मत करो। द्रोणाचार्य इस महायुद्धमें धृष्टद्युम्नका विना वध किये, किसी प्रकारसे भी धर्मराज युधिष्ठिरको ग्रहण न कर सकेंगे। ९—११

तिसके अनन्तर भीमसेनने महाराज युधिष्ठिरको धृष्टद्युम्नके निकट समर्पण करके जेठे भाई धर्मराजको प्रणाम किया। धर्मराजने उन्हें आलिङ्गन कर के उनका मस्तक सूंघा और शुभ आशीर्वाद प्रदान किया। तिसके अनन्तर भीमसेनने ब्राह्मणोंकी पूजा करके उन्हें प्रसन्न कर उनको प्रदक्षिणा किया, फिर गौ अग्नि आदि आठ प्रकारकी माङ्गलिक वस्तु स्पर्श करके किरात देशीय मधुका पान करके मतवारे नेत्रसे युक्त हो-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विगुणद्रविणो वीरो मदरक्तान्तलोचनः ॥ १४ ॥
विप्रैः कृतस्वस्त्ययनो विजयोत्पादसूचितः ।
पश्यन्नेवाऽऽत्मनो बुद्धिं विजयानन्दकारिणीम् ॥ १५ ॥
अनुलोमानिलैश्चाऽऽशु प्रदर्शितजयोदयः ।
भीमसेनो महाबाहुः कवची शुभकुण्डली ॥ १६ ॥
साङ्गदी सतलत्राणः स रथी रथिनां वरः ।
तस्य कार्ष्णायसं वर्म हेमचित्रं महार्घिमत् ॥ १७ ॥
बिबभौ सर्वतः श्लिष्टं सविद्युदिव तोयदः ।
पीतरक्तासितसितैर्वासोभिश्च सुवेष्टितः ॥ १८ ॥
कण्ठत्राणेन च बभौ सेन्द्रायुध इवाऽम्बुदः ।
प्रयाते भीमसेने तु तव सैन्यं युयुत्सया ॥ १९ ॥
पाञ्चजन्यरवो घोरः पुनरासीद्विशाम्पते ।
तं श्रुत्वा निनदं घोरं त्रैलोक्यत्रासनं महत् ॥ २० ॥
पुनर्भीमं महाबाहुं धर्मपुत्रोऽभ्यभाषत ।
एष वृष्णिप्रवीरेण ध्मातः सलिलजो भृशम् ॥ २१ ॥

कर द्विगुण उत्साही होगये॥ ११-१४

ब्राह्मणोंने उस समय उनके विजय सूचक स्वस्त्ययन पाठ किया। उन्होंने विजयके निमित्त आत्मबुद्धि अनुभव करके वहांसे प्रस्थान किया। भीमसेन के प्रस्थान करनेके समय वायु उन के अनुकुल बहते हुए उनकी विजयकी सूचना करने लगा। महारथियोंमें श्रेष्ठ भीमसेनके कानमें सुन्दर कुण्डल, भुजा में उत्तम आभूषण, हाथ में तलत्राण और शरीर में सुवर्ण भूषित महामूल्य वान् लोहमय कवच था! इससे जैसे बिजलीसे युक्त बादल पर्वतपर स्थित होके शोभित होता है, उनका वह कवच उनके शरीरमें लिपटा हुआ वैसे ही शोभित होने लगा। और इन्द्रधनुष के सहित जैसे आकाश में बादल शोभित होते हैं वैसे ही लाल पीले काले और श्वेत वर्णके वस्त्रों तथा कण्ठत्राण पहरने से भीमसेन शोभित होने लगे। १५-१९

तुम्हारी सेनाके सङ्ग युद्ध करने की अभिलाषसे जब भीमसेन प्रस्थान करनेके वास्ते तैयार हुए तब फिर पाञ्चजन्य शङ्खका शब्द सुनाई पडा। धर्मराज युधिष्ठिरने तीनो लोकको भयभीत करनेवाले उस भयङ्कर पाञ्चजन्य शङ्खके शब्दको सुनके फिर महाबाहु भीमसेनसे बोले, हे भीमसेन! सुनते हो! यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथिवीं चाऽन्तरिक्षं च विनादयति शङ्खराट् ।
नूनं व्यसनमापन्ने सुमहत्सव्यसाचिनि ॥ २२ ॥
कुरुभिर्युध्यते सार्धं सर्वैश्चक्रगदाधरः ।
आह कुन्ती नूनमार्या पापमद्य निदर्शनम् ॥ २३ ॥
द्रौपदी च सुभद्रा च पश्यन्त्यौ सह बन्धुभिः ।
स भीम त्वरया युक्तो याहि यत्र धनञ्जयः ॥ २४ ॥
मुह्यन्तीव हि मे सर्वा धनञ्जयदिदृक्षया ।
दिशश्च प्रदिशः पार्थ सात्वतस्य च कारणात् ॥ २५ ॥
गच्छ गच्छेति गुरुणा सोऽनुज्ञातो वृकोदरः ।
ततः पाण्डुसुतो राजन्भीमसेनः प्रतापवान् ॥ २६ ॥
बद्धगोधांगुलित्राणः प्रगृहीतशरासनः ।
ज्येष्ठेन प्रहितो भ्रात्रा भ्राता भ्रातुः प्रियङ्करः ॥ २७ ॥
आहत्य दुन्दुभिं भीमः शङ्खं प्रध्माप्य चाऽसकृत् ।
विनद्य सिंहनादेन ज्यां विकर्षन्पुनः पुनः ॥ २८ ॥
तेन शब्देन वीराणां पातयित्वा मनांस्युत ।
दर्शयन्घोरमात्मानममित्रान्सहसाऽभ्ययात् ॥ २९ ॥
तमूहुर्जवना दान्ता विरुवन्तो हयोत्तमाः ।

यदुकुलश्रेष्ठ कृष्ण पाञ्चजन्य शङ्ख बजा रहे हैं; उस ही पाञ्चजन्य शङ्खके शब्द से पृथ्वी आकाश और सम्पूर्ण दिशा अनुनादित होरही हैं । अर्जुन बडे भारी व्यसन में पडे होंगे उसहीसे कृष्ण स्वयं चक्र ग्रहणकर के सम्पूर्ण कौरवोंके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं । (१९—२३)

आज माता कुन्ती, द्रौपदी और सुभद्राके पक्ष में महा अनिष्ट दर्शन हुआ ! हे भीम ! तुम शीघ्र ही अर्जुनके समीप गमन करो । मैं अर्जुनके संवाद पानेकी इच्छासे और सात्यकि के निमित्त बुद्धि रहित होरहा हूं; मुझे सब दिशा सूनी बोध हो रही हैं । (२३—२५)

अनन्तर प्रतापी भीमसेनको जब उनके बडे भ्राता और गुरु धर्मराजने जाव जाव कहके आज्ञा दिया; तब जेठे भाईके प्रियके लिये उन्होंने तलत्राण धारणकर धनुषधारी हो धनुषटङ्कार करके शङ्ख और नगाडे बजवाते हुए बार बार सिंहनाद करके भयङ्कर रूपसे शत्रुओंको भयभीत करते हुए उनकी ओर सहसा गमन किया । (२६—२९)

मन और वायूके समान शीघ्रगामी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशोकेनाऽभिसम्पन्ना मनोमारुतरंहसः ॥ ३० ॥
आरुजन्विरुजन्पार्थो ज्यां विकर्षंश्च पाणिना।
सम्प्रकर्षन्विकर्षंश्च सेनाग्रं समलोडयत् ॥ ३१ ॥
तं प्रयान्तं महाबाहुं पञ्चालाः सहसोमकाः।
पृष्ठतोऽनुययुः शूरा मघवन्तमिवाऽमराः ॥ ३२ ॥
तं समेत्य महाराज तावकाः पर्यवारयन्।
दुःशलश्चित्रसेनश्च कुण्डभेदी विविंशतिः ॥ ३३ ॥
दुर्मुखो दुःसहश्चैव विकर्णश्च शलस्तथा।
विन्दानुविन्दौ सुमुखौ दीर्घबाहुः सुदर्शनः ॥ ३४ ॥
वृन्दारकः सुहस्तश्च सुषेणो दीर्घलोचनः।
अभयो रौद्रकर्मा च सुवर्मा दुर्विमोचनः ॥ ३५ ॥
शोभन्तो रथिनां श्रेष्ठाः सहसैन्यपदानुगाः।
संयत्ताः समरे वीरा भीमसेनमुपाद्रवन् ॥ ३६ ॥
तैः समन्ताद्वृतः शूरैः समरेषु महारथः।
तान्समीक्ष्य तु कौन्तेयो भीमसेनः पराक्रमी।
अभ्यवर्तत वेगेन सिंहः क्षुद्रमृगानिव ॥ ३७ ॥
ते महास्त्राणि दिव्यानि तत्र वीरा अदर्शयन्।

उनके रथके उत्तम घोडे विशोक सारथी के चलाने पर हर्ष पूर्वक हिनहिनाते और भीमसेन के रथको खींचते हुए गमन करने लगे॥ पृथापुत्र भीम अपने हाथसे धनुषटङ्कार करके सेनाके आगे स्थित योद्धाओं को अपने अस्त्रोंसे नाना प्रकार पीडित करके सेनाको विडारते हुए गमन करने लगे॥ तब इन्द्रके पीछे देवोंके समान सोमक और पाञ्चाल वीर भीमके अनुगामी हुए॥ (२९—३२)

महाराज! दुःशासन चित्रसेन, कुंडभेदी, विविंशति, दुर्मुख, दुःसह, विकर्ण, शल, विन्द, अनुविन्द, सुमुख, दीर्घबाहु, सुदर्शन, वृन्दारक, सुहस्त, सुषेण, दीर्घलोचन, अभय, रौद्रकर्मा, सुवर्मा और दुर्विमोचन ये सम्पूर्ण रथियों में श्रेष्ठ पराक्रमी सम्पूर्ण सहोदर भ्राता नाना प्रकारके अनुयायी सेनाके योद्धाओंके सहित दौड कर भीमसेनको घेर कर युद्धभूमिके बीच स्थित हुए। ३३—३६

कुन्तीपुत्र पराक्रमी भीमसेन उन लोगोंको अपनी ओर आते देखके इस प्रकार वेगपूर्वक उनकी ओर दौडे, जैसे सिंह छोटे हरिणोंकी ओर दौडता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छादयन्तः शरैर्भीमं मेघाः सूर्यमिवोदितम् ॥ ३८ ॥
स तानतीत्य वेगेन द्रोणानीकमुपाद्रवत् ।
अग्रतश्च गजानीकं शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ३९ ॥
सोऽचिरेणैव कालेन तद्गजानीकमाशुगैः ।
दिशः सर्वाः समभ्यस्य व्यधमत्पवनात्मजः ॥ ४० ॥
त्रासिताः शरभस्येव गर्जितेन वने मृगाः ।
प्राद्रवन्द्विरदाः सर्वे नदन्तो भैरवान्रवान् ॥ ४१ ॥
पुनश्चाऽतीव वेगेन द्रोणानीकमुपाद्रवत् ।
तमवारयदाचार्यो वेलोद्धूतमिवार्णवम् ॥ ४२ ॥
ललाटेऽताडयच्चैनं नाराचेन स्मयन्निव ।
ऊर्ध्वरश्मिरिवाऽऽदित्यो विबभौ तेन पाण्डवः ॥ ४३ ॥
स मन्यमानस्त्वाचार्यो ममाऽयं फाल्गुनो यथा ।
भीमः करिष्यते पूजामित्युवाच वृकोदरम् ॥ ४४ ॥
भीमसेन न ते शक्या प्रवेष्टुमरिवाहिनी ।
मामनिर्जित्य समरे शत्रुमद्य महाबल ॥ ४५ ॥

जैसे बादलोंका समूह उदय हुए सूर्यको छिपा देता है, वैसे ही वे सम्पूर्ण योद्धा लोग अपने बाणोंसे भीमसेनको छिपाकर दिव्य महा अस्त्रोंको प्रकाशित करने लगे ॥ परन्तु वह वेगपूर्वक उन योद्धाओंको अतिक्रम कर के द्रोणाचार्य की सेनाकी ओर दौडे, और सम्मुख में स्थित गज सेनाके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ (३७–३९)

वायुपुत्र भीमसेनने मुहूर्तभरके बीच उस गजसेनाको अपने बाणोंकी वर्षासे छिन्न भिन्न कर दिया। जैसे वनके बीच शरभके शब्दको सुनकर हरिणोंका समूह भाग जाता है, वैसे ही वे सम्पूर्ण हाथी भीमसेनका भयङ्कर शब्द सुन कर वहांसे भाग गये । अनन्तर भीमसेन शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्यकी सेनाकी ओर दौडे। जैसे समुद्रके वेगको तट रोकता है वैसे ही द्रोणाचार्यने भीमसेनको आगे बढने से रोका। और मानो हंसके द्रोणाचार्यने भीमसेनके ललाटमें बाण विद्ध किया। उससे पाण्डुपुत्र भीमसेन किरणधारी सूर्य के समान प्रकाशित होने लगे। ४०-४३

" जैसे अर्जुन मेरी मानरक्षा करके गये हैं वैसे ही भीमसेन भी करेंगे । " यही विचार कर द्रोणाचार्य उनसे यह वचन बोले, हे भीमसेन ! मैं शत्रु हूं, तुम आज युद्धभूमिमें मुझे विना पराजित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि ते सोऽनुजः कृष्णः प्रविष्टोऽनुमते मम ।
अनीकं न तु शक्यं मे प्रवेष्टुमिह वै त्वया ॥ ४६ ॥
अथ भीमस्तु तच्छ्रुत्वा गुरोर्वाक्यमपेतभीः ।
क्रुद्धः प्रोवाच वै द्रोणं रक्ताम्रेक्षणस्त्वरन् ॥ ४७ ॥
तवार्जुनो नाऽनुमते ब्रह्मबन्धो रणाजिरम् ।
प्रविष्टः स हि दुर्धर्षः शक्रस्याऽपि विशेद्बलम् ॥ ४८ ॥
तेन वै परमां पूजां कुर्वता मानितो ह्यसि ।
नार्जुनोऽहं घृणी द्रोण भीमसेनोऽस्मि ते रिपुः ॥ ४९ ॥
पिता नस्त्वं गुरुर्बन्धुस्तथा पुत्रास्तु ते वयम् ।
इति मन्यामहे सर्वे भवन्तं प्रणताः स्थिताः ॥ ५० ॥
अद्य तद्विपरीतं ते वदतोऽस्मासु दृश्यते ।
यदि त्वं शत्रुमात्मानं मन्यसे तत्तथाऽस्त्विह ॥ ५१ ॥
एष ते सदृशं शत्रोः कर्म भीमः करोम्यहम् ।
अथोद्राम्य गदां भीमः कालदण्डमिवाऽन्तकः ॥ ५२ ॥
द्रोणाय व्यसृजद्राजन्स रथादवपुप्लुवे ।

किये, आगे न जासकोगे ॥ यद्यपि तुम्हारे भाईके सहित कृष्ण मेरी अनुमति के अनुसार प्रविष्ट हुए हैं, परन्तु तुम मेरे समीपसे आगे न जासकोगे । ४४-४६

निडर चित्त भीमसेन द्रोणाचार्यके वचनको सुन, क्रोधसे नेत्र लाल करके गर्म सांस छोडते हुए उनसे बोले ॥ हे अधम ब्राह्मण ! पराक्रमी अर्जुन तुम्हारी अनुमतिसे सेनाके बीच प्रविष्ट हुए हैं यह सम्भव नहीं है, क्योंकि वह इन्द्रसे रक्षित सेनाके बीचमें भी प्रवेश कर सकते हैं ॥ और यदि अर्जुन तुम्हारी पूजा तथा सम्मान करके गये भी हों तो मैं वह दयालु अर्जुन नहीं हूं । मैं भीमसेन तुम्हारा शत्रु हूं ॥ (४५-४९)

हम सब कोई तुम्हें पिता गुरु तथा बन्धु कहके तुम्हारा मान किया करते हैं, और तुम्हारे समीप विनीत भावसे स्थित रहते हैं, परन्तु तुमने आज जैसा वचन कहा, उससे उलटा भाव बोध होता है यदि तुम अपनेको हम लोगोंका शत्रु समझते हो, तो वही होवे, यह भीम भी तुम्हारे शत्रुके अनुरूप ही भयङ्कर कर्म करता रहेगा ॥ (५०-५२)

ऐसा कहके भीमसेनने यमराजके समान क्रुद्ध होकर कालदण्ड समान अपनी भयङ्करी गदा उठा कर द्रोणाचार्यके रथके ऊपर चलाया। द्रोणाचार्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साश्वसूतध्वजं यानं द्रोणस्याऽपोथयत्तदा ॥ ५३ ॥
प्रामृद्नाच्च बहून्योधान्वायुर्वृक्षानिवौजसा ।
तं पुनः परिवव्रुस्ते तव पुत्रा रथोत्तमम् ॥ ५४ ॥
अन्यं तु रथमास्थाय द्रोणः प्रहरतां वरः ।
व्यूहद्वारं समासाद्य युद्धाय समुपस्थितः ॥ ५५ ॥
ततः क्रुद्धो महाराज भीमसेनः पराक्रमी ।
अग्रतः स्यन्दनानीकं शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ५६ ॥
ते वध्यमानाः समरे तव पुत्रा महारथाः ।
भीमं भीमबला युद्धे योधयन्ति जयैषिणः ॥ ५७ ॥
ततो दुःशासनः क्रुद्धो रथशक्तिं समाक्षिपत् ।
सर्वपारसवीं तीक्ष्णां जिघांसुः पाण्डुनन्दनम् ॥ ५८ ॥
आपतन्तीं महाशक्तिं तव पुत्रप्रणोदिताम् ।
द्विधा चिच्छेद तां भीमस्तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ ५९ ॥
अथाऽन्यैर्विशिखैस्तीक्ष्णैः संक्रुद्धः कुण्डभेदिनम् ।
सुषेणं दीर्घनेत्रं च त्रिभिस्त्रीनवधीद्बली ॥ ६० ॥

उसी समय अपने रथसे कूदके पृथक् होगये, परन्तु घोडे सारथी और ध्वजाके सहित उनका रथ चूर्ण होगया और जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे वृक्ष टूट टूट गिर पडते हैं वैसे ही बहुतेरे योद्धा भी उस गदाकी चोटसे नष्ट होगये ॥ ५२-५४

अनन्तर तुम्हारे महारथी पुत्रोंने फिर भीमसेनको घेर लिया ॥ इधर शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य दूसरे रथपर चढके व्यूहके दरवाजेपर युद्धके निमित्त उपस्थित हुए । महाराज ! तिसके अनन्तर भीमसेन अपने संमुख स्थित रथसेनाको तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षासे छिपाने लगे ॥ परन्तु तुम्हारे महारथी पुत्र भीमसेनके बाणोंसे पीडित होकर भी विजयकी इच्छा करके युद्ध करने लगे ॥ (५४—५७)

दुःशासनने क्रुद्ध होकर भीमसेनके वधकी इच्छा करके यमदण्डके समान एक भयङ्करी शक्ति चलाया ॥ भीमने दुःशासनके हाथसे छूटी हुई उस शक्तिको अपनी ओर आती देख, उसे अपने बाणसे दो खण्ड करके गिरा दिया; वह भीमका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पडा ॥ (५८—५९)

अनन्तर भीमसेनने क्रोधपूर्वक अपने तीक्ष्ण बाणोंसे कुण्डभेदी, सुषेण और दीर्घनेत्र इन तीनों भाइयोंका तीन तीन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो वृन्दारकं वीरं कुरूणां कीर्तिवर्धनम् ।
पुत्राणां तव वीराणां युध्यतामवधीत्पुनः ॥ ६१ ॥
अभयं रौद्रकर्माणं दुर्विमोचनमेव च ।
त्रिभिस्त्रीनवधीद्भीमः पुनरेव सुतांस्तव ॥ ६२ ॥
वध्यमाना महाराज पुत्रास्तव बलीयसा ।
भीमं प्रहरतां श्रेष्ठं समन्तात्पर्यवारयन् ॥ ६३ ॥
ते शरैर्भीमकर्माणं ववर्षुः पाण्डवं युधि ।
मेघा इवाऽऽतपापाये धाराभिर्धरणीधरम् ॥ ६४ ॥
स तद्बाणमयं वर्षमश्मवर्षमिवाऽचलः ।
प्रतीच्छन्पाण्डुदायादो न प्राव्यथत शत्रुहा ॥ ६५ ॥
विन्दानुविन्दौ सहितौ सुवर्माणं च ते सुतम् ।
प्रहसन्नेव कौन्तेयः शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ ६६ ॥
ततः सुदर्शनं वीरं पुत्रं ते भरतर्षभ ।
विव्याध समरे तूर्णं स पपात ममार च ॥ ६७ ॥
सोऽचिरेणैव कालेन तद्रथानीकमाशुगैः ।

बाणोंसे वध किया ॥ तुम्हारे पुत्र पराक्रम प्रकाश करते हुए युद्ध कर ही रहे थे उस ही समयमें भीमसेनने उन लोगोंके बीचसे कुरुकुलकी कीर्त्ति बढाने वाले वृन्दारका वध करके फिर अभय, रौद्रकर्मा, और दुर्विमोचन इन तेरे वीर तीन पुत्रोंका तीन तीन बाणोंसे वध किया ॥ (६०—६२)

तुम्हारे पुत्रोंने भीमसेनके बाणोंसे पीडित होकर भी मृत्युका भय त्यागकर उन्हें चारों ओरसे घेर लिया ॥ जैसे ग्रीष्मकालके अनन्तर बादलोंके समूह पृथ्वीपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही उन योद्धाओंने भीमपर अपने बाणोंकी वर्षा किया ॥ शत्रुनाशन भीमसेनने हंसते हंसते शिलाकी वर्षा समान उन शूरवीरोंकी बाणवर्षाको अचल पर्वतके समान युद्धभूमिमें स्थित होकर ग्रहण किया ॥ तुम्हारे पुत्रोंके बाणोंसे विद्ध होकर भीमसेन तानिकभी दुःखित न हुए वरन तुम्हारे पुत्र विन्द अनुविन्द और सुवर्माको हंसते हुए युद्धभूमिमें संहार किया ॥ (६३–६६)

अनन्तर तुम्हारे पुत्र सुदर्शनको भीमसेनने ज्योंही अपने बाणसे विद्ध किया, त्योंही सुदर्शन प्राणरहित होकर पृथ्वीमें गिर पडे ॥ अनन्तर पाण्डुपुत्र भीमसेनने शीघ्र ही उन सम्पूर्ण रथियों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिशः सर्वाः समालोक्य व्यधमत्पाण्डुनन्दनः ॥ ६८ ॥
ततो वै रथघोषेण गर्जितेन मृगा इव ।
भज्यमानाश्च समरे तव पुत्रा विशाम्पते ॥ ६९ ॥
प्राद्रवन्सहसा सर्वे भीमसेनभयार्दिताः ।
अनुयायाच्च कौन्तेयः पुत्राणां ते महद्बलम् ॥ ७० ॥
विव्याध समरे राजन्कौरवेयान्समन्ततः ।
वध्यमाना महाराज भीमसेनेन तावकाः ॥ ७१ ॥
त्यक्त्वा भीमं रणाज्जग्मुश्चोदयन्तो हयोत्तमान् ।
तांस्तु निर्जित्य समरे भीमसेनो महाबलः ॥ ७२ ॥
सिंहनादरवं चक्रे बाहुशब्दं च पाण्डवः ।
तलशब्दं च सुमहत्कृत्वा भीमो महाबलः ॥ ७३ ॥
भीषयित्वा रथानीकं हत्वा योधान्वरान्वरान् ।
व्यतीत्य रथिनश्चापि द्रोणानीकमुपाद्रवत् ॥ ७४ ॥ [५२०९]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमसेनप्रवेशे भीमपराक्रमे सप्तविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२७ ॥

सञ्जय उवाच— समुत्तीर्णरथानीकं पाण्डवं विहसन्रणे ।

की सेनाको चारों ओर तितर बितर कर दिया ॥ (६७—६८)

अनन्तर वहांपर बाकी बचे हुए तुम्हारे पुत्र भीमसेनके बाणोंसे पीडित हो उनके भयङ्कर रथशब्दको सुनकर भयसे व्याकुल होके सिंहके संमुखसे मृगोंके समूहकी भांति भागने लगे । महाबाहु भीमसेन तुम्हारे पुत्रोंके पीछे पीछे गमन करके कुरुसेनाके शूरवीर पुरुषोंको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भीमसेनके अस्त्रोंसे क्षतविक्षत शरीर होकर उन्हें त्याग अपने अपने घोडोंको दौडाकर उनके संमुखसे पृथक् होने लगे ॥ ६८-७२

महाबली भीमसेनने उन योद्धाओंको युद्धभूमिमें पराजित कर उंचे स्वरसे सिंहनाद बाहुशब्द और तलत्राणके भयङ्कर शब्दसे उन सम्पूर्ण रथियोंको भय भीत करके मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध किया । अनन्तर सम्पूर्ण रथियोंको अतिक्रम करके द्रोणाचार्यकी सेनाकी ओर दौडे ॥ (७२—७४) [५२०९]

द्रोणपर्वमें एकसौ सत्ताईस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ अठाईस अध्याय ।

सञ्जय बोले, भीमसेनने जब रथसेनाको अतिक्रम कर द्रोणाचार्यकी ओर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवारयिषुराचार्यः शरवर्षैरवाकिरत् ॥ १ ॥
पिबन्निव शरौघांस्तान्द्रोणचापपरिच्युतान् ।
सोऽभ्यद्रवत सोदर्यान्मोहयन्बलमायया ॥ २ ॥
तं मृधे वेगमास्थाय नृपाः परमधन्विनः ।
चोदितास्तव पुत्रैश्च सर्वतः पर्यवारयन् ॥ ३ ॥
स तैस्तु संवृतो भीमः प्रहसन्निव भारत ।
उद्यच्छन्स गदां तेभ्यः सुघोरां सिंहवन्नदन् ॥ ४ ॥
अवासृजच वेगेन शत्रुपक्षविनाशिनीम् ।
इन्द्राशनिरिवेन्द्रेण प्रविद्धा संहतात्मना ।
प्रामथ्नात्सा महाराज सैनिकांस्तव संयुगे ॥ ५ ॥
घोषेण महता राजन्पूरयन्तीव मेदिनीम् ।
ज्वलन्ती तेजसा भीमा त्रासयामास ते सुतान् ॥ ६ ॥
तां पतन्तीं महावेगां दृष्ट्वा तेजोभिसंवृताम् ।
प्राद्रवंस्तावकाः सर्वे नदन्तो भैरवान्रवान् ॥ ७ ॥
तं च शब्दमसह्यं वै तस्याः संलक्ष्य मारिष ।
प्रापतन्मनुजास्तत्र रथेभ्यो रथिनस्तदा ॥ ८ ॥

गमन किया, तब द्रोणाचार्य हंसते हंसते उन्हें निवारण करनेकी इच्छासे उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ परन्तु भीमसेन द्रोणाचार्यके चलाये हुए बाणोंके प्रवाहको मानो पान करते हुए सेनाके पुरुषोंको मायासे मोहित करके तुम्हारे पुत्रोंकी ओर दौडे ॥ तुम्हारे पुत्रकी आज्ञासे सेनाके मुख्य मुख्य योद्धाओंने शीघ्रताके सहित उन्हें चारों ओरसे घेर लिया ॥ (१—३)

भीमसेनने इस भांतिसे उन मुख्य मुख्य धनुर्द्धारी वीरोंके बीचमें घिरकर हंसके सिंहनाद किया; और शत्रुओंके नाश करने योग्य एक भयङ्करी गदा उठाकर उन योद्धाओंकी ओर चलाया, इन्द्रके वज्रके समान भीमसेनके हाथसे छूटी हुई वह भयङ्करी गदा तुम्हारे सैनिक पुरुषोंका नाश करती हुई घोर शब्दके सहित पृथ्वीमें गिरके तुम्हारे पुत्रोंको भयभीत करने लगी ॥ ४-६

तुम्हारी ओरके दूसरे सम्पूर्ण योद्धा लोग उस प्रकाशमान गदाको वेगपूर्वक अपनी ओर आती देख महाघोर शब्द करते हुए वहांसे भाग गये ॥ कितनेही मनुष्य उस गदाके असह्य शब्दको सुनकर पृथ्वीमें गिर पडे और बहुतेरे रथी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते हन्यमाना भीमेन गदाहस्तेन तावकाः ।
प्राद्रवन्त रणे भीता व्याघ्रघाता मृगा इव ॥ ९ ॥
स तान्विद्राव्य कौन्तेयः संख्येऽमित्रान्दुरासदान् ।
सुपर्ण इव वेगेन पक्षिराडत्यगाच्चमूम् ॥ १० ॥
तथा तु विप्रकुर्वाणं रथयूथपयूथपम् ।
भारद्वाजो महाराज भीमसेनं समभ्ययात् ॥ ११ ॥
भीमं तु समरे द्रोणो वारयित्वा शरोर्मिभिः ।
अकरोत्सहसा नादं पाण्डूनां भयमादधत् ॥ १२ ॥
तद्युद्धमासीत्सुमहद्घोरं देवासुरोपमम् ।
द्रोणस्य च महाराज भीमस्य च महात्मनः ॥ १३ ॥
यदा तु विशिखैस्तीक्ष्णैर्द्रोणचापविनिःसृतैः ।
बध्यन्ते समरे वीराः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १४ ॥
ततो रथादवप्लुत्य वेगमास्थाय पाण्डवः ।
निमील्य नयने राजन्पदातिर्द्रोणमभ्ययात् ॥ १५ ॥
अंसे शिरो भीमसेनः करौ कृत्वोरसि स्थिरौ ।
वेगमास्थाय बलवान्मनोनिलगरुत्मताम् ॥ १६ ॥

भी अपने रथसे पृथ्वीमें गिरे ॥ अनन्तर भीमसेन हाथमें गदा लेकर तुम्हारे ओरके योद्धाओंको इस प्रकार नष्ट करने लगे, कि वे सम्पूर्ण योद्धा लोग सिंहके समान पराक्रमी भीमसेनको देखकर हरिनोंकी भांति भयभीत होकर युद्ध भूमिसे भागने लगे ॥ (७–९)

कुन्तीपुत्र भीमसेन उन सम्पूर्ण योद्धाओंको तितर बितर करके इस प्रकार सेनाके बीच वेग पूर्वक गमन करने लगे; जैसे पक्षिराज गरुड अत्यन्त वेगसे गमन करते हैं ॥ महाराज ! तब रथियोंमें श्रेष्ठ भीमसेनको पुरुषोंका नाश करता देख भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य उनके संमुख उपास्थित हुए ॥ उन्होंने वेग पूर्वक भीमसेनको युद्धसे निवारण करके अपने भयङ्कर सिंहनादसे पाण्डवोंको भयभीत किया ॥ (१०–१२)

महात्मा भीमसेनके सङ्ग उस समय द्रोणाचार्यका देवासुर संग्रामके समान महा घोर युद्ध होने लगा ॥ जब भीमसेन द्रोणाचार्य के धनुष से छूटे हुए सैकडों सहस्रों बाणोंसे पीडित होने लगे, तब रथसे कूदकर क्रोधसे दोनों नेत्र मीलित करके शिरको कंधेपर और दोनों हाथोंको हृदयपर स्थिर करके मन, वायु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथा हि गोवृषो वर्षं प्रतिगृह्णाति लीलया।
तथा भीमो नरव्याघ्रः शरवर्षं समग्रहीत् ॥ १७ ॥
स वध्यमानः समरे रथं द्रोणस्य मारिष।
ईषायां पाणिना गृह्य प्रचिक्षेप महाबलः ॥ १८ ॥
द्रोणस्तु सत्वरो राजन्क्षिप्तो भीमेन संयुगे।
रथमन्यं समारुह्य व्यूहद्वारं ययौ पुनः ॥ १९ ॥
तमायान्तं तथा दृष्ट्वा भग्नोत्साहं गुरुं तदा।
गत्वा वेगात्पुनर्भीमो धुरं गृह्य रथस्य तु ॥ २० ॥
तमप्यतिरथं भीमश्चिक्षेप भृशरोषितः।
एवमष्टौ रथाः क्षिप्ता भीमसेनेन लीलया ॥ २१ ॥
व्यदृश्यत निमेषेण पुनः स्वरथमास्थितः।
दृश्यते तावकैर्योधैर्विस्मयोत्फुल्ललोचनैः ॥ २२ ॥
तस्मिन्क्षणे तस्य यन्ता तूर्णमश्वानचोदयत्।
भीमसेनस्य कौरव्य तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ २३ ॥
ततः स्वरथमास्थाय भीमसेनो महाबलः।

और गरुडके समान वेगको अवलंबन कर द्रोणाचार्यकी ओर चले॥ (१३-१६)

जैसे वृषभ लीलाके अनुसार जलवर्षाकी धारा ग्रहण करता है वैसे ही पुरुष श्रेष्ठ भीमसेनने द्रोणाचार्यकी बाणवर्षाको अनायासही सहन किया॥ महाबली भीमसेन युद्धभूमि में द्रोणाचार्य के बाणोंसे छिप कर भी उनके रथके समीप उपस्थित हुए और रथको उठा कर दूर फेंक दिया॥ (१७—१८)

हे कुरुराज! द्रोणाचार्यका रथ जब भीमसेनके फेंकनेसे दूर गिरा; तब द्रोणाचार्य शीघ्रताके सहित दूसरे रथ पर चढके फिर व्यूहके दरवाजे पर स्थित हुए॥ भीमने जब उत्साहरहित आचार्यको रथमें बैठकर पुनः रणभूमिमें आते हुए देखा तब वेगसे उनकी ओर दौडकर रथकी धुरीको पकडके फिर दूसरी बार रथको फेंक दिया॥ इस प्रकार लीलासे द्रोणाचार्यके आठ रथोंको फेंककर फिर क्षण भरके बीच अपने रथ पर बैठे हुए भीमसेन को तेरे पक्षके योद्धाओंने आश्चर्य युक्त नेत्रोंसे अवलोकन किया॥ (१९—२२)

भीमसेनके सारथीने भी शीघ्रताके सहित उनके रथको आगे बढाया। वह अद्भुतके समान हुआ॥ अनन्तर भीमसेनने अपने रथपर चढके शीघ्रताके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यद्रवत वेगेन तव पुत्रस्य वाहिनीम् ॥ २४ ॥
स मृद्नन्क्षत्रियानाजौ वातो वृक्षानिवोद्धतः ।
आगच्छद्दारयन्सेनां सिन्धुवेगो नगानिव ॥ २५ ॥
भोगानीकं समासाद्य हार्दिक्येनाऽभिरक्षितम् ।
प्रमथ्य तरसा वीरस्तदप्यतिबलोऽभ्ययात् ॥ २६ ॥
सन्त्रासयन्ननीकानि तलशब्देन पाण्डवः ।
अजयत्सर्वसैन्यानि शार्दूल इव गोवृषान् ॥ २७ ॥
भोजानीकमतिक्रम्य दरदानां च वाहिनीम् ।
तथा म्लेच्छगणानन्यान्बहून्युद्धविशारदान् ॥ २८ ॥
सात्यकिं चैव सम्प्रेक्ष्य युध्यमानं महारथम् ।
रथेन यत्तः कौन्तेयो वेगेन प्रययौ तदा ॥ २९ ॥
भीमसेनो महाराज द्रष्टुकामो धनञ्जयम् ।
अतीत्य समरे योधांस्तावकान्पाण्डुनन्दनः ॥ ३० ॥
सोऽपश्यदर्जुनं तत्र युध्यमानं महारथम् ।
सैन्धवस्य वधार्थं हि पराक्रान्तं पराक्रमी ॥ ३१ ॥
तं दृष्ट्वा पुरुषव्याघ्रश्चुक्रोश महतो रवान् ।

सहित तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया ॥ जैसे प्रचण्ड वायु वृक्षोंको उखाडके दूर फेंकता है, वैसे ही भीमसेन क्षत्रिय योद्धाओंको मर्दन करते हुए तथा नदियों का वेग जैसे पर्वतों को विदीर्ण करता हुआ आगे बढता है, उसीतरह आप की सेनाको विदीर्ण करते हुए वेगपूर्वक गमन करने लगे॥ २३-२५

अनन्तर महा बलवान् भीमसेन हृदिकपुत्र कृतवर्माकी सेनाके बीच प्रवेश करके उन योद्धाओंको पीडित करते हुए आगे बढे ॥ शार्दूल जैसे गौवोंके और बैलोंके समूहको पीडित करता है वैसे ही भीमसेन अपने तलत्राण शब्दसे सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको भयभीत करते हुए गमन करने लगे । इसी प्रकार भोजसेना, दरदसेना, म्लेच्छसेना और दूसरी युद्धविद्यामें निपुण बहुतेरी सेनाको अतिक्रम करके भीमसेनने महारथ सात्यकिको देखा। अनन्तर वह यत्नवान होकर अर्जुनके देखनेकी अभिलाषसे तुम्हारे योद्धाओंको अतिक्रम करके वेग पूर्वक रथको चलाकर आगे बढे। २६-३०

अनन्तर कुछ दूर जाके जयद्रथ वधकी इच्छासे युद्ध करनेवाले पराक्रमी अर्जुनको भीमसेनने अवलोकन किया ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रावृट्काले महाराज नर्दन्निव बलाहकः ॥ ३२ ॥
तं तस्य निनदं घोरं पार्थः शुश्राव नर्दतः।
वासुदेवश्च कौरव्य भीमसेनस्य संयुगे ॥ ३३ ॥
तौ श्रुत्वा युगपद्वीरौ निनदं तस्य शुष्मिणः।
पुनः पुनः प्राणदतां दिदृक्षन्तौ वृकोदरम् ॥ ३४ ॥
ततः पार्थो महानादं मुञ्चन्वै माधवश्च ह।
अभ्ययातां महाराज नर्दन्तौ गोवृषाविव ॥ ३५ ॥
भीमसेनरवं श्रुत्वा फाल्गुनस्य च धन्विनः।
अप्रीयत महाराज धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ३६ ॥
विशोकश्चाऽभवद्राजा श्रुत्वा तं निनदं तयोः।
धनञ्जयस्य समरे जयमाशास्तवान्विभुः ॥ ३७ ॥
तथा तु नर्दमाने वै भीमसेने मदोत्कटे।
स्मितं कृत्वा महाबाहुर्धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ३८ ॥
हृद्गतं मनसा प्राह ध्यात्वा धर्मभृतां वरः।
दत्ता भीम त्वया संवित्कृतं गुरुवचस्तथा ॥ ३९ ॥
नहि तेषां जयो युद्धे येषां द्वेष्टाऽसि पाण्डव।

जैसे वर्षाकालके समय बादल गर्जनसे शब्द होता है वैसे ही पुरुषसिंह भीमसेनने अर्जुनको देखकर महाभयङ्कर शब्दके सहित सिंहनाद किया॥ कृष्ण और अर्जुनने भीमसेनके उस भयङ्कर सिंहनादको सुना। (३०—३३)

वे दोनों तेजस्वी वीर भीमसेनके शब्द को सुनकर उसको देखनेकी इच्छा से बार बार शब्द करने लगे॥ तिसके अनन्तर भीमसेन और सात्यकि भयङ्कर शब्द करनेवाले दो वृषभोंके समान महा घोर शब्द करते हुए उनके समीप जानेकी इच्छासे गमन करने लगे॥ महाराज! धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिरने भीमसेन, अर्जुन, सात्यकि और कृष्णके शब्दको सुनकर अर्जुनके विजयकी आशा किया॥ (३४–३७)

मतवारे हाथीके समान जब भीमसेन उस प्रकारसे सिंहनाद कर रहे थे, तब धर्मात्मा पुरुषोंमें अग्रणी धर्मपुत्र महाबाहु युधिष्ठिर उस शब्दको सुनकर हंसे और अपने हृदयके भावको विचार कर मन ही मन चिन्ता करने लगे। हे भीमसेन! तुमने अर्जुन आदिके संवाद को प्रदान करके गुरुकी आज्ञा पालन किया है॥ इससे तुम युद्धमें जिनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्ट्या जीवति संग्रामे सव्यसाची धनञ्जयः ॥ ४० ॥
दिष्ट्या च कुशली वीरः सात्यकिः सत्यविक्रमः ।
दिष्ट्या शृणोमि गर्जन्तौ वासुदेवधनञ्जयौ ॥ ४१ ॥
येन शक्रं रणे जित्वा तर्पितो हव्यवाहनः ।
स हन्ता द्विषतां संख्ये दिष्ट्या जीवति फाल्गुनः ॥ ४२ ॥
यस्य बाहुबलं सर्वे वयमाश्रित्य जीविताः ।
स हन्ता रिपुसैन्यानां दिष्ट्या जीवति फाल्गुनः ॥४३ ॥
निवातकवचा येन देवैरपि सुदुर्जयाः ।
निर्जिता धनुषैकेन दिष्ट्या पार्थः स जीवति ॥ ४४ ॥
कौरवान्सहितान्सर्वान्गोग्रहार्थे समागतान् ।
योऽजयन्मत्स्यनगरे दिष्ट्या पार्थः स जीवति ॥ ४५ ॥
कालकेयसहस्राणि चतुर्दश महारणे ।
योऽवधीद्भुजवीर्येण दिष्ट्या पार्थः स जीवति ॥ ४६ ॥
गन्धर्वराजं बलिनं दुर्योधनकृते च वै ।
जितवान्योऽस्त्रवीर्येण दिष्ट्या पार्थः स जीवति ॥ ४७ ॥
किरीटमाली बलवाञ्श्वेताश्वः कृष्णसारथिः ।

द्वेषी होगे, उनकी विजय न हो सकेगी। युद्धभूमिमें प्रारब्धहीसे सव्यसाची अर्जुन जीवित है ॥ प्रारब्धहीसे सत्य पराक्रमी सात्यकि कुशलपूर्वक युद्धभूमिमें स्थित है। भाग्यहीसे मैंने कृष्ण अर्जुनके सिंहनाद शब्दको सुना है ॥ (३८–४१)

जिन्होंने संग्राममें इन्द्रको पराजित करके अग्निको तृप्त किया है वह शत्रुनाशन अर्जुन प्रारब्धहीसे जीवित है ॥ जिसके बाहुबलके सहारे हम लोग जीते हैं वह शत्रुओंके नाश करनेवाले अर्जुन प्रारब्धसे जीवित हैं॥ जिन्होंने देवताओंसे भी अपराजित निवातकवच दानवोंको एक धनुष ग्रहण करके ही पराजित किया, वह अर्जुन प्रारब्धहीसे जीवित हैं ॥ जिन्होंने मत्स्यदेशमें इकट्ठे हुए गौवोंके हरण करनेवाले सम्पूर्ण कौरवोंको पराजित किया था, वह अर्जुन प्रारब्धहीसे जीवित है ॥ (४२–४५)

जिन्होंने अपने बाहुबलसे चौदह हजार कालकेय असुरोंका महासंग्राममें वध किया वह अर्जुन प्रारब्धहीसे जीवित है ॥ जिन्होंने दुर्योधनके वास्ते गन्धर्वराजको स्वयं पराजित किया; वह अर्जुन प्रारब्धहीसे जीवित है ॥ वह किरीटधारी पराक्रमी मेरा प्यारा भाई अर्जुन कृष्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम प्रियश्च सततं दिष्ट्या पार्थः स जीवति ॥ ४८ ॥
पुत्रशोकाभिसन्तप्तश्चिकीर्षन्कर्म दुष्करम् ।
जयद्रथवधान्वेषी प्रतिज्ञां कृतवान्हि यः ॥ ४९ ॥
कच्चित्स सैन्धवं संख्ये हनिष्यति धनञ्जयः ।
कच्चित्तीर्णप्रतिज्ञं हि वासुदेवेन रक्षितम् ॥ ५० ॥
अनस्तमित आदित्ये समेष्याम्यहमर्जुनम् ।
कच्चित्सैन्धवको राजा दुर्योधनहिते रतः ॥ ५१ ॥
नन्दयिष्यत्यमित्रान्हि फाल्गुनेन निपातितः ।
कच्चिद्दुर्योधनो राजा फाल्गुनेन निपातितम् ॥ ५२ ॥
दृष्ट्वा सैन्धवकं संख्ये शममस्मासु धास्यति ।
दृष्ट्वा विनिहतान्भ्रातॄन्भीमसेनेन संयुगे ।
कच्चिद्दुर्योधनो मन्दः शममस्मासु धास्यति ॥ ५३ ॥
दृष्ट्वा चाऽन्यान्महायोधान्पातितान्धरणीतले ।
कच्चिद्दुर्योधनो मन्दः पश्चात्तापं गमिष्यति ॥ ५४ ॥
कच्चिद्भीष्मेण नो वैरं शममेकेन यास्यति ।
शेषस्य रक्षणार्थं च सन्धास्यति सुयोधनः ॥ ५५ ॥

सारथीके सहित प्रारब्धहीसे जीवित है ॥ (४६–४८)

पुत्रशोकसे कातर होके अत्यन्त कठिन कर्मको करनेकी इच्छासे जयद्रथ वधकी प्रतिज्ञा किया है; परन्तु क्या वह युद्धमें जयद्रथका वध कर सकेंगे ? कृष्णसे रक्षित अर्जुन क्या सूर्य अस्तके पहिले अपनी प्रतिज्ञासे पार होके मेरे समीप आवेंगे ? क्या मैं उन्हें प्रतिज्ञासे पार हुए देखकर उनके सङ्ग मिल सकूंगा ? दुर्योधनके हितकी अभिलाष करने वाला सिन्धुराज जयद्रथ क्या अर्जुनके बाणोंसे मरकर अपने शत्रुओंको आनन्दित करेगा ? राजा दुर्योधन क्या सिन्धुराज जयद्रथको अर्जुनके बाणोंसे मरा हुआ देखकर हम लोगोंके संग सन्धि स्थापित करेगा ? (४९–५३)

युद्धभूमिमें अपने भाइयोंको मरते देख क्या वह मन्द बुद्धिवाला दुर्योधन हम लोगों के सङ्ग सन्धि करेगा ? नीचबुद्धिवाला दुर्योधन क्या दूसरे अनेक योद्धाओंको मरके पृथ्वीमें गिरे देख, पश्चाताप करेगा ? अकेले भीष्मके वधसे ही क्या वह शत्रुता रूपी अग्नि शान्त होवेगी ? बाकी बचे हुए पुरुषोंके जीवन रक्षाके वास्ते क्या दुर्योधन हम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं बहुविधं तस्य राज्ञश्चिन्तायतस्तदा ।
कृपयाऽभिपरीतस्य घोरं युद्धमवर्तत ॥ ५६ ॥ [५२६५]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमसेनप्रवेशे युधिष्ठिरहर्षेऽष्टाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२८

धृतराष्ट्र उवाच- निनदन्तं तथा तं तु भीमसेनं महाबलम् ।
मेघस्तनितनिर्घोषं के वीराः पर्यवारयन् ॥ १ ॥
न हि पश्याम्यहं तं वै त्रिषु लोकेषु कञ्चन ।
क्रुद्धस्य भीमसेनस्य यस्तिष्ठेदग्रतो रणे ॥ २ ॥
गदां युयुत्समानस्य कालस्येवेह सञ्जय ।
न हि पश्याम्यहं युद्धे यस्तिष्ठेग्रतः पुमान् ॥ ३ ॥
रथं रथेन यो हन्यात्कुञ्जरं कुञ्जरेण च ।
कस्तस्य समरे स्थाता साक्षादपि पुरन्दरः ॥ ४ ॥
क्रुद्धस्य भीमसेनस्य मम पुत्राञ्जिघांसतः ।
दुर्योधनहिते युक्ताः समतिष्ठन्त केऽग्रतः ॥ ५ ॥
भीमसेनदवाग्नेस्तु मम पुत्रांस्तृणोपमान् ।

लोगोंके सङ्ग सन्धि स्थापित करेगा ? हे राजेन्द्र ! उस महाघोर संग्रामके समय दयालु राजा युधिष्ठिर इसी भांति अनेक चिन्ता करने लगे ॥ (५३-५६) ५२६५

द्रोणपर्वमें एकसौ अठाइस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ उनतीस अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! बादलके गर्जन समान, सिंहनाद करनेवाला भीमसेन जब उस प्रकार भयङ्कर शब्द कर रहा था, तब किन किन योद्धाओंने उसे युद्धसे निवारण किया ? मैं तीनों लोकके बीच ऐसे किसी पुरुषको भी नहीं देखता हूं, जो क्रोधी भीमसेनके सम्मुख युद्धभूमि में खडा हो सके ॥ भीमसेनको महायुद्धमें कालकी भांति गदा लेकर खडे होनेपर मैं ऐसे किसी वीर पुरुषको नहीं देखता हूं जो युद्धभूमि में उस के सम्मुख खडा हो सके ॥ (१-३)

जो रथसे रथ और हाथियोंसे हाथी नष्ट करता है इन्द्रके समान होकर भी कौन पुरुष उसके सम्मुख खडा होगा ? भीमसेन क्रुद्ध होकर जब मेरे पुत्रोंका वध कर रहा था, तब दुर्योधनके हित की इच्छा करनेवाले कौन कौन शूरवीर योद्धा उसके सम्मुख युद्ध करनेके वास्ते उपस्थित हुए थे ? जब भीमसेन दावाग्निरूपी होकर तृणकाष्ठरूपी मेरे पुत्रोंको भस्म करनेके निमित्त उद्यत हुआ, तब कौन कौन क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधक्षतो रणमुखे केऽतिष्ठन्नग्रतो नराः ॥ ६ ॥
काल्यमानांस्तु पुत्रान्मे दृष्ट्वा भीमेन संयुगे।
कालेनेव प्रजाः सर्वाः के भीमं पर्यवारयन् ॥ ७ ॥
न मेऽर्जुनाद्भयं तादृक्कृष्णान्नापि च सात्वतात्।
हुतभुग्जन्मनो नैव यादृग्भीमाद्भयं मम ॥ ८ ॥
भीमवह्नेः प्रदीप्तस्य मम पुत्रान्दिधक्षतः।
के शूराः पर्यवर्तन्त तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ ९ ॥

सञ्जय उवाच— तथा तु नर्दमानं तं भीमसेनं महाबलम्।
तुमुलेनैव शब्देन कर्णोऽप्यभ्यद्रवद्बली ॥ १० ॥
व्याक्षिपन्सुमहच्चापमतिमात्रममर्षणः।
कर्णः सुयुद्धमाकांक्षन्दर्शयिष्यन्बलं मृधे ॥ ११ ॥
रुरोध मार्गं भीमस्य वातस्येव महीरुहः।
भीमोऽपि दृष्ट्वा सावेगं पुरो वैकर्तनं स्थितम् ॥ १२ ॥
चुकोप बलवद्वीरश्चिक्षेपाऽस्य शिलाशितान्।
तान्प्रत्यगृह्णात्कर्णोऽपि प्रतीपं प्रापयच्छरान् ॥ १३ ॥

पुरुष युद्ध करनेके वास्ते उसके सम्मुख खडे हुए थे ॥ (४–६)

यमराज जैसे सम्पूर्ण प्राणियोंके संहार करनेके वास्ते उद्यत होते हैं वैसे ही भीमसेनको भी कुरुसेनाको पीडित करते देख कौन कौन योद्धा उसे निवारण करने में प्रवृत्त हुए थे ? भीमसेनसे मुझे जैसा भय लगता है, वैसा भय अर्जुन कृष्ण और धृष्टद्युम्न आदिसे नहीं होता है ॥ जब भीमसेनने अग्निके समान प्रज्वलित होकर मेरे पुत्रोंको भस्म करनेकी इच्छा किया, तब कौन कौन योद्धा युद्ध करनेके वास्ते उसके आगे खडे हुए थे; वह वृत्तान्त तुम मेरे समीपमें वर्णन करो॥ ७–९

सञ्जय बोले, महाराज ! जब महाबली पराक्रमी भीमसेन उस प्रकार शब्द कर रहे थे, तब कर्ण उस शब्दको सुनकर उनके सम्मुख उपस्थित हुए॥ महाबली कर्णने अत्यन्त क्रोधित होके अपना प्रचण्ड धनुष चढाकर निज पराक्रम प्रकाशित करते हुए धर्मयुद्ध करके भीमसेनके गमन करनेके मार्गको इस भांति रोका जैसे पर्वत वायुके मार्गको रोकता है ॥ (१०–१२)

भीमसेन महाबली कर्णको यत्नपूर्वक सम्मुख खडे देख अत्यन्त क्रुद्ध हुए और शिलापर घिसे हुए बाणोंके समूह कर्णके ऊपर चलाने लगे। कर्णने भीम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततस्तु सर्वयोधानां यततां प्रेक्षतां तदा ।
प्रावेपन्निव गात्राणि कर्णभीमसमागमे ॥ १४ ॥
रथिनां सादिनां चैव तयोः श्रुत्वा तलस्वनम् ।
भीमसेनस्य निनदं श्रुत्वा घोरं रणाजिरे ॥ १५ ॥
खं च भूमिं च संरुद्धां मेनिरे क्षत्रियर्षभाः ।
पुनर्घोरेण नादेन पाण्डवस्य महात्मनः ॥ १६ ॥
समरे सर्वयोधानां धनूंष्यभ्यपतन्क्षितौ ।
शस्त्राणि न्यपतन्दोर्भ्यः केषांचिच्चाऽसवोऽद्रवन् ॥१७॥
वित्रस्तानि च सर्वाणि शकृन्मूत्रं प्रसुस्रुवुः ।
वाहनानि च सर्वाणि बभूवुर्विमनांसि च ॥ १८ ॥
प्रादुरासन्निमित्तानि घोराणि सुबहून्युत ।
गृध्रकङ्कबलैश्चाऽऽसीदन्तरिक्षं समावृतम् ॥ १९ ॥
तस्मिन्सुतुमुले राजन्कर्णभीमसमागमे ।
ततः कर्णस्तु विंशत्या शराणां भीममार्दयत् ॥ २० ॥
विव्याध चाऽस्य त्वरितः सूतं पञ्चभिराशुगैः ।
प्रहस्य भीमसेनोऽपि कर्णं प्रत्याद्रवद्रणे ॥ २१ ॥

सेनके चलाये हुए बाणोंके वेगको सहके उनके ऊपर अनेक बाण चलाये ॥ युद्धमें भीमसेनके सङ्ग कर्णका समागम देख और उन दोनोंके तलत्राण शब्द सुनकर रथी घुडसवार और दूसरे सम्पूर्ण योद्धा लोग भयसे कांपने लगे । भीमसेनके भयङ्कर शब्दको सुनकर क्षत्रियोंने आकाश और पृथ्वीको अवरुद्ध हुई समझा ॥ (१२–१६)

महात्मा भीमसेनके बार बार गर्जन शब्दको सुनकर कितने ही योद्धाओंके हाथसे धनुष तथा शस्त्रास्त्र छूटकर पृथ्वीमें गिर पडे; और कितनोंके आखोंसे आंसू द्रवने लगे ॥ तथा घोडे हाथी आदि वाहन भयभीत होकर मलमूत्र त्याग करने लगे । उस समय सम्पूर्ण वाहन खिन्न होगये ॥ भीमसेनके सङ्ग जब कर्णका महा घोर तुमुल संग्राम होने लगा, तब उस समय महा भयङ्कर उत्पात और अशकुन प्रकट हुए । गिद्ध कौवे और बगुले आदि मांस भक्षण करनेवाले पक्षियोंसे आकाश परिपूरित होगया ॥ (१६–२०)

तिसके अनन्तर कर्णने वीस बाणोंसे भीमसेनको पीडित करके शीघ्रताके सहित पांच बाणोंसे उनके सारथीको-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायकानां चतुःषष्ट्या क्षिप्रकारी महायशाः ।
तस्य कर्णो महेष्वासः सायकांश्चतुरोऽक्षिपत् ॥ २२ ॥
असम्प्राप्तांश्च तान्भीमः सायकैर्नतपर्वभिः ।
चिच्छेद बहुधा राजन्दर्शयन्पाणिलाघवम् ॥ २३ ॥
तं कर्णश्छादयामास शरव्रातैरनेकशः ।
सञ्छाद्यमानः कर्णेन बहुधा पाण्डुनन्दनः ॥ २४ ॥
चिच्छेद चापं कर्णस्य मुष्टिदेशे महारथः ।
विव्याध चैनं बहुभिः सायकैर्नतपर्वभिः ॥ २५ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय सज्यं कृत्वा च सूतजः ।
विव्याध समरे भीमं भीमकर्मा महारथः ॥ २६ ॥
तस्य भीमो भृशं क्रुद्धस्त्रीञ्शरान्नतपर्वणः ।
निचखानोरसि क्रुद्धः सूतपुत्रस्य वेगतः ॥ २७ ॥
तैः कर्णोऽराजत शरैरुरोमध्यगतैस्तदा ।
महीधर इवोदग्रस्त्रिशृङ्गो भरतर्षभ ॥ २८ ॥
सुस्राव चाऽस्य रुधिरं विद्धस्य परमेषुभिः ।
धातुप्रस्यन्दिनः शैलाद्यथा गैरिकधातवः ॥ २९ ॥
किञ्चिद्विचलितः कर्णः सुप्रहाराभिपीडितः ।

विद्ध किया। प्रहार करनेवाले महाबलवान् भीमसेनने हंसकर चौसठ बाणोंसे कर्णको विद्ध किया। अनन्तर महाबली कर्णने भीमकी ओर चार बाण चलाये॥ भीमसेनने अपना हस्तलाघव दिखाते हुए कर्णके चलाये उन बाणोंको समीप न आते आते ही नतपर्व बाणोंसे मार्ग ही में काटके गिरा दिया। (२१–२३)

अनन्तर कर्णने अनगिनत बाण चलाकर भीमसेनको छिपा दिया। भीमसेनने कर्णके बाण जालसे छिपकर उनके धनुषकी मुट्ठी काट दिया; और बहुतसे नतपर्व बाणोंसे कर्णको विद्ध किया॥ भयङ्कर कर्मोंके करनेवाले महारथी सूतपुत्र कर्णने दूसरा धनुष ग्रहण करके भीमसेनको विद्ध किया॥ (२४–२६)

भीमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर वेगशील कर्णके वक्षस्थलमें तीन नतपर्व बाणोंसे प्रहार किया॥ उन तीनों बाणोंसे विद्ध होकर महात्मा कर्ण उस समय तीन ऊंचे शृङ्गवाले पर्वतके समान शोभित होने लगे॥ जैसे पर्वतके ऊपरसे गेरुकी धारा बहती है, वैसेही भीमसेनके बाणोंसे विद्ध होकर कर्णके शरीरसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्णपूर्णमाकृष्य भीमं विव्याध सायकैः ॥ ३० ॥
चिक्षेप च पुनर्बाणाञ्शतशोऽथ सहस्रशः ।
स शरैरर्दितस्तेन कर्णेन दृढधन्विना ।
धनुर्ज्यामच्छिनत्तूर्णं भीमस्तस्य क्षुरेण ह ॥ ३१ ॥
सारथिं चाऽस्य भल्लेन रथनीडादपातयत् ।
वाहांश्च चतुरस्तस्य व्यसूंश्चक्रे महारथः ॥ ३२ ॥
हताश्वात्तु रथात्कर्णः समप्लुत्य विशाम्पते ।
स्यन्दनं वृषसेनस्य तूर्णमापुप्लुवे भयात् ॥ ३३ ॥
निर्जित्य तु रणे कर्णं भीमसेनः प्रतापवान् ।
ननाद बलवन्नादं पर्जन्यनिनदोपमम् ॥ ३४ ॥
तस्य तं निनदं श्रुत्वा प्रहृष्टोऽभूद्युधिष्ठिरः ।
कर्णं पराजितं मत्वा भीमसेनेन संयुगे ॥ ३५ ॥
समन्ताच्छङ्खनिनदं पाण्डुसेनाऽकरोत्तदा ।
शत्रुसेनाध्वनिं श्रुत्वा तावका ह्यनदन्भृशम् ॥ ३६ ॥
स शङ्खबाणनिनदैर्हर्षाद्राजा स्ववाहिनीम् ।
चक्रे युधिष्ठिरः संख्ये हर्षनादैश्च संकुलाम् ॥ ३७ ॥

रुधिर धारा बहने लगी ॥ कर्ण भीमके बाणोंसे किंचित् पीडित होकर तनिक भी विचलित न हुए और धनुषपर बाण चढाकर भीमसेनको विद्ध करने लगे ॥ (२७-३०)

कर्णने फिर सौ सौ हजार बाण भीमसेनकी ओर चलाये। दृढ धनुर्द्धारी कर्णके बाणोंसे छिपकर भीमने गर्व प्रकाश करते कर्णके धनुषको एक क्षुर बाणसे काट दिया; और एक भल्लसे उनके सारथीका वध करके उसे यमपुरीमें भेज दिया, तिसके अनन्तर भीमसेनने कर्णके रथके चारों घोडोंको मार डाला ॥ महारथी कर्ण घोडोंसे रहित रथसे कूदके भयसे वृषसेनके रथपर जा चढे ॥ (३१-३३)

महा प्रतापी भीमसेनने इसी प्रकार कर्णको पराजित करके बादल गर्जनके समान महाभयङ्कर सिंहनाद किया; उस सिंहनादको सुनकर राजा युधिष्ठिर अत्यन्त ही आनन्दित हुए ॥ पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंने कर्णको भीमसेनसे पराजित हुए देखकर चारों ओरसे अपने शंख बजाये। तुम्हारी ओरके योद्धाओंने शत्रुओंके शब्दको सुनकर महाघोर शब्द किया ॥ (३४—३६)

उस शंख और बाणोंके शब्दको सुन-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाण्डीवं व्याक्षिपत्पार्थः कृष्णोऽप्यञ्जमवादयत् ।
तमन्तर्धाय निनदं भीमस्य नदतो ध्वनिः
अश्रूयत तदा राजन्सर्वसैन्येषु दारुणः ॥ ३८ ॥
ततो व्यायच्छतामस्त्रैः पृथक्पृथगजिह्मगैः ।
मृदुपूर्वं तु राधेयो दृढपूर्वं तु पाण्डवः ॥ ३९ ॥ [५३०४]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमप्रवेशे कर्णपराजये एकोनत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२९ ॥

सञ्जय उवाच-- तस्मिन्विलुलिते सैन्ये सैन्धवायार्जुने गते ।
सात्वते भीमसेने च पुत्रस्ते द्रोणमभ्ययात् ॥ १ ॥
त्वरन्नेकरथेनैव बहु कृत्यं विचिन्तयन् ।
स रथस्तव पुत्रस्य त्वरया परयाऽयुतः ॥ २ ॥
तूर्णमभ्यद्रवद् द्रोणं मनोमारुतवेगवान् ।
उवाच चैनं पुत्रस्ते संरम्भाद्रक्तलोचनः ॥ ३ ॥
ससम्भ्रममिदं वाक्यमब्रवीत्कुरुनन्दनः ।
अर्जुनो भीमसेनश्च सात्यकिश्चाऽपराजितः ॥ ४ ॥

कर राजा युधिष्ठिर हर्षसे पूर्ण हुए और अपने हर्षयुक्त शब्दोंसे सेनाको पूर्ण करने लगे। अर्जुनने गाण्डीव धनुष चढाके धनुष टङ्कार किया और कृष्णने पाञ्चजन्य शंख बजाये। परन्तु भीमसेनके गर्जनका शब्द सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंको अतिक्रम करके युद्धभूमिमें सुनाई देने लगा । तिसके अनन्तर कर्ण और भीमसेन पृथक् रूपसे युद्ध करते हुए रणभूमिमें घूमने लगे। महारथी कर्ण कोमल रीतिसे और भीमसेन पूर्ण पराक्रमके सहित रणभूमि में घूमते हुए युद्ध करने लगे। ३७-३९

द्रोणपर्वमें एकसौ उनतीस अध्याय समाप्त । ५३०४

द्रोणपर्वमें एकसौ तीस अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! सिन्धुराज जयद्रथके वधके निमित्त अर्जुन सात्यकि और भीमसेनने जब तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश किया, तब तुम्हारी सम्पूर्ण सेना व्याकुल होके तितर बितर होने लगी ॥ तब तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने विशेष प्रयोजनीय कार्यकी चिन्ता करके शीघ्रताके सहित रथपर चढकर द्रोणाचार्यके निकट जानेकी इच्छासे प्रस्थान किया । वायु तथा मनके समान वेगशील दुर्योधनका रथ शीघ्र ही द्रोणाचार्यके समीप उपस्थित हुआ ॥ (१-३)

दुर्योधन क्रोधसे नेत्र लाल करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजित्य सर्वसैन्यानि सुमहान्ति महारथाः।
सम्प्राप्ताः सिन्धुराजस्य समीपमनिवारिताः ॥ ५ ॥
व्यायच्छन्ति च तत्रापि सर्व एवाऽपराजिताः।
यदि तावद्रणे पार्थो व्यतिक्रान्तो महारथः ॥ ६ ॥
कथं सात्यकिभीमाभ्यां व्यतिक्रान्तोऽसि मानद।
आश्चर्यभूतं लोकेऽस्मिन्समुद्रस्येव शोषणम् ॥ ७ ॥
निर्जयस्तव विप्राग्र्य सात्वतेनाऽर्जुनेन च।
तथैव भीमसेनेन लोकः संवदते भृशम् ॥ ८ ॥
कथं द्रोणो जितः संख्ये धनुर्वेदस्य पारगः।
इत्येवं ब्रुवते योधा अश्रद्धेयमिदं तव ॥ ९ ॥
नाश एव तु मे नूनं मन्दभाग्यस्य संयुगे।
यत्र त्वां पुरुषव्याघ्रं व्यतिक्रान्तास्त्रयो रथाः ॥ १० ॥
एवङ्गते तु कृत्येऽस्मिन्ब्रूहि यत्ते विवक्षितम्।
यद्गतं गतमेवेदं शेषं चिन्तय मानद ॥ ११ ॥
यत्कृत्यं सिन्धुराजस्य प्राप्तकालमनन्तरम्।
तत्संविधीयतां क्षिप्रं साधु संचिन्त्य नो द्विज ॥ १२ ॥

द्रोणाचार्यसे बोले, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! अर्जुन सात्यकि और भीमसेन इन तीनों महारथियोंने सम्पूर्ण सेनाको पराजित करके सिन्धुराज जयद्रथके समीप तक गमन किया है। और ये तीनों ही महारथी युद्ध करते हुए रणभूमिमें भ्रमण कर रहे हैं। यदि मानलें, कि महाबली पराक्रमी अर्जुनने युद्धमें तुम्हें अतिक्रम करके गमन किया है; परन्तु सात्यकि और भीमसेनने किस प्रकार तुम्हें अतिक्रम करके मेरी सेना के बीच प्रवेश किया है ॥ (३-७)

हे विप्रश्रेष्ठ ! इस लोकमें आपको जीतना तो समुद्रके सूखानेके समान अद्भुत हुआ है ॥ सम्पूर्ण योद्धा तुम्हारे विषयमें यह वचन कह रहे हैं, कि धनुर्वेद जानने वाले द्रोणाचार्य किस प्रकार युद्धभूमिमें पराजित हुए हैं ? आप पुरुषसिंह हैं; जो आपको इन तीनों महारथियोंने अतिक्रम करके गमन किया है, तब मेरी प्रारब्ध ही खोटी हुई है; मैं ऐसा ही समझ रहा हूं। इससे युद्धभूमिमें अवश्य ही मेरी मृत्यु होगी। इस समय आप मेरे कल्याणके वास्ते विचार कीजिये। इस उपस्थित कार्यके विषयमें जो कुछ कहना हो, वह मुझसे कहिये और सिन्धुराज जयद्रथके विषयमें जो कुछ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोण उवाच— चिन्त्यं बहुविधं तात यत्कृत्यं तच्छृणुष्व मे।
त्रयो हि समतिक्रान्ताः पाण्डवानां महारथाः ॥ १३ ॥
यावत्तेषां भयं पश्चात्तावदेषां पुरःसरम्।
तद्वरीयस्तरं मन्ये यत्र कृष्णधनञ्जयौ ॥ १४ ॥
सा पुरस्ताच्च पश्चाच्च गृहीता भारती चमूः।
तत्र कृत्यमहं मन्ये सैन्धवस्याऽभिरक्षणम् ॥ १५ ॥
स नो रक्ष्यतमस्तात क्रुद्धाद्भीतो धनञ्जयात्।
गतौ च सैन्धवं भीमौ युयुधानवृकोदरौ ॥ १६ ॥
सम्प्राप्तं तदिदं द्यूतं यत्तच्छकुनिबुद्धिजम्।
न सभायां जयो वृत्तो नापि तत्र पराजयः ॥ १७ ॥
इह नो ग्लहमानानामद्य तावज्जयाजयौ।
यान्स्म तान्ग्लहते घोराञ्छकुनिः कुरुसंसदि ॥ १८ ॥
अक्षान्स मन्यमानः प्राक्शरास्ते हि दुरासदाः।

कर्त्तव्य कार्य करना हो आप उसका विधान कीजिये॥ (८—१२)

द्रोणाचार्य बोले, हे राजन्! चिन्ताके बहुतसे विषय हुए हैं परन्तु इस समय जो कुछ कर्त्तव्य कार्य करना होगा, उसे सुनिये। जब पाण्डवोंकी ओरके तीन महारथियोंने व्यूहके बीच प्रवेश किया है तब व्यूहसे पीछे और बीचमें दोनों स्थलों पर भयकी संभावना हुई है, परन्तु इन दोनों स्थानोंके बीच जहां पर कृष्ण अर्जुन हैं; उन ही स्थानोंको दृढ रखनेका विचार उत्तम बोध होता है॥ यद्यपि कुरुसेनाके आगे और पीछेका हिस्सा शत्रुओंसे आक्रान्त हुआ है, तौ भी सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करना ही मुख्य कार्य बोध होता है; क्योंकि सिन्धु राज जयद्रथ अकेले क्रोधी अर्जुनसे ही भयभीत हुए हैं; उस पर भी सात्यकि और भीमसेनने अर्जुनके समीप गमन किया है, इससे सबसे पहिले सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करना ही हम लोगोंका कर्त्तव्य कार्य है॥ (१३—१६)

हे तात! शकुनिके बुद्धिसे जो सभामें जूएका खेल हुआ था उसका फल इस समय उपस्थित हुआ है उस जूएकी खेलमें जो जीत और हार होती है वह प्रकृत जीत हार नहीं कही जाती। आज हम लोग पण (बाजी) रखके जूएकी खेलमें प्रवृत्त हुए हैं इसी जूएकी खेलमें जीत हार होनी ही प्रकृत जीतहार समझी जावेगी। शकुनिने कुरुसभामें पणकर जिन भयङ्कर पासों-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्र ते बहवस्तात कौरवेया व्यवस्थिताः ॥ १९ ॥
सेनां दुरोदरं विद्धि शरानक्षान्विशाम्पते ।
ग्लहं च सैन्धवं राजंस्तत्र द्यूतस्य निश्चयः ॥ २० ॥
सैन्धवे तु महद्भूतं समासक्तं परैः सह ।
अत्र सर्वे महाराज त्यक्त्वा जीवितमात्मनः ॥ २१ ॥
सैन्धवस्य रणे रक्षां विधिवत्कर्तुमर्हथ ।
तत्र नो ग्लहमानानां ध्रुवौ जयपराजयौ ॥ २२ ॥
यत्र ते परमेष्वासा यत्ता रक्षन्ति सैन्धवम् ।
तत्र गच्छ स्वयं शीघ्रं तांश्च रक्षस्व रक्षिणः ॥ २३ ॥
इहैव त्वहमासिष्ये प्रेषयिष्यामि चाऽपरान् ।
निरोत्स्यामि च पञ्चालान्सहितान्पाण्डुसृञ्जयैः ॥ २४ ॥
ततो दुर्योधनोऽगच्छत्तूर्णमाचार्यशासनात् ।
उद्यम्याऽऽत्मानमुग्राय कर्मणे सपदानुगः ॥ २५ ॥
चक्ररक्षौ तु पाञ्चाल्यौ युधामन्यूत्तमौजसौ ।

को ग्रहण करके जूआ खेला था वे सब पासे नहीं हैं वे हम लोगोंके शरीरको भेदनेवाले चोखे बाण हैं । महाराज ! आज इस युद्धको तुम जूएका खेल हीं समझो यह जो सम्पूर्ण कौरवोंकी सेना है उसे कोठे और बाणोंको ही अक्ष (पासे) समझो । इस जूएकी खेलमें तुम जयद्रथको पण (बाजी) रूपी जानो क्योंकि उस ही को लेकर आज महाघोर युद्ध होरहा है ॥ (१७-२१)

उनकी प्राणरक्षा वा प्राणनाशसे ही इस युद्धरूपी जुएकी खेलमें जीत हार समझी जावेगी । इससे इस समय सब कोई अपने प्राणकी आशा त्याग कर सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा करनेके वास्ते युद्ध करनेको युद्धभूमिमें तत्पर होजाओ। हे वीर ! जहां पर सम्पूर्ण महाधनुर्धर योद्धा लोग यत्नवान् होकर सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षा कर रहे हैं, तुम उस ही स्थानमें जाकर अपनी ओरके महारथ वीरोंकी रक्षा करो ॥ और मैं वहांपर तुम्हारी सहायताके वास्ते बहुतेरे शूरवीर पुरुषोंको यहांसे भेजूंगा । मैं यहां स्थित होकर पाण्डवोंके सहित पाञ्चाल योद्धाओं को निवारण करूंगा ॥ (२१-२४)

हे राजन् ! अनन्तर राजा दुर्योधनने द्रोणाचार्यकी आज्ञा अनुसार अत्यन्त कठिन कर्म करनेके वास्ते तैयार होकर अपने अनुयायी योद्धाओंके सहित युद्ध करनेके निमित्त प्रस्थान किया ॥ पहिले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाह्येन सेनामभ्येत्य जग्मतुः सव्यसाचिनम् ॥ २६ ॥
यौ तु पूर्वं महाराज वारितौ कृतवर्मणा।
प्रविष्टे त्वर्जुने राजंस्तव सैन्यं युयुत्सया ॥ २७ ॥
पार्श्वे भित्त्वा चमूं वीरौ प्रविष्टौ तव वाहिनीम्।
पार्श्वेन सैन्यमायान्तौ कुरुराजो ददर्श ह ॥ २८ ॥
ताभ्यां दुर्योधनः सार्धमकरोत्संख्यमुत्तमम्।
त्वरितस्त्वरमाणाभ्यां भ्रातृभ्यां भारतो बली ॥ २९ ॥
तावेनमभ्यद्रवतामुभावुद्यतकार्मुकौ।
महारथसमाख्यातौ क्षत्रियप्रवरौ युधि ॥ ३० ॥
तमविध्यद्युधामन्युस्त्रिंशता कङ्कपत्रिभिः।
विंशत्या सारथिं चाऽस्य चतुर्भिश्चतुरो हयान् ॥ ३१ ॥
दुर्योधनो युधामन्योर्ध्वजमेकेषुणाऽच्छिनत्।
एकेन कार्मुकं चाऽस्य चकर्त तनयस्तव ॥ ३२ ॥
सारथिं चाऽस्य भल्लेन रथनीडादपाहरत्।
ततोऽविध्यच्छरैस्तीक्ष्णैश्चतुर्भिश्चतुरो हयान् ॥ ३३ ॥
युधामन्युश्च संक्रुद्धः शरांस्त्रिंशतमाहवे।

जिस समय अर्जुनने युद्ध करनेकी इच्छासे तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश किया था, उस समय उनके दोनों चक्ररक्षक शीघ्र अस्त्र चलानेवाले युधामन्यु और उत्तमौजा कृतवर्मासे निवारित हुए थे;इस समय वे दोनों सेनाके बाहरसे अर्जुनके समीप जानेकी इच्छासे गमन कर रहे थे। बलवान् राजा दुर्योधन उन दोनोंको सेनाके बगलसे व्यूहबद्ध अपनी सेनामें घुसते देख शीघ्रताके सहित उन लोगोंके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए॥ २५-२९

युद्धमें वेगवान् वे दोनों भाई भी धनुष चढाकर दुर्योधनकी ओर दौडे। युधामन्युने कङ्कपत्रयुक्त तीस बाणोंसे कुरुराज दुर्योधनको विद्ध करके बीस बाणोंसे उनके सारथी और चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोडोंको विद्ध किया॥ दुर्योधनने भी एक बाणसे युधामन्युकी ध्वजा एक बाणसे धनुष और एक भल्लसे उनके सारथीको काटके पृथ्वीमें गिराया; तिसके अनन्तर दुर्योधनने चार तीक्ष्ण बाणोंसे उनके रथके चारों घोडोंको विद्ध किया॥ (३०-३३)

अनन्तर युधामन्युने अत्यन्त कुपित होकर अत्यन्त तीक्ष्ण तीस बाणोंको ग्रहण करके दुर्योधनके हृदयमें प्रहार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यसृजत्तव पुत्रस्य त्वरमाणः स्तनान्तरे ॥ ३४ ॥
तथोत्तमौजाः संक्रुद्धः शरैर्हेमविभूषितैः ।
अविध्यत्सारथिं चाऽस्य प्राहिणोद्यमसादनम् ॥ ३५ ॥
दुर्योधनोऽपि राजेन्द्र पाञ्चाल्यस्योत्तमौजसः ।
जघान चतुरोऽस्याऽश्वानुभौ तौ पार्ष्णिसारथी ॥ ३६ ॥
उत्तमौजा हताश्वस्तु हतसूतश्च संयुगे ।
आरुरोह रथं भ्रातुर्युधामन्योरभित्वरन् ॥ ३७ ॥
स रथं प्राप्य तं भ्रातुर्दुर्योधनहयाञ्शरैः ।
बहुभिस्ताडयामास ते हताः प्रापतन्भुवि ॥ ३८ ॥
हयेषु पतितेष्वस्य चिच्छेद परमेषुणा ।
युधामन्युर्धनुः शीघ्रं शरावापं च संयुगे ॥ ३९ ॥
हताश्वसूतात्स रथादवतीर्य नराधिपः ।
गदामादाय ते पुत्रः पाञ्चाल्यावभ्यधावत ॥ ४० ॥
तमापतन्तं संप्रेक्ष्य क्रुद्धं कुरुपतिं तदा ।
अवप्लुतौ रथोपस्थाद्युधामन्यूत्तमौजसौ ॥ ४१ ॥
ततः स हेमचित्रं तं गदया स्यन्दनं गदी ।

किया; और उत्तमौजाने भी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे राजा दुर्योधनके सारथी का वध किया ॥ हे राजेन्द्र ! दुर्योधन ने उत्तमौजाके चारों घोडे और दो पृष्ठ रक्षक योद्धाओंका वध किया। ३४–३६

रणभूमिमें जब उत्तमौजाके रथके घोडे और सारथी मारे गये; तब वह घोडोंसे रहित रथको त्यागके अपने भाईके रथपर चढ गये ॥ उन्होंने अपने भाईके रथपर चढके अनेक बाणोंसे राजा दुर्योधनके रथके घोडोंके ऊपर प्रहार किया, अनेक बाणोंकी चोटसे दुर्योधनके घोडे प्राणरहित होकर उस ही समय पृथ्वीमें गिर पडे ॥ दुर्योधनके रथके घोडोंको मरते देखकर युधामन्युने अपने अस्त्रोंके बलसे शीघ्र ही दुर्योधनके धनुष और बाणोंके भातेको काट दिया ॥ (३७–३९)

पुरुषश्रेष्ठ दुर्योधन घोडे सारथीसे रहित रथको त्यागके गदा उठाकर दोनों पाञ्चालराजपुत्रोंकी ओर दौडे,युद्धामन्यु और उत्तमौजा शत्रुनाशन दुर्योधनको गदा लिये अपनी ओर आते देख रथसे कूदकर पृथ्वीपर स्थित हुए ॥ तिसके अनन्तर कुरुराज दुर्योधनने सुवर्ण चित्रित उस रथको घोडे, सारथी और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्रुद्धः पोथयामास साश्वसूतध्वजं नृप ॥ ४२ ॥
भंक्त्वा रथं स पुत्रस्ते हताश्वो हतसारथिः।
मद्रराजरथं तूर्णमारुरोह परन्तपः ॥ ४३ ॥
पञ्चालानां ततो मुख्यौ राजपुत्रौ महारथौ।
रथावन्यौ समारुह्य बीभत्सुमभिजग्मतुः ॥ ४४ ॥ [५३४८]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि दुर्योधनयुद्धे त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १३० ॥

सञ्जय उवाच— वर्तमाने महाराज संग्रामे लोमहर्षणे।
व्याकुलेषु च सर्वेषु पीड्यमानेषु सर्वशः ॥ १ ॥
राधेयो भीममानर्च्छद्युद्धाय भरतर्षभ।
यथा नागो वने नागं मत्तो मत्तमभिद्रवन् ॥ २ ॥
धृतराष्ट्र उवाच—यौ तौ कर्णश्च भीमश्च संप्रयुद्धौ महाबलौ।
अर्जुनस्य रथोपान्ते कीदृशः सोऽभवद्रणः ॥ ३ ॥
पूर्वं हि निर्जितः कर्णो भीमसेनेन संयुगे।
कथं भूयः स राधेयो भीममागान्महारथः ॥ ४ ॥
भीमो वा सूततनयं प्रत्युद्यातः कथं रणे।

ध्वजाके सहित अपनी गदाके प्रहारसे चूरचूर कर दिया। तुम्हारे पुत्र दुर्योधन स्वयं रथहीन होकर भी पाञ्चाल राजपुत्रके रथको गदाके प्रहारसे चूर चूर करके शीघ्रताके सहित मद्रराज शल्यके रथपर जाचढे और उन दोनों पाञ्चाल राजपुत्रोंने भी दूसरे रथपर चढके अर्जुनके समीप गमन किया ॥ (४०–४४)

द्रोणपर्वमें एकसौ तीस अध्याय समाप्त। ५३४८

द्रोणपर्वमें एकसौ इकतीस अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! इस प्रकार रोएं को खडा करनेवाले भयङ्कर संग्रामके उपस्थित होनेपर सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग शत्रुओंके बाणोंसे पीडित होकर व्याकुल होने लगे॥ तब जैसे वनके बीच एक मतवारे हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी ओर दौडता है, वैसे ही राधापुत्र कर्ण युद्ध करनेकी इच्छासे भीमसेनकी ओर दौडे॥ (१–२)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! युद्ध करनेके वास्ते एक दूसरेके सम्मुख होने वाले कर्ण और भीमसेन दोनों ही बलवान् हैं; इससे अर्जुनके रथके निकट उन दोनोंका किस प्रकार युद्ध हुआ, उसे मेरे समीप तुम विस्तार पूर्वक वर्णन करो॥ कर्ण पहिले भीमसेनके निकट पराजित हुए थे तब उन्होंने फिर किस प्रकारसे उनके समीप युद्ध करनेके वास्ते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महारथं समाख्यातं पृथिव्यां प्रवरं रथम् ॥ ५ ॥
भीष्मद्रोणावतिक्रम्य धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
नाऽन्यतो भयमादत्त विना कर्णान्महारथात् ॥ ६ ॥
भयाद्यस्य महाबाहो न शेते बहुलाः समाः ।
चिन्तयन्नित्यशो वीर्यं राधेयस्य महात्मनः ।
तं कथं सूतपुत्रं तु भीमोऽयोधयताऽऽहवे ॥ ७ ॥
ब्रह्मण्यं वीर्यसम्पन्नं समरेष्वनिवर्तिनम् ।
कथं कर्णं युधां श्रेष्ठं योधयामास पाण्डवः ॥ ८ ॥
यौ तौ समीयतुर्वीरौ वैकर्तनवृकोदरौ ।
कथं तावत्र युध्येतां महाबलपराक्रमौ ॥ ९ ॥
भ्रातृत्वं दर्शितं पूर्वं घृणी चापि स सूतजः ।
कथं भीमेन युयुधे कुन्त्या वाक्यमनुस्मरन् ॥ १० ॥
भीमो वा सूतपुत्रेण स्मरन्वैरं पुराकृतम् ।
अयुध्यत कथं शूरः कर्णेन सह संयुगे ॥ ११ ॥
आशास्ते च सदा सूत पुत्रो दुर्योधनो मम ।

गमन किया ? और जो महारथी सम्पूर्ण पृथ्वीके बीच रथियोंमें श्रेष्ठ कहके विख्यात है भीमसेन भी किस प्रकार उस सूतपुत्र कर्णके सम्मुख हुए ? (३–५)

धर्मपुत्र युधिष्ठिरके चित्तमें धनुर्धर भीष्म द्रोणाचार्य और कर्णके अतिरिक्त जगत्के बीच चौथे किसी पुरुषसे भय नहीं हुआ विशेष करके वह सदा सर्वदा जिसकी चिन्ता करके सुखकी नींद नहीं सोते थे वैसे महारथी सूतपुत्र कर्णके सङ्ग भीमसेनका कैसा संग्राम हुआ ? हे सञ्जय ! जो कर्ण ब्राह्मणोंमें निष्ठावान् अत्यन्त पराक्रमी युद्धमें पीछे न हटनेवाला और सम्पूर्ण योद्धाओंके बीच श्रेष्ठ है उसके सङ्ग भीमने किस प्रकारसे युद्ध किया ? (६–८)

जो हो उन दोनों वीरों--कर्ण तथा भीमसेन--का अर्जुनके रथके निकट जैसा युद्ध हुआ था वह तुम मेरे समीप वर्णन करो । कर्णने कुन्तीके समीप पहिले पाण्डवोंके ऊपर अपना भ्रातृभाव मालूम किया था, और कर्ण स्वयं भी दयालु हैं; उन्होंने कुन्तीके वचनको स्मरण करके किसप्रकार भीमसेनके सङ्ग युद्ध किया ? भीमसेनने पहिलेकी शत्रुता स्मरण करके कर्णके साथ कैसा युद्ध किया ? (९–११)

हे सूत ! बुद्धिहीन दुर्योधन सदा यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णो जेष्यति संग्रामे समस्तान्पाण्डवानिति ॥ १२ ॥
जयाशा यत्र पुत्रस्य मम मन्दस्य संयुगे।
स कथं भीमकर्माणं भीमसेनमयोधयत् ॥ १३ ॥
यं समासाद्य पुत्रैर्मे कृतं वैरं महारथैः।
तं सूततनयं तात कथं भीमो ह्ययोधयत् ॥ १४ ॥
अनेकान्विप्रकारांश्च सूतपुत्रसमुद्भवान्।
स्मरमाणः कथं भीमो युयुधे सूतसूनुना ॥ १५ ॥
योऽजयत्पृथिवीं सर्वां रथेनैकेन वीर्यवान्।
तं सूततनयं युद्धे कथं भीमो ह्ययोधयत् ॥ १६ ॥
यो जातः कुण्डलाभ्यां च कवचेन सहैव च।
तं सूतपुत्रं समरे भीमः कथमयोधयत् ॥ १७ ॥
यथा तयोर्युद्धमभूच्चाऽऽसीद्विजयी तयोः।
तन्ममाऽऽचक्ष्व तत्त्वेन कुशलो ह्यसि सञ्जय ॥ १८ ॥

सञ्जय उवाच— भीमसेनस्तु राधेयमुत्सृज्य रथिनां वरम्।
इयेष गन्तुं यत्राऽऽस्तां वीरौ कृष्णधनञ्जयौ ॥ १९ ॥
तं प्रयान्तमभिद्रुत्य राधेयः कङ्कपत्त्रिभिः।

आशा करता था, कि कर्ण युद्धमें एकत्रित हुए सम्पूर्ण पाण्डवोंको पराजित करेंगे ॥ मेरे मूर्ख पुत्रोंकी विजयकी आशा जिस कर्ण पर निर्भर है भीमसेनने उस पराक्रमी कर्णके साथ कैसा संग्राम किया ? हे तात! जिस कर्णके आसरेसे मेरे पुत्र लोग महारथ पाण्डवोंके साथ शत्रुता किये हैं और भीमसेन भी जिस सूतपुत्र कर्णकी सलाहसे दुर्योधनके किये हुए नाना प्रकारके अनिष्टोंको सदा स्मरण करता रहता है ऐसे स्थलमें भीमने कर्णके साथ किस प्रकार युद्ध किया ? (१२-१५)

जिस महाबली पुरुषने एक ही रथ पर चढके अकेले ही इस सम्पूर्ण पृथ्वीको जीत लिया था, जो इस पृथ्वीके बीच कवच और कुण्डलके सहित उत्पन्न हुआ है ऐसे पराक्रमी सूत पुत्र कर्णके सहित भीमसेनका कैसा संग्राम हुआ ? हे सञ्जय! उन दोनों वीरोंका जैसा संग्राम हुआ था उसे तुम मेरे समीप विस्तारपूर्वक वर्णन करो; क्योंकि तुम बोलनेवालोंमें निपुण हो। (१६-१८)

सञ्जय बोले, महाराज ! भीमसेनने रथियोंमें श्रेष्ठ राधापुत्र कर्णको त्यागके जहां पर कृष्ण अर्जुन थे उस ही स्थान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यवर्षन्महाराज मेघो वृष्ट्येव पर्वतम् ॥ २० ॥
फुल्लता पङ्कजेनेव वक्त्रेण विहसन्बली ।
आजुहाव रणे यान्तं भीममाधिरथिस्तदा ॥ २१ ॥

कर्ण उवाच— भीमाऽहितैस्तव रणः स्वप्नेऽपि न विभावितः ।
तद्दर्शयसि कस्मान्मे पृष्ठं पार्थदिदृक्षया ॥ २२ ॥
कुन्त्याः पुत्रस्य सदृशं नेदं पाण्डवनन्दन ।
तेन मामभितः स्थित्वा शरवर्षैरवाकिर ॥ २३ ॥
भीमसेनस्तदाह्वानं कर्णान्नामर्षयद्युधि ।
अर्धमण्डलमावृत्य सूतपुत्रमयोधयत् ॥ २४ ॥
अवक्रगामिभिर्बाणैरभ्यवर्षन्महायशाः ।
दंशितं द्वैरथे यत्तं सर्वशस्त्रविशारदम् ॥ २५ ॥
विधित्सुः कलहस्याऽन्तं जिघांसुः कर्णमक्षिणोत् ।
हत्वा तस्याऽनुगास्तं च हन्तुकामो महाबलः ॥ २६ ॥
तस्मै व्यसृजदुग्राणि विविधानि परन्तपः ।
अमर्षात्पाण्डवः क्रुद्धः शरवर्षाणि भारिष ॥ २७ ॥

पर जानेकी इच्छा करी ॥ जब वह कृष्ण-अर्जुनकी ओर जाने लगे, त्योंही राधा-पुत्र कर्णने दौडकर उनके ऊपर कङ्कपत्र युक्त अपने तीक्ष्ण बाणोंकी ऐसी वर्षा करी जैसे बादल पर्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं। और विकसित कमलके समान वदनसे हंसकर भीमसेनको आवाहन करके यह वचन बोले ॥ (१९–२१)

हे भीमसेन ! तुम रणभूमिमें पीठ दिखाओगे यह तुम्हारे शत्रुओंने स्वप्नमें भी नहीं अनुभव किया था, परन्तु आज अर्जुनके देखनेकी इच्छासे मुझे पीठ दिखा रहे हो ॥ हे पाण्डुनन्दन ! तुम कुन्तीके पुत्र हो, पीठ दिखाना तुम्हें उचित नहीं है, इससे संमुख खडे होकर अपने बाणोंकी वर्षासे मुझे प्रच्छन्न करो ॥ (२२–२३

भीमसेन कर्णके आवाहनको न सहकर लौटके उनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए। महायशस्वी भीमसेन सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कर्णको द्वैरथ युद्धके वास्ते संमुख आया देख उनके ऊपर तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ महाबली भीमसेन कर्णको संहार करके शत्रुता शेष करनेकी इच्छासे उन्हें अपने बाणोंसे पीडित करने लगे । शत्रु नाशन भीमसेन महारथ कर्ण और सेनाके दूसरे योद्धाओंके नाशकी इच्छा करके कुपित होकर कर्णके ऊपर भयङ्कर अस्त्रशस्त्रोंकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्य तानीषुवर्षाणि मत्तद्विरदगामिनः ।
सूतपुत्रोऽस्त्रमायाभिरग्रसत्परमास्त्रवित् ॥ २८ ॥
स यथावन्महाबाहुर्विद्यया वै सुपूजितः ।
आचार्यवन्महेष्वासः कर्णः पर्यचरद्बली ॥ २९ ॥
युध्यमानं तु संरम्भाद्भीमसेनं हसन्निव ।
अभ्यपद्यत कौन्तेयं कर्णो राजन्वृकोदरम् ॥ ३० ॥
तन्नाऽमृष्यत कौन्तेयः कर्णस्य स्मितमाहवे ।
युध्यमानेषु वीरेषु पश्यत्सु च समन्ततः ॥ ३१ ॥
तं भीमसेनः सम्प्राप्तं वत्सदन्तैः स्तनान्तरे ।
विव्याध बलवान्क्रुद्धस्तोत्रैरिव महाद्विपम् ॥ ३२ ॥
पुनश्च सूतपुत्रं तु स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः ।
सुमुक्तैश्चित्रवर्माणं निर्बिभेद त्रिसप्तभिः ॥ ३३ ॥
कर्णो जाम्बूनदैर्जालैः सञ्छन्नान्वातरंहसः ।
हयान्विव्याध भीमस्य पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः ॥ ३४ ॥
ततो बाणमयं जालं भीमसेनरथं प्रति ।

वर्षा करने लगे ॥ (२४-२७)

महायशस्वी परम अस्त्रज्ञ कर्णने भीमसेनकी बाण वर्षाको अपनी अस्त्रमायाके प्रभावसे संहार किया ॥ महाधनुर्धर सूतपुत्र कर्णने धनुर्वेदमें अत्यन्त प्रतिष्ठा पाया था; इसीसे वह युद्धभूमिमें भीमके संग इस प्रकार संग्राम करने लगे, जैसे आचार्य शिष्यके संग युद्ध करता है ॥ क्रुद्ध स्वभाववाले राधा पुत्र कर्ण भीमसेनको अभिमानके सहित अपनी ओर आते देख हंसकर उनके संमुख होकर युद्ध करने लगे ॥ (२८—३०)

उस रणभूमिमें चारों ओर खडे हुए सेनाके पुरुषोंके बीच कर्णने जो भीमसेनकी ऐसी अवज्ञा करी वह भीमसेनसे नहीं सही गई । बलवान् भीमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर सब युद्ध करनेवाले योद्धाओंके आगेही वत्सदन्त अस्त्रसे कर्णके हृदयमें इस प्रकार प्रहार किया जैसे मतवारे हाथीको अंकुशसे पीडित करते हैं ॥ तिसके अनन्तर उत्तम पानीसे बुझे हुए इकीस बाण चलाकर कर्णके वर्ममें प्रहार किया ॥ (३१-३३)

कर्णने भी पांच बाणोंसे सुवर्णके आभूषणोंसे भूषित वायुके समान वेगगामी भीमके रथके घोडोंको विद्ध किया॥ तिसके अनन्तर कर्णने इतने बाण चलाये, कि अर्द्धनिमेष भरके बीच भीमसेनका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णेन विहितं राजन्निमेषार्धादृदृश्यत ॥ ३५ ॥
सरथः सध्वजस्तत्र ससूतः पाण्डवस्तदा ।
प्राच्छाद्यत महाराज कर्णचापच्युतैः शरैः ॥ ३६ ॥
तस्य कर्णश्चतुःषष्ट्या व्यधमत्कवचं दृढम् ।
क्रुद्धश्चाऽप्यहनत्पार्थं नाराचैर्मर्ममेदिभिः ॥ ३७ ॥
ततोऽचिन्त्य महाबाहुः कर्णकार्मुकनिःसृतान् ।
समाश्लिष्यदसम्भ्रान्तः सूतपुत्रं वृकोदरः ॥ ३८ ॥
स कर्णचापप्रभवानिषूनाशीविषोपमान् ।
बिभ्रद्भीमो महाराज न जगाम व्यथां रणे ॥ ३९ ॥
ततो द्वात्रिंशता भल्लैर्निशितैस्तिग्मतेजनैः ।
विव्याध समरे कर्णं भीमसेनः प्रतापवान् ॥ ४० ॥
अयत्नेनैव तं कर्णः शरैर्भृशमवाकिरत् ।
भीमसेनं महाबाहुं सैन्धवस्य वधैषिणम् ॥ ४१ ॥
मृदुपूर्वं तु राधेयो भीममाजावयोधयत् ।
क्रोधपूर्वं तथा भीमः पूर्ववैरमनुस्मरन् ॥ ४२ ॥
तं भीमसेनो नाऽमृष्यदवमानममर्षणः ।

रथ कर्णके बाणजालसे छिपकर केवल बाणमय दिखाई देने लगा। कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे सारथी घोडे ध्वजा और रथसे सहित भीमसेन अदृश्य होगये ॥ (३४-३६)

सूतपुत्र कर्णने क्रुद्ध होकर चौंसठ बाणोंसे भीमसेनके दृढ कवचको भेद किया और भीमसेनको भी मर्म भेदी बाणोंसे विद्ध करने लगे ॥ अनन्तर भीमसेन कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंकी कुछ भी पर्वाह न करके उनके सङ्ग निर्भयचित्तसे युद्ध करने लगे। महाराज! भीमसेन कर्णके धनुषसे छूटे हुए विषधर सर्पके समान बाणोंकी चोटसे पीडित होकर भी दुःखित नहीं हुए; और पराक्रमके सहित बत्तीस तीक्ष्ण भल्लसे उन्होंने कर्णको विद्ध किया ॥(३७-४०)

कर्णने मानो खेलवाडकी भांति सिन्धुराज जयद्रथके वधकी इच्छा करने वाले भीमसेनको अपने बाणोंके जालसे बिलकुल ही छिपा दिया ॥ परन्तु राजपुत्र कर्ण कोमल युद्ध करते थे और भीमसेन पहिलेकी शत्रुता स्मरण करके क्रोधपूर्वक महा युद्ध करने लगे ॥ शत्रुओं के जीतनेवाले भीमने कर्णके अनादरको सहन नहीं किया; और क्रुद्ध होकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तस्मै व्यसृजत्तूर्णं शरवर्षममित्रहा ॥ ४३ ॥
ते शराः प्रेषितास्तेन भीमसेनेन संयुगे।
निपेतुः सर्वतो वीरे कूजन्त इव पक्षिणः ॥ ४४ ॥
हेमपुङ्खाः प्रसन्नाग्रा भीमसेनधनुश्च्युताः।
प्राच्छादयंस्ते राधेयं शलभा इव पावकम् ॥ ४५ ॥
कर्णस्तु रथिनां श्रेष्ठश्छाद्यमानः समन्ततः।
राजन्व्यसृजदुग्राणि शरवर्षाणि भारत ॥ ४६ ॥
तस्य तानशनिप्रख्यानिषून्समरशोभिनः।
चिच्छेद बहुभिर्भल्लैरसम्प्राप्तान्वृकोदरः ॥ ४७ ॥
पुनश्च शरवर्षेण च्छादयामास भारत।
कर्णो वैकर्तनो युद्धे भीमसेनमरिन्दमः ॥ ४८ ॥
तत्र भारत भीमं तु दृष्टवन्तः स्म सायकैः।
समाचिततनुं संख्ये श्वाविधं शललैरिव ॥ ४९ ॥
हेमपुङ्खाञ्छिलाधौतान्कर्णचापच्युताञ्छरान्।
दधार समरे वीरः स्वरश्मीनिव रश्मिमान् ॥ ५० ॥
रुधिरोक्षितसर्वाङ्गो भीमसेनो व्यराजत।

शीघ्रताके सहित उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ वे सम्पूर्ण बाण भीमसेनके धनुषसे छूटकर शब्द करनेवाले पक्षीके समान रणभूमिमें चारों ओर गिरते हुए दिखाई देने लगे ॥ (४१-४४)

हे महाराज ! वे सब सुवर्ण भूषित बाण इस प्रकार कर्णके उपर गिरने लगे जैसे शलभ अग्निकी ओर वेगपूर्वक दौडते हैं ॥ रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण रणभूमिमें चारों ओरसे भीमसेनके बाणजालसे छिप कर फिर उनके ऊपर अपने भयङ्कर बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ भीमसेनने कर्णके वज्र समान बाणोंको निकट आते ही आते अनेक भल्लोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया, परन्तु सूर्यपुत्र शत्रुओंको जीतनेवाले कर्णने अपने बाणोंकी वर्षासे फिर भीमसेनको छिपा दिया ॥ (४५-४८)

हे भारत ! उस समय भीमसेन कर्णके बाणोंसे ऐसे छिप गये, कि उनका सम्पूर्ण शरीर बाणमय दिखाई देने लगा ! महावीर भीमसेन कर्णके धनुषसे छूटे हुए प्रकाशमान बाणोंसे विद्ध होकर पंखोंसे वेधने वाले श्वाविध तथा किरणधारी सूर्यके समान संग्रामभूमिमें शोभित होने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समृद्धकुसुमापीडो वसन्तेऽशोकवृक्षवत् ॥ ५१ ॥
तत्तु भीमो महाबाहोः कर्णस्य चरितं रणे ।
नाऽमृष्यत महाबाहुः क्रोधादुद्वृत्तलोचनः ॥ ५२ ॥
स कर्णं पञ्चविंशत्या नाराचानां समार्पयत् ।
महीधरमिव श्वेतं गूढपादैर्विषोल्बणैः ॥ ५३ ॥
पुनरेव च विव्याध षड्भिरष्टाभिरेव च ।
मर्मस्वमरविक्रान्तः सूतपुत्रं तनुत्यजम् ॥ ५४ ॥
पुनरन्येन बाणेन भीमसेनः प्रतापवान् ।
चिच्छेद कार्मुकं तूर्णं कर्णस्य प्रहसन्निव ॥ ५५ ॥
जघान चतुरश्चाऽश्वान्सूतं च त्वरितः शरैः ।
नाराचैरर्करश्म्याभैः कर्णं विव्याध चोरसि ॥ ५६ ॥
ते जग्मुर्धरणीमाशु कर्णं निर्भिद्य पत्रिणः ।
यथा जलधरं भित्त्वा दिवाकरमरीचयः ॥ ५७ ॥
स वैकृत्यं महत्प्राप्य च्छिन्नधन्वा शराहतः ।
तथा पुरुषमानी स प्रत्यपायाद्रथान्तरम् ॥ ५८ ॥ [५४०६]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि कर्णपराजये एकत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः॥ १३१ ॥

लगे ॥ उस समय जो भीमसेनके सम्पूर्ण शरीरसे रुधिर झर रहा था उससे वसन्त ऋतुमें फूले हुए अशोक वृक्षके समान उनकी शोभा हुई ॥ परन्तु महाधनुर्द्धर भीमसेनने युद्धभूमिमें सूतपुत्र कर्णके वैसे पराक्रमको सहन नहीं किया ॥ ४९-५२

उन्होंने क्रोधसे दोनों नेत्र लाल करके इस प्रकार पांचबाणोंसे कर्णको विद्ध किया, जैसे अत्यन्त विषधर सर्प श्वेतगिरिको काटते हैं ॥ इन्द्रके समान पराक्रमी भीमसेनने उस रणभूमिमें चौदह बाणोंसे कर्ण के मर्मस्थलों में प्रहार किया ॥ तिसके अनन्तर शीघ्रताके सहित हंसके एक बाणसे कर्णका धनुष काट दिया, और अनेक बाणोंसे उनके रथके घोडे और सारथी का वध करके सूर्य-किरण समान प्रकाशमान बाणोंसे कर्णके वक्षस्थलमें प्रहार किया ॥ (५३—५६)

जैसे सूर्यकी किरण बादलोंके समूह को भेदकर पृथ्वीमें प्रवेश करती है, वैसे ही भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए वे सम्पूर्ण बाण कर्णके शरीरको भेद कर पृथ्वीमें गिरे ॥ महाराज ! अधिरथ पुत्र कर्णने ऐसे पराक्रमी होकर भी धनुषके कटने पर भीमके बाणोंसे पीडित होकर दूसरे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृतराष्ट्र उवाच— स्वयं शिष्यो महेशस्य भृगूत्तमधनुर्धरः।
शिष्यत्वं प्राप्तवान्कर्णस्तस्य तुल्योऽस्त्रविद्यया ॥ १ ॥
तद्विशिष्टोऽपि वा कर्णः शिष्यः शिष्यगुणैर्युतः।
कुन्तीपुत्रेण भीमेन निर्जितः स तु लीलया ॥ २ ॥
यस्मिञ्जयाशा महती पुत्राणां मम सञ्जय।
तं भीमाद्विमुखं दृष्ट्वा किन्नु दुर्योधनोऽब्रवीत् ॥ ३ ॥
कथं च युयुधे भीमो वीर्यश्लाघी महाबलः।
कर्णो वा समरे तात किमकार्षीत्ततः परम्।
भीमसेनं रणे दृष्ट्वा ज्वलन्तमिव पावकम् ॥ ४ ॥
सञ्जय उवाच— रथमन्यं समास्थाय विधिवत्कल्पितं पुनः।
अभ्ययात्पाण्डवं कर्णो वातोद्धूत इवार्णवः ॥ ५ ॥
क्रुद्धमाधिरथिं दृष्ट्वा पुत्रास्तव विशाम्पते।
भीमसेनममन्यन्त वैश्वानरमुखे हुतम् ॥ ६ ॥
चापशब्दं ततः कृत्वा तलशब्दं च भैरवम्।

रथ पर चढ के युद्धभूमि में प्रस्थान किया ॥ (५७—५८) [५४०६]

द्रोणपर्वमें एकसौ इकतीस अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ बत्तीस अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! कर्णने स्वतः भगवान् महेशके शिष्य भृगुओंमें अच्छे धनुर्धारी परशुरामजीके पास सब विद्या सीखी है। सब शिष्यगुणोंसे युक्त वह कर्ण अस्त्रविद्या में परशुरामजी के समान वा उनसे भी थोडा अधिक ही है। तथापि कुन्तीपुत्र भीमसेनने तो ऐसे कर्ण को भी सहज लीलासे जीत लिया है ॥ जिस के पराक्रमसे मेरे पुत्रोंने विजयकी अत्यन्त ही आशा कियी थी, उस ही सूतपुत्र कर्णको दुर्योधनने भीम के निकटसे पराजित देखकर क्या कहा था ? और कर्णने उस समय जल्ती हुई अग्निके समान तेजस्वी भीमसेन को देखकर किस कार्यका अनुष्ठान किया वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो ॥ १-४

सञ्जय बोले, महाराज! कर्ण भली भांतिसे सज्जित हुए दूसरे उत्तम रथ पर चढके वायुके वेगसे उछलते समुद्रके समान गमन करके शीघ्रताके सहित भीमसेनके संमुख उपस्थित हुए ॥ तुम्हारे पुत्रलोग कर्णको क्रुद्ध हुए देखकर भीमसेनको मानो अग्निके कराल मुखमें पडे हुएके समान ही बोध करने लगे ॥ हे नरनाथ! जब राधापुत्र कर्ण भयङ्कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यद्रवत राधेयो भीमसेनरथं प्रति ॥ ७ ॥
पुनरेव तयो राजन्घोर आसीत्समागमः ।
वैकर्तनस्य शूरस्य भीमस्य च महात्मनः ॥ ८ ॥
संरब्धौ हि महाबाहू परस्परवधैषिणौ ।
अन्योन्यमीक्षाञ्चक्राते दहन्ताविव लोचनैः ॥ ९ ॥
क्रोधरक्तेक्षणौ तीव्रौ निःश्वसन्ताविवोरगौ ।
शूरावन्योन्यमासाद्य ततक्षतुरिन्दमौ ॥ १० ॥
व्याघ्राविव सुसंरब्धौ श्येनाविव च शीघ्रगौ ।
शरभाविव संक्रुद्धौ युयुधाते परस्परम् ॥ ११ ॥
ततो भीमः स्मरन्क्लेशानक्षद्यूते वनेऽपि च ।
विराटनगरे चैव दुःखं प्राप्तमरिन्दमः ॥ १२ ॥
राष्ट्राणां स्फीतरत्नानां हरणं च तवाऽऽत्मजैः ।
सततं च परिक्लेशान्सपुत्रेण त्वया कृतान् ॥ १३ ॥
दग्धुमैच्छच्च यः कुन्तीं सपुत्रां त्वमनागसम् ।
कृष्णायाश्च परिक्लेशं सभामध्ये दुरात्मभिः ॥ १४ ॥
केशपक्षग्रहं चैव दुःशासनकृतं तथा ।

धनुष टङ्कार और तलत्राणके शब्दके सहित भीमसेनके रथके समीप उपस्थित हुए तब फिर भीमसेन और कर्णका महा घोर संग्राम होने लगा ॥ (५-८)

वे दोनों ही क्रोधसे लाल नेत्र करके क्रोधी सर्पके समान सांस छोडते हुए आपसमें एक दूसरेकी ओर इसप्रकार देखने लगे मानों नेत्रसे देखकर ही एक दुसरेको भस्म कर देंगे ॥ उन दोनों शत्रु नाशन वीरोंने युद्धभूमिमें अपने बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेको क्षत विक्षत कर दिया ॥ वे दोनों शीघ्रतासे गमन करनेमें बाजपक्षी और क्रोधमें व्याघ्र और शरभके समान क्रुद्ध होकर युद्ध करने लगे ॥ (९-११)

हे शत्रुनाशन महाराज ! भीमसेनने जूएके खेल वनवास और विराट नगरमें छिपकर निवास करनेमें जो कुछ क्लेश पाया था, और तुम्हारे पुत्रोंने जो उनका विशाल राज्य हर लिया था, तुमने जो अपने पुत्रोंके सहित उन लोगोंको नाना प्रकारके दुःख दिये थे, विशेष करके तुमने जो निरपराधिनी कुन्तिको पुत्रोंके सहित भस्म करनेकी इच्छा करी थी, सभामें जो तुम्हारे पुत्रोंने द्रौपदीकी अनेक प्रकार अवज्ञा करी और दुःशासन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परुषाणि च वाक्यानि कर्णेनोक्तानि भारत ॥ १५ ॥
पतिमन्यं परीप्सस्व न सन्ति पतयस्तव ।
पतिता नरके पार्थाः सर्वे षण्ढतिलोपमाः ॥ १६ ॥
समक्षं तव कौरव्य यदूचुः कौरवास्तदा ।
दासीभावेन कृष्णां च भोक्तुकामाः सुतास्तव ॥ १७ ॥
यच्चापि तान्प्रव्रजतः कृष्णाजिननिवासिनः ।
परुषाण्युक्तवान्कर्णः सभायां सन्निधौ तव ॥ १८ ॥
तृणीकृत्य यथा पार्थांस्तव पुत्रो ववल्ग ह ।
विषमस्थान्समस्थो हि संरब्धो गतचेतनः ॥ १९ ॥
बाल्यात्प्रभृति चाऽरिघ्नः स्वानि दुःखानि चिन्तयन् ।
निरविद्यत धर्मात्मा जीवितेन वृकोदरः ॥ २० ॥
ततो विस्फार्य सुमहद्धेमपृष्ठं दुरासदम् ।
चापं भरतशार्दूलस्त्यक्तात्मा कर्णमभ्ययात् ॥ २१ ॥
स सायकमयैर्जालैर्भीमः कर्णरथं प्रति ।
भानुमद्भिः शिलाधौतैर्भानोः प्राच्छादयत्प्रभाम् २२॥
ततः प्रहस्याऽधिरथिस्तूर्णमस्य शिलाशितैः ।

ने द्रौपदीके केशग्रहण किये थे; कर्णने कहा था, कि हे द्रौपदी ! " तुम्हारे पति अब जीवित नहीं हैं, षण्ढतिलके समान इस समय कुन्तीके पुत्र नरकमें पतित हुए हैं, इससे तुम और किसीको अपना पति बना लो ॥ " और तुम्हारे पुत्रोंने जो दासी भावसे द्रौपदीको भोग करने वास्ते तुम्हारे संमुख ही इच्छा करी थी; पाण्डव लोग जिस समय काले हरिनके चमडे पहरके वनको जाने लगे; उस समय कर्णने तुम्हारे संमुखमें ही सभाके बीच उन लोगोंको जो सब कठोर वचन कहे थे; तुम्हारे पुत्रोंने जो उस समय अज्ञानताके कारणसे पाण्डवोंकी अवमानना करके अभिमानमें फूल कर नृत्य करने लगे थे, तथा पाण्डवलोग बालक अवस्थासे तुम्हारे कारण जो कुछ क्लेश पाये थे धर्मात्मा भरतर्षभ भीमसेन उन सम्पूर्ण दुखोंको स्मरण करके अपने प्राणकी आशा त्याग सुवर्ण चित्रित महाधनुष चढाकर महारथ कर्णकी ओर दौडे ॥ (१२–२१)

भीमसेनने सूतपुत्र कर्णके रथ पर इस प्रकार अपने अस्त्रशस्त्रोंकी वर्षा की, कि उनके शिला पर घिसे हुए प्रकाशमान बाणोंसे कर्णका रथ छिप गया और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यधमद्भीमसेनस्य शरजालानि पत्त्रिभिः ॥ २३ ॥
महारथो महाबाहुर्महाबाणैर्महाबलः ।
विव्याधाऽऽधिरथिर्भीमं नवभिर्निशितैस्तदा ॥ २४ ॥
स तोत्त्रैरिव मातङ्गो वार्यमाणः पतत्त्रिभिः ।
अभ्यधावदसम्भ्रान्तः सूतपुत्रं वृकोदरः ॥ २५ ॥
तमापन्ततं वेगेन रभसं पाण्डवर्षभम् ।
कर्णः प्रत्युद्ययौ युद्धे मत्तो मत्तमिव द्विपम् ॥ २६ ॥
ततः प्रध्माप्य जलजं भेरीशतसमस्वनम् ।
अक्षुभ्यत बलं हर्षादुद्धूत इव सागरः ॥ २७ ॥
तदुद्धूतं बलं दृष्ट्वा नागाश्वरथपत्तिमत् ।
भीमः कर्णं समासाद्य च्छादयामास सायकैः ॥ २८ ॥
अश्वानृक्षसवर्णांश्च हंसवर्णैर्हयोत्तमैः ।
व्यामिश्रयद्रणे कर्णः पाण्डवं छादयच्छरैः ॥ २९ ॥
ऋक्षवर्णान्हयान्कर्णैर्मिश्रान्मारुतरंहसः ।
निरीक्ष्य तव पुत्राणां हाहाकृतमभूद्बलम् ॥ ३० ॥

वहां पर सूर्यका प्रकाश मन्द होगया ॥ महाराज ! महाबाहु अधिरथ पुत्र कर्ण बलशाली पुरुषोंके बीच महा बलवान् पराक्रमी अत्यन्त वेगशील और रथियों के बीच महारथी कहके विख्यात हैं, उन्होंने भीमके चलाये हुए उन सम्पूर्ण बाणोंको शीघ्र ही अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काटके गिरा दिया; और भीमको नौ तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया ॥ (२२-२४)

भीमसेनने कर्णके तीक्ष्ण बाणोंसे निवारित होकर मानो अंकुशसे पीडित मतवारे हाथी तुल्य क्रुद्ध होकर कर्णकी ओर दौडे ॥ पाण्डुपुत्र भीमको अत्यन्त वेगके साहित अपनी ओर आते देख; कर्ण इस प्रकार वेगपूर्वक उनकी ओर दौडे, जैसे एक मसवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी ओर दौडता है ॥ अनन्तर कर्णने सौ नगारोंके समान शब्द वाले अपने शंखको बजाकर उछलित समुद्रके समान अपनी सेनाको हर्षित किया ॥ भीमसेनने हाथी घोडे और पैदल सेनाके योद्धाओंको हर्षित देख बाणोंकी वर्षासे कर्णको छिपा दिया ॥ (२५-२८)

कर्णने भीमसेनको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपाकर उनके भालू वर्णवाले घोडोंको निज हंसवर्णके घोडोंसे मिला दिया ॥ महाराज ! उन हंस वर्णवाले घोडोंके सङ्ग वायुके समान वेगशील

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते हया बद्धशोभन्त मिश्रिता वातरंहसः।
सितासिता महाराज यथा व्योम्नि बलाहकाः॥ ३१॥
संरब्धौ क्रोधताम्राक्षौ प्रेक्ष्य कर्णवृकोदरौ।
सन्त्रस्ताः समकम्पन्त त्वदीयानां महारथाः॥ ३२॥
यमराष्ट्रोपमं घोरमासीदायोधनं तयोः।
दुर्दर्शं भरतश्रेष्ठ प्रेतराजपुरं यथा॥ ३३॥
समाजमिव तच्चित्रं प्रेक्षमाणा महारथाः।
नाऽलक्षयञ्जयं व्यक्तमेकस्यैव महारणे॥ ३४॥
तयोः प्रैक्षन्त संमर्दं सन्निकृष्टं महास्त्रयोः।
तव दुर्मन्त्रिते राजन्सपुत्रस्य विशांपते॥ ३५॥
छादयन्तौ हि शत्रुघ्नावन्योन्यं सायकैः शितैः।
शरजालावृतं व्योम चक्रातेऽद्भुतविक्रमौ॥ ३६॥
तावन्योन्यं जिघांसन्तौ शरैस्तीक्ष्णैर्महारथौ।
प्रेक्षणीयतरावास्तां वृष्टिमन्ताविवाऽम्बुदौ॥ ३७॥

भालूवर्णवाले घोडोंका मिलन देखकर तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाके बीच अत्यन्त ही हाहाकार शब्द होने लगा॥ परन्तु वे हंसवर्ण और भालूवर्णवाले वायुके समान वेगवाले घोडे आपस में मिलकर इस प्रकार शोभित हुए, जैसे आकाश में बादल शोभित होते हैं॥ (२९–३१)

महाराज! क्रोधसे लालनेत्र किये हुए कर्ण और भीमसेनको अत्यन्त क्रुद्ध हुए देख तुम्हारी ओरके महारथी योद्धा भी भयसे कांपने लगे॥ परन्तु उन दोनों का संग्राम यमपुरीके समान भयंकर और स्मशान भूमिके समान महाघोर दीख पडने लगा॥ महारथियोंकी मण्डलीने उन पुरुषसिंहोंके अद्भुत संग्रामको देख कर उन दोनोंमेंसे किसकी विजय होगी उसका निश्चय न कर सकी॥ ३२–३४

हे पृथ्वीनाथ! वे सम्पूर्ण महारथी तुम्हारी अनीतिसे उन महाअस्त्र चलाने वाले दोनों पुरुषसिंहोंके भयंकर संग्रामको देखने लगे॥ वे दोनों अद्भुत पराक्रमी शत्रुनाशन कर्ण और भीमसेन आपसमें एक दूसरेको अपने बाणों के जालसे छिपाते हुए आकाशमण्डलको भरने लगे॥ वे दोनों ही महारथी थे इनसे आपस में एक दूसरेके वधकी इच्छासे अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करते हुए इस प्रकार दिखाई देने लगे, जैसे जल-की वर्षा करने वाले दो बादल आकाशमें दीख पडते हैं॥ (३५—३७)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवर्णविकृतान्बाणान्विमुञ्चन्तावरिन्दमौ ।
भास्वरं व्योम चक्राते महोल्काभिरिव प्रभो ॥ ३८ ॥
ताभ्यां मुक्ताः शरा राजन्गार्ध्रपत्राश्चकाशिरे ।
श्रेण्यः शरदि मत्तानां सारसानामिवाऽम्बरे ॥ ३९ ॥
संसक्तं सूतपुत्रेण दृष्ट्वा भीममरिन्दमम् ।
अतिभारममन्येतां भीमे कृष्णधनञ्जयौ ॥ ४० ॥
तत्राऽऽधिरथिभीमाभ्यां शरैर्मुक्तैर्हतं हताः ।
इषुपातमतिक्रम्य पेतुरश्वनरद्विपाः ॥ ४१ ॥
पतद्भिः पतितैश्चाऽन्यैर्गतासुभिरनेकशः ।
कृतो राजन्महाराज पुत्राणां ते जनक्षयः ॥ ४२ ॥
मनुष्याश्वगजानां च शरीरैर्गतजीवितैः ।
क्षणेन भूमिः सञ्ज्ञे संवृता भरतर्षभ ॥ ४३ ॥ [५४४९]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमकर्णयुद्धे द्वात्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः॥१३२॥

धृतराष्ट्र उवाच- अत्यद्भुतमहं मन्ये भीमसेनस्य विक्रमम् ।
यत्कर्णं योधयामास समरे लघुविक्रमम् ॥ १ ॥

हे राजेन्द्र । उन दोनों शत्रुनाशन वीरोंने लुकके समान अपने प्रकाशमान् बाणोंको चलाकर आकाशको प्रकाशमय कर दिया ॥ उन दोनोंके धनुषसे छूटे हुए बाण आकाशमें इस प्रकार श्रेणी बद्ध दिखाई देने लगे, जैसे शरत् ऋतुमें सारसोंकी पांति आकाशमें दीख पडती है ॥ (३८-३९)

महाराज ! कृष्ण--अर्जुनने भीमसेनको आधिरथपुत्र कर्णके सङ्ग युद्ध करते हुए देख उनके ऊपर अत्यन्त कठिन भार समझने लगे ॥ परन्तु घोडे सारथी और मनुष्य कर्ण तथा भीमसेनके छूटे हुए बाणोंसे इधर उधर मरके गिरने लगे ॥ कितने ही सेनाके पुरुष हाथियोंके मरकर गिरनेसे उनके धक्केसे गिरके मर गये, कितने ही दूसरी भांतिसे नष्ट हुए; इसी प्रकार तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाके योद्धाओंका नाश होने लगा ॥ मनुष्य घोडे और हाथियों के मृत शरीरसे रणभूमि मुहूर्त्त भरके बीच में परिपूरित होगई ॥ (४०—४३) [५४४९]

द्रोणपर्वमें एकसौ बत्तीस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ तैंतीस अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! भीमसेनके पराक्रमको मैं आश्चर्यमय समझता हूं; क्योंकि उसने अत्यन्त पराक्रमी कर्णके सङ्ग युद्ध किया ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिदशानपि वा युक्तान्सर्वशस्त्रधरान्युधि ।
वारयेद्यो रणे कर्णः सयक्षासुरमानुषान् ॥ २ ॥
स कथं पाण्डवं युद्धे भ्राजमानमिव श्रिया ।
नाऽतरत्संयुगे पार्थं तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ ३ ॥
कथं च युद्धं सम्भूतं तयोः प्राणदुरोदरे ।
अत्र मन्ये समायत्तो जयो वाऽजय एव च ॥ ४ ॥
कर्णं प्राप्य रणे सूत मम पुत्रः सुयोधनः ।
जेतुमुत्सहते पार्थान्सगोविन्दान्ससात्वतान् ॥ ५ ॥
श्रुत्वा तु निर्जितं कर्णमसकृद्भीमकर्मणा ।
भीमसेनेन समरे मोह आविशतीव माम् ॥ ६ ॥
विनष्टान्कौरवान्मन्ये मम पुत्रस्य दुर्नयैः ।
जहि कर्णो महेष्वासान्पार्थाञ्जेष्यति सञ्जय ॥ ७ ॥
कृतवान्यानि युद्धानि कर्णः पाण्डुसुतैः सह ।
सर्वत्र पाण्डवाः कर्णमजयन्त रणाजिरे ॥ ८ ॥
अजेयाः पाण्डवास्तात देवैरपि स वासवैः ।
न च तद् बुध्यते मन्दः पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ ९ ॥

शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ कर्ण युद्धके वास्ते तैयार हुए यक्ष असुर और मनुष्योंके सहित सम्पूर्ण देवतोंको भी युद्धभूमिमें निवारण कर सकते हैं ॥ तब वह किस कारणसे तेजस्वी पाण्डुपुत्रके समीप युद्धमें कृतकार्य न होसके ? (१–३)

हे तात ! मैं इस प्राणपण युद्ध क्रीडामें जय और पराजय उन दोनोंके अधिकारमें ही बोधकर रहा हूं, जो हो फिर उन दोनोंका जैसा संग्राम हुआ; वह वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो ॥ हे सूत ! मेरा पुत्र दुर्योधन कर्णको पाकर ही युद्धभूमिमें कृष्णसात्यकीके सहित कून्तीपुत्रोंके पराजित करनेका उत्साह किया करता था; परन्तु भयङ्कर कर्म करनेवाले भीमसेनके समीप कर्णके बार बार पराजित होनेका वृत्तान्त सुन कर मैं मोहित हो रहा हूं; और अपने पुत्रोंकी दुष्टनीतिसे सम्पूर्ण कौरवोंको ही मरे हुए समझ रहा हूं, क्योंकि कर्ण कभी महाधनुर्द्धर कुन्तीपुत्रोंको पराजित नहीं कर सकेंगे ॥ कर्णने पाण्डवोंके सङ्ग जितनी बार युद्ध किया है, उतनी बार पाण्डवोंके संमुखसे पराजित हुए हैं ॥ (४–८)

हे तात ! मनुष्योंकी बात तो दूर है पाण्डव लोग इन्द्रके सहित सम्पूर्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनं धनेश्वरस्येव हृत्वा पार्थस्य मे सुतः ।
मधुप्रेप्सुरिवाऽबुद्धिः प्रपातं नाऽवबुध्यते ॥ १० ॥
निकृत्या निकृतिप्रज्ञो राज्यं हृत्वा महात्मनाम् ।
जितमित्येव मन्वानः पाण्डवानवमन्यते ॥ ११ ॥
पुत्रस्नेहाभिभूतेन मया चाऽप्यकृतात्मना ।
धर्मे स्थिता महात्मानो निकृताः पाण्डुनन्दनाः ॥ १२ ॥
शमकामः ससोदर्यो दीर्घप्रेक्षी युधिष्ठिरः ।
अशक्त इति मत्वा तु मम पुत्रैर्निराकृतः ॥ १३ ॥
तानि दुःखान्यनेकानि विप्रकारांश्च सर्वशः ।
हृदि कृत्वा महाबाहुर्भीमोऽयुध्यत सूतजम् ॥ १४ ॥
तस्मान्मे सञ्जय ब्रूहि कर्णभीमौ यथा रणे ।
अयुध्येतां युधि श्रेष्ठौ परस्परवधैषिणौ ॥ १५ ॥

सञ्जय उवाच— शृणु राजन्यथा वृत्तं संग्रामं कर्णभीमयोः ।
परस्परवधप्रेप्स्वोर्वनकुञ्जरयोरिव ॥ १६ ॥

देवताओं से भी अजेय हैं, परन्तु इस बातको मेरा मूर्ख पुत्र दुर्योधन नहीं जानता है ॥ जैसे मधुका लोभी मूर्ख पुरुष पहाड पर चढके अपने गिरनेका विषय मालूम नहीं कर सकता वैसे ही मेरे पुत्र कुबेरके समान कुन्तीके पुत्रोंके धन सम्पत्तिको हरण करके मूर्खताके कारण अपनी मृत्युका विषय नहीं समझ सकते हैं ॥ वह छली दुर्योधन शठतासे महात्मा पाण्डवोंका राज्य हरण कर उन्हें पराजित समझके उनका अनादर किया करता है । मैंने भी पुत्र स्नेहके वशमें होकर धर्मात्मा पाण्डुपुत्रोंको उनके ऐश्वर्यसे वञ्चित किया है ॥ (९-१२)

दीर्घदर्शी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने अपने भाईयोंके सहित शान्तिकी इच्छा की थी, परन्तु मेरे पुत्रोंने उन्हें असमर्थ समझके उनका तिरस्कार किया है ॥ सञ्जय ! मुझे बोध होता है महाबाहु भीमसेन दुर्योधनके दिये हुए नाना प्रकारके क्लेश और उसकी सम्पूर्ण ठगहारी स्मरण करके सूतपुत्र कर्णके सङ्ग युद्ध करता होगा ॥ जो हो योद्धाओंमें श्रेष्ठ उन दोनों पुरुषसिंह कर्ण और भीमने एक दूसरेके वधकी इच्छासे जिस प्रकार युद्ध किया, वह वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो ॥ (१३—१५)

सञ्जय बोले, महाराज ! कर्ण और भीमसेनका एक दूसरेके वधकी इच्छासे जो दो मतवारे हाथियोंके समान महा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजन्वैकर्तनो भीमं क्रुद्धः क्रुद्धमरिन्दमम् ।
पराक्रान्तं पराक्रम्य विव्याध त्रिंशता शरैः ॥ १७ ॥
महावेगैः प्रसन्नाग्रैः शातकुम्भपरिष्कृतैः ।
अहनद्वरतश्रेष्ठ भीमं वैकर्तनः शरैः ॥ १८ ॥
तस्याऽस्यतो धनुर्भीमश्चकर्त निशितैस्त्रिभिः ।
रथनीडाच्च यन्तारं भल्लेनाऽपातयत्क्षितौ ॥ १९ ॥
स कांक्षन्भीमसेनस्य वधं वैकर्तनो भृशम् ।
शक्तिं कनकवैदूर्यचित्रदण्डां परामृशत् ॥ २० ॥
प्रगृह्य च महाशक्तिं कालशक्तिमिवाऽपराम् ।
समुत्क्षिप्य च राधेयः सन्धाय च महाबलः ॥ २१ ॥
चिक्षेप भीमसेनाय जीवितान्तकरीमिव ।
शक्तिं विसृज्य राधेयः पुरन्दर इवाऽशनिम् ॥ २२ ॥
ननाद सुमहानादं बलवान्सूतनन्दनः ।
तं च नादं ततः श्रुत्वा पुत्रास्ते हर्षिताऽभवन् ॥२३॥
तां कर्णभुजनिर्मुक्तामर्कवैश्वानरप्रभाम् ।
शक्तिं वियति चिच्छेद भीमः सप्तभिराशुगैः ॥ २४ ॥
छित्त्वा शक्तिं ततो भीमो निर्मुक्तोरगसन्निभाम् ।

घोर संग्राम हुआ था, उसे तुम चित्त लगा कर सुनो ॥ पराक्रमी कर्णने क्रुद्ध होकर शत्रुनाशन क्रोधी पराक्रम करने वाले भीमसेनको तीस बाणोंसे विद्ध किया ॥ कर्णके धनुषसे छूटे हुए वे सम्पूर्ण बाण अत्यन्त वेगवान और उसके अग्रभाग अत्यन्त चोखे थे; परन्तु भीमसेनने बाण चलानेके समय कर्णका धनुष काट दिया और एक भल्लसे उनके सारथी-का वध करके रथसे पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (१६—१९)

अनन्तर महाबलवान् राधापुत्र कर्णने भीमसेनके वधकी इच्छा करके एक महा भयङ्कर दूसरी कालकी शक्तिके समान दीखनेवाली जीवितका नाश करनेवाली कनक वैदूर्य चित्रित एक शक्ति ग्रहण कर भीमसेनकी ओर चला कर सिंहनाद किया; तुम्हारे पुत्र कर्णके सिंहनादको सुन कर आनन्दित हुए ॥ (२०—२३)

भीमसेनने कर्णके हाथसे छूटी हुई सूर्य और अग्निके समान प्रकाशमान उस शक्तिको सात बाणोंसे काटके गिरा दिया ॥ वह उस समय केंचुलीसे रहित सर्पके समान भयङ्करी उस शक्तिको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्गमाण इव प्राणान्सूतपुत्रस्य मारिष ॥ २५ ॥
प्राहिणोत्कृतसंरम्भः शरान्बर्हिणवाससः ।
स्वर्णपुङ्खाञ्शिलाधौतान्यमदण्डोपमान्मृधे ॥ २६ ॥
कर्णोऽप्यन्यद्धनुर्गृह्य हेमपृष्ठं दुरासदम् ।
विकृष्य तन्महच्चापं व्यसृजत्सायकांस्तदा ॥ २७ ॥
तान्पाण्डुपुत्रश्चिच्छेद नवभिर्नतपर्वभिः ।
वसुषेणेन निर्मुक्तान्नव राजन्महाशरान् ॥ २८ ॥
छित्त्वा भीमो महाराज नादं सिंह इवाऽनदत् ।
तौ वृषाविव नर्दन्तौ बलिनौ वासितान्तरे ॥ २९ ॥
शार्दूलाविव चाऽन्योन्यमामिषार्थेऽभ्यगर्जताम् ।
अन्योन्यं प्रजिहीर्षन्तावन्योन्यस्याऽन्तरैषिणौ ॥ ३० ॥
अन्योन्यमभिवीक्षन्तौ गोष्ठेष्विव महर्षभौ ।
महागजाविवाऽऽसाद्य विषाणाग्रैः परस्परम् ॥ ३१ ॥
शरैः पूर्णायतोत्सृष्टैरन्योन्यमभिजघ्नतुः ।
निर्दहन्तौ महाराज शस्त्रवृष्ट्या परस्परम् ॥ ३२ ॥

काट कर कर्णके नाश करनेकी इच्छासे क्रोधपूर्वक सुवर्ण चित्रित मोरपंखवाले शिलापर घिसे हुए यमदण्डके समान अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ (२४—२६)

महाधनुर्द्धर कर्ण दूसरा धनुष ग्रहण करके भीमसेनके ऊपर अनेक बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ पाण्डपुत्र भीमसेनने कर्णके चलाये हुए तीक्ष्ण बाणोंको सुवर्णभूषित नौ बाणोंसे काटके गिरा दिया ॥ महाराज ! वह कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको अपने बाणोंसे काटकर सिंहकी भांति गर्जने लगे । २७—२९

जैसे ऋतुमती गौके वास्ते दो वृषभ और मांसके वास्ते दो शार्दूल गर्जते हैं वैसे ही वे दोनों पुरुष युद्धभूमिमें गर्जने लगे । जैसे गौओंके समूहमें दो वृषभ आपसमें प्रहार करनेकी इच्छासे एक दूसरेकी ओर देखते हैं वैसे ही दूसरेके छिद्रको अवलोकन करनेकी इच्छासे एक दूसरेकी ओर देखने लगे। और जैसे दो मतवारे हाथी आपसमें दूसरेको दांतोंके अग्रभागसे पीडित करते हैं, वैसे ही वे दोनों कानपर्यन्त धनुष खींचकर बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे । महाराज ! वे दोनों क्रोधसे नेत्र लाल करके अपने बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेको पीडित करने लगे ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्योन्यमभिवीक्षन्तौ कोपाद्विवृतलोचनौ ।
प्रहसन्तौ तथाऽन्योन्यं भर्त्सयन्तौ मुहुर्मुहुः ॥ ३३ ॥
शङ्खशब्दं च कुर्वाणौ युयुधाते परस्परम् ।
तस्य भीमः पुनश्चापं मुष्टौ चिच्छेद मारिष ॥ ३४ ॥
शङ्खवर्णांश्च तानश्वान्बाणैर्निन्ये यमक्षयम् ।
सारथिं च तथाऽप्यस्य रथनीडादपातयत् ॥ ३५ ॥
ततो वैकर्तनः कर्णश्चिन्तां प्राप दुरत्ययाम् ।
स च्छाद्यमानः समरे हताश्वो हतसारथिः ॥ ३६ ॥
मोहितः शरजालेन कर्तव्यं नाऽभ्यपद्यत ।
तथा कृच्छ्रगतं दृष्ट्वा कर्णं दुर्योधनो नृपः ॥ ३७ ॥
वेपमान इव क्रोधाद्भ्रादिदेशाऽथ दुर्जयम् ।
गच्छ दुर्जय राधेयं पुरो ग्रसति पाण्डवः ॥ ३८ ॥
जहि तूबरकं क्षिप्रं कर्णस्य बलमादधत् ।
एवमुक्तस्तथेत्युक्त्वा तव पुत्रं तवाऽऽत्मजः ॥ ३९ ॥
अभ्यद्रवद्भीमसेनं व्यासक्तं विकिरञ्छरैः ।
स भीमं नवभिर्बाणैरश्वानष्टभिरार्पयत् ॥ ४० ॥

उस समय वे दोनों कभी ऊंचे स्वरसे हंसते कभी एक दूसरेकी निन्दा करते और बार बार शंख बजाते हुए युद्ध करने लगे ॥ (२९-३४)

महाराज ! भीमसेनने फिर सूतपुत्र कर्णके धनुषकी मूठ काट दिया और फिर उनके शंख वर्ण सफेद घोडोंको अपने बाणोंसे पीडित करके यमपुरीमें भेज दिया । तथा उसके सारथीको भी मार कर रथ परसे गिराया ॥ विकर्तन पुत्र कर्ण सारथी और घोडोंके मारे जानेसे बडी चिन्तासे आकुल हुआ और भीमसेनकी बाणोंकी वर्षासे छिप जानेसे मोहित होकर रणभूमिमें स्वकर्तव्यको भी भूल गया ॥ (३४-३७)

तब राजा दुर्योधन कर्ण को इस प्रकार आपद्ग्रस्त देखकर क्रोधसे कम्पित होकर दुर्जयसे बोले, हे दुर्जय ! शीघ्र ही गमन करो, यह देखो संमुखमें पाण्डुपुत्र भीम कर्णके नाश करनेकी इच्छा करता है, इससे तुम कर्णके सहायक होकर उस थोडी मूछवाले भीमसेनका संहार करो । तुम्हारे पुत्र दुर्जय बडे भाईकी आज्ञा मान अपने बाणोंको चलाते हुए कर्णके सङ्ग युद्ध करनेवाले भीमसेनकी ओर दौडे । उन्होंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षड्भिः सूतं त्रिभिः केतुं पुनस्तं चापि सप्तभिः ।
भीमसेनोऽपि संक्रुद्धः साश्वयन्तारमाशुगैः ॥ ४१ ॥
दुर्जयं भिन्नमर्माणमनयद्यमसादनम् ।
खलंकृतं क्षितौ क्षुण्णं चेष्टमानं यथोरगम् ॥ ४२ ॥
रुदन्नार्तस्तव सुतं कर्णश्चक्रे प्रदक्षिणम् ।
स तु तं विरथं कृत्वा स्मयन्नत्यन्तवैरिणम् ॥ ४३ ॥
समाचिनोद्बाणगणैः शतघ्नीभिश्च शंकुभिः ।
तथाऽप्यतिरथः कर्णो भिद्यमानोऽस्य सायकैः॥ ४४ ॥
न जहौ समरे भीमं क्रुद्धरूपं परन्तपः ॥ ४५ ॥ [५४९४]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि कर्णभीमयुद्धे त्रयस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १३३॥

सञ्जय उवाच— सर्वथा विरथः कर्णः पुनर्भीमेन निर्जितः ।
रथमन्यं समास्थाय पुनर्विव्याध पाण्डवम् ॥ १ ॥
महागजाविवाऽऽसाद्य विषाणाग्रैः परस्परम् ।
शरैः पूर्णायतोत्सृष्टैरन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥ २ ॥

नौ बाणोंसे भीमसेन आठ बाणोंसे उनके रथके घोडे, छः बाणोंसे सारथी और तीन बाणोंसे उनके रथकी ध्वजा विद्ध करके फिर सात बाणोंसे भीमसेन को प्रहार किया । (३७–४१)

अनन्तर भीमसेनने शीघ्रताके सहित अपने बाणोंसे दुर्जयको सारथीके सहित मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया । कर्णने सुन्दर आभूषणोंसे शोभित तुम्हारे पुत्रको चेष्टा युक्त सर्पके समान पृथ्वीमें गिरते देख रुदन करते हुए उनकी प्रदक्षिण करी, परन्तु भीमसेन पहिलेसेही अत्यन्त वैर करने वाले कर्णको रथरहित करके हंसकर उन्हें अपने बाण शतघ्नी और शंकुओंसे विद्ध करने लगे । महाराज ! अतिरथी कर्ण युद्धभूमिमें भीमसेनके बाणोंसे इस प्रकार विद्ध होकर भी उस क्रोधमूर्त्तिवाले भीमसेनके संमुखसे न हटे ॥ (४० –४५) [५४९४]

द्रोणपर्वमें एकसौ तैंतीस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ चौंतीस अध्याय ।

सञ्जय बोले, हे महाराज ! कर्ण भीमसेनके अस्त्रोंसे रथरहित और पराजित होकर फिर दूसरे रथपर चढकर उनके सम्मुख उपस्थित हुए और भीमसेनको विद्ध करने लगे ॥ जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीके समीप जाकर अपने दांतसे उसके शरीरमें प्रहार करता है, वैसे ही वे दोनों रणभूमिमें घूमते हुए एक दूसरेके ऊपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ कर्णः शरव्रातैर्भीमसेनं समार्पयत् ।
ननाद च महानादं पुनर्विव्याध चोरसि ॥ ३ ॥
तं भीमो दशभिर्बाणैः प्रत्यविध्यदजिह्मगैः ।
पुनर्विव्याध सप्तत्या शराणां नतपर्वणाम् ॥ ४ ॥
कर्णं तु नवभिर्भीमो भित्त्वा राजंस्तनान्तरे ।
ध्वजमेकेन विव्याध सायकेन शितेन ह ॥ ५ ॥
सायकानां ततः पार्थस्त्रिषष्ट्या प्रत्यविध्यत ।
तोत्त्रैरिव महानागं कशाभिरिव वाजिनम् ॥ ६ ॥
सोऽतिविद्धो महाराज पाण्डवेन यशस्विना ।
सृक्किणी लेलिहन्वीरः क्रोधरक्तान्तलोचनः ॥ ७ ॥
ततः शरं महाराज सर्वकायावदारणम् ।
प्राहिणोद्भीमसेनाय बलायेन्द्र इवाऽशनिम् ॥ ८ ॥
स निर्भिद्य रणे पार्थं सूतपुत्रधनुश्च्युतः ।
अगच्छदारयन्भूमिं चित्रपुङ्खः शिलीमुखः ॥ ९ ॥
ततो भीमो महाबाहुः क्रोधसंरक्तलोचनः ।
वज्रकल्पां चतुष्किष्कुं गुर्वीं रुक्माङ्गदां गदाम् ॥ १० ॥

अपने बाणोंको चलाने लगे ॥ अनन्तर कर्णने भीमसेनको अपने बाणोंसे पीडित करके बलपूर्वक सिंहनाद किया और फिर उनके वक्षस्थलमें अपने तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार किया ॥ (१–३)

भीमसेनने भी दश बाणोंसे कर्णके हृदयमें प्रहार करके फिर उन्हें सत्तर बाणोंसे विद्ध किया; पीछे भीमसेनने नव बाणोंसे कर्णके वक्षस्थलमें प्रहार करके एक तीक्ष्ण बाणसे उनकी ध्वजाको विद्ध किया ॥ तिसके अनन्तर भीमसेन ने तिरसठ बाणोंसे कर्णको इस प्रकार विद्ध किया जैसे अंकुश देकर हाथीको उत्तेजित करते हैं ॥ (४–६)

महावीर कर्ण यशस्वी पाण्डुपुत्र भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर क्रोधसे नेत्र लालकर ओंठ काटते हुए भीमसेनकी ओर दौडके जैसे इन्द्रने वृत्रासुरके ऊपर वज्र चलाया था, वैसे ही सम्पूर्ण शरीरको विदारनेमें समर्थ एक भयङ्कर बाण ग्रहण करके उनकी ओर चलाया॥ कर्णके धनुषसे छूटा हुआ वह भयंकर बाण भीमसेनके शरीरको भेद कर पृथ्वी को विदीर्ण करते हुए पृथ्वीमें घुस गया ॥ (७–९)

तिसके अनन्तर महाबाहु भीमसेनने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राहिणोत्सूतपुत्राय षडस्त्रानविचारयन् ।
तया जघानाऽऽधिरथेः सदश्वान्साधुवाहिनः ॥ ११ ॥
गदया भारतः क्रुद्धो वज्रेणेन्द्र इवाऽसुरान् ।
ततो भीमो महाबाहुः क्षुराभ्यां भरतर्षभ ॥ १२ ॥
ध्वजमाधिरथेश्छित्त्वा सूतमभ्यहनच्छरैः ।
हताश्वसूतमुत्सृज्य स रथं पतितध्वजम् ॥ १३ ॥
विस्फारयन्धनुः कर्णस्तस्थौ भारत दुर्मनाः ।
तत्राऽद्भुतमपश्याम राधेयस्य पराक्रमम् ॥ १४ ॥
विरथो रथिनां श्रेष्ठो वारयामास यद्विपुम् ।
विरथं तं नरश्रेष्ठं दृष्ट्वाऽऽधिरथिमाहवे ॥ १५ ॥
दुर्योधनस्ततो राजन्नभ्यभाषत दुर्मुखम् ।
एष दुर्मुख राधेयो भीमेन विरथीकृतः ॥ १६ ॥
तं रथेन नरश्रेष्ठं सम्पादय महारथम् ।
ततो दुर्योधनवचः श्रुत्वा भारत दुर्मुखः ॥ १७ ॥
त्वरमाणोऽभ्ययात्कर्णं भीमं चाऽवारयच्छरैः ।

क्रोधसे नेत्र लाल कर चार हाथके परिणामवाली लोहमय छःशिर सुवर्णभूषित एक भयंकरी गदा उठा कर कुछ भी विचार न करके कर्णके रथ पर चलायी॥ जैसे इन्द्रने क्रुद्ध होकर वज्रसे असुरोंका नाश किया था वैसेही भीमसेनने सूतपुत्र कर्णके रथमें जुते उत्तम घोडोंको गदाके प्रहारसे मार डाला । (१०-१२)

तिसके अनन्तर दो तेज अस्त्रोंसे राधापुत्र कर्णके रथकी ध्वजा काट कर अनेक बाणोंसे सारथीका वध किया ॥ कर्ण खिन्न होकर घोडे सारथी और ध्वजासे रहित उस रथको त्यागके पृथ्वी पर स्थित हुए । परन्तु उस स्थल पर हम लोगोंने पराक्रमी कर्णका अद्भुत पराक्रम देखा कि रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण रथरहित होकर भी भीमसेनको निवारण करने लगे । (१२—१५)

अनन्तर राजा दुर्योधन रथिश्रेष्ठ कर्णको रथरहित देखकर अपने भाई दुर्मुखसे बोले, हे दुर्मुख ! देखो महारथी कर्ण भीमके अस्त्रोंसे रथ रहित हुए हैं; इससे तुम महारथी कर्णको शीघ्र ही रथपर चढाओ। दुर्मुख दुर्योधनके वचन को सुन कर शीघ्रताके सहित रथ लेकर कर्णके समीप उपस्थित हुए और भीमसेनको भी अपने बाणोंसे निवारण करने लगे । (१५–१८)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्मुखं प्रेक्ष्य संग्रामे सूतपुत्रपदानुगम् ॥ १८ ॥
वायुपुत्रः प्रहृष्टोऽभूत्सृक्किणी परिसंलिहन्।
ततः कर्णं महाराज वारयित्वा शिलीमुखैः ॥ १९ ॥
दुर्मुखाय रथं तूर्णं प्रेषयामास पाण्डवः।
तस्मिन्क्षणे महाराज नवभिर्नतपर्वभिः ॥ २० ॥
सुमुखैर्दुर्मुखं भीमः शरैर्निन्ये यमक्षयम्।
ततस्तस्मेवाऽऽधिरथिः स्यन्दनं दुर्मुखे हते ॥ २१ ॥
आस्थितः प्रबभौ राजन्दीप्यमान इवांऽशुमान्।
शयानं भिन्नमर्माणं दुर्मुखं शोणितोक्षितम् ॥ २२ ॥
दृष्ट्वा कर्णोऽश्रुपूर्णाक्षो मुहूर्तं नाऽभ्यवर्तत।
तं गतासुमतिक्रम्य कृत्वा कर्णः प्रदक्षिणम् ॥ २३ ॥
दीर्घमुष्णं श्वसन्वीरो न किञ्चित्प्रत्यपद्यत।
तस्मिंस्तु विवरे राजन्नाराचान्गार्ध्रवाससः ॥ २४ ॥
प्राहिणोत्सूतपुत्राय भीमसेनश्चतुर्दश।
ते तस्य कवचं भित्त्वा स्वर्णचित्रं महौजसः ॥ २५ ॥
हेमपुङ्खा महाराज व्यशोभन्त दिशो दश।
अपिबन्सूतपुत्रस्य शोणितं रक्तभोजनाः ॥ २६ ॥
क्रुद्धा इव मनुष्येन्द्र भुजङ्गाः कालचोदिताः।

वायुपुत्र भीमसेन युद्धभूमिमें दुर्मुख को कर्णका अनुगामी होते देख निर्भय चित्तसे कर्णको निवारण करके अपना रथ बढा कर दुर्मुखके सम्मुख उपस्थित हुए, और उसही समय नौ सन्नत पर्व बाणोंसे प्रहार करके दुर्मुखको यमलोकमें भेज दिया। (१८–२१)

दुर्मुखके मरने पर कर्ण उसही रथपर चढके प्रकाशमान सूर्यकी भांति शोभित होने लगे, परन्तु वह भीमसेनके बाणोंसे दुर्मुखको मरके पृथ्वीमें शयन करते देख आंखोंमें आंसू भरके मुहूर्त्त भर चिन्तित रहे। अनन्तर पराक्रमी कर्णने दुर्मुखके मृत शरीरके समीप जाकर उनकी प्रदक्षिणा कियी; उस समय उन्होंने किसी से कुछ वचन नहीं कहा, केवल लम्बी और गर्म सांस छोडने लगे। (२१-२४)

महाराज! भीमसेनने अच्छा अवसर पाकर कर्णकी ओर चौदह बाण चलाये। भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए वे चौदह बाण कर्णके सुवर्ण चित्रित वर्म और शरीरको भेद रुधिर पीते हुए पृथ्वीमें

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसर्पमाणा मेदिन्यां ते व्यरोचन्त मार्गणाः ॥ २७ ॥
अर्धप्रविष्टाः संरब्धा बिलानीव महोरगाः ।
तं प्रत्याविध्यद्राधेयो जाम्बूनदविभूषितैः ॥ २८ ॥
चतुर्दशभिरत्युग्रैर्नाराचैरविचारयन् ।
ते भीमसेनस्य भुजं सव्यं निर्भिद्य पत्रिणः ॥ २९ ॥
प्राविशन्मेदिनीं भीमाः क्रौञ्चं पत्ररथा इव ।
ते व्यरोचन्त नाराचाः प्रविशन्तो वसुन्धराम् ॥ ३० ॥
गच्छत्यस्तं दिनकरे दीप्यमाना इवांऽशवः ।
स निर्भिन्नो रणे भीमो नाराचैर्मर्मभेदिभिः ॥ ३१ ॥
सुस्राव रुधिरं भूरि पर्वतः सलिलं यथा ।
स भीमस्त्रिभिरायत्तः सूतपुत्रं पतत्त्रिभिः ॥ ३२ ॥
सुपर्णवेगैर्विव्याध सारथिं चाऽस्य सप्तभिः ।
स विह्वलो महाराज कर्णो भीमशराहतः ॥ ३३ ॥
प्राद्रवज्जवनैरश्वै रणं हित्वा महाभयात् ।
भीमसेनस्तु विस्फार्य चापं हेमपरिष्कृतम् ॥ ३४ ॥

प्रविष्ट हुए ऐसे दीखने लगे जैसे काल प्रेरित बिलमें अर्ध प्रविष्ट क्रोधी बडे सर्प दीखते हैं । (२४—२८)

राधापुत्र कर्णने कुछ भी विचार न कर सुवर्ण चित्रित अत्यन्त भयङ्कर चौदह बाणोंसे भीमसेनको विद्ध किया; वे सब महा भयङ्कर बाण भीमसेनके बांये हाथको भेद कर इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गये जैसे पक्षी क्रौञ्च पर्वतमें प्रवेश करते हैं । महाराज ! जैसे सूर्यके अस्ताचल पर्वत पर गमन करनेके समय उनकी किरण प्रकाशित होती हैं वैसे ही कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाण पृथ्वी में प्रवेश करनेके समय शोभित होने लगे । (२८—३१)

जैसे पर्वतसे जल बहता है, वैसे ही कर्णके मर्मभेदी बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर भीमसेन के शरीरसे रुधिर बहने लगा ॥ तिस के अनन्तर भीमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर गरुडके समान वेगशील तीन बाणोंसे कर्णको और सात बाणोंसे उनके सारथीको विद्ध किया । महाराज ! महा यशस्वी कर्ण भीमसेनके बाणोंसे पीडित होकर विह्वल होगये और युद्ध त्यागके वेगगामी घोडोंसे युक्त रथपर चढ कर वहांसे पृथक् हुए; परन्तु अतिरथी भीमसेन सुवर्ण खचित अपना धनुष फेरते हुए जलती हुई अग्नि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहवेऽतिरथोऽतिष्ठज्ज्वलन्निव हुताशनः ॥ ३५ ॥ [५५२९]

इति श्रीमहाभारतेऽद्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि कर्णापयाने चतुस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १३४ ॥

धृतराष्ट्र उवाच- दैवमेव परं मन्ये धिक्पौरुषमनर्थकम् ।
यत्राऽऽधिरथिरायत्तो नाऽतरत्पाण्डवं रणे ॥ १ ॥
कर्णः पार्थान्सगोविन्दाञ्जेतुमुत्सहते रणे ।
न च कर्णसमं योधं लोके पश्यामि कञ्चन ॥ २ ॥
इति दुर्योधनस्याऽहमश्रौषं जल्पतो मुहुः ।
कर्णो हि बलवाञ्छूरो दृढधन्वा जितक्लमः ॥ ३ ॥
इति मामब्रवीत्सूत मन्दो दुर्योधनः पुरा ।
वसुषेणसहायं मां नाऽलं देवाऽपि संयुगे ॥ ४ ॥
किं नु पाण्डुसुता राजन्गतसत्त्वा विचेतसः ।
तत्र तं निर्जितं दृष्ट्वा भुजङ्गमिव निर्विषम् ॥ ५ ॥
युद्धात्कर्णमपक्रान्तं किंस्विद् दुर्योधनोऽब्रवीत् ।
अहो दुर्मुखमेवैकं युद्धानामविशारदम् ॥ ६ ॥
प्रावेशयद्धुतवहं पतङ्गमिव मोहितः ।
अश्वत्थामा मद्रराजः कृपः कर्णश्च सङ्गताः ॥ ७ ॥

समान प्रकाशित हुए ॥ (३१—३५)

द्रोणपर्वमें एकसौ चौतीस अध्याय समाप्त। ५५२९

द्रोणपर्वमें एकसौ पैंतीस अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब अधिरथ नन्दन कर्ण भी भीमसेन को पराजित न कर सके बरन स्वयं भीम के संमुखसे पराजित हुए तब पुरुषार्थ को धिक्कार है, पुरुषार्थ अत्यन्त तुच्छ बोध होता है। दैव ही मेरे विचारमें श्रेष्ठ है॥ दुर्योधनके मुखसे मैंने सुना है कि कर्ण अकेले ही कृष्णके सहित पाण्डवोंको पराजित करनेका उत्साह कर सकते हैं, इस पृथ्वीके बीच मैं कर्णके समान योद्धा किसीको भी नहीं समझता हूं॥ उस मूढने मुझसे यह भी कहा था कि कर्ण दृढ धनुषधारी, परिश्रम रहित, पराक्रमसे युक्त और बलवान् है! हे राजन्! इससे कर्ण यदि युद्धभूमिमें मेरी सहायता करेंगे तो अल्प पराक्रमी बुद्धिहीन पाण्डवोंकी तो बात ही क्या है, देवता लोग भी मुझे पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं। (१-५)

इस समय कर्णको पराजित और विषरहित सर्पके समान भीमके संमुखसे पृथक् हुए देख दुर्योधनने क्या कहा था? हाय! अश्वत्थामा, कृपाचार्य,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न शक्ताः प्रमुखे स्थातुं नूनं भीमस्य सञ्जय ।
तेऽपि चाऽस्य महाघोरं बलं नागायुतोपमम् ॥ ८ ॥
जानन्तो व्यवसायं च क्रूरं मारुततेजसः ।
किमर्थं क्रूरकर्माणं यमकालान्तकोपमम् ॥ ९ ॥
बलसंरम्भवीर्यज्ञाः कोपयिष्यन्ति संयुगे ।
कर्णस्त्वेको महाबाहुः स्वबाहुबलदर्पितम् ॥ १० ॥
भीमसेनमनादृत्य रणेऽयुध्यत सूतजः ।
योऽजयत्समरे कर्ण पुरन्दर इवाऽसुरम् ॥ ११ ॥
न स पाण्डुसुतो जेतुं शक्यः केनचिदाहवे ।
द्रोणं यः सम्प्रमथ्यैकः प्रविष्टो मम वाहिनीम्॥ १२ ॥
भीमो धनञ्जयान्वेषी कस्तमाच्छेज्जिजीविषुः ।
को हि सञ्जय भीमस्य स्थातुमुत्सहतेऽग्रतः ॥ १३ ॥
उद्यताशनिहस्तस्य महेन्द्रस्येव दानवः ।

मद्रराज शल्य और कर्ण ये सब कोई मिल करभी जिसके संमुख खडे नहीं हो सकते उस जलती हुई अग्निके समान भीमसेनके निकट पतङ्गरूपी दुर्मुखको अकेले ही मोहके वशमें होकर दुर्योधनने भेजा था ! और अश्वत्थामा, शल्य, कृप और कर्ण ये एकत्र हुए महारथी लोग भी वायुके समान तेजस्वी भीमसेनके बल क्रोध और पराक्रमके विषय में अज्ञान नहीं हैं । उन सब लोगोंने उसको निठुर स्वभाव, दशहजार हाथीके समान बल, कठोर कर्मोंको करनेवाला और साक्षात् कालके समान जानकर तथा उसके सम्मुख ठहरनेमें असमर्थ होकर भी उसे युद्धभूमिमें क्यों कोपित किया ? (५-१०)

यद्यपि महाबाहु कर्णने अपने बल पराक्रमके आसरेसे भीमसेनका अनादर करके उसके सङ्ग युद्ध किया था; परन्तु इन्द्रने जैसे असुरोंको जीत लिया था भीमने उसी भांति कर्णको पराजित किया है । कोई पुरुष भी ऐसा नहीं है जो रणभूमिमें भीमसेनको पराजित कर सके। विशेष करके उसने जब अर्जुनकी खोजके वास्ते द्रोणाचार्यकी सेना भेदकर मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया है तब प्राणकी आशा करके कौन पुरुष उसे पीडित कर सकता है ? (१०-१३)

हे सञ्जय ! जैसे हाथमें वज्र ग्रहण करके युद्धभूमिमें खडे हुए इन्द्रके संमुख ठहरनेमें दानव लोग उत्साह नहीं कर सकते, वैसे ही गदा लेकर युद्धभूमिमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेतराजपुरं प्राप्य निवर्तेताऽपि मानवः ॥ १४ ॥
न भीमसेनं सम्प्राप्य निवर्तेत कदाचन।
पतङ्गा इव वह्निं ते प्राविशन्नल्पचेतसः ॥ १५ ॥
ये भीमसेनं संक्रुद्धमन्वधावन्विमोहिताः।
यत्तत्सभायां भीमेन मम पुत्रवधाश्रयम् ॥ १६ ॥
उक्तं संरम्भिणोऽग्रेण कुरूणां शृण्वतां तदा।
तन्नूनमभिसञ्चिन्त्य दृष्ट्वा कर्णं च निर्जितम् ॥ १७ ॥
दुःशासनः सह भ्रात्रा भयाद्भीमादुपारमत्।
यश्च सञ्जय दुर्बुद्धिरब्रवीत्समितौ मुहुः ॥ १८ ॥
कर्णो दुःशासनोऽहं च जेष्यामो युधि पाण्डवान्।
स नूनं विरथं दृष्ट्वा कर्णं भीमेन निर्जितम् ॥ १९ ॥
प्रत्याख्यानाच्च कृष्णस्य भृशं तप्यति पुत्रकः।
दृष्ट्वा भ्रातॄन्हतान्संख्ये भीमसेनेन दंशितान् ॥ २० ॥
आत्मापराधे सुमहन्नूनं तप्यति पुत्रकः।

खडे हुए भीमसेनके संमुख भी कोई पुरुष नहीं ठहर सकता; बरन कोई पुरुष प्रेतोंके स्वामी यमराजके नगरमें जा कर भी जीता लौट सकता है परन्तु युद्धभूमिमें भीमसेनके संमुखसे कभी भी नहीं लौट सकता! जो थोडी बुद्धिवाले पुरुष अज्ञानके वशमें होकर क्रोधी भीमसेनके सम्मुख युद्धके निमित्त उपस्थित होते हैं वे मानों जलती हुई अग्निमें प्रवेश करनेवाले पतङ्गकी भांति भीमसेन रूपी अग्निमें प्रवेश करते हैं। (१३-१६)

पहिले क्रोधी और कठोर स्वभाववाले भीमसेनने जूएके खेलके समय सभाके बीचमें मेरे पुत्रोंके वधके वास्ते प्रतिज्ञा किया था, उस ही की चिन्ता करके तथा कर्णको भी भीमसेनके निकटमें पराजित देख दुःशासन अवश्य ही दुर्योधनके सहित युद्धमें उत्साह रहित हुआ होगा। नीचबुद्धिवाले दुर्योधनने पहिले बार बार कहा था, कि मैं कर्ण और दुःशासन यही तीन पुरुष मिल कर युद्धभूमिमें पाण्डवोंको पराजित करेंगे। परन्तु इस समय वह कर्णको रथ-भ्रष्ट और पराजित देखकर कृष्णके वचनकी विरुद्धता के वास्ते अवश्य ही दुःख करता होगा; इसमें सन्देह नहीं है। (१५—२०)

मेरे कवचधारी पुत्रोंको भीमसेनके हाथसे मरते देख अवश्य ही अपने अपराधके विषयमें दुर्योधन अत्यन्त ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को हि जीवितमन्विच्छन्प्रतीपं पाण्डवं व्रजेत्॥ २१ ॥
भीमं भीमायुधं क्रुद्धं साक्षात्कालमिव स्थितम् ।
वडवामुखमध्यस्थो मुच्येताऽपि हि मानवः ॥ २२ ॥
न भीमसुखसम्प्राप्तो मुच्येदिति मतिर्मम ।
न पार्था न च पञ्चाला न च केशवसात्यकी ॥ २३ ॥
जानते युधि संरब्धा जीवितं परिरक्षितुम् ।
अहो मम सुतानां हि विपन्नं सूत जीवितम् ॥ २४ ॥

सञ्जय उवाच— यस्त्वं शोचसि कौरव्य वर्तमाने महाभये ।
त्वमस्य जगतो मूलं विनाशस्य न संशयः ॥ २५ ॥
स्वयं वैरं महत्कृत्वा पुत्राणां वचने स्थितः ।
उच्यमानो न गृह्णीषे मर्त्यः पथ्यमिवौषधम् ॥ २६ ॥
स्वयं पीत्वा महाराज कालकूटं सुदुर्जरम् ।
तस्येदानीं फलं कृत्स्नमवाप्नुहि नरोत्तम ॥ २७ ॥

शोक कर रहा है। किसी पुरुषके जीनेकी आशा नहीं है, जो साक्षात् कालके समान युद्धभूमिमें स्थित भयङ्कर अस्त्रोंके ग्रहण करनेवाले क्रोधी भीमसेनके निकट युद्धके निमित्त गमन करेगा। मेरे विचारसे कोई कदापि वडवानलकी अग्निके बीच प्रवेश करके बच सकता है परन्तु युद्धभूमिमें भीमसेनके हाथमें पडके कभी नहीं बच सकता। केवल भीमसेन ही क्यों ? युद्धमें क्रुद्ध होनेसे सब ही पृथापुत्र पाञ्चालयोद्धा, कृष्ण, सात्यकि,—ये कोई भी अपने प्राणरक्षाकी अभिलाष नहीं करते ! हे सूत ! इससे मेरे पुत्रोंका जीवन अत्यन्त सङ्कट में पडा हुआ है। (२०-२४)

सञ्जय बोले, हे कुरुश्रेष्ठ महाराज ! इस समय इस उपास्थित महा भयके निमित्त आप शोक कर रहे हैं परन्तु निःसन्देह इन सम्पूर्ण योद्धाओंके नाश करानेके मूल आप ही हैं ॥ क्योंकि उस समय आप पुत्रोंके मतमें सहमत होकर जैसे मृत्युके समीप पहुंचा हुआ पुरुष औषधी और पथ्यकी इच्छा नहीं करता वैसे ही हितैषी पुरुषोंके बार बार निवारण करने पर भी आपने किसीके वचनको न मानकर स्वयं ही इस महाघोर शत्रुताको उत्पन्न किया है ॥ हे पुरुषश्रेष्ठ महाराज ! तुमने स्वयं ही कालकूट विष पी लिया है वह विष तो सहजहीमें जीर्ण होनेवाला नहीं है, इससे इस समय उसका सम्पूर्ण फल आप हीभोग कीजिये ॥ (२५—२७)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्तु कुत्सयसे योधान्युध्यमानान्महाबलान् ।
तत्र ते वर्तयिष्यामि यथा युद्धमवर्तत ॥ २८ ॥
दृष्ट्वा कर्णं तु पुत्रास्ते भीमसेनपराजितम् ।
नाऽमृष्यन्त महेष्वासाः सोदर्याः पञ्च भारत ॥ २९ ॥
दुर्मर्षणो दुःसहश्च दुर्मदो दुर्धरो जयः ।
पाण्डवं चित्रसन्नाहास्तं प्रतीपमुपाद्रवन् ॥ ३० ॥
ते समन्तान्महाबाहुं परिवार्य वृकोदरम् ।
दिशः शरैः समावृण्वन्शलभानामिव व्रजैः ॥ ३१ ॥
आगच्छतस्तान्सहसा कुमारान्देवरूपिणः ।
प्रतिजग्राह समरे भीमसेनो हसन्निव ॥ ३२ ॥
तव दृष्ट्वा तु तनयान्भीमसेनपुरोगमान् ।
अभ्यवर्तत राधेयो भीमसेनं महाबलम् ॥ ३३ ॥
विसृजन्विशिखांस्तीक्ष्णान्स्वर्णपुङ्खाञ्छिलाशितान् ।
तं तु भीमोऽभ्ययात्तूर्णं वार्यमाणः सुतैस्तव ॥ ३४ ॥
कुरवस्तु ततः कर्णं परिवार्य समन्ततः ।
अवाकिरन्भीमसेनं शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ३५ ॥

शूरवीर योद्धा लोग अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध कर रहे हैं तौभी आप उनकी निन्दा कर रहे हैं। जो हो जिस प्रकारसे युद्ध हुआ था वह समस्त वृत्तान्त मैं वर्णन करता हूं; आप सुनिये॥ तुम्हारे महाधनुर्द्धारी पुत्र दुर्मर्षण, दुःसह, दुर्मद, दुर्धर और जयने कर्णको भीमसेन के समीपसे पराजित हुए देखकर सहन नहीं किया; बल्कि वे पांचों भाई क्रुद्ध होकर भीमसेनकी ओर दौडे ॥ उन्होंने चारों ओरसे भीमसेनको घेर लिया और शलभ समूहकी भांति अपने बाणोंकी वर्षासे सब दिशाओंको परिपूरित कर दिया ॥ (२८–३१)

भीमसेनने उन देवतोंके समान पराक्रमी तुम्हारे पुत्रोंको सहसा आपकी ओर आते देख हंसकर उन लोगोंको निवारण किया ॥ राधापुत्र कर्ण तुम्हारे पुत्रोंको भीमसेनके सम्मुख युद्धके निमित्त स्थित देखकर वहांपर उपस्थित हुए; परन्तु भीमसेन तुम्हारे पुत्रोंसे निवारित होकर भी शिलापर घिसे हुए सोनेके पङ्खवाले बाणोंको चलाते हूए शीघ्रताके सहित कर्णकी ओर दौडे ॥ (३२–३४)

अनन्तर वे राजपुत्र लोग कर्णको सङ्ग लेकर भीमसेनके ऊपर चारों ओर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तान्बाणैः पञ्चविंशत्या साश्वान्राजन्नरर्षभान् ।
ससूतान्भीमधनुषो भीमो निन्ये यमक्षयम् ॥ ३६ ॥
प्रापतन्स्यन्दनेभ्यस्ते सार्धं सूतैर्गतासवः ।
चित्रपुष्पधरा भग्ना वातेनेव महाद्रुमाः ॥ ३७ ॥
तत्राऽद्भुतमपश्याम भीमसेनस्य विक्रमम् ।
संवार्याऽऽधिरथिं बाणैर्यज्जघान तवाऽऽत्मजान् ॥ ३८ ॥
स वार्यमाणो भीमेन शितैर्बाणैः समन्ततः ।
सूतपुत्रो महाराज भीमसेनमवैक्षत ॥ ३९ ॥
तं भीमसेनः संरम्भात्क्रोधसंरक्तलोचनः ।
विस्फार्य सुमहच्चापं मुहुः कर्णमवैक्षत ॥ ४० ॥ [५५६९]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमसेनपराक्रमे पञ्चत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥१३५॥

सञ्जय उवाच— तवाऽऽत्मजांस्तु पतितान्दृष्ट्वा कर्णः प्रतापवान् ।
क्रोधेन महताऽऽविष्टो निर्विण्णोऽभूत्स जीवितात् ॥ १ ॥
आगस्कृतामिवाऽऽत्मानं मेने चाऽऽधिरथिस्तदा ।
यत्प्रत्यक्षं तव सुता भीमेन निहता रणे ॥ २ ॥

से अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ महाराज ! भीमसेनने भयङ्कर धनुष ग्रहण करनेवाले तुम्हारे उन पांचों पुत्रों को पचीस बाणोंसे घोडे सारथीके सहित यमपुरीमें भेज दिया ॥ जैसे नानावर्णके फूलोंसे युक्त वृक्ष वायुके वेगसे टूटकर गिरते हैं वे लोग उसी भांति भीमसेनके बाणोंसे प्राणरहित होकर सारथीके सहित रथसे पृथ्वीमें गिर पडे ॥ (३५–३७)

उस स्थानमें मैंने भीमसेनका यह आश्चर्यमय पराक्रम देखा, कि उन्होंने अपने बाणोंसे कर्णको निवारण करनेके सङ्ग ही तुम्हारे पुत्रोंका वध किया ॥ सूतपुत्र कर्ण चारों ओरसे भीमसेनके बाणोंसे निवारित होकर उनकी ओर क्रोधपूर्वक देखने लगे और भीमसेन भी अभिमानके सहित क्रोधसे नेत्र लालकर अपना प्रचण्ड धनुष फेरते हुए बार बार कर्णकी ओर देखने लगे । (३८–४०)

द्रोणपर्वमें एकसौ पैंतीस अध्याय समाप्त । ५५६९

द्रोणपर्वमें एकसौ छत्तीस अध्याय ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! प्रतापी कर्णने तुम्हारे पुत्रोंको मरे हुए पृथ्वीपर पडे देख अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर अपने प्राणकी आशाको त्याग दिया, विशेष करके उन्होंने सम्मुखमें तुम्हारे पुत्रोंको भीमसेनके अस्त्रोंसे मरकर गिरता हुआ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमसेनस्ततः क्रुद्धः कर्णस्य निशिताञ्शरान्।
निचखान ससम्भ्रान्तः पूर्ववैरमनुस्मरन् ॥ ३ ॥
स भीमं पञ्चभिर्विद्ध्वा राधेयः प्रहसन्निव।
पुनर्विव्याध सप्तत्या स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः ॥ ४ ॥
अविचिन्त्याऽथ तान्बाणान्कर्णेनाऽस्तान्वृकोदरः।
रणे विव्याध राधेयं शतेनाऽऽनतपर्वणाम् ॥ ५ ॥
पुनश्च विशिखैस्तीक्ष्णैर्विद्ध्वा मर्मसु पञ्चभिः।
धनुश्चिच्छेद भल्लेन सूतपुत्रस्य मारिष ॥ ६ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय कर्णो भारत दुर्मनाः।
इषुभिश्छादयामास भीमसेनं परन्तपः ॥ ७ ॥
तस्य भीमो हयान्हत्वा विनिहत्य च सारथिम्।
प्रजहास महाहासं कृते प्रतिकृते पुनः ॥ ८ ॥
इषुभिः कार्मुकं चाऽस्य चकर्त पुरुषर्षभः।
तत्पपात महाराज स्वर्णपृष्ठं महास्वनम् ॥ ९ ॥
अवारोहद्रथात्तस्मादथ कर्णो महारथः।

देखकर अपनेको अपराधी समझा ॥ १-२

उसके अनन्तर भीमसेन क्रुद्ध होकर निर्भयचित्तसे कर्णकी ओर दौडे और पूर्व वैरको स्मरण कर उन्हें तीक्ष्ण बाणों से विद्ध करने लगे ॥ कर्णने भीमसेन का तिरस्कार कर पांच बाणोंसे उन्हें विद्ध किया, फिर शिलापर घिसे हुए सत्तर बाणोंसे भीमसेनको पुनर्वार विद्ध किया; परन्तु भीमसेनने कर्णके चलाये हुए बाणोंकी कुछ भी पर्वाह न की बल्कि अपने सौ तीक्ष्ण बाणोंसे राधा-नन्दन कर्णको विद्ध किया ॥ और पांच चोखे बाणोंसे कर्णका मर्मस्थल विद्ध करके फिर एक बाणसे उनका धनुष काट दिया ॥ (३-६)

धनुष कटनेपर परन्तप कर्णने खिन्न होकर दूसरा धनुष ग्रहण करके शत्रु-नाशन भीमसेनको अपने बाणोंसे छिपा दिया ॥ परन्तु भीमसेन उनके घोडे और सारथीको मारकर शत्रुता शेष करनेकी इच्छासे बलपूर्वक सिंहनाद करके हंसने लगे ॥ अनन्तर उस ही समय पराक्रमी भीमसेनने कर्णके धनुषको फिर काट दिया। महाराज ! वह सुवर्ण भूषित कर्णका धनुष भीमके बाणोंसे कटकर घोर टङ्कार सहित पृथ्वीमें गिर पडा ॥ (७-९)

तब महारथ कर्णने रथसे नीचे उतर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गदां गृहीत्वा समरे भीमाय प्राहिणोद्रुषा ॥ १० ॥
तामापतन्तीमालक्ष्य भीमसेनो महागदाम् ।
शरैरवारयद्राजन्सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ ११ ॥
ततो बाणसहस्राणि प्रेषयामास पाण्डवः ।
सूतपुत्रवधाकांक्षी त्वरमाणः पराक्रमी ॥ १२ ॥
तानिषूनिषुभिः कर्णो वारयित्वा महामृधे ।
कवचं भीमसेनस्य पाटयामास सायकैः ॥ १३ ॥
अथैनं पञ्चविंशत्या नाराचानां समार्पयत् ।
पश्यतां सर्वसैन्यानां तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ १४ ॥
ततो भीमो महाबाहुर्नवभिर्नतपर्वभिः ।
प्रेषयामास संक्रुद्धः सूतपुत्रस्य मारिष ॥ १५ ॥
ते तस्य कवचं भित्त्वा तथा बाहुं च दक्षिणम् ।
अभ्ययुर्धरणीं तीक्ष्णा वल्मीकामिव पन्नगाः ॥ १६ ॥
स च्छाद्यमानो बाणौघैर्भीमसेनधनुश्च्युतैः ।
पुनरेवाऽभवत्कर्णो भीमसेनात्पराङ्मुखः ॥ १७ ॥
तं पराङ्मुखमालोक्य पदातिं सूतनन्दनम् ।

कर गदा ग्रहण करी। अनन्तर उस भयङ्कर गदाको कर्णने भीमकी ओर चलाया। उस महाघोर गदाको संमुख आती देख भीमसेनने सम्पूर्ण योद्धाओंके संमुख हीमें उसे निवारण किया ॥ तिसके अनन्तर महा पराक्रमी भीमसेन कर्णके वधकी इच्छा करके शीघ्रताके सहित सहस्र सहस्र बाण उनकी ओर चलाने लगे ॥ (१०–१२)

कर्णने भीमसेनके चलाये हुए बाणोंको अपने बाणोंसे मार्गहीमें काटकर गिरा दिया। तिसके अनन्तर सम्पूर्ण सेनाके संमुखमेंही अपने बाणोंसे भीमसेनका कवच काटकर पृथ्वीमें गिराया; फिर पचीस नाराच बाणोंसे उन्हें अत्यन्त ही पीडित किया, वह कर्णका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पडा ॥ (१३-१४)

अनन्तर महाबाहु भीमसेनने क्रुद्ध होकर कर्णकी ओर नौ बाण चलाये। हे राजेन्द्र ! जैसे सर्प बिलमें प्रवेश करते हैं, वैसे ही भीमसेनकी धनुषसे छूटे हुए सम्पूर्ण बाण कर्णके कवच और दक्षिण भुजाको भेदकर पृथ्वीमें घुस गये ॥ कर्ण भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे छिपकर फिर उनके समीपसे विमुख हुए ॥ (१५–१७)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन्तेयशरसंछन्नं राजा दुर्योधनोऽब्रवीत् ॥ १८ ॥
त्वरध्वं सर्वतो यत्ता राधेयस्य रथं प्रति ।
ततस्तव सुता राजञ्श्रुत्वा भ्रातुर्वचो द्रुतम् ॥ १९ ॥
अभ्ययुः पाण्डवं युद्धे विसृजन्तः शिलीमुखान् ।
चित्रोपचित्रश्चित्राक्षश्चारुचित्रः शरासनः ॥ २० ॥
चित्रायुधश्चित्रवर्मा समरे चित्रयोधिनः ।
तानापतत एवाऽऽशु भीमसेनो महारथः ॥२१ ॥
एकैकेन शरेणाऽऽजौ पातयामास ते सुतान् ।
ते हता न्यपतन्भूमौ वातरुग्णा इव द्रुमाः ॥ २२ ॥
दृष्ट्वा विनिहतान्पुत्रांस्तव राजन्महारथान् ।
अश्रुपूर्णमुखः कर्णः क्षत्तुः सस्मार तद्वचः ॥२३ ॥
रथं चाऽन्यं समास्थाय विधिवत्कल्पितं पुनः ।
अभ्ययात्पाण्डवं युद्धे त्वरमाणः पराक्रमी ॥ २४ ॥
तावन्योन्यं शरैर्भित्त्वा स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः।
व्यभ्राजेतां यथा मेघौ संस्यूतौ सूर्यरश्मिभिः॥ २५ ॥

राजा दुर्योधन सूतपुत्र कर्णको भीमसेनके बाणोंसे पीडित होकर पैदल ही भागते देख अपने सहोदर भाइयोंसे बोले—हे पुरुषसिंहो ! तुम लोग सब भांतिसे यत्नवान् होकर शीघ्रताके सहित कर्णकी रक्षा करो। अनन्तर चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन, चित्रायुध और चित्रवर्मा तुम्हारे ये कईएक बलवान् पुत्र अपने जेठे भाईकी आज्ञा सुन शीघ्रताके सहित बाणोंको चलाते हुए भीमसेनकी ओर दौडे। (१८–२१)

भीमसेनने तुम्हारे पुत्रोंको शीघ्रताके सहित रणभूमिमें संमुख आये देख उन हर एकको एक एक बाणसे मार डाला। वे सब प्रचण्ड वायुके वेगसे टूटे हुए वृक्षकी भांति भीमसेनके बाणोंसे मरकर पृथ्वीमें गिर पडे ॥ हे राजन् ! महा पराक्रमी कर्ण तुम्हारे उन महारथी पुत्रोंको भीमसेनके बाणोंसे मरा हुआ देख आंखों में आंसू भर कर विदुर के वचनोंको स्मरण करने लगे ॥ अनन्तर शीघ्रताके सहित दूसरे रथको भली भांति सजाकर उसपर चढ और पराक्रम प्रकाशित करते हुए भीमसेनकी ओर दौडे ॥ (२२–२४)

वे दोनों आपसमें एक दूसरेको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करके मानो सूर्य किरणसे युक्त दो बादलके टुकडेके समान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षट्त्रिंशद्भिस्ततो भल्लैर्निशितैस्तिग्मतेजनैः ।
व्यधमत्कवचं क्रुद्धः सूतपुत्रस्य पाण्डवः ॥ २६ ॥
सूतपुत्रोऽपि कौन्तेयं शरैः सन्नतपर्वभिः ।
पञ्चाशता महाबाहुर्विव्याध भरतर्षभम् ॥ २७ ॥
रक्तचन्दनदिग्धाङ्गौ शरैः कृतमहाव्रणौ ।
शोणितार्क्तौ व्यराजेतां चन्द्रसूर्याविवोदितौ ॥ २८ ॥
तौ शोणितोक्षितैर्गात्रैः शरैश्छिन्नतनुच्छदौ ।
कर्णभीमौ व्यराजेतां निर्मुक्ताविव पन्नगौ ॥ २९ ॥
व्याघ्राविव नरव्याघ्रौ दंष्ट्राभिरितरेतरम् ।
शरधारासृजौ वीरौ मेघाविव ववर्षतुः ॥ ३० ॥
वारणाविव चाऽन्योन्यं विषाणाभ्यामरिन्दमौ ।
निर्भिन्दन्तौ स्वगात्राणि सायकैश्चारु रेजतुः ॥ ३१ ॥
नादयन्तौ प्रहर्षन्तौ विक्रीडन्तौ परस्परम् ।
मण्डलानि विकुर्वाणौ रथाभ्यां रथिपूत्तमौ ॥ ३२ ॥

शोभित होने लगे ॥ पाण्डुपुत्र भीमसेनने क्रुद्ध होकर शिलापर घिसे हुए छत्तीस बाणोंसे कर्णका कवच काट दिया ॥ महाबाहु कर्णने पचास तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनको अत्यन्तही विद्ध किया ॥ (२५-२७)

शरीरमें लाल चन्दन लगाये हुए वे दोनों बाणोंके प्रहारसे क्षत विक्षत शरीर होकर चन्द्र सूर्यके समान प्रकाशित होने लगे ॥ बाणोंसे कवच कट जानेसे दोनों ही उस युद्ध भूमिमें ऐसे शोभित होते थे, जैसे केचुलीके त्यागनेसे सर्प शोभायमान लगता है ॥ जैसे दो सिंह अपने तीक्ष्ण दांतरूपी अस्त्रोंसे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करते हैं वैसे ही वे दोनों पुरुषसिंह कर्ण और भीम आपसमें एक दूसरेके ऊपर बाणोंसे प्रहार करके, क्षत विक्षत शरीर होकर अत्यन्त ही पीडित हुए । जैसे बादल आकाशसे पानीकी वर्षा करते हैं, वैसे ही वे दोनों एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ (२८-३०)

तथा जैसे दो मतवारे हाथी अपने दांत और सूण्डोंसे आपसमें युद्ध करते हैं, वैसे ही दोनों पराक्रमी वीर अपने बाणोंसे एक दूसरे को विद्ध करके रुधिर पूरित शरीरसे अत्यन्त ही शोभित हुए ॥ वे दोनों रथियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी योद्धा सिंहनाद करते उछलते और मण्डलाकार गतिसे रथको घुमाते हुए रणभूमिमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृषाविवाऽथ नर्दन्तौ बलिनौ वासितान्तरे।
सिंहाविव पराक्रान्तौ नरसिंहौ महाबलौ ॥ ३३ ॥
परस्परं वीक्षमाणौ क्रोधसंरक्तलोचनौ।
युयुधाते महावीर्यौ शक्रवैरोचनी यथा ॥ ३४ ॥
ततो भीमो महाबाहुर्बाहुभ्यां विक्षिपन्धनुः।
व्यराजत रणे राजन्सविद्युदिव तोयदः ॥ ३५ ॥
स नेमिघोषस्तनितश्चापविद्युच्छराम्बुभिः।
भीमसेनमहामेघः कर्णपर्वतमावृणोत् ॥ ३६ ॥
ततः शरसहस्रेण सम्यगस्तेन भारत।
पाण्डवो व्यकिरत्कर्णं भीमो भीमपराक्रमः ॥ ३७ ॥
तत्राऽपश्यंस्तव सुता भीमसेनस्य विक्रमम्।
सुपुङ्खैः कङ्कवासोभिर्यत्कर्णं छादयच्छरैः ॥ ३८ ॥
स नन्दयन्रणे पार्थं केशवं च यशस्विनम्।
सात्यकिं चक्ररक्षौ च भीमः कर्णमयोधयत् ॥ ३९ ॥
विक्रमं भुजयोर्वीर्यं धैर्यं च विदितात्मनः।

क्रीडा करने लगे ॥ उस समय गौके लिये युद्ध करने वाले दोन बलवान् बैलोंके समान गर्जना करने वाले और सिंहके समान पराक्रमी वे दोनों पुरुष सिंह आपसमें क्रोधसे लालनेत्र करके देखते हुए इस प्रकार युद्ध करने लगे, जैसे पहले समयमें इन्द्र और राजा बलिका संग्राम हुआ था ॥ (३१–३४)

महाराज ! अनन्तर महाबाहु भीमसेन अपना धनुष चढा कर मानो बिजलीसे युक्त बादलकी भांति रणभूमिमें विराजमान हुए ॥ उनके रथकी घरघराहट बादल गर्जनेके समान सुनाई देने लगी और उनका प्रचण्ड धनुष बिजलीके समान दीख पडता था। वह मेघरूपी होकर अपने बाणोंकी वर्षा से कर्ण रूपी पर्वत को छिपाने लगे ॥ (३५–३६)

हे भारत ! महापराक्रमी भीमसेन इसी प्रकारके सहस्रों बाणोंसे कर्णको छिपाने लगे ॥ भीमने तेरे पुत्रोंके संमुखही कर्णको इसी प्रकार अनेक बाणों से छिपा दिया ॥ भीमसेन यशस्वी कृष्ण अर्जुन सात्यकि और अर्जुनके चक्ररक्षक पाञ्चाल देशीय दो राजकुमारोंको आनन्दित करते हुए युद्धिभूमिमें कर्णको निवारण करने लगे ॥ महाराज ! तुम्हारे सम्पूर्ण पुत्र भीमसेनके पराक्रम धीरज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्रास्तव महाराज दृष्ट्वा विमनसोऽभवन् ॥ ४० ॥ [५६०९]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमयुद्धे षट्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः॥ १३६ ॥

सञ्जय उवाच-- भीमसेनस्य राधेयः श्रुत्वा ज्यातलनिःस्वनम् ।
नाऽमृष्यत यथा मत्तो गजः प्रतिगजस्वनम् ॥ १ ॥
सोऽपक्रम्य मुहूर्तं तु भीमसेनस्य गोचरात् ।
पुत्रांस्तव ददर्शाऽथ भीमसेनेन पातितान् ॥ २ ॥
तानवेक्ष्य नरश्रेष्ठ विमना दुःखितस्तदा ।
निःश्वसन्दीर्घमुष्णं च पुनः पाण्डवमभ्ययात् ॥ ३ ॥
स ताम्रनयनः क्रोधाच्छ्वसन्निव महोरगः ।
बभौ कर्णः शरानस्यन्रश्मीनिव दिवाकरः ॥ ४ ॥
किरणैरिव सूर्यस्य महीध्रो भरतर्षभ ।
कर्णचापच्युतैर्बाणैः प्राच्छाद्यत वृकोदरः ॥ ५ ॥
ते कर्णचापप्रभवाः शरा बर्हिणवाससः ।
विविशुः सर्वतः पार्थं वासायेवाऽण्डजा द्रुमम् ॥ ६ ॥
कर्णचापच्युता बाणाः सम्पतन्तस्ततस्ततः ।

और बाहुबलको देखकर उत्साह रहित होगये ॥ (३७-४०) [५६०९]

द्रोणपर्वमें एकसौ छत्तीस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ सैंतीस अध्याय ।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र ! जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी गर्जना नहीं सह सकता; कर्णने भी उसी प्रकार भीमसेनके धनुष टंकार और तलत्राण शब्दको सहन नहीं किया ॥ यद्यपि वह उस समय थोडी देर तक युद्धभूमिसे पृथक् हुए थे तथापि भीम के बाणोंसे तुम्हारे पुत्रोंको मरते हुए देख शोकित दुःखित होकर लम्बी सांस छोडते हुए भीमसेन की ओर फिर दौडे ॥ (१-३)

वह क्रोधसे लालनेत्र करके बडे सर्प के समान श्वास छोडते और सूर्यकिरण-की भांति अपने प्रकाशमान बाणों को चलाते हुए अत्यन्त शोभित हुए ॥ हे भारत ! भीमसेन सूर्यकिरण के समान कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंकी जाल-में एकबारगी छिप गए ॥ जैसे पक्षियों-का समूह वसतिके लिये इकबारगी वृक्ष-के ऊपर आके गिरता है, वैसे ही कर्ण के धनुषसे छूटे हुए बाण भीमसेनके सम्पूर्ण शरीरमें घुस गये ॥ और कितने ही मोर पंखवाले तीक्ष्ण बाण आकाशमें समूहसे चलते हुए इस प्रकार शोभित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुक्मपुङ्खा व्यराजन्त हंसाः श्रेणीकृता इव ॥ ७ ॥
चापध्वजोपस्करेभ्यश्छत्रादीषासुखाद्युगात् ।
प्रभवन्तो व्यदृश्यन्त राजन्नधिरथेः शराः ॥ ८ ॥
खं पूरयन्महावेगात्खगमान्गृध्रवाससः ।
सुवर्णविकृतांश्चित्रान्मुमोचाऽऽधिरथिः शरान् ॥ ९ ॥
तमन्तकमिवाऽऽयस्तमापतन्तं वृकोदरम् ।
त्यक्त्वा प्राणानतिक्रम्य विव्याध निशितैः शरैः ॥ १० ॥
तस्य वेगमसह्यं स दृष्ट्वा कर्णस्य पाण्डवः ।
महतश्च शरौघांस्तान्व्यवारयत वीर्यवान् ॥ ११ ॥
ततो विधम्याऽऽधिरथेः शरजालानि पाण्डवः ।
विव्याध कर्णं विंशत्या पुनरन्यैः शिलाशितैः ॥ १२ ॥
यथैव हि स कर्णेन पार्थः प्रच्छादितः शरैः ।
तथैव स रणे कर्णं छादयामास पाण्डवः ॥ १३ ॥
दृष्ट्वा तु भीमसेनस्य विक्रमं युधि भारत ।
अभ्यनन्दंस्त्वदीयाश्च सम्प्रहृष्टाश्च चारणाः ॥ १४ ॥

होने लगे; जैसे उडता हुआ हंसोंका समूह शोभित होता है। (४–७)

महाराज उस समय कर्णके धनुष, उनके रथकी ध्वजा, रथके चक्के, रथके ऊपर तथा नीचे के हिस्से और छत्र, इन सम्पूर्ण स्थलों में बाण छूटते हुए दिखाई देने लगे ॥ कर्णने आकाशचारी पक्षियों की भांति सुवर्ण-दण्डभूषित अनेक वेगवान् विचित्र बाणोंको चलाकर आकाशमण्डल को परिपूर्ण कर दिया ॥ (८–९)

भीमसेन कर्णको साक्षात् काल के समान सम्मुख आते देखकर अपने प्राणकी आशा छोडके तीक्ष्ण बाणों को चलाते हुए उन्हें विद्ध करने लगे ॥ कर्णका महाघोर पराक्रम देख और उनके चलाये हुए भयङ्कर बाणजालसे विद्ध होकर भी भीमसेन अपने बल तथा पराक्रमके प्रभावसे तनिक भी पीडित न हुए ॥ बरन उनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको निवारण करके शिलापर घिसे हुए बीस तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको विद्ध किया ॥ (१०—१२)

भीमसेन जिस प्रकार कर्ण के बाण जाल में छिप गये थे, वैसे ही उन्होंने भी अपने बाणोंकी वर्षासे कर्णको छिपा दिया ॥ महाराज! रणभूमि में भीमसेन का ऐसा पराक्रम देखकर चारण और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूरिश्रवाः कृपो द्रौणिर्मद्रराजो जयद्रथः ।
उत्तमौजा युधामन्युः सात्यकिः केशवार्जुनौ ॥ १५ ॥
कुरुपाण्डवप्रवरा दश राजन्महारथाः ।
साधुसाध्विति वेगेन सिंहनादमथाऽनदन् ॥ १६ ॥
तस्मिन्समुत्थिते शब्दे तुमुले लोमहर्षणे ।
अभ्यभाषत पुत्रस्ते राजन्दुर्योधनस्त्वरन् ॥ १७ ॥
राज्ञः स राजपुत्रांश्च सोदर्यांश्च विशेषतः ।
कर्णं गच्छत भद्रं वः परीप्सन्तो वृकोदरात् ॥ १८ ॥
पुरा निघ्नन्ति राधेयं भीमचापच्युताः शराः ।
ते यतध्वं महेष्वासाः सूतपुत्रस्य रक्षणे ॥ १९ ॥
दुर्योधनसमादिष्टाः सोदर्याः सप्त भारत ।
भीमसेनमभिद्रुत्य संरब्धाः पर्यवारयन् ॥ २० ॥
ते समासाद्य कौन्तेयमावृण्वञ्शरवृष्टिभिः ।
पर्वतं वारिधाराभिः प्रावृषीव बलाहकाः ॥ २१ ॥
ते पीडयन्भीमसेनं क्रुद्धाः सप्त महारथाः ।

तुम्हारी ओरके योद्धाओंने आनन्दित होके उन्हें धन्यवाद दिया ॥ भूरिश्रवा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, मद्रराज शल्य, जयद्रथ, उत्तमौजा, युधामन्यु, सात्यकि, कृष्ण और अर्जुन आदि कौरव तथा पाण्डवोंकी ओरके मुख्य मुख्य ये दस महारथी योद्धा धन्य धन्य करके सिंहनाद करने लगे ॥ (१३-१६)

उस रोएंको खडा करनेवाले तुमुल शब्दको सुनकर तुम्हारे पुत्र दुर्योधन शीघ्रताके सहित बहुतेरे राजा राजपुत्र और विशेषतः अपने सहोदर भाइयोंसे यह वचन बोले, हे शूरवीर पुरुषो ! आप लोगोंका मङ्गल होवे तुम लोग कर्णकी रक्षाके निमित्त भीमसेनके समीप शीघ्र गमन करो ॥ हे महा धनुर्द्धर वीर पुरुषो! जब तक भीमसेन के धनुषसे छूटे हुए बाण कर्णका नाश नहीं करते हैं उससे पहले ही तुम लोग सूत पुत्र कर्णकी रक्षाके निमित्त यत्नवान् होके भीमसेनसे युद्ध करो ॥ (१७-१९)

तुम्हारे सात पुत्रोंने अपने जेठे भाई दुर्योधनकी आज्ञाके अनुसार क्रुद्ध हो भीमसेनके निकट जाकर उन्हें चारों ओरसे घेरलिया॥ जैसे वर्षा ऋतुमें बादलोंके समूह पर्वतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं उसी प्रकार तुम्हारे पुत्रोंने भीमसेनको चारों ओरसे घेर कर अपने बाणोंको उनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजासंहरणे राजन्सोमं सप्त ग्रहा इव ॥ २२ ॥
ततो वेगेन कौन्तेयः पीडयित्वा शरासनम् ।
मुष्टिना पाण्डवो राजन्दृढेन सुपरिष्कृतम् ॥ २३ ॥
मनुष्यसमतां ज्ञात्वा सप्त सन्धाय सायकान् ।
तेभ्यो व्यसृजदायस्तः सूर्यरश्मिनिभान्प्रभुः ॥ २४ ॥
निरस्यन्निव देहेभ्यस्तनयानामसूंस्तव ।
भीमसेनो महाराज पूर्ववैरमनुस्मरन् ॥ २५ ॥
ते क्षिप्ता भीमसेनेन शरा भरत भारतान् ।
विदार्य खं समुत्पेतुः स्वर्णपुङ्खाः शिलाशिताः ॥ २६ ॥
तेषां विदार्य चेतांसि शरा हेमविभूषिताः ।
व्यराजन्त महाराज सुपर्णा इव खेचराः ॥ २७ ॥
शोणितादिग्धवाजाग्राः सप्त हेमपरिष्कृताः ।
पुत्राणां तव राजेन्द्र पीत्वा शोणितमुद्गताः ॥ २८ ॥
ते शरैर्भिन्नमर्माणो रथेभ्यः प्रापतन्क्षितौ ।
गिरिसानुरुहा भग्ना द्विपेनेव महाद्रुमाः ॥ २९ ॥

ऊपर बर्साना आरंभ किया ॥ जैसे प्रलय कालमें सात ग्रह एक चन्द्रमाको पीडित करते हैं वेसेही वे तुम्हारे सातों पुत्र भीमसेनको पीडित करने लगे ॥ २०-२२

अनन्तर भीमसेनने अपना प्रचण्ड धनुष बलपूर्वक खींच कर मनुष्यों के नाश करने योग्य तीक्ष्ण बाणोंको चलाने लगे ॥ उस समय उन्होंने पहिले वैरको स्मरण करके अत्यन्त क्रुद्ध होकर मानो तुम्हारे पुत्रोंके प्राणनाश करनेकी इच्छा से ही सूर्य किरणके समान प्रकाश मान सात बाणोंको धनुष पर चढाकर उन सातों वीरोंकी ओर चलाया ॥ २३-२५

भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए स्वर्ण दण्डसे युक्त वे सातों भयङ्कर बाण भरत वंशी राजकुमारोंके शरीरको विदारण करके आकाश मण्डल में चलते हुए दिखाई देने लगे ॥ महाराज ! सुवर्ण दण्डभूषित वे सम्पूर्ण बाण तुम्हारे पुत्रोंके हृदयको विदीर्ण करके उनके शरीरसे रुधिरको पीकर मानो आकाशचारी गरुड पक्षियोंके समूहकी भांति शोभित होने लगे ॥ जैसे पर्वत पर उत्पन्न हुए बडे बडे वृक्ष मतवारे हाथियोंके सूण्डसे टूटकर पृथ्वी पर गिर पडते हैं, वैसे ही तुम्हारे सातों पुत्र भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर पृथ्वीमें गिर पडे ॥ (२६-२९)

CC-0. Garuda Kunja Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रुञ्जयः शत्रुसहश्चित्रश्चित्रायुधो दृढः ।
चित्रसेनो विकर्णश्च सप्तैते विनिपातिताः ॥ ३० ॥
पुत्राणां तव सर्वेषां निहतानां वृकोदरः ।
शोचत्यतिभृशं दुःखाद्विकर्णं पाण्डवः प्रियम् ॥ ३१ ॥
प्रतिज्ञेयं मया वृत्ता निहन्तव्यास्तु संयुगे ।
विकर्ण तेनाऽसि हतः प्रतिज्ञा रक्षिता मया ॥ ३२ ॥
त्वमागाः समरं वीर क्षात्रधर्ममनुस्मरन् ।
ततो विनिहतः संख्ये युद्धधर्मो हि निष्ठुरः ॥ ३३ ॥
विशेषतो हि नृपतेस्तथाऽस्माकं हिते रतः ।
न्यायतोऽन्यायतो वाऽपि हतः शेते महाद्युतिः ॥ ३४ ॥
अगाधबुद्धिर्गाङ्गेयः क्षितौ सुरगुरोः समः ।
त्याजितः समरे प्राणांस्तस्माद्युद्धं हि निष्ठुरम् ॥ ३५ ॥

सञ्जय उवाच— तान्निहत्य महाबाहू राधेयस्यैव पश्यतः ।
सिंहनादरवं घोरमसृजत्पाण्डुनन्दनः ॥ ३६ ॥
स रवस्तस्य शूरस्य धर्मराजस्य भारत ।
आचख्यावेव तद्युद्धं विजयं चाऽऽत्मनो महत् ॥ ३७ ॥

हे राजन्! शत्रुञ्जय, शत्रुसह, चित्रायुध, चित्र, दृढ, चित्रसेन और विकर्ण तुम्हारे ये सात पुत्र भीमसेनके अस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरपडे ॥ हे महाराज! जब भीमसेनने अपने हाथसे मारे गये हुए तेरे पुत्रोंमें विकर्णको मरा हुआ देखा, तब वह बहुत दुःखी होकर शोक करने लगे, क्योंकि विकर्णके ऊपर भीमसेन बहुत ही प्रेम करते थे, तब भीमसेन बोले, हाय! रे विकर्ण! मैं ने जो रणभूमिमें तुम सौ भाईयोंको मारनेकी प्रतिज्ञा की थी, उसी प्रतिज्ञा की पूर्तिके लिये तुम्हें मारा है ॥ विशेषतः राजा युधिष्ठिर और हमलोगोंके तुम हित कारी होकर भी क्षत्रियधर्मको स्मरण करके युद्धके वास्ते मेरे सामने खडे होनेसे मेरे हाथसे मारे गये हैं, इससे निश्चय से यह युद्धधर्म बडा घोर है ॥ देखो महा तेजस्वी, सुरगुरु वृहस्पतिके समान बडे बुद्धिमान् साक्षात् पितामह भीष्म भी एक दृष्टिसे न्यायसे और दूसरी दृष्टिसे अन्यायसे मारे जानेसे युद्ध भूमि में पडेरहे हैं अतः युद्ध बडा निष्ठुर है । (३०–३५)

संजय बोले, पराक्रमसे युक्त महाबाहु भीमसेन राधानन्दन कर्णके संमुख ही तुम्हारे पुत्रोंका वध करके मानो धर्मराज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं श्रुत्वा तु महानादं भीमसेनस्य धन्विनः ।
बभूव परमा प्रीतिर्धर्मराजस्य धीमतः ॥ ३८ ॥
ततो हृष्टमना राजन्वादित्राणां महास्वनैः ।
सिंहनादरवं भ्रातुः प्रतिजग्राह पाण्डवः ॥ ३९ ॥
हर्षेण महता युक्तः कृतसंज्ञो वृकोदरे ।
अभ्ययात्समरे द्रोणं सर्वशस्त्रभृतां वरः ॥ ४० ॥
एकत्रिंशन्महाराज पुत्रांस्तव निपातितान् ।
हतान्दुर्योधनो दृष्ट्वा क्षत्तुः सस्मार तद्वचः ॥ ४१ ॥
तदिदं समनुप्राप्तं क्षत्तुर्निःश्रेयसं वचः ।
इति सञ्चिन्त्य ते पुत्रो नोत्तरं प्रत्यपद्यत ॥ ४२ ॥
यद् द्यूतकाले दुर्बुद्धिरब्रवीत्तनयस्तव ।
सभामानाय्य पाञ्चालीं कर्णेन सहितोऽल्पधीः ॥४३॥
यच्च कर्णोऽब्रवीत्कृष्णां सभायां परुषं वचः ।
प्रमुखे पाण्डुपुत्राणां तव चैव विशाम्पते ॥ ४४ ॥
शृण्वतस्तव राजेन्द्र कौरवाणां च सर्वशः ।

युधिष्ठिर को उस युद्धका संवाद देनेके लिये भयङ्कर सिंहनाद करने लगे ॥ धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर धनुर्द्धारी भीमसेनके भयानक सिंहनादको सुनकर प्रसन्न हुए ॥ उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक नाना प्रकारके युद्धके बाजोंको बजवाकर भीमसेनके सिंहनादको प्रतिग्रहण किया और उनके सिंहनादसे जयसूचक संवाद पाकर अत्यन्त ही हर्षके सहित सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्यके संग युद्ध करनेके निमित्त आगे बढे ॥ (३६—४०)

इधर तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधनने धीरे धीरे अपने इकतीस भाइयों को भीमसेनके हाथसे मरता हुआ देखकर विदुरके पहिले कहे हुए सम्पूर्ण वचनोंको स्मरण किया ॥ इस समय बुद्धिमान् विदुरके वे अमोघ वचन सत्यही बोध हुए । दुर्योधनने इसी प्रकार चिन्ता करके कुछ उत्तर न दिया ॥ (४१-४२)

उस अल्पबुद्धि नीच दुर्योधनने जुए की खेलके समय द्रौपदीको सभामें बुलाकर जो कुछ वचन कर्णके सङ्ग मिलकर कहा था और कर्णने कहा "हे द्रौपदी तुम्हारे पति पाण्डव लोग जीते ही नष्ट होकर नरकगामी हुए इस समय तुम दूसरे किसी पुरुषको अपना पति बना लो।" इसी प्रकार कठोर वचनोंसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनष्टाः पाण्डवाः कृष्णे शाश्वतं नरकं गताः ॥ ४५ ॥
पतिमन्यं वृणीष्वेति तस्येदं फलमागतम् ।
यच्च षण्ढतिलादीनि परुषाणि तवाऽऽत्मजैः ।
श्रावितास्ते महात्मानः पाण्डवाः कोपयिष्णुभिः ॥४६॥
तं भीमसेनः क्रोधाग्निं त्रयोदश समाः स्थितम् ।
उद्गिरंस्तव पुत्राणामन्तं गच्छति पाण्डवः ॥ ४७ ॥
विलपंश्च बहु क्षत्ता शमं नाऽलभत त्वयि ।
सपुत्रो भरतश्रेष्ठ तस्य भुंक्ष्व फलोदयम् ॥ ४८ ॥
त्वया वृद्धेन धीरेण कार्यतत्त्वार्थदर्शिना ।
न कृतं सुहृदां वाक्यं दैवमत्र परायणम् ॥ ४९ ॥
तन्मा शुचो नरव्याघ्र तवैवाऽपनयो महान् ।
विनाशहेतुः पुत्राणां भवानेव मतो मम ॥ ५० ॥
हतो विकर्णो राजेन्द्र चित्रसेनश्च वीर्यवान् ।
प्रवराश्चाऽऽत्मजानां ते सुताश्चाऽन्ये महारथाः ॥ ५१ ॥

पाण्डवोंके सम्मुखहीमें द्रौपदीको दुःखित किया था, उसको तुम और सभाके सम्पूर्ण कौरवोंने ही सुना था । उसहीका फल इस समय उपस्थित हुआ है । (४३-४६)

तुम्हारे पुत्रोंने उस समय महात्मा पाण्डवोंको कोपित करके उन्हें षण्ढतिल आदि कहके जो नाना प्रकारकी कडवी वचनोंको सुनाया था उसहीसे भीमसेन तेरह वर्ष पर्यन्त उस दबी हुई क्रोधाग्निको इस समय प्रकाशित करके तुम्हारे पुत्रोंका वध कर रहे हैं ॥ महाराज ! पहिले विदुरने शान्तिकी अभिलाष करके तुम्हारे समीप अनेक प्रकारसे विलाप किया था, परन्तु आपने उनके वचनोंको तनिक भी न सुना, इस ही कारणसे इस उपस्थित विपद-रूपी फलको आप पुत्रोंके सहित भोग कीजिये । (४६—४८)

जब आप बुद्धिमान् पाण्डित और समस्त कार्योंके तत्त्वको जाननेवाले होकर भी सुहृद् पुरुषोंके वचनोंको नहीं सुना, तब प्रारब्धहीको ऐसे अवसरपर बलवान् कहना पडेगा ॥ हे पुरुषर्षभ ! आप शोक न कीजिये, क्योंकि शूरवीरोंके नाश होनेका यह भयङ्कर कार्य तुम्हारे अनीतिहीके कारण उपस्थित हुआ है, इससे मेरे विचारमें तुम ही अपने पुत्रोंके नाश करनेके मूल कारण हो ॥ देखिये पराक्रमी विकर्ण और चित्रसेन आदि तुम्हारे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यानन्यान्ददृशे भीमश्चक्षुर्विषयमागतान् ।
पुत्रांस्तव महाराज त्वरया ताञ्जघान ह ॥ ५२ ॥
त्वत्कृते ह्यहमद्राक्षं दह्यमानां वरूथिनीम् ।
सहस्रशः शरैर्मुक्तैः पाण्डवेन वृषेण च ॥ ५३ ॥ [५६६२]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमयुद्धे सप्तत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १३७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच- महानपनयः सूत ममैवाऽत्र विशेषतः ।
स इदानीमनुप्राप्तो मन्ये सञ्जय शोचतः ॥ १ ॥
यद्गतं तद्गतमिति ममाऽऽसीन्मनसि स्थितम् ।
इदानीमत्र किं कार्यं प्रकरिष्यामि सञ्जय ॥ २ ॥
यथा ह्येष क्षयो वृत्तो ममाऽपनयसम्भवः ।
वीराणां तन्ममाऽऽचक्ष्व स्थिरीभूतोऽस्मि सञ्जय॥ ३ ॥

सञ्जय उवाच— कर्णभीमौ महाराज पराक्रान्तौ महाबलौ ।
बाणवर्षाण्यसृजतां वृष्टिमन्ताविवाऽम्बुदौ ॥ ४॥
भीमनामाङ्किता बाणाः स्वर्णपुङ्खाः शिलाशिताः ।

मुख्य मुख्य महारथी पुत्र मारे गये और तुम्हारे दूसरे जो भीमसेनके संमुख हुए उन्होंने उस ही समय तुम्हारे पुत्रोंका वध किया; जो हो तुम्हारे ही कारणसे व्यूहबद्ध सेनाके योद्धा लोग भीमसेन और कर्णके लगातार सहस्रों बाणरूपी अग्निसे भस्म होते दिखाई देने लगे ॥ (४९—५३) [५६६२]

द्रोणपर्वमें एकसौ सैंतीस अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ अड़तीस अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सूत ! बोध होता है, मेरे ही विशेष शोकके निमित्त यह महाघोर योद्धाओंके नाशका समय उपस्थित हुआ है, मैंने पहिले इसी प्रकार विचार किया था, कि जो होनहार था सो हुआ है इस समय उसका प्रतिकार किस भांति करूंगा; इस ही वास्ते मैं अत्यन्त व्याकुल हो रहा हूं ॥ जो हो मैंने इस समय धीरज धारण किया है तुम मेरी अनीतिसे उत्पन्न हुए सेनाके शूरवीरोंके नाश होने का सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे समीप वर्णन करो ॥ (१—३)

सञ्जय बोले, महाराज ! महाबली पराक्रमी भीमसेन और कर्ण दोनों ही दो जलभरे बादलोंकी भांति लगातार बाण वर्षा करते युद्ध करने लगे ॥ भीमनामसे अङ्कित शिलापर घिसे हुए स्वर्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविशुः कर्णमासाद्य च्छिन्दन्त इव जीवितम् ॥ ५ ॥
तथैव कर्णनिर्मुक्ताः शरा बर्हिणवाससः ।
छादयाञ्चक्रिरे वीरं शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ६ ॥
तयोः शरैर्महाराज सम्पतद्भिः समन्ततः ।
बभूव तत्र सैन्यानां संक्षोभः सागरोत्तरः ॥ ७ ॥
भीमचापच्युतैर्बाणैस्तव सैन्यमरिन्दम ।
अवध्यत चमूमध्ये घोरैराशीविषोपमैः ॥ ८ ॥
वारणैः पतितै राजन्वाजिभिश्च नरैः सह ।
अदृश्यत मही कीर्णा वातभग्नैरिव द्रुमैः ॥ ९ ॥
ते वध्यमानाः समरे भीमचापच्युतैः शरैः ।
प्राद्रवंस्तावका योधाः किमेतदिति चाऽब्रुवन् ॥ १० ॥
ततो व्युदस्तं तत्सैन्यं सिन्धुसौवीरकौरवम् ।
प्रोत्सारितं महावेगैः कर्णपाण्डवयोः शरैः ॥ ११ ॥
ते शूरा हतभूयिष्ठा हताश्वरथवारणाः ।
उत्सृज्य भीमकर्णौ च सर्वतो व्यद्रवन्दिशः ॥ १२ ॥

पङ्खवाले चोखे बाण मानो कर्णके प्राण हरण करनेकी इच्छासे उनके शरीरमें प्रवेश करने लगे ॥ उसी प्रकार कर्णके धनुषसे छूटे हुए सैकडों और सहस्रों बाणोंने भीमसेनको छिपादिया ॥ ४-६

महाराज ! उन दोनोंके चलाये हुए सम्पूर्ण बाण सेनाके बीच चारों ओर गिरने लगे; उससे सेनाके पुरुष इस प्रकार इधर उधरको भागने लगे जैसे वायुके झोंकसे समुद्रका जल उथलते दीख पडता है ॥ भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए भयङ्कर विषधारी सर्पतुल्य तीक्ष्ण बाणोंसे तुम्हारी व्यूहबद्ध सेनाके योद्धा लोग भी प्राणरहित होके पृथ्वीपर गिरने लगे। वह रणभूमि उस समय मरे हुए मनुष्य और हाथी घोडोंके मृत शरीरसे इस प्रकार परिपूर्ण होगई जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे वनके वृक्ष टूटकर पृथ्वीको परिपूरित कर देते हैं ॥ (७—९)

तिसके अनन्तर तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भीमसेनके बाणोंसे पीडित होकर यह क्या है ! यह क्या है ! ऐसा वचन कहते हुए रणभूमिसे भागने लगे ॥ सिन्धु सौवीर और कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग कर्ण और भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर उनके समीपसे दूर हट गये ॥ बहुतेरे शूरवीरोंके नष्ट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नूनं पार्थार्थमेवाऽस्मान्मोहयन्ति दिवौकसः।
यत्कर्णभीमप्रभवैर्वध्यते नो बलं शरैः ॥ १३ ॥
एवं ब्रुवाणा योधास्ते तावका भयपीडिताः।
शरपातं समुत्सृज्य स्थिता युद्धदिदृक्षवः ॥ १४ ॥
ततः प्रावर्तत नदी घोररूपा रणाजिरे।
शूराणां हर्षजननी भीरूणां भयवर्धिनी ॥ १५ ॥
वारणाश्वमनुष्याणां रुधिरौघसमुद्भवा।
संवृता गतसत्वैश्च मनुष्यगजवाजिभिः ॥ १६ ॥
सानुकर्षपताकैश्च द्विपाश्वरथभूषणैः।
स्यन्दनैरपविद्धैश्च भग्नचक्राक्षकूबरैः ॥ १७ ॥
जातरूपपरिष्कारैर्धनुर्भिः सुमहास्वनैः।
सुवर्णपुङ्खैरिषुभिर्नाराचैश्च सहस्रशः ॥ १८ ॥
कर्णपाण्डवनिर्मुक्तैर्निर्मुक्तैरिव पन्नगैः।
प्रासतोमरसङ्घातैः खड्गैश्च सपरश्वधैः ॥ १९ ॥
सुवर्णविकृतैश्चाऽपि गदामुसलपट्टिशैः।
ध्वजैश्च विविधाकारैः शक्तिभिः परिघैरपि ॥ २० ॥

होनेसे कोई घोडे और कोई रथसे रहित होकर युद्धभूमिमें भीमसेन और कर्णको त्यागकर भागते हुए यह वचन कहने लगे, कि निश्चय ही अर्जुनके निमित्त देवता लोग हम लोगोंको मोहित कर रहे हैं, क्योंकि भीमसेन और कर्णके बाणोंसे केवल हमारे ही सेनाके शूरवीर योद्धाओंका प्राण नाश होरहा है ॥ (१०-१३)

महाराज ! तुम्हारे ओरके योद्धा लोग भयभीत होकर भीमसेन और कर्णको बाण गिरने तकके स्थानको छोडकर दूर खडे होके उन दोनों पुरुषसिंहोंका युद्ध देखने लगे ॥ हे प्रजानाथ ! उस रणभूमिमें शूरवीरोंके हर्ष और कादरोंके भयको बढानेवाले हाथी घोडे और मनुष्योंके रुधिरसे एक भयङ्करी नदी उत्पन्न हुई ॥ (१४-१६)

उस समय टूटे हुए रथ, ध्वजा, पताका, रथकी धूरी, टूटे हुए रथोंके ऊपर और नीचेके हिस्से, मनुष्य हाथी घोडोंके मृत शरीर तथा भीमसेन और कर्णके सुवर्ण भूषित महाप्रचण्ड शब्दवाले धनुषसे छूटे हुए केचुलीसे रहित सर्प समान सहस्रों सोनेके पंखवाले बाण, नाराच, प्रास, तोमर, तलवार, फरसे, सुवर्ण, खचित गदा, मूसल, पट्टिश, वज्रके समान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतघ्नीभिश्च चित्राभिर्बभौ भारत मेदिनी ।
कनकाङ्गदहारैश्च कुण्डलैर्मुकुटैस्तथा ॥ २१ ॥
वलयैरपविद्धैश्च तत्रैवांऽगुलित्रेष्टकैः ।
चूडामणिभिरुष्णीषैः स्वर्णसूत्रैश्च मारिष ॥ २२ ॥
तनुत्रैः सतलत्रैश्च हारैर्निष्कैश्च भारत ।
वस्त्रैश्छत्रैश्च विध्वस्तैश्चामरव्यजनैरपि ॥ २३ ॥
गजाश्वमनुजैर्भिन्नैः शोणितार्क्तैश्च पत्रिभिः ।
तैस्तैश्च विविधैर्भिन्नैस्तत्र तत्र वसुन्धरा ॥ २४ ॥
पतितैरपविद्धैश्च विबभौ द्यौरिव ग्रहैः ।
अचिन्त्यमद्भुतं चैव तयोः कर्माऽतिमानुषम् ॥ २५ ॥
दृष्ट्वा चारणसिद्धानां विस्मयः समजायत ।
अग्नेर्वायुसहायस्य गतिः कक्ष इवाऽऽहवे ॥ २६ ॥
आसीद्भीमसहायस्य रौद्रमाधिरथेर्गतम् ।
निपातितध्वजरथं हतवाजिनरद्विपम् ॥ २७ ॥
गजाभ्यां सम्प्रयुक्ताभ्यामासीन्नलवनं यथा ।

नाना प्रकारकी बरछी, परिघ और विचित्ररूप वाली शतघ्नी, आदि सम्पूर्ण अस्त्रोंसे वह रणभूमि परिपूरित होकर अत्यन्त शोभित होने लगी। (१७-२१)

इसके अतिरिक्त शूरवीरोंके शरीरसे कटे हुए वर्म (सनाह), कुण्डल, मुकुट, माला, अङ्गठी, उत्तम वस्त्र, सुवर्णकी माला, तलत्राण, अंगुलीत्राण, गलेके आभूषण, वस्त्र, कटे हुए छत्र, चँवर और नाना प्रकारके अस्त्रशस्त्रोंसे कटे तथा इधर उधर पडे हुए रुधिरयुक्त मनुष्योंके मृत शरीरसे वह रणभूमि तारोंसे युक्त आकाशमण्डलकी भांति प्रकाशित होने लगी ॥ (२१-२५)

उन दोनों पुरुषसिंहोंके अद्भुत और अलौकिक कर्मको देखकर सिद्ध और चारण आदि प्राणी विस्मित होने लगे। महाराज ! जैसे वायुकी सहायताके सूखे तृण काष्ठोंको जलाती हुई अग्नि अत्यन्त ही प्रज्वलित होजाती है उसी प्रकार अधिरथपुत्र कर्ण युद्धभूमिमें भीमसेनको पाकर भयङ्कर तेजस्वी होगये। उन दोनों पुरुषसिंहोंका इस प्रकार महाघोर संग्राम होने लगा जैसे दो मतवारे हाथियोंके आपसमें युद्ध करते समय कमल वन नष्ट होजाता है। कितने ही रथोंकी ध्वजा टुकडे टुकडे होगई, कितने ही रथ शस्त्रों की चोटसे टूट गये, कितने हाथी घोडे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेघजालनिभं सैन्यमासीत्तव नराधिप ॥ २८ ॥
विमर्दः कर्णभीमाभ्यामासीच्च परमो रणे ॥ २९ ॥ [५६९१]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमकर्णयुद्धे अष्टत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥१३८॥

सञ्जय उवाच— ततः कर्णो महाराज भीमं विध्वा त्रिभिः शरैः ।
मुमोच शरवर्षाणि विचित्राणि बहूनि च ॥ १ ॥
वध्यमानो महाबाहुः सूतपुत्रेण पाण्डवः ।
न विव्यथे भीमसेनो भिद्यमान इवाऽचलः ॥ २ ॥
स कर्णं कार्णिना कर्णे पीतेन निशितेन च ।
विव्याध सुभृशं संख्ये तैलधौतेन मारिष ॥ ३ ॥
स कुण्डलं महच्चारु कर्णस्याऽपातयद्भुवि ।
तपनीयं महाराज दीप्तं ज्योतिरिवाऽम्बरात् ॥ ४ ॥
अथाऽपरेण भल्लेन सूतपुत्रं स्तनान्तरे ।
आजघान भृशं क्रुद्धो हसन्निव वृकोदरः ॥ ५ ॥
पुनरस्य त्वरन्भीमो नाराचान्दश भारत ।
रणे प्रैषीन्महाबाहुर्निर्मुक्ताशीविषोपमान् ॥ ६ ॥

और मनुष्योंका नाश होगया । जैसे वायुसे बादल तितर बितर होजाते हैं वैसे ही तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा कर्ण और भीमसेनके बाणोंसे छिन्न भिन्न होगये ॥ (२५–२९) [५६९१]

द्रोणपर्वमें एकसौ अढतीस अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ उनतालिस अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज ! इसके अनन्तर कर्ण भीमसेनको तीन बाणोंसे विद्ध करके फिर उनके ऊपर अनेक विचित्र बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ परन्तु महा बाहु भीमसेन सूतपुत्र कर्णके वैसे कठोर बाणोंसे भी विद्ध होकर दुःखित न हुए ! वरन अचल पर्वतके समान स्थिरताके सहित युद्धसे विचलित न हुए ॥ १–२

उन्होंने कर्णको उत्तम पानीसे बुझे हुए एक तीक्ष्ण तैलधौत कर्णिक बाणसे अत्यन्त विद्ध किया ॥ तिसके अनन्तर कर्णके रत्नमय मनोहर कुण्डलको काट दिया । वह कुण्डल मानो आकाशसे गिरे हुए ज्योतिवाले पदार्थोंकी भांति पृथ्वीमें गिर कर प्रकाशित होने लगा ॥ फिर उन्होंने क्रुद्ध होकर हंसते हुए एक भल्लसे कर्णके हृदयमें प्रहार किया ॥ उसके बाद महाबाहु भीमने शीघ्रताके सहित विषधारी सर्पके समान दश बाणोंको ग्रहण करके सूतपुत्र कर्णकी ओर चलाया ॥ (३–६)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते ललाटं विनिर्भिद्य सूतपुत्रस्य भारत ।
विविशुश्चोदितास्तेन वल्मीकमिव पन्नगाः ॥ ७ ॥
ललाटस्थैस्ततो बाणैः सूतपुत्रो व्यरोचत ।
नीलोत्पलमयीं मालां धारयन्वै यथा पुरा ॥ ८ ॥
सोऽतिविद्धो भृशं कर्णः पाण्डवेन तरस्विना ।
रथकूबरमालम्ब्य न्यमीलयत लोचने ॥ ९ ॥
स मुहूर्तात्पुनः संज्ञां लेभे कर्णः परन्तपः ।
रुधिरोक्षितसर्वाङ्गः क्रोधमाहारयत्परम् ॥ १० ॥
ततः क्रुद्धो रणे कर्णः पीडितो दृढधन्वना ।
वेगं चक्रे महावेगो भीमसेनरथं प्रति ॥ ११ ॥
तस्मै कर्णः शतं राजन्निषूणां गार्ध्रवाससाम् ।
अमर्षी बलवान्क्रुद्धः प्रेषयामास भारत ॥ १२ ॥
ततः प्रासृजदुग्राणि शरवर्षाणि पाण्डवः ।
समरे तमनादृत्य तस्य वीर्यमचिन्तयन् ॥ १३ ॥
कर्णस्ततो महाराज पाण्डवं नवभिः शरैः ।
आजघानोरसि क्रुद्धः क्रुद्धरूपं परन्तप ॥ १४ ॥

महाराज ! जैसे सांप बिलमें प्रवेश करते हैं वैसे ही भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए वे सम्पूर्ण बाण कर्णके ललाटको भेद कर मस्तकके भीतर प्रविष्ट हुए । जैसे पहले नीलकमलकी माला पहरनेपर कर्णकी शोभा हुई थी वैसे ही ललाटसे विद्ध हुए उन बाणोंसे महाबाहु कर्ण उस समय शोभित होने लगे ॥ वह बलवान् भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर दोनों आंखोंको मूंद रथका दण्ड पकड कर रथ पर स्थित हुए ॥ (७-९)

शत्रु नाशन महापराक्रमी कर्ण मुहूर्त्त भरके बीच सावधान होकर अपने सम्पूर्ण शरीरको रुधिर पूरित देखकर क्रोधसे प्रज्वलित होगये । और दृढ धनुर्धारी भीमसेनके बाणोंसे पीडित होकर भी क्रोध और वेगके सहित उनके रथके समीप उपस्थित हुए ॥ फिर अत्यन्त क्रुद्ध होकर कर्णने गिद्धपंख युक्त एकसौ बाण भीमसेनके ऊपर चलाये ॥ (१०-१२)

परन्तु पाण्डुपुत्र भीमसेन कर्णका वैसा पराक्रम देखकर भी दुःखित न हुए । बरन उनका अनादर करते हुए उनके ऊपर अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ शत्रुनाशन कर्णने अत्यन्त क्रोध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तावुभौ नरशार्दूलौ शार्दूलाविव दंष्ट्रिणौ ।
जीमूताविव चाऽन्योन्यं प्रववर्षतुराहवे ॥ १५ ॥
तलशब्दरवैश्चैव त्रासयेतां परस्परम् ।
शरजालैश्च विविधैस्त्रासयामासतुर्मृधे ॥ १६ ॥
अन्योन्यं समरे क्रुद्धौ कृतप्रतिकृतैषिणौ ।
ततो भीमो महाबाहुः सूतपुत्रस्य भारत ॥ १७ ॥
क्षुरप्रेण धनुश्छित्वा ननाद परवीरहा ।
तदपास्य धनुश्छिन्नं सूतपुत्रो महारथः ॥ १८ ॥
अन्यत्कार्मुकमादत्त भारसं वेगवत्तरम् ।
तदप्यथ निमेषार्धाच्चिच्छेदाऽस्य वृकोदरः ॥ १९ ॥
तृतीयं च चतुर्थं च पञ्चमं षष्ठमेव हि ।
सप्तमं चाऽष्टमं चैव नवमं दशमं तथा ॥ २० ॥
एकादशं द्वादशं च त्रयोदशमथाऽपि च ।
चतुर्दशं पञ्चदशं षोडशं च वृकोदरः ॥ २१ ॥
तथा सप्तदशं वेगादष्टादशमथाऽपि वा ।
बहूनि भीमश्चिच्छेद कर्णस्यैवं धनूंषि हि ॥ २२ ॥
निमेषार्धात्ततः कर्णो धनुर्हस्तो व्यतिष्ठत ।

करके नौ बाणोंसे क्रोधी भीमसेनके वक्षःस्थलमें प्रहार किया ॥ महाराज ! जैसे दो व्याघ्र आपसमें एक दूसरेके ऊपर दांत और नखोंसे प्रहार करते हैं, वैसे ही वे दोनों पुरुषसिंह एक दूसरेके ऊपर अपने शस्त्रोंको इस प्रकार वर्षाने लगे, जैसे बादल आकाशसे जल की वर्षा करते हैं ॥ (१३–१५)

वे दोनों ही अत्यन्त क्रुद्ध हुए दूसरेके वधके अभिलाषी थे, वे दोनों तलत्राणके शब्द सहित अपने बाणोंके जालसे एक दूसरेको छिपाने लगे । इसके अनन्तर शत्रु विनाशक महाबाहु भीमसेनने एक तेज अस्त्रसे कर्णके धनुषको काटकर सिंहनाद किया । (१६–१८)

महारथी कर्णने उस कटे हुए धनुषको त्याग कर एक महा प्रचण्ड अत्यन्त दृढ धनुष ग्रहणकिया॥ उस धनुष्यको भी भीमसेनने निमेषार्धमें काटा॥ अनन्तर तीसरा, चौथा, पाचवां, छहवां, सातवां, आठवां, नौवां, दसवां, ग्यारहवां, बारहवां, तेरहवां चौदहवां, पन्द्रहवां, सोलहवां, सतारहवां, अठरहवां, इस प्रकार भीमसेनके द्वारा कर्णके बहुत धनुष्य काटे गये ॥ १८–२२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्ट्वा स कुरुसौवीरसिन्धुवीरबलक्षयम् ॥ २३ ॥
सवर्मध्वजशस्त्रैश्च पतितैः संवृतां महीम् ।
हस्त्यश्वरथदेहांश्च गतासून्प्रेक्ष्य सर्वशः ॥ २४ ॥
सूतपुत्रस्य संरम्भाद्दीप्तं वपुरजायत ।
स विस्फार्य महच्चापं कार्तस्वरविभूषितम् ॥ २५ ॥
भीमं प्रैक्षत राधेयो घोरं घोरेण चक्षुषा ।
ततः क्रुद्धः शरानस्यन्सूतपुत्रो व्यरोचत ॥ २६ ॥
मध्यंदिनगतोऽर्चिष्माञ्शरदीव दिवाकरः ।
मरीचिविकचस्येव राजन्भानुमतो वपुः ॥ २७ ॥
आसीदाधिरथेर्घोरं वपुः शरशताचितम् ।
कराभ्यामाददानस्य सन्दधानस्य चाऽऽशुगान् ॥ २८ ॥
कर्षतो मुञ्चतो बाणान्नाऽन्तरं ददृशे रणे ।
अग्निचक्रोपमं घोरं मण्डलीकृतमायुधम् ॥ २९ ॥
कर्णस्याऽऽसीन्महीपाल सव्यदक्षिणमस्यतः ।
स्वर्णपुङ्खाः सुनिशिताः कर्णचापच्युताः शराः ॥ ३० ॥

फिर निमेषार्धमें कर्ण हाथमें दूसरा धनुष्य धारण कर खडा हुआ । और सिन्धु तथा सौवीर सेनाके सहित कौरवोंकी सेनाका नाश, मरे हुए हाथी घोडे और मनुष्योंको ध्वज कवच और शस्त्रोंके सहित इधर उधर पडे देख उसके शरीरमें अत्यन्त क्रोध हुआ ! वह सुवर्ण भूषित बडे धनुषको चढाकर भयंकर नेत्रोंसे भीमसेनकी ओर देखने लगे । और क्रुद्ध होकर भीमसेन के ऊपर लगातार बाणोंकी वर्षा करने लगे, उस समय कर्ण बहुत शोभित हुए ॥ (२३-२६)

वह शरत्कालके प्रचण्ड किरणधारी दोपहरके सूर्य समान शोभित हुए ॥ उनके शरीरमें भीमसेनके सैकडों बाण बिद्ध हुए थे,उससे वह किरणोंसे शोभित भगवान् सूर्यकी भांति प्रकाशित हुए । वह किस समय तरकससे बाणोंको निकालते साधते कब धनुष पर खींचते और किस समय उन बाणोंको छोडते थे, उस विषयमें कोई भी पुरुष युद्धभूमिके बीच उनको देखनेमें समर्थ न हुए । महाराज ! उस समय महावीर कर्णके बाईं और दहिनी ओर मण्डलाकार चक्रके भयंकर धनुषसे छूटे स्वर्ण पंखवाले अत्यन्त चोखे सम्पूर्ण बाण चारों ओर चलते हुए दिखाई देने लगे ॥ (२७-३०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राच्छादयन्महाराज दिशः सूर्यस्य च प्रभाः ।
ततः कनकपुङ्खानां शराणां नतपर्वणाम् ॥ ३१ ॥
धनुश्च्युतानां वियति ददृशे बहुधा व्रजः ।
बाणासनादाधिरथेः प्रभवन्ति स्म सायकाः ॥ ३२ ॥
श्रेणीकृता व्यरोचन्त राजन्क्रौञ्चा इवाऽम्बरे ।
गार्ध्रपत्राञ्छिलाधौतान्कार्तस्वरविभूषितान् ॥ ३३ ॥
महावेगान्प्रदीप्ताग्रान्मुचोचाऽधिरथिः शरान् ।
ते तु चापबलोद्धूताः शातकुम्भविभूषिताः ॥ ३४ ॥
अजस्रमपतन्बाणा भीमसेनरथं प्रति ।
ते व्योम्नि रुक्मविकृता व्यकाशन्त सहस्रशः ॥ ३५ ॥
शलभानामिव व्राताः शराः कर्णसमीरिताः ।
चापादाधिरथेर्बाणाः प्रपतन्तश्चकाशिरे ॥ ३६ ॥
एको दीर्घ इवाऽत्यर्थमाकाशे संस्थितः शरः ।
पर्वतं वारिधाराभिश्छादयन्निव तोयदः ॥ ३७ ॥
कर्णः प्राच्छादयत्क्रुद्धो भीमं सायकवृष्टिभिः ।
तत्र भारत भीमस्य बलं वीर्यं पराक्रमम् ।

कर्णके बाणोंसे सम्पूर्ण दिशा छिप गई, और सूर्यभी बाणोंसे छिपकर तेज रहित होगया। कर्णके धनुष्यसे छूटे हुए स्वर्ण पुंख युक्त तीक्ष्ण बाणोंके जाल आकाशमण्डलमें नाना भांतिसे दिखाई देने लगे। कर्णके धनुषसे छूटे बाण लगातार क्रौंच पक्षियोंके समूहकी भांति शोभित होने लगे। अधिरथपुत्र कर्ण गिद्धपंखयुक्त शिला पर घिसे हुए सुवर्ण भूषित अत्यन्त चोखे महावेगवान् बाणोंको अपने धनुषपर चढाकर भीमसेनकी ओर छोडने लगे। (३१–३४)

सुवर्ण भूषित वे सम्पूर्ण बाण अत्यन्त वेगके सहित कर्णके धनुषसे छूटकर लगातार भीमसेनके रथपर गिरने लगे। महाराज! कर्णके चलाये हुए वे सम्पूर्ण बाण आकाश मण्डलमें झुण्डके झुण्ड टीडीदलकी भांति शोभित होने लगे। वे सम्पूर्ण बाण कर्णके धनुषसे छूटकर आकाशमण्डलमें मिलकर ऐसे शोभित हुए कि मानो बहुत बडा एक ही बाण दिखाई दे रहा है। अधिक क्या कहा जावे जैसे जल वर्षाने वाले बादल जल वर्षा कर पर्वतको छिपा देते हैं, वैसे ही कर्णने क्रुद्ध होकर भीमसेनको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपा दिया। ३४–३८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवसायं च पुत्रास्ते ददृशुः सहसैनिकाः ॥ ३८ ॥
तां समुद्रमिवोद्धूतां शरवृष्टिं समुत्थिताम् ।
अचिन्तयित्वा भीमस्तु क्रुद्धः कर्णमुपाद्रवत् ॥ ३९ ॥
रुक्मपृष्ठं महच्चापं भीमस्याऽऽसीद्विशाम्पते ।
आकर्षान्मण्डलीभूतं शक्रचापमिवाऽपरम् ॥ ४० ॥
तस्माच्छराः प्रादुरासन्पूरयन्त इवाऽम्बरम् ॥ ४१ ॥
सुवर्णपुङ्खैर्भीमेन सायकैर्नतपर्वभिः ।
गगने रचिता माला काञ्चनीव व्यरोचत ॥ ४२ ॥
ततो व्योम्नि विषक्तानि शरजालानि भागशः ।
आहतानि व्यशीर्यन्त भीमसेनस्य पत्त्रिभिः ॥ ४३ ॥
कर्णस्य शरजालौघैर्भीमसेनस्य चोभयोः ।
अग्निस्फुलिङ्गसंस्पर्शैरञ्जोगतिभिराहवे ॥ ४४ ॥
तैस्तैः कनकपुङ्खानां घोरासीत्संवृता व्रजैः ।
न स्म सूर्यस्तदा भाति न स्म वाति समीरणः ॥४५॥
शरजालावृते व्योम्नि न प्राज्ञायत किञ्चन ।
स भीमं छादयन्बाणैः सूतपुत्रः पृथग्विधैः ॥ ४६ ॥

उस स्थानपर तुम्हारे पुत्रलोग सेना के योद्धाओं के सहित भीमसेनके बल पराक्रम और युद्धकार्यको देखकर चकित होगये ॥ उन्होंने कर्णके धनुषसे छूटे हुए समुद्रके समान उछलित उस बाणवर्षाकी तनिक भी पर्वाह नहीं किया, बल्कि क्रोधपूर्वक कर्णकी ओर दौडे ॥ भीमसेनका सुवर्णभूषित बडा धनुष खींचनेसे मण्डलाकार इन्द्रधनुषके समान जान पडने लगा ॥ और उससे सन्नतपर्व स्वर्णपुंख वाले बाणोंका जाल प्रगट होकर आकाशको परिपूरित करने लगा। उस समय भीमसेनके सुवर्णपुंख बाणोंसे आकाशमें सुवर्णकी मालासी बन गयी॥ (३९-४२)

इसके अनन्तर सूतपुत्र कर्णके चलाये हुए आकाशमें स्थित वे सम्पूर्ण बाण प्रारब्धके अनुसार भीमसेनके बाणोंसे कटकर पृथ्वीमें गिर पडे॥ उन दोनोंके अग्नि-समान स्पर्श करनेवाले महावेगशील स्वर्णपंखयुक्त बाणोंसे आकाश परिपूरित होगया; सूर्यका तेज छिपा; और वायुकी गति रुक गई । बल्कि उस समय उनके बाणोंके जालसे चारों ओर अन्धकार होगया; वहां पर कुछ भी वस्तु दिखाई नहीं देती थी। (४३-४६)

अनन्तर सूतपुत्र कर्ण भीमसेनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपारोहदनादृत्य तस्य वीर्यं महात्मनः।
तयोर्विसृजतोस्तत्र शरजालानि मारिष ॥ ४७ ॥
वायुभूतान्यदृश्यन्त संसक्तानीतरेतरम्।
अन्योन्यशरसंस्पर्शात्तयोर्मनुजसिंहयोः ॥ ४८ ॥
आकाशे भरतश्रेष्ठ पावकः समजायत।
तथा कर्णः शितान्बाणान्कर्मारपरिमार्जितान् ॥ ४९ ॥
सुवर्णविकृतान्क्रुद्धः प्राहिणोद्वधकांक्षया।
तानन्तरिक्षे विशिखैस्त्रिधैकैकमशातयत् ॥ ५० ॥
विशेषयन्सूतपुत्रं भीमस्तिष्ठेति चाऽब्रवीत्।
पुनश्चाऽसृजदुग्राणि शरवर्षाणि पाण्डवः ॥ ५१ ॥
अमर्षी बलवान्क्रुद्धो दिधक्षन्निव पावकः।
ततश्चटचटाशब्दो गोधाघाताद्भृत्तयोः ॥ ५२ ॥
तलशब्दश्च सुमहान्सिंहनादश्च भैरवः।
रथनेमिनिनादश्च ज्याशब्दश्चैव दारुणः ॥ ५३ ॥
योधा व्युपारमन्युद्धाद्दिदृक्षन्तः पराक्रमम्।

पराक्रमका अपमान करके उन्हें अनगिनत बाणोंसे छिपाते हुए युद्धभूमिमें भीमसेनसे प्रबल होगये। महाराज! जैसे दो दिशासे दोनों ओरकी वायु चलने पर अग्नि उत्पन्न होती दीखपडती है, वैसेही पुरुषसिंह भीमसेन और कर्णके बाणोंके आपसमें रगड खानेपर आकाशमें भयङ्कर अग्नि उत्पन्न हुई। कर्णने क्रुद्ध हो भीमसेनके वधकी इच्छासे उत्तम पानीसे बुझे हुए सुवर्णभूषित अनेक तीक्ष्ण बाण उनकी ओर चलाए। परन्तु महाबली क्रोधी भीमसेनने कर्णसे भी अधिक पराक्रम प्रकाशित करनेकी इच्छा कर उनके चलाये बाणोंको निज बाणोंसे तीन तीन टुकडे करके पृथ्वीमें गिराया। (४७-५०)

फिर कर्णको खडा रह! खडा रह! कहके क्रोधसे अग्नि समान प्रज्वलित हो उनके वध करनेकी इच्छासे अपने भयंकर बाणोंको उनके ऊपर वर्षाने लगे॥ तिसके अनन्तर आघात निवारणके लिये हाथमें वेष्टित चर्मके ऊपर उन दोनोंके धनुषकी डोरीके आघातसे चट चट ऐसा शब्द होने लगा। तथा उन दोनोंका महाभयंकर धनुषटंकार तलत्राण सिंहनाद रथनेमिशब्दके सङ्ग मिल जानेसे युद्धभूमिके बीच दारुण शब्द उत्पन्न हुआ॥ (५१-५३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णपाण्डवयो राजन्परस्परवधैषिणोः ॥ ५४ ॥
देवर्षिसिद्धगन्धर्वाः साधुसाध्वित्यपूजयन् ।
मुमुचुः पुष्पवर्षं च विद्याधरगणास्तथा ॥ ५५ ॥
ततो भीमो महाबाहुः संरम्भी दृढविक्रमः ।
अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य शरैर्विव्याध सूतजम् ॥ ५६ ॥
कर्णोऽपि भीमसेनस्य निवार्येषून्महाबलः ।
प्राहिणोन्नव नाराचानाशीविषसमान्रणे ॥ ५७ ॥
तावद्भिरथ तान्भीमो व्योम्नि चिच्छेद पत्त्रिभिः ।
नाराचान्सूतपुत्रस्य तिष्ठ तिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥ ५८ ॥
ततो भीमो महाबाहुः शरं क्रुद्धान्तकोपमम् ।
मुमोचाऽऽधिरथेर्वीरो यमदण्डमिवाऽपरम् ॥ ५९ ॥
तमापतन्तं चिच्छेद राधेयः प्रहसन्निव ।
त्रिभिः शरैः शरं राजन्पाण्डवस्य प्रतापवान् ॥ ६० ॥
पुनश्चाऽसृजदुग्राणि शरवर्षाणि पाण्डवः ।
तस्य तान्यादद कर्णः सर्वाण्यस्त्राण्यभीतवत् ॥ ६१ ॥

उस समय योद्धा लोग एक दूसरेके वधकी इच्छा करनेवाले भीम और कर्ण के युद्धको देखनेकी इच्छासे युद्धभूमिमें खडे हुए । और देवऋषि गन्धर्व तथा विद्याधर उन दोनों पुरुषसिंहोंके ऊपर बार बार फूलोंकी वर्षा करके धन्य धन्य कहके उनकी प्रशंसा करने लगे ॥ उसके अनन्तर पराक्रमी महाबाहु भीमसेनने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे कर्णके बाणजालको निवारण करके फिर क्रोधपूर्वक उन्हें अपने बाणोंसे विद्ध किया ॥ ५४-५६

महाबलवान् कर्णने भी युद्धभूमिमें भीमके बाणोंको निवारण कर विषधारी सर्पके समान नौ बाण उनकी ओर चलाये परन्तु महा बाहु भीमसेनने कर्ण के चलाये उन बाणोंको अपने नौ चोखे बाणोंसे मार्गहीमें काटकर गिरा दिया। फिर खडा रह! खडा रह! कहके भीमसेनने यमदण्डके समान एक भयङ्कर बाण कर्णकी ओर चलाया ॥ ५७-५९

महाप्रतापी कर्णने भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए उस बाणको अपनी ओर आते देख निर्भयचित्तसे अपने तीन बाणोंसे काटकर गिरा दिया । पाण्डुपुत्र भीमने फिर उनके ऊपर अनेक तीक्ष्णबाणोंकी वर्षा की परन्तु कर्णने निर्भय चित्तसे उनके सम्पूर्ण बाणोंको काट कर पृथ्वी में गिराया ॥ (६०-६१)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युध्यमानस्य भीमस्य सूतपुत्रोऽस्त्रमायया।
तस्येषुधी धनुर्ज्यां च बाणैः सन्नतपर्वभिः ॥ ६२ ॥
रश्मीन्योक्त्राणि चाऽश्वानां क्रुद्धः कर्णोऽच्छिनन्मृधे।
तस्याऽश्वांश्च पुनर्हत्वा सूतं विव्याध पञ्चभिः ॥ ६३ ॥
सोऽपसृत्य द्रुतं सूतो युधामन्यो रथं ययौ।
विहसन्निव भीमस्य क्रुद्धः कालानलद्युतिः ॥ ६४ ॥
ध्वजं चिच्छेद राधेयः पताकां च व्यपातयत्।
स विधन्वा महाबाहू रथशक्तिं परामृशत् ॥ ६५ ॥
तां व्यवासृजदाविध्य क्रुद्धः कर्णरथं प्रति।
तामाधिरथिरायस्तः शक्तिं काञ्चनभूषणाम् ॥ ६६ ॥
आपतन्तीं महोल्काभां चिच्छेद दशभिः शरैः।
साऽपतद्दशधा छिन्ना कर्णस्य निशितैः शरैः ॥ ६७ ॥
अस्यतः सूतपुत्रस्य मित्रार्थे चित्रयोधिनः।
स चर्माऽऽदत्त कौन्तेयो जातरूपपरिष्कृतम् ॥ ६८ ॥

महाराज! जब भीमसेन इस प्रकार कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगे, तब सूतपुत्र कर्णने अत्यन्त क्रुद्ध होके अस्त्रमायाका अत्यन्त विचित्र कौशल प्रकाशित किया। कर्णने सन्नतपर्व बाणोंसे भीमसेनके तरकस, धनुषका रोदा, घोडोंकी बागडोर और सारथीके हाथके कोडेको काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर उनके रथके चारों घोडोंको मार कर उनके सारथीको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे॥ भीमसेनका सारथी कर्णके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर भीमके रथको त्यागकर युधामन्युके रथमें चला गया। तब अधिरथपुत्र कर्णने क्रोधसे प्रलयकालकी अग्नि समान प्रज्वलित होकर खेलवाडकी तरह भीमसेनके रथकी ध्वजा और पताका काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। (६२—६५)

महाबाहु भीमसेनने रोदारहित धनुषको त्याग करके शक्ति उठा कर क्रोध पूर्वक कर्णकी ओर चलाया। कर्णने भयङ्कर लुकके समान उस सुवर्ण भूषित शक्तिको अपनी ओर आती देख, क्रोधके सहित दश बाणोंसे उस शक्तीको काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया! कर्णने अपने मित्र दुर्योधनके प्रयोजन-सिद्धिके वास्ते अद्भुत पराक्रम प्रकाशित करके निज बाणोंसे भीमसेनकी चलाई शक्तिको दश टुकडे करके पृथ्वीमें गिराया। (६५-६८)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड्गं चाऽन्यतरप्रेप्सुर्मृत्योरग्रे जयस्य वा ।
तदस्य तरसा क्रुद्धो व्यधमच्चर्म सुप्रभम् ॥ ६९ ॥
शरैर्बहुभिरत्युग्रैः प्रहसन्निव भारत ।
स विचर्मा महाराज विरथः क्रोधमूर्च्छितः ॥ ७० ॥
असिं प्रासृजदाविध्य त्वरन्कर्णरथं प्रति ।
स धनुः सूतपुत्रस्य सज्यं छित्त्वा महानसिः ॥ ७१ ॥
पपात भुवि राजेन्द्र क्रुद्धः सर्प इवाऽम्बरात् ।
ततः प्रहस्याऽऽधिरथिरन्यदादाय कार्मुकम् ॥ ७२ ॥
शत्रुघ्नं समरे क्रुद्धो दृढज्यं वेगवत्तरम् ।
व्यायच्छत्स शरान्कर्णः कुन्तीपुत्रजिघांसया ॥ ७३ ॥
सहस्रशो महाराज रुक्मपुङ्खान्सुतेजनान् ।
स बध्यमानो बलवान्कर्णचापच्युतैः शरैः ॥ ७४ ॥
वैहायसं प्राक्रमद्वै कर्णस्य व्यथयन्मनः ।
स तस्य चरितं दृष्ट्वा संग्रामे विजयैषिणः ॥ ७५ ॥
लयमास्थाय राधेयो भीमसेनमवञ्चयत् ।

तब भीमसेनने मरनेकी वा युद्धमें विजयकी इच्छा कर सुवर्णभूषित ढाल तलवार ग्रहण किया । परन्तु सूतपुत्र कर्णने निर्भय चित्तसे उनके उत्तम ढालको अपने भयङ्कर बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ! भीमसेन ढालके कटने और रथसे रहित होने पर क्रोधसे मूर्च्छित होगये । फिर शीघ्रताके सहित भीमसेनने उस बहुत बडी तलवारको घुमाकर कर्णके रथकी ओर चलायी । वह तलवार रोदेसे युक्त कर्णके धनुषको काट कर मानो क्रुद्ध सर्पके समान आकाशमण्डलसे पृथ्वीपर गिरी ॥ (६८-७२)

तिसके अनन्तर कर्णने क्रुद्ध होकर शत्रुओंके नाश करने वाले अत्यन्त वेगशील दूसरे धनुषपर रोदा चढा लिया, और भीमसेनके वध करनेकी इच्छासे क्रोधपूर्वक उस धनुष पर स्वर्ण पुंखवाले अत्यन्त चोखे एक एक हजार बाण चढा कर एक ही बार उनके ऊपर छोडने लगे । तब बलवान् भीमसेन कर्णके धनुषसे छूटे हुए उन अनेक बाणोंसे पीडित होकर कर्णको अपना पराक्रम दिखाते हुए रथपरसे आकाशकी ओर कूदे । ७२-७५

सूतपुत्र कर्णने विजयकी अभिलाषा करनेवाले भीमसेनके उस अद्भुत कार्यको देख रथ में लीन होकर भीमसेनकी अभिलाषाको निष्फल किया । भीमसेन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं च दृष्ट्वा रथोपस्थे निलीनं व्यथितेन्द्रियम् ॥ ७६ ॥
ध्वजमस्य समासाद्य तस्थौ भीमो महीतले।
तदस्य कुरवः सर्वे चारणाश्चाऽभ्यपूजयन् ॥ ७७ ॥
यदियेष रथात्कर्णं हर्तुं तार्क्ष्य इवोरगम्।
स च्छिन्नधन्वा विरथः स्वधर्ममनुपालयन् ॥ ७८ ॥
स्वरथं पृष्ठतः कृत्वा युद्धायैव व्यवस्थितः।
तद्विहत्याऽस्य राधेयस्तत एनं समभ्ययात् ॥ ७९ ॥
संरम्भात्पाण्डवं संख्ये युद्धाय समुपस्थितम्।
तौ समेतौ महाराज स्पर्धमानौ महाबलौ ॥ ८० ॥
जीमूताविव घर्मान्ते गर्जमानौ नरर्षभौ।
तयोरासीत्समप्रहारः क्रुद्धयोर्नरसिंहयोः ॥ ८१ ॥
अमृष्यमाणयोः संख्ये देवदानवयोरिव।
क्षीणशस्त्रस्तु कौन्तेयः कर्णेन समभिद्रुतः ॥ ८२ ॥
दृष्ट्वाऽर्जुनहतान्नागान्पतितान्पर्वतोपमान्।
रथमार्गविघातार्थं व्यायुधः प्रविवेश ह ॥ ८३ ॥

कर्णको रथमें लीन होकर बैठे देखकर उनके रथकी ध्वजाका दण्ड पकड पृथ्वी पर खडे हुए। महाराज! जैसे पक्षिराज गरुड आकाशसे पृथ्वी पर सर्पको आक्रमण करते हैं, वैसे ही भीमसेनको कर्ण के वधकी अभिलाषासे आकाशकी ओर उछलते देख, कौरवोंकी ओरके योद्धा और चारण आदि आकाशवासी प्राणी भीमसेनके कार्यकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे॥ भीमसेन अपने रथको पीछे छोड क्षत्रिय धर्मके अनुसार अस्त्र रहित होकर भी कर्णके संग युद्ध करनेके वास्ते पृथ्वी पर खडे हुए। (७५-७९)

सूतपुत्र कर्ण इस प्रकारसे भीमसेनके आक्रमणको निष्फल कर उन्हें युद्ध करनेके वास्ते खडा देख क्रोधपूर्वक उनकी ओर दौडे! महाबलवान पुरुषोंमें श्रेष्ठ कर्ण और भीमसेन आपसमें युद्ध करनेकी इच्छाकर वर्षाकालके बादलोंके समान गर्जने लगे। तिसके अनन्तर वे दोनों पुरुषसिंह क्रोधसे मतवारे होकर देवासुर युद्धके समान महाघोर संग्राम करने लगे। (७९-८२)

परन्तु भीमसेन शस्त्र रहित थे इसीसे कर्णके अस्त्रोंसे अत्यन्त पीडित हुए, और पहिले अर्जुन के बाणोंसे जो सब मरे हुए पर्वतके समान हाथियोंके समूह पडे हुए थे उसे देख, इस स्थानपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तिनां व्रजमासाद्य रथदुर्गं प्रविश्य च ।
पाण्डवो जीविताकांक्षी राधेयं नाऽभ्यहारयत् ॥ ८४ ॥
व्यवस्थानमथाऽऽकांक्षन्धनञ्जयशरैर्हतम् ।
उद्यम्य कुञ्जरं पार्थस्तस्थौ परपुरञ्जयः ॥ ८५ ॥
महौषधिसमायुक्तं हनूमानिव पर्वतम् ।
तमस्य विशिखैः कर्णो व्यधमत्कुञ्जरं पुनः ॥ ८६ ॥
हस्त्यङ्गान्यथ कर्णाय प्राहिणोत्पाण्डुनन्दनः ।
चक्राण्यश्वांस्तथा चाऽन्यद्यद्यत्पश्यति भूतले ॥ ८७ ॥
तत्तदादाय चिक्षेप क्रुद्धः कर्णाय पाण्डवः ।
तदस्य सर्वं चिच्छेद क्षिप्तं क्षिप्तं शितैः शरैः ॥ ८८ ॥
भीमोऽपि मुष्टिमुद्यम्य वज्रगर्भां सुदारुणाम् ।
हन्तुमैच्छत्सूतपुत्रं संस्मरन्नर्जुनं क्षणात् ॥ ८९ ॥
शक्तोऽपि नाऽवधीत्कर्ण समर्थः पाण्डुनन्दनः ।

अवश्य ही कर्णके रथकी गति न होसकेगी यही विचार कर अस्त्र रहित होकर उस ही मरे हुए हाथियोंके समूहमें घुस गये । वह अपने प्राणरक्षाकी अभिलाष करके कर्णके रथकी गति रोकनेवाले उन मरे हुए हाथियोंके समूहमें घुस गये; और फिर कर्णके ऊपर प्रहार करनेका साहस न किया ॥ (८२-८४)

महाराज ! शत्रुनाशन भीम अपने शरीरको छिपानेकी इच्छा कर अर्जुनके बाणसे मरे हुए एक बडे हाथीको उठा कर इस भांति स्थित हुए; जैसे महाबलवान् हनुमानने अनेक औषधियोंसे युक्त गन्धमादन पर्वतको उठाया था ॥ सूतपुत्र कर्णने भीमसेनके हाथमें मरे हुए हाथीको देख, उसे अपने बाणोंसे काट कर टुकडे टुकडे कर दिया ॥ तब भीमसेन उस हाथीके कटे हुए अङ्गोंको उठा उठा कर कर्णकी ओर फेंकने लगे। यही नहीं वरन उस समय भीमने रणभूमिमें कटे हुए रथके चक्के अथवा कटे हुए घोडे आदि जिन जिन वस्तुओंको देखा उन सम्पूर्ण वस्तुओंको क्रोधपूर्वक उठाकर कर्णकी ओर फेंकने लगे ॥ (८५-८८)

परन्तु राधापुत्र कर्णने बार बार चलायी हुई भीमसेनकी सम्पूर्ण वस्तु ओंको टुकडे टुकडे करके पृथ्वीमें गिरा दिया। तब भीमसेनने अत्यन्त भयङ्कर वज्र समान अपनी मुट्ठी बांध कर कर्णके नाश करने की इच्छा करी । परन्तु मुहूर्त्त भरके बीच अर्जुनकी प्रतिज्ञाको स्मरण करके कर्ण के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षमाणः प्रतिज्ञां तां या कृता सव्यसाचिना ॥९०॥
तमेवं व्याकुलं भीमं भूयो भूयः शितैः शरैः।
मूर्च्छयाऽभिपरीताङ्गमकरोत्सूतनन्दनः ॥९१॥
व्यायुधं नाऽवधीच्चैनं कर्णः कुन्त्या वचः स्मरन्।
धनुषोऽग्रेण तं कर्णः सोऽभिद्रुत्य परामृशत् ॥९२॥
धनुषा स्पृष्टमात्रेण क्रुद्धः सर्प इव श्वसन्।
आच्छिद्य स धनुस्तस्य कर्णं मूर्धन्यताडयत् ॥९३॥
ताडितो भीमसेनेन क्रोधादारक्तलोचनः।
विहसन्निव राधेयो वाक्यमेतदुवाच ह ॥९४॥
पुनः पुनस्तूबरक मूढ औदरिकेति च।
अकृतास्त्रक मा योत्सीर्बाल संग्रामकातर ॥९५॥
यत्र भोज्यं बहुविधं भक्ष्यं पेयं च पाण्डव।
तत्र त्वं दुर्मते योग्यो न युद्धेषु कदाचन ॥९६॥
मूलपुष्पफलाहारो व्रतेषु नियमेषु च।
उचितस्त्वं वने भीम न त्वं युद्धविशारदः ॥९७॥

ऊपर मुका नहीं चलाया। (८८-९०)

तिसके अनन्तर कर्ण भीमसेनको बार बार तीक्ष्ण बाणोंसे विकल कर उन्हें मूर्च्छित करने लगे॥ परन्तु कर्णने पहिले समय कुन्तीको जो वर दिया था, उसे स्मरण करके भीमसेनका नाश नहीं किया। परन्तु उनके निकट जाकर उनके गलेमें अपना धनुष डाल दिया। धनुषके लगते ही भीमसेन क्रोधी सर्पके समान श्वास छोडते हुए कर्णके हाथसे वही धनुष्य लेकर कर्णके मस्तकपर ताडन किया। कर्ण भीमसेनसे ताडित होनेसे क्रोधसे लाल नेत्र कर उनकी हंसी करते हुए बार बार इन कठोर वचनोंको कहने लगे॥ (९१-९४)

अरे पेटू अल्प मूलवाले मूर्ख! तू केवल पेट पालने ही में वीर है अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या तू कुछ भी नहीं जानता, अरे कादर! तू बालक है कभी भी मेरे समान पुरुषसे युद्धमें प्रवृत्त न होना॥ रे मूर्ख बालक! जहांपर नानाप्रकारकी खाने चाटने और पीनेकी वस्तुएँ हों तू उसी स्थान पर रहनेके योग्य है, तू कदापि युद्धभूमिमें खडे होने योग्य नहीं है॥ रे भीम! तेरा फल-मूल आहार करके नियम पूर्वक व्रत करते हुए वनवास करना ही उत्तम है, क्योंकि तू युद्धके कार्योंमें महा मूर्ख है॥ (९५-९७)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्व युद्धं क्व मुनित्वं च वनं गच्छ वृकोदर ।
न त्वं युद्धोचितस्तात वनवासरतिर्भवान् ॥ ९८ ॥
सूदान्भृत्यजनान्दासांस्त्वं गृहे त्वरयन्भृशम् ।
योग्यस्ताडयितुं क्रोधाद्भोजनार्थं वृकोदर ॥ ९९ ॥
मुनिर्भूत्वाऽथवा भीम फलान्यादत्स्व दुर्मते ।
वनाय व्रज कौन्तेय न त्वं युद्धविशारदः ॥ १०० ॥
फलमूलाशने शक्तस्त्वं तथाऽतिथिपूजने ।
न त्वां शस्त्रसमुद्योगे योग्यं मन्ये वृकोदर ॥ १०१ ॥
कौमारे यानि वृत्तानि विप्रियाणि विशाम्पते ।
तानि सर्वाणि चाप्येव रूक्षाण्यश्रावयद्भृशम् ॥ १०२ ॥
अथैनं तत्र संलीनमस्पृशद्धनुषा पुनः ।
प्रहसंश्च पुनर्वाक्यं भीममाह वृषस्तदा ॥ १०३ ॥
योद्धव्यं मारिषाऽन्यत्र न योद्धव्यं च मादृशैः ।
मादृशैर्युध्यमानानामेतच्चाऽन्यच्च विद्यते ॥ १०४ ॥

हे तात ! युद्ध और मुनियोंके व्रतमें बहुत अन्तर है । इससे तुम जङ्गल में चले जाओ; विशेष करके जङ्गलमें रहने हीकी तुम्हारी रुचि अधिक देखी जाती है । युद्ध करना तुहारे वास्ते किसी प्रकार भी अच्छा नहीं है ॥ हे बुद्धि-हीन भीमसेन ! तू केवल भोजनके वास्ते शीघ्रता करके भोजन पाक करनेवाले और सेवकोंके ऊपर क्रोध करने अथवा वनवासी मुनियोंके व्रतके अनुसार फल मूल भोजन करनेके योग्य है । जंगलमें निवास करना ही तुम्हारे वास्ते उत्तम है, युद्धमें तुम्हारी कुछ भी निपुणता नहीं है । हे भीम ! मैंने जान लिया कि तू फल मूलके भोजन करने और अतिथिसेवा करने योग्य है । तू अस्त्र शस्त्रोंके चलानेमें अत्यन्त ही मूर्ख है ॥ ९८-१०१

महाराज ! कर्ण भीमसेनको इसी प्रकार और बालक अवस्थाके किये हुए अनेक अप्रिय कार्योंके विषय तथा दूसरे नाना प्रकारके वचन सुनाने लगे ॥ अनन्तर ऐसी बुरी अवस्थामें पडे हुए पाण्डुपुत्र भीमको फिर कर्णने धनुषसे हिला कर कहा । रे राजपुत्र ! तू अब कभी भी मेरे समान पुरुषके साथ युद्ध मत करना । तू अपने बराबर वालेके सङ्ग युद्ध किया कर; मेरे समान पुरुषके सङ्ग युद्ध करनेसे इसी प्रकारकी दशा होती है तथा इससे बढकर भी दूसरी दशा हो सकती है ॥ इससे जहांपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गच्छ वा यत्र तौ कृष्णौ तौ त्वां रक्षिष्यतो रणे।
गृहं वा गच्छ कौन्तेय किं ते युद्धेन बालक ॥ १०५ ॥
कर्णस्य वचनं श्रुत्वा भीमसेनोऽतिदारुणम्।
उवाच कर्णं प्रहसन्सर्वेषां शृण्वतां वचः ॥ १०६ ॥
जितस्त्वमसकृद्दुष्ट कत्थसे किं वृथाऽऽत्मना।
जयाजयौ महेन्द्रस्य लोके दृष्टौ पुरातनैः ॥ १०७ ॥
मल्लयुद्धं मया सार्धं कुरु दुष्कुलसम्भव।
महाबलो महाभोगी कीचको निहतो यथा ॥ १०८ ॥
तथा त्वां घातयिष्यामि पश्यत्सु सर्वराजसु।
भीमस्य मतमाज्ञाय कर्णो बुद्धिमतां वरः ॥ १०९ ॥
विरराम रणात्तस्मात्पश्यतां सर्वधन्विनाम्।
एवं तं विरथं कृत्वा कर्णो राजन्व्यकत्थयत् ॥ ११० ॥
प्रमुखे वृष्णिसिंहस्य पार्थस्य च महात्मनः।
ततो राजञ्शिलाधौताञ्शराञ्शाखामृगध्वजः ॥१११॥
प्राहिणोत्सूतपुत्राय केशवेन प्रचोदितः।

कृष्ण अर्जुन रणभूमिमें स्थित हैं; तू उसी स्थानपर चला जा; क्योंकि वे लोग युद्धभूमिमें तुम्हारी रक्षा करेंगे अथवा तुम्हें घर लौट जाना उत्तम है तुम बालक हो, युद्धभूमिमें तुम्हारा कुछ भी प्रयोजन नहीं है। (१०१–१०५)

कर्णका यह अति दारुण वचन सुन कर सब लोगोंके सम्मुख ही भीमसेन कर्णसे यह वचन बोले, रे दुष्ट कर्ण! तुम मुझसे अनेक बार जीते जानेपर भी क्यों वृथा बढाई कहते हो। साक्षात् महेन्द्रके भी जयापजय पूर्व कालके लोगोंने देखे हैं, तो अन्योंकी बात क्या है? रे हीन कुलोत्पन्न कर्ण! तौ भी तुम युद्धकी इच्छा करते हो तो मुझसे मल्ल युद्ध कर मैंने जैसे महाबलवान् बडे भोगासक्त कीचकको मारा था वैसेही इन सब राजाओंके सामने तुझेही मार डालूंगा। (१०६-१०९)

बुद्धिमानों में श्रेष्ठ कर्णने भीमसेनका अभिप्राय जानकर सब धनुर्द्धारियोंके सामने युद्धको छोड दिया ॥ महाराज! सूतपुत्र कर्णने भीमसेनको इसी प्रकार वचन कहते हुए उन्हें रथभ्रष्ट करके यदुकुलभूषण कृष्ण और महात्मा अर्जुनके सम्मुख ही बार बार अपनी बडाई कर के भीमसेन को छोड दिया ॥ (१०९–१११)

तब कपिध्वजावाले महावीर अर्जुन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः पार्थभुजोत्सृष्टाः शराः कनकभूषणाः ॥ ११२ ॥
गाण्डीवप्रभवाः कर्णं हंसाः क्रौञ्चमिवाऽऽविशन् ।
स भुजङ्गैरिवाऽऽविष्टैर्गाण्डीवप्रेषितैः शरैः ॥ ११३ ॥
भीमसेनादपासेधत्सूतपुत्रं धनञ्जयः ।
स च्छिन्नधन्वा भीमेन धनञ्जयशराहतः ॥ ११४ ॥
कर्णो भीमादपायासीद्रथेन महता द्रुतम् ।
भीमोऽपि सात्यकेर्वाहं समारुह्य नरर्षभः ॥ ११५ ॥
अन्वयाद्भ्रातरं संख्ये पाण्डवं सव्यसाचिनम् ।
ततः कर्णं समुद्दिश्य त्वरमाणो धनञ्जयः ॥ ११६ ॥
नाराचं क्रोधताम्राक्षः प्रैषीन्मृत्युमिवाऽन्तकः ।
स गरुत्मानिवाऽऽकाशे प्रार्थयन्भुजगोत्तमम् ॥ ११७ ॥
नाराचोऽभ्यपतत्कर्णं तूर्णं गाण्डीवचोदितः ।
तमन्तरिक्षे नाराचं द्रौणिश्चिच्छेद पत्त्रिणा ॥ ११८ ॥
धनञ्जयभयात्कर्णमुज्जिहीर्षन्महारथः ।

कृष्णकी आज्ञाके अनुसार सूतपुत्र कर्णके ऊपर अनगिनत तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। वे सब सुवर्णभूषित बाण अर्जुनके भुजबल तथा गाण्डीव धनुषसे छूटकर इस प्रकार कर्णके शरीरमें घुस गये जैसे हंस पक्षी पर्वतके बीच प्रवेश करते हैं। अपने गाण्डीवधनुष से छूटे हुए सर्पों के समान बाणोंके प्रभावसे भीमके समीपसे अर्जुनने कर्णको पृथक् किया, फिर अपने भाईकी पराजयसे अर्जुन अत्यन्त क्रुद्ध हुए; और जिसका धनुष्य भीमने काटा है उस कर्णको अपने बाणोंसे विद्ध किया। कर्ण उस ही समय भीमको छोडकर अपने रथपर चढके अपनी सेनाके बीच स्थित हुए; और भीमसेन भी अपने भाई अर्जुनके समीप जानेकी इच्छासे सात्यकिके रथकी ओर गमन करने लगे। (१११–११६)

तिसके अनन्तर पराक्रमी अर्जुन यमराजके समान क्रुद्ध हुए और लाल-नेत्र करके कर्णकी ओर मृत्युके समान भयङ्कर एक बाण चलाया। जैसे पक्षिराज गरुड सर्प ग्रहण करनेकी इच्छासे वेगपूर्वक आकाशसे पृथ्वीपर उतरते हैं; वैसे ही अर्जुनके धनुषसे छूटा हुआ वह बाण वेग पूर्वक कर्णकी ओर गमन करने लगा। परन्तु द्रोणाचार्य पुत्र महारथ अश्वत्थामाने अर्जुनके भयसे कर्णको मुक्त करनेकी इच्छासे उस बाणको आकाश मार्गहीमें अपने बाणसे काट कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो द्रौणिं चतुःषष्ट्या विव्याध क्रुपितोऽर्जुनः ॥११९॥
शिलीमुखैर्महाराज मा गास्तिष्ठेति चाऽब्रवीत् ।
स तु मत्तगजाकीर्णमनीकं रथसंकुलम् ॥ १२० ॥
तूर्णमभ्याविशद् द्रौणिर्धनञ्जयशरार्दितः ।
ततः सुवर्णपृष्ठानां चापानां कूजतां रणे ॥ १२१ ॥
शब्दं गाण्डीवघोषेण कौन्तेयोऽभ्यभवद्बली ।
धनञ्जयस्तथा यान्तं पृष्ठतो द्रौणिमभ्यगात् ॥ १२२ ॥
नाऽतिदीर्घमिवाऽध्वानं शरैः सन्त्रासयन्बलम् ।
विदार्य देहान्नाराचैर्नरवारणवाजिनाम् ॥ १२३ ॥
कङ्कबर्हिणवासोभिर्बलं व्यधमदर्जुनः ।
तद्बलं भरतश्रेष्ठ सवाजिद्विपमानवम् ॥ १२४ ॥
पाकशासनिरायत्तः पार्थः स निजघान ह ॥१२५॥ [५८१६]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भीमकर्णयुद्धे एकोनत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १३९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच—अहन्यहनि मे दीप्तं यशः पतति सञ्जय ।
हता मे बहवो योधा मन्ये कालस्य पर्ययम् ॥ १ ॥

गिरा दिया ॥ (११६–११९)

बाणको निष्फल होते देख अश्वत्थामाके ऊपर अर्जुन अत्यन्त क्रुद्ध हुए। 'भागना मत, खडे होके युद्ध करो,' ऐसा कहके अर्जुनने अश्वत्थामाको चौसठ बाणोंसे विद्ध किया। द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अर्जुनके बाणोंसे पीडित होकर शीघ्रताके सहित मतवारे हाथियोंसे युक्त रथसेनाके बीच प्रवेश किया।११९-१२१

तिसके अनन्तर कुन्तीपुत्र महावीर अर्जुनने अपने गाण्डीव धनुषके शब्दसे रणभूमिमें स्थित सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सुवर्ण पृष्ठ धनुषको तुच्छ कर दिया। अनन्तर अश्वत्थामाको बहुत दूर न पहुंचते पहुंचते अपने बाणोंके प्रभावसे उन्हें भयभीत करने लगे। और कङ्कपत्र शोभित बाणोंसे हाथी घोडे और मनुष्योंके शरीरको भेद करते हुए तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे। महाराज! उस समय इन्द्रपुत्र अर्जुन क्रोध पूर्वक हाथी घोडे और पैदल चलने वाले योद्धाओंसे युक्त तुम्हारी सेनाका इसी प्रकार नाश करने लगे ॥ (१२१–१२५) [५८१६]

द्रोणपर्वमें एकसौ उनतालिस अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ चालीस अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! नित्य ही हमारी ओरके बहुतेरे योद्धा शत्रुओं के हाथसे मारे जाते हैं;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनञ्जयः सुसंक्रुद्धः प्रविष्टो मामकं बलम् ।
रक्षितं द्रौणिकर्णाभ्यामप्रवेश्यं सुरैरपि ॥ २ ॥
ताभ्यामूर्जितवीर्याभ्यामाप्यायितपराक्रमः ।
सहितः कृष्णभीमाभ्यां शिनीनामृषभेण च ॥ ३ ॥
तदा प्रभृति मां शोको दहत्यग्निरिवाऽऽशयम् ।
ग्रस्तानिव प्रपश्यामि भूमिपालान्ससैन्धवान् ॥ ४ ॥
अप्रियं सुमहत्कृत्वा सिन्धुराजः किरीटिनः ।
चक्षुर्विषयमापन्नः कथं जीवितमाप्नुयात् ॥ ५ ॥
अनुमानाच्च पश्यामि नास्ति सञ्जय सैन्धवः ।
युद्धं तु तद्यथा वृत्तं तन्ममाऽचक्ष्व तत्त्वतः ॥ ६ ॥
यच्च विक्षोभ्य महतीं सेनामालोड्य चाऽसकृत् ।
एकः प्रविष्टः संक्रुद्धो नलिनीमिव कुञ्जरः ॥ ७ ॥
तस्य मे वृष्णिवीरस्य ब्रूहि युद्धं यथातथम् ।

इससे बोध होता है, कि कालके प्रभावसे ही ऐसी घटना हो रही है ॥ नहीं तो जिस स्थानमें अश्वत्थामा और कर्णसे रक्षित सेनाके बीच देवता लोग भी प्रवेश करनेमें समर्थ नहीं हैं; उस स्थलमें अकेले ही अर्जुनने मेरी वैसी सेनाके बीच प्रवेश किया है; उस पर भी अत्यन्त बलवान् कृष्ण भीमसेन और सात्यकिकी सहायतासे उनके पराक्रम की और भी बढती हुई है ॥ (१-३)

हे सञ्जय ! मैं क्या कहूं उस ही समयसे मेरी शोकाग्नि हर घडी मेरे हृदयको भस्म किये डालती है; और इन सम्पूर्ण राजाओं तथा सिन्धुराज जयद्रथ को मैं मरा हुआ ही समझ रहा हूं ॥ विशेष करके सिन्धुराज जयद्रथने अर्जुन-का अत्यन्त अप्रिय कार्य किया है, इस-से इस समय अर्जुनकी आंखके सामने स्थित रह कर कैसे जीवित रह सकते हैं ? हे सञ्जय ! मैंने अनुमानसे ही जान लिया, सिन्धुराज युद्धसे परित्राण नहीं पासकेंगे । (४-६)

जो हो वह संग्राम जिस प्रकारसे हुआ था तुम उसका यथार्थ वृत्तान्त मेरे समीप वर्णन करो और जिसने अकेले ही कमल वनके नाश करनेवाले क्रुद्ध हाथीके समान अर्जुनकी सहायता के वास्ते बार बार मेरी सेनाके योद्धा-ओंको तितर बितर करके महासेनाके बीच प्रवेश किया था उस यदुकुल वीर सात्यकिके युद्धका वृत्तान्त भी मेरे समीप विस्तार पूर्वक वर्णन करो । हे सञ्जय !

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनञ्जयार्थे यत्तस्य कुशलो ह्यसि सञ्जय ॥ ८ ॥
सञ्जय उवाच— तथा तु वैकर्तनपीडितं तं भीमं प्रयान्तं पुरुषप्रवीरम्।
समीक्ष्य राजन्नरवीरमध्ये शिनिप्रवीरोऽनुययौ रथेन ॥ ९ ॥
नदन्यथा वज्रधरस्तपान्ते ज्वलन्यथा जलदान्ते च सूर्यः।
निघ्नन्नमित्रान्धनुषा दृढेन स कम्पयंस्तव पुत्रस्य सेनाम् ॥ १० ॥
तं यान्तमश्वै रजतप्रकाशैरायोधने वीरतरं नदन्तम्।
नाऽशक्नुवन्वारयितुं त्वदीयाः सर्वे रथा भारत माधवाग्र्यम् ॥ ११ ॥
अमर्षपूर्णस्त्वनिवृत्तयोधी शरासनी काञ्चनवर्मधारी।
अलम्बुषः सात्यकिं माधवाग्र्यमवारयद्राजवरोऽभिपत्य ॥ १२ ॥
तयोरभूद्भारत सम्प्रहारो यथाविधो नैव बभूव कश्चित्।
प्रेक्षन्त एवाऽऽहवशोभिनौ तौ योधास्त्वदीयाश्च परे च सर्वे ॥ १३ ॥
आविध्यदेनं दशभिः पृषत्कैरलम्बुषो राजवरः प्रसह्य।
अनागतानेव तु तान्पृषत्कांश्चिच्छेद बाणैः शिनिपुङ्गवोऽपि ॥ १४ ॥

तुम वक्तृता करनेमें अत्यन्त ही निपुण हो। (६-८)

सञ्जय बोले, महाराज! शिनिपौत्र सात्यकि राजाओंके सम्मुखमें पुरुषसिंह भीमसेनको कर्णके अस्त्रोंसे पीडित होकर उस भांतिसे गमन करते देख क्रोधसे शरत्कालके तीक्ष्ण किरणवाले सूर्यके समान प्रज्वलित होगये; और वर्षाकालके बादल समान गर्जकर अपने दृढ धनुषके प्रभावसे तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाको कंपाते और शत्रुओंका संहार करते हुए रथ बढाकर भीमसेनके अनुगामी हुए। रणभूमिमें जब यदुवंशीय श्रेष्ठ महावीर सात्यकि शङ्ख वर्णवाले घोडोंसे युक्त रथ पर चढके गर्जते हुए गमन करने लगे तब तुम्हारी ओरके कोई भी पुरुष उन्हें निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए ॥ (९-११)

युद्धसे पीछे न हटनेवाले राजाओंमें श्रेष्ठ अलम्बुष सुवर्णमय वर्म धारणकर अपने प्रचण्डधनुषको घुमाके सात्यकिको युद्धभूमिमें निवारण करने लगे ॥ उन दोनोंका जैसा संग्राम हुआ वैसा युद्ध कभी भी देखनेमें नहीं आया था। ऐसा क्या! उस समय तुम्हारी ओर तथा शत्रुओंकी ओरके सम्पूर्ण पुरुष उन दोनों पराक्रमी वीरोंका युद्ध देखने लगे राजाओंमें श्रेष्ठ अलम्बुषने सात्यकिको दश बाणोंसे विद्ध किया; शिनिकुलमें श्रेष्ठ सात्यकिने भी अलम्बुषके बाणोंको अपने बाणोंसे मार्गहीमें काटके गिरा दिया ॥ (१२-१४)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः स बाणैस्त्रिभिरग्निकल्पैराकर्णपूर्णैर्निशितैः सुपुङ्खैः ।
विव्याध देहावरणं विदार्य ते सात्यकेराविविशुः शरीरम् ॥ १५ ॥
तैः कायमस्याऽग्न्यनिलप्रभावैर्विदार्य बाणैर्निशितैर्ज्वलद्भिः ।
आजघ्निवांस्तान्रजतप्रकाशानश्वांश्चतुर्भिश्चतुरः प्रसह्य ॥ १६ ॥
तथा तु तेनाऽभिहतस्तरस्वी नप्ता शिनेश्चक्रधरप्रभावः ।
अलम्बुषस्योत्तमवेगवद्भिरश्वांश्चतुर्भिर्निजघान बाणैः ॥ १७ ॥
अथाऽस्य सूतस्य शिरो निकृत्य भल्लेन कालानलसन्निभेन ।
सकुण्डलं पूर्णशशिप्रकाशं आजिष्णु वक्त्रं निचकर्त देहात् ॥ १८ ॥
निहत्य तं पार्थिवपुत्रपौत्रं संख्ये यदूनामृषभः प्रमाथी ।
ततोऽन्वयादर्जुनमेव वीरः सैन्यानि राजंस्तव संनिवार्य ॥ १९ ॥
अन्वागतं वृष्णिवीरं समीक्ष्य तथाऽरिमध्ये परिवर्तमानम् ।
घ्नन्तं कुरूणामिषुभिर्बलानि पुनः पुनर्वायुमिवाऽभ्रपूगान् ॥ २० ॥
ततोऽवहन्सैन्धवाः साधुदान्ता गोक्षीरकुन्देन्दुहिमप्रकाशाः ।

उन बाणोंको निष्फल होते देख, राजा अलम्बुषने अग्निके समान तेजस्वी तीन तीक्ष्ण कर्ण पर्यंत खींचे हुए बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया, वे तीनों बाण सात्यकिके वर्मको भेद कर उनके शरीरमें घुस गये ॥ राजा अलम्बुषने उन वेगशील बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके फिर उनके सुवर्णभूषित चारों घोडोंको चार बाणोंसे पीडित किया ॥ कृष्णके समान पराक्रमी सात्यकिने अलम्बुषके बाणोंसे इस प्रकार विद्ध होकर चार तीक्ष्ण बाणोंसे उनके चारों घोडोंका वध किया; सारथीके शिर काटा और कालदण्ड समान भयङ्कर एक भल्लास्त्रसे उनका कुण्डल शोभित चन्द्रमाके समान प्रकाशमान सिर काट के पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (१५-१८)

महाराज ! जब शत्रुओंके नाश करनेवाले महारथ सात्यकि राज पुत्र और राजपौत्र अलम्बुषका वध करके तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको निवारण करते हुए अर्जुनके समीप जानेकी इच्छासे गमन करने लगे ॥ जैसे प्रचण्ड वायु बादलोंके समूहको तितर बितर करता है वैसे ही सात्यकि शत्रुसेनाके योद्धाओंको पीडित करते हुए गमन करने लगे । उस समय गौके दूध, चन्द्रमा वा बर्फके समान सिन्धु देशीय अत्यन्त शिक्षित घोडे इस प्रकार सारथीके वशमें होकर चलने लगे, कि पुरुषसिंह सात्यकिने जिस स्थानपर जाने की इच्छा करी, उस ही स्थानपर उनका रथ उपस्थित होने लगा ॥ (१९-२१)

हे अजमीढ कुलभूषण ! इस प्रकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवर्णजालावतताः सदश्वा यतो यतः कामयते नृसिंहः ॥ २१ ॥
अथाऽऽत्मजास्ते सहिताऽभिपेतुरन्ये च योधास्त्वरितास्त्वदीयाः ।
कृत्वा मुखं भारत योधमुख्यं दुःशासनं त्वत्सुतमाजमीढ ॥ २२ ॥
ते सर्वतः सम्परिवार्य संख्ये शैनेयमाजघ्नुरनीकसाहाः ।
स चापि तान्प्रवरः सात्वतानां न्यवारयद्बाणजालेन वीरः ॥ २३ ॥
निवार्य तांस्तूर्णमभित्रघाती नप्ता शिनेः पत्त्रिभिरग्निकल्पैः ।
दुःशासनस्याऽभिजघान वाहानुद्यम्य बाणासनमाजमीढ ॥ २४ ॥
ततोऽर्जुनो हर्षमवाप संख्ये कृष्णश्च दृष्ट्वा पुरुषप्रवीरम् ॥ २५ ॥ [५८४१]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि अलंबुषवधे चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः॥ १४० ॥

सञ्जय उवाच— तमुद्यतं महाबाहुं दुःशासनरथं प्रति ।
त्वरितं त्वरणीयेषु धनञ्जयजयैषिणम् ॥ १ ॥
त्रिगर्तानां महेष्वासाः सुवर्णविकृतध्वजाः ।
सेनासमुद्रमाविष्टमनन्तं पर्यवारयन् ॥ २ ॥
अथैनं रथवंशेन सर्वतः सन्निवार्य ते ।
अवाकिरञ्छरव्रातैः क्रुद्धाः परमधन्विनः ॥ ३ ॥
अजयद्राजपुत्रांस्तान्भ्राजमानान्महारणे ।

सात्यकिको आगे बढे आते देख तुम्हारे पुत्र लोग अपनी सेनाके योद्धाओंमें श्रेष्ठ दुःशासनको आगेकर सात्यकिको चारों ओरसे घेरकर अस्त्रशस्त्रोंसे उनके ऊपर प्रहार करने लगे। शत्रुनाशन सात्यकिने अपने बाणोंको चलाकर उन सम्पूर्ण योद्धाओंके बाणजालको निवारण किया और अग्निके समान तेजस्वी बाणोंसे दुःशासनके चारों घोडोंका वध किया॥ महाराज ! कृष्ण और अर्जुन पुरुषसिंह सात्यकिके कार्यको देखकर अत्यन्त ही हर्षित हुए॥ (२२-२५) [५८४१]

द्रोणपर्वमें एकसौ चालीस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ इकतालिस अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! त्रिगर्तसेनाके महारथी लोग अर्जुनके हितकी इच्छा करनेवाले सात्यकिको अगाध समुद्रके समान महासेनाके बीच प्रवेश करते और शीघ्रताके सहित दुःशासनके रथके समीप उपस्थित देखकर क्रोधपूर्वक चारों ओरसे उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे॥ परन्तु सत्यपराक्रमी सात्यकिने गदा, प्रास, तलवार और धनुषोंके बीचमें घिरकरभी उन यत्नवान् शूरवीर योद्धाओंमेंसे पचास राजकुमारों को पराजित किया॥ (१-४)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकः पञ्चाशतं शत्रून्सात्यकिः सत्यविक्रमः ॥ ४ ॥
सम्प्राप्य भारतीमध्यं तलघोषसमाकुलम् ।
असिशक्तिगदापूर्णमप्लवं सलिलं यथा ॥ ५ ॥
तत्राऽद्भुतमपश्याम शैनेयचरितं रणे ।
प्रतीच्यां दिशि तं दृष्ट्वा प्राच्यां पश्यामि लाघवात् ॥ ६ ॥
उदीचीं दक्षिणां प्राचीं प्रतीचीं विदिशस्तथा ।
नृत्यन्निवाऽऽचरच्छूरो यथा रथशतं तथा ॥ ७ ॥
तद् दृष्ट्वा चरितं तस्य सिंहविक्रान्तगामिनः ।
त्रिगर्ताः संन्यवर्तन्त सन्तप्ताः स्वजनं प्रति ॥ ८ ॥
तमन्ये शूरसेनानां शूराः संख्ये न्यवारयन् ।
नियच्छन्तः शरव्रातैर्मत्तं द्विपमिवांऽकुशैः ॥ ९ ॥
तैर्व्यवाहरदार्यात्मा मुहूर्त्तादेव सात्यकिः ।
ततः कलिङ्गैर्युयुधे सोऽचिन्त्यबलविक्रमः ॥ १० ॥
तां च सेनामतिक्रम्य कलिङ्गानां दुरत्ययाम् ।
अथ पार्थं महाबाहुर्धनञ्जयमुपासदत् ॥ ११ ॥
तरन्निव जले श्रान्तो यथा स्थलमुपेयिवान् ।

महाराज ! उस समय मैंने सात्यकिका यह अद्भुत कार्य देखा, कि उसे पश्चिम ओर देखकर पूर्वदिशामें दृष्टि किया तो उसही समय उसको पूर्वदिशामेंभी देखा; तथा पूर्व से उत्तर और उत्तर से दक्षिण दिशामें, उसी प्रकार सब ओर घूमते हुए अकेले ही पराक्रमी सात्यकिको सैकडों रथियोंके समान देखने लगा । त्रिगर्त्त-देशीय योद्धा लोग सिंहके समान पराक्रमी सात्यकिके ऐसे अद्भुत कार्यको देख दुःखित होकर युद्धसे निवृत्त हुए ॥ ५-८

महाराज ! जैसे मतवारे हाथीको वशमें करनेके निमित्त अंकुशसे पीडित करते हैं वैसे ही शूरसेनदेशीय कितने ही पराक्रमी योद्धालोग सात्यकिको अपने वशमें करनेके वास्ते उसे तीक्ष्ण बाणोंसे पीडित करने लगे ॥ अत्यन्त पराक्रमी सात्यकिने क्षणभरके बीच उन सम्पूर्ण योद्धाओंको निवारण किया फिर कलिङ्गसेनाके बीच प्रवेश करके युद्ध करने लगे ॥ अनन्तर महाबाहु सात्यकिने उस दुर्जय कलिङ्गसेनाको अतिक्रम करके अर्जुनको देखा । हे भारत ! जैसे कोई पुरुष जलमें तैरते हुए थककर किनारा पाके आनन्दित होता है, वैसे ही सात्यकि पुरुषव्याघ्र अर्जुनको देखकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं दृष्ट्वा पुरुषव्याघ्रं युयुधानः समाश्वसत् ॥ १२ ॥
तमायान्तमभिप्रेक्ष्य केशवः पार्थमब्रवीत् ।
असावायाति शैनेयस्तव पार्थ पदानुगः ॥ १३ ॥
एष शिष्यः सखा चैव तव सत्यपराक्रमः ।
सर्वान्योधांस्तृणीकृत्य विजिग्ये पुरुषर्षभः ॥ १४ ॥
एष कौरवयोधानां कृत्वा घोरमुपद्रवम् ।
तव प्राणैः प्रियतमः किरीटिन्नेति सात्यकिः ॥ १५ ॥
एष द्रोणं तथा भोजं कृतवर्माणमेव च ।
कदर्थीकृत्य विशिखैः फाल्गुनाऽभ्येति सात्यकिः॥१६॥
धर्मराजप्रियान्वेषी हत्वा योधान्वरान्वरान् ।
शूरश्चैव कृतास्त्रश्च फाल्गुनाऽभ्येति सात्यकिः ॥ १७ ॥
कृत्वा सुदुष्करं कर्म सैन्यमध्ये महाबलः ।
तव दर्शनमन्विच्छन्पाण्डवाऽभ्येति सात्यकिः॥ १८ ॥
बहूनेकरथेनाऽऽजौ योधयित्वा महारथान् ।
आचार्यप्रमुखान्पार्थ प्रयात्येष स सात्यकिः ॥ १९ ॥
स्वबाहुबलमाश्रित्य विदार्य च वरूथिनीम् ।
प्रेषितो धर्मराजेन पार्थैषोऽभ्येति सात्यकिः ॥ २० ॥

प्रसन्न हुए ॥ (९-१२)

श्रीकृष्ण सात्यकिको आते हुए देख, अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! यह देखो शिनिपौत्र सात्यकि तुम्हारे समीप आ-रहा है वह तुम्हारा मित्र और शिष्य है और वह महा पराक्रमी है। इस पुरुष-सिंहने सम्पूर्ण योद्धाओंको तृणके समान समझकर उन्हें पराजित किया है॥ वह तुम्हें प्राणसेभी अधिक प्रिय है वही सात्य कि कौरवी सेनामें भयङ्कर उपद्रव मचा-कर तुम्हारी ओर चला आता है॥ १३-१५

उसने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे द्रोणा-चार्य और भोजराज कृतवर्माको तुच्छ समझा है, और अस्त्र शस्त्रोंकी विद्यामें निपुण इस महावीर सात्यकिने धर्मराज युधिष्ठिरकी प्रिय कामनासे मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध किया है। उसने तुम्हें देखनेकी इच्छासे कुरुसेनाके बीच प्रवेश किया है, सात्यकिने एक रथपर चढकर ही द्रोणाचार्य आदि महारथियोंके सङ्ग युद्ध किया है। देखो धर्मराज युधिष्ठिरकी आज्ञासे अपने बलके आसरेसे शत्रु सेना के योद्धाओंको तितर बितर करके सात्यकि इधर आरहा है। (१६-२०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य नास्ति समो योधः कौरवेषु कथञ्चन ।
सोऽयमायाति कौन्तेय सात्यकिर्युद्धदुर्मदः ॥ २१ ॥
कुरुसैन्याद्विमुक्तो वै सिंहो मध्याद्गवामिव ।
निहत्य बहुलाः सेनाः पार्थैषोऽभ्येति सात्यकिः॥ २२ ॥
एष राजसहस्राणां वक्त्रैः पङ्कजसन्निभैः ।
आस्तीर्य वसुधां पार्थ क्षिप्रमायाति सात्यकिः॥ २३ ॥
एष दुर्योधनं जित्वा भ्रातृभिः सहितं रणे ।
निहत्य जलसन्धं च क्षिप्रमायाति सात्यकिः ॥ २४ ॥
रुधिरौघवतीं कृत्वा नदीं शोणितकर्दमाम् ।
तृणवद्बुद्ध्यस्य कौरव्यानेष ह्यायाति सात्यकिः ॥ २५ ॥
ततः प्रहृष्टः कौन्तेयः केशवं वाक्यमब्रवीत् ।
न मे प्रियं महाबाहो यन्मामभ्येति सात्यकिः॥ २६ ॥
नहि जानामि वृत्तान्तं धर्मराजस्य केशव ।
सात्वतेन विहीनः स यदि जीवति वा न वा ॥ २७ ॥
एतेन हि महाबाहो रक्षितव्यः स पार्थिवः ।

इस समय सम्पूर्ण कौरवी सेनाके बीच भी जिसके समान कोई योद्धा नहीं मिल सकता देखो यह युद्धदुर्मद सात्यकि आ रहा है ॥ जैसे गौवोंके झुण्डसे सिंह अनायास ही मुक्त होता है वैसे ही सात्यकि अनेक योद्धाओंका वध करके कुरुसेनासे पार होकर इधर आरहा है ॥ वह अपने शस्त्रबलसे सहस्रों राजाओंके सुन्दर सिरको कमलपुष्पकी भांति काटके उनके शरीरसे रणभूमिको परिपूर्ण करते हुए तुम्हारे समीप आरहा है ॥ (२१–२३)

आज सात्यकिने सौ भाइयोंके सहित कुरुराज दुर्योधनको पराजित करके राजा जलसंधका वध किया है । अधिक क्या कहें आज सात्यकिने अपने शस्त्रके प्रभावसे कुरुसेनाके योद्धाओंको तृण समान समझकर उनके रुधिर मांस और कीचडसे युक्त रुधिरकी नदी रणभूमिके बीच उत्पन्न किया ॥ (२४—२५)

तिसके अनन्तर अर्जुन हर्षित होकर कृष्णसे बोले, हे महाबाहो केशव ! सात्यकिके आगमनसे मैं सन्तुष्ट नहीं होता हूं ॥ धर्मराजकी कैसी दशा हुई है उसे मैं कुछ भी नहीं समझ सकता हूं; वह सात्यकिके विना जीवित हैं या नहीं मुझे इस विषयमें सन्देह है ॥ हे कृष्ण ! धर्मराजकी रक्षा करना ही उसका कर्तव्य कार्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमेष कथमुत्सृज्य मम कृष्ण पदानुगः ॥ २८ ॥
राजा द्रोणाय चोत्सृष्टः सैन्धवश्चाऽनिपातितः।
प्रत्युद्याति च शैनेयमेष भूरिश्रवा रणे ॥ २९ ॥
सोऽयं गुरुतरो भारः सैन्धवार्थे समाहितः।
ज्ञातव्यश्च हि मे राजा रक्षितव्यश्च सात्यकिः ॥ ३० ॥
जयद्रथश्च हन्तव्यो लम्बते च दिवाकरः।
श्रान्तश्चैष महाबाहुरल्पप्राणश्च साम्प्रतम् ॥ ३१ ॥
परिश्रान्ता हयाश्चाऽस्य हयतन्ता च माधव।
न च भूरिश्रवाः श्रान्तः ससहायश्च केशव ॥ ३२ ॥
अपीदानीं भवेदस्य क्षेममस्मिन्समागमे।
कच्चिन्न सागरं तीर्त्वा सात्यकिः सत्यविक्रमः ॥ ३३ ॥
गोष्पदं प्राप्य सीदेत महौजाः शिनिपुङ्गवः।
अपि कौरवमुख्येन कृतास्त्रेण महात्मना ॥ ३५ ॥
समेत्य भूरिश्रवसा स्वस्तिमान्सात्यकिर्भवेत्।
व्यतिक्रममिमं मन्ये धर्मराजस्य केशव ॥ ३५ ॥

था। उसे न करके वह मेरे समीप क्यों आरहा है? (२६–२८)

धर्मराजको द्रोणाचार्यके हाथमें समर्पण किया गया है; जयद्रथ भी अभी तक नहीं मारा गया; और भूरिश्रवा इस समय सात्यकिकी ओर बढ रहे हैं॥ इससे जयद्रथके वधके वास्ते मुझे अत्यन्त कठिन भारको उठाना पडा! क्योंकि इस समय धर्मराजका संवाद, सात्यकिकी रक्षा और सिन्धुराज जयद्रथका वध यह तीन अवश्य ही करने योग्य कार्य उपस्थित हुए हैं, परन्तु सूर्य अस्त हुआ चाहता है, इधर महारथ सात्यकि भी थके हुए हैं, उनके अस्त्र शस्त्र भी प्रायः निःशेषित हुए हैं; तथा उनके रथके घोडे और सारथी सब ही थक गये हैं, परन्तु भूरिश्रवा श्रमहीन और सहायतासे युक्त है॥ (२९–३२)

हे कृष्ण! इस समय भूरिश्रवाके सङ्ग युद्ध करनेसे क्या सात्यकिका मङ्गल होवेगा! महाबलवान् सात्यकि समुद्रके समान महासेनासे पार होकर इस समय में क्या गोपद प्राप्त होकर उसके पार न हो सकेंगे? अस्त्रविद्याके जाननेवाले कौरवोंमें मुख्य भूरिश्रवाके सङ्ग युद्ध करके क्या सात्यकि कुशलपूर्वक इस युद्धसे पार हो सकेंगे? हे कृष्ण! मेरे विचारमें धर्मराजने सात्यकिको मेरे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्यादृषभुत्सृज्य यः प्रैषयत सात्यकिम् ।
ग्रहणं धर्मराजस्य खगः श्येन इवाऽऽमिषम् ॥ ३६ ॥
नित्यमाशंसते द्रोणः कच्चित्स्यात्कुशली नृपः॥३७॥ [५८७८]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि सात्यक्यर्जुनदर्शने एकचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४१ ॥

सञ्जय उवाच— तमापतन्तं संप्रेक्ष्य सात्वतं युद्धदुर्मदम् ।
क्रोधाद्भूरिश्रवा राजन्सहसा समुपाद्रवत् ॥ १ ॥
तमब्रवीन्महाराज कौरव्यः शिनिपुङ्गवम् ।
अद्य प्राप्तोऽसि दिष्ट्या मे चक्षुर्विषयमित्युत ॥ २ ॥
चिराभिलषितं काममहं प्राप्स्यामि संयुगे ।
नहि मे मोक्ष्यसे जीवन्यदि नोत्सृजसे रणम् ॥ ३ ॥
अद्य त्वां समरे हत्वा नित्यं शूराभिमानिनम् ।
नन्दयिष्यामि दाशार्ह कुरुराजं सुयोधनम् ॥ ४ ॥
अद्य मद्बाणनिर्दग्धं पतितं धरणीतले ।
द्रक्ष्यतस्त्वां रणे वीरौ सहितौ केशवार्जुनौ ॥ ५ ॥
अद्य धर्मसुतो राजा श्रुत्वा त्वां निहतं मया ।

समीप भेजकर बहुत ही अन्याय कार्य किया है । जैसे आकाशचारी बाजपक्षी मांस ग्रहण करनेके वास्ते चेष्टा करता है वैसे ही द्रोणाचार्य सदा ही युधिष्ठिरको ग्रहण करनेकी इच्छा कर रहे हैं, इससे धर्मराज कुशलसे हैं या नहीं इसमें मुझे सन्देह है ॥ (३३–३७) [५८७८]

द्रोणपर्वमें एकसौ इकतालिस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ बियालिस अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! भूरिश्रवा युद्धदुर्मद सात्यकिको इस प्रकार आते हुए देख क्रोध पूर्वक सहसा उनकी ओर दौडके यह वचन बोले,हे दाशार्ह ! आज तुम प्रारब्धसे ही मेरी दृष्टिके सम्मुख उपस्थित हो, आज मैं युद्धभूमिमें अपनी सब दिनकी मनोकामना पूर्ण करूंगा, यदि तुम युद्ध त्याग कर भाग न जाओगे, तो जीते जी मेरे निकटसे मुक्त न होसकोगे ॥ तुम सदा ही अपने बलका अभिमान करते हो परन्तु आज मैं तुम्हारा वध करके कुरुराज दुर्योधनको आनन्दित करूंगा ॥ (१–४)

आज तुम मेरे बाण रूपी अग्निसे भस्म होकर पृथ्वीमें गिरोगे तब महावीर कृष्ण अर्जुन तुम्हे देखते ही रह जायंगे ॥ धर्मपुत्र युधिष्ठिर आज तुमको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सव्रीडो भविता सद्यो येनाऽसीह निवेशितः ॥ ६ ॥
अद्य मे विक्रमं पार्थो विज्ञास्यति धनञ्जयः ।
त्वयि भूमौ विनिहते शयाने रुधिरोक्षिते ॥ ७ ॥
चिराभिलषितो ह्येष त्वया सह समागमः ।
पुरा देवासुरे युद्धे शक्रस्य बलिना यथा ॥ ८ ॥
अद्य युद्धं महाघोरं तव दास्यामि सात्वत ।
ततो ज्ञास्यसि तत्त्वेन मद्वीर्यबलपौरुषम् ॥ ९ ॥
अद्य संयमनीं याता मया त्वं निहतो रणे ।
यथा रामानुजेनाऽऽजौ रावणिर्लक्ष्मणेन ह ॥ १० ॥
अद्य कृष्णश्च पार्थश्च धर्मराजश्च माधव ।
हते त्वयि निरुत्साहा रणं त्यक्ष्यन्त्यसंशयम् ॥ ११ ॥
अद्य तेऽपचितिं कृत्वा शितैर्माधव सायकैः ।
तत्स्त्रियो नन्दयिष्यामि ये त्वया निहता रणे ॥ १२ ॥
मच्चक्षुर्विषयं प्राप्तो न त्वं माधव मोक्ष्यसे ।
सिंहस्य विषयं प्राप्तो यथा क्षुद्रमृगस्तथा ॥ १३ ॥

मेरे हाथसे मरेहुए सुन कर अत्यन्त लज्जित होंगे इसमें सन्देह नहीं है ॥ क्योंकि उनकी आज्ञासे ही तुमने इस व्यूहके बीच प्रवेश किया है ॥ तुम मेरे हाथसे मर कर रुधिर पूरित शरीरसे युक्त होकर पृथ्वीमें शयन करोगे, तो पृथापुत्र अर्जुन भी आज मेरे पराक्रमको मालुम करेंगे ॥ पहिले राजा बलिके सङ्ग जैसे इन्द्रका युद्ध हुआ था मेरी सदासे ही इच्छा थी, कि तुम्हारे सङ्ग मेरा वैसा ही संग्राम उपस्थित होवे ॥ (५-८)

हे सात्यकि ! इससे मैं आज तुम्हारे सङ्ग महा घोर युद्धमें प्रवृत्त होऊंगा आज तुम मेरे बलवीर्य तथा पराक्रमके विषयको विशेषरूपसे मालूम करोगे ॥ हे सात्यकि ! जैसे लङ्कापति रावणका पुत्र लक्ष्मणके बाणसे मारा गया था आज तुम भी मेरे बाणोंके प्रहारसे मरकर यमलोकमें गमन करोगे ॥ तुम्हारे मरनेसे धर्मराज युधिष्ठिर और कृष्ण अर्जुन उत्साहरहित होकर आज युद्ध त्यागके गमन करेंगे ॥ हे सात्यकि ! आज मैं अपने चोखे बाणोंसे तुम्हारा वध करके तुम्हारे अस्त्रोंसे मरे हुए शूरवीर पुरुषोंकी विधवा स्त्रियोंको आनन्दित करूंगा ॥ जब तुम मेरी दृष्टिके संमुख दिखाई पडे हो तो मेरे संमुखसे आज इस भांति छुटकारा न पासकोगे, जैसे छोटे हरिण सिंहके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युयुधानस्तु तं राजन्प्रत्युवाच हसन्निव ।
कौरव्य न सन्त्रासो विद्यते मम संयुगे ॥ १४ ॥
नाऽहं भीषयितुं शक्यो वाङ्मात्रेण तु केवलम् ।
स मां निहन्यात्संग्रामे यो मां कुर्यान्निरायुधम् ॥१५॥
समास्तु शाश्वतीर्हन्याद्यो मां हन्याद्धि संयुगे ।
किं वृथोक्तेन बहुना कर्मणा तत्समाचर ॥ १६ ॥
शारदस्येव मेघस्य गर्जितं निष्फलं हि ते ।
श्रुत्वा त्वद्गर्जितं वीर हास्यं हि मम जायते ॥ १७ ॥
चिरकालेप्सितं लोके युद्धमद्याऽस्तु कौरव ।
त्वरते मे मतिस्तात तव युद्धाभिकांक्षिणी ॥ १८ ॥
नाऽहत्वाऽहं निवर्तिष्ये त्वामद्य पुरुषाधम ।
अन्योन्यं तौ तथा वाग्भिस्तक्षन्तौ नरपुङ्गवौ ॥ १९ ॥
चिघांसू परमक्रुद्धावभिजघ्नतुराहवे ।
समेतौ तौ महेष्वासौ शुष्मिणौ स्पर्धिनौ रणे ॥ २० ॥

संमुखसे छुटकारा नहीं पाते ॥ ९–१३

भूरिश्रवाका वचन सुन कर सात्यकिने हंसकर उन्हें यह उत्तर दिया, हे कौरव्य ! युद्धमें मुझे कभी भय नहीं होता, जो पुरुष रणभूमिमें मुझे अस्त्र रहित कर सकेगा वह मेरा वध करनेमें समर्थ हो सकेगा । नहीं तो केवल वचनसे मुझे भयभीत करनेको किसीकी भी सामर्थ्य नहीं है ॥ युद्धभूमिमें जो पुरुष मेरा वध करेगा, वह बहुत दिनों तक संसारमें विघ्न रहित होके अपने अनेक शत्रुओंको मार सकेगा ! जो हो, बहुत बात कहनेकी कुछ भी आवश्यकता नहीं है, तुमने जैसा वचन कहा है उसे सत्य करनेमें तत्पर हो जाओ ॥ (१४-१६)

हे वीर ! शरत् कालके बादलके निष्फल गर्जनके समान तुम्हारे व्यर्थ गर्जनको सुनकर मुझे हंसी आती है । और तुम्हारे सङ्ग युद्ध करनेकी मुझे भी अत्यन्त इच्छा हो रही है । तुम्हारी जो मेरे सङ्ग युद्ध करनेकी सदासे इच्छा है सो आज सिद्ध होवेगी । हे अधम पुरुष ! आज मैं विना तुम्हारा वध किये कदापि युद्धसे निवृत्त न होऊंगा । (१७–१९)

महाराज ! महाधनुर्द्धारी तेजस्वी पुरुषसिंह सात्यकि और भूरिश्रवा आपसमें एक दूसरेको वचनोंसे विद्ध करते हुए हथिनीके लिये झगडनेवाले दो मतवारे हाथियोंके समान क्रुद्ध होकर एक दूसरेके ऊपर अस्त्रशस्त्रोंका प्रहार करने लगे; तथा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विरदाविव संक्रुद्धौ वासितार्थे मदोत्कटौ ।
भूरिश्रवाः सात्यकिश्च ववर्षतुरिरिन्दमौ ॥ २१ ॥
शरवर्षाणि घोराणि मेघाविव परस्परम् ।
सौमदत्तिस्तु शैनेयं प्रच्छाद्येषुभिराशुगैः ॥ २२ ॥
जिघांसुर्भरतश्रेष्ठ विव्याध निशितैः शरैः ।
दशभिः सात्यकिं विद्ध्वा सौमदत्तिरथाऽपरान् ॥ २३ ॥
मुमोच निशितान्बाणाञ्छिघांसुः शिनिपुङ्गवम् ।
तानस्य विशिखांस्तीक्ष्णानन्तरिक्षे विशाम्पते ॥ २४ ॥
अप्राप्तानस्त्रमायाभिरग्रसत्सात्यकिः प्रभो ।
तौ पृथक्शस्त्रवर्षाभ्यामवर्षेतां परस्परम् ॥ २५ ॥
उत्तमाभिजनौ वीरौ कुरुवृष्णियशस्करौ ।
तौ नखैरिव शार्दूलौ दन्तैरिव महाद्विपौ ॥ २६ ॥
रथशक्तिभिरन्योन्यं विशिखैश्चाप्यऽकृन्तताम् ।
निर्भिन्दन्तौ हि गात्राणि विक्षरन्तौ च शोणितम् ॥ २७ ॥
व्यष्टम्भयेतामन्योन्यं प्राणद्यूताभिदेविनौ ।

जलकी वर्षा करनेवाले दो बादलोंकी भांति एक दूसरेके ऊपर अपने भयङ्कर बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ (१९-२२)

महाराज ! सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवाने सात्यकिके वध करनेकी अभिलाष करके अपने शीघ्रगामी बाणोंसे उन्हें छिपा कर फिर दश तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध किया, तिसके अनन्तर पुरुषसिंह भूरिश्रवा सात्यकिके नाश करनेकी इच्छा करके उनके ऊपर अगणित बाणोंकी वर्षा करने लगे। उन बाणोंको समीप न आते ही आते सात्यकिने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे मार्गहीमें काटके गिरा दिया। इसी प्रकारसे कुरुकुल श्रेष्ठ भूरिश्रवा और यदुकुलकी कीर्त्ति बढाने वाले सात्यकि लगातर बाणोंकी वर्षा करने लगे। (२२-२६)

जैसे नखसे दो शार्दूल और दांतसे दो मतवारे हाथी आपसमें एक दूसरेके शरीर पर प्रहार करते हैं वैसेही वे दोनों वीर शक्ति और अनेक बाणोंको चला कर आपसमें एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। बाणोंकी चोटसे दोनोंके शरीर क्षत विक्षत होगये और उनके शरीरसे लगातार रुधिरकी धारा बहने लगी ॥ महाराज ! कुरुकुलकी कीर्ति बढानेवाले वे दोनों महात्मा इसी प्रकार प्राणपणसे युद्ध करते हुए एक दूसरेको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवमुत्तमकर्माणौ कुरुवृष्णियशस्करौ ॥ २८ ॥
परस्परमयुध्येतां वारणाविव यूथपौ ।
तावदीर्घेण कालेन ब्रह्मलोकपुरस्कृतौ ॥ २९ ॥
यियासन्तौ परं स्थानमन्योन्यं सञ्जगर्जतुः ।
सात्यकिः सौमदत्तिश्च शरवृष्ट्या परस्परम् ॥ ३० ॥
हृष्टवद्धार्तराष्ट्राणां पश्यतामभ्यवर्षताम् ।
सम्प्रैक्षन्त जनास्तौ तु युध्यमानौ युधां पती ॥ ३१ ॥
यूथपौ वासिताहेतोः प्रयुद्धाविव कुञ्जरौ ।
अन्योन्यस्य हयान्हत्वा धनुषी विनिकृत्य च ॥ ३२ ॥
विरथावसियुद्धाय समेयातां महारणे ।
आर्षभे चर्मणी चित्रे प्रगृह्य विपुले शुभे ॥ ३३ ॥
विकोशौ चाप्यसी कृत्वा समरे तौ विचेरतुः ।
चरन्तौ विविधान्मार्गान्मण्डलानि च भागशः ॥३४॥
मुहुराजघ्नतुः क्रुद्धावन्योन्यमरिमर्दनौ ।
सखड्गौ चित्रवर्माणौ सनिष्काङ्गदभूषणौ ॥ ३५ ॥

पीडित करके दो मतवारे यूथपति गजराजके समान युद्ध करने लगे ॥ (२७-२९)

ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठा पाने योग्य वे दोनों वीर शीघ्रतासे पुण्यलोकमें गमन करनेकी इच्छासे प्रसन्न होके सेनाके योद्धाओंके सम्मुख ही में एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करके सिंहनाद करने लगे ॥ महाराज ! वे दोनों वीर मानो हथिनीको ग्रहण करनेकी इच्छा वाले दो मतवारे यूथपति गजराज के समान युद्ध करने लगे । उस समय सम्पूर्ण सेनाके योद्धा उन दोनों वीरोंका युद्ध देखने लगे । (२९-३२)

तिसके अनन्तर वे दोनों पुरुषसिंह एक दूसरेके रथके घोडोंका वध करके तथा आपसमें एक दूसरेके धनुषको काट कर दोनों रथरहित होगये, तब वे दोनों वीर तलवारकी युद्ध करनेके वास्ते भली भांतिसे चित्रित मनोहर ढाल और उत्तम तलवार ग्रहण करके युद्धभूमिमें भ्रमण करने लगे । शत्रुनाशन भूरिश्रवा और सात्यकि यथारीतिसे मण्डलाकार गतिसे पैंतराके सहित युद्ध विषयक नाना प्रकारके कौशल दिखाते हुए दोनोंही बार बार एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे । (३२-३५)

वे दोनों यशस्वी वीर सुवर्णचित्रित सनाह तनुत्राण सुन्दर आभूषण पहने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रान्तमुद्भ्रान्तमाविद्धमाप्लुतं विप्लुतं सृतम्।
सम्पातं समुदीर्णं च दर्शयन्तौ यशस्विनौ ॥ ३६ ॥
असिभ्यां सम्प्रजह्राते परस्परमरिन्दमौ।
उभौ छिद्रैषिणौ वीरावुभौ चित्रं ववल्गतुः ॥ ३७ ॥
दर्शयन्तावुभौ शिक्षां लाघवं सौष्ठवं तथा।
रणे रणकृतां श्रेष्ठावन्योन्यं पर्यकर्षताम् ॥ ३८ ॥
मुहूर्तमिव राजेन्द्र समाहत्य परस्परम्।
पश्यतां सर्वसैन्यानां वीरावाश्वसतां पुनः ॥ ३९ ॥
असिभ्यां चर्मणी चित्रे शतचन्द्रे नराधिप।
निकृत्य पुरुषव्याघ्रौ बाहुयुद्धं प्रचक्रतुः ॥ ४० ॥
व्यूढोरस्कौ दीर्घभुजौ नियुद्धकुशलावुभौ।
बाहुभिः समसज्जेतामायसैः परिघैरिव ॥ ४१ ॥
तयो राजन्भुजाघातनिग्रहप्रग्रहास्तथा।
शिक्षाबलसमुद्भूताः सर्वयोधप्रहर्षणाः ॥ ४२ ॥
तयोर्नृवरयो राजन्समरे युध्यमानयोः।
भीमोऽभवन्महाशब्दो वज्रपर्वतयोरिव ॥ ४३ ॥

हुए हाथमें तलवार लेकर इधर उधर घूमते .एक दूसरेके ऊपर प्रहार करते साधते कूदते शीघ्रताके सहित तलवारको चलाते और नानाप्रकारकी गति दिखाते हुए अद्भुतरूपसे तलवार युद्ध करने लगे। वे दोनों युद्ध-विद्या जाननेवाले पराक्रमी वीर अपनी फुर्त्ती सावधानता और अस्त्र विद्याका बल दिखाते हुए दूसरेको पीडित करने लगे। और सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओं के सम्मुख ही में दोनों वीर आपसमें तलवारकी चोटसे अत्यन्त पीडित होकर मुहूर्त्त भर विश्राम करने लगे ॥ (३५-३९)

तिसके अनन्तर पुरुषसिंह सात्यकि और भूरिश्रवा अपने तलवारोंसे चन्द्र प्रतिमाभूषित एक दूसरेके ढालको काट कर बाहु युद्ध करने लगे ॥ चौडी छाती और लम्बी भुजावाले वे दोनों पुरुष अपनी लोहमयी परिघके समान भुजाओंसे आपसमें युद्ध करने लगे ॥ महाराज ! उन दोनों वीरोंकी युद्धनिपुणता भुजाका बन्धन और फिर छुडाकर युद्ध करना देखकर सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग हर्षित होने लगे ॥ (४०-४२)

जिस समय वे दोनों पुरुष उस प्रकार युद्ध करते थे उस समय ऐसा भयङ्कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विपाविव विषाणाग्रैः शृङ्गैरिव महर्षभौ ।
भुजयोक्त्रावबन्धैश्च शिरोभ्यां चाऽवघातनैः ॥ ४४ ॥
पादावकर्षसन्धानैस्तोमरांकुशलासनैः ।
पादोदरविबन्धैश्च भूमावुद्भ्रमणैस्तथा ॥ ४५ ॥
गतप्रत्यागताक्षेपैः पातनोत्थानसम्प्लुतैः ।
युयुधाते महात्मानौ कुरुसात्वतपुङ्गवौ ॥ ४६ ॥
द्वात्रिंशत्करणानि स्युर्यानि युद्धानि भारत ।
तान्यदर्शयतां तत्र युध्यमानौ महाबलौ ॥ ४७ ॥
क्षीणायुधे सात्वते युध्यमाने ततोऽब्रवीदर्जुनं वासुदेवः ।
पश्यस्वैनं विरथं युध्यमानं रणे वरं सर्वधनुर्धराणाम् ॥ ४८ ॥
प्रविष्टो भारतीं भित्त्वा तव पाण्डव पृष्ठतः ।
योधितश्च महावीर्यैः सर्वैर्भारत भारतैः ॥ ४९ ॥

शब्द उत्पन्न होने लगा, जैसे वज्रकी चोटसे पर्वत टूटनेपर महाघोर शब्द प्रकट होता है ॥ जैसे दांतसे दो मतवारे हाथी और सींगसे दो बलवान् बैल युद्ध करते हैं वैसेही कुरुवंशकी कीर्त्ति बढानेवाले भूरिश्रवा और यदुवंशियोंमें मुख्य सात्यकि भुजाओंसे भुजाका बन्धन, सिरसे सिरकी टक्कर, चरणसे चरण और घुटनेसे प्रहार करते हुए आपसमें संग्राम करने लगे, उससे ऐसा बोध होने लगा मानों अंकुशसे तोमर संयुक्त होरहा है । इसी प्रकार कभी चरणसे बांधते कभी शरीर ग्रहण करते कभी पृथ्वी पर घुमाके फेंकते कभी दूर हट जाते फिर घूम कर युद्ध करने लगते; एक दूसरेकी निन्दा करते हुए ताल ठोकके युद्ध करके पृथ्वीमें गिरते, उठ खडे होते, कूदते और नानाप्रकारके युद्ध कौशल दिखाते हुए आपसमें मल्लयुद्ध करने लगे ॥ ऐसा क्या; बाहुयुद्धकी जो बत्तीस प्रकारकी क्रिया शास्त्रमें कही गयी हैं, युद्ध में प्रवृत्त हुए वे दोनों महाबली पुरुष रणभूमिमें सम्पूर्ण कौशल प्रकाशित करने लगे ॥ (४३---४७)

तिसके अनन्तर शस्त्र रहित सात्यकिको इस प्रकार युद्ध करते देख श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुनसे यह वचन बोले, हे अर्जुन ! यह देखो सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ सात्यकि रथ रहित होकर युद्ध कर रहे हैं । उन्होंने तुम्हारा अनुगमन करके महाबली कौरवी सेनाको भेदकर सम्पूर्ण योद्धाओंके संग युद्ध किया है । इस समय बहुतसी दक्षिणा देनेवाले भूरिश्रवाने अनेक योद्धाओं के सङ्ग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिश्रान्तं युधां श्रेष्ठं सम्प्राप्तो भूरिदक्षिणः ।
युद्धाकांक्षी समायान्तं नैतत्समभिवाऽर्जुन ॥ ५० ॥
ततो भूरिश्रवाः क्रुद्धः सात्यकिं युद्धदुर्मदः ।
उद्यम्याऽभ्याहनद्राजन्मत्तो मत्तमिव द्विपम् ॥ ५१ ॥
रथस्थयोर्द्वयोर्युद्धे क्रुद्धयोर्योधमुख्ययोः ।
केशवार्जुनयो राजन्समरे प्रेक्षमाणयोः ॥ ५२ ॥
अथ कृष्णो महाबाहुरर्जुनं प्रत्यभाषत ।
पश्य वृष्ण्यन्धकव्याघ्रं सौमदत्तिवशङ्गतम् ॥ ५३ ॥
परिश्रान्तं गतं भूमौ कृत्वा कर्म सुदुष्करम् ।
तवाऽन्तेवासिनं वीरं पालयाऽर्जुन सात्यकिम् ॥ ५४ ॥
न वशं यज्ञशीलस्य गच्छेदेष वरोऽर्जुन ।
त्वत्कृते पुरुषव्याघ्र तदाशु क्रियतां विभो ॥ ५५ ॥
अथाऽब्रवीद्धृष्टमना वासुदेवं धनञ्जयः ।
पश्य वृष्णिप्रवीरेण क्रीडन्तं कुरुपुङ्गवम् ॥ ५६ ॥

युद्ध करके थके हुए सात्यकिको आगे बढे आते देख युद्धकी अभिलाषा करके उन्हें आक्रमण किया है यह बहुत ही अनुचित मालूम होता है ॥ (४८–५०)

महाराज! श्रीकृष्ण इसी प्रकारसे कह रहे थे, उसी समय युद्ध दुर्मद भूरिश्रवा अत्यन्त क्रुद्ध हुए और जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीके शरीर पर प्रहार करता है वैसे ही सम्पूर्ण योद्धाओंमें अग्रणी रथमें बैठे हुए कृष्ण अर्जुन के संमुख ही में भूरिश्रवाने सात्यकिको उठा कर दे मारा और लातसे उनके शरीरमें प्रहार करने लगे ॥ महाबाहु कृष्ण सात्यकिकी ऐसी दशा देखकर फिर अर्जुनसे बोले, हे पापरहित अर्जुन ! देखो जो पुरुष युद्धभूमिमें अनगिनत योद्धाओंमें अजेय था; आज यदुवंशी और अन्धकवंशियोंमें अग्रणी वही सात्यकि भूरिश्रवाके हाथमें पडकर उनके वशमें होगया है। हे अर्जुन! इससे तुम सात्यकिकी रक्षा करो ॥ (५१–५४)

वह तुम्हारे शिष्य और अत्यन्त पराक्रमी योद्धा हैं और विशेष करके तुम शत्रुओंके नाश करनेमें समर्थ हो। हे पुरुषश्रेष्ठ ! जिससे तुम्हारी सहायता करनेके वास्ते आकर सात्यकि भूरिश्रवा के हाथसे न मारे जावें, तुम सावधान होकर शीघ्रताके सहित वही उपाय करो ॥ श्रीकृष्णके वचनको सुनकर अर्जुन प्रसन्न चित्तसे कहने लगे, हे महाबाहो ! यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाद्विपेनेव वने मत्तेन हरियूथपम् ।
सञ्जय उवाच— इत्येवं भाषमाणे तु पाण्डवे वै धनञ्जये ॥ ५७ ॥
हाहाकारो महानासीत्सैन्यानां भरतर्षभ ।
तदुद्यम्य महाबाहुः सात्यकिं न्यहनद्भुवि ॥ ५८ ॥
स सिंह इव मातङ्गं विकर्षन्भूरिदक्षिणः ।
व्यरोचत कुरुश्रेष्ठ सात्वतप्रवरं युधि ॥ ५९ ॥
अथ कोशाद्विनिष्कृष्य खड्गं भूरिश्रवा रणे ।
मूर्द्धजेषु निजग्राह पदा चोरस्यताडयत् ॥ ६० ॥
ततोऽस्य च्छेत्तुमारब्धः शिरः कायात्सकुण्डलम् ।
तावत्क्षणात्सात्वतोऽपि शिरः सम्भ्रमयंस्त्वरन् ॥ ६१ ॥
यथा चक्रं तु कोलालो दण्डविद्धं तु भारत ।
सहैव भूरिश्रवसो बाहुना केशधारिणा ॥ ६२ ॥
तं तथा परिकृष्यन्तं दृष्ट्वा सात्वतमाहवे ।
वासुदेवस्ततो राजन्भूयोऽर्जुनमभाषत ॥ ६३ ॥
पश्य वृष्ण्यन्धकव्याघ्रं सौमदत्तिवशङ्गतम् ।

देखो, जैसे वनके बीच यूथपति सिंह महामतवारे हाथीको संग लेकर गमन करता है वैसे ही कौरवोंमें श्रेष्ठ भूरिश्रवा सात्यकिको ग्रहण करके क्रीडा कर रहे हैं ॥ (५५–५७)

सञ्जय बोले, महाराज ! अर्जुन श्रीकृष्णसे इसी प्रकार कह रहे थे उसी समय महाबाहु भूरिश्रवाने सात्यकिको उठाकर पृथ्वीपर पटका और उनकी छातीमें लात मारी । उसे देख सम्पूर्ण सेनाके बीच हाहाकार शब्दके सहित अत्यन्त कोलाहल होने लगा। जैसे सिंह हाथीको ग्रहण करके शोभित होता है वैसेही बहुतसी दाक्षिणा देनेवाले भूरिश्रवा युद्धभूमिमें सात्यकिको पटकके शोभित होने लगे । तिसके अनन्तर भूरिश्रवाने मियानसे तलवार निकाल कर एक हाथसे सात्यकिका केश पकडा और उसकी छातीमें लात मारी फिर उनके कुण्डल भूषित सिरको काटनेकी इच्छा करने लगे । (५७–६१)

परन्तु जैसे कुम्हार दण्डसे अपने चाकको घुमाते है,वैसे ही सात्यकि भी भूरिश्रवाने जिस हाथसे उनका केश पकडा था उस केशके सहित अपने मस्तकको घुमाने लगे । महाराज ! श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकिको भूरिश्रवाके वशमें पडे देख फिर अर्जुनसे बोले, हे महाबाहो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव शिष्यं महाबाहो धनुष्यनवरं त्वया ॥ ६४ ॥
असत्यो विक्रमः पार्थ यत्र भूरिश्रवा रणे।
विशेषयति वार्ष्णेयं सात्यकिं सत्यविक्रमम् ॥ ६५ ॥
एवमुक्तो महाबाहुर्वासुदेवेन पाण्डवः।
मनसा पूजयामास भूरिश्रवसमाहवे ॥ ६६ ॥
विकर्षन्सात्वतश्रेष्ठं क्रीडमान इवाऽऽहवे।
संहर्षयति मां भूयः कुरूणां कीर्तिवर्धनः ॥ ६७ ॥
प्रवरं वृष्णिवीराणां यन्न हन्याद्धि सात्यकिम्।
महाद्विपमिवाऽरण्ये मृगेन्द्र इव कर्षति ॥ ६८ ॥
एवं तु मनसा राजन्पार्थः सम्पूज्य कौरवम्।
वासुदेवं महाबाहुर्जुनः प्रत्यभाषत ॥ ६९ ॥
सैन्धवे सक्तदृष्टित्वान्नैनं पश्यामि माधवम्।
एतत्त्वसुकरं कर्म यादवार्थे करोम्यहम् ॥ ७० ॥
इत्युक्त्वा वचनं कुर्वन्वासुदेवस्य पाण्डवः।
ततः क्षुरप्रं निशितं गाण्डीवे समयोजयत् ॥ ७१ ॥
पार्थबाहुविसृष्टः स महोल्केव नभश्च्युता।

अर्जुन! वृष्णि और अन्धकवंशियोंमें मुख्य सात्यकि इस समय सब भांतिसे भूरिश्रवाके वशमें पडे हैं वह तुम्हारे शिष्य हैं और धनुर्विद्यामें भी तुमसे कम नहीं हैं परन्तु भूरिश्रवा उन्हें थका हुआ पाके उनसे अधिक पराक्रम प्रकाशित करके सात्यकिके सत्यपराक्रमी नामको व्यर्थ करनेका उपाय कर रहे हैं॥ (६१–६५)

अर्जुन श्रीकृष्णके वचनको सुनकर मनहीमन इस प्रकार भूरिश्रवाकी प्रशंसा करने लगे॥ कौरवोंकी कीर्त्ति बढानेवाले भूरिश्रवा जो यदुवंशियों में श्रेष्ठ सात्यकिको खेलवाडकी भांति ग्रहण करके क्रीडा कर रहे हैं उससे मैं अत्यन्त आनन्दित हो रहा हूं॥ कुन्तीपुत्र महाबाहु अर्जुन इसी प्रकार भूरिश्रवाकी प्रशंसा करके श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण! मेरी दृष्टि सिन्धुराज जयद्रथकी ओर थी इसीसे मैंने सात्यकिको नहीं देखा। जो हो, इस समय मैं यदुकुलभूषण सात्यकिके वास्ते अत्यन्त कठिन कर्म करनेके लिये प्रवृत्त होऊंगा॥ (६६–७०)

महाराज! उस समय अर्जुनने ऐसा वचन कहकर श्रीकृष्णकी अनुमतिसे अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरास्त्र गाण्डीव धनुषपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखड्गं यज्ञशीलस्य साङ्गदं बाहुमच्छिनत् ॥७२॥ [५९५०]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भूरिश्रवोबाहुच्छेदे द्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४२ ॥

सञ्जय उवाच— स बाहुर्न्यपतद्भूमौ सखड्गः सशुभाङ्गदः ।
आदधज्जीवलोकस्य दुःखमद्भुतमुत्तमः ॥ १ ॥
प्रहरिष्यन्हृतो बाहुरदृश्येन किरीटिना ।
वेगेन न्यपतद्भूमौ पञ्चास्य इव पन्नगः ॥ २ ॥
स मोघं कृतमात्मानं दृष्ट्वा पार्थेन कौरवः ।
उत्सृज्य सात्यकिं क्रोधाद्गर्हयामास पाण्डवम् ॥ ३ ॥
भूरिश्रवा उवाच—नृशंसं बत कौन्तेय कर्मेदं कृतवानसि ।
अपश्यतो विषक्तस्य यन्मे बाहुमचिच्छिदः ॥ ४ ॥
किं नु वक्ष्यसि राजानं धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् ।
किं कुर्वाणो मया संख्ये हतो भूरिश्रवा रणे ॥ ५ ॥
इदमिन्द्रेण ते साक्षादुपदिष्टं महात्मना ।
अस्त्रं रुद्रेण वा पार्थ द्रोणेनाऽथ कृपेण वा ॥ ६ ॥

चढाया। अर्जुनकी भुजासे वह छूटा हुआ बाण आकाशसे टूटेहुए लुकके समान जाकर भूरिश्रवाके हस्तत्राण भूषित तलवारके सहित उनकी भुजाको काटकर पृथ्वीमें गिरा ॥ (७१–७२)[५९५०]

द्रोणपर्वमें एकसौ बियालिस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ तैंतालिस अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज! भूरिश्रवाकी सुन्दर कवचभूषित तलवारके सहित दहिनी भुजा अर्जुनके क्षुरास्त्रसे असावधानीमें कटनेसे सम्पूर्ण प्राणियोंके हृदयमें दुःख पैदा करके पांच सिरवाले सर्पके समान पृथ्वीमें गिर पडी ॥ जब भूरिश्रवाकी भुजा अर्जुनके अस्त्रसे कट गई, तब वह सात्यकिको परित्यागकर अर्जुनकी निन्दा करने लगे ॥ (१–३)

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! तुम्हारा यह कार्य निन्दनीय हुआ है, क्योंकि मैं दूसरेके सङ्ग युद्ध कर रहा था, उस ही समय तुमने विना जनाये मेरी भुजा काटी है ॥ जब धर्मपुत्र युधिष्ठिर तुमसे यह वृत्तान्त पूछेंगे, तब तुम उनको यही उत्तर दोगे, कि भूरिश्रवा सात्यकिके नाश करनेके निमित्त तैयार होकर उनका वध किया चाहते थे; इसी कारणसे मैंने भूरिश्रवाका वध किया है। जो हो, भला कहो तो सही, इस प्रकारसे अस्त्र चलानेका उपदेश तुमने महात्मा इन्द्र, रुद्र वा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ननु नामाऽस्त्रधर्मज्ञस्त्वं लोकेऽभ्यधिकः परैः।
सोऽयुध्यमानस्य कथं रणे प्रहृतवानसि ॥ ७ ॥
न प्रमत्ताय भीताय विरथाय प्रयाचते।
व्यसने वर्तमानाय प्रहरन्ति मनस्विनः ॥ ८ ॥
इदं तु नीचाचरितमसत्पुरुषसेवितम्।
कथमाचरितं पार्थ पापकर्म सुदुष्करम् ॥ ९ ॥
आर्येण सुकरं त्वाहुरार्यकर्म धनञ्जय।
अनार्यकर्म त्वार्येण सुदुष्करतमं भुवि ॥ १० ॥
येषु येषु नरव्याघ्र यत्र यत्र च वर्तते।
आशु तच्छीलतामेति तादिदं त्वयि दृश्यते ॥ ११ ॥
कथं हि राजवंश्यस्त्वं कौरवेयो विशेषतः।
क्षत्रधर्मादपक्रान्तः सुवृत्तश्चरितव्रतः ॥ १२ ॥
इदं तु यदतिक्षुद्रं वार्ष्णेयार्थे कृतं त्वया।
वासुदेवमतं नूनं नैतत्त्वय्युपपद्यते ॥ १३ ॥

द्रोणाचार्य अथवा कृपाचार्यके निकट कहां सीखा था? तुमने इस पृथ्वीके बीच अस्त्र-शस्त्रोंके युद्धमें समान अथवा अधिक धर्मात्मा होकर रणभूमिके बीच अपने साथ युद्ध न करनेवाले पुरुषके ऊपर कैसे शस्त्र चलाया? (४-७)

महात्मा लोग डरा हुआ, रथरहित, पागल, शरणागत और व्यसनमें फंसे हुए पुरुषोंके ऊपर कभी अस्त्र नहीं चलाते॥ पण्डित लोग कहा करते हैं, कि साधु लोग सदा सत्कार्योंका अनुष्ठान करते हैं कभी असत्कार्योंके करनेमें प्रवृत्त नहीं होते, परन्तु तुमने किस प्रकार नीच प्रकृतिवाले लोगोंकी भांति तथा असज्जनोंसे सेवित अत्यन्त पापी पुरुषकी भांति कार्य किया है। जो हो मैंने जान लिया कि मनुष्य जैसी सङ्गतमें रहता है थोडे ही समयके बीच उसके शरीरमें वैसे ही गुण उत्पन्न होजाते हैं॥ (८-११)

तुम्हारे इस कार्यको देखने हीसे यह वचन बोध हो रहा है, नहीं तो तुमने राजवंश विशेष करके कुरुकुलमें जन्म लेकर और स्वयं भी उत्तम कर्मोंका अनुष्ठान करनेवाले होकर किस प्रकार क्षत्रिय धर्मके विरुद्ध आचरण किया? मुझे मालूम होता है, कि कृष्णकी सम्मति से सात्यकिकी रक्षा करनेके वास्ते तुमने ऐसे निन्दित कर्मका अनुष्ठान किया है, क्योंकि यह संभव नहीं होता कि तुम ऐसे निन्दित कर्मको करोगे॥ (१२-१३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को हि नाम प्रमत्ताय परेण सह युद्ध्यते ।
ईदृशं व्यसनं दद्याद्यो न कृष्णसखा भवेत् ॥ १४ ॥
व्रात्याः संक्लिष्टकर्माणः प्रकृत्यैव च गर्हिताः ।
वृष्ण्यन्धकाः कथं पार्थ प्रमाणं भवता कृताः ॥ १५ ॥
एवमुक्तो रणे पार्थो भूरिश्रवसमब्रवीत् ।
अर्जुन उवाच— व्यक्तं हि जीर्यमाणोऽपि बुद्धिं जरयते नरः ॥ १६ ॥
अनर्थकमिदं सर्वं यत्त्वया व्याहृतं प्रभो ।
जानन्नेव हृषीकेशं गर्हसे मां च पाण्डवम् ॥ १७ ॥
संग्रामाणां हि धर्मज्ञः सर्वशास्त्रार्थपारगः ।
न चाऽधर्ममहं कुर्यां जानंश्चैव हि मुह्यसे ॥ १८ ॥
युद्ध्यन्ति क्षत्रियाः शत्रून्स्वैः स्वैः परिवृता नराः ।
भ्रातृभिः पितृभिः पुत्रैस्तथा सम्बन्धिबान्धवैः ॥ १९ ॥
वयस्यैरथ मित्रैश्च ते च बाहुं समाश्रिताः ।

कहो तो सही कृष्णके वशमें चलने वाले पुरुषको छोडकर और कौन पुरुष असावधान और दूसरेके सङ्ग युद्ध करने वाले मनुष्यको इस प्रकार व्यसन में फंसाता है ? वृष्णी और अन्धकवंशी सम्पूर्ण क्षत्री धर्मध्वजी तथा बिडालवृत्तिवाले हैं; वे वचन और प्रकारकी कहते हैं परन्तु कार्य दूसरी भांतिसे करते हैं। वे लोग स्वभाव हीसे निन्दनीय हैं, परन्तु तुम किस कारणसे ऐसे निन्दित वंशमें उत्पन्न हुए कृष्णकी आज्ञा पालन करनेमें तैयार हुए ?(१४-१५)

रणभूमिमें अर्जुनने भूरिश्रवाके ऐसे वचनको सुनकर उसे कहा, कि, ' मनुष्यके शरीर जीर्ण होनेसे उसकी बुद्धिमें भी जीर्णता आती है' यह कहावत तेरे विषयमें सत्यही प्रतीत होती है हे प्रभो ! इस समय आपने जो कुछ कहा है उसमें थोडा भी तथ्य नहीं है, देखो, आप संग्रामके सब धर्मों के जानने वाले हैं, तथा सर्व शास्त्रोंमें पारंगत ही हैं तथापि जानबूझ कर मेरे और हृषीकेश श्रीकृष्णके ऊपर वृथा दोषारोप कर रहे हैं । 'मैं किसी प्रकारसेभी अधर्मकार्य करनेवाला नहीं हूं,' यह आप जानते हो, तथापि इस समय कैसे मोहसे व्याप्त हुए हो ? बाहुबलके आसरेसे रहने वाले क्षत्रिय लोग जब शत्रुओंके साथ युद्धका समय आता है तब पिता, पुत्र, भाई, संबंधी, बांधव, मित्र, वयस्य आदि अपने परिवारकी सहायता लेकर ही युद्धमें प्रवृत्त होते हैं।(१६-२०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स कथं सात्यकिं शिष्यं सुखसम्बन्धिमेव च ॥ २० ॥
अस्मदर्थे च युद्धयन्तं त्यक्त्वा प्राणान्सुदुस्त्यजान् ।
मम बाहुं रणे राजन्दक्षिणं युद्धदुर्मदम् ॥ २१ ॥
न चाऽऽत्मा रक्षितव्यो वै राजन्रणगतेन हि ।
यो यस्य युजतेऽर्थेषु स वै रक्ष्यो नराधिप ॥ २२ ॥
तै रक्ष्यमाणैः स नृपो रक्षितव्यो महामृधे ।
यद्यहं सात्यकिं पश्ये वध्यमानं महारणे ॥ २३ ॥
ततस्तस्य वियोगेन पापं मेऽनर्थतो भवेत ।
रक्षितश्च मया यस्मात्तस्मात्क्रुध्यसि किं मयि॥ २४ ॥
यच्च मे गर्हसे राजन्नन्येन सह सङ्गतम् ।
अहं त्वया विनिकृतस्तत्र मे बुद्धिविभ्रमः ॥ २५ ॥
कवचं धुन्वतस्तुभ्यं रथं चाऽऽरोहतः स्वयम् ।
धनुर्ज्यां कर्षतश्चैव युद्धयतः सह शत्रुभिः ॥ २६ ॥
एवं रथगजाकीर्णे हयपत्तिसमाकुले ।

हमलोगोंके लिये अपने अत्यन्त प्यारे प्राणोंकी भी पर्वाह न करके युद्धमें प्रवृत्त हुआ यह सात्यकि मेरा प्रिय सम्बधी और शिष्य है, मैं तो उसे अपना दहिना हाथही मानता हूं। हे राजन्! जब अपने लिये कार्यकरने वाले पुरुष प्राण सङ्कट में पडते हैं, तब अपनी रक्षा न करके उन पुरुषोंकी ही रक्षा करनी चाहिये, यह रण गत पुरुषका कर्तव्य ही है, क्योंकि ऐसे रक्षित पुरुषोंसे ही राजाकी रक्षा हो सकती है। उस समय आप तो सात्यकि के वधके लिये उद्युक्त थे और सात्यकि भी चेतरहित अवस्थामें था, ऐसी स्थितिमें मैं समीप रहकर भी उसकी रक्षा न करके केवल देखता ही रहता तो क्या उसका वियोग होनेमें कोई देर लगता? और ऐसे होनेसे मुझे उससे बडे अनर्थावह दोषका भागी होना पडता॥ इस लिये मैंनें सात्यकिकी रक्षा की है इसमें मेरा कोई दोष नहीं है तौभी आप मुझपर क्रोध ही करते हैं॥ (२१–२४)

आप और भी एक दोष मुझपर लगाते हो, कि "मैं दूसरेके साथ अकेला ही युद्ध करता था उस समय तैंने अन्याय से मुझे विद्ध किया है" यह भी मूढताका ही परिणाम है ऐसा मैं मानता हूं। देखो आप कवचधारी होकर रथमें बैठे थे और धनुष्यको सज्ज करके खींचते हुए शत्रुओं के साथ युद्धभी कररहे थे, मैंने तो ऐसीही अवस्थामें आपको विद्ध किया है। तथा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहनादोद्धतरवे गम्भीरे सैन्यसागरे ॥ २७ ॥
स्वैः परैश्च समेतेभ्यः सात्वतेन च सङ्गमे ।
एकस्यैकेन हि कथं संग्रामः संभविष्यति ॥ २८ ॥
बहुभिः सह सङ्गम्य निर्जित्य च महारथान् ।
श्रान्तश्च श्रान्तवाहश्च विमनाः शस्त्रपीडितः ॥ २९ ॥
ईदृशं सात्यकिं संख्ये निर्जित्य च महारथम् ।
अधिकत्वं विजानीषे स्ववीर्यवशमागतम् ॥ ३० ॥
यदिच्छसि शिरश्चाऽस्य असिना हन्तुमाहवे ।
तथा कृच्छ्रगतं चैव सात्यकिं कः क्षमिष्यति ॥ ३१ ॥
त्वं वै विगर्हयाऽऽत्मानमात्मानं यो न रक्षसि ।
कथं करिष्यसे वीर यो वा त्वां संश्रयेज्जनः ॥ ३२ ॥

सञ्जय उवाच— एवमुक्तो महाबाहुर्यूपकेतुर्महायशाः ।
युयुधानं समुत्सृज्य रणे प्रायमुपाविशत् ॥ ३३ ॥
शरानास्तीर्य सव्येन पाणिना पुण्यलक्षणः ।

और भी देखो, पैदल, रथ, हाथी, और घोडोंसे भरी हुई, सिंहनादके शब्दसे व्याप्त, उछलित समुद्रके समान दीखने वाली इस सेनाके योद्धा लोग एक दूसरेके साथ संगत होकर जोरसे युद्धकर रहे थे आपका भी सात्यकिके साथ युद्ध होरहा था तो ऐसे ही संग्रामको 'एकका एकके साथ संग्राम' ऐसा कैसा कहा जा सकता है ? (२५-२८)

उस समय यह सात्यकि भी अनेक महारथियोंके साथ युद्धकर और युद्धमें उनको जीतकर थक गया था, तथा उसके घोडे भी थके थे, और अनेक शस्त्रोंके घावसे पीडित होनेसे उसका मन भी त्रस्त हुआ था, आप तो ऐसे सात्यकिको ही जीतकर अपनेको इससे अधिक पराक्रमी समझते हो और चेतरहित हुए उसके शिरको खड्गसे काटनेमें उद्यत हो रहे थे, तो आपके ऐसे कर्मको कौन सहेगा ? इस समय तुम दूसरेकी निंदा करनेकी अपेक्षा स्वरक्षणमें असमर्थ हुए अपनी ही निन्दा करनेमें योग्य हो क्योंकि स्वरक्षामें असमर्थ पुरुष अपने आश्रितोंकी रक्षा कैसी करेगा ? (२९—३२)

सञ्जय बोले, महायशस्वी महाबाहु यूपध्वज भूरिश्रवा अर्जुनके ऐसे वचन सुनकर सात्यकिको छोडकर प्रायोपवेशन के लिये बैठगये । उन पुण्यात्मा राजा भूरिश्रवाने ब्रह्मलोकमें जानेकी अभिलाष करके बायें हाथसे दर्भोंको बिछाकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यियासुर्ब्रह्मलोकाय प्राणान्प्राणेष्वथाऽऽजुहोत्॥ ३४ ॥
सूर्ये चक्षुः समाधाय प्रसन्नं सलिले मनः ।
ध्यायन्महोपनिषदं योगयुक्तोऽभवन्मुनिः ॥ ३५ ॥
ततः स सर्वसेनायां जनः कृष्णधनञ्जयौ ।
गर्हयामास तं चापि शशंस पुरुषर्षभम् ॥ ३६ ॥
निन्द्यमानौ तथा कृष्णौ नोचतुः किञ्चिदप्रियम् ।
ततः प्रशस्यमानश्च नाऽहृष्यद्यूपकेतनः ॥ ३७ ॥
तांस्तथावादिनो राजन्पुत्रांस्तव धनञ्जयः ।
अमृष्यमाणो मनसा तेषां तस्य च भाषितम् ॥ ३८ ॥
असंक्रुद्धमना वाचः स्मारयन्निव भारत ।
उवाच पाण्डुतनयः साक्षेपमिव फाल्गुनः ॥ ३९ ॥
मम सर्वेऽपि राजानो जानन्त्येव महाव्रतम् ।
न शक्यो मामको हन्तुं यो मे स्याद्वाणगोचरे॥ ४० ॥
यूपकेतो निरीक्ष्यैतन्न मामर्हसि गर्हितुम् ।
न हि धर्ममविज्ञाय युक्तं गर्हयितुं परम् ॥ ४१ ॥

वायुमें प्राणोंका हवन करने लगा और सूर्यकी ओर दृष्टि करके प्रसन्नता के सहित अपना चित्त चन्द्रमामें लगाया और मौनव्रत धारणकर योगकी क्रिया से उपनिषदमें कहे हुए ब्रह्मका ध्यान करने लगे ॥ (३३-३५)

तिसके अनन्तर उस व्यूहबद्ध सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग कृष्ण अर्जुनकी निन्दा और पुरुषश्रेष्ठ भूरिश्रवाकी प्रशंसा करने लगे, परन्तु कृष्ण और अर्जुनने अपनी निन्दा सुनकर कुछ अप्रिय वचन नहीं कहा और भूरिश्रवा भी अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न नहीं हुए॥ ३६-३७

महाराज ! तुम्हारे पुत्र उसी भांति निन्दा करने लगे, तब उन लोगोंके और भूरिश्रवाके कहे हुए वचन अर्जुन से न सहे गये। वह उन लोगोंको पहिले सम्पूर्ण वृत्तान्तोंको स्मरण कराकर आक्षेप करने लगे—इस बातको सम्पूर्ण राजा लोग जानते हैं, कि युद्धिभूमिमें मेरा यह एक विशेष नियम है, कि संग्राम करते हुए मेरी ओरका कोई पुरुष मेरे बाण पहुंचनेके मार्गमें स्थित रहेगा तो उसका कोई भी पुरुष वध न कर सकेगा। (३८—४०)

हे भूरिश्रवा ! इस नियमको अच्छी भांति समझ कर मेरा तिरस्कार करना तुम्हें योग्य नहीं है, क्योंकि यथार्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्तशस्त्रस्य हि रणे वृष्णिवीरं जिघांसतः ।
यदहं बाहुमच्छैत्सं न स धर्मो विगर्हितः ॥ ४२ ॥
न्यस्तशस्त्रस्य बालस्य विरथस्य विवर्मणः ।
अभिमन्योर्वधं तात धार्मिकः को नु पूजयेत् ॥ ४३ ॥
एवमुक्तः स पार्थेन शिरसा भूमिमस्पृशत् ।
पाणिना चैव सव्येन प्राहिणोदस्य दक्षिणम् ॥ ४४ ॥
एतत्पार्थस्य तु वचस्ततः श्रुत्वा महाद्युतिः ।
यूपकेतुर्महाराज तूष्णीमासीदवाङ्मुखः ॥ ४५ ॥
अर्जुन उवाच— या प्रीतिर्धर्मराजे मे भीमे च बलिनां वरे ।
नकुले सहदेवे च सा मे त्वयि शलाग्रज ॥ ४६ ॥
मया त्वं समनुज्ञातः कृष्णेन च महात्मना ।
गच्छ पुण्यकृताँल्लोकाञ्छिबिरौशीनरो यथा ॥ ४७ ॥
वासुदेव उ०-ये लोका मम विमलाः सकृद्विभाता ब्रह्माद्यैः सुरवृषभैरपीप्स्यमाणाः

धर्मको विना जाने कभी किसीकी निन्दा न करनी चाहिये ॥ तुम शस्त्रधारी होकर सात्यकिके नाश करनेको तैय्यार हुए थे, उस समय जो मैंने तुम्हारी भुजा काट डाली उसमें मेरा कौनका धर्म — विरुद्ध कर्म हुआ है ? परन्तु कहो तो सही शस्त्र, रथ और वर्मसे रहित बालक अभिमन्युके वधके विषयमें कौन धर्मात्मा पुरुष प्रशंसा करेगा ? (४१–४३)

भूरिश्रवाने अर्जुनके वचनको सुन कर अपने मस्तकसे पृथ्वीको स्पर्श करके कडवी वचनोंके निमित्त अर्जुनसे क्षमा मांगी और बांई भुजासे उस कटी हुई अपनी दहिनी भुजाको उठाकर अर्जुनकी ओर फेंक कर संकेतसे यह जनाया कि अर्जुनने अन्यायपूर्वक मेरी दहनी भुजा नहीं काटी है यह कार्य धर्म युक्त हुआ है । तिसके अनन्तर महातेजस्वी भूरिश्रवाने अर्जुनके वचन समाप्त होने पर संकेतसे उन्हें ऐसाही बझाकर मौन व्रत धारण कर सिर नीचा कर लिया॥४४-४५

तब महात्मा अर्जुन यह वचन बोले, हे भूरिश्रवा ! धर्मराज युधिष्ठिर और बलवानोंमें अग्रणी भीमसेन नकुल तथा सहदेवके ऊपर मेरी जैसी प्रीति है तुम्हारे ऊपर भी वैसा ही स्नेह है इससे उशीनर तनय शिबिराज जिस लोकमें गये हैं तुम भी मेरी और महात्मा कृष्णकी अनुमतिसे उसी लोकमें गमन करो ॥ (४६–४७)

जब अर्जुनने ऐसा वचन कहा तब श्रीकृष्ण भी कहने लगे । हे भूरिश्रवा !

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तान्क्षिप्रं व्रज सततामिहोत्रयाजिन्मत्तुल्यो भव गरुडोत्तमाङ्गयानः॥ ४८॥
सञ्जय उवाच— उत्थितः स तु शैनेयो विमुक्तः सौमदत्तिना।
खड्गमाहाय चिच्छित्सुः शिरस्तस्य महात्मनः॥ ४९॥
निहतं पाण्डुपुत्रेण प्रसक्तं भूरिदक्षिणम्।
इयेष सात्यकिर्हन्तुं शलाग्रजमकल्मषम् ॥ ५०॥
निकृत्तभुजमासीनं छिन्नहस्तमिव द्विपम्।
क्रोशतां सर्वसैन्यानां निन्द्यमानः सुदुर्मनाः॥ ५१॥
वार्यमाणः स कृष्णेन पार्थेन च महात्मना।
भीमेन चक्ररक्षाभ्यामश्वत्थाम्ना कृपेण च ॥ ५२॥
कर्णेन वृषसेनेन सैन्धवेन तथैव च।
विक्रोशतां च सैन्यानामवधीत्तं धृतव्रतम् ॥ ५३॥
प्रायोपविष्टाय रणे पार्थेन च्छिन्नबाहवे।
सात्यकिः कौरवेयाय खड्गेनाऽपाहरच्छिरः ॥ ५४॥
नाऽभ्यनन्दन्त सैन्यानि सात्यकिं तेन कर्मणा।

तुमने अग्निमें आहुति देकर सदा ही देवतोंको तृप्त किया है, इससे तुम चतुर्भुजी मुर्त्ति होकर गरुडके ऊपर चढके ब्रह्माआदि श्रेष्ठ देवताओंके पाने योग्य मेरे पवित्र धाममें गमन करो। (४८)

सञ्जय बोले, महाराज! उस समय शिनिपौत्र सात्यकि भूरिश्रवाके हाथसे छूट गये और उठ कर उनके सिर काटनेकी इच्छासे तलवार ग्रहण किया। बहुतसी दक्षिणा देनेवाले अर्जुनके बाणसे मरे हुएके समान योगमें आसक्त भूरिश्रवा भुजा कटनेसे सूण्ड कटे हुए हाथी की भांति बैठे थे, तौभी सात्यकिने उस निरपराधी पुरुषके प्राण नाश करनेकी इच्छा किया। (४९-५१)

सेनाके सम्पूर्ण पुरुष सात्यकिको ऐसे कार्यमें प्रवृत्त होते देख ऊंचे स्वरसे पुकार कर उसकी निन्दा करने लगे और महात्मा कृष्ण, अर्जुन, भीमसेन, युधामन्यु, उत्तमौजा, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, वृषसेन और सिन्धुराज जयद्रथ ये सब कोई सात्यकिको निवारण करने लगे, परन्तु सात्यकिने किसीका भी वचन न सुनकर उस योगमें आसक्त भूरिश्रवाका सिर काट लिया। (५१-५३)

महाराज! जब उस समय सात्यकिने अर्जुनके बाणोंसे भुजा कटे और योगयुक्त चित्तसे पृथ्वीपर बैठे हुए भूरिश्रवाके सिरपर तलवारके प्रहार किया, तब उस समय सेनाके बीच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जुनेन हतं पूर्वं यज्जघान कुरूद्वहम् ॥ ५५ ॥
सहस्राक्षसमं चैव सिद्धचारणमानवाः ।
भूरिश्रवसमालोक्य युद्धे प्रायगतं हतम् ॥ ५६ ॥
अपूजयन्त तं देवा विस्मितास्तेऽस्य कर्मभिः ।
पक्षवादांश्च सुबहून्प्रावदंस्तव सैनिकाः ॥ ५७ ॥
न वार्ष्णेयस्याऽपराधो भवितव्यं हि तत्तथा ।
तस्मान्मन्युर्न वः कार्यः क्रोधो दुःखतरो नृणाम्॥५८॥
हन्तव्यश्चैव वीरेण नाऽत्र कार्या विचारणा ।
विहितो ह्यस्य धात्रैव मृत्युः सात्यकिराहवे ॥ ५९ ॥

सात्यकिरुवाच— न हन्तव्यो न हन्तव्य इति यन्मां प्रभाषत ।
धर्मवादैरधर्मिष्ठा धर्मकंचुकमास्थिताः ॥ ६० ॥
यदा बालः सुभद्रायाः सुतः शस्त्रविनाकृतः ।
युष्माभिर्निहतो युद्धे तदा धर्मः क्व वो गतः ॥ ६१ ॥
मया त्वेतत्प्रतिज्ञातं क्षेपे कस्मिंश्चिदेव हि ।

किसी पुरुषने भी सात्यकिके इस निन्दित कर्मकी प्रशंसा नहीं किया, क्योंकि उन्होंने अर्जुनके बाणोंसे मरे हुएके समान भूरिश्रवाका वध किया । देवता सिद्ध चारण और मनुष्योंने इन्द्रके समान भूरिश्रवाको युद्धभूमिमें योग-युक्त चित्तसे बैठे और मरे हुए देखकर उनके कार्यसे विस्मित होकर प्रशंसा करने लगे । (५४—५७)

अनन्तर तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भी आपसमें ऐसे वचन कहने लगे, जो होनेवाला था सो हुआ है इसमें सात्यकिका कुछ अपराध नहीं है; इस विषयमें हम लोगोंको क्रोध करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि क्रोध ही मनुष्यके दुःखका मूल है। विधाताने सात्यकिकोही भूरिश्रवाकी मृत्युरूपी किया था इससे उसीके हाथसे उनकी जरूर मृत्यु हुई;अब इस विषयमें कुछभी शोक विचारकी जरूरत नहीं है। (५७–५९)

इन सम्पूर्ण वचनोंको सुन कर उस समय सात्यकि बोले, हे अधार्मिक कौरव लोगो ! जो धर्मका नाम लेकर "भूरिश्रवा का नाश मत करो, भूरिश्रवा का नाश मत करो" ऐसा वचन कहकर मुझे धर्मका उपदेश कर रहे हो; परन्तु कहो तो सही जब तुम सब लोगोंने मिलकर शस्त्ररहित सुभद्रापुत्र अभिमन्युको युद्धभूमिमें मारा था, उस समय तुम्हारा धर्म कहां था । परन्तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो मां निष्पिष्य संग्रामे जीवन्हन्यात्पदा रुषा॥६२॥
स मे वध्यो भवेच्छत्रुर्यद्यपि स्यान्मुनिव्रतः।
चेष्टमानं प्रतीघाते सभुजं मां सचक्षुषः ॥ ६३ ॥
मान्यध्वं मृत इत्येवमेतद्वो बुद्धिलाघवम्।
युक्तो ह्यस्य प्रतीघातः कृतो मे कुरुपुङ्गवाः ॥ ६४ ॥
यत्तु पार्थेन मां दृष्ट्वा प्रतिज्ञामभिरक्षता।
सखड्गोऽस्य हृतो बाहुरेतेनैवाऽस्मि वञ्चितः ॥ ६५ ॥
भवितव्यं हि यद्भावि दैवं चेष्टयतीव च।
सोऽयं हतो विमर्देऽस्मिन्किमत्राऽधर्मचेष्टितम् ॥ ६६ ॥
अपि चाऽयं पुरा गीतः श्लोको वाल्मीकिना भुवि।
न हन्तव्याः स्त्रिय इति यद्भवीषि प्लवङ्गम ॥ ६७ ॥
सर्वकालं मनुष्येण व्यवसायवता सदा।
पीडाकरममित्राणां यत्स्यात्कर्तव्यमेव तत् ॥ ६८ ॥

सञ्जय उवाच— एवमुक्ते महाराज सर्वे कौरवपुङ्गवाः।

मैंने किसी समय प्रतिज्ञा किया कि जो कोई मुझे पटक कर लातसे मारेगा वह शत्रु यदि मुनियोंका व्रत अवलम्बन करे तौ भी मैं उसका वध करूंगा। ५९-६३

तुम लोगोंने जो मुझे घावरहित और भूरिश्रवाको चोटसे बचानेमें यत्नवान् देखकर भी मरा हुआ समझा था वह तुम्हारी बुद्धिकी लघुताही बोध हो रही है। हे कुरुसेनाके योद्धा लोगो! भूरिश्रवाका वध करना मेरा उचित कार्य हुआ है और महावीर अर्जुनने जो मुझे वैसी अवस्थामें देखकर भूरिश्रवाकी भुजा काट डाली उससे मैं ही ठगा गया हूं; जो हो कोई होनहारका खण्डन करनेमें समर्थ नहीं हो सकता; उसे पूर्ण करनेके निमित्त दैव ही यत्नवान् होता है; इससे भूरिश्रवाका वध करनेसे मुझे किसी प्रकारभी अधर्म नहीं होसकता। ६३-६६

इस विषयमें पहिले समय महर्षि वाल्मीकिकी बनाई हुई रामायण इतिहासमें यह वर्णन है कि जिस समय लङ्कापति रावण माया सीता काटनेको तैयार हुआ उस समय महावीर हनुमानने स्त्री-हत्या करनेसे उसे निषेध किया, तब रावणने यह उत्तर दिया था; अरे बन्दर! तू स्त्री हत्या करनेसे मुझे निषेध करता है परन्तु जिस प्रकार हो सके व्यवसायी पुरुषने सब काल शत्रुको पीडा पहुंचाना योग्य है॥ (६७-६८)

सञ्जय बोले, महाराज! जब सात्यकि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न स्म किञ्चिदभाषन्त मनसा समपूजयन् ॥ ६९ ॥
मन्त्राभिपूतस्य महाध्वरेषु यशस्विनो भूरिसहस्रदस्य च ।
मुनेरिवाऽरण्यगतस्य तस्य न तत्र कश्चिद्बुधमभ्यनन्दत् ॥ ७० ॥
सुनीलकेशं वरदस्य तस्य शूरस्य पारावतलोहिताक्षम् ।
अश्वस्य मेध्यस्य शिरो निकृत्तं न्यस्तं हविर्धानमिवाऽन्तरेण ॥ ७१ ॥
स तेजसा शस्त्रकृतेन पूतो महाहवे देहवरं विसृज्य ।
आक्रामदूर्ध्वं वरदो वराहों व्यावृत्य धर्मेण परेण रोदसी ॥७२॥ [६०२२]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि भूरिश्रवोवधे त्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच—अजितो द्रोणराधेयविकर्णकृतवर्मभिः ।
तीर्णः सैन्यार्णवं वीरः प्रतिश्रुत्य युधिष्ठिरे ॥ १ ॥
स कथं कौरवेयेण समरेष्वनिवारितः ।
निगृह्य भूरिश्रवसा बलाद्भुवि निपातितः ॥ २ ॥

ने ऐसा वचन कहा, तब कौरवोंकी ओरके मुख्य मुख्य योद्धाओंने कुछ भी उत्तर न दिया, केवल मन ही मन सब भूरिश्रवाकी प्रशंसा करने लगे॥ वनवासी मुनियोंकी भाँति यज्ञ करनेवाले तथा सहस्रों स्वर्ण मुद्रा दान करनेवाले महायशस्वी भूरिश्रवाके वधके विषयमें किसीने सात्यकिकी बडाई नहीं किया; क्योंकि वह पराक्रमी भूरिश्रवा याचकोंकी सम्पूर्ण कामना पूरी करते थे ॥ उस समय सुन्दर और काले केशोंसे युक्त पारावतके समान लालनेत्रके सहित उनका सिर युद्धभूमिमें गिरकर इस प्रकार शोभित होने लगा, जैसे आहुति देनेके निमित्त यज्ञमें कटे हुए घोडेका सिर शोभित होता है ॥ महाराज! इसी प्रकार सम्पूर्ण याचकोंकी कामना पूरी करनेवाले सब पुरुषोंमें माननीय भूरिश्रवा युद्धभूमिमें शस्त्रकी चोटसे मरकर पवित्र हुए, और शरीर त्याग कर अपने तेजसे पृथ्वी आकाशको अतिक्रम करते हुए पुण्य और परम धर्मसे उपार्जित स्वर्ग लोकमें गमन किया॥ (६९–७२)

द्रोणपर्वमें एकसौ तैंतालिस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ चौवालिस अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जिस महावीर सात्यकिने युधिष्ठिरके निकट प्रतिज्ञा कर युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य कर्ण विकर्ण और कृतकर्मा आदि महारथियोंको पराजित करके समुद्रके समान कुरुसेनासे पार हुआ और जो युद्धमें सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंसे अजेय है उसे भूरिश्रवा किस कारणसे बलपूर्वक पकडकर पृथ्वीमें गिरानेमें समर्थ हुए? १–२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— शृणु राजन्निहोत्पत्तिं शैनेयस्य यथा पुरा।
यथा च भूरिश्रवसो यत्र ते संशयो नृप ॥ ३ ॥
अत्रेः पुत्रोऽभवत्सोमः सोमस्य तु बुधः स्मृतः।
बुधस्यैको महेन्द्राभः पुत्र आसीत्पुरूरवाः ॥ ४ ॥
पुरूरवस आयुस्तु आयुषो नहुषः सुतः।
नहुषस्य ययातिस्तु राजा देवर्षिसम्मतः ॥ ५ ॥
ययातेर्देवयान्यां तु यदुर्ज्येष्ठोऽभवत्सुतः।
यदोरभूदन्ववाये देवमीढ इति स्मृतः ॥ ६ ॥
यादवस्तस्य तु सुतः शूरस्त्रैलोक्यसंमतः।
शूरस्य शौरिर्नृवरो वसुदेवो महायशाः ॥ ७ ॥
धनुष्यनवरः शूरः कार्तवीर्यसमो युधि।
तद्वीर्यश्चापि तत्रैव कुले शिनिरभून्नृप ॥ ८ ॥
एतस्मिन्नेव काले तु देवकस्य महात्मनः।
दुहितुः स्वयंवरे राजन्सर्वक्षत्रसमागमे ॥ ९ ॥
तत्र वै देवकीं देवीं वसुदेवार्थमाशु वै।
निर्जित्य पार्थिवान्सर्वान्रथमारोपयच्छिनिः ॥ १० ॥

सञ्जय बोले, महाराज! शिनिपौत्र सात्यकि और भूरिश्रवाकी जिस भांतिसे उत्पत्ति हुई है और आपको जो सन्देह हुआ है वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मैं वर्णन करता हूं आप सुनिये ॥ अत्रि महर्षिके पुत्र सोम हुए उनके पुत्र बुध, बुधके पुत्र इन्द्रके समान राजा पुरूरवा उत्पन्न हुए; पुरूरवाके पुत्र आयु, आयुके पुत्र नहुष, नहुषके पुत्र देवतोंके समान राजर्षि ययाति हुए और ययातिके जेठे पुत्र देवयानीके गर्भसे यदु उत्पन्न हुए। उस ही यदुके वंशमें प्रसिद्ध देवमीढकी उत्पत्ति हुई ॥ देवमीढके पुत्र तीनों लोकमें सम्मान पाने योग्य शूरसेन हुए उनके पुत्र पुरुषश्रेष्ठ महायशस्वी वसुदेव हुए ॥ (३—७)

महात्मा शूरसेन युद्धमें कार्त्तवीर्य अर्जुनके समान धनुर्विद्याके जाननेवाले थे। उस ही वंशमें उन्हींके समान पराक्रमी शिनि नाम एक महात्मा पुरुष उत्पन्न हुआ॥ उसी समयमें महात्मा राजा देवककी कन्याका स्वयंवर था, उस स्वयंवरमें पृथ्वीके सम्पूर्ण राजा इकट्ठे हुए थे, उन सम्पूर्ण राजाओंके बीच जाकर महात्मा शिनिने वसुदेवके वास्ते देवकीको हरके अपने रथमें बैठा लिया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तां दृष्ट्वा देवकीं शूरो रथस्थां पुरुषर्षभ ।
नाऽमृष्यत महातेजाः सोमदत्तः शिनेर्नृप ॥ ११ ॥
तयोर्युद्धमभूद्राजन्दिनार्धं चित्रमद्भुतम् ।
बाहुयुद्धं सुबलिनोः प्रसक्तं पुरुषर्षभः ॥ १२ ॥
शिनिना सोमदत्तस्तु प्रसह्य भुवि पातितः ।
असिमुद्यम्य केशेषु प्रगृह्य च पदा हतः ॥ १३ ॥
मध्ये राजसहस्राणां प्रेक्षकाणां समन्ततः ।
कृपया च पुनस्तेन स जीवेति विसर्जितः ॥ १४ ॥
तदवस्थः कृतस्तेन सोमदत्तोऽथ मारिष ।
प्रासादयन्महादेवममर्षवशमास्थितः ॥ १५ ॥
तस्य तुष्टो महादेवो वराणां वरदः प्रभुः ।
वरेण च्छन्दयामास स तु वव्रे वरं नृपः ॥ १६ ॥
पुत्रमिच्छामि भगवन्यो निपात्य शिनेः सुतम् ।
मध्ये राजसहस्राणां पदा हन्याच्च संयुगे ॥ १७ ॥
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सोमदत्तस्य पार्थिव ।

और वहांपर सम्पूर्ण राजाओंको पराजित किया ॥ (८—१०)

महाराज ! महातेजस्वी राजा सोमदत्तने देवकीको शिनिके रथपर देख सहन नहीं किया, उन दोनों महाबलवान् वीरोंका दोपहर दिनके समय अत्यन्त आश्चर्यमय युद्ध हुआ; परन्तु शिनिने चारों ओर युद्धभूमिमें स्थित राजाओंके संमुखमें ही सोमदत्तको उठाकर पृथ्वीपर पटक दिया और एक हाथसे उनका केश पकड दूसरे हाथमें तलवार लिए हुए उनके छातीमें लात मारा ॥ तिसके अनन्तर तुम जीते रहो ऐसा कहके उन्हें छोड दिया ॥ (११—१४)

महाराज ! सोमदत्त राजाओंके सम्मुख इस प्रकार अवमानित होकर क्रोधपूर्वक वहांसे आकर तपस्या करने लगे; और अपनी तपस्यासे महादेवको प्रसन्न किया । भक्तोंको वरदान देनेवाले देवोंके देव महादेवने उनकी तपस्यासे सन्तुष्ट होकर उन्हें वर देना चाहा, तब सोमदत्तने यह वरदान मांगा, हे भगवन् ! मैं एक ऐसे पुत्रकी इच्छा करता हूं जो युद्ध भूमि में सहस्रों राजाओं के सम्मुख में शिनिके सन्तानको पृथ्वीपर पटकके लात मारे ॥ (१५-१७)

महादेव सोमदत्तके इस वचनको सुनकर ऐसा ही होगा, यह वचन कहके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवमस्त्विति तत्रोक्त्वा स देवोऽन्तरधीयत ॥ १८ ॥
स तेन वरदानेन लब्धवान्भूरिदक्षिणम् ।
अपातयच्च समरे सौमदत्तिः शिनेः सुतम् ॥ १९ ॥
पश्यतां सर्वसैन्यानां पदा चैनमताडयत् ।
एतत्ते कथितं राजन्यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ २० ॥
नहि शक्यो रणे जेतुं सात्वतो मनुजर्षभैः ।
लब्धलक्ष्याश्च संग्रामे बहुशश्चित्रयोधिनः ॥ २१ ॥
देवदानवगन्धर्वान्विजेतारो ह्यविस्मिताः ।
स्ववीर्यविजये युक्ता नैते परपरिग्रहाः ॥ २२ ॥
न तुल्यं वृष्णिभिरिह दृश्यते किञ्चन प्रभो ।
भूतं भव्यं भविष्यच्च बलेन भरतर्षभ ॥ २३ ॥
न ज्ञातिमवमन्यन्ते वृद्धानां शासने रताः ।
न देवासुरगन्धर्वा न यक्षोरगराक्षसाः ॥ २४ ॥
जेतारो वृष्णिवीराणां किं पुनर्मानवा रणे ।

वहां ही अन्तर्द्धान होगये। महाराज! सोमदत्तने महादेवके वरप्रभावसे अनेक दक्षिणा देनेवाले भूरिश्रवा ऐसा पुत्र पाया था; और इस ही कारणसे भूरिश्रवाने अनेक राजाओंके सम्मुखहीमें सात्यकिको पृथ्वीमें पटककर उनकी छातीमें लात मारा था; नहीं तो पृथ्वीके बीच ऐसा कोई भी पुरुष नहीं है जो सात्यकिको पराजित करे। महाराज! तुमने जो विषय पूछा था, मैंने उस वृत्तान्त को तुम्हारे समीप में वर्णन किया। (१८–२१)

संग्राममें सम्पूर्ण वृष्णिवंशी लक्ष्यवेधनेवाले और चित्रयोधी हैं, युद्धभूमिमें वे लोग भयभीत नहीं होते, वे सब संग्राममें देवता दानव और गन्धर्वोंको भी जीत सकते हैं; युद्धभूमिमें वे किसीकी सहायता नहीं चाहते, वे सब कोई अपने पराक्रमके अनुसार विजयकी इच्छा करते हैं। हे नरनाथ वृष्णिवंशियोंके सङ्ग दूसरे पुरुषकी उपमा दीजावे ऐसा मैं पृथ्वीके बीच किसीको नहीं देखता। उन लोगोंके समान पराक्रमी पहले भी कोई नहीं था न भविष्यहीमें होगा और न इस ही समय कोई उपस्थित है॥ (२१-२३)

वे सब कोई वृद्ध पुरुषोंकी आज्ञामें चलनेवाले हैं वे लोग कदापि अपने जातिके पुरुषोंका अपमान नहीं करते। युद्धभूमिमें मनुष्योंकी बात तो दूर रहे उन लोगोंके देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मद्रव्ये गुरुद्रव्ये ज्ञातिस्वे चाप्यहिंसकाः ॥ २५ ॥
एतेषां रक्षितारश्च ये स्युः कस्याश्चिदापदि ।
अर्थवन्तो न चोत्सिक्ता ब्रह्मण्याः सत्यवादिनः ॥ २६ ॥
समार्थाञ्ज्ञाऽवमन्यन्ते दीनानभ्युद्धरन्ति च ।
नित्यं देवपरा दान्तास्त्रातारश्चाऽविकत्थनाः ॥ २७ ॥
तेन वृष्णिप्रवीराणां चक्रं न प्रतिहन्यते ।
अपि मेरुं वहेत्कश्चित्तरेद्वा मकरालयम् ॥ २८ ॥
न तु वृष्णीप्रवीराणां समेत्याऽन्तं व्रजेन्नृप ।
एतत्ते सर्वमाख्यातं यत्र ते संशयः प्रभो ।
कुरुराज नरश्रेष्ठ तव व्यपनयो महान् ॥ २९ ॥ [६०५१]

इति श्रीमहा० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि सात्यकिप्रशंसायां चतुश्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४४ ॥

धृतराष्ट्र उवाच—तद्वत्स्थे हते तस्मिन्भूरिश्रवसि कौरवे ।
यथा भूयोऽभवद्युद्धं तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ १ ॥

सर्प और राक्षस आदि कोई भी पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं ॥ उन लोगोंके विषयमें ब्राह्मणोंका धन और गुरुधनकी बात तो दूर रहे, वे लोग अपने जातिवालोंकेभी धनपर इर्षा प्रकाश नहीं करते। और ब्राह्मण तथा जातिके पुरुष जब किसी प्रकारकी विपतमें फंसते हैं तब वे लोग सब भांतिसे उनकी रक्षा किया करते हैं। वे लोग ऐश्वर्यवान होकर भी गर्व नहीं करते वे सबही ब्राह्मणोंमें निष्ठा करनेवाले और सत्यवादी हैं ॥ (२४-२६)

वे लोग समर्थ होकरभी किसी पुरुषका अवमान नहीं करते और दीन दुःखियोंको सदा विपतसे बचाते रहते हैं। वे सदा देवतोंमें निष्ठावान् जितेन्द्रिय हैं। वे लोग अपने मुहसे अपनी बडाई नहीं करते, इस ही निमित्त पृथ्वीके बीच वृष्णिवंशियोंका प्रभाव कहीं निष्फल नहीं होता। यदि कोई पुरुष कभी सुमेरु पर्वतके उठाने और अपार समुद्रको तरनेमें समर्थ हो सके तौभी युद्धभूमिमें वृष्णिवंशियोंको पराजित नहींकर सकेगा, हे राजेन्द्र ! आपने जिस विषयमें सन्देह किया था वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मैंने वर्णन किया परन्तु इन पुरुषोंके नाशके मूल आप ही हैं। (२७-२९) [६०५१]

द्रोणपर्वमें एकसौ चौवालिस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ पैंतालिस अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! कुरुवंशीय भूरिश्रवा जब इस प्रकारसे मारे गये तब किस किस प्रकार युद्ध हुआ था, वह मेरे समीप वर्णन करो ॥ (१)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— भूरिश्रवसि संक्रान्ते परलोकाय भारत।
वासुदेवं महाबाहुरर्जुनः समचूचुदत् ॥ २ ॥
चोदयाऽश्वान् भृशं कृष्ण यतो राजा जयद्रथः।
श्रूयते पुण्डरीकाक्ष त्रिषु धर्मेषु वर्तते ॥ ३ ॥
प्रतिज्ञां सफलां चापि कर्तुमर्हसि मेऽनघ।
अस्तमेति महाबाहो त्वरमाणो दिवाकरः ॥ ४ ॥
एतद्धि पुरुषव्याघ्र महदभ्युद्यतं मया।
कार्यं संरक्ष्यते चैष कुरुसेनामहारथैः ॥ ५ ॥
यथा नाऽभ्येति सूर्योऽस्तं यथा सत्यं भवेद्वचः।
चोदयाऽश्वांस्तथा कृष्ण यथा हन्यां जयद्रथम् ॥ ६ ॥
ततः कृष्णो महाबाहू रजतप्रतिमान्हयान्।
हयज्ञश्चोदयामास जयद्रथवधं प्रति ॥ ७ ॥
तं प्रयान्तममोघेषुमुत्पतद्भिरिवाऽऽशुगैः।
त्वरमाणा महाराज सेनामुख्याः समाद्रवन् ॥ ८ ॥

सञ्जय बोले, महाराज! जब भूरिश्रवाने परलोकमें गमन किया तब महाबाहु अर्जुन श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण! मैंने सुना है, कि जयद्रथ रणभूमिमें संमुख मरण, पराङ्मुख मरण वा पलायनसे यशःशरीरका नाश, इन तीन धर्मोंका अवलंबन करनेवाला है, इस लिये युद्धकी इच्छासे वह सिन्धुराज जयद्रथ जिस स्थानपर स्थित है, तुम शीघ्रताके सहित मेरे रथको उसी स्थानपर ले चलो। जिससे मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो तुम वैसा ही यत्न करो। हे महाबाहो! यह देखो सूर्य जल्दी जल्दी अस्ताचल पर्वतपर गमन कर रहा है॥ मुझे जयद्रथवधरूपी बहुत बडा कार्य करना होगा; परन्तु कौरवोंकी ओरके महारथी योद्धा लोग जयद्रथकी रक्षा कर रहे हैं॥ हे पुरुषसिंह कृष्ण! इससे तुम इस प्रकार घोडोंको चलाओ, जिससे मैं आज सूर्य अस्त होनेके पहिले ही जयद्रथका वध करके सत्यप्रतिज्ञ हो सकूं॥ २–६

तिसके अनन्तर घोडेके हांकनेकी विद्या जाननेवाले श्रीकृष्ण अर्जुनके रथके सुवर्ण भूषित घोडोंको जयद्रथके रथकी ओर चलाने लगे॥ महाराज! वे शीघ्र गमन करनेवाले सम्पूर्ण घोडे अमोघ अस्त्र धारण करनेवाले अर्जुनके रथको खींचते हुए वेगपूर्वक गमन करने लगे, उस समय ऐसा बोध होता था मानो वे घोडे उस समय आकाशमार्गसे उडते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्योधनश्च कर्णश्च वृषसेनोऽथ मद्रराट् ।
अश्वत्थामा कृपश्चैव स्वयमेव च सैन्धवः ॥ ९ ॥
समासाद्य च बीभत्सुः सैन्धवं समुपस्थितम् ।
नेत्राभ्यां क्रोधदीप्ताभ्यां सम्प्रैक्षन्निर्दहन्निव ॥ १० ॥
ततो दुर्योधनो राजा राधेयं त्वरितोऽब्रवीत् ।
अर्जुनं प्रेक्ष्य संयातं जयद्रथवधं प्रति ॥ ११ ॥
अयं स वैकर्तन युद्धकालो विदर्शयस्वाऽऽत्मबलं महात्मन् ।
यथा न वध्येत रणेऽर्जुनेन जयद्रथः कर्ण तथा कुरुष्व ॥ १२ ॥
अल्पावशेषो दिवसो नृवीर विधातयस्वाऽद्य रिपुं शरौघैः ।
दिनक्षयं प्राप्य नरप्रवीर ध्रुवो हि नः कर्ण जयो भविष्यति ॥ १३ ॥
सैन्धवे रक्ष्यमाणे तु सूर्यस्याऽस्तमनं प्रति ।
मिथ्याप्रतिज्ञः कौन्तेयः प्रवेक्ष्यति हुताशनम् ॥ १४॥
अनर्जुनायां च भुवि मुहूर्तमपि मानद ।
जीवितुं नोत्सहेरन्वै भ्रातरोऽस्य सहानुगाः ॥ १५ ॥
विनष्टैः पाण्डवेयैश्च सशैलवनकाननाम् ।

हुए गमन कर रहे हैं, राजा दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, मद्रराज शल्य, कृपाचार्य और राजा जयद्रथ-ये सम्पूर्ण महारथी लोग अर्जुनको आते देख, शीघ्रताके सहित उनकी ओर दौडे ॥ अर्जुन सिन्धुराज जयद्रथको सम्मुख खडे देख इस प्रकार क्रोधपूर्वक उनकी ओर देखने लगे मानो दृष्टिसे देखकर ही उन्हें भस्म कर देंगे ॥ (७—१०)

अनन्तर राजा दुर्योधन अर्जुनको जयद्रथके वधके लिये गमन करते देख शीघ्रताके सहित कर्णसे बोले॥ हे महात्मा कर्ण ! यही अब तुम्हारे युद्धका समय उपस्थित हुआ है, इससे ऐसे समयमें सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंको तुम अपना पराक्रम और प्रभाव दिखाओ, जिससे अर्जुन जयद्रथका वध न कर सके तुम वैसा ही यत्न करो॥ हे पुरुषसिंह ! दिन बीतनेमें अब थोडाही समय बाकी है इस ही समय तुम अपने बाणोंकी वर्षा करके अर्जुनके कार्यमें विघ्न करो; क्योंकि सूर्य अस्त होने तक जयद्रथकी रक्षा करनेसेही कुन्तीपुत्र अर्जुन मिथ्याप्रतिज्ञा करनेवाला होकर अवश्य ही अग्नि में प्रवेश करेगा ॥ (११—१४)

अर्जुनके न रहने पर उसके भ्राता और उनके अनुयायी योद्धा लोग भी पृथ्वीपर जीवित रहनेकी इच्छा नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसुन्धरामिमां कर्ण मोक्ष्यामो हतकण्टकाम् ॥ १६ ॥
दैवेनोपहतः पार्थो विपरीतश्च मानद ।
कार्याकार्यमजानानः प्रतिज्ञां कृतवान्रणे ॥ १७ ॥
नूनमात्मविनाशाय पाण्डवेन किरीटिना ।
प्रतिज्ञेयं कृता कर्ण जयद्रथवधं प्रति ॥ १८ ॥
कथं जीवति दुर्धर्षे त्वयि राधेय फाल्गुनः ।
अनस्तङ्गत आदित्ये हन्यात्सैन्धवकं नृपम् ॥ १९ ॥
रक्षितं मद्रराजेन कृपेण च महात्मना ।
जयद्रथं रणमुखे कथं हन्याद्धनञ्जयः ॥ २० ॥
द्रौणिना रक्ष्यमाणं च मया दुःशासनेन च ।
कथं प्राप्स्यति बीभत्सुः सैन्धवं कालचोदितः ॥ २१ ॥
युध्यन्ते बहवः शूरा लम्बते च दिवाकरः ।
शङ्के जयद्रथं पार्थो नैव प्राप्स्यति मानद ॥ २२ ॥
स त्वं कर्ण मया सार्धं शूरैश्चाऽन्यैर्महारथैः ।
द्रौणिना त्वं हि सहितो मद्रेशेन कृपेण च ॥ २३ ॥
युध्यस्व यत्नमास्थाय परं पार्थेन संयुगे ।

करेंगे; इसी प्रकार जब सम्पूर्ण पाण्डव नष्ट हो जावेंगे; तब हम लोग समुद्रके सहित इस सम्पूर्ण पृथ्वीको निष्कण्टक भोग करेंगे। हे मानी कर्ण! अर्जुनने अभाग्यहीसे उलटी बुद्धि अवलम्बन कर कार्य अकार्यके ज्ञानसे रहित हो अपने ही नाशके लिये जयद्रथ वधकी प्रतिज्ञा किया है। (१५—१८)

हे राधापुत्र! इस पृथ्वीके बीच ऐसा कोई पुरुष भी नहीं दीख पडता, जो युद्धभूमिमें तुम्हें जीत सके; इससे तुम्हारे रहतेही अर्जुन किस प्रकार सूर्यके रहते ही जयद्रथका वध कर सकेगा? विशेष करके मद्रराज शल्य, महात्मा कृपाचार्य, अश्वत्थामा, दुःशासन और मैं,—हम सब कोई मिलके रक्षा करेंगे, तब वह रणभूमिमें जयद्रथके समीप कैसे पहुंच सकेगा? इससे आज उसकी आयु पूरी होगई है॥ (१९—२१)

इधर बहुतसे योद्धा लोग उसके सङ्ग युद्ध करेंगे और उधर सूर्य भी अस्त हुआ चाहता है; मेरे विचारमें अर्जुन किसी प्रकार भी जयद्रथका वध न कर सकेगा॥ हे कर्ण! इससे तुम इस समय मेरे तथा मद्रराज शल्य अश्वत्थामा और दूसरे अनेक पराक्रमी योद्धाओंके संग मिलकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवमुक्तस्तु राधेयस्तव पुत्रेण मारिष ॥ २४ ॥
दुर्योधनमिदं वाक्यं प्रत्युवाच कुरूत्तमम् ।
दृढलक्ष्येण वीरेण भीमसेनेन धन्विना ॥ २५ ॥
भृशं भिन्नतनुः संख्ये शरजालैरनेकशः ।
स्थातव्यमिति तिष्ठामि रणे सम्प्रति मानद ॥ २६ ॥
नाऽङ्गमिङ्गति किञ्चिन्मे सन्तप्तस्य महेषुभिः ।
योत्स्यामि तु यथाशक्त्या त्वदर्थं जीवितं मम ॥२७॥
यथा पाण्डवमुख्योऽसौ न हनिष्यति सैन्धवम् ।
नहि मे युद्ध्यमानस्य सायकानस्यतः शितान् ॥ २८ ॥
सैन्धवं प्राप्स्यते वीरः सव्यसाची धनञ्जयः ।
यत्तु भक्तिमता कार्यं सततं हितकांक्षिणा ॥ २९ ॥
तत्करिष्यामि कौरव्य जयो दैवे प्रतिष्ठितः ।
सैन्धवार्थे परं यत्नं करिष्याम्यद्य संयुगे ॥ ३० ॥
त्वत्प्रियार्थं महाराज जयो दैवे प्रतिष्ठितः ।
अद्य योत्स्येऽर्जुनमहं पौरुषं स्वं व्यपाश्रितः ॥ ३१ ॥

युद्धभूमिमें विशेष यत्नपूर्वक अर्जुनके सङ्ग युद्ध करो । (२२—२४)

सञ्जय बोले, महाराज ! कर्णने तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके वचनको सुन कर यह उत्तर दिया, हे राजन् ! दृढताके सहित लक्ष्य भेद करनेवाले धनुर्धारी महावीर भीमसेनके बाणोंकी चोटसे मेरा शरीर क्षत विक्षत हो गया है, इस समय युद्ध-भूमिमें ही रहना उचित है, इसही निमित्त मैं संग्रामभूमिमें स्थित हूं । मेरा शरीर भीमके बाणोंकी चोटसे ऐसा क्षत विक्षत हो रहा है कि हिलनेसे भी पीडा होती है तौ भी वह पाण्डवोंमें मुख्य अर्जुन जिसमें सिन्धुराज जयद्रथका वध न कर सके; तुम्हारे प्रयोजनको सिद्ध करनेके निमित्त जब तक मेरे शरीरमें प्राण रहेगा, तबतक मैं अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करूंगा । युद्धभूमिमें यदि मैं अपने चोखे बाणोंको वर्षाता रहूंगा तो अर्जुन किसी प्रकारसे भी जयद्रथके समीप न पहुंच सकेगा । (२५—२९)

हे कुरुश्रेष्ठ ! हितैषी और भक्तिमान पुरुषोंको जैसा कर्त्तव्य कार्य करना उचित है मैं अवश्य ही वैसा कार्य करूंगा परन्तु जीत हार दैवके आधीन है । हे पुरुषसिंह ! आज मैं तुम्हारे वास्ते अपने पराक्रमके आसरेसे अर्जुनके संग युद्ध करूंगा आज मैं तुम्हारे प्रिय कार्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वदर्थे पुरुषव्याघ्र जयो दैवे प्रतिष्ठितः।
अद्य युद्धं कुरुश्रेष्ठ मम पार्थस्य चोभयोः ॥ ३२ ॥
पश्यन्तु सर्वसैन्यानि दारुणं लोमहर्षणम्।
कर्णकौरवयोरेवं रणे सम्भाषमाणयोः ॥ ३३ ॥
अर्जुनो निशितैर्बाणैर्जघान तव वाहिनीम्।
चिच्छेद निशितैर्बाणैः शूराणामनिवर्तिनाम् ॥ ३४ ॥
भुजान्परिघसङ्काशान्हस्तिहस्तोपमान्रणे।
शिरांसि च महाबाहुश्चिच्छेद निशितैः शरैः ॥ ३५ ॥
हस्तिहस्तान्हयग्रीवान्रथाक्षांश्च समन्ततः।
शोणिताक्तान्हयारोहान्गृहीतप्रासतोमरान् ॥ ३६ ॥
क्षुरैश्चिच्छेद बीभत्सुर्द्विधैकैकं त्रिधैव च।
हयान्वारणमुख्यांश्च प्रापतन्त समन्ततः ॥ ३७ ॥
ध्वजाश्छत्राणि चापानि चामराणि शिरांसि च।
कक्षमग्निरिवोद्धूतः प्रदहंस्तव वाहिनीम् ॥ ३८ ॥

करनेकी इच्छासे सिन्धुराज जयद्रथके निमित्त युद्धभूमिमें विशेष यत्न करूंगा; तब जीतना और हारना दैवके आधीन है। आज ये सम्पूर्ण सेनाके पुरुष रोएंको खडा करनेवाला हम दोनोंका भयङ्कर युद्ध देखें। (२९—३३)

सञ्जय बोले, महाराज! कर्ण और दुर्योधन इसी प्रकार आपसमें बात चीत कर रहे थे और इधर अर्जुन अपने चोखे बाणोंसे तुम्हारी सेनाका नाश करते जाते थे। वह अपने तीक्ष्णबाणोंसे युद्धमें पीछे न हटनेवाले शूरवीरोंकी परिघ और हाथीके सूण्ड सामान भुजा और शिरोंको काट काट गिराने लगे॥ महाराज! वह महाबाहु अर्जुन लगातार बाणोंकी वर्षा करके कहीं हाथियोंकी सूण्ड, घोडोंके गर्दन, रथोंकी धुरी और किसी स्थानमें तोमर ग्रहण करनेवाले घुडसवार और गजपति योद्धाओंके सिर अपने तीक्ष्ण क्षुरास्त्रसे दो दो तथा तीन तीन टुकडे करके पृथ्वीमें गिराने लगे॥ (३३-३७)

इसी प्रकार युद्धभूमिमें सहस्रों बडे बडे हाथी घोडे मनुष्य ध्वजा छत्र और सफेद चंवर अर्जुनके बाणोंसे टुकडे होकर पृथ्वीमें गिरने लगे। अधिक क्या कहे जैसे जलती हुई अग्नि शीघ्र ही तृणफूसको भस्म करती है वैसे ही महावीर अर्जुनने तुम्हारी सेनाके लोगोंको तितर बितर करके मरे हुए हाथी घोडे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचिरेण महीं पार्थश्चकार रुधिरोत्तराम् ।
हतभूयिष्ठयोधं तत्कृत्वा तव बलं बली ॥ ३९ ॥
आससाद दुराधर्षः सैन्धवं सत्यविक्रमः ।
बीभत्सुर्भीमसेनेन सात्वतेन च रक्षितः ॥ ४० ॥
प्रबभौ भरतश्रेष्ठ ज्वलन्निव हुताशनः ।
तं तथाऽवस्थितं दृष्ट्वा त्वदीया वीर्यसम्पदा ॥ ४१ ॥
नाऽमृष्यन्त महेष्वासाः पाण्डवं पुरुषर्षभाः ।
दुर्योधनश्च कर्णश्च वृषसेनोऽथ मद्रराट् ॥ ४२ ॥
अश्वत्थामा कृपश्चैव स्वयमेव च सैन्धवः ।
सन्नद्धाः सैन्धवस्याऽर्थे समावृण्वन्किरीटिनम् ॥ ४३ ॥
नृत्यन्तं रथमार्गेषु धनुर्ज्यातलनिःस्वनैः ।
संग्रामकोविदं पार्थं सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ४४ ॥
अभीताः पर्यवर्तन्त व्यादितास्यमिवाऽन्तकम् ।
सैन्धवं पृष्ठतः कृत्वा जिघांसन्तोऽच्युतार्जुनौ ॥ ४५ ॥
सूर्यास्तमनमिच्छन्तो लोहितायति भास्करे ।
ते भुजैर्भोगिभोगाभैर्धनूंष्यानम्य सायकान् ॥ ४६ ॥
मुमुचुः सूर्यरश्म्याभाञ्छतशः फाल्गुनं प्रति ।

और मनुष्योंके रुधिरसे पृथ्वीको परिपूरित कर दिया । महा तेजस्वी अत्यन्त पराक्रमी अर्जुन तुम्हारी सेनाके बीच अनेक योद्धाओंका वध करके जयद्रथके समीप उपस्थित हुए । वह सात्यकि और भीमसेनसे रक्षित होकर अग्निके समान प्रकाशित होने लगे । (३७—४१)

परन्तु तुम्हारी ओरके मुख्य मुख्य पराक्रमी महारथियोंने युद्धभूमिके बीच अर्जुनको इस भांति युद्ध करते देख सहन नहीं किया । दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, मद्रराज, शल्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य और राजा जयद्रथ इन सम्पूर्ण युद्ध विशारद महारथियोंने संग्राम प्रवीण अर्जुनको धनुषटङ्कार और तलत्राण शब्दके साहित रथके ऊपर नृत्य करते देख सावधान होकर चारों ओरसे उन्हें घेर लिया ॥ (४१—४४)

वे सम्पूर्ण महारथ योद्धा लोग कृष्ण अर्जुनके वधकी उच्छा करके सूर्य अस्त होनेकी प्रतीक्षा करते हुए जयद्रथको पीछे करके निर्भयचित्तसे अर्जुनके सम्मुख स्थित हुए और सर्पके समान अपनी भुजाओंसे प्रचण्ड धनुष खींचकर सूर्य-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततस्तानस्यमानांश्च किरीटी युद्धदुर्मदः ॥ ४७ ॥
द्विधा त्रिधाऽष्टधैकैकं छित्वा विव्याध तान्रथान् ।
सिंहलांगूलकेतुस्तु दर्शयन्वीर्यमात्मनः ॥ ४८ ॥
शारद्वतीसुतो राजन्नर्जुनं प्रत्यवारयत् ।
स विध्वा दशभिः पार्थं वासुदेवं च सप्तभिः॥ ४९ ॥
अतिष्ठद्रथमार्गेषु सैन्धवं प्रतिपालयन् ।
अथैनं कौरवश्रेष्ठाः सर्व एव महारथाः ॥ ५० ॥
महता रथवंशेन सर्वतः प्रत्यवारयन् ।
विस्फारयन्तश्चापानि विसृजन्तश्च सायकान् ॥ ५१ ॥
सैन्धवं पर्यरक्षन्त शासनात्तनयस्य ते ।
ततः पार्थस्य शूरस्य बाह्वोर्बलमदृश्यत ॥ ५२ ॥
इषूणामक्षयत्वं च धनुषो गाण्डिवस्य च ।
अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य द्रौणेः शारद्वतस्य च ॥ ५३ ॥
एकैकं दशभिर्बाणैः सर्वानेव समार्पयत् ।
तं द्रौणिः पञ्चविंशत्या वृषसेनश्च सप्तभिः ॥ ५४ ॥

किरणके समान प्रकाशमान सैकडों बाण कृष्ण अर्जुनके ऊपर चलाने लगे। युद्ध में पराक्रम प्रकाशित करनेवाले अर्जुन ने उन महारथियोंके बाणों को अपने बाणोंसे दोन दोन, तीन तीन और आठ आठ खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया और उन हरएक महारथियोंको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे। (४५-४८)

सिंह लांगूलवाली ध्वजासे शोभित रथपर चढे हुए शारद्वती पुत्र अश्वत्थामा अपना पराक्रम प्रकाशित करके अर्जुन को निवारण करने लगे! उन्होंने सिन्धु राज जयद्रथकी रक्षाके वास्ते अपने रथमें स्थित होके अर्जुनको दश और कृष्णको सात बाणोंसे विद्ध किया। तिसके अनन्तर तेरे पुत्रकी आज्ञासे कुरुसेनाके सम्पूर्ण महारथी लोग अर्जुन को अपने रथोंके समूहसे घेरकर धनुष चढाकर उनके ऊपर बाणोंकी वर्षा करते हुए जयद्रथकी रक्षा करने लगे; परन्तु महावीर अर्जुनके भुजाका बल उनके दोनों तूणीरोंका अमोघपन और प्रचण्ड गाण्डीव धनुषकी दृढता आश्चर्य रूपसे दिखाई देने लगी॥ (४८—५३)

उन्होंने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे अश्वत्थामाके बाणोंको निवारण करके तुम्हारी ओरके महारथियोंको दश दश बाणोंसे पीडित किया। अनन्तर अर्जुन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्योधनस्तु विंशत्या कर्णशल्यौ त्रिभिस्त्रिभिः ।
त एनमभिगर्जन्तो विध्यन्तश्च पुनः पुनः ॥ ५५ ॥
विधुन्वन्तश्च चापानि सर्वतः प्रत्यवारयन् ।
श्लिष्टं च सर्वतश्चक्रू रथमण्डलमाशु ते ॥ ५६ ॥
सूर्यास्तमनमिच्छन्तस्त्वरमाणा महारथाः ।
त एनमभिनर्दन्तो विधुन्वाना धनूंषि च ॥ ५७ ॥
सिषिचुर्मार्गणैस्तीक्ष्णैर्गिरिं मेघा इवाऽम्बुभिः ।
ते महास्त्राणि दिव्यानि तत्र राजन्व्यदर्शयन् ॥ ५८ ॥
धनञ्जयस्य गात्रे तु शूराः परिघबाहवः ।
हतभूयिष्ठयोधं तत्कृत्वा तव बलं बली ॥ ५९ ॥
आससाद दुराधर्षः सैन्धवं सत्यविक्रमः ।
तं कर्णः संयुगे राजन्प्रत्यवारयदाशुगैः ॥ ६० ॥
मिषतो भीमसेनस्य सात्वतस्य च भारत ।
तं पार्थो दशभिर्बाणैः प्रत्यविध्यद्रणाजिरे ॥ ६१ ॥
सूतपुत्रं महाबाहुः सर्वसैन्यस्य पश्यतः ।
सात्वतश्च त्रिभिर्बाणैः कर्णं विव्याध मारिष ॥ ६२ ॥

को अश्वत्थामाने पचीस, दुर्योधनने वीस, वृषसेनने सात, तथा कर्ण और शल्यने तीन तीन बाणोंसे विद्ध किया । इसी भांति वे सम्पूर्ण महारथी योद्धा लोग बार बार सिंहनाद करके धनुष फेरते हुए अर्जुनको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे; और सूर्य अस्त होनेकी प्रतीक्षा करके अर्जुनको चारों ओरसे अपने रथों के समूहसे इस भांति घेर लिया कि अर्जुनको निकलनेके निमित्त इधर उधर तनिक भी मार्ग न रहा ॥ (५३—५७)

महाराज ! परिघ समान भुजावाले महारथ योद्धा लोग सिंहनादके सहित धनुष चढाकर अपने अस्त्र शस्त्र और दिव्य अस्त्रोंको प्रकाशित करके अर्जुनके ऊपर ऐसी बाण वर्षा करने लगे जैसे बादलोंका समूह पर्वतके ऊपर जलवर्षा करता है, परन्तु अत्यन्त पराक्रमी अर्जुन तुम्हारी सेनाके अनगिनत योद्धाओंको यमपुरीमें भेजकर जयद्रथके रथके निकट जाने लगे ॥ (५७—६०)

तब उस समय सूतपुत्र कर्ण सात्यकि और भीमसेन के सम्मुखही में अपने बाणोंसे अर्जुनको निवारण करने लगे । महाबाहु अर्जुनने भी सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखमें ही कर्णको दश बाणोंसे विद्ध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमसेनस्त्रिभिश्चैव पुनः पार्थश्च सप्तभिः।
तान्कर्णः प्रतिविव्याध षष्ट्या षष्ट्या महारथः ॥६३॥
तद्युद्धमभवद्राजन्कर्णस्य बहुभिः सह।
तत्राऽद्भुतमपश्याम सूतपुत्रस्य मारिष ॥ ६४ ॥
यदेकः समरे क्रुद्धस्त्रीन्रथान्पर्यवारयत्।
फाल्गुनस्तु महाबाहुः कर्णं वैकर्तनं रणे ॥ ६५ ॥
सायकानां शतेनैव सर्वमर्मस्वताडयत्।
रुधिरोक्षितसर्वाङ्गः सूतपुत्रः प्रतापवान् ॥ ६६ ॥
शरैः पञ्चाशता वीरः फाल्गुनं प्रत्यविध्यत।
तस्य तल्लाघवं दृष्ट्वा नाऽमृष्यत रणेऽर्जुनः ॥ ६७ ॥
ततः पार्थो धनुश्छित्त्वा विव्याधैनं स्तनान्तरे।
सायकैर्नवभिर्वीरस्त्वरमाणो धनञ्जयः ॥ ६८ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय सूतपुत्रः प्रतापवान्।
सायकैरष्टसाहस्रैश्छादयामास पाण्डवम् ॥ ६९ ॥
तां बाणवृष्टिमतुलां कर्णचापसमुत्थिताम्।
व्यधमत्सायकैः पार्थः शलभानिव मारुतः ॥ ७० ॥

किया; फिर सात्यकिने तीन भीमसेनने भी तीन और अर्जुनने सात बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। महारथी कर्णने उन हर एक वीरोंको साठ साठ बाणोंसे विद्ध किया। इसी भांति उन तीनों महारथियोंके साथ कर्णका अकेले युद्ध होने लगा। (६०—६४)

महाराज! उस समय सूर्यपुत्र कर्णका यह आश्चर्यमय पराक्रम दीख पडा कि, वह युद्धभूमिमें अकेलेही उन तीनों महारथियोंको क्रुद्ध होकर निवारित करने लगे। महाबाहु अर्जुनने एकसौ बाणोंसे कर्णके सम्पूर्ण मर्मस्थानों को पीडित किया। उस महा प्रतापी कर्णने रुधिर पूरित शरीरसे युक्त हो पचास बाणोंसे अर्जुनको विद्ध किया। कर्णका ऐसा अस्त्रलाघव अर्जुनसे न सहा गया; उन्होंने शीघ्र ही कर्णके धनुषको काट कर नव बाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार किया॥ (६४—६८)

उस ही समय महा प्रतापी कर्णने दूसरा धनुष ग्रहण कर इकबारगी आठ सहस्र बाण चलाकर अर्जुनको छिपा दिया। महाराज! जैसे वायु शलभ समूहको पृथक् करता है वैसे ही बलवान् अर्जुनने छूटे हुए बाणोंकी वृष्टिको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छादयामास च तदा सायकैरर्जुनो रणे ।
पश्यतां सर्वयोधानां दर्शयन्पाणिलाघवम् ॥ ७१ ॥
वधार्थं चाऽस्य समरे सायकं सूर्यवर्चसम् ।
चिक्षेप त्वरया युक्तस्त्वराकाले धनञ्जयः ॥ ७२ ॥
तमापतन्तं वेगेन द्रौणिश्चिच्छेद सायकम् ।
अर्धचन्द्रेण तीक्ष्णेन स च्छिन्नः प्रापतद्भुवि ॥ ७३ ॥
कर्णोऽपि द्विषतां हन्ता छादयामास फाल्गुनम् ।
सायकैर्बहुसाहस्रैः कृतप्रतिकृतेप्सया ॥ ७४ ॥
तौ वृषाविव नर्दन्तौ नरसिंहौ महारथौ ।
सायकैस्तु प्रतिच्छन्नं चक्रतुः खमजिह्मगैः ॥ ७५ ॥
अदृश्यौ च शरौघैस्तौ निघ्नन्ताविवरेतरम् ।
कर्ण पार्थोऽस्मि तिष्ठ त्वं कर्णोऽहं तिष्ठ फाल्गुन ॥७६॥
इत्येवं तर्जयन्तौ तौ वाक्शल्यैस्तुदतां तदा ।
युध्यतां समरे वीरौ चित्रं लघु च सुष्ठु च ॥ ७७ ॥

निवारण किया, फिर अपना हस्तलाघव दिखाते हुए सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखहीमें अपने बाणजालसे कर्णको छिपा दिया ॥ (६७—७१)

फिर अर्जुनने जयद्रथवधके वास्ते आतुर हो कर्णके वधके निमित्त सूर्यकिरण समान एक प्रकाशमान बाण चलाया। महाराज द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने वेगपूर्वक उस बाणको कर्णकी ओर आते देख अपने तीक्ष्ण अर्धचन्द्र अस्त्रसे काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ शत्रुनाशन कर्ण भी अर्जुनके बाणोंको निवारण कर अनगिनत बाणोंसे उन्हें छिपाने लगे ॥ (७२–७४)

पुरुषसिंह महारथी अर्जुन और कर्णने दो मतवारे बैलकी भांति गर्जते हुए अपने बाणोंकी जालसे मुहूर्त्त भरके बीच आकाशमण्डलको छिपा दिया और दोनों ही एक दूसरेके बाणके जालसे ऐसे अदृश्य होगये कि किसीको देख भी न पडते थे; परन्तु वे दोनों पुरुषसिंह एक दूसरेके ऊपर बाणोंकी वर्षा करते ही जाते थे। उस समय वे दोनों पराक्रमी वीर 'हे कर्ण! खडे रहो! मैं अर्जुन हूं, हे अर्जुन! खडा रह! मैं कर्ण हूं;' इसी प्रकार सिंहनाद शब्दके सहित गर्जते हुए वे दोनों पुरुषसिंह अपने वचनरूपी शलाकासे एक दूसरेको दुःखित करते हुए आपसमें युद्ध करने लगे। वे दोनों पराक्रमी वीर अस्त्र लाघवके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेक्षणीयौ चाऽभवतां सर्वयोधसमागमे ।
प्रशस्यमानौ समरे सिद्धचारणपन्नगैः ॥ ७८ ॥
अयुध्येतां महाराज परस्परवधैषिणौ ।
ततो दुर्योधनो राजंस्तावकानभ्यभाषत ॥ ७९ ॥
यत्नाद्रक्षत राधेयं नाऽहत्वा समरेऽर्जुनम् ।
निवर्तिष्यति राधेय इति मामुक्तवान्वृषः ॥ ८० ॥
एतस्मिन्नन्तरे राजन्दृष्ट्वा कर्णस्य विक्रमम् ।
आकर्णमुक्तैरिषुभिः कर्णस्य चतुरो हयान् ॥ ८१ ॥
अनयत्प्रेतलोकाय चतुर्भिः श्वेतवाहनः ।
सारथिं चाऽस्य भल्लेन रथनीडादपातयत् ॥ ८२ ॥
छादयामास स शरैस्तव पुत्रस्य पश्यतः ।
संछाद्यमानः समरे हताश्वो हतसारथिः ॥ ८३ ॥
मोहितः शरजालेन कर्तव्यं नाऽभ्यपद्यत ।

सहित अस्त्र चलाते और नाना प्रकारके युद्ध कौशल दिखाते हुए रणभूमिमें इस प्रकार युद्ध करने लगे कि सब कोई इकटक नेत्रसे पराक्रम देखते ही रह गये। महाराज! इसी भांति जब वे दोनों वीर एक दूसरेके वधकी इच्छा करके युद्ध कर रहे थे उस समय सिद्ध चारण और पन्नग लोग उन दोनों ही पुरुष सिंहोंकी प्रशंसा करने लगे। (७५—७९)

तिसके अनन्तर राजा दुर्योधन अपनी सेनाके पुरुषोंसे यह वचन बोले, हे वीरपुरुषो! आज महावीर कर्णने मेरे समीप इस प्रकार प्रतिज्ञा किया है, कि अर्जुनको विना मारे मैं युद्धसे निवृत्त न होऊंगा; इससे तुम सब कोई यत्नवान् होकर कर्णकी रक्षा करो॥ (७९-८०)

राजा दुर्योधन अपनी सेनाके वीरों से ऐसा वचन कह रहे थे और उधर श्वेतवाहन अर्जुनने कर्णका पराक्रम देख कान पर्यन्त खींचकर चार बाणोंसे कर्ण के चारो घोडोंका वध किया, फिर एक भल्लास्त्रसे उनके सारथीको मार कर पृथ्वीमें गिराया और अनेक बाणोंको चलाकर दुर्योधनके संमुखमें ही कर्णको छिपा दिया॥ (८१-८३)

महाराज! इसी प्रकार कर्ण युद्ध-भूमिके बीच घोडे सारथीसे रहित हुए और अर्जुनके बाणजालमें छिपकर मोहित होगये; तब वह अपने मनमें विचारने लगे, कि इस समय कौनसा कार्य करूं, परन्तु कुछ भी निश्चय न कर सके॥ (८३—८४)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं तथा विरथं दृष्ट्वा रथमारोप्य तं तदा ॥ ८४ ॥
अश्वत्थामा महाराज भूयोऽर्जुनमयोधयत् ।
मद्रराजश्च कौन्तेयमविध्यत्त्रिंशता शरैः ॥ ८५ ॥
शारद्वतस्तु विंशत्या वासुदेवं समार्पयत् ।
धनञ्जयं द्वादशभिराजघान शिलीमुखैः ॥ ८६ ॥
चतुर्भिः सिन्धुराजश्च वृषसेनश्च सप्तभिः ।
पृथक्पृथङ् महाराज विव्यधुः कृष्णपाण्डवौ ॥ ८७ ॥
तथैव तान्प्रत्यविध्यत्कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ।
द्रोणपुत्रं चतुःषष्ट्या मद्रराजं शतेन च ॥ ८८ ॥
सैन्धवं दशभिर्बाणैर्वृषसेनं त्रिभिः शरैः ।
शारद्वतं च विंशत्या विध्वा पार्थो ननाद ह ॥ ८९ ॥
ते प्रतिज्ञाप्रतीघातमिच्छन्तः सव्यसाचिनः ।
सहितास्तावकास्तूर्णमभिपेतुर्धनञ्जयम् ॥ ९० ॥
अथाऽर्जुनः सर्वतो वारुणास्त्रं प्रादुश्चक्रे त्रासयन्धार्तराष्ट्रान् ।
तं प्रत्युदीयुः कुरवः पाण्डुपुत्रं रथैर्महाहैः शरवर्षाण्यवर्षन् ॥ ९१ ॥
ततस्तु तस्मिंस्तुमुले समुत्थिते सुदारुणे भारत मोहनीये ।

उस ही समय द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामाने कर्णको रथ-रहित देख उन्हें अपने रथमें चढा लिया, तब वह फिर अर्जुनके सङ्ग युद्ध करने लगे। उस समय मद्रराज शल्यने अर्जुनको तीस बाणोंसे विद्ध किया और कृपाचार्यने बीस बाणोंसे कृष्ण और बारह बाणोंसे अर्जुनके शरीरमें प्रहार किया॥ तिसके अनन्तर जयद्रथने चार और वृषसेनने सात बाणोंसे अर्जुनको विद्ध किया। इसी भांति तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण महारथी योद्धा लोग कृष्ण अर्जुनको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे॥ (८४—८७)

अर्जुनने भी उन सम्पूर्ण महारथियों को अपने बाणोंसे विद्ध किया, उन्होंने अश्वत्थामाको चौसठ, मद्रराज शल्यको एक सौ, जयद्रथको दश, वृषसेनको तीन और कृपाचार्यको बीस बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया, तब तुम्हारी ओर के महारथी योद्धा लोग अर्जुनकी प्रतिज्ञा भङ्ग करनेकी इच्छासे सब कोई मिलकर शीघ्रतासे उनकी ओर दौडे॥ (८८-९०)

अर्जुनने तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको त्रस्त करके महा वारुण अस्त्र प्रकट किया, परन्तु कौरव लोग भी अपने उत्तम रथोंपर चढके अर्जुनके ऊपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोऽमुह्यत प्राप्य स राजपुत्रः किरीटमाली व्यसृजच्छरौघान् ॥ ९२ ॥
राज्यप्रेप्सुः सव्यसाची कुरूणां स्मरन्क्लेशान्द्वादशवर्षवृत्तान् ।
गाण्डीवमुक्तैरिषुभिर्महात्मा सर्वा दिशो व्यावृणोदप्रमेयः ॥ ९३ ॥
प्रदीप्तोल्कमभवच्चाऽन्तरिक्षं मृतेषु देहेष्वपतन्वयांसि ।
यत्पिङ्गलज्येन किरीटमाली क्रुद्धो रिपूनाजगवेन हन्ति ॥ ९४ ॥
ततः किरीटी महता महायशाः शरासनेनाऽस्य शरानीकजित् ।
हयप्रवेकोत्तमनागघूर्णितान्क्रुरूप्रवीरानिषुभिर्व्यपातयत् ॥ ९५ ॥
गदाश्च गुर्वीः परिघानयस्मयानसींश्च शक्तीश्च रणे नराधिपाः ।
महान्ति शस्त्राणि च भीमदर्शनाः प्रगृह्य पार्थं सहसाऽभिदुद्रुवुः ॥९६॥
ततो युगान्ताभ्रसमस्वनं महन्महेन्द्रचापप्रतिमं च गाण्डिवम् ।
चकर्ष दोर्भ्यां विहसन्भृशं ययौ दहंस्त्वदीयान्यमराष्ट्रवर्धनः ॥ ९७ ॥

बाण वर्षा करते हुए उनकी ओर दौडे ॥ महाराज उस समय सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करनेवाले अत्यन्त भयङ्कर तुमुल संग्राम उपस्थित होने पर भी किरीटधारी अर्जुन मोहित न हुए वरन जयद्रथको देखके लगातार वह अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ अत्यन्त पराक्रमी महात्मा अर्जुनने राज्यकी अभिलाष कर और कौरवोंके दिये हुए वनवासके क्लेशको स्मरण करके अपने गाण्डीव धनुषको चढाकर बाणवर्षासे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूर्ण कर दिया ॥ (९१-९३)

एक बाणके ऊपर दूसरा बाण रगड खाने से अग्नि उत्पन्न हो कर आकाश मण्डलमें जलते हुए लुकके समान प्रकाशित होने लगा । तब मांस खाने वाले पक्षियोंके झूण्डके झूण्ड मनुष्योंके मृत शरीर पर गिरने लगे । उस समय अर्जुन महादेवके पिनाक धनुष समान अपना प्रचण्ड धनुष चढाके तीक्ष्ण बाणोंसे योद्धाओंका वध करने लगे ॥ शत्रुसेनाको जीतने वाले यशस्वी अर्जुन घुडसवार और गजपति योद्धाओंके चलाये हुए अस्त्रोंको अपनी अस्त्रमायासे निवारण कर तीक्ष्ण बाणोंसे सेनाके पुरुषोंका वध करने लगे ॥ (९४-९५)

तब शूरवीर क्षत्रिय योद्धा अत्यन्त क्रुद्ध हुए और शक्ति आदि अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण कर अर्जुनकी ओर दौडे ॥ महाराज ! उस समय महाधनुर्द्धारी अर्जुन प्रलय कालके बादल तथा इन्द्र धनुष समान शब्द करनेवाले गाण्डीव धनुषको कान पर्यन्त खींच कर अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका वध करके परलोकमें भेजने लगे ॥ इसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तानुदीर्णान्सरथान्सवारणान्पदातिसङ्घांश्च महाधनुर्धरः ।
विपन्नसर्वायुधजीवितान्रणे चकार वीरो यमराष्ट्रवर्धनान् ॥९८॥ [६१४९]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि संकुलयुद्धे पञ्चचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४५ ॥

सञ्जय उवाच- श्रुत्वा निनादं धनुषश्च तस्य विस्पष्टमुत्कुष्टमिवाऽन्तकस्य ।
शक्राशनिस्फोटसमं सुघोरं विकृष्यमाणस्य धनञ्जयेन ॥ १ ॥
त्रासोद्विग्नं तथोद्भ्रान्तं त्वदीयं तद्बलं नृप ।
युगान्तवातसंक्षुब्धं चलद्वीचितरङ्गितम् ॥ २ ॥
प्रलीनमीनमकरं सागराम्भ इवाऽभवत् ।
स रणे व्यचरत्पार्थः प्रेक्षमाणो धनञ्जयः ॥ ३ ॥
युगपद्दिक्षु सर्वासु सर्वाण्यस्त्राणि दर्शयन् ।
आददानं महाराज सन्दधानं च पाण्डवम् ॥ ४ ॥
उत्कर्षन्तं सृजन्तं च न स्म पश्याम लाघवात् ।
ततः क्रुद्धो महाबाहुरैन्द्रमस्त्रं दुरासदम् ॥ ५ ॥
प्रादुश्चक्रे महाराज त्रासयन्सर्वभारतान् ।
ततः शराः प्रादुरासन्दिव्यास्त्रप्रतिमन्त्रिताः ॥ ६ ॥

प्रकार अर्जुन घुडसवार रथी गजपति और पैदल चलने वाले शूरवीरोंसे युक्त तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको प्राणरहित करके यमपुरीमें भेजने लगे ॥ ९६-९८

द्रोणपर्वमें एकसौ पैंतालिस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ छियालिस अध्याय ।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र ! जिस समय महावीर अर्जुन गाण्डीव धनुष चढाकर तीक्ष्णबाण चलाने लगे, उस समय इन्द्रके वज्रसमान उनके धनुषका शब्द सुनकर तुम्हारी सेना भयसे व्याकुल होगयी, जैसे प्रलयकालके समय प्रचण्ड वेगसे मकर मच्छसे युक्त समुद्रका जल उथलित होता है, वैसे ही तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका चित्त युद्धसे विचलित होने लगा ॥ उस समय बाण चलाते हुए अर्जुन युद्धभूमिके बीच इस प्रकार भ्रमण करने लगे ॥ कि एक ही समय चारों ओर दीख पडते थे । (१-४)

महाराज ! उस समय अर्जुन हस्त-लाघवके सहित कब तूणीरसे बाण ग्रहण करते, कब साधते, कब धनुष पर चढाते और किस समय शत्रुओंकी ओर चलाते थे, वह किसीको दिखाई नहीं पडता था । महाबाहु अर्जुनने सम्पूर्ण कौरवी सेनाको भयभीत करके ऐन्द्र-अस्त्र प्रकट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदीप्ताश्च शिखिमुखाः शतशोऽथ सहस्रशः ।
आकर्णपूर्णनिर्मुक्तैरग्न्यर्कांशुनिभैः शरैः ॥ ७ ॥
नभोऽभवत्तदुष्प्रेक्ष्यमुल्काभिरिव संवृतम् ।
ततः शस्त्रान्धकारं तत्कौरवैः समुदीरितम् ॥ ८ ॥
अशक्यं मनसाऽप्यन्यैः पाण्डवः सम्भ्रमन्निव ।
नाशयामास विक्रम्य शरैर्दिव्यास्त्रमन्त्रितैः ॥ ९ ॥
नैशं तमोंऽशुभिः क्षिप्रं दिनादाविव भास्करः।
ततस्तु तावकं सैन्यं दीप्तैः शरगभस्तिभिः ॥ १० ॥
आक्षिपत्पत्वलाम्बूनि निदाघार्क इव प्रभुः ।
ततो दिव्यास्त्रविदुषा प्रहिताः सायकांशवः ॥ ११ ॥
समाप्लवन्द्विषत्सैन्यं लोकं भानोरिवांऽशवः ।
अथाऽपरे समुत्सृष्टा विशिखास्तिग्मतेजसः ॥ १२ ॥
हृदयान्याशु वीराणां विविशुः प्रियबन्धुवत ।
य एनमीयुः समरे त्वद्योधाः शूरमानिनः ॥ १३ ॥

किया, उस ऐन्द्रास्त्रसे अग्निके समान प्रकाश मान सैकडों सहस्रों बाण उत्पन्न हुए। गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए अग्नि और सूर्य किरणके समान प्रकाशमान बाणोंसे आकाश-मण्डल लुक समूहकी भांति आश्चर्य रूपसे दिखाई देने लगा। इसी प्रकार सब दिशाएं अंधकारसे व्याप्त होगयीं ॥ (४—८)

पहिले कुरुसेनाके चलाये हुए अस्त्र शस्त्रोंसे जो अन्धकार हो रहा था, जिसे कोई मनसे भी दूर नहीं कर सक्ता था, उसे अर्जुनने अपने दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे ऐसे नष्ट कर दिया, जैसे भोरके समय सूर्य उदय होकर रात्रिसे उत्पन्न हुए अन्धकारको दूर कर देता है, और जैसे ग्रीष्म ऋतुके समयमें प्रचण्ड तेजवाले सूर्य, छोटे तलाइयोंके जलको सुखा देता है, वैसे ही अर्जुन अपने प्रकाशमान बाणोंसे कुरुसेनाका नाश करने लगे। जैसे सूर्यकी किरण सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रकाशित होती है, वैसे ही अस्त्रविद्या जाननेवाले अर्जुनके बाण क्षण भरके बीच उस स्थानमें सम्पूर्ण सेनाके पुरुषों को छिपाने लगे ॥ (९–१२)

महाराज ! गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए वे तीक्ष्ण बाण प्रियबन्धुओंके समान शूरवीरोंके हृदयमें प्रविष्ट होने लगे ॥ अधिक क्या कहूं उस समय तुम्हारी सेनाके जितने योद्धा मतवारे होकर अर्जुनके समीप उपस्थित हुए वे सम्पूर्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शलभा इव ते दीप्तमग्निं प्राप्य ययुः क्षयम् ।
एवं स मृद्नञ्शत्रूणां जीवितानि यशांसि च ॥ १४ ॥
पार्थश्चचार संग्रामे मृत्युर्विग्रहवानिव ।
सकिरीटानि वक्त्राणि साङ्गदान्विपुलान्भुजान् ॥१५॥
सकुण्डलयुगान्कर्णान्केषाञ्चिदहरच्छरैः ।
सतोमरान्गजस्थानां सप्रासान्हयसादिनाम् ॥ १६ ॥
सचर्मणः पदातीनां रथिनां च सधन्वनः ।
सप्रतोदान्नियन्तॄणां बाहूंश्चिच्छेद पाण्डवः ॥ १७ ॥
प्रदीप्तोग्रशरार्चिष्मान्बभौ तत्र धनञ्जयः ।
स विस्फुलिङ्गाग्रशिखो ज्वलन्निव हुताशनः ॥ १८ ॥
तं देवराजप्रतिमं सर्वशस्त्रभृतां वरम् ।
युगपद्दिक्षु सर्वासु रथस्थं पुरुषर्षभम् ॥ १९ ॥
निक्षिपन्तं महास्त्राणि प्रेक्षणीयं धनञ्जयम् ।
नृत्यन्तं रथमार्गेषु धनुर्ज्यातलनादिनम् ॥ २० ॥
निरीक्षितुं न शेकुस्ते यत्नवन्तोऽपि पार्थिवाः ।
मध्यन्दिनगतं सूर्यं प्रतपन्तमिवाऽम्बरे ॥ २१ ॥

योद्धा अर्जुनके समीप पहुंचके इस प्रकार नष्ट होगये जैसे जलती हुई अग्नि में पतिङ्गोंके समूह प्रवेश करके भस्म होजाते हैं । इसी भांति अर्जुन शूरवीर योद्धाओंके प्राण और यशोंको नष्ट करते हुए देहधारी मृत्युकी भांति रणभूमिमें घूमने लगे ॥ (१३–१५)

वह अपने बाणोंसे किसीके मुकुट भूषित सिर, किसीके हस्तभूषणयुक्त विशाल भुजा, किसी किसीके कुण्डल शोभित दोनों कान, गजसवारोंके तोमर भूषित, घुडसवारोंकी प्रासा युक्त, पैदल सेनाके शूरवीरोंकी तलवार ढाल, रथियोंके धनुष बाण और सारथियोंके कोडेके सहित भुजाओंको काट पृथ्वीमें गिराते हुए रणभूमिके बीच इस प्रकार शोभित होने लगे, जैसे प्रचण्ड शिखासे युक्त जलती हुई अग्नि प्रकाशित होती है॥ १५–१८

महाराज ! शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ इन्द्रके समान पराक्रमी कपिध्वजावाले महावीर अर्जुन युद्धभूमिमें महा अस्त्र शस्त्रोंको चलाकर धनुष टंकार और तलत्राण शब्दके सहित मानो रथपर नृत्य करते हुए एक ही समय चारों ओर दिखाई देने लगे ॥ तुम्हारी ओरके योद्धा लोग अत्यन्त यत्नवान् होकर भी अर्जुनको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप्तोग्रसम्भृतशरः किरीटी विरराज ह।
वर्षास्विवोदीर्णजलः सेन्द्रधन्वाऽम्बुदो महान् ॥२२॥
महास्त्रसम्प्लवे तस्मिञ्जिष्णुना सम्प्रवर्तिते।
सुदुस्तरे महाघोरे ममज्जुर्योधपुङ्गवाः ॥ २३ ॥
उत्कृत्तवदनैर्देहैः शरीरैः कृत्तबाहुभिः।
भुजैश्च पाणिनिर्मुक्तैः पाणिभिर्व्यंगुलीकृतैः ॥ २४ ॥
कृत्ताग्रहस्तैः करिभिः कृत्तदन्तैर्मदोत्कटैः।
हयैश्च विधुरग्रीवै रथैश्च शकलीकृतैः ॥ २५ ॥
निकृत्तान्त्रैः कृत्तपादैस्तथाऽन्यैः कृत्तसन्धिभिः।
निश्चेष्टैर्विस्फुरद्भिश्च शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २६ ॥
मृत्योराघातललितं तत्पार्थायोधनं महत्।
अपश्याम महीपाल भीरूणां भयवर्धनम् ॥ २७ ॥
आक्रीडमिव रुद्रस्य पुराऽभ्यर्दयतः पशून्।

दोपहर के सूर्य समान देखनेमें भी समर्थ न हुए॥ जैसे वर्षाऋतुमें जल वर्षते हुए बादलोंके बीच इन्द्रधनुष प्रगट होकर शोभित होता है, वैसे ही प्रकाशमान बाणोंके सहित गाण्डीव धनुषसे किरीटधारी अर्जुन शोभित होने लगा॥ (१९-२२)

महाराज! इस भांति अर्जुनके धनुष से छूटे हुए भयङ्कर बाणरूपी लहरमें डूबते हुए योद्धाओंके बीच किसीके सिर, किसीकी भुजा, किसीकी हथेली, किसीकी अंगुली कटके पृथ्वीपर गिरने लगीं। मतवारे हाथियोंके बीच कितने ही हाथियोंके दांत कट गये; कितने ही हाथियोंके सुण्डके सहित सुन्दर दांत खण्ड खण्ड होकर पृथ्वीमें गिरने लगे। किसी किसी स्थानपर मस्तक हीन घोडे और छिन्न भिन्न हुए रथ गिरे हुए दिखाई देने लगे॥ (२३-२५)

कितने ही वीरोंके पेटसे आंते बाहर आये दीखने लगीं। किसीके चरण किसीकी भुजा कट गयीं; कितने ही शूरवीरोंके सन्धिस्थल (जोडके स्थान) कटनेसे वे लोग चेष्टा रहित होकर भयङ्कर शब्द करने लगे; महाराज! इसी भांति तुम्हारी चतुरङ्गिणी सेनाके सैकडों सहस्रों योद्धा लोग अर्जुनके बाणोंसे छिन्न भिन्न होकर पृथ्वीमें गिरने लगे, उस समय वह रणभूमि मृत्यु के निवासस्थान वा सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले महाकाल रुद्रके क्रीडास्थान समान भयंकर दिखाई देने लगी॥ उस रणभूमिके बीच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजानां क्षुरनिर्मुक्तैः करैः सभुजगेव भूः ॥ २८ ॥
क्वचिद्भुजौ स्रग्विणीव वक्त्रपद्मैः समाचिता ।
विचित्रोष्णीषमुकुटैः केयूराङ्गदकुण्डलैः ॥ २९ ॥
स्वर्णचित्रतनुत्रैश्च भाण्डैश्च गजवाजिनाम् ।
किरीटशतसङ्कीर्णा तत्र तत्र समाचिता ॥ ३० ॥
विरराज भृशं चित्रा मही नववधूरिव ।
मज्जामेदःकर्दमिनीं शोणितौघतरङ्गिणीम् ॥ ३१ ॥
मर्मास्थिभिरगाधां च केशशैवलशाद्वलाम् ।
शिरोबाहूपलतटां रुग्णक्रोडास्थिसङ्कटाम् ॥ ३२ ॥
चित्रध्वजपताकाढ्यां छत्रचापोर्मिमालिनीम् ।
विगतासुमहाकायां गजदेहाभिसंकुलाम् ॥ ३३ ॥
रथोडुपशताकीर्णां हयसङ्घातरोधसम् ।
रथचक्रयुगेषाक्षकूबरैरतिदुर्गमाम् ॥ ३४ ॥
प्रासासिशक्तिपरशुविशिखाहिदुरासदाम् ।
बलकङ्कमहानक्रां गोमायुमकरोत्कटाम् ॥ ३५ ॥

कटे हुए हाथियोंके सूण्ड सर्पके समान दिखाई देते थे ॥ (२६—२८)

कहीं कहीं शूरवीरोंके मुखकमलोंसे रणभूमि माला पहिनी हुई की समान दीख पडती थी, कहीं कहीं कवच कुण्डल सुवर्ण भूषित तलत्राण मुकुट वस्त्र घोडे और हाथियोंके वर्म और सैकडों किरीट इधर उधर पडे रहनेसे वह रणभूमि गौनहाई नवीन स्त्रीके समान शोभित होने लगी । (२९—३१)

तिसके अनन्तर रणभूमिके बीच कादर और साधारण पुरुषोंके भयको बढानेवाली वैतरणी नदीकी भांति भयंकर रुधिररूपी तरङ्गसे युक्त एक भयंकर नदी उत्पन्न हुई ॥ मज्जा और मेद उसके कीचड, रक्तका प्रवाह तरङ्ग, केश उसमें शिवार, कटे हुए सिर और भुजा उसमें पत्थरोंके टुकडे और सैकडों रथ उसमें नौकारूपी, कौवे कङ्क आदि पक्षी उसमें जल जन्तु, सियार उसमें मकर मच्छ तथा बडे बडे गिद्ध उसमें घडियाल रूपी बोध होने लगे । वह नदी शूरवीरों के वर्म और हड्डियोंसे युक्त होकर दुःख से तरने योग्य बोध होने लगी । योद्धाओंकी फसलियां और हड्डियोंसे वह नदी दुर्गम बोध होने लगे । धनुष्य और छत्र तरङ्गमाला तथा विचित्र ध्वजा पताका और मरे हुए मनुष्य हाथी घोडों के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृध्रोदग्रमहाग्राहां शिवाविरुतभैरवाम् ।
नृत्यत्प्रेतपिशाचाद्यैर्भूताकीर्णां सहस्रशः ॥ ३६ ॥
गतासुयोधनिश्चेष्टशरीरशतवाहिनीम् ।
महाप्रतिभयां रौद्रां घोरां वैतरणीमिव ॥ ३७ ॥
नदीं प्रवर्तयामास भीरूणां भयवर्धिनीम् ।
तं दृष्ट्वा तस्य विक्रान्तमन्तकस्येव रूपिणः ॥ ३८ ॥
अभूतपूर्वं कुरुषु भयमागाद्रणाजिरे ।
तत आदाय वीराणामस्त्रैरस्त्राणि पाण्डवः ॥ ३९ ॥
आत्मानं रौद्रमाचष्ट रौद्रकर्मण्यधिष्ठितः ।
ततो रथवरान्राजन्नत्यतिक्रामदर्जुनः ॥ ४० ॥
मध्यन्दिनगतं सूर्यं प्रतपन्तमिवाऽम्बरे ।
न शेकुः सर्वभूतानि पाण्डवं प्रति वीक्षितुम् ॥ ४१ ॥
प्रसृतांस्तस्य गाण्डीवाच्छरव्रातान्महात्मनः ।
संग्रामे सम्प्रपश्यामो हंसपंक्तिमिवाऽम्बरे ॥ ४२ ॥
विनिवार्य स वीराणामस्त्रैरस्त्राणि सर्वतः ।

शरीर उस नदीके तट रूपी मालूम होते थे। रथके चक्र धुरी और टूटे हुए रथों के इधर उधर पडे रहनेसे गमन करनेका मार्ग नहीं दीख पडता था। प्रास तरवार फरसे आदि अस्त्रशस्त्र उसमें सर्पके समान दिखाई देने लगे। सियारोंके भयङ्कर शब्दके सहित सहस्रों भूत प्रेत पिशाच हर्षित होकर नाच रहे थे उससे रणभूमिके बीच वह नदी अत्यन्त भयङ्करी मालूम होने लगी, शूरवीर पुरुषोंके मृत शरीर उस नदीमें बहे जाते थे। यमराज रूपी अर्जुनका ऐसा पराक्रम देख कुरुसेनाके योद्धाओंके चित्तमें जो कभी पूर्वकालमें नहीं हुआ था ऐसा भय उत्पन्न हुआ। (३१—३९)

अनन्तर पाण्डुपुत्र अर्जुनने अपने अस्त्रोंसे शत्रुपक्षीय वीरोंके सब अस्त्रोंको निवारण किया और भयानक कर्म करने में प्रवृत्त होकर अपने उग्र रूपको प्रगट किया। और बडे बडे रथोंको अतिक्रम कर मध्यन्दिन के सूर्य समान प्रकाशित होने लगे; तब उसकी ओर कोई भी नहीं देख सके॥ उस महात्मा अर्जुनके गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए बाण जब आकाशमें फैलने लगे तब हंस पांतिकी समान शोभित होने लगे॥ (३९–४२)

कृष्ण सारथीके सहित अर्जुन उस समय अपने अस्त्रोंके प्रभावसे तुम्हारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शयन्रौद्रमात्मानमुग्रे कर्माणि धिष्ठितः ॥ ४३ ॥
स तान्रथवरान्राजन्नत्याक्रामत्तदाऽर्जुनः ।
मोहयन्निव नाराचैर्जयद्रथवधेप्सया ॥
विसृजन्दिक्षु सर्वासु शरानसितसारथिः ॥ ४४ ॥
सरथो व्यचरत्तूर्णं प्रेक्षणीयो धनञ्जयः ।
भ्रमन्त इव शूरस्य शरव्राता महात्मनः ॥ ४५ ॥
अदृश्यन्ताऽन्तरिक्षस्थाः शतशोऽथ सहस्रशः ।
आददानं महेष्वासं सन्दधानं च सायकम् ॥ ४६ ॥
विसृजन्तं च कौन्तेयं नाऽनुपश्याम वै तदा ।
तथा सर्वा दिशो राजन्सर्वांश्च रथिनो रणे ॥ ४७ ॥
कदम्बीकृत्य कौन्तेयो जयद्रथमुपाद्रवत् ।
विव्याध च चतुःषष्ट्या शराणां नतपर्वणाम् ॥ ४८ ॥
सैन्धवाभिमुखं यान्तं योधाः सम्प्रेक्ष्य पाण्डवम् ।
न्यवर्तन्त रणाद्वीरा निराशास्तस्य जीविते ॥ ४९ ॥
यो योऽभ्यधावदाक्रन्दे तावकः पाण्डवं रणे ।
तस्य तस्याऽन्तगा बाणाः शरीरे न्यपतन्प्रभो ॥ ५० ॥

ओरके योद्धाओंके अस्त्रजालको निवारण कर उग्र रूप धारण करके अपना भयङ्कर पराक्रम प्रकाशित करने लगे ॥ हे राजन्! उस समय अर्जुनने बडे बडे रथोंको अतिक्रमण करके जयद्रथ वधकी इच्छा से अपने बाणोंसे उन सम्पूर्ण रथियोंको मोहित कर दिया; और चारों ओर अपने तीक्ष्ण बाणोंको चलाकर शीघ्रताके सहित रणभूमिमें घूमने लगे ॥ उस समय हम लोग केवल अर्जुनके धनुषसे छूटे हुए सैकडों सहस्रों बाण आकाशमण्डलमें भ्रमण करते हुए देखने लगे। वह किस समय तूणीरसे बाण निकलते धनुषपर चढाते और किस समय चलाते थे वह किसीको दिखाई नहीं देता था। ४३-४७

उन्होंने अपनी बाण-वर्षासे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूरित तथा तुम्हारी ओरके रथियोंको पीडित करके जयद्रथ की ओर दौडकर चौसठ तीक्ष्णबाणोंसे राजा जयद्रथको विद्ध किया ॥ महाराज! तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण योद्धालोग कुन्तीपुत्र अर्जुनको सिन्धुराज जयद्रथकी ओर गमन करते देख उनके जीवनसे निराश होकर संग्रामसे निवृत्त होने लगे ॥ उस समय जो वीर युद्ध-भूमिमें अर्जुनके संमुख हुए उन्हींके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबन्धसंकुलं चक्रे तव सैन्यं महारथः ।
अर्जुनो जयतां श्रेष्ठः शरैरग्न्यंशुसंनिभैः ॥ ५१ ॥
एवं तत्तव राजेन्द्र चतुरङ्गबलं तदा ।
व्याकुलीकृत्य कौन्तेयो जयद्रथमुपाद्रवत् ॥ ५२ ॥
द्रौणिं पञ्चाशताऽविध्यद्वृषसेनं त्रिभिः शरैः ।
कृपायमाणः कौन्तेयः कृपं नवभिरार्दयत् ॥ ५३ ॥
शल्यं षोडशभिर्बाणैः कर्णं द्वात्रिंशता शरैः ।
सैन्धवं तु चतुःषष्ट्या विद्ध्वा सिंह इवाऽनदत् ॥५४॥
सैन्धवस्तु तथा विद्धः शरैर्गाण्डीवधन्वना ।
न चक्षमे सुसंक्रुद्धस्तोत्रार्दित इव द्विपः ॥ ५५ ॥
स वराहध्वजस्तूर्णं गार्ध्रपत्रानजिह्मगान् ।
क्रुद्धाशीविषसङ्काशान्कर्मारपरिमार्जितान् ॥ ५६ ॥
आकर्णपूर्णांश्चिक्षेप फाल्गुनस्य रथं प्रति ।
त्रिभिस्तु विध्वा गोविन्दं नाराचैः षड्भिरर्जुनम् ॥५७॥

शरीरोंपर अर्जुनके चलाये हुए बाण पडने लगे ॥ विजय करने वालोंमें श्रेष्ठ महारथी अर्जुनने सूर्यकिरणके समान प्रकाशमान बाणोंसे तुम्हारी सेनाके सिर काट काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया; उससे सेनाके बीच अनगिनत कबन्ध दौडने लगे ॥ (४७-५१)

महाराज! इसी भांति महावीर अर्जुन तुम्हारी चतुरङ्गिणी सेनाके पुरुषोंको व्याकुल कर जयद्रथकी ओर दौडके अश्वत्थामाको पचास और वृषसेनको तीन बाणोंसे विद्ध करके कृपाचार्यको कृपा पूर्वक नव बाणोंसे विद्ध किया ॥ तिसके अनन्तर शल्यको सोलह कर्णको बत्तीस और सिन्धुराज जयद्रथको पैंसठ बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया ॥ ५२-५४

सिन्धुराज जयद्रथने गाण्डीव धनुषधारी अर्जुनके बाणोंसे विद्ध होकर उनके पराक्रमको सहन नहीं किया, वरन अंकुशसे विद्ध हुए मतवारे हाथीकी भांति क्रुद्ध होगये ॥ उन्होंने वराहध्वजासे युक्त अपने सुन्दर रथपर चढे हुए शीघ्रतासे उत्तम पानीमें बुझे और क्रोधी सर्पके समान तेजस्वी गिद्धपङ्ख युक्त बहुतसे तीक्ष्ण बाण अर्जुनकी ओर चलाये। फिर राजा जयद्रथने तीन बाणोंसे कृष्ण, छः नाराच बाणोंसे अर्जुन, आठ बाणोंसे उनके रथके चारों घोडे और एक बाणसे उनकी ध्वजाको विद्ध किया। (५५-५८)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टभिर्वाजिनोऽविध्यद् ध्वजं चैकेन पत्रिणा ।
स विक्षिप्याऽर्जुनस्तूर्णं सैन्धवप्रहिताञ्शरान् ॥ ५८ ॥
युगपत्तस्य चिच्छेद शराभ्यां सैन्धवस्य ह ।
सारथेश्च शिरः कायाद् ध्वजं च समलंकृतम् ॥ ५९ ॥
स च्छिन्नयष्टिः सुमहान्धनञ्जयशराहतः ।
वराहः सिन्धुराजस्य पपाताऽग्निशिखोपमः ॥ ६० ॥
एतस्मिन्नेव काले तु द्रुतं गच्छति भास्करे ।
अब्रवीत्पाण्डवं राजंस्त्वरमाणो जनार्दनः ॥ ६१ ॥
एष मध्ये कृतः षड्भिः पार्थ वीरैर्महारथैः ।
जीवितेप्सुर्महाबाहो भीतस्तिष्ठति सैन्धवः ॥ ६२ ॥
एताननिर्जित्य रणे षड्रथान्पुरुषर्षभ ।
न शक्यः सैन्धवो हन्तुं यतो निर्व्याजमर्जुन ॥ ६३ ॥
योगमत्र विधास्यामि सूर्यस्याऽऽवरणं प्रति ।
अस्तङ्गत इति व्यक्तं द्रक्ष्यत्येकः स सिन्धुराट् ॥ ६४ ॥
हर्षेण जीविताकांक्षी विनाशार्थं तव प्रभो ।

उस समय अर्जुनने जयद्रथके चलाये हूए बाणोंको अपने बाणोंसे काट कर एकही समय दो बाणोंसे उनके सारथीका सिर और जयद्रथकी सुन्दर ध्वजाको काटकर गिरा दिया ॥ अग्निशिखाके समान प्रकाशमान वराहचिन्हयुक्त जयद्रथकी ध्वजा अर्जुनके बाणसे कटके पृथ्वीमें गिर पडी ॥ (५७-६०)

उस ही समय श्रीकृष्णजी सूर्यको शीघ्रताके सहित अस्ताचल पर्वतपर गमन करते देख व्याकुल होकर अर्जुनसे बोले, हे महाभुज अर्जुन ! यह देखो सिन्धुराज जयद्रथ अपने जीवनकी अभिलाषा करके तुम्हारे भयसे छः महारथ वीरोंके बीच स्थित है; तुम विना इन छः महारथियोंको पराजित किये किसी भांतिसे भी सिन्धुराज जयद्रथका वध न कर सकोगे ॥ (६१-६३)

इससे यत्नवान् होकर युद्ध करो और मैं भी इस विषयमें सूर्यको छिपानेके वास्ते योगमाया प्रगट करूं; ऐसा करनेसे ही सिन्धुराज जयद्रथ इस सेनाके बीचसे पृथक् होकर प्रकाश्य-रूपसे अकेला ही सूर्यकी ओर देखने लगेगा। वह पापी जयद्रथ समझेगा,-सूर्य अस्त होनेसे ही अर्जुन प्राणत्याग करेंगे; वही विचारकर हर्षके सहित अपने प्राणरक्षाके निमित्त उन छः महारथियोंके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न गोप्स्यति दुराचारः स आत्मानं कथञ्चन ॥ ६५ ॥
तत्र च्छिद्रे प्रहर्तव्यं त्वयाऽस्य कुरुसत्तम।
व्यपेक्षा नैव कर्तव्या गतोऽस्तमिति भास्करः ॥ ६६ ॥
एवमस्त्विति बीभत्सुः केशवं प्रत्यभाषत।
ततोऽसृजत्तमः कृष्णः सूर्यस्याऽऽवरणं प्रति ॥ ६७ ॥
योगी योगेन संयुक्तो योगिनामीश्वरो हरिः।
सृष्टे तमसि कृष्णेन गतोऽस्तमिति भास्करः ॥ ६८ ॥
त्वदीया जहृषुर्योधाः पार्थनाशान्नराधिप।
ते प्रहृष्टा रणे राजन्नाऽपश्यन्सैनिका रविम् ॥ ६९ ॥
उन्नाम्य वक्त्राणि तदा स च राजा जयद्रथः।
वीक्षमाणे ततस्तस्मिन्सिन्धुराजे दिवाकरम् ॥ ७० ॥
पुनरेवाऽब्रवीत्कृष्णो धनञ्जयमिदं वचः।
पश्य सिन्धुपतिं वीरं प्रेक्षमाणं दिवाकरम् ॥ ७१ ॥
भयं हि विप्रमुच्यैतत्त्वत्तो भरतसत्तम।
अयं कालो महाबाहो वधायाऽस्य दुरात्मनः ॥ ७२ ॥

बीच कदापि स्थित न रहेगा ॥ तुम उस ही समय वैसा औसर पाकर उसके ऊपर अपने अस्त्रसे प्रहार करना। सूर्य अस्त होगये हैं ऐसा समझकर उसके वध करनेमें तुम तनिक भी विलम्ब न करना। (६४–६६)

अर्जुनने श्रीकृष्णके वचनोंको सुनकर ऐसा ही होगा कहके उनके वचनको स्वीकार किया। तिसके अनन्तर परम योगेश्वर महायोगी तीनों तापके हरनेवाले श्रीकृष्ण भगवानने सूर्यको छिपानेके वास्ते अपनी योगमायासे अन्धकार उत्पन्न किया। महाराज ! जब कृष्णने इस प्रकार अन्धकार उत्पन्न किया तब कौरवोंने समझा कि सूर्य अस्त हो गया। अब अर्जुन स्वयं प्राण त्याग करेंगे; यही विचारके तुम्हारी ओरके योद्धा लोग महा हर्षके सहित प्रसन्न हुए ॥ (६७—६९)

वे सम्पूर्ण योद्धा और राजा जयद्रथ प्रसन्न होकर सिर ऊंचा करके सूर्यकी ओर देखने लगे। जब सिंधुराज जयद्रथ इस प्रकार सूर्यकी ओर देखने लगे, तब श्रीकृष्ण फिर अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! यह देखो जयद्रथ तुम्हारे निकटमें ही निर्भय होकर सूर्यकी ओर देख रहा है॥ हे महाबाहो ! इस पापीके वधके निमित्त यही ठीक समय उपस्थित हुआ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिन्धि मूर्धानमस्याऽऽशु कुरु साफल्यमात्मनः ।
इत्येवं केशवेनोक्तः पाण्डुपुत्रः प्रतापवान् ॥ ७३ ॥
न्यवधीत्तावकं सैन्यं शरैरर्काग्निसन्निभैः ।
कृपं विव्याध विंशत्या कर्णं पञ्चाशता शरैः ॥ ७४ ॥
शल्यं दुर्योधनं चैव षड्भिः षड्भिरताडयत् ।
वृषसेनं तथाऽष्टाभिः षष्ट्या सैन्धवमेव च ॥ ७५ ॥
तथैव च महाबाहुस्त्वदीयान्पाण्डुनन्दनः ।
गाढं विद्ध्वा शरै राजञ्जयद्रथमुपाद्रवत् ॥ ७६ ॥
तं समीपस्थितं दृष्ट्वा लेलिहानमिवाऽनलम् ।
जयद्रथस्य गोप्तारः संशयं परमं गताः ॥ ७७ ॥
ततः सर्वे महाराज तव योधा जयैषिणः ।
सिषिचुः शरधाराभिः पाकशासनिराहवे ॥ ७८ ॥
संछाद्यमानः कौन्तेयः शरजालैरनेकशः ।
अक्रुध्यत्स महाबाहुरजितः कुरुनन्दनः ॥ ७९ ॥
ततः शरमयं जालं तुमुलं पाकशासनिः ।
व्यसृजत्पुरुषव्याघ्रस्तव सैन्यजिघांसया ॥ ८० ॥
ते हन्यमाना वीरेण योधा राजन्रणे तव ।

इससे तुम शीघ्र ही उसका सिर काटके अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो। (७०–७३)

पाण्डुपुत्र पराक्रमी अर्जुन श्रीकृष्णकी आज्ञा सुन सूर्यकिरणके समान अपने प्रकाशमान बाणोंसे तुम्हारी ओरके योद्धाओंका नाश करने लगे। उन्होंने कृपाचार्यको बीस और कर्णको पचास बाणोंसे विद्ध करके शल्य और दुर्योधनको छः छः बाणोंसे विद्ध किया। तिसके अनन्तर वृषसेनको आठ, जयद्रथको साठ और तुम्हारी ओरके योद्धाओंको अनगिनत बाणोंसे विद्ध करके राजा जयद्रथकी ओर दौडे ॥ (७३—७६)

महाराज ! तुम्हारी सेनाके जो संपूर्ण योद्धा लोग जयद्रथकी रक्षाके निमित्त वहां पर उपस्थित थे, वे सब अर्जुनको जलती हुई अग्निके समान अपने सम्मुख आये देख अत्यन्त ही शङ्कित हुए और विजयकी अभिलाष करके लगातार अर्जुनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। युद्धमें अपराजित कुन्तीपुत्र अर्जुनने कुरुसेनाके पुरुषोंके नाश की इच्छा कर सम्पूर्ण युद्धभूमिमें बाण ही बाण कर दिये ॥ (७७–८०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजहुः सैन्धवं भीता द्वौ समं नाऽप्यधावताम् ॥ ८१ ॥
तत्राऽद्भुतमपश्याम कुन्तीपुत्रस्य विक्रमम् ।
तादृङ् न भावी भूतो वा यच्चकार महायशाः॥ ८२ ॥
द्विपान्द्विपगतांश्चैव हयान्हयगतानपि ।
तथा स रथिनश्चैव न्यहन्रुद्रः पशूनिव ॥ ८३ ॥
न तत्र समरे कश्चिन्मया दृष्टो नराधिप ।
गजो वाजी नरो वाऽपि यो न पार्थशराहतः ॥ ८४ ॥
रजसा तमसा चैव योधाः संछन्नचक्षुषः ।
कश्मलं प्राविशन्घोरं नाऽन्वजानन्परस्परम् ॥ ८५ ॥
ते शरैर्भिन्नमर्माणः सैनिकाः पार्थचोदितैः ।
बभ्रमुश्चस्खलुः पेतुः सेदुर्मम्लुश्च भारत ॥ ८६ ॥
तस्मिन्महाभीषणके प्रजानामिव संक्षये ।

उस समय तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा अर्जुनके बाणोंसे पीडित होकर जयद्रथको त्यागकर युद्धभूमिसे हटने लगे ॥ उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा ऐसे भयभीत हो गये कि दो पुरुष मिलकर भी एक सङ्ग गमन न कर सके ॥ उस समय मैंने यशस्वी अर्जुनका ऐसा पराक्रम देखा, कि वैसा पराक्रम न कभी दीख पडा और न भविष्यहीमें दिखाई देगा ॥ वह हाथीके सहित गजपति योद्धा, घोडेके सहित घुडसवार और सारथीयोंके सहित रथियोंका इस प्रकार वध करने लगे, जैसे भगवान् रुद्र सम्पूर्ण प्राणियोंका नाश करते हैं । (८१-८३)

महाराज ! उस रणभूमि में घोडे, हाथी और मनुष्योंके बीच ऐसे कोईभी न दीख पडे, जो अर्जुनके बाणोंके पीडित न हुए होते ॥ एक तो श्रीकृष्णने योगमायासे पहले ही अन्धकार कर दिया था, उसपर फिर बाणोंके गिरनेसे महाभयङ्कर अन्धकार उत्पन्न हुआ और शूरवीरोंके पावके धक्केसे ऐसी धूलि उडी कि सम्पूर्ण पुरुषोंकी आंखोंके सामने अन्धेरा छा गया । उन योद्धाओंकी आंखोंमें इतनी धूल भर गई, कि उस समय वे लोग आंख भी न खोल सकते थे, सब चेत-रहित होगये; इससे कोई एक दूसरेको जान भी नहीं सकते थे ॥ अर्जुनके बाणोंसे पीडित होकर कोई घूमने लगे, कोई लडखडाने लगे । कितने ही गिर गये, कितने ही थक गये और कितने ही दुःखित होके पृथ्वीपर बैठे गये ॥ (८४—८६)

उस समय प्रलयकालके समान महा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रणे महति दुष्पारे वर्तमाने सुदारुणे ॥ ८७ ॥
शोणितस्य प्रसेकेन शीघ्रत्वादनिलस्य च ।
अशाम्यत्तद्रजो भौममसृक्सिक्ते धरातले ॥ ८८ ॥
आनाभि निरमज्जंश्च रथचक्राणि शोणिते ।
मत्ता वेगवता राजंस्तावकानां रणाङ्गणे ॥ ८९ ॥
हस्तिनश्च हतारोहा दारिताङ्गाः सहस्रशः ।
स्वान्यनीकानि मृद्नन्त आर्तनादाः प्रदुद्रुवुः ॥ ९० ॥
हयाश्च पतितारोहाः पत्तयश्च नराधिप ।
प्रदुद्रुवुर्भयाद्राजन्धनञ्जयशराहताः ॥ ९१ ॥
मुक्तकेशा विकवचाः क्षरन्तः क्षतजं क्षतैः ।
प्रापलायन्त सन्त्रस्तास्त्यक्त्वा रणशिरो जनाः॥ ९२ ॥
ऊरुग्राहगृहीताश्च केचित्तत्राऽभवन्भुवि ।
हतानां चाऽपरे मध्ये द्विरदानां निलिल्यिरे ॥ ९३ ॥
एवं तव बलं राजन्द्रावयित्वा धनञ्जयः ।
न्यवधीत्सायकैर्घोरैः सिन्धुराजस्य रक्षिणः ॥ ९४ ॥
द्रौणिं कृपं कर्णशल्यौ वृषसेनं सुयोधनम् ।

भयङ्कर दारुण संग्राम उपस्थित होने-पर वायुके वेगसे रुधिर बहके इधर उधर गिरनेसे धूलिका उडना बन्द होगया, कितने रथके चक्के रुधिरमें डूब गये । सवारोंके मरने से सहस्रों हाथी बाणोंसे छिन्न भिन्न होकर अपनी सेना के पुरुषोंको पांवसे मलते हुए आर्त्त नादके सहित रणभूमि में चारों ओर दौडने लगे ॥ (८७-९०)

वैसे ही सवारों सहित सुन्दर घोडे पैदल सेनाके शूरवीरोंके अस्त्रोंसे विकल होकर युद्धभूमिमें दौडने लगे । सेनाके सम्पूर्ण पुरुष कोई रुधिर बहते शरीरसे कोई खुले हुए केशके सहित और कोई वर्म-रहित होकर भयपूर्वक चारों ओर दौडने लगे । कोई अपना पांव ग्राहसे पकडा जाने के समान उसी स्थानपर गिरपडे; कितने ही योद्धा मरे हुए हाथियोंके समूहमें छिप गये ॥ ९१-९३

महाराज ! महावीर अर्जुन इस ही भांति तुम्हारी चतुरङ्गिणी सेनाके योद्धा-ओंको तितर बितर करके अपने महाघोर बाणोंसे सिन्धुराज जयद्रथके रक्षकोंके ऊपर प्रहार करने लगे ॥ उन्होंने कर्ण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, वृषसेन, शल्य और सुयोधनको अपने तीक्ष्ण बाणोंके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छादयामास तीव्रेण शरजालेन पाण्डवः ॥ ९५ ॥
न गृह्णन्न क्षिपन्राजन्मुञ्चन्नापि च सन्दधत् ।
अदृश्यताऽर्जुनः संख्ये शीघ्रास्त्रत्वात्कथञ्चन ॥ ९६ ॥
धनुर्मण्डलमेवाऽस्य दृश्यते स्माऽस्यतः सदा ।
सायकाश्च व्यदृश्यन्त निश्चरन्तः समन्ततः ॥ ९७ ॥
कर्णस्य तु धनुच्छित्त्वा वृषसेनस्य चैव ह ।
शल्यस्य सूतं भल्लेन रथनीडादपातयत् ॥ ९८ ॥
गाढविद्धावुभौ कृत्वा शरैः स्वस्रीयमातुलौ ।
अर्जुनो जयतां श्रेष्ठो द्रौणिशारद्वतौ रणे ॥ ९९ ॥
एवं तान्व्याकुलीकृत्य त्वदीयानां महारथान् ।
उज्जहार शरं घोरं पाण्डवोऽनलसन्निभम् ॥ १०० ॥
इन्द्राशनिसमप्रख्यं दिव्यमस्त्राभिमन्त्रितम् ।
सर्वभारसहं शश्वद्गन्धमाल्यार्चितं महत् ॥ १०१ ॥
वज्रेणाऽस्त्रेण संयोज्य विधिवत्कुरुनन्दनः ।
समादधन्महाबाहुर्गाण्डीवे क्षिप्रमर्जुनः ॥ १०२ ॥
तस्मिन्सन्धीयमाने तु शरे ज्वलनतेजसि ।

जालसे छिपा दिया ॥ उस समय पाण्डु पुत्र अर्जुन किस समय धनुष फेरते साधते और कब छोडते थे, वह उनके हाथोंकी फुर्त्तीके कारण कुछ भी नहीं दीखता था। वह पराक्रमी अर्जुन जिस समय लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, उस समय चारों ओर समूहके समूह बाण चलते हुए दिखाई देते थे, और हाथमें फिरता हुआ उनका गाण्डीव धनुष भी दिखाई देने लगा ॥ (९४–९७)

उन्होंने कर्ण और वृषसेनके धनुषको काट कर एक भल्लास्त्रसे शल्यके सारथी का वध करके उसे रथसे पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ तिसके अनन्तर अर्जुनने कृपाचार्य और अश्वत्थामाको भी अपने बाणोंसे अत्यन्त विद्ध किया। महाराज! विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने इसी भांति तुम्हारी ओरके महारथियोंको व्याकुल कर इन्द्रके वज्र-समान अत्यन्त कठोर दिव्य मन्त्रसे अभिमन्त्रित सदा फूल मालासे पूजित अग्निके समान तेजस्वी महा भयङ्कर एक बाण अपने तूणीरसे निकाला ॥ उस बाणको विधिपूर्वक वज्र अस्त्रके सहित संयुक्त करके शीघ्रताके सहित गाण्डीव धनुष पर चढाया ॥ (९८–१०२)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय ४६,६१६
विषय संख्या ६१० आगत नं०
लेखक दा१८म
शीर्षक

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या
25 MAY 1987			
21 DEC 1988			
2004/39			
17 OCT 1995			
A-1389/34			

य ॥ १०३ ॥
: ।
मनः ॥ १०४ ॥
रः ।
॥ १०५ ॥
श्रुतः ।
तम् ॥ १०६ ॥
।
वना ॥ १०७ ॥
दिभिः ।
र्योः ॥ १०८ ॥
तः ।
र्षभः ॥ १०९ ॥
नो भुवि ।
रिन्दमः॥११०॥

हे भार... समान उस... पर चढाय... मारे डरके... श्रीकृष्ण श... हे अर्जुन ! ... चाहता है, तुम इसी समय पापी जयद्रथके सिरको काट डालो, परन्तु जैसे जयद्रथका वध हो सकेगा उसकी युक्ति मैं तुमसे कहता हूं ॥ (१०३–१०५)

जयद्रथके पिता पृथ्वीके बीचमें विख्यात वृद्धक्षत्रनाम सिन्धुदेशके प्रसिद्ध राजा थे जब उन्होंने इस शत्रुनाशन जयद्रथको बहुत काल बीतनेपर पुत्र

...स समय बादलके गर्ज्जने ...शब्द समान गम्भीरस्वरसे ...ाणी हुई, हे मनुष्योंके ...ाज वृद्धक्षत्र ! इन्द्रिय ...गुणोंसे यह पुत्र सूर्य और ...ाजपुरुषोंके अनुसार ही प्रतापी होगा ॥ शूरवीर पुरुष सदा इस का आदर करेंगे और क्षत्रियोंके बीच यह एक मुख्य महारथ योद्धा करके गिना जावेगा; परन्तु अनन्तर जब यह शत्रुओंके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त होवेगा, उस समय एक प्रसिद्ध क्षत्रिय योद्धा क्रुद्ध होके युद्धभूमिके बीच इसका सिर काटेगा । (१०६—११०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छादयामास तीव्रेण शरजालेन पाण्डवः ॥ ९५ ॥
न गृह्णन्न क्षिपन्राजन्मुञ्चन्नापि च सन्दधत् ।
वात्कथञ्चन ॥ ९६ ॥
स्यतः सदा ।
समन्ततः ॥ ९७ ॥
चैव ह ।
ातयत् ॥ ९८ ॥
ीयमातुलौ ।
द्रतौ रणे ॥ ९९ ॥
ं महारथान् ।
सन्निभम् ॥ १०० ॥
भिमन्त्रितम् ।
तं महत् ॥ १०१ ॥
कुरुनन्दनः ।
मर्जुनः ॥ १०२ ॥
नतेजसि ।

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

जा ॥ तिसके अनन्तर अर्जुनने कृपा-
पुत्र और अश्वत्थामाको भी अपने
औ अत्यन्त विद्ध किया। महाराज!
फु करनेवालोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने इसी
वह तुम्हारी ओरके महारथियोंको
अ कर इन्द्रके वज्र-समान अत्यन्त
समय चारों ओर समूहके समूह
दिव्य मन्त्रसे अभिमन्त्रित सदा
चलते हुए दिखाई देते थे, और हाथमें फूल मालासे पूजित अग्निके समान तेजस्वी महा भयङ्कर एक बाण अपने तूणीरसे निकाला॥ उस बाणको विधिपूर्वक वज्र अस्त्रके सहित संयुक्त करके शीघ्रताके सहित गाण्डीव धनुष पर चढाया॥ (९८–१०२)

उन्होंने कर्ण और वृषसेनके धनुषको काट कर एक भल्लास्त्रसे शल्यके सारथी का वध करके उसे रथसे पृथ्वीमें गिरा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरिक्षे महानादो भूतानामभवन्नृप ॥ १०३ ॥
अब्रवीच्च पुनस्तत्र त्वरमाणो जनार्दनः ।
धनञ्जय शिरश्छिन्धि सैन्धवस्य दुरात्मनः ॥ १०४ ॥
अस्तं महीधरश्रेष्ठं यियासति दिवाकरः ।
शृणुष्वैतच्च वाक्यं मे जयद्रथवधं प्रति ॥ १०५ ॥
वृद्धक्षत्रः सैन्धवस्य पिता जगति विश्रुतः ।
स कालेनेह महता सैन्धवं प्राप्तवान्सुतम् ॥ १०६ ॥
जयद्रथमभिप्रेक्ष्य वागुवाचाऽशरीरिणी ।
नृपमन्तर्हिता वाणी मेघदुन्दुभिनिःस्वना ॥ १०७ ॥
तवाऽऽत्मजो मनुष्येन्द्र कुलशीलदमादिभिः ।
गुणैर्भविष्यति विभो सदृशो वंशयोर्द्वयोः ॥ १०८ ॥
क्षत्रियप्रवरो लोके नित्यं शूराभिसत्कृतः ।
किं त्वस्य युध्यमानस्य संग्रामे क्षत्रियर्षभः ॥ १०९ ॥
शिरश्छेत्स्यति संक्रुद्धः शत्रुश्चाऽलक्षितो भुवि ।
एतच्छ्रुत्वा सिन्धुराजो ध्यात्वा चिरमरिन्दमः॥११०॥

हे भारत ! जब अर्जुनने अग्निके समान उस तेजस्वी बाणको अपने धनुष पर चढाया तब आकाशवासी प्राणी मारे डरके हाहाकार करने लगे ॥ इधर श्रीकृष्ण शीघ्रताके सहित अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन ! यह देखो, सूर्य अस्त हुआ चाहता है, तुम इसी समय पापी जयद्रथके सिरको काट डालो, परन्तु जैसे जयद्रथका वध हो सकेगा उसकी युक्ति मैं तुमसे कहता हूं ॥ (१०३–१०५)

जयद्रथके पिता पृथ्वीके बीचमें विख्यात वृद्धक्षत्रनाम सिन्धुदेशके प्रसिद्ध राजा थे जब उन्होंने इस शत्रुनाशन जयद्रथको बहुत काल बीतनेपर पुत्र रूपसे पाया उस समय बादलके गर्जने तथा नगाडेके शब्द समान गम्भीरस्वरसे यह आकाशवाणी हुई, हे मनुष्योंके राजा सिन्धुराज वृद्धक्षत्र ! इन्द्रिय निग्रह आदि गुणोंसे यह पुत्र सूर्य और चन्द्रवंशीय राजपुरुषोंके अनुसार ही प्रतापी होगा ॥ शूरवीर पुरुष सदा इस का आदर करेंगे और क्षत्रियोंके बीच यह एक मुख्य महारथ योद्धा करके गिना जावेगा; परन्तु अनन्तर जब यह शत्रुओंके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त होवेगा, उस समय एक प्रसिद्ध क्षत्रिय योद्धा क्रुद्ध होके युद्धभूमिके बीच इसका सिर काटेगा । (१०६—११०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञातीन्सर्वानुवाचेदं पुत्रस्नेहाभिचोदितः ।
संग्रामे युध्यमानस्य वहतो महतीं धुरम् ॥ १११ ॥
धरण्यां मम पुत्रस्य पातयिष्यति यः शिरः ।
तस्याऽपि शतधा मूर्धा फलिष्यति न संशयः ॥ ११२ ॥
एवमुक्त्वा ततो राज्ये स्थापयित्वा जयद्रथम् ।
वृद्धक्षत्रो वनं यातस्तपश्चोग्रं समास्थितः ॥ ११३ ॥
सोऽयं तप्यति तेजस्वी तपो घोरं दुरासदम् ।
समन्तपञ्चकादस्माद्बहिर्वानरकेतन ॥ ११४ ॥
तस्माज्जयद्रथस्य त्वं शिरश्छित्त्वा महामृधे ।
दिव्येनाऽस्त्रेण रिपुहन्घोरेणाऽद्भुतकर्मणा ॥ ११५ ॥
सकुण्डलं सिन्धुपतेः प्रभञ्जनसुतानुज ।
उत्सङ्गे पातयस्वाऽस्य वृद्धक्षत्रस्य भारत ॥ ११६ ॥
अथ त्वमस्य मूर्धानं पातयिष्यसि भूतले ।
तवापि शतधा मूर्धा फलिष्यति न संशयः ॥ ११७ ॥
यथा चेदं न जानीयात्स राजा तपसि स्थितः ।

शत्रुओंके नाश करनेवाले वृद्धक्षत्रने इस प्रकार आकाशवाणी सुनकर बहुत देरतक चिन्ता किया फिर पुत्रके ऊपर प्रीति करके अपनी जातिके पुरुषोंके बीच यह वचन बोले, "युद्धभूमिके बीच जो पुरुष मेरे इस वीर धुरीण पुत्रका सिर काटके पृथ्वीमें गिरावेगा उसका सिर एक सौ टुकडे होकर पृथ्वी में गिर पडेगा ॥" (११०-११२)

ऐसा कहकर राजा वृद्धक्षत्र जयद्रथ को राज्य समर्पण कर वनके बीच जाकर कठिन तपस्या करनेमें प्रवृत्त हुए। वह तेजस्वी राजा इसी समन्त-पञ्चकके बाहरी हिस्सेमें अत्यन्त कठोर तपस्या कर रहे हैं। हे शत्रुनाशन कपि-ध्वजावाले अर्जुन! तुम वायुपुत्र भीम-सेनके भाई हो, इससे आज युद्धभूमिके बीच यह अद्भुत कार्य दिखाओ, सिन्धु-राज जयद्रथके कुण्डलभूषित सिरको काटके तपस्या करनेवाले उनके पिताके गोदीमें गिरा दो ॥ (११३-११६)

यदि तुम मेरे वचनको न मानकर जयद्रथके सिरको काटके पृथ्वीमें गिरा-ओगे तो तुम्हारा सिर भी निःसन्देह एक सौ टुकके होके पृथ्वीमें गिर पडेगा। इससे तुम दिव्य अस्त्रके प्रभावसे ऐसी गुप्तरीतिसे जयद्रथका सिर उनके पिताके क्रोडमें रखदो जिसमें वह तपस्वी राजा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा कुरु कुरुश्रेष्ठ दिव्यमस्त्रमुपाश्रितः ॥ ११८ ॥
नह्यसाध्यमकार्यं वा विद्यते तव किञ्चन ।
समस्तेष्वपि लोकेषु त्रिषु वासवनन्दन ॥ ११९ ॥
एतच्छ्रुत्वा तु वचनं सृक्किणी परिसंलिहन् ।
इन्द्राशनिसमस्पर्शं दिव्यमन्त्राभिमन्त्रितम् ॥ १२० ॥
सर्वभारसहं शश्वद्गन्धमाल्यार्चितं शरम् ।
विससर्जार्जुनस्तूर्णं सैन्धवस्य वधे धृतम् ॥ १२१ ॥
स तु गाण्डीवनिर्मुक्तः शरः श्येन इवाऽऽशुगः ।
छित्त्वा शिरः सिन्धुपतेरुत्पपात विहायसम् ॥ १२२ ॥
तच्छिरः सिन्धुराजस्य शरैरूर्ध्वमवाहयत् ।
दुर्हृदामप्रहर्षाय सुहृदां हर्षणाय च ॥ १२३ ॥
शरैः कदम्बकीकृत्य काले तस्मिंश्च पाण्डवः ।
योधयामास तांश्चैव पाण्डवः षण्महारथान् ॥ १२४ ॥
ततः सुमहदाश्चर्यं तत्राऽपश्याम भारत ।
समन्तपञ्चकाद्बाह्यं शिरो यद्व्यहरत्ततः ॥ १२५ ॥

वृद्धक्षत्र यह न जान सके, कि मेरे ही पुत्रका सिर है । हे कुरुकुल भूषण अर्जुन ! मैं तीनों लोकके बीच कोई भी ऐसा कार्य नहीं देखता हूं, जो तुमसे असाध्य होवे; क्योंकि तुम इन्द्रके पुत्र हो ॥ (११७-११९)

अर्जुनने श्रीकृष्णके उपदेशको सुनकर महात्मा जयद्रथके सिरको काटनेके निमित्त सूर्यके समान तेजस्वी, वज्रके समान कठोर, सदा फूल-मालासे पूजित और दिव्य-मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके एक वेगगामी प्रचण्ड बाण ग्रहण करके जयद्रथकी ओर चलाया ॥ अर्जुनकी भुजासे छूटा हुआ वह बाण वेगगामी बाजपक्षीकी भांति जयद्रथके सिरको काटकर आकाशमार्गसे चलने लगा। शत्रुओं के शोक और सुहृदोंके हर्षको बढाता हुआ उस कटे हुए सिरको लेकर आकाशकी ओर उडा ॥ (१२०-१२३)

उस ही समयके बीच महावीर अर्जुन बहुतसे बाणोंको वर्षा कर कर्ण आदि छः महारथियोंके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ तिसके अनन्तर हम लोगोंने उस स्थानपर अर्जुनका महा आश्चर्य पराक्रम देखा, कि अर्जुनका चलाया हुआ वह दिव्य अस्त्र कटे हुए जयद्रथके सिरको लेकर समन्त पंचकके बाहरी हिस्सेमें उपस्थित हुआ ॥ (१२४—१२५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतस्मिन्नेव काले तु वृद्धक्षत्रो महीपतिः ।
सन्ध्यामुपास्ते तेजस्वी सम्बन्धी तव मारिष ॥१२६॥
उपासीनस्य तस्याऽथ कृष्णकेशं सकुण्डलम् ।
सिन्धुराजस्य मूर्धानमुत्सङ्गे समपातयत् ॥ १२७ ॥
तस्योत्सङ्गे निपतितं शिरस्तच्चारुकुण्डलम् ।
वृद्धक्षत्रस्य नृपतेरलक्षितमरिन्दम ॥ १२८ ॥
कृतजप्यस्य तस्याऽथ वृद्धक्षत्रस्य भारत ।
प्रोत्तिष्ठतस्तत्सहसा शिरोऽगच्छद्धरातलम् ॥ १२९ ॥
ततस्तस्य नरेन्द्रस्य पुत्रमूर्धनि भूतले ।
गते तस्याऽपि शतधा मूर्धाऽगच्छदरिन्दम ॥ १३० ॥
ततः सर्वाणि सैन्यानि विस्मयं जग्मुरुत्तमम् ।
वासुदेवं च बीभत्सुं प्रशशंसुर्महारथम् ॥ १३१ ॥
ततो विनिहते राजन्सिन्धुराजे किरीटिना ।
तमस्तद्वासुदेवेन संहृतं भरतर्षभ ॥ १३२ ॥
पश्चाज्ज्ञातं महीपाल तव पुत्रैः सहानुगैः ।
वासुदेवप्रयुक्तेयं मायेति नृपसत्तम ॥ १३३ ॥
एवं स निहतो राजन्पार्थेनाऽमिततेजसा ।

महाराज ! महातेजस्वी तेरे सम्बन्धी राजा वृद्धक्षत्र उसी स्थान पर संध्या उपासना कर रहे थे, उस ही समय काले केशसे युक्त सुन्दर कुण्डलोंसे शोभित जयद्रथका कटा हुआ सिर अर्जुनके दिव्य अस्त्र प्रभावसे अलक्षित रूपसे उनकी गोदीमें गिरा ॥ ज्योंही वह भयभीत हो उठके खडे होने लगे, त्योंही उनकी गोदीमेंसे जयद्रथका सिर पृथ्वीमें गिरा । जब जयद्रथका सिर पृथ्वीमें गिरा तब राजा वृद्धक्षत्रका सिर भी एक सौ टुकडे होकर पृथ्वीमें गिर पडा ॥ (१२६—१३०)

तिसके अनन्तर सेनाके योद्धा लोग विस्मित होकर अर्जुन और श्रीकृष्णकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे ॥ जब सिन्धुराज जयद्रथ अर्जुनके अस्त्रोंसे मारे गये तब श्रीकृष्णने अपनी योगमायाके अन्धकारको दूर किया ॥ उस समय अनुयाइयोंके सहित तुम्हारे पुत्रलोग भली भांति जान गये, कि यह केवल श्रीकृष्णकी मायासे अन्धकार हुआ था ॥ महाराज ! तुम्हारे दामाद सिन्धुराज जयद्रथ आठ अक्षौहिणी सेनाका नाश

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षौहिणीरष्ट हत्वा जामाता तव सैन्धवः ॥ १३४ ॥
हतं जयद्रथं दृष्ट्वा तव पुत्रा नराधिप ।
दुःखादश्रूणि मुमुचुर्निराशाश्चाऽभवञ्जये ॥ १३५ ॥
ततो जयद्रथे राजन्हते पार्थेन केशवः ।
दध्मौ शङ्खं महाबाहुर्जुनश्च परन्तपः ॥ १३६ ॥
भीमश्च वृष्णिसिंहश्च युधामन्युश्च भारत ।
उत्तमौजाश्च विक्रान्तः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् ॥ १३७ ॥
श्रुत्वा महान्तं तं शब्दं धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
सैन्धवं निहतं मेने फाल्गुनेन महात्मना ॥ १३८ ॥
ततो वादित्रघोषेण स्वान्योधान्पर्यहर्षयत् ।
अभ्यवर्तत संग्रामे भारद्वाजं युयुत्सया ॥ १३९ ॥
ततः प्रववृते राजन्नस्तं गच्छति भास्करे ।
द्रोणस्य सोमकैः सार्धं संग्रामो लोमहर्षणः ॥ १४० ॥
ते तु सर्वे प्रयत्नेन भारद्वाजं जिघांसवः ।
सैन्धवे निहते राजन्नयुध्यन्त महारथाः ॥ १४१ ॥
पाण्डवास्तु जयं लब्ध्वा सैन्धवं विनिहत्य च ।

कराके अन्तमें अत्यंत तेजस्वी अर्जुनके बाणसे मारे गये ॥ (१३१—१३४)

तुम्हारे पुत्र लोग जयद्रथको मरा हुआ देख दुःखित होकर आंसूको बहाने लगे और विजयकी इच्छासे निराश होगये । उधर श्रीकृष्ण जयद्रथ को अर्जुनके बाणोंसे मरा हुआ देख आनन्दित होके पाञ्चजन्य शंख बजाने लगे । अनन्तर शत्रुनाशन महाबाहु अर्जुन, भीमसेन, पुरुषसिंह सात्यकि, पराक्रमी युधामन्यु और उत्तमौजाने भी अपने शङ्ख बजाए ॥ (१३५--१३७)

उन महाघोर शङ्खोंके शब्दको सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने जाना, कि महात्मा अर्जुनके हाथसे जयद्रथ मारे गये ॥ ऐसा समझ कर अपनी सेनाके पुरुषोंको हर्षित करने लगे, और युद्धकी इच्छासे भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्यके संमुख उपस्थित हुए ॥ सूर्य अस्त होनेके समय उन सम्पूर्ण योद्धाओंके सङ्ग दोणाचार्यका महाघोर रोएंको खडा करनेवाला संग्राम होने लगा ॥ सिन्धुराज जयद्रथ के मारे जाने पर वे सम्पूर्ण महारथी लोग द्रोणाचार्यके वध करनेकी इच्छासे यत्न पूर्वक उनके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ (१३८–१४१)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयोधयंस्तु ते द्रोणं जयोन्मत्तास्ततस्ततः ॥ १४२ ॥
अर्जुनोऽपि ततो योधांस्तावकान्रथसत्तमान् ।
अयोधयन्महाबाहुर्हत्वा सैन्धवकं नृपम् ॥ १४३ ॥
स देवशत्रूनिव देवराजः किरीटमाली व्यधमत्समन्तात् ।
यथा तमांस्यभ्युदितस्तमोघ्नः पूर्वप्रतिज्ञां समवाप्य वीरः ॥१४४॥ [६२९३]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि जयद्रथवधे षट्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४६ ॥

धृतराष्ट्र उवाच—तस्मिन्विनिहते वीरे सैन्धवे सत्यसाचिना ।
मामका यदकुर्वन्त तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ १ ॥
सञ्जय उवाच— सैन्धवं निहतं दृष्ट्वा रणे पार्थेन भारत ।
अमर्षवशमापन्नः कृपः शारद्वतस्ततः ॥ २ ॥
महता शरवर्षेण पाण्डवं समवाकिरत् ।
द्रौणिश्चाऽभ्यद्रवद्राजन्रथमास्थाय फाल्गुनम् ॥ ३ ॥
तावेतौ रथिनां श्रेष्ठौ रथाभ्यां रथसत्तमौ ।
उभावुभयतस्तीक्ष्णैर्विशिखैरभ्यवर्षताम् ॥ ४ ॥

उस समय पाण्डव लोग जयद्रथके मरनेसे विजय हर्षके सहित आनन्दित हुए और द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ महाराज ! जैसे सूर्य उदय हो कर अन्धकारको दूर कर देता है, और जैसे देवराज इन्द्रने देवोंके शत्रु दानवों का नाश किया था, वैसे ही किरीटधारी महावीर अर्जुनने जयद्रथ वधके विषय में अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको अपने बाणोंसे छिन्न भिन्न कर दिया, फिर महात्मा अर्जुन मुख्य मुख्य रथियोंके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ (१४२-१४४) [६२९३]

द्रोणपर्वमें एकसौ छियालिस अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ सैंतालिस अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! जब महावीर सिन्धुराज जयद्रथ अर्जुन के बाणोंसे मारे गये; उस समय कौरवोंने किस कार्यका अनुष्ठान किया, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो ॥ (१)

सञ्जय बोले, हे महाराज ! सिन्धुराज जयद्रथके मरने पर शरद्वतपुत्र कृपाचार्य और उनके भानजे अश्वत्थामाने क्रुद्ध होकर अपने रथ पर चढके अर्जुनको निज बाणोंसे छिपा दिया। रथियोंमें श्रेष्ठ वे दोनों पराक्रमी वीर दोनों ओर से अपने रथोंपर चढकर अर्जुनके ऊपर तीक्ष्णबाणोंकी वर्षा करने लगे। (२-४)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तथा शरवर्षाभ्यां सुमहद्भ्यां महाभुजः ।
पीड्यमानः परामार्तिमगमद्रथिनां वरः ॥ ५ ॥
सोऽजिघांसुर्गुरुं संख्ये गुरोस्तनयमेव च ।
चकाराऽऽचार्यकं तत्र कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ॥ ६ ॥
अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य द्रौणेः शारद्वतस्य च ।
मन्दवेगानिषूंस्ताभ्यामजिघांसुरवासृजत् ॥ ७ ॥
ते चापि भृशमभ्यघ्नन्विशिखाः पार्थचोदिताः ।
बहुत्वात्तु परामार्तिं शराणां तावगच्छताम् ॥ ८ ॥
अथ शारद्वतो राजन्कौन्तेयशरपीडितः ।
अवासीदद्रथोपस्थे मूर्च्छामभिजगाम ह ॥ ९ ॥
विह्वलं तमभिज्ञाय भर्तारं शरपीडितम् ।
हतोऽयमिति च ज्ञात्वा सारथिस्तमपावहत् ॥ १० ॥
तस्मिन्भग्ने महाराज कृपे शारद्वते युधि ।
अश्वत्थामाऽप्यपायासीत्पाण्डवेयाद्रथान्तरम् ॥ ११ ॥
दृष्ट्वा शारद्वतं पार्थो मूर्च्छितं शरपीडितम् ।
रथ एव महेष्वासः सकृपं पर्यदेवयत् ॥ १२ ॥

रथियोंमें श्रेष्ठ महाबाहु अर्जुन उन दोनों महारथियोंके बाणोंसे पीडित होकर अत्यन्त कातर हुए और आचार्य पुत्र अश्वत्थामा और कृपाचार्य के वध की इच्छा कर के गुरु की भांति पराक्रम प्रकाशित करने लगे ॥ अनन्तर अर्जुनने अपने अस्त्रों के प्रभाव से कृपाचार्य और अश्वत्थामा के बाणोंको निवारण कर उनके वधकी अभिलाष नहीं किया; केवल धीरे धीरे उन के ऊपर अपने बाण चलाने लगे। परन्तु वे मन्दगतिसे चलनेवाले बाण भी क्रम से झुण्डके झुंड चलकर उन दोनों महारथियोंको अत्यन्त पीडित करने लगे, उससे शरद्वत पुत्र कृपाचार्य अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर चेष्टा रहित होकर मूर्च्छित होगये ॥ (५-९)

उनका सारथी अपने स्वामी कृपाचार्य को मूर्च्छित देख समझा कि "ये प्राण रहित होगये" ऐसा विचार कर शीघ्रताके सहित रथ लेकर वहांसे प्रस्थान किया॥ महाराज ! कृपाचार्यको रणभूमि से पृथक् होते देख, अश्वत्थामा भी अर्जुन के समीपसे भाग गये ॥ (१०-११)

इधर कुन्तीपुत्र धनुर्द्धारी अर्जुन शरद्वतपुत्र कृपाचार्यको अपने बाणोंसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्रुपूर्णमुखो दीनो वचनं चेदमब्रवीत्।
पश्यन्निदं महाप्राज्ञः क्षत्ता राजानमुक्तवान् ॥ १३ ॥
कुलान्तकरणे पापे जातमात्रे सुयोधने।
नीयतां परलोकाय साध्वयं कुलपांसनः ॥ १४ ॥
अस्माद्धि कुरुमुख्यानां महदुत्पत्स्यते भयम्।
तदिदं समनुप्राप्तं वचनं सत्यवादिनः ॥ १५ ॥
तत्कृते ह्यद्य पश्यामि शरतल्पगतं गुरुम्।
धिगस्तु क्षात्रमाचारं धिगस्तु बलपौरुषम् ॥ १६ ॥
को हि ब्राह्मणमाचार्यमभिद्रुह्येत मादृशः।
ऋषिपुत्रो ममाऽऽचार्यो द्रोणस्य परमः सखा ॥ १७ ॥
एष शेते रथोपस्थे कृपो महाणपीडितः।
अकामयानेन मया विशिखैरर्दितो भृशम् ॥ १८ ॥
अवसीदन्रथोपस्थे प्राणान्पीडयतीव मे।
पुत्रशोकाभितप्तेन शरैरभ्यर्दितेन च ॥ १९ ॥

पीडित और मूर्च्छित देख कपिध्वजासे युक्त रथमें बैठकर विलाप करने लगे॥ और आंखोंमें आंसू भरकर दीनताके सहित यह वचन बोले, कुल नाश करने वाले, महापापी, दुष्टात्मा दुर्योधन जब प्रसन्न हुआ था तभी महाबुद्धिमान् विदुरने सम्पूर्ण भविष्य घटनाओंको जानकर धृतराष्ट्रसे यह वचन कहा था। "हे महाराज धृतराष्ट्र! इस कुलघाती पुत्रको इसी समय त्याग दीजिये, ऐसा करनेसे आपका कल्याण होवेगा और यदि इसे त्याग नहीं करोगे तो इसके जरिये कुरुवंशका नाश करनेवाला महा भय उपास्थित होगा।" (१२-१५)

परन्तु अन्धे राजा धृतराष्ट्रने विदुर के वचनोंको न माना। इस समय सत्यवादी विदुरके वचन सफल हुए; और मैंने अपने गुरु कृपाचार्यको दुर्योधनके कारणसेही शरशय्यापर शयन कराया है। क्षत्रियोंके आचार बल और पुरुषार्थको धिक्कार है! क्योंकि संसारके बीच मेरे समान कौन पुरुष ब्राह्मण-द्रोही हो सकता है? ओहो! ये ऋषि-पुत्र गुरु और द्रोणाचार्यके परम मित्र होकर भी मेरे बाणोंसे पीडित होकर रथपर शयन कर रहे हैं। उन्हें पीडित करनेकी मुझे अभिलाष नहीं थी तौभी वह मेरे बाणोंसे पीडित होकर रथ में मूर्च्छित होगये हैं उससे मेरा चित्त अत्यन्त दुःखित हो रहा है। १५-१९

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यस्तो बहुभिर्बाणैर्दशधर्मगतेन वै ।
शोचयत्येष नियतं भूयः पुत्रवधाद्धि माम् ॥ २० ॥
कृपणं स्वरथे सन्नं पश्य कृष्ण यथागतम् ।
उपाकृत्य तु वै विद्यामाचार्येभ्यो नरर्षभाः ॥ २१ ॥
प्रयच्छन्तीह ये कामान्देवत्वमुपयान्ति ते ।
ये च विद्यामुपादाय गुरुभ्यः पुरुषाधमाः ॥ २२ ॥
घ्नन्ति तानेव दुर्वृत्तास्ते वै निरयगामिनः ।
तदिदं नरकायाऽद्य कृतं कर्म मया ध्रुवम् ॥ २३ ॥
आचार्यं शरवर्षेण रथे सादयता कृपम् ।
यत्तत्पूर्वमुपाकुर्वन्नस्त्रं मामब्रवीत्कृपः ॥ २४ ॥
न कथञ्चन कौरव्य प्रहर्तव्यं गुराविति ।
तदिदं वचनं साधोराचार्यस्य महात्मनः ॥ २५ ॥
नाऽनुष्ठितं तमेवाऽऽजौ विशिखैरभिवर्षता ।
नमस्तस्मै सुपूज्याय गौतमायाऽपलायिने ॥ २६ ॥

मैं पुत्रशोकसे अत्यन्त ही कातर और उनके चलाये हुए बाणोंसे पीडित होकर उन्मत्तके समान विचाररहित होगया हूं । मैंने लगातार अपने बाणोंसे उनके ऊपर प्रहार किया है। हे कृष्ण ! वह अपने रथपर पीडित होकर कातरता सहित बैठे हैं; तुम उनकी दशाको देखो उन्हें इस प्रकारसे देख अभिमन्यु के वधसे मुझे जो शोक उत्पन्न हुआ था उससे भी बढके कृपाचार्यको चेतरहित देखकर मैं दुःखित हो रहा हूं । (१९–२१)

इस संसारके बीच जो उत्तम पुरुष गुरुके समीप विद्या सीखकर उन्हें उनकी इच्छानुसार दक्षिणा देते हैं वे देवलोकमें जाते हैं; परन्तु जो नीच पुरुष गुरुसे विद्या सीखकर उनके नाश करनेमें प्रवृत्त होते हैं, वे गुरुघाती, अधम-पुरुष महा घोर नरकमें पतित होते हैं । इससे मैंने आज गुरुको प्रसन्न करनेके बदले उन्हें रथमें चेतरहित करके नरकमें जानेका अनुष्ठान किया है । (२१–२४)

पहिले अस्त्रविद्या सिखानेके समय कृपाचार्यने मुझसे कहा था, हे तात ! तुम कभी गुरुके ऊपर प्रहार मत करना, परन्तु मैंने उस साधु महात्मा गुरुके ऊपर अपने बाणोंसे प्रहार करके उनकी आज्ञा उल्लङ्घन किया है । अत्यन्त पूजनीय युद्धमें पीछे न हटनेवाले महात्मा कृपाचार्यको मैं नमस्कार करता हूं । हे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धिगस्तु मम वार्ष्णेय यदस्मै प्रहराम्यहम् ।
तथा विलपमाने तु सव्यसाचिनि तं प्रति ॥ २७ ॥
सैन्धवं निहतं दृष्ट्वा राधेयः समुपाद्रवत् ।
तमापतन्तं राधेयमर्जुनस्य रथं प्रति ॥ २८ ॥
पाञ्चाल्यौ सात्यकिश्चैव सहसा समुपाद्रवन् ।
उपायान्तं तु राधेयं दृष्ट्वा पार्थो महारथः ॥ २९ ॥
प्रहसन्देवकीपुत्रमिदं वचनमब्रवीत् ।
एष प्रयात्यधिरथिः सात्यकेः स्यन्दनं प्रति ॥ ३० ॥
न मृष्यति हतं नूनं भूरिश्रवसमाहवे ।
यत्र यात्येष तत्र त्वं चोदयाऽश्वाञ्जनार्दन ॥ ३१ ॥
न सौमदत्तिपदवीं गमयेत्सात्यकिं वृषः ।
एवमुक्तो महाबाहुः केशवः सव्यसाचिना ॥ ३२ ॥
प्रत्युवाच महातेजाः कालयुक्तमिदं वचः ।
अलमेष महाबाहुः कर्णायैकोऽपि पाण्डव ॥ ३३ ॥
किं पुनर्द्रौपदेयाभ्यां सहितः सात्वतर्षभः ।

कृष्ण! मुझे धिक्कार है, क्योंकि मैंने गुरुके ऊपर प्रहार किया! (२४–२७)

महाराज! सव्यसाची अर्जुन कृपाचार्यके वास्ते इसी भांति विलाप कर रहे थे, उस ही समय कर्ण जयद्रथके वधसे कोपित होकर अर्जुनकी ओर दौडे; कर्णको अर्जुनके रथपर आते हुए देखकर युद्धामन्यु उत्तमौजा और सात्यकी उसकी ओर बढे। (२७—२९)

तब अर्जुन राधापुत्र कर्णको अपने रथके समीप उपस्थित देख हंसते हुए श्रीकृष्णसे यह वचन बोले, हे कृष्ण! कर्णको मेरी ओर आते देख, युधामन्यु उत्तमौजा और सात्यकि उनके सम्मुख उपस्थित हुए हैं। देखो, अधिरथ पुत्र कर्ण भूरिश्रवाका मरना न सहके सात्यकिकी ओर दौड रहे हैं, वह जिस स्थान पर जारहे हैं, उसी स्थलपर मेरा रथ ले चलो; जिससे कर्ण क्रुद्ध होकर भूरिश्रवाके समीप सात्यकिको न भेज सकें॥ (२९–३२)

महातेजस्वी महाभुज श्रीकृष्ण अर्जुनके वचनको सुनकर बोले, हे अर्जुन! यह महाबाहु वृष्णिवंशीय सात्यकि अकेले ही कर्णके संग युद्ध करनेमें समर्थ हैं॥ उस पर भी युद्धामन्यु और उत्तमौजा जब उनकी सहायता कर रहे हैं, तब सात्यकिके निमित्त कौनसी चिन्ता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न च तावत्क्षमः पार्थ तव कर्णेन सङ्गरः ॥ ३४ ॥
प्रज्वलन्ती महोल्केव तिष्ठत्यस्य हि वासवी ।
त्वदर्थं पूज्यमानैषा रक्ष्यते परवीरहन् ॥ ३५ ॥
अतः कर्णः प्रयात्वत्र सात्वतस्य यथा तथा ।
अहं ज्ञास्यामि कौन्तेय कालमस्य दुरात्मनः ।
यत्रैनं विशिखैस्तीक्ष्णैः पातयिष्यसि भूतले ॥ ३६ ॥

धृतराष्ट्र उवाच—योऽसौ कर्णेन वीरस्य वार्ष्णेयस्य समागमः ।
हते तु भूरिश्रवसि सैन्धवे च निपातिते ॥ ३७ ॥
सात्यकिश्चापि विरथः कं समारूढवान्रथम् ।
चक्ररक्षौ च पाञ्चाल्यौ तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ ३८ ॥

सञ्जय उवाच— हन्त ते वर्तयिष्यामि यथा वृत्तं महारणे ।
शुश्रूषस्व स्थिरो भूत्वा दुराचरितमात्मनः ॥ ३९ ॥
पूर्वमेव हि कृष्णस्य मनोगतमिदं प्रभो ।
विजेतव्यो यथा वीरः सात्यकिः सौमदत्तिना ॥ ४० ॥
अतीतानागते राजन्स हि वेत्ति जनार्दनः ।

है? विशेष करके कर्णके समीप जब तक जलते हुए महालुक समान इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्ति वर्त्तमान है, तब तक कर्णके सङ्ग द्वैरथ युद्धमें तुम्हें प्रवृत्त होना उचित नहीं है। क्योंकि कर्ण उस अमोघशक्तिकी सदा पूजा अर्चा करके तुम्हारे ही वास्ते रक्खे हुआ है। हे शत्रुनाशन ! इससे कर्ण सात्यकिकी ओर जिस भांतिसे गमन कर रहा है उसे वैसे ही गमन करने दो। इस दुष्टात्माके वधका समय मैं अच्छी प्रकार जानता हूं। जिस समय उसे तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करके पृथ्वीमें गिराना होगा, वह समय मैं तुम से बतला दूंगा ॥ (३२–३६)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय भूरिश्रवा और जयद्रथके मरनेपर वृष्णिवंशीय सात्यकिका कैसा संग्राम हुआ ? और रथ-रहित सात्यकि, युधामन्यु और उत्तमौजा किसके रथ पर चढे ? यह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो ॥ (३७–३८)

सञ्जय बोले, महाराज! मैं उस महासंग्रामका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करता हूं, आप चित्त लगा कर अपने दुराचार को सुनिये ॥ हे राजन् ! श्रीकृष्ण भगवान् भूत भविष्य सम्पूर्ण विषयोंको जानते हैं, सात्यकि भूरिश्रवाके निकट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः सूतं समाहूय दारुकं सन्ददेश ह ॥ ४१ ॥
रथो मे युज्यतां कल्यमिति राजन्महाबलः ।
नहि देवा न गन्धर्वा न यक्षोरगराक्षसाः ॥ ४२ ॥
मानवा वाऽपि जेतारः कृष्णयोः सन्ति केचन ।
पितामहपुरोगाश्च देवाः सिद्धाश्च तं विदुः ॥ ४३ ॥
तयोः प्रभावमतुलं शृणु युद्धं तु तत्तथा ।
सात्यकिं विरथं दृष्ट्वा कर्णं चाऽभ्युद्यतं रणे ॥ ४४ ॥
दध्मौ शङ्खं महानादमार्षभेणाऽथ माधवः ।
दारुकोऽवेत्य सन्देशं श्रुत्वा शङ्खस्य च स्वनम् ॥ ४५ ॥
रथमन्वानयत्तस्मै सुपर्णोच्छ्रितकेतनम् ।
स केशवस्याऽनुमते रथं दारुकसंयुतम् ॥ ४६ ॥
आरुरोह शिनेः पौत्रो ज्वलनादित्यसन्निभम् ।
कामगैः शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकैः ॥ ४७ ॥
हयोदग्रैर्महावेगैर्हेमभाण्डविभूषितैः ।
युक्तं समारुह्य च तं विमानप्रतिमं रथम् ॥ ४८ ॥

पराजित होगे; इसे श्रीकृष्णने पहिले ही जान लिया था ॥ इस ही कारण उन्होंने 'कल्ह तुम मेरे रथको साज्जित करके तैयार रखना, और जब मेरे पाञ्चजन्य शङ्खका शब्द सुनना, उस ही समय रथ लेकर मेरे समीप उपस्थित होना' ऐसी ही आज्ञा किया। (३९-४२)

हे राजन्! इससे मनुष्य, देवता, गन्धर्व, सर्प वा राक्षस आदि कोई भी इस संसारके बीच ऐसे नहीं है, जो कृष्ण अर्जुनको जीत सकें; अधिक क्या कहूं, पितामह ब्रह्मा, देवता और सिद्ध लोग भी उन दोनोंके महाप्रभावके विषयको जानते हैं ॥ जो हो उनका अतुल प्रभाव और जिस प्रकार युद्ध हुआ था, वह मैं तुम्हारे समीप वर्णन करता हूं। श्रीकृष्ण सात्यकिको रथ रहित और कर्णको युद्धके निमित्त उनकी ओर दौडते देख भयङ्कर शब्दवाला अपना पाञ्चजन्य शङ्ख ऋषभ स्वरसे बजाने लगे ॥ (४२—४५)

दारुक सारथी कृष्णके शङ्खका शब्द सुन गरुड ध्वजावाले उनके रथको लेकर वहां उपस्थित हुआ। तब शिनिपौत्र सात्यकि कृष्णकी आज्ञासे सुवर्ण भूषित शीघ्रगामी शैव्य सुग्रीव मेघपुष्प और बलाहक नाम चारों घोडोंसे युक्त दारुक सारथीके चलानेसे चलते हुए अग्निके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यद्रवत राधेयं प्रवपन्सायकान्बहून् ।
चक्ररक्षावपि तदा युधामन्यूत्तमौजसौ ॥ ४९ ॥
धनञ्जयरथं हित्वा राधेयं प्रत्युदीयतुः ।
राधेयोऽपि महाराज शरवर्षं समुत्सृजन् ॥ ५० ॥
अभ्यद्रवत्सुसंक्रुद्धो रणे शैनेयमच्युतम् ।
नैव दैवं न गान्धर्वं नाऽऽसुरं न च राक्षसम् ॥ ५१ ॥
तादृशं भुवि नो युद्धं दिवि वा श्रुतमित्युत ।
उपारमत तत्सैन्यं सरथाश्वनरद्विपम् ॥ ५२ ॥
तयोर्दृष्ट्वा महाराज कर्म संमूढचेतसः ।
सर्वे च समपश्यन्त तद्युद्धमतिमानुषम् ॥ ५३ ॥
तयोर्नृवरयो राजन्सारथ्यं दारुकस्य च ।
गतप्रत्यागतावृत्तैर्मण्डलैः सन्निवर्तनैः ॥ ५४ ॥
सारथेस्तु रथस्थस्य काश्यपेयस्य विस्मिताः ।
नभस्तलगताश्चैव देवगन्धर्वदानवाः ॥ ५५ ॥

समान उस प्रकाशमान रथ पर चढे । वह उस विमान तुल्य रथ पर चढके अपने बाणोंको चलाते हुए राधापुत्र कर्णकी ओर दौडे । (४५—४९)

अर्जुनके चक्ररक्षक युधामन्यु और उत्तमौजा भी अर्जुनके रथको छोड कर कर्णकी ओर दौडे । तब कर्ण भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए महा पराक्रमी सात्यकिकी ओर दौडे ॥ उन दोनों पुरुषसिंहोंका जैसा युद्ध हुआ, वैसा संग्राम पृथ्वी स्वर्ग देवलोक गन्धर्व असुर और राक्षसोंके बीच भी न कभी देखा गया, न सुनाही गया था । अधिक क्या कहूं, उन दोनोंके युद्ध कार्यको देखकर गजसवार, घुडसवार, रथी और पैदल सेनाके योद्धा लोग तथा तुम्हारी चतुरङ्गिणी सेनाके योद्धा लोग चित्र लिखेके समान युद्धभूमिमें खडे हुए और युद्धसे निवृत्त होकर उन दोनों पुरुषसिंहोंका अलौकिक संग्राम और दारुकके रथ चलानेकी निपुणताई देखने लगे ॥ (४९ —५४)

विशेष कर कश्यपकुलनन्दन दारुक सारथीके रथ चलानेकी नाना भांतिकी गतिसे आगे बढना, पीछे लौटना, मण्डलाकार रथ घुमाना समीपमें रथको उपस्थित करना, इत्यादि रथ चलानेकी गतिसे कर्णके सङ्ग सात्यकिका युद्ध देखकर आकाशमें स्थित देवता, दानव, और गन्धर्व आदि सम्पूर्ण प्राणी विस्मित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतीवाऽबाहिता द्रष्टुं कर्णशैनेययो रणम् ।
मित्रार्थे तौ पराक्रान्तौ शुष्मिणौ स्पर्धिनौ रणे ॥ ५६ ॥
कर्णश्चाऽमरसङ्काशो युयुधानश्च सात्यकिः ।
अन्योन्यं तौ महाराज शरवर्षैरवर्षताम् ॥ ५७ ॥
प्रममाथ शिनेः पौत्रं कर्णः सायकवृष्टिभिः ।
अमृष्यमाणो निधनं कौरव्यजलसन्धयोः ॥ ५८ ॥
कर्णः शोकसमाविष्टो महोरग इव श्वसन् ।
स शैनेयं रणे क्रुद्धः प्रदहन्निव चक्षुषा ॥ ५९ ॥
अभ्यधावत वेगेन पुनः पुनररिन्दम ।
तं तु सक्रोधमालोक्य सात्यकिः प्रत्ययुद्धयत ॥ ६० ॥
महता शरवर्षेण गजं प्रतिगजो यथा ।
तौ समेतौ नरव्याघ्रौ व्याघ्राविव तरस्विनौ ॥ ६१ ॥
अन्योन्यं सन्ततक्षाते रणेऽनुपमविक्रमौ ।
ततः कर्णं शिनेः पौत्रः सर्वपारसवैः शरैः ॥ ६२ ॥
बिभेद सर्वगात्रेषु पुनः पुनररिन्दम ।
सारथिं चाऽस्य भल्लेन रथनीडादपातयत् ॥ ६३ ॥

हुए । महाराज ! महातेजस्वी और देवतोंके समान पराक्रमी सात्यकि और कर्णने यत्नवान् होकर अपने मित्रोंके कार्य-सिद्धि के वास्ते आपस में बाणों की वर्षा से युद्ध करना आरम्भ किया ॥ (५४–५७)

शत्रुनाशन कर्ण कुरुवंशी भूरिश्रवा और जलसन्धके वधसे अत्यन्त क्रुद्ध और शोकित हुए थे, इससे वह विषधर सर्पके समान लम्बी सांस छोडते हुए सात्यकिकी ओर इस प्रकार वेगपूर्वक दौडने लगे, मानो दृष्टिसे देखकर ही उसे भस्म कर देंगे ॥ (५८–६०)

सात्यकिने कर्णको अत्यन्त कोपित देख जैसे एक हाथी दूसरे हाथीसे युद्ध करता है, वैसे ही अनेक बाणोंकी वर्षा कर कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगे । महा पराक्रमी वे दोनों पुरुषसिंह आपसमें युद्ध करते हुए अपने बाणोंसे एक दूसरेकी शरीरको इस प्रकार छिन्न भिन्न करने लगे; जैसे दो व्याघ्र आपसमें युद्ध करते हैं । (६०–६२)

तिसके अनन्तर शिनि-पौत्र सात्यकि सर्वपारसव बाणोंसे बार बार कर्णके शरीरको क्षत-विक्षत करने लगे । फिर सात्यकिने एक भल्लास्त्रसे उनके सारथी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वांश्च चतुरः श्वेतान्निजघान शितैः शरैः ।
छित्त्वा ध्वजं रथं चैव शतधा पुरुषर्षभ ॥ ६४ ॥
चकार विरथं कर्णं तव पुत्रस्य पश्यतः ।
ततो विमनसो राजंस्तावकास्ते महारथाः ॥ ६५ ॥
वृषसेनः कर्णसुतः शल्यो मद्राधिपस्तथा ।
द्रोणपुत्रश्च शैनेयं सर्वतः पर्यवारयन् ॥ ६६ ॥
ततः पर्याकुलं सर्वं न प्राज्ञायत किञ्चन ।
तथा सात्यकिना वीरे विरथे सूतजे कृते ॥ ६७ ॥
हाहाकारस्ततो राजन्सर्वसैन्येष्वभून्महान् ।
कर्णोऽपि विरथो राजन्सात्वतेन कृतः शरैः ॥ ६८ ॥
दुर्योधनरथं तूर्णमारुरोह विनिःश्वसन् ।
मानयंस्तव पुत्रस्य बाल्यात्प्रभृति सौहृदम् ॥ ६९ ॥
कृतां राज्यप्रदानेन प्रतिज्ञां परिपालयन् ।
तथा तु विरथं कर्णं पुत्रांश्च तव पार्थिव ॥ ७० ॥
दुःशासनमुखान्वीरान्नाऽवधीत्सात्यकिर्वशी ।

का वध करके पृथ्वीमें गिराया, और चोखे बाणोंसे उनके चारों घोडोंको मारडाला । अनन्तर कर्णके रथ और ध्वजाको एक सौ टुकडे करके तुम्हारे पुत्रोंके सम्मुख ही में उन्हें रथरहित कर दिया । (६२–६५)

उससे तुम्हारी ओरके महारथ योद्धा, कर्णपुत्र वृषसेन, मद्रराज शल्य और द्रोणपुत्र अश्वत्थामा पहिले शोकित हुए फिर सबने मिल कर सात्यकिको चारों ओरसे घेर लिया ॥ उस समय सम्पूर्ण रणभूमिमें ऐसा अन्धकार होगया, कि कुछ भी नहीं दीख पडता था । जब कर्ण सात्यकिके अस्त्रोंसे रथरहित हुए तब तुम्हारी सेनाके बीच महाघोर हाहाकार शब्द होने लगा । (६५–६८)

परन्तु कर्णने सात्यकिके अस्त्रोंसे रथ रहित होकर तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके सङ्ग बालक अवस्थासे जो मित्रता हुई थी, उसको स्मरण किया और दुर्योधनके समीप राज्य पानेके कारण जो पाण्डवोंको पराजित करनेके वास्ते प्रतिज्ञा किया था, उसे पूर्ण करनेके निमित्त लम्बी सांस छोडते हुए दुर्योधनके रथपर जा चढे । महाराज ! जितेन्द्रिय सात्यकिने इस ही भांति रथरहित कर्ण और दुःशासन आदि तुम्हारे शूरवीर पुत्रोंका नाश नहीं किया । उन्होंने भीम अर्जुनकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षन्प्रतिज्ञां भीमेन पार्थेन च पुरा कृताम् ॥ ७१ ॥
विरथान्विह्वलांश्चक्रे न तु प्राणैर्व्ययोजयत्।
भीमसेनेन तु वधः पुत्राणां ते प्रतिश्रुतः ॥ ७२ ॥
अनुद्यूते च पार्थेन वधः कर्णस्य संश्रुतः।
वधे त्वकुर्वन्यत्नं ते तस्य कर्णमुखास्तदा ॥ ७३ ॥
नाऽशक्नुवंस्ततो हन्तुं सात्यकिं प्रवरा रथाः।
द्रौणिश्च कृतवर्मा च तथैवाऽन्ये महारथाः ॥ ७४ ॥
निर्जिता धनुषैकेन शतशः क्षत्रियर्षभाः।
कांक्षता परलोकं च धर्मराजस्य च प्रियम् ॥ ७५ ॥
कृष्णयोः सदृशो वीर्ये सात्यकिः शत्रुतापनः।
जितवान्सर्वसैन्यानि तावकानि हसन्निव ॥ ७६ ॥
कृष्णो वापि भवेल्लोके पार्थो वापि धनुर्धरः।
शैनेयो वा नरव्याघ्र चतुर्थस्तु न विद्यते ॥ ७७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच— अजय्यं वासुदेवस्य रथमास्थाय सात्यकिः।
विरथं कृतवान्कर्णं वासुदेवसमो युधि ॥ ७८ ॥
दारुकेण समायुक्तः स्वबाहुबलदर्पितः।

करी हुई पहली प्रतिज्ञा स्मरण कर कर्ण और तुम्हारे पुत्रोंका नाश न करके उन्हें केवल रथ रहित करके अपने चोखे बाणोंके प्रहारसे विकल कर दिया। क्योंकि जुआ खेलनेके समय भीमसेनने तुम्हारे पुत्रों और अर्जुनने कर्णके वधके वास्ते प्रतिज्ञा किया था॥ (६८-७३)

जो हो कर्ण आदि महारथी योद्धा लोग यत्नवान् होकर भी सात्यकिका वध न कर सके, सात्यकिने स्वर्ग लोकमें गमन करनेकी अभिलाष और धर्मराज युधिष्ठिरके प्रिय कार्य करनेकी इच्छासे अश्वत्थामा कृतवर्मा तथा दूसरे सैकडों महारथी क्षत्रियोंको एक धनुषसे ही पराजित किया॥ महाराज! कृष्ण अर्जुनके समान पराक्रमी सात्यकिने खेलवाडकी तरह तुम्हारे सम्पूर्ण सेनाको पराजित किया॥ ऐसे कार्य करनेवाले श्रीकृष्ण भगवान् धनुर्द्धारी अर्जुन और पुरुषसिंह सात्यकिको छोडकर पृथ्वीके बीच चौथा कोई भी पुरुष विद्यमान नहीं है॥ (७३-७७)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! कृष्णके समान युद्ध विद्या जाननेवाले सात्यकिने कृष्णके अजेय रथपर चढकर कर्णको रथ रहित किया, परन्तु दारुककी सहायता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच्चिदन्यं समारूढः सात्यकिः शत्रुतापनः ॥ ७९ ॥
एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं कुशलो ह्यसि भाषितुम् ।
असह्यं तमहं मन्ये तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ ८० ॥

सञ्जय उवाच— शृणु राजन्यथा वृत्तं रथमन्यं महामतिः ।
दारुकस्याऽनुजस्तूर्णं कल्पनाविधिकल्पितम् ॥ ८१ ॥
आयसैः काञ्चनैश्चापि पट्टैः सन्नद्धकूबरम् ।
तारासहस्रखचितं सिंहध्वजपताकिनम् ॥ ८२ ॥
अश्वैर्वातजवैर्युक्तं हेमभाण्डपरिच्छदैः ।
सैन्धवैरिन्दुसङ्काशैः सर्वशब्दातिगैर्हयैः ॥ ८३ ॥
चित्रकाञ्चनसन्नाहैर्वाजिमुख्यैर्विशाम्पते ।
घण्टाजालाकुलरवं शक्तितोमरबिभ्रुतम् ॥ ८४ ॥
युक्तं सांग्रामिकैर्द्रव्यैर्बहुशस्त्रपरिच्छदैः ।
रथं सम्पादयामास मेघगम्भीरनिःस्वनम् ॥ ८५ ॥
तं समारुह्य शैनेयस्तव सैन्यमुपाद्रवत् ।

से युक्त और अपने बाहुबल से मतवारे सात्यकि कृष्ण ही के रथ पर स्थित रहे ? वा दूसरे रथ पर चढे ? मैं इस वृत्तान्तको सुननेकी इच्छा करता हूं, तुम समस्त वृत्तान्त मेरे समीप विस्तार पूर्वक वर्णन करो । क्योंकि मैं अकेले सात्यकि को ही सम्पूर्ण सेना के पुरुषों से अजेय समझता हूं ॥ (७८–८०)

सञ्जय बोले, महाराज ! तुमने जो वृत्तान्त मुझसे पूछा है, मैं उसे विस्तार पूर्वक कहता हूं; चित्त लगाकर सुनो । थोडे ही समयके अनन्तर महा बुद्धिमान दारुकका छोटा भाई भली भांति सज्जित लोहा और सुवर्णसे भूषित वर्म और अस्त्रोंसे युक्त सहस्रों तारा चिह्नसे खचित सिंहचिन्हवाली पताकाके सहित एक रथ लेकर सात्यकिके समीप उपस्थित हुआ । उस रथमें वायुके समान गमन करनेवाले सुवर्ण भूषित वर्मसे युक्त बडे शरीरवाले चन्द्रमाके समान सफेद सिन्धुदेशीय उत्तम घोडे जुते हुए थे और उस रथमें इतनी घण्टियां लगी थीं, कि उनके ठनाठन बजनेका शब्द सम्पूर्ण शब्दको अतिक्रम करके सुनाई देने लगा ॥ वह रथ शक्ति तोमर और अनेक भांतिके शस्त्र तथा युद्धके योग्य वस्तुओंसे शोभित होकर बिजलीके समान प्रकाशित होने लगा ॥ शिनिपौत्र सात्यकि बादलकी भांति गम्भीर शब्दसे घडघडाते हुए उस सुन्दर रथ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारुकोऽपि यथाकामं प्रययौ केशवान्तिकम् ॥ ८६ ॥
कर्णस्यापि रथं राजञ्शङ्खगोक्षीरपाण्डुरैः।
चित्रकाञ्चनसन्नाहैः सदश्वैर्वेगवत्तरैः ॥ ८७ ॥
हेमकक्ष्याध्वजोपेतं कल्पितयन्त्रपताकिनम्।
अग्र्यं रथं सुयन्तारं बहुशस्त्रपरिच्छदम् ॥ ८८ ॥
उपाजग्मुस्तमास्थाय कर्णोऽप्यभ्यद्रवद्रिपून्।
एतत्ते सर्वमाख्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ ८९ ॥
भूयश्चापि निबोधेमं तवाऽपनयजं क्षयम्।
एकत्रिंशत्तव सुता भीमसेनेन पातिताः ॥ ९० ॥
दुर्मुखं प्रमुखे कृत्वा सततं चित्रयोधिनम्
शतशो निहताः शूराः सात्वतेनार्जुनेन च ॥ ९१ ॥
भीष्मं प्रमुखतः कृत्वा भगदत्तं च भारत।
एवमेष क्षयो वृत्तो राजन्दुर्मन्त्रिते तव ॥ ९२ ॥ [६३८५]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि कर्णसात्यकियुद्धे सप्तचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः॥१४७॥

धृतराष्ट्र उवाच– तथा गतेषु शूरेषु तेषां मम च सञ्जय।

पर चढ कर तुम्हारी सेनाकी ओर दौडे और दारुकने अपनी इच्छानुसार श्रीकृष्ण के समीप गमन किया ॥ (८१–८६)

महाराज ! तब शङ्ख और गायके दूधके समान सफेद वर्ण विचित्र सुवर्ण-के वर्मसे शोभित, अत्यन्त वेगगामी भली भांतिसे शिक्षित घोडोंके सहित, नाना भांतिके यन्त्र और अस्त्रशस्त्र आदि वस्तुओंसे पूरित सुवर्णभूषित ध्वजा पताकासे शोभित निपुण सारथीसे चलता हुआ एक उत्तम रथ कर्णके वास्ते उप-स्थित हुआ। कर्ण उस रथ पर चढके शत्रुओंको नाश करनेके वास्ते उनकी ओर दौडे। (८७–८९)

महाराज ! तुमने जो कुछ पूछा था उसे मैंने वर्णन किया। इस समय तु-म्हारी अनीतिसे जो प्राणियोंका नाश हुआ उसे सुनिये। महाराज ! तुम्हारे दुर्मुख आदि इकतीस पराक्रमी पुत्र भीमसेनके हाथसे और भीष्म, भगदत्त आदि सैकडों बलवान् योद्धा अर्जुन और सात्यकिके हाथसे मारे गये; इससे सम्पूर्ण शूरवीर पुरुषोंका नाश तुम्हारे अविचार और दुष्ट-नीतिसे ही होरहा है ॥(८९-९२)

एकसौ सैंतालिस अध्याय समाप्त। [६३८५]

द्रोणपर्वमें एकसौ अडतालिस अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पाण्डव और कौरवोंकी सेनाके शूरवीर योद्धा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किं वै भीमस्तदाऽकार्षीत्तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ १ ॥

सञ्जय उवाच— विरथो भीमसेनो वै कर्णबाक्शल्यपीडितः ।
अमर्षवशमापन्नः फाल्गुनं वाक्यमब्रवीत् ॥ २ ॥
पुनः पुनस्तूबरक मूढ औदरिकेति च ।
अकृतास्त्रक मा योत्सीर्बाल संग्रामकातर ॥ ३ ॥
इति मामब्रवीत्कर्णः पश्यतस्ते धनञ्जय ।
एवं वक्ता च मे वध्यस्तेन चोक्तोऽस्मि भारत ॥ ४ ॥
एतद्भूतं महाबाहो त्वया सह कृतं मया ।
तथैतन्मम कौन्तेय यथा तव न संशयः ॥ ५ ॥
तद्बुधाय नरश्रेष्ठ स्मरैतद्वचनं मम ।
यथा भवति तत्सत्यं तथा कुरु धनञ्जय ॥ ६ ॥
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य भीमस्याऽमितविक्रमः ।
ततोऽर्जुनोऽब्रवीत्कर्णं किञ्चिदभ्येत्य संयुगे ॥ ७ ॥

लोग जब इस प्रकार युद्धमें स्थित हुए उस समय भीम, अर्जुन और सात्यकिने किस कार्यका अनुष्ठान किया ? (१)

सञ्जय बोले, महाराज ! जिस समय भीमसेन रणभूमिमें कर्णके अस्त्रोंसे रथ रहित हुए थे, उस समय कर्णने भीमसेन को बहुतसी कडवी बातें कही थीं । इस समय भीमसेनने क्रुद्ध होकर कर्णके कहे हुए सम्पूर्ण कठोर वचनोंको अर्जुनके समीप वर्णन किया ॥ हे अर्जुन ! कर्णने तुम्हारे सम्मुख हीमें मुझे कहा है, तू पेटू और थोडे मूछवाला है, तू अस्त्र-शस्त्रोंकी विद्या नहीं जानता, तुम युद्ध मत करो, तू बालक है और तू युद्ध करने योग्य नहीं है । इसी प्रकार नाना भांतिके कठोर वचन कर्णने मुझे कहे हैं । (२–४)

हे महाबाहु अर्जुन ! पहिले जब तुमने प्रतिज्ञा किया था, उस समय मैंने भी यह प्रण किया था, कि जो पुरुष मेरे विषयमें ऊपर कहे कठोर वचनोंका प्रयोग करेगा, वह अवश्य ही मेरा वध्य होगा; इस समय कर्णने मुझे वैसे ही कठोर वचन कहा है । देखिये प्रतिज्ञा रक्षा करनेके विषयमें जैसे तुम्हारा प्रण है, वैसे ही मेरा भी है इसमें कुछ सन्देह नहीं । हे पुरुषश्रेष्ठ ! इस समय मेरे वचनको स्मरण कर जिससे सत्य रक्षित होवे उसे पूर्ण करनेके निमित्त यत्नवान् होइये । (४–६)

तब अत्यन्त पराक्रमी अर्जुन भीमसेनकी बात सुनकर कर्णके समीप जाकर वह वचन बोले, हे सुतपुत्र कर्ण ! तुम्हारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ण कर्ण वृथादृष्टे सूतपुत्राऽऽत्मसंस्तुत ।
अधर्मबुद्धे शृणु मे यत्त्वां वक्ष्यामि साम्प्रतम् ॥ ८ ॥
द्विविधं कर्म शूराणां युद्धे जयपराजयौ ।
तौ चाऽप्यनित्यौ राधेय वासवस्याऽपि युध्यतः ॥ ९ ॥
मुमूर्षुर्युयुधानेन विरथो विकलेन्द्रियः ।
मद्वध्यस्त्वमिति ज्ञात्वा जित्वा जीवन्विसर्जितः ॥ १० ॥
यदृच्छया रणे भीमं युध्यमानं महाबलम् ।
कथञ्चिद्विरथं कृत्वा यत्त्वं रूक्षमभाषथाः ॥ ११ ॥
अधर्मस्त्वेष सुमहाननार्यचरितं च तत् ।
नाऽरिं जित्वाऽतिकत्थन्ते न च जल्पन्ति दुर्वचः ॥ १२ ॥
न च कश्चन निन्दति सन्तः शूरा नरर्षभाः ।
त्वं तु प्राकृतविज्ञानस्तत्तद्वदसि सूतज ॥ १३ ॥
बह्वबद्धमकर्ण्यं च चापलादपरीक्षितम् ।
युध्यमानं पराक्रान्तं शूरमार्यव्रते रतम् ॥ १४ ॥
यदवोचोऽप्रियं भीमं नैतत्सत्यं वचस्तव ।

बुद्धि सदा अधर्ममें रत है इस ही कारण तुम सदा सर्वदा अपनी बडाई करते हो ॥ जो हो इस समय मेरे वचनोंको सुनो; युद्धभूमिमें शूरवीर पुरुषोंकी जीत वा हार होती है, वह जीतना और हारना अनिश्चित है अर्थात् युद्धभूमिमें कौन पुरुष जीतेगा; इसकी कुछ स्थिरता नहीं है, क्योंकि अनेक बार देवराज इन्द्रकी भी पराजय होती देखी गई है ॥ (७—९)

अभी क्षण भर समय व्यतीत हुआ कि सात्यकिने तुम्हें रथरहित करके मूर्च्छित कर दिया था । उन्होंने तुम्हें मेरा वध्य जानकर केवल युद्धभूमिमें पराजित किया है; परन्तु तुम्हारा प्राण नाश नहीं किया ॥ और तुमने दैवी इच्छासे भीमसेनको रथरहित करके जो कडवी बातें कहीं उससे अत्यन्त ही अधर्मकी बढती हुई है ! क्योंकि उत्तम स्वभाववाले शूरवीर पुरुष शत्रुको पराजित करके अपनी बडाई नहीं करते, न शत्रुको कडवे वचन सुनाते तथा न उसकी निन्दा ही करते हैं ! (१०–१३)

परन्तु तुम थोडी बुद्धिवाले और सूत कुलमें उत्पन्न हुए हो, इस ही कारण अपनी चपलतासे कुछ विचार न करके तुमने भीमसेनको कडवे और अप्रियवचन सुनाकर असम्बद्ध प्रलाप किया है । हे राधापुत्र ! तुमने श्रेष्ठ पुरुषोंके व्रतमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्यतां सर्वसैन्यानां केशवस्य ममैव च ॥ १५ ॥
विरथो भीमसेनेन कृतोऽसि बहुशो रणे ।
न च त्वां परुषं किञ्चिदुक्तवान्पाण्डुनन्दनः ॥ १६ ॥
यस्मात्तु बहुरूक्षं च आवितस्ते वृकोदरः ।
परोक्षं यच्च सौभद्रो युष्माभिर्निहतो मम ॥ १७ ॥
तस्मादस्याऽचलेपस्य सद्यः फलमवाप्नुहि ।
त्वया तस्य धनुश्छिन्नमात्मनाशाय दुर्मते ॥ १८ ॥
तस्माद्वध्योऽसि मे मूढ सभृत्यसुतबान्धवः ।
कुरु त्वं सर्वकृत्यानि महत्ते भयमागतम् ॥ १९ ॥
हन्ताऽस्मि वृषसेनं ते प्रेक्षमाणस्य संयुगे ।
ये चाऽन्येऽप्युपयास्यन्ति बुद्धिमोहेन मां नृपाः ॥२०॥
तांश्च सर्वान्हनिष्यामि सत्येनाऽऽयुधमालभे ।
त्वां च मूढाऽकृतप्रज्ञमतिमानिनमाहवे ॥ २१ ॥
दृष्ट्वा दुर्योधनो मन्दो भृशं तप्यति पातितम् ।
अर्जुनेन प्रतिज्ञाते वधे कर्णसुतस्य तु ॥ २२ ॥

स्थित महाबली पराक्रमी महावीर भीमसेनको युद्ध करनेके समय जो कुछ अप्रिय वचन कहा है वह कुछ भी ठीक नहीं है । पाण्डुपुत्र भीमसेनने सम्पूर्ण सेनाके पुरुषों, कृष्ण तथा मेरे सम्मुख हीमें तुम्हें कई वार रथ रहित किया है; परन्तु उन्होंने कुछ भी कठोर वचन तुम्हारे विषयमें नहीं कहा॥ (१३–१६)

जो हो तुमने जब भीमसेनको अनेक कडवी बातें कहा और मेरे न रहते सब कोई मिलकर अभिमन्युका वध किया; उस अपराधका फल तुम्हें शीघ्र ही मिलेगा ॥ रे नीच बुद्धिवाले कर्ण ! तूने अपने नाशहीके वास्ते अभिमन्युका धनुष काटा था; इस ही कारण मैं तुम्हारे पुत्र सेवक और बन्धु वान्धवोंके सहित तुम्हारा वध करूंगा । तुम इस ही समय अपने कर्तव्य कार्यको पूरा करो; क्योंकि तुम्हें इस समय महाभय उपस्थित हुआ है ॥ (१७–१९)

इसके अतिरिक्त मैं अस्त्र स्पर्श करके प्रतिज्ञा करता हूं, कि तुम्हारे सम्मुख हीमें तुम्हारे पुत्र वृषसेन, और दूसरे राजा लोग जो युद्धभूमिमें मेरे सम्मुख होवेंगे ; उन सबका वध करूंगा । रे मूढ ! तुझे तनिक भी बुद्धि नहीं है, तू केवल आत्माभिमानी ही है, इससे वह पापी दुर्योधन रणभूमिमें तुझे मरा हुआ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान्सुतुमुलः शब्दो बभूव रथिनां तदा।
तस्मिन्नाकुलसंग्रामे वर्तमाने महाभये ॥ २३ ॥
मन्दरश्मिः सहस्रांशुरस्तं गिरिमुपाद्रवत्।
ततो राजन्हृषीकेशः संग्रामशिरसि स्थितम् ॥ २४ ॥
तीर्णप्रतिज्ञं बीभत्सुं परिष्वज्यैनमब्रवीत्।
दिष्ट्या सम्पादिता जिष्णो प्रतिज्ञा महती त्वया ॥ २५ ॥
दिष्ट्या विनिहतः पापो वृद्धक्षत्रः सहात्मजः।
धार्तराष्ट्रबलं प्राप्य देवसेनाऽपि भारत ॥ २६ ॥
सीदेत समरे जिष्णो नाऽत्र कार्या विचारणा।
न तं पश्यामि लोकेषु चिन्तयन्पुरुषं क्वचित् ॥ २७ ॥
त्वदृते पुरुषव्याघ्र य एतद्योधयेद्बलम्।
महाप्रभावा बहवस्त्वया तुल्याधिकाऽपि वा ॥ २८ ॥
समेताः पृथिवीपाला धार्तराष्ट्रस्य कारणात्।
ते त्वां प्राप्य रणे क्रुद्धा नाऽभ्यवर्तन्त दंशिताः ॥ २९ ॥
तव वीर्यं बलं चैव रुद्रशक्रान्तकोपमम्।

देखकर पश्चात्ताप करेगा। (२०–२२)

महाराज! जब अर्जुनने कर्णके पुत्र वृषसेनके वधके वास्ते प्रतिज्ञा किया। तब रथियोंकी सेनामें महाघोर तुमुल शब्द होने लगा। उस महा भयङ्कर संग्रामके समय भगवान् सूर्यने तेजरहित होकर अस्ताचल पर्वत पर गमन किया। (२२–२४)

तिसके अनन्तर श्रीकृष्णचन्द्र प्रतिज्ञासे पार हुए रणभूमिमें स्थित अर्जुनको आलिङ्गन करके यह वचन कहने लगे। हे अर्जुन! प्रारब्धहीसे तुमने इस बडी प्रतिज्ञाको पूर्ण किया; प्रारब्धही से सिन्धुराज वृद्धक्षत्र पुत्रजयद्रथके सहित नष्ट हुए हैं; नहीं तो कुरुसेनाके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त होनेसे देवता भी कौरवोंकी महासेनाको जीतनेमें समर्थ नहीं हो सकते इसमें कुछ सन्देह नहीं है। हे पुरुषसिंह! मैं भली भांति विचार कर दोनों लोकमें तुम्हें छोडके ऐसा किसी पुरुषको नहीं देखता जो इस कुरुसेनाके सङ्ग युद्ध करनेमें समर्थ हो सके। २४-२७

देखो, इस रणभूमिमें तुम्हारे समान अथवा तुमसे भी अधिक प्रतापी अनेक राजा धृतराष्ट्रके निमित्त इकट्ठे हुए हैं, परन्तु ये सम्पूर्ण कवचधारी योद्धा लोग क्रोध पूर्वक तुम्हारे समीपमें आके युद्धभूमिमें कोई भी तुम्हारे सम्मुख खडे न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेदृशं शक्नुयात्कश्चिद्रणे कर्तुं पराक्रमम् ॥ ३० ॥
यादृशं कृतवानद्य त्वमेकः शत्रुतापनः ।
एवमेव हते कर्णे सानुबन्धे दुरात्मनि ॥ ३१ ॥
वर्धयिष्यामि भूयस्त्वां विजितारिं हतद्विषम् ।
तमर्जुनः प्रत्युवाच प्रसादात्तव माधव ॥ ३२ ॥
प्रतिज्ञेयं मया तीर्णा विबुधैरपि दुस्तरा ।
अनाश्चर्यो जयस्तेषां येषां नाथोऽसि केशव ॥ ३३ ॥
त्वत्प्रसादान्महीं कृत्स्नां सम्प्राप्स्यति युधिष्ठिरः ।
तव प्रभावो वार्ष्णेय तवैव विजयः प्रभो ॥ ३४ ॥
वर्धनीयास्तव वयं सदैव मधुसूदन ।
एवमुक्तस्ततः कृष्णः शनकैर्वाहयन्हयान् ।
दर्शयामास पार्थाय क्रूरमायोधनं महत् ॥ ३५ ॥
श्रीकृष्ण उवाच—प्रार्थयन्तो जयं युद्धे प्रथितं च महद्यशः ।
पृथिव्यां शेरते शूराः पार्थिवास्त्वच्छरैर्हताः ॥ ३६ ॥
विकीर्णशस्त्राभरणा विपन्नाश्वरथद्विपाः ।

हो सके, इससे तुम्हारा बल—पराक्रम यम, इन्द्र वा रुद्रके समान है। आज तुमने युद्धभूमिके बीच शत्रुओंको पराजित करके जैसा पराक्रम प्रकाशित किया है; इस संसारके बीच कोई भी पुरुष ऐसा कार्य नहीं कर सकता। इसी भांति पराक्रम प्रकाशित करके जब तुम पापी कर्णका अनुयाइयोंके सहित नाश करोगे; तब तुम्हारी विजय और वैरीकी हार देखकर मैं तुम्हें फिर आनन्दित करूंगा ॥ (२८–३२)

अर्जुन श्रीकृष्णके मुखसे अपनी प्रशंसा सुनके बोले, हे कृष्ण! मैं केवल तुम्हारी कृपासे ही देवतोंसे भी न पूर्ण होने योग्य प्रतिज्ञासे पार हुआ हूं। हे कृष्ण! तुम जिसकी सहायता कर रहे हो; उसकी विजय होगी,—इसमें कौनसा आश्चर्य है ॥ राजा युधिष्ठिर अवश्य ही तुम्हारी कृपासे इस सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्य फिर पावैंगे, हे कृष्ण! इस युद्धका समस्त भार तुम्हारे ऊपर अर्पित है; इससे आजकी जीत तुम्हारी हुई है, हम लोग तुम्हारी आज्ञामें चलनेवाले हैं इससे हम लोगोंको उत्साहित करना तुम्हारा कर्त्तव्य कार्य ही है। (३२–३५)

इसी भांति बात चीत करते हुए श्रीकृष्ण धीरे धीरे रथ चलाकर अर्जुनको भयङ्कर रणभूमि दिखाने लगे ॥ श्रीकृष्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्छिन्नभिन्नमर्माणो वैक्लव्यं परमं गताः ॥ ३७ ॥
ससत्वा गतसत्वाश्च प्रभया परया युताः।
सजीवा इव लक्ष्यन्ते गतसत्वा नराधिपाः ॥ ३८ ॥
तेषां शरैः स्वर्णपुङ्खैः शस्त्रैश्च विविधैः शितैः।
वाहनैरायुधैश्चैव सम्पूर्णां पश्य मेदिनीम् ॥ ३९ ॥
वर्मभिश्चर्मभिर्हारैः शिरोभिश्च सकुण्डलैः।
उष्णीषैर्मुकुटैः स्रग्भिश्चूडामणिभिरम्बरैः ॥ ४० ॥
कण्ठसूत्रैरङ्गदैश्च निष्कैरपि च सप्रभैः।
अन्यैश्चाऽभरणैश्चित्रैर्भाति भारत मेदिनी ॥ ४१ ॥
अनुकर्षैरुपासङ्गैः पताकाभिर्ध्वजैस्तथा।
उपस्करैरधिष्ठानैरीषादण्डकबन्धुरैः ॥ ४२ ॥
चक्रैः प्रमथितैश्चित्रैरक्षैश्च बहुधा रणे।
युगैर्योक्त्रैः कलापैश्च धनुर्भिः सायकैस्तथा ॥ ४३ ॥
परिस्तोमैः कुथाभिश्च परिघैरंकुशैस्तथा।
शक्तिभिर्भिन्दिपालैश्च तूणैः शूलैः परश्वधैः ॥ ४४ ॥

बोले. हे अर्जुन ! देखो राजा लोग महा कीर्त्ति और विषयकी अभिलाष करके युद्धमें प्रवृत्त हुए थे ! वे तुम्हारे बाणोंके प्रतापसे अपना प्रिय प्राण गंवा कर पृथ्वीमें शयन कर रहे हैं ॥ उनके अस्त्र शस्त्र और आभूषण चारों ओर गिरे पडे दिखाई दे रहे हैं। हाथी घोडे और रथ आदि वाहनोंके मरने और मर्म स्थल कटके छिन्न भिन्न होनेसे वे लोग अत्यन्त शोचनीय दशामें पडे हुए हैं ॥ उन लोगोंके बीच कितने ही प्राण रहित और कोई इस समय तक जीवित हैं परन्तु जो प्राण रहित हो गये हैं वह भी अपने तेजसे जीते हुएके समान बोध होते हैं ॥ (३५-३८)

देखो सम्पूर्ण राजाओंके स्वर्णपंखवाले बाण अनेक भांतिके शस्त्र, आयुध और चढनेके वाहनोंसे पृथ्वी परिपूरित हो गई है; और इधर उधर पडे हुए ढाल तलवार, वर्म, कुण्डलभूषित सिर, उष्णीष, मुकुट, माला, चूडामणि, वस्त्र, कण्ठा, प्रकाशमान बाहुभूषण और दूसरे विचित्र सुवर्णके आभूषणोंसे इस रणभूमिकी अपूर्व शोभा हो रही है ॥ (३९-४१)

और अनगिनत टूटे हुए रथ, ध्वजा, पताका, धुरी, छतरी, दंड, टूटेहुए रथके चक्के, विचित्र अक्ष, कोडे, नाना भांतिके रथभूषण, बाण, परदे, चांदनी, विचित्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रासैश्च तोमरैश्चैव कुन्तैर्यष्टिभिरेव च ।
शतघ्नीभिर्भुशुण्डीभिः खड्गैः परशुभिस्तथा ॥ ४५ ॥
मुसलैर्मुद्गरैश्चैव गदाभिः कुणपैस्तथा ।
सुवर्णविकृताभिश्च कशाभिर्भरतर्षभ ॥ ४६ ॥
घण्टाभिश्च गजेन्द्राणां भाण्डैश्च विविधैरपि ।
स्रग्भिश्च नानाभरणैर्वस्त्रैश्चैव महाधनैः ॥ ४७ ॥
अपविद्धैर्बभौ भूमिर्ग्रहैर्द्यौरिव शारदी ।
पृथिव्यां पृथिवीहेतोः पृथिवीपतयो हताः ॥ ४८ ॥
पृथिवीमुपगुह्याऽङ्गैः सुप्ताः कान्तामिव प्रियाम् ।
इमांश्च गिरिकूटाभान्नागानैरावतोपमान् ॥ ४९ ॥
क्षरतः शोणितं भूरि शस्त्रच्छेददरीमुखैः ।
दरीमुखैरिव गिरीन्गैरिकाम्बुपरिस्रवान् ॥ ५० ॥
तांश्च बाणहतान्वीर पश्य निष्टनतः क्षितौ ।
हयांश्च पतितान्पश्य स्वर्णभाण्डविभूषितान् ॥ ५१ ॥
गन्धर्वनगराकारान्रथांश्च निहतेश्वरान् ।

कम्बल, परिघ, अंकुश, भिन्दिपाल, शक्ति, शूल, परशु, प्रास, तोमर, घडे, ऋष्टि, शतघ्नि, भूशुण्डी, खड्ग, कुठार, मूषल, मुद्गर, गदा, तूणीर, सुवर्ण भूषित हाथियोंके हौदे, नाना भांतिके झालर पर्दे और घण्टा तथा माला भूषित नाना भांतिके आभूषण और महा मूल्यवान् वस्त्रोंके इधर उधर पडे रहनेसे यह रणभूमि इस प्रकार शोभायमान होने लगी; जैसा नक्षत्र आदि ग्रहोंसे युक्त शरद ऋतुमें आकाश मण्डल शोभित होता है ॥ (४२–४८)

देखो, सम्पूर्ण राजा लोग दुर्योधनके वास्ते राज्यके अभिलाषी हुए थे; वह लोग अपना प्रिय प्राण गंवा कर प्यारी स्त्रीकी भांति पृथ्वीको अलिङ्गन करके भूमिशय्यापर शयन कर रहे हैं, यह देखो जैसे वर्षा ऋतुमें पर्वतकी गुफासे जलके संग मिले हुए गेरुके पनारे चलते हैं, वैसे ही पर्वतके शृङ्ग और ऐरावतके समान अनेक हाथियोंके शरीर तुम्हारे अस्त्र शस्त्रोंसे कटके पर्वतकी गहरी गुफा समान देख पडते हैं और उनके शरीरसे रुधिरकी धारा बह रही हैं । सुवर्णके आभूषणोंसे भूषित ये सम्पूर्ण घोडे तुम्हारे बाणोंसे छिन्न भिन्न होकर इधर उधर रणभूमिमें पडे महाघोर विकट शब्द कर रहे हैं ॥ (४८–५१)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिन्नध्वजपताकाक्षान्विचक्रान्हतसारथीन् ॥ ५२ ॥
निकृत्तकूबरयुगान्भग्नेषान्बन्धुरान्प्रभो ।
पश्य पार्थ हयान्भूमौ विमानोपमदर्शनान् ॥ ५३ ॥
पत्तींश्च निहतान्वीर शतशोऽथ सहस्रशः ।
धनुर्भृतश्चर्मभृतः शयानान्रुधिरोक्षितान् ॥ ५४ ॥
महीमालिंग्य सर्वाङ्गैः पांसुध्वस्तशिरोरुहान् ।
पश्य योधान्महाबाहो त्वच्छरैर्भिन्नविग्रहान् ॥ ५५ ॥
निपातितद्विपरथवाजिसंकुलमसृग्वसापिशितसमृद्धकर्दमम् ।
निशाचरश्वबृकपिशाचमोदनं महीतलं नरवर पश्य दुर्दृशम् ॥ ५६ ॥
इदं महत्त्वय्युपपद्यते प्रभो रणाजिरे कर्म यशोभिवर्धनम् ।
शतक्रतौ चापि च देवसत्तमे महाहवे जघ्नुषि दैत्यदानवान् ॥ ५७ ॥
सञ्जय उवाच— एवं सन्दर्शयन्कृष्णो रणभूमिं किरीटिने ।
स्वैः समेतः समुदितैः पाञ्चजन्यं व्यनादयत् ॥ ५८ ॥
स दर्शयन्नेव किरीटिनेऽरिहा जनार्दनस्तामरिभूमिमञ्जसा ।

यह देखो सारथी और रथियोंसे रहित गन्धर्व नगर तथा विमानके समान कितने ही रथ, ध्वजा, पताका, चक्र, अक्ष, धुरी, रथके नीचे और ऊपरके काष्ठ आदिके कट कर इधर उधर गिरनेसे जहां तहां दिखाई देते हैं और सैकडों सहस्रों धनुष तथा ढाल तलवार ग्रहण करनेवाले पैदल सेनाके योद्धा रुधिर-पूरित शरीर और खुले हुए केशसे पृथ्वीमें शयन कर रहे हैं। यह देखो मरे हुए योद्धाओंके शरीर तुम्हारे बाणोंसे छिन्न भिन्न होगये हैं ॥ (५२—५५)

हे पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन ! देखो रणभूमिमें इधर उधर मरे हुए हाथी घोडे और रथोंके पडे रहने तथा मांस चर्बी और रुधिरके बहनेसे वह रणभूमि कीचडसे युक्त होगई है। इससे यह रणभूमि राक्षस प्रेत और भेडिये आदि मांसभक्षी पशुओंके हर्षको बढानेवाली होकर अत्यन्त भयङ्कर दिखाई देती है ॥ हे महाबाहो ! यश बढानेवाला आजके रणभूमिका बृहत्कार्य तुमसे और दानवोंके नाश करनेवाले देवराज इन्द्र हीसे होना सम्भव था ॥ (५६-५७)

संजय बोले, महाराज ! शत्रुनाशन कृष्ण इसी भांति अर्जुनको रणभूमि दिखाकर पाञ्चजन्य शंख बजाने लगे और शीघ्रताके सहित रथ चलाके अजातशत्रु राजा युधिष्ठिरके समीप उपस्थित हुए और जयद्रथ वधका वृत्तान्त उन्हें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजातशत्रुं समुपेत्य पाण्डवं निवेदयामास हतं जयद्रथम् ॥ ५९ ॥ [६४४४]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वण्यष्टचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४८ ॥

सञ्जय उवाच—ततो राजानमभ्येत्य धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् ।
ववन्दे स प्रहृष्टात्मा हते पार्थेन सैन्धवे ॥ १ ॥
दिष्ट्या वर्धसि राजेन्द्र हतशत्रुर्नरोत्तम ।
दिष्ट्या निस्तीर्णवांश्चैव प्रतिज्ञामनुजस्तव ॥ २ ॥
स त्वेवमुक्तः कृष्णेन हृष्टः परपुरञ्जयः ।
ततो युधिष्ठिरो राजा रथादाप्लुत्य भारत ॥ ३ ॥
पर्यष्वजत्तदा कृष्णावानन्दाश्रुपरिप्लुतः ।
प्रमृज्य वदनं शुभ्रं पुण्डरीकसमप्रभम् ॥ ४ ॥
अब्रवीद्वासुदेवं च पाण्डवं च धनञ्जयम् ।
प्रियमेतदुपश्रुत्य त्वत्तः पुष्करलोचन ॥ ५ ॥
नाऽन्तं गच्छामि हर्षस्य तितीर्षुरुदधेरिव ।
अत्यद्भुतमिदं कृष्ण कृतं पार्थेन धीमता ॥ ६ ॥
दिष्ट्या पश्यामि संग्रामे तीर्णभारौ महारथौ ।

सुनाने लगे ॥ (५८-५९) [६४४४]

द्रोणपर्वमें एकसौ अडतालिस अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ उनचास अध्याय ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! तिसके अनन्तर श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिरके समीप जाकर प्रसन्न चित्तसे जयद्रथ वधका वृत्तान्त इस भांतिसे वर्णन करने लगे ॥ हे पुरुषश्रेष्ठ राजेन्द्र ! प्रारब्ध हीसे तुम्हारे शत्रुका नाश हुआ और तुम्हारे छोटे भाई अर्जुनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई ॥ (१-२)

शत्रुनाशन राजा युधिष्ठिरने कृष्णके मुंहसे मङ्गलदायक संवाद सुनकर अत्यन्त हर्षके सहित रथसे उतरके कृष्णको आलिङ्गन किया ॥ महाराज ! उस समय राजा युधिष्ठिर ऐसे आनन्द में मग्न हुए कि हर्षके वश में होकर उस समय कुछ भी वचन न कह सके;बल्कि मुहूर्त्त भरतक चुपचाप खडे रहे । फिर वह अत्यन्त हर्षके सहित आनन्दसे आंसू बहाते हुए गद्गद होकर प्रीति के सहित श्रीकृष्णसे यह वचन बोले, हे कमलनयन कृष्ण ! जैसे समुद्रको तैरके पार होनेकी इच्छा करनेवाला पुरुष समुद्रके पार नहीं जाता है, किंतु समुद्रमें ही मग्न रहता है, वैसे ही तुम्हारे मुखसे जयद्रथ वधकी वाणी सुनकर मेरे आनन्दकी सीमा नहीं है ॥ (३—६)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्ट्या विनिहतः पापः सैन्धवः पुरुषाधमः ॥ ७ ॥
कृष्ण दिष्ट्या मम प्रीतिर्महती प्रतिपादिता ।
त्वया गुप्तेन गोविन्द हता पापं जयद्रथम् ॥ ८ ॥
किं तु नाऽत्यद्भुतं तेषां येषां नस्त्वं समाश्रयः ।
न तेषां दुष्कृतं किञ्चित्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ ९ ॥
सर्वलोकगुरुर्येषां त्वं नाथो मधुसूदन ।
त्वत्प्रसादाद्धि गोविन्द वयं जेष्यामहे रिपून् ॥ १० ॥
स्थितः सर्वात्मना नित्यं प्रियेषु च हितेषु च ।
त्वां चैवाऽस्माभिराश्रित्य कृतः शस्त्रसमुद्यमः ॥ ११ ॥
सुरैरिवाऽसुरवधे शक्रं शक्रानुजाऽऽहवे ।
असम्भाव्यमिदं कर्म देवैरपि जनार्दन ॥ १२ ॥
त्वद्बुद्धिबलवीर्येण कृतवानेष फाल्गुनः ।
बाल्यात्प्रभृति ते कृष्ण कर्माणि श्रुतवानहम् ॥ १३ ॥
अमानुषाणि दिव्यानि महान्ति च बहूनि च ।

हे कृष्ण बुद्धिमान् अर्जुनने तुम्हारी सहायतासे जयद्रथका वध करके अत्यन्त अद्भुत कार्य किया है, मैं तुम दोनों को दैवहीसे इस बडे कार्यभारसे उत्तीर्ण हुए देखता हूं। पुरुषाधम पापी सैन्धव जयद्रथ दैवहीसे मारागया है। हे कृष्ण! तुम जिसकी रक्षा करते हो, ऐसे अर्जुनने जयद्रथको मारकर जो मेरी बडी प्रीति सम्पादन की है यह भी दैवहीसे ही हुआ है। हे कृष्ण! सब लोकोंके गुरु तुम जिसके अवलम्ब स्वरूप तथा सब यत्नोंके सहित प्रिय और हित कार्य में रत हो उसके विषय में जयद्रथ वध विशेष आश्चर्यका कार्य नहीं है। तथा उसको त्रैलोक्यमें भी कोई कठिन कार्य नहीं है। (६—११)

हे कृष्ण! जैसे देवासुर संग्राम के समय देवता लोग असुरों के नाश करनेवाले इन्द्रका आसरा करके युद्धभूमिमें स्थित हुए थे वैसे ही हम लोग भी तुम्हारे आसरेसे इस महाघोर संग्राम में प्रवृत्त हुए हैं। हे जनार्दन कृष्ण! आज अर्जुनने तुम्हारे बल पराक्रम और बुद्धिप्रभावसे जिस कार्यको पूर्ण किया है वह देवतोंसे भी पूर्ण नहीं हो सकता। मैंने तुम्हारे बालक अवस्थासे बहुतसे दिव्य और अलौकिक कार्योंकी कथा सुनी है, इससे तुमने जब प्रेमपूर्वक हम लोगों के ऊपर कृपा किया है; तबहीसे मैंने यह जान लिया है कि शत्रुओं का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदैवाऽज्ञासिषं शत्रून्हतान्प्राप्तां च मेदिनीम् ॥ १४ ॥
त्वत्प्रसादसमुत्थेन विक्रमेणाऽरिसूदन ।
सुरेशत्वं गतः शक्रो हत्वा दैत्यान्सहस्रशः ॥ १५ ॥
त्वत्प्रसादाद्धृषीकेश जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
स्ववर्त्मनि स्थितं वीर जपहोमेषु वर्तते ॥ १६ ॥
एकार्णवमिदं पूर्वं सर्वमासीत्तमोमयम् ।
त्वत्प्रसादान्महाबाहो जगत्प्राप्तं नरोत्तम ॥ १७ ॥
स्रष्टारं सर्वलोकानां परमात्मानमव्ययम् ।
ये पश्यन्ति हृषीकेशं न ते मुह्यन्ति कर्हिचित् ॥ १८ ॥
पुराणं परमं देवं देवदेवं सनातनम् ।
ये प्रपन्नाः सुरगुरुं न ते मुह्यन्ति कर्हिचित ॥ १९ ॥
अनादिनिधनं देवं लोककर्तारमव्ययम् ।
ये भक्तास्त्वां हृषीकेश दुर्गाण्यतितरन्ति ते ॥ २० ॥
परं पुराणं पुरुषं पराणां परमं च यत् ।

नाश हुआ और पृथ्वी मेरे अधिकार में हुई है इस में कुछ सन्देह नहीं है ॥ (११–१४)

हे शत्रुनाशन कृष्ण ! इन्द्रने जिस पराक्रमके आसरेसे सहस्रावधि दैत्योंका नाश कर देवोंका आधिपत्य पाया है, वह तेरी कृपाका ही महिमा है ॥ हे हृषीकेश ! तेरे प्रसादसे यह सब स्थावर जङ्गम जगत् अपनी मर्यादामें रहता है और जप होम आदि कर्मोंमें रत रहता है ॥ हे महाबाहो ! पुरुषोत्तम ! यह दृश्यमान प्रपंच पूर्वकालमें एकसमुद्रमय और अंधकारसे व्याप्त था, पीछे तेरी कृपासे वह इस जगत्के रूपमें प्रगट हुआ है ॥ (१५-१७)

जो कोई सब लोकोंके उत्पादक, अविनाशी, इन्द्रियोंके ईश ऐसे आपको ज्ञानदृष्टिसे देखते हैं वे कभी मोहमें नहीं पडते ॥ तथा पुराण, परम पुरुष, देवोंके भी देव, और गुरु ऐसे सनातन देव आपकी शरणमें जानेवाले पुरुष भी मोहसे बद्ध नहीं होते ॥ हे हृषीकेश ! आदि अन्तरहित, लोककर्ता, अविनाशी, प्रकाशमान् आपको भजनेवाले भक्त लोग सब दुःखोंसे मुक्त होते हैं ॥ मायासे पर इसलिये नित्य सिद्ध, हिरण्यगर्भादि सरीखोंके बुद्धिको भी अगम्य, ऐसे परम उत्कृष्ट आत्माको प्राप्त होने वाले ज्ञानी पुरुष " एषाऽस्य परमा सम्पत् " इस श्रुतिवाक्यमें प्रसिद्ध परम ऐश्वर्य अर्थात्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रपद्यतस्तत्परमं परा भूतिर्विधीयते ॥ २१ ॥
गायन्ति चतुरो वेदा यश्च वेदेषु गीयते ।
तं प्रपद्य महात्मानं भूतिमश्नाम्यनुत्तमाम् ॥ २२ ॥
परमेश परेशेश तिर्यगीश नरेश्वर ।
सर्वेश्वरेश्वरेशेश नमस्ते पुरुषोत्तम ॥ २३ ॥
त्वमीशेशेश्वरेशान प्रभो वर्धस्व माधव ।
प्रभवाप्यय सर्वस्य सर्वात्मन्पृथुलोचन ॥ २४ ॥
धनञ्जयसखा यश्च धनञ्जयहितश्च यः ।
धनञ्जयस्य गोप्ता तं प्रपद्य सुखमेधते ॥ २५ ॥
मार्कण्डेयः पुराणर्षिश्चरितज्ञस्तवाऽनघ ।
माहात्म्यमनुभावं च पुरा कीर्तितवान्मुनिः ॥ २६ ॥
असितो देवलश्चैव नारदश्च महातपाः ।
पितामहश्च मे व्यासस्त्वामाहुर्विधिमुत्तमम् ॥
त्वं तेजस्त्वं परं ब्रह्म त्वं सत्यं त्वं महत्तपः ॥ २७ ॥

परमानन्दको पाते हैं ॥ (१८–२१)

चार वेद जिसका गान करते हैं तथा वेदोंमें सब जगह जिसकी स्तुति ही गायी गई है, मैं उस महात्माकी शरणमें जाकर परम ऐश्वर्य अर्थात् परमानन्दको प्राप्त करूंगा ॥ हे देव! यह सकल भोग्य पदार्थ आपका ही रूप है, आप मायासे संयुक्त है और बार बार मनुष्य और तिर्यक् योनिमें जन्म लेनेवाले भी हैं, तथापि आप में कोई भी विकार नहीं दीखता है ॥ आप जड, जीव और ईश्वरको भी सत्ता और स्फूर्ति देते हैं इस लिये आपको पुरुषोत्तम कहते हैं। मैं ऐसे आपको वंदन करता हूं ॥ आप रुद्र आदि देवोंके आराध्य, राजाओंके ईश, धर्मके प्रभु अच्युत हैं; यह सब प्रपंच आपसे उत्पन्न होकर आपमें ही लीन होता है, इसलिये सबका आपही आत्मा है। हे विशाललोचन माधव! तुम मुझे बढाइये ॥ जो भगवान् अर्जुनका मित्र और नित्य अर्जुन का हित करने वाला तथा अर्जुनका रक्षक है उस भगवानकी शरणमें जानेवाला पुरुष नित्य सुखको प्राप्त होता है ॥ (२२–२५)

हे पाप रहित कृष्ण! तुम्हारे चरित्र के जानने वाले पुराने ऋषि मार्कण्डेय मुनिने तुम्हारे प्रभाव और महात्मको मेरे समीप में वर्णन किया था। और असित, देवल, महातपस्वी नारद और हमारे पितामह वेदव्यास मुनिने तुम्हें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं श्रेयस्त्वं यशश्चाऽग्र्यं कारणं जगतस्तथा ।
त्वया सृष्टमिदं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ २८ ॥
प्रलये समनुप्राप्ते त्वां वै निविशते पुनः ।
अनादिनिधनं देवं विश्वस्येशं जगत्पते ॥ २९ ॥
धातारमजमव्यक्तमाहुर्वेदविदो जनाः ।
भूतात्मानं महात्मानमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥ ३० ॥
अपि देवा न जानन्ति गुह्यमाद्यं जगत्पतिम् ।
नारायणं परं देवं परमात्मानमीश्वरम् ॥ ३१ ॥
ज्ञानयोनिं हरिं विष्णुं मुमुक्षूणां परायणम् ।
परं पुराणं पुरुषं पुराणानां परं च यत् ॥ ३२ ॥
एवमादिगुणानां ते कर्मणां दिवि चेह च ।
अतीतभूतभव्यानां संख्याताऽत्र न विद्यते ॥ ३३ ॥
सर्वतो रक्षणीयाः स्म शक्रेणेव दिवौकसः ।

तेजस्वरूप परब्रह्म सत्य और महा तपस्याके स्वरूप कहे हैं; तुम ही तीनों लोकके बीच श्रेष्ठ और यशकी मूर्ति हो तुम्हीं जगत् के कारण और कल्याण स्वरूप हो । यह स्थावर जङ्गम आदि सम्पूर्ण प्राणियोंसे युक्त समस्त संसार तुम्हीसे उत्पन्न होता है और प्रलय के समय तुम्हींमें लीन हो जाता है।२६-२९

हे जगत्पते! वेद जाननेवाले ब्राह्मण लोग तुम्हें जन्म मरणसे रहित विश्व-आत्मा सृष्टिकर्ता प्रजापति धाता अज और अव्यक्त कहके वर्णन करते हैं । तुम सब प्राणियोंकी आत्मा अनन्त और विश्वनाथ महात्मा हो! तुम इस जगत् के पालन करनेवाले और आदि कारण हो ॥ तुम अव्यक्त हो इससे देवता लोग भी तुम्हें नहीं जानसकते । तुम जब प्राणियोंके आश्रय स्वरूप देवोंके देव परमात्मा, सबके ईश्वर ज्ञानके मूल, तीनों ताप के हरनेवाले, सर्वव्यापी और मुमुक्षु पुरुष तथा योगियों की गति हो । (२९--३२)

तुम परम पुरुष तथा सनातन हो, सम्पूर्ण पुरानी वस्तुओंमें तुम मुख्य हो । तुम्हीं इस जगत् के परम पद तथा परम गति हो; हे प्रभु! तुम्हारे गुण तथा भूत, वर्तमान और भविष्य कर्मोंकी गिनती किसी भांति मनुष्य तथा देवताओं से भी नहीं हो सकती परन्तु जब हम लोगोंने तुम्हें इस भांतिसे अपना मित्र स्वरूप पाया है तब इन्द्र से देवताओंके समान हमभी आपसे सब भांतिसे रक्षित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्त्वं सर्वगुणोपेतः सुहृन्न उपपादितः ॥ ३४ ॥
इत्येवं धर्मराजेन हरिरुक्तो महायशाः ।
अनुरूपमिदं वाक्यं प्रत्युवाच जनार्दनः ॥ ३५ ॥
भवता तपसोग्रेण धर्मेण परमेण च ।
साधुत्वादार्जवाच्चैव हतः पापो जयद्रथः ॥ ३६ ॥
अयं च पुरुषव्याघ्र त्वदनुध्यानसंवृतः ।
हत्वा योधसहस्राणि न्यहञ्जिष्णुर्जयद्रथम् ॥ ३७ ॥
कृतित्वे बाहुवीर्ये च तथैवाऽसम्भ्रमेऽपि च ।
शीघ्रतामोघबुद्धित्वे नाऽस्ति पार्थसमः क्वचित् ॥३८ ॥
तदयं भरतश्रेष्ठ भ्राता तेऽद्य यदर्जुनः ।
सैन्यक्षयं रणे कृत्वा सिन्धुराजशिरोऽहरत् ॥ ३९ ॥
ततो धर्मसुतो जिष्णुं परिष्वज्य विशाम्पते ।
प्रमृज्य वदनं तस्य पर्याश्वासयत प्रभुः ॥ ४० ॥
अतीव सुमहत्कर्म कृतवानसि फाल्गुन ।
असह्यं चाऽविषह्यं च देवैरपि सवासवैः ॥ ४१ ॥
दिष्ट्या निस्तीर्णभारोऽसि हतारिश्चाऽसि शत्रुहन् ।

होने योग्य हैं ॥ (३२—३४)

महायशस्वी, श्री कृष्णचन्द्र धर्मराज युधिष्ठिरके ऐसे स्तुतियुक्त वचनों को सुनकर कहने लगे,—महाराज ! इस प्रकारके वचन तुम्हारे ही योग्य हुए हैं ॥ परन्तु तुम्हारी साधुता, सीधापन, कठोर तपस्या और धर्मके प्रभावसे ही पापी जयद्रथ मारा गया है ॥ महाराज! पुरुषसिंह अर्जुनने केवल तुम्हारे धर्म प्रभावसे ही अत्यन्त तेजस्वी होकर सहस्रों योद्धाओंका नाश करके जयद्रथ का वध किया है । इस जगत्के बीच कृतास्त्रता, बाहुवीर्य, निर्भयता, शीघ्रता, और अमोघ बुद्धि में अर्जुनके समान दूसरा कोई भी पुरुष विद्यमान नहीं है, इससे इन कारणोंसे ही तुम्हारे भाई अर्जुन कुरुसेनाका नाश करके जयद्रथ का सिर काटनेमें समर्थ हुए॥ ३५–३९

अनन्तर नीति निपुण धर्मपुत्र युधिष्ठिरने अर्जुनको आलिङ्गन किया, और उन्हें प्रसन्न तथा उत्साहित करते हुए यह वचन बोले, हे फाल्गुन ! आज तुमने युद्धभूमिमें बहुत बडा कार्य किया है अधिक क्या कहा जावे यह कार्य इन्द्र आदि देवताओंसे भी न होने योग्य है । हे शत्रुनाशन ! प्रारब्ध हीसे तुम शत्रु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्ट्या सत्या प्रतिज्ञेयं कृता हत्वा जयद्रथम् ॥ ४२ ॥
एवमुक्त्वा गुडाकेशं धर्मराजो महायशाः ।
पस्पर्श पुण्यगन्धेन पृष्ठे हस्तेन पार्थिवः ॥ ४३ ॥
एवमुक्तौ महात्मानावुभौ केशवपाण्डवौ ।
तावब्रूतां तदा कृष्णौ राजानं पृथिवीपतिम् ॥ ४४ ॥
तव कोपाग्निना दग्धः पापो राजा जयद्रथः ।
उत्तीर्णं चापि सुमहद्धार्तराष्ट्रबलं रणे ॥ ४५ ॥
हन्यन्ते निहताश्चैव विनंक्ष्यन्ति च भारत ।
तव क्रोधहता ह्येते कौरवाः शत्रुसूदन ॥ ४६ ॥
त्वां हि चक्षुर्हणं वीरं कोपयित्वा सुयोधनः ।
सामित्रबन्धुः समरे प्राणांस्त्यक्ष्यति दुर्मतिः ॥ ४७ ॥
तव क्रोधहतः पूर्वं देवैरपि सुदुर्जयः ।
शरतल्पगतः शेते भीष्मः कुरुपितामहः ॥ ४८ ॥
दुर्लभो विजयस्तेषां संग्रामे रिपुघातिनाम् ।
याता मृत्युवशं ते वै येषां क्रुद्धोऽसि पाण्डव ॥ ४९ ॥

का वध करके कठिन भारसे पार हुए । प्रारब्ध हीसे जयद्रथका वध करके तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करी । महायशस्वी धर्मराज युधिष्ठिरने गुडाकेश अर्जुनसे ऐसा वचन कह अपने सुगन्धित हाथसे उनकी पीठ ठोंकी । (४०-४३)

महात्मा कृष्ण और अर्जुन धर्मराज युधिष्ठिरके वचनको सुनकर कहने लगे, महाराज ! सिन्धुराज पापी जयद्रथ तुम्हारी कोपरूपी अग्निसे भस्म हुआ है और धृतराष्ट्र पुत्रोंकी इस महा सेनाके बीच जो पुरुष मारे गये, मरते हैं और मरेंगे उन सबका नाश तुम्हारे क्रोधाग्निसे ही हो रहा है । महाराज ! ये सम्पूर्ण कौरव तुम्हारे कोप ही से मर रहे हैं; ऐसा ही आप समझ लीजिये, क्योंकि आप जिस की ओर अपनी कोपदृष्टिसे एक बार देखें वह उसी समय नष्ट हो सकता है, आप वीर पुरुष हैं, इससे दुष्टबुद्धि दुर्योधनने जब आपको कोपित किया तब अवश्य ही बन्धु बान्धवोंके सहित उस का नाश होवेगा ॥ (४४-४७)

देखिये, कौरवोंमें बूढे भीष्म पितामह देवतोंसे भी अजेय थे; परन्तु वह तुम्हारे क्रोधसे ही हत होकर शरशय्या पर शयन कर रहे हैं ॥ हे शत्रुनाशन महाराज ! इससे तुम जिसके ऊपर क्रोध करो उस की युद्धमें जीत होनी अत्यन्त ही कठिन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यं प्राणाः श्रियः पुत्राः सौख्यानि विविधानि च।
अचिरात्तस्य नश्यन्ति येषां क्रुद्धोऽसि मानद ॥ ५० ॥
विनष्टान्कौरवान्मन्ये सपुत्रपशुबान्धवान्।
राजधर्मपरे नित्यं त्वयि क्रुद्धे परन्तप ॥ ५१ ॥
ततो भीमो महाबाहुः सात्यकिश्च महारथः।
अभिवाद्य गुरुं ज्येष्ठं मार्गणैः क्षतविक्षतौ ॥ ५२ ॥
क्षितावास्तां महेष्वासौ पाञ्चाल्यपरिवारितौ।
तौ दृष्ट्वा मुदितौ वीरौ प्राञ्जली चाऽग्रतः स्थितौ ॥ ५३ ॥
अभ्यनन्दत कौन्तेयस्तावुभौ भीमसात्यकी।
दिष्ट्या पश्यामि वां शूरौ विमुक्तौ सैन्यसागरात् ॥५४॥
द्रोणग्राहदुराधर्षाद्धार्दिक्यमकरालयात्।
दिष्ट्या विनिर्जिताः संख्ये पृथिव्यां सर्वपार्थिवाः ॥५५॥
युवां विजयिनौ चापि दिष्ट्या पश्यामि संयुगे।
दिष्ट्या द्रोणो जितः संख्ये हार्दिक्यश्च महाबलः ॥ ५६ ॥

है, विशेष करके निश्चय ही उसे मृत्युके कराल-ग्रास में पडा हुआ ही समझ लीजिये ॥ हे मानप्रद ! आप जिसके ऊपर क्रोध करें अवश्यही थोडे समयके बीच उसका राज्य प्राण पुत्र और संपूर्ण सुखका नाश होजावे। हे शत्रु नाशन महाराज ! कौरवोंके ऊपर जब आप अत्यन्त ही कोपित होरहे हैं तब मैं कौरवोंको पुत्र पौत्र बन्धु बान्धवोंके सहित मरा हुआ ही समझ रहा हूं॥ ४८-५१

तिसके अनन्तर अस्त्रशस्त्रोंसे क्षत विक्षत शरीरसे युक्त भीमसेन और सात्यकिने गुरुके समान धर्मराज युधिष्ठिर को प्रणाम किया और पाञ्चाल सेनाके बीचमें घिरकर पृथ्वी पर खडे हुए। (५२—५३)

कुन्तीपुत्र धर्मराज युधिष्ठिर सात्यकि और भीमसेनको प्रसन्नतापूर्वक हाथ जोडके सम्मुख खडे देख उन दोनोंको आनन्दित करते हुए यह वचन कहने लगे। हे रथियोंमें श्रेष्ठ दोनों वीर ! प्रारब्ध हीसे मैंने आज तुम लोगोंको द्रोणाचार्य रूपी ग्राह, हृदिक पुत्र कृतवर्मा रूपी मकरसे युक्त समुद्र समान कौरवोंकी महासेनासे मुक्त हुए देखा है। प्रारब्धसे ही तुम दोनोंने पृथ्वीके सम्पूर्ण राजाओंको पराजित किया है ॥ प्रारब्धसे ही मैंने तुम दोनोंको युद्धमें जययुक्त होकर यहां पर आये हुए देखा है। प्रारब्धसे ही तुम दोनोंने अनेक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्ट्या विकर्णिभिः कर्णो रणे नीतः पराभवम् ।
विमुखश्च कृतः शल्यो युवाभ्यां पुरुषर्षभौ ॥ ५७ ॥
दिष्ट्या युवां कुशलिनौ संग्रामात्पुनरागतौ ।
पश्यामि रथिनां श्रेष्ठावुभौ युद्धविशारदौ ॥ ५८ ॥
मम वाक्यकरौ वीरौ मम गौरवयन्त्रितौ ।
सैन्यार्णवं समुत्तीर्णौ दिष्ट्या पश्यामि वामहम् ॥ ५९ ॥
समरश्लाघिनौ वीरौ समरेष्वपराजितौ ।
मम वाक्यसमौ चैव दिष्ट्या पश्यामि वामहम् ॥६०॥
इत्युक्त्वा पाण्डवो राजन्युयुधानवृकोदरौ ।
सस्वजे पुरुषव्याघ्रौ हर्षाद्बाष्पं मुमोच ह ॥ ६१ ॥
ततः प्रमुदितं सर्वं बलमासीद्विशाम्पते ।
पाण्डवानां रणे हृष्टं युद्धाय तु मनो दधे ॥ ६२ ॥ [६५०६]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि युधिष्ठिरहर्षे एकोनपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४९ ॥

सञ्जय उवाच— सैन्धवे निहते राजन्पुत्रस्तव सुयोधनः ।

भांतिके अस्त्रशस्त्रोंसे महाबली द्रोणाचार्य, कृतवर्मा, पुरुषश्रेष्ठ कर्ण और शल्य को पराजित किया है ॥ (५४-५७)

मैंने प्रारब्धहीसे अपने दोनों भाइयों को घाव-रहित शरीरसे अपने समीपमें आये हुए देखा है ॥ तुम दोनों वीर सदा मेरी आज्ञा पालन और मेरी गौरव रक्षाके वास्ते युद्ध करनेमें तत्पर रहते हो इससे प्रारब्धसे ही मैंने तुम लोगोंको युद्धरूपी महाघोर समुद्रसे पार होते देखा है; तुम दोनों ही मुझे प्राणसमान प्रिय युद्धमें अपराजित और रणभूमि के बीच प्रशंसा पानेके योग्य हो; इससे प्रारब्धसे ही मैं तुम दोनोंको फिर युद्ध भूमिसे कुशलपूर्वक लौटे हुए देख रहा हूं ॥ (५८—६०)

कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर पुरुषसिंह भीमसेन और सात्यकिको आलिङ्गन करके आनन्दके सहित आंसूकी धारा बहाने लगे। तिसके अनन्तर पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धालोग प्रफुल्लित चित्तसे हर्ष पूर्वक युद्धके वास्ते फिर उद्योग करने लगे ॥ ६१-६२ [६५०६]

द्रोणपर्वमें एकसौ उनचास अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ पचास अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज ! जयद्रथके मारे जानेपर तुम्हारे पुत्र दुर्योधन दीन और आंसुओंसे व्याप्तमुख होकर शत्रुओं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्रुपूर्णमुखो दीनो निरुत्साहो द्विषज्जये ॥ १ ॥
दुर्मना निःश्वसन्दुष्टो भग्नदंष्ट्र इवोरगः ।
आगस्कृत्सर्वलोकस्य पुत्रस्तेऽऽर्तिं परामगात् ॥ २ ॥
दृष्ट्वा तत्कदनं घोरं स्वबलस्य कृतं महत् ।
जिष्णुना भीमसेनेन सात्वतेन च संयुगे ॥ ३ ॥
स विवर्णः कृशो दीनो बाष्पाविप्लुतलोचनः ।
अमन्यताऽर्जुनसमो न योद्धा भुवि विद्यते ॥ ४ ॥
न द्रोणो न च राधेयो नाऽश्वत्थामा कृपो न च ।
क्रुद्धस्य समरे स्थातुं पर्याप्ता इति मारिष ॥ ५ ॥
निर्जित्य हि रणे पार्थः सर्वान्मम महारथान् ।
अवधीत्सैन्धवं संख्ये न च कश्चिदवारयत् ॥ ६ ॥
सर्वथा हतमेवेदं कौरवाणां महद्बलम् ।
न ह्यस्य विद्यते त्राता साक्षादपि पुरन्दरः ॥ ७ ॥
यमुपाश्रित्य संग्रामे कृतः शस्त्रसमुद्यमः ।
स कर्णो निर्जितः संख्ये हतश्चैव जयद्रथः ॥ ८ ॥

के जीतनेमें उत्साह रहित होगये ॥ उस समय वह तेरा पुत्र सब लोगोंके अपराधी होनेसे अत्यन्त दुःखित होके दांत टूटे हुए सर्पके समान गर्म सांस छोडने लगे ॥ युद्धमें जययुक्त अर्जुन भीमसेन और सात्यकिके अस्त्रोंसे अपनी सेनाके योद्धाओंका नाश देखकर राजा दुर्योधन दुःखित हुए उनके शरीरका वर्ण फीका पड गया; और सम्पूर्ण शूर वीर पुरुषोंके नाशके सम्बन्धमें अपनेको अपराधी समझके अत्यन्त दुःखित हुए। अनन्तर दीनताके सहित रुदन करते हुए अपने मनमें यह समझने लगे, कि इस पृथ्वीके बीच अर्जुनके समान कोई भी योद्धा विद्यमान नहीं है ॥ (१–४)

द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा, ये कोई भी युद्धभूमिमें क्रोधी अर्जुनके संमुख खडे होनेमें समर्थ नहीं हैं ॥ जब अर्जुन ने मेरी ओरके सम्पूर्ण महारथियोंको पराजित करके सिन्धुराज जयद्रथ का वध किया है और कोई भी उसे निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए ॥ तब साक्षात् इन्द्र भी आकर मरी हुईके समान मेरी इस कुरुसेनाकी रक्षा नहीं कर सकेंगे ॥ (५–७)

जिसके आसरेसे युद्ध करनेका उद्योग किया गया था, वही कर्ण इस समय पराजित हुए और जयद्रथ अर्जुनके अस्त्रसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य वीर्यं समाश्रित्य शमं याचन्तमच्युतम् ।
तृणवत्तमहं मन्ये स कर्णो निर्जितो युधि ॥ ९ ॥
एवं क्लान्तमना राजन्नुपायाद् द्रोणमीक्षितुम् ।
आगस्कृत्सर्वलोकस्य पुत्रस्ते भरतर्षभ ॥ १० ॥
ततस्तत्सर्वमाचख्यौ कुरूणां वैशसं महत् ।
परान्विजयतश्चाऽपि धार्तराष्ट्रान्निमज्जतः ॥ ११ ॥

दुर्योधन उवाच– पश्य मूर्धाभिषिक्तानामाचार्य कदनं महत् ।
कृत्वा प्रमुखतः शूरं भीष्मं मम पितामहम् ॥ १२ ॥
तं निहत्य प्रलुब्धोऽयं शिखण्डी पूर्णमानसः ।
पाञ्चाल्यैः सहितः सर्वैः सेनाग्रमभिवर्तते ॥ १३ ॥
अपरश्चापि दुर्धर्षः शिष्यस्ते सव्यसाचिना ।
अक्षौहिणीः सप्त हत्वा हतो राजा जयद्रथः ॥ १४ ॥
अस्मद्विजयकामानां सुहृदामुपकारिणाम् ।
गन्तास्मि कथमानृण्यं गतानां यमसादनम् ॥ १५ ॥

मारे गये। श्रीकृष्णने जब शान्ति स्थापित करनेके वास्ते प्रार्थना किया था, उस समय मैंने जिसके बल पराक्रमके आसरेसे उन्हें तृणके समान समझ कर उनका निरादर किया था; इस समय वैसे पराक्रमी कर्ण भी युद्धभूमिमें पराजित हुए ॥ (८–९)

महाराज ! सम्पूर्ण राजाओंमें अपराधी तुम्हारे पुत्र दुर्योधन इसी प्रकारसे दुःखित होकर द्रोणाचार्यसे भेट करनेकी इच्छासे उनके समीप उपस्थित हुए ॥ तिसके अनन्तर राजा दुर्योधन द्रोणाचार्यके निकट शत्रुओंकी विजय अपनी पराजय तथा कुरुसेनाके शूरवीरोंके नाशका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करने लगे । (१० — १२)

दुर्योधन बोले, हे आचार्य ! महा पराक्रमी भीष्म पितामह और युद्ध करने वाले बहुतेरे राजा लोग जो युद्धभूमिमें मरे हुए पडे हैं, उन्हें देखिये, चपल स्वभाववाले शिखण्डीने भीष्म पितामहका वध करके अपना मनोरथ पूरा किया है; इस समय वही शिखण्डी पांचाल योद्धाओंके सहित सेनाके अगाडी स्थित हैं ॥ और भी देखिये सव्यसाची अर्जुनने सात अक्षौहिणी सेनाको भेद करके तेरे शिष्य दुर्धर्ष सिन्धुराज जयद्रथका वध किया है ॥ जो हो इस समय जो सब उपकारी सुहृद-मित्र हम लोगोंके विजयकी अभिलाषा करके यमपुरीमें गये हैं मैं किस भांतिसे उन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये मदर्थं परीप्सन्ते वसुधां वसुधाधिपाः।
ते हित्वा वसुधैश्वर्यं वसुधामधिशेरते ॥ १६ ॥
सोऽहं कापुरुषः कृत्वा मित्राणां क्षयमीदृशम्।
अश्वमेधसहस्रेण पावितुं न समुत्सहे ॥ १७ ॥
मम लुब्धस्य पापस्य तथा धर्मापचायिनः।
न्यायामेन जिगीषन्तः प्राप्ता वैवस्वतक्षयम् ॥ १८ ॥
कथं पतितवृत्तस्य पृथिवी सुहृदां द्रुहः।
विवरं नाऽशकद्दातुं मम पार्थिवसंसदि ॥ १९ ॥
योऽहं रुधिरासिक्ताङ्गं राज्ञां मध्ये पितामहम्।
शयानं नाऽशकं त्रातुं भीष्ममायोधने हतम् ॥ २० ॥
तं मामनार्यपुरुषं मित्रद्रुहमधार्मिकम्।
किं वक्ष्यति हि दुर्धर्षः समेत्य परलोकजित् ॥ २१ ॥
जलसन्धं महेष्वासं पश्य सात्यकिना हतम्।
मदर्थमुद्यतं शूरं प्राणांस्त्यक्त्वा महारथम् ॥ २२ ॥
काम्बोजं निहतं दृष्ट्वा तथाऽलम्बुषमेव च।

लोगोंके ऋणसे मुक्त होऊंगा? १३--१५

हाय! जिन सम्पूर्ण राजाओंने मेरे वास्ते इस सम्पूर्ण पृथ्वीके राज्यकी अभिलाष किया था; इस समय वे सब कोई पृथ्वीके सम्पूर्ण ऐश्वर्य त्यागकर वीरशय्यापर शयन कर रहे हैं॥ मैं अत्यन्त ही कापुरुष हूं, मैं अपने मित्रोंका नाश कराके सहस्र अश्वमेधसे भी आत्माको पवित्र नहीं कर सकूंगा॥ मुझ अधर्मी पापी तथा लोभीके वास्ते ही विजयकी इच्छा करके सम्पूर्ण राजा लोग इस महाघोर संग्राममें मरकर स्वर्गलोकमें गये हैं॥ राजाओंके बीच मुझ मित्रद्रोहीके वास्ते पृथ्वी भी क्यों नहीं स्थान प्रदान करती है? (१६-१९)

जब सम्पूर्ण राजाओंके बीच रहकर भी भीष्म पितामहने रुधिरपूरित शरीरसे शरशय्यापर शयन किया है और हम लोग किसी भांति उनकी रक्षा नहीं कर सके, तब मेरे समान अधर्मी मित्रद्रोही अनार्य और नीच पुरुष दूसरा कौन है? विशेषकर पराये देशको जीतनेवाले भीष्म पितामह इन्द्र-लोकमें जाके मुझे क्या कहेंगे? और भी देखो, महाबली पराक्रमी राजा जलसन्ध युद्धभूमिमें मेरे वास्ते प्राणकी आशा त्यागके सात्यकिके सङ्ग युद्ध करके उसके हाथसे मारे गये हैं॥ काम्बोजराज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यान्बन्धूंश्च सुहृदो जीवितार्थोऽद्य को मम ॥ २३ ॥
न्यायच्छन्तो हताः शूरा मदर्थे येऽपराङ्मुखाः ।
यतमानाः परं शक्त्या विजेतुमहितान्मम ॥ २४ ॥
तेषां गत्वाऽहमानृण्यमद्य शक्त्या परन्तप ।
तर्पयिष्यामि तानेव जलेन यमुनामनु ॥ २५ ॥
सत्यं ते प्रतिजानामि सर्वशस्त्रभृतां वर ।
इष्टापूर्तेन च शपे वीर्येण च सुतैरपि ॥ २६ ॥
निहत्य तान्रणे सर्वान्पञ्चालान्पाण्डवैः सह ।
शान्तिं लब्धास्मि तेषां वा रणे गन्ता सलोकताम् ॥२७॥
सोऽहं तत्र गमिष्यामि यत्र ते पुरुषर्षभाः ।
हता मदर्थे संग्रामे युध्यमानाः किरीटिना ॥ २८ ॥
नहीदानीं सहाया मे परीप्सन्त्यनुपस्कृताः ।
श्रेयो हि पाण्डून्मन्यन्ते न तथाऽस्मान्महाभुज ॥२९॥

सुदक्षिण, अलम्बुष और दूसरे बहुतेरे सुहृद् मित्र राजाओंको मरे हुए देखकर अब मुझे जीवित रहनेकी कौनसी आवश्यकता है ? (२०–२३)

ये सम्पूर्ण युद्धमें पीछे न हटनेवाले राजा और शूरवीर योद्धा लोग शत्रुओंको जीतनेकी इच्छासे अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करके रणभूमिमें मारे गये हैं ॥ हे शत्रुनाशन आचार्य ! इससे मैं भी अपनी शक्ति प्रकाशित करके इन सम्पूर्ण मरे हुए राजाओंके ऋणसे मुक्त होकर पीछे यमुना जलसे उन लोगोंका तर्पण करूंगा ॥ हे शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ आचार्य ! मैं इष्टापूर्त, बल, पराक्रम और पुत्रकी शपथ करके तुम्हारे समीप सत्यप्रतिज्ञा करता हूं, कि पाण्डवोंके सहित सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धाओंका वध करके शान्त होऊंगा; अथवा उन लोगोंके हाथसे मर कर राजाओंके पाने योग्य श्रेष्ठ लोकमें गमन करूंगा ॥ २४–२७

विशेष करके वे सम्पूर्ण पुरुषश्रेष्ठ राजा लोग मेरे वास्ते युद्ध करके इस महासंग्राममें अर्जुनके अस्त्रोंसे मर कर जिस लोकमें गये हैं, मुझे भी उस ही स्थानमें गमन करना उचित है ॥ हे महाबाहु आचार्य ! इस समय बचे हुए जो पुरुष मेरी सहायता करनेवाले हैं उनके बीच मैं ऐसा किसीको भी नहीं देखता जो शत्रुओंसे अनिरुद्ध नहीं हैं क्योंकि वह लोग जिस प्रकार पाण्डवोंके कल्याणकी अभिलाषा करते हैं,वैसी मेरे कल्याणकी मङ्गलकामना नहीं करते ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं हि मृत्युर्विहितः सत्यसन्धेन संयुगे ।
भवानुपेक्षां कुरुते शिष्यत्वादर्जुनस्य हि ॥ ३० ॥
अतो विनिहताः सर्वे येऽस्मज्जयचिकीर्षवः ।
कर्णमेव तु पश्यामि सम्प्रत्यस्मज्जयैषिणम् ॥ ३१ ॥
यो हि मित्रमविज्ञाय याथातथ्येन मन्दधीः ।
मित्रार्थे योजयत्येनं तस्य सोऽर्थोऽवसीदति ॥ ३२ ॥
तादृग्रूपं कृतमिदं मम कार्यं सुहृत्तमैः ।
मोहाल्लुब्धस्य पापस्य जिह्मस्य धनमीहतः ॥ ३३ ॥
हतो जयद्रथश्चैव सौमदत्तिश्च वीर्यवान् ।
अभीषाहाः शूरसेनाः शिबयोऽथ वसातयः ॥ ३४ ॥
सोऽहमद्य गमिष्यामि यत्र ते पुरुषर्षभाः ।
हता मदर्थे संग्रामे युध्यमानाः किरीटिना ॥ ३५ ॥
नहि मे जीवितेनार्थस्तानृते पुरुषर्षभान् ।
आचार्यः पाण्डुपुत्राणामनुजानातु नो भवान् ॥ ३६ ॥[६५४२]

इति श्रीमहाभारतेऽद्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि दुर्योधनानुतापे पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५० ॥

देखिये सत्यसन्ध भीष्म पितामहने स्वयं ही अपनी मृत्युका वृत्तान्त युधिष्ठिरसे कह दिया; और आप भी अर्जुन के ऊपर प्रेम करके युद्धमें उपेक्षा करते रहते हैं ॥ इससे मेरी ओरके विजयकी अभिलाषा करनेवाले सब लोग युद्धमें मारे गये हैं ॥ इस समय केवल महारथ कर्ण ही मेरे विजयके निमित्त अभिलाष करते हुए दीख पडते हैं ॥ (२८-३१)

जो बुद्धिहीन पुरुष मित्रको यथार्थ रूपमें न जानकर उसे मित्र समझके मित्रके करने योग्य अपने कार्योंमें नियुक्त करता है, अवश्य ही उसे राज्य अर्थ तथा कार्यसिद्धिसे निष्फल मनोरथ होना पडता है ॥ मैं भी बुद्धिहीन लोभी और पापी हूं, इसीसे कुटिल आचरण करने वाले पुरुषों को मित्र समझके विश्वास कर रहा हूं । भीतरी शत्रु और ऊपरसे मित्रता जताकर कुटिल पुरुषोंने सब भांतिसे मेरे कार्यकी हानि करी है, इस ही कारणसे पराक्रमी राजा जयद्रथ भूरिश्रवा, अभिषाह, शूरसेन, शिबि और वसाति देशीय शूरवीर पुरुष युद्धभूमिमें मारे गये ॥ इससे हे पाण्डवोंके आचार्य ! इन सम्पूर्ण पुरुष श्रेष्ठ शूरवीरोंने मेरे निमित्त युद्ध करके जिस स्थानमें गमन किया है, मैं भी उसही स्थानमें गमन करूंगा, इस समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृतराष्ट्र उवाच- सिन्धुराजे हते तात समरे सव्यसाचिना ।
तथैव भूरिश्रवसि किमासीद्वो मनस्तदा ॥ १ ॥
दुर्योधनेन च द्रोणस्तथोक्तः कुरुसंसदि ।
किमुक्तवान्परं तस्मै तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ २ ॥
सञ्जय उवाच— निष्टानको महानासीत्सैन्यानां तव भारत ।
सैन्धवं निहतं दृष्ट्वा भूरिश्रवसमेव च ॥ ३ ॥
मन्त्रितं तव पुत्रस्य ते सर्वमवमेनिरे ।
येन मन्त्रेण निहताः शतशः क्षत्रियर्षभाः ॥ ४ ॥
द्रोणस्तु तद्वचः श्रुत्वा पुत्रस्य तव दुर्मनाः ।
मुहूर्तमिव तद्ध्यात्वा भृशमार्त्तोऽभ्यभाषत ॥ ५ ॥
द्रोण उवाच— दुर्योधन किमेवं मां वाक्शरैरपिकृन्तसि ।
अजय्यं सततं संख्ये ब्रुवाणं सव्यसाचिनम् ॥ ६ ॥
एतेनैवाऽर्जुनं ज्ञातुमलं कौरव संयुगे ।
यच्छिखण्ड्यवधीद्भीष्मं पाल्यमानः किरीटिना ॥ ७ ॥

मुझे अनुमति दीजिये ॥ (३२-३६)

एकसौ पचास अध्याय समाप्त। [६५४२]

द्रोणपर्वमें एकसौ एकावन अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, जब सिन्धुराज जयद्रथ अर्जुनके हाथसे और भूरिश्रवा सात्यकिके हाथसे मारे गये तब तुम लोगोंका मन कैसा हुआ था ? दुर्योधनने जब कौरवोंके बीच द्रोणाचार्यके निकट इस भांतिसे दुःख प्रकाशित किया, तब उन्होंने उसे कैसा उत्तर दिया था; यह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीपमें वर्णन करो ॥ (१-२)

सञ्जय बोले, महाराज ! सिन्धुराज जयद्रथ और कुरुश्रेष्ठ भूरिश्रवाको मरे हुए देख तुम्हारी सेनाके बीच महाघोर कोलाहल होने लगा ॥ उन सम्पूर्ण योद्धाओंने तुम्हारे पुत्र दुर्योधनकी मन्त्रणा (राय) पर श्रद्धा नहीं किया क्योंकि दुर्योधनके अविचारहीके कारणसे सैकडों सहस्रों क्षत्रिय श्रेष्ठ वीरोंका नाश हुआ ॥ (३-४)

परन्तु द्रोणाचार्य तुम्हारे पुत्रके वचनको सुनके दुःखित होके मुहूर्त्त भरतक चिन्ता करके फिर दुर्योधन से यह वचन बोले, हे दुर्योधन ! मैं तुमसे सदा ही यह वचन कहता चला आता हूं, कि सव्यसाची अर्जुन इस संसारके बीच अजेय हैं तब तुम किस कारणसे मुझे वचनरूपी बाणसे दुःखित कर रहे हो ! अर्जुनसे रक्षित होकर शिखण्डीने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवध्यं निहतं दृष्ट्वा संयुगे देवदानवैः ।
तदैवाऽज्ञासिषमहं नेयमस्तीति भारती ॥ ८ ॥
यं पुसां त्रिषु लोकेषु सर्वशूरममंस्महि ।
तस्मिन्निपतिते शूरे किं शेषं पर्युपास्महे ॥ ९ ॥
यान्स्म तान्ग्लहते तात शकुनिः कुरुसंसदि ।
अक्षान्न तेऽक्षा निशिता बाणास्ते शत्रुतापनाः ॥ १० ॥
त एते घ्नन्ति नस्तात विशिखाः पार्थचोदिताः ।
तांस्तदाऽऽख्यायमानस्त्वं विदुरेण न बुद्धवान् ॥ ११ ॥
यास्ता विलपतश्चाऽपि विदुरस्य महात्मनः ।
धीरस्य वाचो नाऽश्रौषीः क्षेमाय वदतः शिवाः ॥ १२ ॥
तदिदं वर्तते घोरमागतं वैशसं महत् ।
तस्याऽवमानाद्वाक्यस्य दुर्योधनकृते तव ॥ १३ ॥
योऽवमन्य वचः पथ्यं सुहृदामात्मकारिणाम् ।

जब युद्धभूमिमें भीष्मका वध किया उस ही समयसे अर्जुनके पराक्रमका पूरा प्रमाण मिल चुका है ॥ देवता और दानवोंसे भी अवध्य कुरुकुल शिरोमणि भीष्मदेवको मरते देख मैंने उस ही समयसे जान लिया है कि इस भारती सेनाके शूरवीरोंकी अब रक्षा नहीं हो सकती ॥ (५–८)

जिसे हम लोग इस संसारके बीच सबसे श्रेष्ठ शूरवीर समझते थे; उस वीरवर भीष्मके मारे जानेपर अब कौन ऐसा पुरुष है कि हमलोग जिसके आसरे से युद्धभूमिमें स्थित रह सकेंगे ? हे तात दुर्योधन ! पहिले कुरुसभाके बीच शकुनिने जिन पासोंको ग्रहण करके जूआ खेला था वे सब पासे नहीं थे वे ही इस समय शत्रुओंको पीडित करने वाले चोखे बाण हुए हैं ॥ पहिले विदुर ने बार बार निवारण किया था तौ भी तुम्हें कुछ नहीं मालूम हुआ था वे ही सम्पूर्ण पासे इस समय बाण रूपी होकर अर्जुनके धनुषसे छूटकर हम लोगोंका नाश कर रहे हैं ॥ (९–११)

हे दुर्योधन महात्मा विदुरने बार बार विलाप करके तुमसे बहुतसे हितकर वचन कहे थे, तौ भी तुमने उनके वचन नहीं सुने; उनहीं वचनोंकी अवमानना करनेके कारणसे तुम्हारे निमित्त ही सम्पूर्ण शूर वीरोंका नाश हो रहा है ॥ जो मूढ आत्मीय और सुहृद मित्रोंके हितकारी वचनोंकी अवमानना करके इच्छानुसार कार्य करनेमें प्रवृत्त होते हैं वे शीघ्र ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वमतं कुरुते मूढः स शोच्यो न चिरादिव ॥ १४ ॥
यच्च नः प्रेक्षमाणानां कृष्णामानाय्य तत्सभाम् ।
अनर्हन्तीं कुले जातां सर्वधर्मानुचारिणीम् ॥ १५ ॥
तस्याऽधर्मस्य गान्धारे फलं प्राप्तमिदं महत् ।
नो चेत्पापं परे लोके त्वमच्छेथास्ततोऽधिकम् ॥ १६ ॥
यच्च तान्पाण्डवान्द्यूते विषमेण विजित्य ह ।
प्राव्राजयस्तदाऽरण्ये रौरवाजिनवाससः ॥ १७ ॥
पुत्राणामिव चैतेषां धर्ममाचरतां सदा ।
द्वेष्टुमेत्को नु नरो लोके मदन्यो ब्राह्मणव्रवः ॥ १८ ॥
पाण्डवानामयं कोपस्त्वया शकुनिना सह ।
आहृतो धृतराष्ट्रस्य सम्मते कुरुसंसदि ॥ १९ ॥
दुःशासनेन संयुक्तः कर्णेन परिवर्धितः ।
क्षत्तुर्वाक्यमनादृत्य त्वयाऽभ्यस्तः पुनः पुनः ॥ २० ॥
यत्ताः सर्वे पराभूताः पर्यवारयताऽर्जुनम् ।
सिन्धुराजानमाश्रित्य स वो मध्ये कथं हतः ॥ २१ ॥

सोचनेके योग्य होजाते हैं ॥ (१२-१४)

हे गान्धारीपुत्र ! तुम जो पुरुषोंकी सभाके बीच न लाने योग्य सब लक्षणों से युक्त उत्तम कुलमें उत्पन्न हुई द्रौपदीको हम लोगोंके सम्मुखमें ही सभाके बीच ले आये; और अन्याय पूर्वक पाण्डवोंको जूएके खेलमें पराजित करके उन्हें काले हरिनके चमडे पहनाके वनवासी बनाया था, उस ही अधर्मका फल तुम्हें इस समय मिल रहा है। परन्तु यदि इस लोकमें तुम्हारी ऐसी दशा न होती तो परलोकमें इससे बढके तुम्हें अपने पापोंके फल भोगने पडते !१५-१७

इस समय मुझे छोडके और दूसरा कौन ब्राह्मण नाम धारण करनेवाला पुरुष सदा सर्वदा धर्मके कार्य करनेवाले पुत्रके समान प्रिय पाण्डुपुत्रोंसे द्वेष करनेमें प्रवृत्त हो सकता है ? उस समय तुमने कुरुसभाके बीच शकुनिके सङ्ग मिल कर धृतराष्ट्रकी सम्मतिसे जो पाण्डवोंके कोपको बढाया था, दुःशासनने उसकी जड दृढ करी, कर्णने उसे बढाया और तुमने विदुरके वचन को न मान कर बार बार पाण्डवोंके क्रोधकी वृद्धि करी है । (८-२०)

जयद्रथकी रक्षा करनेके वास्ते तो तुम लोग सब कोई यत्नवान् हुए थे; तुम लोग अर्जुनके संमुखसे क्यों पराजित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथं त्वयि च कर्णे च कृपे शल्ये च जीवति ।
अश्वत्थाम्नि च कौरव्य निधनं सैन्धवोऽगमत् ॥ २२ ॥
युध्यन्तः सर्वराजानस्तेजस्तिग्ममुपासते ।
सिन्धुराजं परित्रातुं स वो मध्ये कथं हतः ॥ २३ ॥
मय्येव हि विशेषेण तथा दुर्योधन त्वयि ।
आशंसत परित्राणमर्जुनात्स महीपतिः ॥ २४ ॥
ततस्तस्मिन्परित्राणमलब्धवति फाल्गुनात् ।
न किञ्चिदनुपश्यामि जीवितस्थानमात्मनः ॥ २५ ॥
मज्जन्तमिव चाऽऽत्मानं धृष्टद्युम्नस्य किल्बिषे ।
पश्याम्यहत्वा पञ्चालान्सह तेन शिखण्डिना ॥ २६ ॥
तन्मां किमभितप्यन्तं वाक्शरैरेव कृन्तसि ।
अशक्तः सिन्धुराजस्य भूत्वा त्राणाय भारत ॥ २७ ॥
सौवर्णं सत्यसन्धस्य ध्वजमक्लिष्टकर्मणः ।
अपश्यन्युधि भीष्मस्य कथमाशंससे जयम् ॥ २८ ॥

हुए ! और तुम लोगोंके बीचमें रहते भी सिन्धुराज किस प्रकार मारे गये ? हे कुरुराज दुर्योधन ! तुम, कर्ण, कृपाचार्य, शल्य और अश्वत्थामा जीवित रहते सिन्धुराज जयद्रथ किस कारणसे मारे गये ? जयद्रथकी रक्षा करनेके वास्ते सम्पूर्ण राजाओंने भी तो प्राणपणसे अपने पराक्रमको प्रकाशित करके युद्ध किया था, तौ भी सिन्धुराज जयद्रथ तुम लोगोंके बीचमें रह कर किस प्रकारसे मारे गये ? विशेष करके सिन्धुराज जयद्रथने तुम्हारे और मेरे ही आससेरे अर्जुनके हाथसे बचनेकी आशा किया था परन्तु वह अर्जुनके हाथसे परित्राण न पासके ॥ (२१–२४)

इससे मैं अब इस समय अपने प्राणरक्षाका कोई उपाय नहीं देखसकता हूं, मैं जबतक शिखण्डी और सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धाओंका संहार नहीं कर सकता हूं तब तक धृष्टद्युम्नकी कुटिलता-रूपी कीचडमें अपनी आत्माको निमग्न हुआ ही बोध कर रहा हूं । हे भारत ! इससे जब मैं सिन्धुराज जयद्रथ को अर्जुन के हाथसे बचाने में स्वयं असमर्थ होके दुःखित होरहा हूं तब तुम क्यों मुझे वचन रूपी बाणसे विद्ध कर रहे हो ? और युद्धभूमिके बीच कठिन कर्मके करनेवाले सत्य पराक्रमी भीष्मकी सुवर्णमयी ध्वजाको भी न देखकर तुम किस प्रकारसे अपने विजय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्ये महारथानां च यत्राऽहन्यत सैन्धवः ।
हतो भूरिश्रवाश्चैव किं शेषं तत्र मन्यसे ॥ २९ ॥
कृप एव च दुर्धर्षो यदि जीवति पार्थिव ।
यो नाऽगात्सिन्धुराजस्य वर्त्म तं पूजयाम्यहम् ॥ ३० ॥
यत्राऽपश्यं हतं भीष्मं पश्यतस्तेऽनुजस्य वै ।
दुःशासनस्य कौरव्य कुर्वाणं कर्म दुष्करम् ॥ ३१ ॥
अवध्यकल्पं संग्रामे देवैरपि सवासवैः ।
न ते वसुन्धराऽस्तीति तदाऽहं चिन्तये नृप ॥ ३२ ॥
इमानि पाण्डवानां च सृञ्जयानां च भारत ।
अनीकान्याद्रवन्ते मां सहितान्यद्य भारत ॥ ३३ ॥
नाऽहत्वा सर्वपञ्चालान्कवचस्य विमोक्षणम् ।
कर्ताऽस्मि समरे कर्म धार्तराष्ट्र हितं तव ॥ ३४ ॥
राजन्ब्रूयाः सुतं मे त्वमश्वत्थामानमाहवे ।
न सोमकाः प्रमोक्तव्या जीवितं परिरक्षता ॥ ३५ ॥
यच्च पित्राऽनुशिष्टोऽसि तद्वचः परिपालय ।

की इच्छा कर रहे हो ॥ (२५–२८)

जिस स्थान पर कौरवोंमें मुख्य भूरिश्रवा और सिन्धुराज जयद्रथ सम्पूर्ण महारथियोंके बीचमें रहकर भी मारे गये हैं उस स्थानपर अब तुम किसे जीवित समझ रहे हो ? पराक्रमी कृपाचार्य यदि सिन्धुराजके अनुगामी न होकर जीवित होंगे; तो मैं उनकी विशेष प्रशंसा करता हूं । जबसे मैंने इन्द्र आदि देवतोंसे भी अवध्य महाबली अत्यन्त पराक्रमी भीष्मको दुःशासनके संमुख ही में मरते हुए देखा तभीसे मेरे हृदयमें यह विचार हुआ है, कि यह वसुन्धरा पृथ्वी तुमसे विमुख हुई है ॥ (२९—३२)

यह देखो पाण्डव और सृञ्जय योद्धा इकट्ठे होकर मेरी ओर दौडे हुए चले आरहे हैं, इससे आज मैं युद्धभूमिमें तुम्हारे हितके वास्ते अच्छी प्रकारसे अनुष्ठान करूंगा मैं सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धाओंका विना वध किये अपना कवच नहीं उतारूंगा ॥ हे राजन् ! तुम मेरे पुत्र अश्वत्थामासे कहना कि वह जीतेजी सोमकवंशी तथा पाञ्चाल योद्धाओंको न छोडे ॥ यह भी कहना कि हे अश्वत्थामन् ! तुमने अपने पिताके समीप जो सम्पूर्ण विद्या सीखी है, उसे पूर्णरीतिसे पालन करो, अर्थात् सरलता दम सत्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनृशंस्ये दमे सत्ये चाऽऽर्जवे च स्थिरो भव ॥ ३६ ॥
धर्मार्थकामकुशलो धर्मार्थावप्यपीडयन् ।
धर्मप्रधानकार्याणि कुर्याश्चेति पुनः पुनः ॥ ३७ ॥
चक्षुर्मनोभ्यां सन्तोष्या विप्राः पूज्याश्च शक्तितः ।
न चैषां विप्रियं कार्यं ते हि वह्निशिखोपमाः ॥ ३८ ॥
एष त्वहमनीकानि प्रविशाम्यरिसूदन ।
रणाय महते राजंस्त्वया वाक्शरपीडितः ॥ ३९ ॥
त्वं च दुर्योधन बलं यदि शक्तोऽसि पालय ।
रात्रावपि च योत्स्यन्ते संरब्धाः कुरुसृञ्जयाः ॥ ४० ॥
एवमुक्त्वा ततः प्रायाद् द्रोणः पाण्डवसृञ्जयान् ।
मुष्णन्क्षात्रियतेजांसि नक्षत्राणामिवांऽशुमान् ॥ ४१ ॥ ६५८३

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि द्रोणवाक्ये एकपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५१ ॥

सञ्जय उवाच – ततो दुर्योधनो राजा द्रोणेनैवं प्रचोदितः ।

और अनृशंसतामें निष्ठा करो ॥ धर्म अर्थ और काममें निर्भयता पूर्वक तत्पर रहके धर्म अर्थके अविरोधी कार्योंका अनुष्ठान करना ॥ (३३–३७)

ब्राह्मणोंको नेत्र और वचनसे सम्मानित और सन्तोषित करके अपनी शक्तिके अनुसार उनकी पूजा तथा सत्कार करना । कभी ब्राह्मणोंके अप्रिय कार्यके करनेमें प्रवृत्त न होना, क्योंकि ब्राह्मण अग्निशिखाके समान तेजस्वी हैं ॥ हे दुर्योधन ! और अधिक तुमसे क्या कहूं, इस समय मैं तुम्हारे वचनसे पीडित हुआ हूं आज मैं महाघोर युद्ध करनेके वास्ते शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करूंगा ॥ तुमभी यदि समर्थ हो तो इस सेनाके योद्धाओंकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त होजाओ क्योंकि आज अत्यन्त क्रुद्ध हुए कौरव और सृञ्जय लोग रात्रिके समयमें युद्ध करेंगे ॥ महाराज ! जैसे सूर्य नक्षत्रोंके तेजको हरण करते हैं, वैसे ही क्षत्रियोंके तेजको हरनेवाले द्रोणाचार्यने तुम्हारे पुत्र दुर्योधनसे ऐसा वचन कह कर पाण्डव और सृञ्जयोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया ॥ (३८–४१) [६५८३]

द्रोणपर्वमें एकसौ एकावन अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ बावन अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! तिसके अनन्तर तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधनने द्रोणाचार्यके समीप इसी भांतिसे तिरस्कृत होकर क्रोधपूर्वक युद्धके निमित्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर्षवशमापन्नो युद्धायैव मनो दधे ॥ १ ॥
अब्रवीच्च तदा कर्णं पुत्रो दुर्योधनस्तव ।
पश्य कृष्णसहायेन पाण्डवेन किरीटिना ॥ २ ॥
आचार्यविहितं व्यूहं भित्त्वा देवैः सुदुर्भिदम् ।
तव व्यायच्छमानस्य द्रोणस्य च महात्मनः ॥ ३ ॥
मिषतां योधमुख्यानां सैन्धवो विनिपातितः ।
पश्य राधेय पृथ्वीशाः पृथिव्यां प्रवरा युधि ॥ ४ ॥
पार्थेनैकेन निहताः सिंहेनेवेतरे मृगाः ।
मम व्यायच्छमानस्य द्रोणस्य च महात्मनः ॥ ५ ॥
अल्पावशेषं सैन्यं मे कृतं शक्रात्मजेन ह ।
कथं नियच्छमानस्य द्रोणस्य युधि फाल्गुनः ॥ ६ ॥
भिन्द्यात्सुदुर्भिदं व्यूहं यतमानोऽपि संयुगे ।
प्रतिज्ञाया गतः पारं हत्वा सैन्धवमर्जुनः ॥ ७ ॥
पश्य राधेय पृथ्वीशान्पृथिव्यां पातितान्बहून् ।
पार्थेन निहतान्संख्ये महेन्द्रोपमविक्रमान् ॥ ८ ॥

दृढ सङ्कल्प किया; और उस ही समय कर्णको अपने समीप देख कर कहने लगे, हे कर्ण ! देखो कृष्णकी सहायता से युक्त अर्जुनने देवतोंसे भी न भेद होने योग्य द्रोणाचार्यके बनाये ऐसे कठिन व्यूहको खेलवाड़की भांति भेद किया और द्रोणाचार्य तुम तथा मुख्य मुख्य महारथी योद्धा लोग युद्ध करते भी थे तौ भी सिन्धुराज जयद्रथ अर्जुनके अस्त्रसे मारे गये ॥ (१–४)

देखो जैसे सिंह छोटे पशुओंका वध करता है, वैसे ही अर्जुनने अकेले ही इस पृथ्वीके बीच युद्धकी सम्पूर्ण विद्या जाननेवाले सिन्धुराज जयद्रथका वध किया है । हे शत्रुनाशन कर्ण ! रणभूमिके बीच मैं स्वयं युद्ध करनेमें प्रवृत्त था तौ भी अर्जुनने मेरी सेनाके पुरुषोंका नाश करके अब थोडीसी सेना बाकी रक्खी है। परन्तु यदि द्रोणाचार्य स्थिरचित्तसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त रहते तो अर्जुन किस प्रकार इस दुर्भेद व्यूहको भेद कर सकता ? (४–७)

हे कर्ण ! इससे देखो, ये सब इन्द्रके समान पराक्रमी राजा लोग केवल द्रोणाचार्यकी उपेक्षासेही अर्जुनके बाणों से मर कर रणभूमिमें शयन कर रहे हैं और आचार्यने उपेक्षा किया इस ही कारणसे अर्जुनने जयद्रथका वध करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिच्छतः कथं वीर द्रोणस्य युधि पाण्डवः ।
भिन्द्यात्सुदुर्भिदं व्यूहं यतमानस्य शुष्मिणः ॥ ९ ॥
दयितः फाल्गुनो नित्यमाचार्यस्य महात्मनः ।
ततोऽस्य दत्तवान्द्वारमयुद्धेनैव शत्रुहन् ॥ १० ॥
अभयं सिन्धुराजाय दत्वा द्रोणः परन्तपः ।
प्रादात्किरीटिने द्वारं पश्य निर्गुणतां मयि ॥ ११ ॥
यद्यदास्यदनुज्ञां वै पूर्वमेव गृहान्प्रति ।
प्रस्थातुं सिन्धुराजस्य नाऽभविष्यज्जनक्षयः ॥ १२ ॥
जयद्रथो जीवितार्थी गच्छमानो गृहान्प्रति ।
मयाऽनार्येण संरुद्धो द्रोणात्प्राप्याऽभयं सखे ॥ १३ ॥
अद्य मे भ्रातरः क्षीणाश्चित्रसेनादयो रणे ।
भीमसेनं समासाद्य पश्यतां नो दुरात्मनाम् ॥ १४ ॥

कर्ण उवाच— आचार्यं मा विगर्हस्व शक्त्याऽसौ युद्ध्यते द्विजः ।
यथाबलं यथोत्साहं त्यक्त्वा जीवितमात्मनः ॥ १५ ॥

अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है । हे वीर ! रणभूमिमें यत्नवान् तेजस्वी द्रोणाचार्य की यदि इच्छा न रहती तो पाण्डुपुत्र अर्जुन किस प्रकारसे इस दुर्भेद व्यूहको भेद करनेमें समर्थ होता ? (७-९)

अर्जुन महात्मा द्रोणाचार्यको अत्यन्त ही प्रिय है इस ही कारणसे उन्होंने विना युद्धके ही उसे व्यूहके बीच प्रवेश करनेका मार्ग प्रदान किया था ॥ देखो मेरी भाग्यहीनतासे ही द्रोणाचार्यने जयद्रथको अभयदान करके भी अर्जुनको व्यूहके बीच प्रवेश करनेका मार्ग प्रदान किया ॥ वह यदि पहिले ही सिन्धुराज जयद्रथको घर जानेके वास्ते अनुमति देते तो इस प्रकार मेरी सेनाके पुरुषों और राजा जयद्रथका नाश न होता ॥ (१०-१२)

ओहो ! जब सिन्धुराज राजा जयद्रथ अपने प्राणकी अभिलाषासे घर जानेके वास्ते उद्यत हुए थे उस समय मैंने द्रोणाचार्यके समीप अभय पाकर अपनी मूर्खताके कारण उन्हें घर जानेके वास्ते निवारण किया था ॥ हाय ! मैं कैसा निठुर तथा दुष्टात्मा पुरुष हूं । देखो आज युद्धभूमिमें मेरे चित्रसेन आदि सहोदर भाई हमलोगोंके सम्मुख ही में भीमसेनके हाथसे मारे गये ॥ (१३-१४)

राजा दुर्योधनके ऐसे आक्षेप युक्त वचन सुनकर कर्ण बोले, महाराज ! द्रोणाचार्य अपने बल उत्साह और शक्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्नेनं समतिक्रम्य प्रविष्टः श्वेतवाहनः ।
नाऽत्र सूक्ष्मोऽपि दोषः स्यादाचार्यस्य कथञ्चन ॥१६॥
कृती दक्षो युवा शूरः कृतास्त्रो लघुविक्रमः ।
दिव्यास्त्रयुक्तमास्थाय रथं वानरलक्षणम् ॥ १७ ॥
कृष्णेन च गृहीताश्वमभेद्यकवचावृतः ।
गाण्डीवमजरं दिव्यं धनुरादाय वीर्यवान् ॥ १८ ॥
प्रवर्षन्निशितान्बाणान्बाहुद्रविणदर्पितः ।
यदर्जुनोऽभ्ययाद् द्रोणमुपपन्नं हि तस्य तत् ॥ १९ ॥
आचार्यः स्थविरो राजञ्शीघ्रयाने तथाऽक्षमः ।
बाहुव्यायामचेष्टायामशक्तस्तु नराधिप ॥ २० ॥
तेनैवमभ्यतिक्रान्तः श्वेताश्वः कृष्णसारथिः ।
तस्य दोषं न पश्यामि द्रोणस्याऽनेन हेतुना ॥ २१ ॥
अजय्यान्पाण्डवान्मन्ये द्रोणेनाऽस्त्रविदा मृधे ।
तथा ह्येनमतिक्रम्य प्रविष्टः श्वेतवाहनः ॥ २२ ॥

के अनुसार ही युद्ध कर रहे हैं इससे आप उनकी निन्दा न कीजिये। यद्यपि श्वेतवाहन अर्जुनने उन्हें अतिक्रम करके व्यूहके बीच प्रवेश किया है तथापि उस विषयमें द्रोणाचार्यका तनिक भी कुछ दोष नहीं दीख पडता है ॥ क्योंकि अर्जुन युवा अवस्थावाला बलवान् युद्धमें निपुण कृतास्त्र और शीघ्रताके सहित पराक्रम प्रकाशित करनेवाला है। विशेष करके कृष्ण जिस रथ पर बैठकर घोडोंकी बागडोर ग्रहण करके रथ हांकते हैं, उस दिव्य रथ पर बैठा हुआ बलवान् अर्जुन बन्दर ध्वजावाले रथसे युक्त दिव्य अस्त्रोंके सहित अभेद कवच पहने हुए अपने भुजबलसे मतवारा होकर चोखे बाणोंकी वर्षा करते हुए जो द्रोणाचार्यको अतिक्रम करके तुम्हारी व्यूहबद्ध सेनाके बीच प्रवेश करेगा यह अर्जुनके विषयमें कुछ असम्भव वार्त्ता नहीं है ॥ (१५–१९)

महाराज! द्रोणाचार्य बूढे शीघ्र गमन करनेमें असमर्थ और भुजबलसे शीघ्रतासे शस्त्र चलानेमें अर्जुनके समान सामर्थ्यवान् नहीं हैं ॥ इसही कारणसे श्रीकृष्ण सारथीसे युक्त श्वेतवाहन अर्जुनने द्रोणाचार्यको अतिक्रमण किया है; इससे द्रोणाचार्यका इस विषयमें कुछ भी दोष नहीं मालूम होता है ॥ महाराज ! युद्धभूमिमें पाण्डवोंको द्रोणाचार्य अजेय समझते हैं, इस ही कारण अर्जुनने उन्हें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैवादिष्टोऽन्यथाभावो न मन्ये विद्यते क्वचित् ।
यतो नो युध्यमानानां परं शक्त्या सुयोधन ॥ २३ ॥
सैन्धवो निहतो युद्धे दैवमत्र परं स्मृतम् ।
परं यत्नं कुर्वतां च त्वया सार्धं रणाजिरे ॥ २४ ॥
हत्वाऽस्माकं पौरुषं वै दैवं पश्चात्करोति नः ।
सततं चेष्टमानानां निकृत्या विक्रमेण च ॥ २५ ॥
दैवोपसृष्टः पुरुषो यत्कर्म कुरुते क्वचित् ।
कृतं कृतं हि तत्कर्म दैवेन विनिपात्यते ॥ २६ ॥
यत्कर्तव्यं मनुष्येण व्यवसायवता सदा ।
तत्कार्यमविशङ्केन सिद्धिर्दैवे प्रतिष्ठिता ॥ २७ ॥
निकृत्या वञ्चिताः पार्था विषयोगैश्च भारत ।
दग्धा जतुगृहे चापि द्यूतेन च पराजिताः ॥ २८ ॥
राजनीतिं व्यपाश्रित्य प्रहिताश्चैव काननम् ।

अतिक्रम करके तुम्हारी व्यूहबद्ध सेनाके बीच प्रवेश किया ॥ (२०-२२)

हे राजन् ! मेरे विचारमें अवश्य ही यह निश्चय होरहा है, कि दैव जिस विषयके अनुकूल रहता है कोई भी पुरुष किसी प्रकारसे उस विषयके अन्यथा कार्य करनेमें समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि हम लोग अपनी पूरी शक्तिके अनुसार युद्ध कर रहे थे। तौभी सिन्धुराज जयद्रथ मारे गये इससे दैवको इस स्थलमें प्रबल कहना पडेगा। और भी देखिये रणभूमिके बीच हम लोग तुम्हारे सङ्ग मिलकर सदाही कपटता और अपने पराक्रमसे तुम्हारे विजयकी अभिलाषा करते रहते हैं तौभी दैव हम लोगोंके पुरुषार्थको नष्ट करके हमारे उपायको निष्फल कर रहा है। (२३-२५)

महाराज ! भाग्यहीन पुरुष किसी समय चाहे कितने ही यत्नसे कोई कार्य करे परन्तु दैव यदि उससे विमुख रहता है तो उसके सम्पूर्ण अनुष्ठान बार बार नष्ट हो जाते हैं ॥ परन्तु कर्मोंके अनुष्ठान करनेवाले पुरुषोंको शङ्कारहित होकर अवश्य करने योग्य कर्मोंको सदासर्वदा करना योग्य है; कभी कर्त्तव्य कर्मोंके अनुष्ठानसे पीछे हटना उचित नहीं है; तब कार्यका होना और न होना दैवके आधीन है ॥ (२५-२७)

देखिये हम लोगोंने कुन्तीपुत्रोंको विष पिलाया; जतुगृहमें जलाया; और जूवेके खेलमें कपटताके सहित उन्हें ठगके नाना भांतिके क्लेश दिये और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्नेन च कृतं तत्तद्दैवेन विनिपातितम् ॥ २९ ॥
युध्यस्व यत्नमास्थाय दैवं कृत्वा निरर्थकम् ।
यततस्तव तेषां च दैवं मार्गेण यास्यति ॥ ३० ॥
न तेषां मतिपूर्वं हि सुकृतं दृश्यते क्वचित् ।
दुष्कृतं तव वा वीर बुद्ध्या हीनं कुरूद्वह ॥ ३१ ॥
दैवं प्रमाणं सर्वस्य सुकृतस्येतरस्य वा ।
अनन्यकर्म दैवं हि जागर्ति स्वपतामपि ॥ ३२ ॥
बहूनि तव सैन्यानि योधाश्च बहवस्तव ।
न तथा पाण्डुपुत्राणामेवं युद्धमवर्तत ॥ ३३ ॥
तैरल्पैर्बहवो यूयं क्षयं नीताः प्रहारिणः ।
शङ्के दैवस्य तत्कर्म पौरुषं येन नाशितम् ॥ ३४ ॥
सञ्जय उवाच— एवं सम्भाषमाणानां बहु तत्तज्जनाधिप ।
पाण्डवानामनीकानि समदृश्यन्त संयुगे ॥ ३५ ॥

राजनीतिके अवलम्बसे उन्हें वनवासी बनाया। इस प्रकारसे जिन जिन कर्मोंके अनुष्ठान हम लोगोंने यत्नपूर्वक किये थे दैवकी इच्छासे वे सम्पूर्ण कर्म निष्फल हुए॥ जो हो इस समय आप यत्नवान् होकर प्राणपणसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त होइये। हम लोगोंके दोनों सेनामें दैव यत्नवान् सेनाका पक्ष ही अवलम्बन करेगा, क्योंकि पाण्डवोंने बुद्धिपूर्वक किसी सत्कार्यका अनुष्ठान किया है और आपने बुद्धिहीनताके कारण किसी असत् कार्यका अनुष्ठान किया है ऐसा निश्चय नहीं होता है, तब जो उन लोगोंके किये हुए सम्पूर्ण कार्य सद्रूपसे और तुम्हारे अनुष्ठित कार्य असद्रूपसे परिणत हुए हैं भाग्य ही उस विषयमें प्रमाण स्वरूप है। क्योंकि भाग्य प्राणियोंके निद्राकालमें भी जागता रहता है ॥ (२८–३२)

जिस समय यह युद्ध उपस्थित हुआ, उस समय तुम्हारी ओर ही बहुतसी सेना तथा अनगिनत योद्धा थे; पाण्डुपुत्रोंकी उतनी सेना नहीं थी, परन्तु क्या ही आश्चर्यका विषय है, कि उनकी सेनाके पुरुषोंके थोडे होने पर भी तुम्हारे अनगिनत योद्धाओंका वध होता है, हम लोगोंका बल पुरुषार्थ जो नष्ट हो रहा है, वह सब दैवकी इच्छा ही समझनी चाहिये ॥ (३३–३४)

सञ्जय बोले, महाराज ! राजा दुर्योधन और कर्ण आपसमें इसी प्रकार अनेक भांतिकी बात चीत कर रहे थे; उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः प्रववृते युद्धं व्यतिषक्तरथद्विपम् ।
तावकानां परैः सार्धं राजन्दुर्मन्त्रिते तव ॥ ३६ ॥ [६६१९]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि जयद्रथवधपर्वणि पुनर्युद्धारंभे द्विपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५२ ॥ समाप्तं जयद्रथवधपर्व ।

---

६ घटोत्कचवधपर्व ।

सञ्जय उवाच— तदुदीर्णं गजानीकं बलं तव जनाधिप ।
पाण्डुसेनामतिक्रम्य योधयामास सर्वतः ॥ १ ॥
पञ्चालाः कुरवश्चैव योधयन्तः परस्परम् ।
यमराष्ट्राय महते परलोकाय दीक्षिताः ॥ २ ॥
शूराः शूरैः समागम्य शरतोमरशक्तिभिः ।
विव्यधुः समरेऽन्योन्यं निघ्नुश्चैव यमक्षयम् ॥ ३ ॥
रथिनां रथिभिः सार्धं रुधिरस्रावदारुणम् ।
प्रावर्त्तत महद्युद्धं निघ्नतामितरेतरम् ॥ ४ ॥
वारणाश्च महाराज समासाद्य परस्परम् ।
विषाणैर्दारयामासुः सुसंक्रुद्धा मदोत्कटाः ॥ ५ ॥

समय युद्धभूमिमें पाण्डवोंकी सेना दिखाई देने लगी। तिसके अनन्तर तुम्हारे और पाण्डवोंकी ओरके रथी रथीसे, गजपति गजपतिसे और पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धा लोग पदाति सेनाके शूरवीरोंके सम्मुख होकर अपने समान पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करने लगे। महाराज! तुम्हारा अविचारही इस महाघोर संग्राम का मूल है ॥ (३५-३६) [६६१९]

द्रोणपर्वमें एकसौ बावन अध्याय और जयद्रथवधपर्व समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ तिरपन अध्याय और घटोत्कचवधपर्व ।

सञ्जय बोले, महाराज! तुम्हारी हाथीयोंकी तैयार सेना पाण्डवोंकी सेनाको अतिक्रम कर चारों ओरसे युद्ध करने लगी ॥ कौरव और पाञ्चाल योद्धालोग यमराजके समान क्रुद्ध होकर स्वर्ग लोकमें गमन करनेकी इच्छासे एक दूसरेके सम्मुख होकर धनुष बाण तोमर आदि अस्त्रोंसे विस्तीर्ण यमराष्ट्रमें जानेके लिये लडने लगे। एक दूसरेके ऊपर शस्त्रोंसे प्रहार करने वाले रथियोंका आपसमें रुधिरस्रावसे महाघोर दारुण युद्ध होने लगा ॥ (१—४)

उस समय युद्धमें मतवारे हाथी क्रुद्ध होकर दूसरे मतवारे हाथियोंके हृदयमें अपने दातोंसे प्रहार करने लगे ॥ उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हयारोहान्हयारोहाः प्रासशक्तिपरश्वधैः ।
बिभिदुस्तुमुले युद्धे प्रार्थयन्तो महद्यशः ॥ ६ ॥
पत्तयश्च महाबाहो शतशः शस्त्रपाणयः ।
अन्योन्यमार्दयन्राजन्नित्यं यत्ताः पराक्रमे ॥ ७ ॥
गोत्राणां नामधेयानां कुलानां चैव मारिष ।
श्रवणाद्धि विजानीमः पञ्चालान्कुरुभिः सह ॥ ८ ॥
तेऽन्योन्यं समरे योधाः शरशक्तिपरश्वधैः ।
प्रैषयन्परलोकाय विचरन्तो ह्यभीतवत् ॥ ९ ॥
शरा दश दिशो राजंस्तेषां मुक्ताः सहस्रशः ।
न भ्राजन्ते यथातत्त्वं भास्करेऽस्तं गतेऽपि च ॥ १० ॥
तथा प्रयुध्यमानेषु पाण्डवेयेषु भारत ।
दुर्योधनो महाराज व्यवागाहत तद्बलम् ॥ ११ ॥
सैन्धवस्य वधेनैव भृशं दुःखसमन्वितः ।

महाघोर संग्रामभूमिमें घुडसवार योद्धा लोग घुडसवारोंके संमुख उपस्थित होकर बडे यशकी इच्छासे अपने परश्वध, शक्ति और प्रास आदि अस्त्रोंसे एक दूसरेके शरीरको क्षत-विक्षत करने लगे ॥ उस ही प्रकार सैकडों सहस्रों पैदल सेनाके योद्धा लोग नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके यत्नपूर्वक अपना पराक्रम प्रकाशित करते हुए एक दूसरे का नाश करने लगे ॥ (५-७)

महाराज ! जब पांचाल लोग कुरुसेना के संमुख स्थित होकर युद्ध करने लगे उस समय यह नहीं मालूम हो सकता था, कि कौनसे कुरुसेनाके योद्धा हैं; और कौनसे पाञ्चाल सेनाके वीर हैं; केवल उन लोगोंके मुहसे उनके नाम गोत्र और कुलका वृत्तान्त सुनकर हम लोग कुरुसेनाके और पाञ्चाल सेनाके पुरुषोंको मालूम करने लगे । इसी भांतिसे दोनों ओरके योद्धा लोग निर्भय चित्तसे रणभूमिके बीच घूमते हुए बाण शक्ति और फरशे आदि अस्त्रोंसे शत्रुसेनाके पुरुषोंका वध करके एक दूसरेको यम-पुरीमें भेजने लगे ॥ (८-९)

महाराज ! सूर्यके अस्त होने पर भी उन लोगोंके धनुषसे छूटे तथा हाथसे चलाये हुए बाण आदि अस्त्र-शस्त्र चारों ओरसे इकबारगी इतनी अधिकतासे चलने लगे, कि सन्ध्याके समय कुछ भी सूझ न पडता था, परन्तु पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष इस प्रकारसे युद्ध कर रहे थे, उसही समय कुरुराज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्तव्यमिति सञ्चिन्त्य प्राविशच्च द्विषद्बलम् ॥ १२ ॥
नादयन्रथघोषेण कम्पयन्निव मेदिनीम् ।
अभ्यवर्त्तत पुत्रस्ते पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ १३ ॥
स सन्निपातस्तुमुलस्तस्य तेषां च भारत ।
अभवत्सर्वसैन्यानामभावकरणो महान् ॥ १४ ॥
यथा मध्यन्दिने सूर्यं प्रतपन्तं गभस्तिभिः ।
तथा तव सुतं मध्ये प्रतपन्तं शरार्चिभिः ॥ १५ ॥
न शेकुर्भ्रातरं युद्धे पाण्डवाः समुदीक्षितुम् ।
पलायनकृतोत्साहा निरुत्साहा द्विषज्जये ॥ १६ ॥
पर्यधावन्त पञ्चाला वध्यमाना महात्मना ।
रुक्मपुङ्खैः प्रसन्नाग्रैस्तव पुत्रेण धन्विना ॥ १७ ॥
अर्द्यमानाः शरैस्तूर्णं न्यपतन्पाण्डुसैनिकाः ।
न तादृशं रणे कर्म कृतवन्तस्तु तावकाः ॥ १८ ॥
यादृशं कृतवान्राजा पुत्रस्तव विशाम्पते ।

दुर्योधनने शत्रुसेनाके बीच प्रवेश किया॥ उस समय राजा दुर्योधनने सिन्धुराज जयद्रथके मरनेसे अत्यन्त दुःखित होकर अपने प्राणकी आशा छोडके पाण्डवोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया ॥ १०-१२

तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने शत्रुसेनाके वीरोंके संमुख जानेके समय रथकी घर-घराहटसे पृथ्वीको कंपाते और दसों दिशाको अनुनादित करते हुए पाण्डवों की सेनाके बीच गमन किया ॥ उस समय पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके सङ्ग राजा दुर्योधनका महाघोर संग्राम होने लगा। जब तुम्हारे पुत्र दुर्योधन अपने बाणरूपी अग्निसे शत्रुसेनाके पुरुषोंको पीडित करने लगे उस समय ऐसा मालूम होने लगा, मानो दोपहर के सूर्य अपनी प्रचण्ड किरणोंसे जगत के प्राणियोंको भस्म किये डालते हैं। उस समय पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष भरत कुल भूषण दुर्योधनकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं हुए॥ वे सम्पूर्ण योद्धा लोग शत्रुओंके जीतनेमें उत्साह रहित होकर रणभूमिमें दुर्योधनके संमुखसे भागनेमें तत्पर हुए ॥ (१३—१६)

महाराज! पाञ्चाल योद्धा लोग धनुर्द्धारीयोंमें अग्रणी महात्मा दुर्योधनके चोखे बाणोंसे पीडित होके इधर उधर भागने लगे और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोगभी राजा दुर्योधनके तीक्ष्ण बाणोंसे मरकर पृथ्वीमें गिरने लगे। उस समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्रेण तव सा सेना पाण्डवी मथिता रणे ॥ १९ ॥
नलिनीं द्विरदेनेव समन्तात्फुल्लपङ्कजा ।
क्षीणतोयाऽनिलार्काभ्यां हतात्विडिव पद्मिनी ॥ २० ॥
बभूव पाण्डवी सेना तव पुत्रस्य तेजसा ।
पाण्डुसेनां हतां दृष्ट्वा तव पुत्रेण भारत ॥ २१ ॥
भीमसेनपुरोगास्तु पञ्चालाः समुपाद्रवन् ।
स भीमसेनं दशभिर्माद्रीपुत्रौ त्रिभिस्त्रिभिः ॥ २२ ॥
विराटद्रुपदौ षड्भिः शतेन च शिखण्डिनम् ।
धृष्टद्युम्नं च सप्तत्या धर्मपुत्रं च सप्तभिः ॥ २३ ॥
केकयांश्चैव चेदीश्च बहुभिर्निशितैः शरैः ।
सात्वतं पञ्चभिर्विध्वा द्रौपदेयांस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ २४ ॥
घटोत्कचं च समरे विध्वा सिंह इवाऽनदत् ।
शतशश्चाऽपरान्योधान्सद्विपांश्च महारणे ॥ २५ ॥

तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने युद्धमें जैसा कर्म किया, तुम्हारी ओरके कोई पुरुष भी वैसे कर्मको करनेमें समर्थ नहीं हुए । जैसे मतवारा हाथी तालावमें फूले हुए कमलपुष्पोंके समूहको तोडके नष्ट कर देता है, वैसे ही राजा दुर्योधन पाण्डवी सेनाके योद्धाओंको अपने बाणोंसे छिन्न भिन्न करके उनका नाश करने लगे । कमलके फूलोंसे युक्त तालाव जैसे वायुके प्रभावसे सूख कर शोभा रहित होजाता है, वैसे ही पाण्डवोंकी सेना भी तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके तेज तथा पराक्रमके प्रभावसे तेज रहित होगई । (१७–२१)

भीमसेन और पाञ्चाल सेनाके मुख्य मुख्य योद्धा लोग तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके अस्त्रोंसे अपनी सेनाके पुरुषोंका नाश होते देख, सब कोई मिलकर उनकी ओर दौडे । कुरुराज ! दुर्योधनने भीमसेन आदि पाण्डवोंको अपनी ओर आते देखकर भीमसेनको दस, नकुल सहदेव को तीन तीन, विराट और द्रुपदको छः छः, शिखण्डीको एक सौ, धृष्टद्युम्नको सत्तर, राजा युधिष्ठिरको सात और केकय तथा चेदी देशीय योद्धाओं को अनगिनत तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया । तिसके अनन्तर सात्यकिको पांच, द्रौपदीके पुत्रों और घटोत्कचको तीन तीन बाणोंसे विद्ध करके सिंहनाद किया । उस महाघोर संग्रामके समय वह प्रजा समूहके नाश करनेवाले यमराज के समान क्रुद्ध होकर घोडे, हाथी, रथी और पैदल-सेनाके सैंकडों योद्धा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरैरवचकर्तोग्रैः क्रुद्धोऽन्तक इव प्रजाः।
सा तेन पाण्डवी सेना वध्यमाना शिलीमुखैः ॥२६॥
तव पुत्रेण संग्रामे विदुद्राव नराधिप।
तं तपन्तमिवाऽऽदित्यं कुरुराजं महाहवे ॥ २७ ॥
नाऽशकन्वीक्षितुं राजन्पाण्डुपुत्रस्य सैनिकाः।
ततो युधिष्ठिरो राजा कुपितो राजसत्तम ॥ २८ ॥
अभ्यधावत्कुरुपतिं तव पुत्रं जिघांसया।
तावुभौ युधि कौरव्यौ समीयतुरिन्दमौ ॥ २९ ॥
स्वार्थहेतोः पराक्रान्तौ दुर्योधनयुधिष्ठिरौ।
ततो दुर्योधनः क्रुद्धः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ३० ॥
विव्याध दशभिस्तूर्णं ध्वजं चिच्छेद चेषुणा।
इन्द्रसेनं त्रिभिश्चैव ललाटे जघ्निवान्नृप ॥ ३१ ॥
सारथिं दयितं राज्ञः पाण्डवस्य महात्मनः ॥
धनुश्च पुनरन्येन चकर्ताऽस्य महारथः ॥ ३२ ॥
चतुर्भिश्चतुरश्चैव बाणैर्विव्याध वाजिनः।
ततो युधिष्ठिरः क्रुद्धो निमेषादिव कार्मुकम् ॥ ३३ ॥

ओंको अपने अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे खण्ड खण्ड करके पृथ्वीमें गिराने लगे। (२१—२६)

महाराज! पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके बाणोंसे पीडित होकर रणभूमिमें चारों ओर भागने लगे। अधिक क्या कहा जावे उस समय पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग प्रचण्ड तेजस्वी सूर्यकी भांति कुरुराज दुर्योधनको अपनी सेनाके पुरुषोंको तीक्ष्ण बाणोंसे भस्म करते देख उनकी ओर देखनेमें भी समर्थ न हुए॥ (२६-२८)

तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर विजयकी इच्छासे कुरुराज दुर्योधनकी ओर दौडे। उस समय शत्रुनाशन पराक्रमी कुरुनन्दन राजा युधिष्ठिर और दुर्योधन राज्यके निमित्त युद्धभूमिमें एक दूसरेके सम्मुख उपस्थित हुए। पहिले राजा दुर्योधनने क्रुद्ध होकर दश तीक्ष्ण बाणोंसे युधिष्ठिरको विद्ध करके फिर एक बाणसे उनके रथकी ध्वजाका दण्ड काट दिया। अनन्तर तीन बाणोंसे दुर्योधनने युधिष्ठिरके प्रिय सारथी इन्द्रसेनके ललाटमें प्रहार किया। फिर एक बाणसे उनके धनुषको काटकर चार बाणसे उनके रथके चारों घोडोंको विद्ध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यदादाय वेगेन कौरवं प्रत्यवारयत् ।
तस्य तान्निघ्नतः शत्रून्रुक्मपृष्ठं महद्धनुः ॥ ३४ ॥
भल्लाभ्यां पाण्डवो ज्येष्ठस्त्रिधा चिच्छेद मारिष ।
विव्याध चैनं दशभिः सम्यगस्तैः शितैः शरैः ॥ ३५ ॥
मर्म भित्त्वा तु ते सर्वे सँल्लग्नाः क्षितिमाविशन् ।
ततः परिवृता योधाः परिवव्रुर्युधिष्ठिरम् ॥ ३६ ॥
वृत्रहत्यै यथा देवाः परिवव्रुः पुरन्दरम् ।
ततो युधिष्ठिरो राजा तव पुत्रस्य मारिष ।
शरं च सूर्यरश्म्याभमत्युग्रमनिवारणम् ॥ ३७ ॥
हा हतोऽसीति राजानमुक्त्वाऽमुञ्चद्युधिष्ठिरः ।
स तेनाऽऽकर्णमुक्तेन विद्धो बाणेन कौरवः ॥ ३८ ॥
निषसाद रथोपस्थे भृशं सम्मूढचेतनः ।
ततः पाञ्चाल्यसेनानां भृशमासीद्रवो महान् ॥ ३९ ॥
हतो राजेति राजेन्द्र मुदितानां समन्ततः ।
बाणशब्दरवश्चोग्रः शुश्रुवे तत्र मारिष ॥ ४० ॥

किया । (२८—३३)

तब धर्म पुत्र युधिष्ठिर क्षणभरके बीच दूसरा धनुष ग्रहण करके वेगपूर्वक दुर्योधनके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ हे महाराज ! उस समय पाण्डवोंमें ज्येष्ठ राजा युधिष्ठिरने दोन भल्ल बाणोंसे शत्रुओंको विद्ध करनेवाले दुर्योधनका सुवर्ण पृष्ठ धनुष तीन भागोंमें काट दिया और अत्यन्त तीक्ष्ण दस बाणोंसे दुर्योधनको विद्ध किया। वे बाण दुर्योधनके मर्मोंको भेदकर पृथ्वीमें घुसगये । तब वृत्रहत्या के समय देवोंसे वेष्टित इन्द्रके समान राजा युधिष्ठिर भी अपने योद्धाओंसे चारों ओरसे वेष्टित हुआ । (३३–३७)

उन्होंने सूर्यकिरणके समान प्रकाशमान एक प्रचण्ड बाण धनुषपर चढाकर 'अरे तू अब मरा चाहता है' ऐसा कहके दुर्योधनकी ओर चलाया। कुरुराज दुर्योधन राजा युधिष्ठिरके चलाये हुए उस बाणसे अत्यन्त विद्ध और मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये । महाराज ! उस समय युद्धभूमिमें चारों ओरसे पाञ्चाल योद्धा लोग प्रसन्न होकर कहने लगे "कुरुराज दुर्योधन मारे गये ! राजा दुर्योधन मारे गये।" इसी भांति चारों ओरसे तुमुल शब्द होने लगा और बाणोंके शब्दके सहित मिलकर महाघोर शब्द उत्पन्न हुआ । (३७–४०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्रोणो द्रुतं तत्र प्रत्यदृश्यत संयुगे।
हृष्टो दुर्योधनश्चाऽपि दृढमादाय कार्मुकम् ॥ ४१ ॥
तिष्ठ तिष्ठेति राजानं ब्रुवन्पाण्डवमभ्ययात्।
प्रत्युद्ययुस्तं त्वरिताः पञ्चाला जयगृद्धिनः ॥ ४२ ॥
तान्द्रोणः प्रतिजग्राह परीप्सन्कुरुसत्तमम्।
चण्डवातोद्धुतान्मेघान्निघ्नन्रश्मिमुचो यथा ॥ ४३ ॥
ततो राजन्महानासीत्संग्रामो भैरवो धनः।
तावकानां परेषां च समेतानां युयुत्सया ॥ ४४ ॥ [६६६३]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे दुर्योधनपराभवे त्रिपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच- यत्तदा प्राविशत्पाण्डूनाचार्यः कुपितो बली।
उक्त्वा दुर्योधनं मन्दं मम शास्त्रातिगं सुतम् ॥ १ ॥
प्रविश्य विचरन्तं च रथे शूरमवस्थितम्।
कथं द्रोणं महेष्वासं पाण्डवाः पर्यवारयन् ॥ २ ॥

उस ही समय द्रोणाचार्य शीघ्रताके सहित युद्धभूमिमें वहांपर उपस्थित हुए और दुर्योधन भी सावधान होकर एक दृढ धनुष्य ग्रहण करके हर्ष पूर्वक युधिष्ठिरको "खडा रह, खडा रह!" कहके उनकी ओर दौडे ॥ तब पाञ्चाल योद्धालोग विजयकी इच्छा से शीघ्रताके सहित दुर्योधनकी ओर दौडे। महाराज! जैसे प्रचण्ड वायुसे हिले हुए बादलोंको किरणधारी सूर्य वेगपूर्वक छिन्न भिन्न कर देता है, वैसे ही द्रोणाचार्य कुरुराज दुर्योधनकी रक्षाके वास्ते यत्नवान् होकर दुर्योधनकी ओर आये हुए पाञ्चाल योद्धाओंको रोकके उनका वध करने लगे॥ तिसके अनन्तर युद्धभूमिमें विजयकी इच्छा करनेवाले कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंका महाघोर तुमुल युद्ध होने लगा ॥ (४१—४४) [६६६३]

द्रोणपर्वमें एकसौ तिरपन अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ चौवन अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! उस समय जब पराक्रमी द्रोणाचार्यने शासन को अतिक्रम करनेवाले तथा नीच बुद्धि वाले मेरे पुत्र दुर्योधनको तिरस्कृत कर के पाण्डवोंकी सेनामें प्रवेश किया; और जब अत्यन्त पराक्रमी महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करके रथमें बैठकर रणभूमिमें घूमने लगे, तब पाण्डवोंने किस भांतिसे उन्हें निवारण किया? उस महा घोर संग्रामके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केऽरक्षन्दक्षिणं चक्रमाचार्यस्य महाहवे ।
के चोत्तरमरक्षन्त निघ्नतः शात्रवान्बहून् ॥ ३ ॥
के चाऽस्य पृष्ठतोऽन्वासन्वीरा वीरस्य योधिनः ।
के पुरस्तादवर्तन्त रथिनस्तस्य शत्रवः ॥ ४ ॥
मन्ये तानस्पृशच्छीतमतिवेलमनार्तवम् ।
मन्ये ते समवेपन्त गावो वै शिशिरे यथा ॥ ५ ॥
यत्प्राविशन्महेष्वासः पञ्चालानपराजितः ।
नृत्यन्स रथमार्गेषु सर्वशस्त्रभृतां वरः ॥ ६ ॥
निर्दहन्सर्वसैन्यानि पञ्चालानां रथर्षभः ।
धूमकेतुरिव क्रुद्धः कथं मृत्युमुपेयिवान् ॥ ७ ॥

सञ्जय उवाच— सायाह्ने सैन्धवं हत्वा राज्ञा पार्थः समेत्य च ।
सात्यकिश्च महेष्वासो द्रोणमेवाऽभ्यधावताम् ॥ ८ ॥
तथा युधिष्ठिरस्तूर्णं भीमसेनश्च पाण्डवः ।
पृथक्चमूभ्यां संयत्तौ द्रोणमेवाऽभ्यधावताम् ॥ ९ ॥

समय जब द्रोणाचार्य अनगिनत शत्रु सेनाके पुरुषोंके नाश करनेमें प्रवृत्त हुए तब मेरी सेनाके किन किन योद्धाओंने दहिने चक्र और कौनसे योद्धाओंने उनके बायें चक्रकी रक्षा करी थी और वह महा धनुर्द्धर द्रोणाचार्य जब युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए तब मेरी ओरके कौनसे योद्धा लोग उनकी पृष्ठरक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए थे और कौनसे योद्धा उनके आगे थे ? (१—४)

हे सञ्जय ! मुझे बोध होता है, कि जिस समय सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य पाञ्चाल सेनाके बीच प्रविष्ट हुए होंगे, उस समय वे सम्पूर्ण योद्धालोग शीत ऋतुके न होते ही भययुक्त होनेके कारण शीत और कम्पसे व्याप्त होगये होंगे, जैसे शीतकालमें अत्यन्त शीतसे गौओंके समूह कांपते हुए दीख पडते हैं । मुझे निश्चय हो रहा है कि रथिश्रेष्ठ द्रोणाचार्य अग्निके समान क्रुद्ध होकर पाञ्चालों की सेना को दग्ध करते होंगे तौ भी उनकी मृत्यु कैसी हुई? (५—७)

सञ्जय बोले, महाराज ! पृथापुत्र महाधनुर्द्धर अर्जुन और सात्यकि संध्याके समयमें जयद्रथका वध करनेके अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिरसे भेट करके फिर युद्ध करनेके वास्ते द्रोणाचार्यकी ओर दौडे ॥ तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर और भीमसेन अलग अलग सेना लेकर द्रोणाचार्यकी ओर बढे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्रैव नकुलो धीमान्सहदेवश्च दुर्जयः।
धृष्टद्युम्नः सहानीको विराटश्च सकेकयः ॥ १० ॥
मत्स्याः शाल्वाः ससेनाश्च द्रोणमेव ययुर्युधि।
द्रुपदश्च तथा राजा पञ्चालैरभिरक्षितः ॥ ११ ॥
धृष्टद्युम्नपिता राजन्द्रोणमेवाऽभ्यवर्तत।
द्रौपदेया महेष्वासा राक्षसश्च घटोत्कचः ॥ १२ ॥
ससैन्यास्ते न्यवर्तन्त द्रोणमेव महाद्युतिम्।
प्रभद्रकाश्च पञ्चालाः षट्सहस्राः प्रहारिणः ॥ १३ ॥
द्रोणमेवाऽभ्यवर्तन्त पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्।
तथेतरे नरव्याघ्राः पाण्डवानां महारथाः ॥ १४ ॥
सहिताः संन्यवर्तन्त द्रोणमेव द्विजर्षभम्।
तेषु शूरेषु युद्धाय गतेषु भरतर्षभ ॥ १५ ॥
बभूव रजनी घोरा भीरूणां भयवर्धिनी।
योधानामशिवा रौद्रा राजन्नन्तकगामिनी ॥ १६ ॥
कुञ्जराश्वमनुष्याणां प्राणान्तकरणी तदा।

महाराज! इसी प्रकारसे द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्धकी इच्छा करके पराक्रमी सहदेव बुद्धिमान नकुल और विराट भी केकय मत्स्य और शाल्व देशीय शूर वीरोंके सहित द्रोणाचार्य की ओर दौडे ॥ (८—११)

इसके अतिरिक्त पाञ्चाल सेनासे रक्षित धृष्टद्युम्नके पिता पाञ्चालराज द्रुपद द्रौपदीके पांचों पुत्र और राक्षस घटोत्कच ये सब कोई अपनी अपनी सेनाके सहित तेजस्वी द्रोणाचार्यकी ओर दौडे। युद्धविद्यामें निपुण छः हजार पाञ्चाल और प्रभद्रक योद्धा लोग शिखण्डीको अगाडी करके द्रोणाचार्यकी ओर दौडे। इसके अतिरिक्त पाण्डवोंकी सेनाके और भी दूसरे बहुतेरे महारथ योद्धा लोग पुरुष शार्दूल ब्राह्मण श्रेष्ठ द्रोणाचार्य के संमुख उपस्थित हुए। (११–१५)

महाराज! जब वे सम्पूर्ण योद्धा इस प्रकारसे युद्धभूमिमें इकट्ठे होकर संग्राम करनेमें प्रवृत्त हुए तब प्राणियोंके अकल्याणकारी शूरवीरोंके नाश करनेवाली और कादरोंको भयभीत करनेवाली अत्यन्त भयङ्करी रात्रिका समय उपस्थित हुआ। क्योंकि उस महाघोर रात्रिके समय अनगिनत हाथी घोडे और मनुष्योंका प्राणनाश हुआ था। उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्यां रजन्यां घोरायां नदन्त्यः सर्वतः शिवाः ॥१७॥
न्यवेदयन्भयं घोरं सज्वालकवलैर्मुखैः ।
उल्काश्चाऽप्यदृश्यन्त शंसन्तो विपुलं भयम् ॥ १८ ॥
विशेषतः कौरवाणां ध्वजिन्यामतिदारुणाः ।
ततः सैन्येषु राजेन्द्र शब्दः समभवन्महान् ॥ १९ ॥
भेरीशब्देन महता मृदङ्गानां स्वनेन च ।
गजानां बृंहितैश्चाऽपि तुरङ्गाणां च हेषितैः ॥ २० ॥
खुरशब्दनिपातैश्च तुमुलः सर्वतोऽभवत् ।
ततः समभवद्युद्धं सन्ध्यायामतिदारुणम् ॥ २१ ॥
द्रोणस्य च महाराज सृञ्जयानां च सर्वशः ।
तमसा चाऽऽवृते लोके न प्राज्ञायत किञ्चन ॥ २२ ॥
सैन्येन रजसा चैव समन्तादुत्थितेन ह ।
नरस्याऽश्वस्य नागस्य समसज्जत शोणितम् ॥ २३ ॥
नाऽपश्याम रजो भौमं कश्मलेनाऽभिसंवृताः ।
रात्रौ वंशवनस्येव दह्यमानस्य पर्वते ॥ २४ ॥

महा भयङ्करी रात्रिके समय सियार अपने विकट मुखोंको बाये हुए चारों ओरसे डरावनी बोली बोलते हुए महाभयका विषय सूचित कराने लगे । विशेष करके कौरवोंकी सेनाके बीच नाना प्रकारके अशकुन तथा मांस भक्षण करनेवाले जीव और उल्लु आदि पक्षी आनेवाली महाभयकी सूचना देने लगे। (१५-१९)

महाराज ! तिसके अनन्तर सैकडों ढोल मृदङ्ग और नगाडे आदि बाजोंके शब्द, हाथियोंकी चिंघाड, घोडोंकी हिनहिनाहट और टापका शब्द भेरी आदि युद्धके जुझाऊ बाजोंके सङ्ग मिलकर महाघोर तुमुल शब्द उत्पन्न हुआ। उस ही रात्रिके समय पाञ्चाल और सृञ्जयोंके सङ्ग द्रोणाचार्यका महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। (१९-२२)

उस समय महाघोर अन्धकारसे सम्पूर्ण दिशा छिप गयीं और वीरोंके पांवके ठोकरोंसे इतनी धूलि उडके आकाश मण्डलमें पूरित होगयी कि उस समय कुछ भी न सूझ पडता था; परन्तु क्षण भरके अनन्तर हाथी घोडे और मनुष्योंके रुधिर बहनेसे हम लोग मोहित होकर उस रणभूमिको धूलिरहित ही समझने लगे। महाराज ! रात्रिके समय पर्वत तथा बांसके जङ्गलोंके बीच अग्निके लगनेसे जैसा शब्द उत्पन्न होता है वैसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोरश्चटचटाशब्दः शस्त्राणां पततामभूत् ।
मृदङ्गानकनिर्हादैर्झर्झरैः पटहैस्तथा ॥ २५ ॥
फेत्कारैर्हेषितैः शब्दैः सर्वमेवाऽऽकुलं बभौ ।
नैव स्वे न परे राजन्प्राज्ञायन्त तमोवृते ॥ २६ ॥
उन्मत्तमिव तत्सर्वं बभूव रजनीमुखे ।
भौमं रजोऽथ राजेन्द्र शोणितेन प्रणाशितम् ॥ २७ ॥
शातकौम्भैश्च कवचैर्भूषणैश्च तमोऽभ्यगात् ।
ततः सा भारती सेना मणिहेमविभूषिता ॥ २८ ॥
द्यौरिवाऽऽसीत्सनक्षत्रा रजन्यां भरतर्षभ ।
गोमायुबलसंघुष्टा शक्तिध्वजसमाकुला ॥ २९ ॥
वारणाभिरुता घोरा क्ष्वेडितोत्कुष्टनादिता ।
तत्राऽभवन्महाशब्दस्तुमुलो लोमहर्षणः ॥ ३० ॥
समावृण्वन्दिशः सर्वा महेन्द्राशनिनिःस्वनः ।

ही सेनाके शूरवीरों के अस्त्रशस्त्रों की बार बार खटपटाहटसे रणभूमिके बीच महाघोर शब्द सुनाई देने लगा॥ २२-२५

मृदङ्ग,बांसुरी,झांझ,ढोल और नगाडे आदि जुझाऊ बाजोंके सहित घोडे,हाथी मनुष्य और अस्त्र शस्त्रोंका शब्द मिलकर वह शब्द सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलमें गूंज उठा। उस रात्रिके समय चारों ओर अन्धेरा छा रहा था इससे दोनों सेनाके पुरुष उन्मत्तके समान दिखाई देने लगे। अधिक क्या कहा जावे उस समय अपनी सेना और शत्रुसेनाके कोई पुरुष भी नहीं चीन्ह पडते थे। उसके अनन्तर जैसे रुधिर बहनेसे धूलिका उडना बन्द होगया वैसे ही शूरवीर पुरुषोंके सुवर्णभूषित वर्म और नाना प्रकारके आभूषणोंकी चमक दमकसे कुछ अन्धकार दूर होगया;और उस समय मणिरत्नोंसे भूषित वह भारती सेना इस प्रकार शोभित होने लगी जैसे तारोंके समूहसे आकाश शोभायमान लगता है। (२५-२९)

शक्ति आदि अस्त्र शस्त्र और ध्वजा पताकासे युक्त वह सेना कौवे कङ्क गिद्ध तथा सियारोंकी डरावनी बोली और हाथी घोडे शूरवीरोंके सिंहनाद और अस्त्र शस्त्रोंकी खटपटाहटके शब्दसे अत्यन्त ही भयानक मालूम होने लगी। उस समय रोएंको खडा करने वाला इस प्रकार महाघोर कोलाहल होने लगा मानो सम्पूर्ण दिशाओंको स्तम्भित करके इन्द्रके वज्रका शब्द सुनाई देरहा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा निशीथे महाराज सेनाऽदृश्यत भारती ॥ ३१ ॥
अङ्गदैः कुण्डलैर्निष्कैः शस्त्रैश्चैवाऽवभासिता ।
तत्र नागा रथाश्चैव जाम्बूनदविभूषिताः ॥ ३२ ॥
निशायां प्रत्यदृश्यन्त मेघा इव सविद्युतः ।
ऋष्टिशक्तिगदाबाणमुसलप्रासपट्टिशाः ॥ ३३ ॥
सम्पतन्तो व्यदृश्यन्त भ्राजमाना इवाऽग्नयः ।
दुर्योधनपुरोवातां रथनागबलाहकाम् ॥ ३४ ॥
वादित्रघोषस्तनितां चापविद्युद्ध्वजैर्वृताम् ।
द्रोणपाण्डवपर्जन्यां खड्गशक्तिगदाशनिम् ॥ ३५ ॥
शरधारास्त्रपवनां भृशं शीतोष्णसंकुलाम् ।
घोरां विस्मापनीमुग्रां जीवितच्छिदमप्लवाम् ॥ ३६ ॥
तां प्राविशन्नतिभयां सेनां युद्धचिकीर्षवः ।
तस्मिन्रात्रिमुखे घोरे महाशब्दनिनादिते ॥ ३७ ॥

है । (२९–३१)

मध्य रात्रिके समयमें वह भारती सेना कवच, कुण्डल, स्वर्णमुद्रा तथा नाना प्रकारके अस्त्र-शस्त्रोंसे प्रकाशित होकर अत्यन्त शोभित हुई और उस सेनाके बीच सुवर्णभूषित हाथियोंके समूह और रथ इस प्रकार शोभित होने लगे जैसे बिजलीसे युक्त बादल शोभायमान लगता है । शक्ति ऋष्टि गदा बाण मूशल फरशे और पट्टिश आदि अस्त्र शस्त्रोंके चलनेसे उस समय ऐसा मालूम होने लगा, मानो चारों ओरसे अग्निकी वर्षा होरही है । (३१–३४)

महाराज ! तिसके अनन्तर सेनाके बीच द्रोणाचार्य और पाण्डवरूपी बादलोंका उदय हुआ, कुरुराज दुर्योधन उन बादलोंको अगाडी बढानेवाले वायु रूपी हुए; रथ हाथी और घोडे ही उस समय बकपांति रूपी बोध हुए, जुझाऊ बाजोंका शब्द ही उसमें बादल गर्जनके समान मालूम होने लगा, धनुष और ध्वजा बिजलीके समान दीख पडते थे। तलवार शक्ति और गदा आदि अस्त्र उसमें वज्र समान मालूम होते थे और लगातार बाणोंका चलाना ही उसमें जलवर्षाके समान बोध होने लगा। युद्धकी अभिलाष करनेवाले शूरवीर पुरुषोंने उस महाघोर भयङ्कर दुःखसे तरने योग्य भारती सेनाके बीच प्रवेश किया । (३४–३७)

महाराज ! शूरवीरों के हर्ष और कादरोंके भयको बढानेवाली महाघोर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीरूणां त्रासजनने शूराणां हर्षवर्धने।
रात्रियुद्धे महाघोरे वर्तमाने सुदारुणे ॥ ३८ ॥
द्रोणमभ्यद्रवन्क्रुद्धाः सहिताः पाण्डुसृञ्जयाः।
ये ये प्रमुखतो राजन्नावर्तन्त महारथाः ॥ ३९ ॥
तान्सर्वान्विमुखांश्चक्रे कांश्चिन्निन्ये यमक्षयम्।
तानि नागसहस्राणि रथानामयुतानि च ॥ ४० ॥
पदातिहयसङ्घानां प्रयुतान्यर्बुदानि च।
द्रोणेनैकेन नाराचैर्निर्भिन्नानि निशामुखे ॥ ४१ ॥ [६७०४]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे चतुःपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥१५४॥

धृतराष्ट्र उवाच- तस्मिन्प्रविष्टे दुर्धर्षे सृञ्जयानमितौजसि।
अमृष्यमाणे संरब्धे का वोऽभूद्बै मतिस्तदा ॥ १ ॥
दुर्योधनं तथा पुत्रमुक्त्वा शास्त्रातिगं मम।
यत्प्राविशदमेयात्मा किं पार्थः प्रत्यपद्यत ॥ २ ॥
निहते सैन्धवे वीरे भूरिश्रवसि चैव ह।

कोलाहल युक्त भयङ्कर रात्रिके समय दोनों सेनाके पुरुषोंका दारुण युद्ध होने लगा; पाण्डव और सृञ्जय योद्धा लोग मिलकर क्रोधपूर्वक द्रोणाचार्यकी ओर दौडे। परन्तु जो वीरपुरुष उस समय महात्मा द्रोणाचार्यके सम्मुख उपस्थित हुए द्रोणाचार्यने उन सम्पूर्ण योद्धाओं-को युद्धभूमिसे विमुख कर दिया और कितने ही शूरवीरों का वध करके पृथ्वीमें गिरा दिया। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्यने उस रात्रिके समय अपने तीक्ष्ण बाणोंसे एक हजार हाथी दश हजार रथी पचास हजार पैदल सेनाके योद्धाओं और एक अर्बुद घोडोंको छिन्न भिन्न कर तथा उनका वध करके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (३७-४१) [६७०४]

द्रोणपर्वमें एकसौ चौवन अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ पचपन अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! युद्धभूमिमें महापराक्रमी अत्यन्त बलवा-न धनुर्धारी द्रोणाचार्यने जब क्रोधपूर्वक सृञ्जयोंकी सेनामें प्रवेश किया उस समय तुम लोगोंका चित्त कैसा हुआ था? और उन्होंने शासन अतिक्रम करनेवाले तेरे पुत्र दुर्योधनका तिरस्कार करके जब पाण्डवोंकी सेनामें प्रवेश किया उस समय पृथापुत्रोंने किस का-र्यका अनुष्ठान किया? क्योंकि युद्धमें अपराजित महातेजस्वी द्रोणाचार्य महा-वीर जयद्रथ और भूरिश्रवाके वधसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदाऽभ्यगान्महातेजाः पञ्चालानपराजितः ॥ ३ ॥
किममन्यत दुर्धर्षे प्रविष्टे शत्रुतापने ।
दुर्योधनस्तु किं कृत्यं प्राप्तकालममन्यत ॥ ४ ॥
के च तं वरदं वीरमन्वयुर्द्विजसत्तमम्
के चाऽस्य पृष्ठतोऽगच्छन्वीराः शूरस्य युध्यतः ॥ ५ ॥
के पुरस्तादवर्तन्त निघ्नन्तः शात्रवान्रणे ।
मन्येऽहं पाण्डवान्सर्वान्भारद्वाजशरार्दितान् ॥ ६ ॥
शिशिरे कम्पमाना वै कृशा गाव इव प्रभो ।
प्रविश्य स महेष्वासः पञ्चालानरिमर्दनः ।
कथं नु पुरुषव्याघ्रः पञ्चत्वमुपजग्मिवान् ॥ ७ ॥
सर्वेषु योधेषु च सङ्गतेषु रात्रौ समेतेषु महारथेषु ।
संलोड्यमानेषु पृथग्बलेषु के वस्तदानीं मतिमन्त आसन् ॥ ८ ॥

क्रुद्ध होकर पाञ्चाल सेनाकी ओर दौडे थे ॥ इससे जब वह पराक्रमी धनुर्द्धारी शत्रुनाशन द्रोणाचार्यने शत्रुसेनाके बीच प्रवेश किया उस समय तुम लोगोंके चित्तमें कैसा विचार उत्पन्न हुआ था और दुर्योधनने भी उस समयके अनुसार किस कर्त्तव्य कार्यका अनुष्ठान किया था ? (१--४)

हे सञ्जय दुर्योधनकी अभिलाषाको पूरी करनेके वास्ते जब द्रोणाचार्यने शत्रुसेनाकी ओर गमन किया था तब मेरी ओरके कौन कौन योद्धा उनके अनुगामी हुए थे ? और युद्ध करनेके समय कौनसे योद्धा उनके पृष्ठरक्षामें नियुक्त हुए थे ? फिर रणभूमिके बीच जब वह शत्रुओंके संहार करनेमें प्रवृत्त हुए तब पाण्डवोंकी सेनाके कौन कौन वीर उनके संमुख उपस्थित हुए ? हे सञ्जय ! मुझे बोध होता है जैसे शिशिर ऋतुमें शीतसे कांपते हुए गौवोंका समूह कम्पित होता है वैसे ही भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित होकर पाण्डव लोग भी कांपने लगे होंगे । ओहो ! वह शत्रुओंके नाश करनेवाले पुरुष शार्दूल महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य पाञ्चाल सेनाके बीच प्रवेश करके किस प्रकार मारे गये ? (५-७)

उस रात्रिके समय जब युद्धके निमित्त रणभूमिमें अपनी सेना सहित इकट्ठे हुए महा रथ योद्धा लोग इधर उधर अपने समान वीरोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होकर चारों ओर शत्रुसेनाको तितर बितर करने लगे, उस समय तुम लोगोंके चित्तमें कैसा विचार उत्पन्न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हतांश्चैव विषक्तांश्च पराभूतांश्च शंससि।
रथिनो विरथांश्चैव कृतान्युद्धेषु मामकान् ॥ ९ ॥
तेषां संलोड्यमानानां पाण्डवैर्हतचेतसाम्।
अन्धे तमसि मग्नानामभवत्का मतिस्तदा ॥ १० ॥
प्रहृष्टांश्चाऽप्युदग्रांश्च सन्तुष्टांश्चैव पाण्डवान्।
शंससीहाऽप्रहृष्टांश्च विभ्रष्टांश्चैव मामकान् ॥ ११ ॥
कथमेषां तदा तत्र पार्थानामपलायिनाम्।
प्रकाशमभवद्रात्रौ कथं कुरुषु सञ्जय ॥ १२ ॥

सञ्जय उवाच— रात्रियुद्धे तदा राजन्वर्तमाने सुदारुणे।
द्रोणमभ्यद्रवन्सर्वे पाण्डवाः सह सोमकैः ॥ १३ ॥
ततो द्रोणः केकयांश्च धृष्टद्युम्नस्य चाऽऽत्मजान्।
सम्प्रैषयत्प्रेतलोकं सर्वानिषुभिराशुगैः ॥ १४ ॥
तस्य प्रमुखतो राजन्येऽवर्तन्त महारथाः।
तान्सर्वान्प्रेषयामास पितृलोकं स भारत ॥ १५ ॥
प्रमथ्नन्तं तदा वीरान्भारद्वाजं महारथम्।

हुआ था? तुम कहते हो कि मेरी ओरके योद्धा लोग उस रात्रिके समय बहुतेरे मारे गये, कितने ही युद्ध भूमिसे भागे, कितने ही पराजित हुए और रथियोंकी सेनाके बीच कितने ही रथभ्रष्ट होगये थे। भला कहो तो सही, उस महाघोर अन्धकारके समय जब तुम लोग पाण्डवोंकी सेनाके संमुखसे तितर बितर होकर रणभूमिके बीच मोहित होगये थे तब तुम लोगोंकी बुद्धि कैसे स्थिर रह सकती थी? (८-१०)

तुम यह भी कहते हो, कि पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष जययुक्त हर्षित उत्साही और आनन्दित थे; और मेरी सेनाके पुरुष भयभीत तथा शत्रुओंके जीतनेमें उत्साहरहित होगये थे, जो हो उस रात्रिके समय पीछे न हटनेवाले कौरव और पाण्डवोंका जैसा युद्ध दीख पडा था, वह तुम मेरे समीप वर्णन करो॥ (११-१२)

संजय बोले, महाराज! जब उस रात्रिके समय भयङ्कर संग्राम होने लगा तब पाण्डव लोग सोमकवंशियोंके सहित मिलकर द्रोणाचार्यकी ओर दौडे। परन्तु द्रोणाचार्यने धृष्टद्युम्नके पुत्रों और केकय देशीय वीरोंको तीक्ष्ण बाणोंसे मार कर उन्हें यमपुरी में भेजदिया। महाराज! जब महारथी भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंका नाश करने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यवर्तत संक्रुद्धः शिबी राजा प्रतापवान् ॥ १६ ॥
तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य पाण्डवानां महारथम् ।
विव्याध दशभिर्बाणैः सर्वपारसवैः शितैः ॥ १७ ॥
तं शिबिः प्रतिविव्याध त्रिंशता निशितैः शरैः ।
सारथिं चाऽस्य भल्लेन सयमानो न्यपातयत् ॥ १८ ॥
तस्य द्रोणो हयान्हत्वा सारथिं च महात्मनः ।
अथाऽस्य सशिरस्त्राणं शिरः कायादपाहरत् ॥ १९ ॥
ततोऽस्य सारथिं क्षिप्रमन्यं दुर्योधनोऽदिशत् ।
स तेन संगृहीताश्वः पुनरभ्यद्रवद्रिपून् ॥ २० ॥
कलिङ्गानामनीकेन कालिङ्गस्य सुतो रणे ।
पूर्वं पितृवधात्क्रुद्धो भीमसेनमुपाद्रवत् ॥ २१ ॥
स भीमं पञ्चभिर्विद्ध्वा पुनर्विव्याध सप्तभिः ।
विशोकं त्रिभिरानच्छर्द् ध्वजमेकेन पत्त्रिणा ॥ २२ ॥
कलिङ्गानां तु तं शूरं क्रुद्धं क्रुद्धो वृकोदरः ।

लगे, तब प्रतापवान् शिबिराज उनके संमुख उपस्थित हुए ॥ (१३–१६)

द्रोणाचार्यने पाण्डवोंकी ओरके महारथ योद्धा शिबिराजको अपने संमुख आते देख, लोहमय दस बाणोंसे उन्हें विद्ध किया, शिबिराजनेभी तीस बाणोंसे द्रोणाचार्यको विद्ध करके फिर गर्व पूर्वक उनके सारथीको भल्लास्त्रसे मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया । तब द्रोणाचार्यने महात्मा शिबिराजके सारथी और घोडों का वध करके एक बाणसे उनके शिरस्त्राण भूषित सिरको काटके पृथ्वी में गिरा दिया । अनन्तर दुर्योधनने द्रोणाचार्यके रथ हांकनेके वास्ते एक दूसरा सारथी भेज दिया, उसने आके द्रोणाचार्यके घोडों की बागडोर ग्रहण करी, तब पराक्रमी द्रोणाचार्य फिर शत्रुओंकी ओर दौडे ॥ (१७—२०)

महाराज ! पहिले भीमसेनने कलिङ्गराजका वध किया था, इसही कारण इस समय कलिङ्गराजके पुत्र अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपनी सेनाके सहित भीमसेनकी ओर दौडे, कलिङ्गराजपुत्रने भीमसेनको पहिले पांच बाणोंसे विद्ध करके फिर सात बाणोंसे विद्ध किया । तिसके अनन्तर फिर उन्होंने तीन बाणोंसे भीमसेनके सारथी विशोकको और एक बाणसे उनके रथकी ध्वजाको विद्ध किया ॥ (२१–२२)

तब भीमसेन क्रुद्ध होके अपने रथसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथाद्रथमभिद्रुत्य मुष्टिनाऽभिजघान ह ॥ २३ ॥
तस्य मुष्टिहतस्याऽऽजौ पाण्डवेन बलीयसा।
सर्वाण्यस्थीनि सहसा प्रापतन्वै पृथक्पृथक् ॥ २४ ॥
तं कर्णो भ्रातरश्चाऽस्य नाऽमृष्यन्त परन्तप।
ते भीमसेनं नाराचैर्जघ्नुराशीविषोपमैः ॥ २५ ॥
ततः शत्रुरथं त्यक्त्वा भीमो ध्रुवरथं गतः।
ध्रुवं चाऽस्यन्तमनिशं मुष्टिना समपोथयत् ॥ २६ ॥
स तथा पाण्डुपुत्रेण बलिनाऽभिहतोऽपतत्।
तं निहत्य महाराज भीमसेनो महाबलः ॥ २७ ॥
जयरातरथं प्राप्य मुहुः सिंह इवाऽनदत्।
जयरातमथाऽऽक्षिप्य नदन्सव्येन पाणिना ॥ २८ ॥
तलेन नाशयामास कर्णस्यैवाऽग्रतः स्थितः।
कर्णस्तु पाण्डवे शक्तिं काञ्चनीं समवासृजत् ॥ २९ ॥
ततस्तामेव जग्राह प्रहसन्पाण्डुनन्दनः।
कर्णायैव च दुर्धर्षश्चिक्षेपाऽऽजौ वृकोदरः ॥ ३० ॥

कूदके क्रोधी कलिङ्गराज पुत्रके रथ पर जा चढे और उस क्रोधी वीर राजपुत्रके शरीरमें मुष्टिकासे प्रहार किया॥ भीमकी मुष्टिकाप्रहारसे कलिङ्गराजपुत्रकी हड्डियां छितरा गयीं और वह प्राणरहित होके पृथ्वीमें गिर पडे॥ महाराज! भीमसेनका वैसा कर्म देखकर कर्ण और कर्णके भाइयोंसे न सहा गया, वे सब कोई मिलकर विषधर सर्पके समान तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनके ऊपर प्रहार करने लगे॥ (२३-२५)

तिसके अनन्तर भीमसेन अपने शत्रु कलिङ्ग राजपुत्रके रथसे उतरकर ध्रुवके समीप उपास्थित हुए। ध्रुव लगातार भीमके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे, परन्तु भीमसेनने एक मुष्टिकाके प्रहारसे उन्हें भी चेत रहित करके पृथ्वीमें गिराया; महाबली भीमसेन ध्रुवका वध करके जयरातके रथपर जा चढे और बार बार सिंहनाद शब्दके सहित गर्जने लगे। अनन्तर भीमसेनने जयरातको बायें हाथसे उठाकर एक ही थप्पडसे कर्णके संमुखहीमें उन्हें प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिराया॥ (२६—२९)

तब कर्णने एक सुवर्णभूषित शक्ति ग्रहण करके भीमसेनकी ओर चलायी; पाण्डपुत्र भीमसेनने कर्णके हाथसे छूटी हुई उस शक्तिको निर्भयचित्तसे ग्रहण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तामापतन्तीं चिच्छेद शकुनिस्तैलपायिना ।
एतत्कृत्वा महत्कर्म रणेऽद्भुतपराक्रमः ॥ ३१ ॥
पुनः स्वरथमास्थाय दुद्राव तव वाहिनीम् ।
तमायान्तं जिघांसन्तं भीमं क्रुद्धमिवाऽन्तकम्॥ ३२ ॥
न्यवारयन्महाबाहुं तव पुत्रा विशाम्पते ।
महता शरवर्षेण च्छादयन्तो महारथाः ॥ ३३ ॥
दुर्मदस्य ततो भीमः प्रहसन्निव संयुगे ।
सारथिं च हयांश्चैव शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ ३४ ॥
दुर्मदस्तु ततो यानं दुष्कर्णस्याऽवचक्रमे ।
तावेकरथमारूढौ भ्रातरौ परतापनौ ॥ ३५ ॥
संग्रामशिरसो मध्ये भीमं द्रावप्यधावताम् ।
यथाऽम्बुपतिमित्रौ हि तारकं दैत्यसत्तमम् ॥ ३६ ॥
ततस्तु दुर्मदश्चैव दुष्कर्णश्च तवाऽऽत्मजौ ।
रथमेकं समारुह्य भीमं बाणैरविध्यताम् ॥ ३७ ॥
ततः कर्णस्य मिषतो द्रौणेर्दुर्योधनस्य च ।

करके उसे फिर कर्ण हीकी ओर चलाया । शकुनिने उस शक्तिको सहसा कर्णकी ओर आती देख उत्तम पानीसे बुझे हुए अपने तीक्ष्ण बाणोंसे मार्गही में काट के गिरा दिया ॥ महाराज अद्भुत पराक्रम प्रकाशित करनेवाले भीमसेन रणभूमि-के बीच इसी प्रकार के असाधारण कार्य करके फिर अपने रथपर चढकर तुम्हारी सेनाकी ओर दौडे । (२९-३२)

तब तुम्हारे पुत्र लोग भीमसेनको क्रोधी यमराजके समान आगे बढे आते देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और अपने बाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपाने लगे ॥ तिसके अनन्तर भीमसेनने बाणोंसे युद्धकी भूमिमें स्थित दुर्मदके घोडे और सारथी का वध करके यमलोकमें भेजा ॥ दुर्मद घोडे और सारथीसे रहित रथसे कूदकर अपने भाई दुष्कर्णके रथपर चढ गये । (३२--३५)

महाराज ! जैसे देवासुर संग्राममें मित्रावरुण दैत्यसत्तम तारककी ओर दौडे थे वैसे ही शत्रुनाशन वे दोनों भाई युद्ध भूमिमें एक ही रथपर चढके भीमसेनकी ओर दौडे ॥ इसी भांतिसे एक ही रथपर चढे हुए दुर्मद और दु-ष्कर्ण अपने बाणोंके समूहसे भीमसेनको विद्ध करने लगे । महाराज ! शत्रुओंके नाश करनेवाले पाण्डुपुत्र भीमसेनने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपस्य सोमदत्तस्य बाह्लीकस्य च पाण्डवः ॥ ३८ ॥
दुर्मदस्य च वीरस्य दुष्कर्णस्य च तं रथम् ।
पादप्रहारेण धरां प्रावेशयदरिन्दमः ॥ ३९ ॥
ततः सुतौ ते बलिनौ शूरौ दुष्कर्णदुर्मदौ ।
मुष्टिनाऽऽहत्य संक्रुद्धो ममर्द च ननर्द च ॥ ४० ॥
ततो हाहाकृते सैन्ये दृष्ट्वा भीमं नृपाऽब्रुवन् ।
रुद्रोऽयं भीमरूपेण धार्तराष्ट्रेषु युध्यति ॥ ४१ ॥
एवमुक्त्वा पलायन्ते सर्वे भारत पार्थिवाः ।
विसंज्ञा वाहयन्वाहान्न च द्वौ सह धावतः ॥ ४२ ॥
ततो बले भृशल्लुलिते निशामुखे सुपूजितो नृपवृषभैर्वृकोदरः ।
महाबलः कमलविबुद्धलोचनो युधिष्ठिरं नृपतिमपूजयद्बली॥ ४३ ॥
ततो यमौ द्रुपदविराटकेकया युधिष्ठिरश्चाऽपि परां मुदं ययुः ।
वृकोदरं भृशमनुपूजयंश्च ते यथाऽन्धके प्रतिनिहते हरं सुराः ॥ ४४ ॥

कर्ण, अश्वत्थामा, दुर्योधन, कृपाचार्य सोमदत्त और बाह्लीकके सम्मुखहीमें दुष्कर्णके उस रथको अपने चरण प्रहार से खण्ड खण्ड करके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ अनन्तर भीमसेनने बलवान् पराक्रमी दुर्मद और दुष्कर्णको मुष्टिका के प्रहारसे चेतरहित करके सिंहनाद किया ॥ (३६—४०)

महाराज सेनाके पुरुष भीमसेनके ऐसे कठिन कार्यको देखकर हाहाकार शब्दके सहित महाघोर कोलाहल करने लगे । राजा लोग कहने लगे, ये निश्चय ही रुद्र हैं भीमरूप धारण करके कौरवों की सेनाके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं ॥ राजा लोग ऐसे ही वचन कहते हुए कातर होके अपने हाथी और घोडोंको चलाकर युद्धभूमिसे भागने लगे । अधिक क्या कहा जावे उस समय तुम्हारी सेनाके पुरुष ऐसे भयभीत हो गये कि दो पुरुष एक सङ्ग मिलके गमन न कर सके ॥ (४१—४२)

महाराज ! उस रात्रिके समय जब तुम्हारी सेना इस प्रकारसे छिन्न भिन्न होगई । तब कमलके समान प्रफुल्लित नेत्रवाले महाबलवान् भीमसेनने मुख्य मुख्य राजाओंमें प्रशंसित होकर अपनी सेनाके सहित धर्मराज युधिष्ठिरके समीप उपस्थित होके उन्हें प्रणाम किया ॥ धर्म पुत्र युधिष्ठिर नकुल सहदेव द्रुपद विराट और केकय आदि देशोंके सम्पूर्ण राजा लोग भीमसेनका वैसा कठिन कार्य देखकर अत्यन्त हर्षित हुए । जैसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः सुतास्ते वरुणात्मजोपमा रुषान्विताः सह गुरुणा महात्मना ।
वृकोदरं सरथपदातिकुञ्जरा युयुत्सवो भृशमभिपर्यवारयन् ॥ ४५ ॥
ततोऽभवत्तिमिरघनैरिवाऽऽवृते महाभये भयदमतीव दारुणम् ।
निशामुखे वृकबलगृध्रमोदनं महात्मनां नृपवर युद्धमद्भुतम् ॥ ४६ ॥ ६७५०

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे भीमपराक्रमे पञ्चपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५५ ॥

सञ्जय उवाच— प्रायोपविष्टे तु हते पुत्रे सात्यकिना तदा ।
सोमदत्तो भृशं क्रुद्धः सात्यकिं वाक्यमब्रवीत् ॥ १ ॥
क्षत्रधर्मः पुरा दृष्टो यस्तु देवैर्महात्मभिः ।
तं त्वं सात्वत सन्त्यज्य दस्युधर्मे कथं रतः ॥ २ ॥
पराङ्मुखाय दीनाय न्यस्तशस्त्राय सात्यके ।
क्षत्रधर्मरतः प्राज्ञः कथं नु प्रहरेद्रणे ॥ ३ ॥
द्वावेव किल वृष्णीनां तत्र ख्यातौ महारथौ ।

अन्धकासुरके नाश करनेवाले महादेवकी पूजा किया था वैसे ही उन सम्पूर्ण राजाओंने भीमसेनका अत्यन्तही सम्मान किया ॥ (३३—४४)

महाराज ! वरुणपुत्रोंके समान पराक्रमी तुम्हारे पुत्र लोग पाण्डवोंको हर्षित देखकर बहुत ही क्रोधित हुए और हाथी घोडे रथ तथा पैदल चलनेवाने योद्धाओंकी चतुरङ्गिणी सेनाके सहित महात्मा द्रोणाचार्यको अगाडी करके युद्धके वास्ते दृढताके साथ चारों ओरसे भीमसेनको घेर लिया ॥ तिसके अनन्तर उस महाघोर अन्धकारसे युक्त रात्रिके समय कौवे गिद्ध और भेडिये आदि मांसभक्षी जीवों के हर्षको बढानेवाले महात्मा क्षत्रियोंका आपसमें महाघोर भयङ्कर अद्भुत संग्राम होने लगा ॥ (४५—४६) [६७५०]

द्रोणपर्वमें एकसौ पचपन अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ छप्पन अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! जयद्रथवध के समय प्रायोपवेशन करके युद्धभूमि के बीच पृथ्वीपर बैठे हुए सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा सात्यकिके हाथसे मारे गये थे;इस समय भूरिश्रवाके पिता सोमदत्त सात्यकिके ऊपर अत्यन्त क्रुद्ध होकर यह वचन कहने लगे । हे सात्यकि ! पहिले महात्मा देवताओंसे जिस प्रकार क्षत्रियोंका धर्म निश्चित किया गया है; तुम उस धर्मको छोडके क्यों डाकुओंके धर्ममें रत हुए ? हे सात्यकि! क्षत्रियधर्म में निष्ठावान् बुद्धिमान् पुरुष रणभूमिसे भागनेवाले कातर और अस्त्ररहित पुरुष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रद्युम्नश्च महाबाहुस्त्वं चैव युधि सात्वत ॥ ४ ॥
कथं प्रायोपविष्टाय पार्थेन च्छिन्नबाहवे ।
नृशंसं पतनीयं च तादृशं कृतवानसि ॥ ५ ॥
कर्मणस्तस्य दुर्वृत्त फलं प्राप्नुहि संयुगे ।
अद्य छेत्स्यामि ते मूढ शिरो विक्रम्य पत्त्रिणा ॥ ६ ॥
शपे सात्वत पुत्राभ्यामिष्टेन सुकृतेन च ।
अनतीतामिमां रात्रिं यदि त्वां वीरमानिनम् ॥ ७ ॥
अरक्ष्यमाणं पार्थेन जिष्णुना ससुतानुजम् ।
न हन्यां नरके घोरे पतेयं वृष्णिपांसन ॥ ८ ॥
एवमुक्त्वा सुसंक्रुद्धः सोमदत्तो महाबलः ।
दध्मौ शङ्खं च तारेण सिंहनादं ननाद च ॥ ९ ॥
ततः कमलपत्राक्षः सिंहदंष्ट्रो दुरासदः ।
सात्यकिर्भृशसंक्रुद्धः सोमदत्तमथाऽब्रवीत् ॥ १० ॥
कौरवेय न मे त्रासः कथञ्चिदपि विद्यते ।

के ऊपर कैसे शस्त्रसे प्रहार कर सकते हैं ? (१—४)

विशेष करके वृष्णिवंशियोंके बीच तुम और प्रद्युम्न दोनों ही महारथी कहके विख्यात हो, तब तुमने किस भांति अर्जुनके बाणोंसे भुजा कटनेपर रणभूमिके बीच बैठे हुए मेरे पुत्र भूरिश्रवाके ऊपर नीच पुरुषोंकी भांति प्रहार करके नरकमें गमन करनेका कार्य किया है ? अरे नीच पुरुष दुष्टात्मा ! चाहे जो हो इस समय तूं अपने किये हुए कर्मोंका फल भोग करेगा । अरे मूढ ! मैं सुकृत धर्म और पुत्रोंकी शपथ करके कहता हूं, कि आज मैं अपने पराक्रमको प्रकाशित करके अवश्य ही अपने बाणोंसे तुम्हारा सिर काटूंगा ॥ (४–६)

अरे वृष्णिकुल कलङ्क ! तू अपनी वीरताका अत्यन्त ही अभिमान करता है परन्तु यदि पृथापुत्र अर्जुन आज रात्रिके समय तेरी रक्षा न करेंगे तो मैं इस ही रात्रिके बीच तेरे भाई और पुत्रोंके सहित तेरा वध करूंगा; यदि तुम्हारा वध न कर सकूं तो मैं अवश्य ही महाघोर नरकमें पतित होऊंगा ॥ महाबली सोमदत्तने ऐसा वचन कहके क्रोधपूर्वक शंख बजा कर सिंहनाद किया॥ (७–९)

तिसके अनन्तर कमल नेत्रवाले सिंहके समान पराक्रमी बलवान् सात्यकि अत्यन्त क्रुद्ध होकर सोमदत्तसे बोले, हे कौरव्य ! तुमसे अथवा दूसरे चाहे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वया सार्धमथाऽन्यैश्च युध्यतो हृदि कश्चन ॥ ११ ॥
यदि सर्वेण सैन्येन गुप्तो मां योधयिष्यसि ।
तथापि न व्यथा काचित्त्वयि स्यान्मम कौरव ॥ १२ ॥
युद्धसारेण वाक्येन असतां सम्मतेन च ।
नाऽहं भीषयितुं शक्यः क्षत्रवृत्ते स्थितस्त्वया ॥ १३ ॥
यदि तेऽस्ति युयुत्साऽद्य मया सह नराधिप ।
निर्दयो निशितैर्बाणैः प्रहर प्रहरामि ते ॥ १४ ॥
हतो भूरिश्रवा वीरस्तव पुत्रो महारथः ।
शलश्चैव महाराज भ्रातृव्यसनकर्षितः ॥ १५ ॥
त्वां चाऽद्यैव वधिष्यामि सहपुत्रं सबान्धवम् ।
तिष्ठेदानीं रणे यत्तः कौरवोऽसि महारथः ॥ १६ ॥
यस्मिन्दानं दमः शौचमहिंसा ह्रीर्धृतिः क्षमा ।
अनपायानि सर्वाणि नित्यं राज्ञि युधिष्ठिरे ॥ १७ ॥
मृदङ्गकेतोस्तस्य त्वं तेजसा निहतः पुरा ।
सकर्णसौबलः संख्ये विनाशमुपयास्यसि ॥ १८ ॥

जिस पुरुषके सङ्गमें युद्ध क्यों न होवे मेरे चित्तमें युद्ध करनेके समय तनिक भी भय नहीं होता ॥ अधिक क्या कहूं, यदि तुम सम्पूर्ण सेनासे रक्षित होकर भी मेरे सङ्ग युद्ध करो तौ भी मेरे चित्तमें किञ्चित् मात्र भी भय नहीं हो सकता ॥ (१०-१२)

हे कौरव ! मैं क्षत्रिय धर्ममें स्थित हूं, इससे तुम साधुपुरुषोंसे असम्भव केवल वाक्युद्धके प्रभावसे मुझे भयभीत न कर सकोगे ॥ यदि मेरे सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते तुम्हें अभिलाषा हुई है तो तुम पहिले दयारहित होकर मेरे शरीर पर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे प्रहार करो ॥ जैसे तुम्हारे वीर पुत्र भूरिश्रवा के मरनेसे उनके भाई शलने भी भ्रातृ-शोकसे पीडित होकर यमलोकमें गमन किया है; आज मैं तुम्हें भी बन्धुबान्धव और पुत्रोंके सहित यमलोकमें पहुंचा-ऊंगा । तुम कुरुकुलमें उत्पन्न हुए हो विशेष करके महारथ योद्धा कहके विख्यात हो; इस समय यत्नवान् होकर युद्धभूमिमें स्थित रहो ॥ (१३-१६)

जिसमें दान, इन्द्रियनिग्रह, सदाचार, अहिंसा, लज्जा, धैर्य और क्षमा आदि सम्पूर्ण गुण निवास करते हैं; जिसके रथकी ध्वजा पर मृदङ्ग लगे हैं; उस धर्मराज युधिष्ठिरके तेजसे ही शकुनि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शपेऽहं कृष्णचरणैरिष्टापूर्तेन चैव ह ।
यदि त्वां ससुतं पापं न हन्यां युधि रोषितः ॥ १९ ॥
अपयास्यसि चेत्युक्त्वा रणं मुक्तो भविष्यसि ।
एवमाभाष्य चाऽन्योन्यं क्रोधसंरक्तलोचनौ ॥ २० ॥
प्रवृत्तौ शरसम्पातं कर्तुं पुरुषसत्तमौ ।
ततो रथसहस्रेण नागानामयुतेन च ॥ २१ ॥
दुर्योधनः सोमदत्तं परिवार्य समन्ततः ।
शकुनिश्च सुसंक्रुद्धः सर्वशस्त्रभृतां वरः ॥ २२ ॥
पुत्रपौत्रैः परिवृतो भ्रातृभिश्चेन्द्रविक्रमैः ।
स्यालस्तव महाबाहुर्वज्रसंहननो युवा ॥ २३ ॥
साग्रं शतसहस्रं तु हयानां तस्य धीमतः ।
सोमदत्तं महेष्वासं समन्तात्पर्यरक्षत ॥ २४ ॥
रक्ष्यमाणश्च बलिभिश्छादयामास सात्यकिम् ।
तं छाद्यमानं विशिखैर्दृष्ट्वा सन्नतपर्वभिः ॥ २५ ॥

और कर्ण आदि तुम सब कोई पहिलेसेही मृत-प्राय होगये हो; इस समय संग्रामभूमिमें केवल मृत्युके मुखमें गमन करोगे। अरे पापी! यदि तू युद्धसे हटके रणभूमिसे भाग जावे तभी मेरे हाथसे बच सकेगा, नहीं तो मैं युद्धभूमिमें क्रुद्ध होकर यदि पुत्रोंके सहित तुम्हारा नाश न करूं तो मैं कृष्णके चरण और अपने सुकृत आदि कर्मोंकी शपथ करके कहता हूं कि, ऐसा न करनेसे मुझे नरकमें जाना पडेगा। पुरुषश्रेष्ठ सोमदत्त और सात्यकि आपसमें ऐसे ही वचन कहके शस्त्र चलानेमें प्रवृत्त हुए। (१७-२१)

तिसके अनन्तर राजा दुर्योधन एक हजार रथी और दश हजार हाथी लेकर सोमदत्तको घेर युद्धभूमिमें स्थित हुए। महाराज! सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें मुख्य तुम्हारे शाले वज्र के समान शरीरवाले महाबाहु युवा शकुनि भी इन्द्रके समान पराक्रमी पुत्र पौत्र और भाइयोंके सहित उस ही स्थानपर स्थित हुए। अनन्तर बुद्धिमान् शकुनिकी ओरसे एक लाख महाधनुर्द्धर घुडसवार सोमदत्तको चारों ओरसे घेरकर उनकी रक्षा करने लगे ॥ (२१—२४)

इस प्रकार राजा सोमदत्त अनेक मुख्य मुख्य शूरवीरोंसे रक्षित होकर अपने बाणोंकी वर्षासे सात्यकिको छिपाने लगे। तब धृष्टद्युम्न सात्यकिको सोमदत्तके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृष्टद्युम्नोऽभ्ययात्क्रुद्धः प्रगृह्य महतीं चमूम् ।
चण्डवाताभिसृष्टानामुदधीनामिव स्वनः ॥ २६ ॥
आसीद्राजन्बलौघानामन्योन्यमभिनिघ्नताम् ।
विव्याध सोमदत्तस्तु सात्वतं नवभिः शरैः ॥ २७ ॥
सात्यकिर्नवभिश्चैनमवधीत्कुरुपुङ्गवम् ।
सोऽतिविद्धो बलवता समरे दृढधन्विना ॥ २८ ॥
रथोपस्थं समासाद्य मुमोह गतचेतनः ।
तं विमूढं समालक्ष्य सारथिस्त्वरया युतः ॥ २९ ॥
अपोवाह रणाद्धीरं सोमदत्तं महारथम् ।
तं विसंज्ञं समालक्ष्य युयुधानशरार्दितम् ॥ ३० ॥
अभ्यद्रवत्ततो द्रोणो यदुवीरजिघांसया ।
तमायान्तमभिप्रेक्ष्य युधिष्ठिरपुरोगमाः ॥ ३१ ॥
परिवव्रुर्महात्मानं परीप्सन्तो यदृत्तमम् ।
ततः प्रववृते युद्धं द्रोणस्य सह पाण्डवैः ॥ ३२ ॥
बलेरिव सुरैः पूर्वं त्रैलोक्यजयकांक्षया ।

तीक्ष्ण बाणोंके जालमें छिपे देख कर क्रोधपूर्वक अपनी बडी सेनाके सहित वहां पर उपस्थित हुए। महाराज! उस समय जब दोनों सेनाके योद्धा लोग आपसमें एक दूसरेके ऊपर अस्त्र-शस्त्रोंसे प्रहार करते हुए युद्ध करने लगे; उस समय उन शूरवीरोंके संग्रामके समय ऐसा शब्द सुनाई देने लगा; जैसे प्रचण्ड वायुके चलनेसे समुद्रकी प्रबल लहरका शब्द सुन पडता है। (२५–२७)

तिसके अनन्तर सोमदत्तने नव बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया; सात्यकिने भी कौरवोंमें मुख्य सोमदत्तको नव बाणोंसे विद्ध किया। सोमदत्त दृढ धनुर्धारी बलवान् सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध हुए और मूर्च्छित होकर रथका दण्ड पकडके रथमें बैठ गये। उनके रथका सारथी अपने स्वामी महा वीर सोमदत्त को मूर्च्छित देखकर शीघ्रताके सहित रथ हांकके रणभूमिसे पृथक् हुआ। (२७-३०)

द्रोणाचार्य सोमदत्तको सात्यकिके बाणोंसे पीडित तथा मूर्च्छित देखकर उसके वध करनेकी इच्छासे वहांपर उपस्थित हुए। राजा युधिष्ठिरने द्रोणाचार्यको सात्यकिके समीप आया हुआ देखकर उसकी रक्षा करनेके वास्ते अपनी सम्पूर्ण सेना सङ्ग लेकर महात्मा द्रोणा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः सायकजालेन पाण्डवानीकमावृणोत् ॥ ३३ ॥
भारद्वाजो महातेजा विव्याध च युधिष्ठिरम् ।
सात्यकिं दशभिर्बाणैर्विंशत्या पार्षतं शरैः ॥ ३४ ॥
भीमसेनं च नवभिर्नकुलं पञ्चभिस्तथा ।
सहदेवं तथाऽष्टाभिः शतेन च शिखण्डिनम् ॥ ३५ ॥
द्रौपदेयान्महाबाहुः पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः ।
विराटं मत्स्यमष्टाभिर्द्रुपदं दशभिः शरैः ॥ ३६ ॥
युधामन्युं त्रिभिः षड्भिरुत्तमौजसमाहवे ।
अन्यांश्च सैनिकान्विद्ध्वा युधिष्ठिरमुपाद्रवत् ॥ ३७ ॥
ते वध्यमाना द्रोणेन पाण्डुपुत्रस्य सैनिकाः ।
प्राद्रवन्वै भयाद्राजन्सार्तनादा दिशो दश ॥ ३८ ॥
क्षीयमाणं तु तत्सैन्यं दृष्ट्वा द्रोणेन फाल्गुनः ।
किञ्चिदागतसंरम्भो गुरुं पार्थोऽभ्ययाद् द्रुतम् ॥ ३९ ॥
दृष्ट्वा द्रोणस्तु बीभत्सुमभिधावन्तमाहवे ।
संन्यवर्तत तत्सैन्यं पुनर्यौधिष्ठिरं बलम् ॥ ४० ॥

चार्यको चारों ओरसे घेर लिया। तिसके अनन्तर जैसे तीनों लोकके विजयकी इच्छासे देवता और बलिका युद्ध हुआ था, वैसे ही द्रोणाचार्यके सङ्ग महात्मा पाण्डवों का महा घोर संग्राम होने लगा। (३०–३३)

महातेजस्वी भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाको परिपूरित करके राजा युधिष्ठिरको विद्ध करने लगे। तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य सात्यकिको दश, धृष्टद्युम्नको बीस, भीमसेनको नव, नकुलको पांच, सहदेवको आठ, शिखण्डीको एक सौ, द्रौपदीके पाचों पुत्रोंको पांच पांच, मत्स्यराज विराटको आठ, राजा द्रुपदको दश, युधामन्युको तीन, उत्तमौजाको छः और सेनाके दूसरे सम्पूर्ण पुरुषोंको अनगिनत बाणोंसे विद्ध करके युधिष्ठिरकी ओर दौडे ॥ (३३–३७)

महाराज! पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा द्रोणाचार्य के बाणोंसे अत्यन्त पीडित होके भयपूर्वक आर्त्तनाद करते हुए चारों ओर भागने लगे॥ कुन्तीपुत्र अर्जुन अपनी सेनाके पुरुषोंको द्रोणाचार्यके सम्मुखसे भागते देख, किंचित् क्रुद्ध होकर शीघ्र ही गुरुकी ओर दौडे, युधिष्ठिरकी सेनाके पुरुष अर्जुनको द्रोणाचार्यके समीप उपस्थित होते देख-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो युद्धमभूद्भूयो भारद्वाजस्य पाण्डवैः ।
द्रोणस्तव सुतै राजन्सर्वतः परिवारितः ॥ ४१ ॥
व्यधमत्पाण्डुसैन्यानि तूलराशिमिवाऽनलः ।
तं ज्वलन्तमिवाऽऽदित्यं दीप्तानलसमद्युतिम् ॥ ४२ ॥
राजन्नभिशमत्यन्तं दृष्ट्वा द्रोणं शरार्चिषम् ।
मण्डलीकृतधन्वानं तपन्तमिव भास्करम् ॥ ४३ ॥
दहन्तमहितान्सैन्ये नैनं कश्चिदवारयत् ।
यो यो हि प्रमुखे तस्य तस्थौ द्रोणस्य पूरुषः ॥ ४४ ॥
तस्य तस्य शिरश्छित्वा ययुर्द्रोणशराः क्षितिम् ।
एवं सा पाण्डवी सेना वध्यमाना महात्मना ॥ ४५ ॥
प्रदुद्राव पुनर्भीता पश्यतः सव्यसाचिनः ।
सम्प्रभग्नं बलं दृष्ट्वा द्रोणेन निशि भारत ॥ ४६ ॥
गोविन्दमब्रवीज्जिष्णुर्गच्छ द्रोणरथं प्रति ।
ततो रजतगोक्षीरकुन्देन्दुसदृशप्रभान् ॥ ४७ ॥
चोदयामास दाशार्हो हयान्द्रोणरथं प्रति ।

कर फिर लौटे और उनके सङ्ग महाघोर संग्राम करने लगे । (३८-४१)

महाराज ! द्रोणाचार्य तुम्हारे पुत्रोंके सङ्ग मिलकर अपने तेज बाणोंसे इस प्रकार पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंको भस्म करने लगे, जैसे अग्नि रूईके समूहको भस्म करती है । प्रचण्ड सूर्य और जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी द्रोणाचार्यके मण्डलाकार धनुषसे अग्निशिखाके समान लगातार अनेक बाण छूटकर शत्रुसेनाके पुरुषोंको भस्म करने लगे । उस समय शत्रुसेनाके योद्धा लोग उन्हें जगत्को तपानेवाले सूर्यके समान सम्पूर्ण योद्धाओंका नाश करते देख कोई भी निवारण करनेमें समर्थ न हुए, अधिक क्या कहा जावे उस समय जो पुरुष द्रोणाचार्यके सम्मुख उपस्थित हुए उन सम्पूर्ण वीरोंके सिर द्रोणाचार्यके बाणोंसे कटके पृथ्वीमें गिर पडे । (४१-४५)

इसी भांतिसे पाण्डवोंकी सेना द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित और भयभीत होकर अर्जुनके सम्मुखमें ही फिर युद्धभूमिमेंसे भागने लगी । हे राजेन्द्र ! उस रात्रिके समय सव्यसाची अर्जुनने अपनी सेनाके पुरुषोंको भयसे भागते हुए देख श्रीकृष्णसे द्रोणाचार्यके समीप गमन करनेके वास्ते अनुरोध किया ॥ श्रीकृष्ण अर्जुनके वचनोंको सुनकर गाय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमसेनोऽपि तं दृष्ट्वा यान्तं द्रोणाय फाल्गुनम् ॥ ४८ ॥
स्वसारथिमुवाचेदं द्रोणानीकाय मां वह ।
सोऽपि तस्य वचः श्रुत्वा विशोको वाहयद्धयान् ॥ ४९ ॥
पृष्ठतः सत्यसन्धस्य जिष्णोर्भरतसत्तम ।
तौ दृष्ट्वा भ्रातरौ यत्तौ द्रोणानीकमभिद्रुतौ ॥ ५० ॥
पञ्चालाः सृञ्जया मत्स्याश्चेदिकारूषकोसलाः ।
अन्वगच्छन्महाराज केकयाश्च महारथाः ॥ ५१ ॥
ततो राजन्नभूद्घोरः संग्रामो लोमहर्षणः ।
बीभत्सुर्दक्षिणं पार्श्वमुत्तरं च वृकोदरः ॥ ५२ ॥
महद्भ्यां रथवृन्दाभ्यां बलं जगृहतुस्तव ।
तौ दृष्ट्वा पुरुषव्याघ्रौ भीमसेनधनञ्जयौ ॥ ५३ ॥
धृष्टद्युम्नोऽभ्ययाद्राजन्सात्यकिश्च महाबलः ।
चण्डवाताभिपन्नानामुदधीनामिव स्वनः ॥ ५४ ॥
आसीद्राजन्बलौघानां तदाऽन्योन्यमभिघ्नताम् ।

का दूध, कुन्द वा चन्द्रमाके समान सफेद घोडोंसे युक्त रथको द्रोणाचार्य की ओर चलाने लगे। (४५—४८)

उस समय भीमसेन अर्जुनको द्रोणाचार्यकी ओर जाते देख अपने सारथीसे बोले, हे सारथी! मुझे द्रोणाचार्यके समीप ले चलो। भीमसेनके सारथी विशोकने अपने स्वामीकी आज्ञा सुनकर अर्जुनके पीछे पीछे अपने रथको चलाता हुआ द्रोणाचार्यके समीप जानेकी इच्छासे गमन करने लगा। पाञ्चाल, सृञ्जय, महारथी केकयदेशीय शूरवीर योद्धा मत्स्य चेदी करुष और कौशल देशीय सेनाके पुरुष भी अर्जुन और भीमसेनको द्रोणाचार्यकी ओर जाते देख उनके अनुगामी हुए॥ (४८—५१)

महाराज! तिसके अनन्तर रोएंको खडा करनेवाला महाघोर दारुण संग्राम होने लगा। उस समय भीमसेन और अर्जुनने बहुतेरे रथियोंके समूहके सहित तुम्हारी सेनाका उत्तर और दक्षिणका हिस्सा आक्रमण किया। महाबलवान् धृष्टद्युम्न और सात्यकि भी पुरुषसिंह भीमसेन और अर्जुनको द्रोणाचार्यकी ओर गमन करते देखकर वहां पर उपस्थित हुए। तिसके अनन्तर दोनों सेनाके योद्धालोग आपसमें संग्राम करने लगे, उससे ऐसा कोलाहल होने लगा। जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे समुद्रका जल उथलित होनेसे शब्द होता है। ५२—५५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौमदत्तिवधात्क्रुद्धो दृष्ट्वा सात्यकिमाहवे ॥ ५५ ॥
द्रोणिरभ्यद्रवद्राजन्वधाय कृतनिश्चयः ।
तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य शैनेयस्य रथं प्रति ॥ ५६ ॥
भैमसेनिः सुसंक्रुद्धः प्रत्यमित्रमवारयत् ।
कार्ष्णायसं महाघोरमृक्षचर्मपरिच्छदम् ॥ ५७ ॥
महान्तं रथमास्थाय त्रिंशन्नल्वान्तरान्तरम् ।
विक्षिप्तयन्त्रसन्नाहं महामेघौघनिःस्वनम् ॥ ५८ ॥
युक्तं गजनिभैर्वाहैर्न हयैर्नाऽपि वारणैः ।
विक्षिप्तपक्षचरणविवृताक्षेण कूजता ॥ ५९ ॥
ध्वजेनोच्छ्रितदण्डेन गृध्रराजेन राजितम् ।
लोहितार्द्रपताकं तु अन्त्रमालाविभूषितम् ॥ ६० ॥
अष्टचक्रसमायुक्तमास्थाय विपुलं रथम् ।
शूरमुद्गरधारिण्या शैलपादपहस्तया ॥ ६१ ॥
रक्षसां घोररूपाणामक्षौहिण्या समावृतः ।
तमुद्यतमहाचापं निशम्य व्यथिता नृपाः ॥ ६२ ॥

उस ही समय द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामा सात्यकिको रणभूमिमें देख भूरिश्रवाके वधसे अत्यन्त क्रुद्ध होके उनके नाश करनेकी अभिलाषासे शीघ्रताके सहित सात्यकिकी ओर दौडे। भीमसेन पुत्र घटोत्कच अश्वत्थामाको सात्यकिकी ओर गमन करते देखकर लोहमय काले वर्मसे युक्त काले ऋक्षके चमडेसे घिरे हुए तीस नल्व परिमाण वाले तथा अनेक भांतिके यन्त्रोंसे परिपूरित आठ चक्केसे युक्त और बादलके समान गम्भीर स्वरसे पूरित एक बडे रथ पर चढा। उसके उस बडे रथमें हाथीके आकार वाले विचित्र वाहन जुते हुए थे; परन्तु न वे वाहन हाथी थे और न घोडे ही थे। (५५-५९)

उस रथकी ऊंची ध्वजा पर विशाल शरीरवाला एक बडा गिद्ध बैठ कर चरण और पंखोंको फटकारता हुआ भयानक स्वरसे डरावनी बोली बोल रहा था। हिडिम्बापुत्र घटोत्कच रुधिरमें भींगी हुई पताकासे युक्त और आंतोंकी मालासे वेष्टित उस ही बडे आठ चक्रोंसे युक्त रथपर चढके पत्थर, वृक्ष, त्रिशूल और मुद्गर ग्रहण करनेवाले भयानक स्वरूपसे युक्त एक अक्षौहिणी राक्षसी सेनाको सङ्ग लेकर द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामाको युद्धभूमिमें निवारण करने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगान्तकालसमये दण्डहस्तमिवाऽन्तकम् ।
ततस्तं गिरिशृङ्गाभं भीमरूपं भयावहम् ॥ ६३ ॥
दंष्ट्राकरालोग्रमुखं शंकुकर्णं महाहनुम् ।
ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं दीप्तास्यं निम्नितोदरम् ॥ ६४ ॥
महाश्वभ्रगलद्वारं किरीटच्छन्नमूर्धजम् ।
त्रासनं सर्वभूतानां व्यात्ताननमिवाऽन्तकम् ॥ ६५ ॥
वीक्ष्य दीप्तमिवाऽऽयान्तं रिपुविक्षोभकारिणम् ।
तमुद्यतमहाचापं राक्षसेन्द्रं घटोत्कचम् ॥ ६६ ॥
भयार्दिता प्रचुक्षोभ पुत्रस्य तव वाहिनी ।
वायुना क्षोभितावर्ता गङ्गेवोर्ध्वतरङ्गिणी ॥ ६७ ॥
घटोत्कचप्रयुक्तेन सिंहनादेन भीषिताः ।
प्रसुस्रुवुर्गजा मूत्रं विव्यथुश्च नरा भृशम् ॥ ६८ ॥
ततोऽश्मवृष्टिरत्यर्थमासीत्तत्रं समन्ततः ।
सन्ध्याकालाधिकबलैः प्रयुक्ता राक्षसैः क्षितौ ॥ ६९ ॥
आयसानि च चक्राणि भुशुण्ड्यः प्रासतोमराः ।
पतन्त्यविरताः शूलाः शतघ्न्यः पट्टिशास्तथा ॥ ७० ॥

लगा । (५९—६२)

तुम्हारी ओरके राजा लोग घटोत्कचको हाथमें प्रचण्ड धनुष ग्रहण किये हुए प्रलयकालके दण्डधारी यमराजकी भांति देखकर भयभीत होगये । तुम्हारे पुत्रोंकी सेनाके सब योद्धा लोग पर्वतके शृङ्ग समान मूर्त्ति भयङ्कर दांत और बिकट शरीर बडे बडे कान नेत्र मुख किरीटसे युक्त बडे सिरके सहित सम्पूर्ण प्राणियोंके भयको बढानेवाले जलती हुई अग्नि और यमराजके समान शत्रुओंको क्षोभित करनेवाले राक्षसराज घटोत्कचको हाथमें प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके सम्मुख आते देख इस प्रकार विचलित होने लगे जैसे वायुके वेगसे गङ्गाका जल उथलित होता है । अधिक क्या कहा जावे उस समय घटोत्कचके सिंहनादसे हाथी घोडे आदि सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होकर मलमूत्र त्याग करने लगे और मनुष्यलोग अत्यन्त ही पीडित हुए ॥ (६२–६८)

रात्रिके कारण राक्षस लोग अधिक बलवान् होकर पराक्रम प्रकाशित करके चारों ओरसे पत्थरकी शिला वर्षाने लगे । और लौहमय चक्र भूशुण्डि प्रास तोमर शूल शतघ्नी और पट्टिश आदि अस्त्र शस्त्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदुग्रमतिरौद्रं च दृष्ट्वा युद्धं नराधिपाः ।
तनयास्तव कर्णश्च व्यथिताः प्राद्रवन्दिशः ॥ ७१ ॥
तत्रैकोऽस्त्रबलश्लाघी द्रौणिर्मानी न विव्यथे ।
व्यधमच्च शरैर्मायां घटोत्कचविनिर्मिताम् ॥ ७२ ॥
विहतायां तु मायायाममर्षी स घटोत्कचः ।
विससर्ज शरान्घोरांस्तेऽश्वत्थामानमाविशन् ॥ ७३ ॥
भुजङ्गा इव वेगेन वल्मीकं क्रोधमूर्च्छिताः ।
ते शरा रुधिरारक्ताङ्गा भित्त्वा शारद्वतीसुतम् ॥ ७४ ॥
विविशुर्धरणीं शीघ्रा रुक्मपुङ्खाः शिलाशिताः ।
अश्वत्थामा तु संक्रुद्धो लघुहस्तः प्रतापवान् ॥ ७५ ॥
घटोत्कचमभिक्रुद्धं बिभेद दशभिः शरैः ।
घटोत्कचोऽतिविद्धस्तु द्रोणपुत्रेण मर्मसु ॥ ७६ ॥
चक्रं शतसहस्रारमगृह्णाद्व्यथितो भृशम् ।
क्षुरान्तं बालसूर्याभं मणिवज्रविभूषितम् ॥ ७७ ॥

लगातार चारों ओरसे तुम्हारी सेनाके ऊपर पडने लगे ॥ महाराज ! उन अत्यन्त निष्ठुर राक्षसोंका भयङ्कर संग्राम देख कर सम्पूर्ण राजा तुम्हारे पुत्र लोग और कर्ण आदि सम्पूर्ण वीर कातर होकर चारों ओर दौडने लगे ॥ (६९–७१)

उस रणभूमिके बीच अस्त्र बलमें अत्यन्त प्रशंसित और अभिमानी अश्वत्थामा ने निर्भय चित्तसे स्थित होकर घटोत्कच की सम्पूर्ण मायाको अपने दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे भस्म किया ॥ माया नष्ट होनेसे घटोत्कच क्रुद्ध होकर महाघोर बाणोंकी वर्षा करने लगा । वे सम्पूर्ण बाण अश्वत्थामाके शरीरमें घुस गये ॥ महाराज ! जैसे सर्प क्रोधसे मूर्च्छित होकर बिलके भीतर प्रवेश करते हैं वैसे ही घटोत्कचके चलाये स्वर्ण पुंखवाले चोखे बाण अश्वत्थामाके शरीरको भेदकर रुधिर लिपटे हुए पृथ्वीमें घुस गये । (७२—७५)

तब प्रतापी अश्वत्थामाने अत्यन्त क्रुद्ध होकर हस्तलाघवके सहित दश बाणोंसे घटोत्कचके शरीरको भेद किया । घटोत्कच द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके बाणोंसे पीडित होकर अत्यन्त कातर हुआ; अनन्तर घटोत्कचने सौ सहस्र क्षुर धारवाला एक चक्र ग्रहण किया । भीमसेनपुत्र घटोत्कचने क्रोधके वशमें होकर बालसूर्यके समान प्रकाशमान वज्रके समान कठोर क्षुरधारवाले उस चक्रको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वत्थाम्नि स चिक्षेप भैमसेनिर्जिघांसया।
वेगेन महताऽगच्छद्विक्षिप्तं द्रौणिना शरैः ॥ ७८ ॥
अभाग्यस्येव सङ्कल्पस्तन्मोघमपतद्भुवि।
घटोत्कचस्ततस्तूर्णं दृष्ट्वा चक्रं निपातितम् ॥ ७९ ॥
द्रौणिं प्राच्छादयद्बाणैः स्वर्भानुरिव भास्करम्।
घटोत्कचसुतः श्रीमान्भिन्नाञ्जनचयोपमः ॥ ८० ॥
रुरोध द्रौणिमायान्तं प्रभञ्जनमिवाऽद्रिराट्।
पौत्रेण भीमसेनस्य शरैरञ्जनपर्वणा ॥ ८१ ॥
बभौ मेघेन धाराभिर्गिरिर्मेरुरिवाऽऽवृतः।
अश्वत्थामा त्वसम्भ्रान्तो रुद्रोपेन्द्रेन्द्रविक्रमः ॥ ८२ ॥
ध्वजमेकेन बाणेन चिच्छेदाऽञ्जनपर्वणः।
द्वाभ्यां तु रथयन्तारौ त्रिभिश्चाऽस्य त्रिवेणुकम् ॥ ८३ ॥
धनुरेकेन चिच्छेद चतुर्भिश्चतुरो हयान्।

उठाकर अश्वत्थामाकी ओर चलाया। महाराज! जैसे भाग्यहीन मनुष्यका सङ्कल्प निष्फल होजाता है वैसे ही महावेग पूर्वक घटोत्कचके हाथसे छूटा हुआ वह चक्र द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके बाणोंके प्रभावसे उलटके पृथ्वीमें गिर पडा ॥ (७५–७९)

जब वह दारुण चक्र पृथ्वीमें गिर पडा तब घटोत्कचने अत्यंत क्रुद्ध होकर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको अपने बाणोंसे छिपा दिया। तब घटोत्कचपुत्र अञ्जनपर्वाने अपने बाणोंसे अश्वत्थामाको इस प्रकार छिपा दिया जैसे राहु सूर्यको आच्छादित करता है। जैसे बडा पर्वत वायुकी गतिको रोक देता है वैसे ही कज्जल-गिरि पर्वतके समान रूपवाले घटोत्कचपुत्र पराक्रमी अञ्जनपर्वाने अश्वत्थामाको संमुख आते देख निवारण किया। अश्वत्थामा भीमसेनके पौत्र अञ्जनपर्वाके बाणोंकी वर्षासे इस प्रकार शोभित हुए जैसे जलकी वर्षासे सुमेरु-गिरि शोभित होता है ॥ (७९–८२)

तिसके अनन्तर रुद्र विष्णु और इन्द्रके समान पराक्रमी महावीर अश्वत्थामाने निर्भय चित्तसे एक तीक्ष्ण बाण छोडकर अञ्जन पर्वाके रथकी ध्वजाको काट दिया। फिर अश्वत्थामाने दो बाणोंसे उसके सारथी, चार बाणोंसे उसके चारों घोडोंका वध करके, तीन बाणोंसे उसके रथकी त्रिवेणु और एक बाणसे उसके हाथमें स्थित धनुषको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। अञ्जनपर्वाने रथभ्रष्ट और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरथस्योद्यतं हस्ताद्धेमबिन्दुभिराचितम् ॥ ८४ ॥
विशिखेन सुतीक्ष्णेन खड्गमस्य द्विधाऽकरोत् ।
गदां हेमाङ्गदां राजंस्तूर्णं हैडिम्बिसूनुना ॥ ८५ ॥
भ्रामयोत्क्षिप्ता शरैः साऽपि द्रौणिनाऽभ्याहताऽपतत् ।
ततोऽन्तरिक्षमुत्प्लुत्य कालमेघ इवोन्नदत् ॥ ८६ ॥
ववर्षाऽञ्जनपर्वा स द्रुमवर्ष नभस्तलात् ।
ततो मायाधरं द्रौणिर्घटोत्कचसुतं दिवि ॥ ८७ ॥
मार्गणैरभिविव्याध घनं सूर्यइवांऽशुभिः ।
सोऽवतीर्य पुरस्तस्थौ रथे हेमविभूषिते ॥ ८८ ॥
महीगत इवाऽत्युग्रः श्रीमानञ्जनपर्वतः ।
तमयस्मयवर्माणं द्रौणिर्भीमात्मजात्मजम् ॥ ८९ ॥
जघानाऽञ्जनपर्वाणं महेश्वर इवाऽन्धकम् ।
अथ दृष्ट्वा हतं पुत्रमश्वत्थाम्ना महाबलम् ॥ ९० ॥
द्रौणेः सकाशमभ्येत्य रोषात्प्रज्वलिताङ्गदः ।

धनुषरहित होकर सुवर्णभूषित एक भयंकर तलवार ग्रहण किया। अश्वत्थामाने एक तेज बाणसे उस तलवारको दो टुकडे करके पृथ्वीमें गिराया। तलवार कटनेपर अञ्जनपर्वाने शीघ्रताके सहित सुवर्णतार खचित एक गदा उठाकर अश्वत्थामाकी ओर चलाया। वह गदा अञ्जनपर्वाके हाथसे छूटते ही अश्वत्थामाके बाणोंसे निवारित होकर पृथ्वीमें गिर पडी। (८२-८६)

तिसके अनन्तर अञ्जनपर्वा आकाशमें चला गया और वहांसे वर्षाकालके बादल समान गर्जता हुआ अश्वत्थामाके ऊपर वृक्ष वर्षाने लगा। महाराज! जैसे सूर्य अपनी प्रखर किरणोंसे बादलोंके समूहको भेद करता है वैसे ही पराक्रमी अश्वत्थामा उस आकाश स्थित घटोत्कच पुत्र अंजनपर्वाको अपने तेज बाणोंसे विद्ध करने लगे। महाराज कज्जलगिरिके समान भयंकर मूर्त्तिवाला तेजस्वी अञ्जनपर्वा आकाशसे उतरके फिर सुवर्ण भूषित रथमें स्थित हुआ; तब द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने लौहमयी वर्म धारण करनेवाले उस भीमपौत्र अञ्जनपर्वाको इस भांतिसे प्राण रहित कर दिया, जैसे महादेवने अन्धकासुरका नाश किया था। (८६-९०)

उस समय शारद्वतीपुत्र अश्वत्थामाको अस्त्रोंसे पाण्डवी सेनाके शूरवीरोंको भस्म करते और उसके हाथसे अपने पुत्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राह वाक्यमसम्भ्रान्तो वीरं शारद्वतीसुतम् ॥ ९१ ॥
दहन्तं पाण्डवानीकं वनमग्निमिवोच्छ्रितम् ।
घटोत्कच उवाच–तिष्ठ तिष्ठ न मे जीवन्द्रोणपुत्र गमिष्यसि ॥ ९२ ॥
त्वामद्य निहनिष्यामि क्रौञ्चमग्निसुतो यथा ।
अश्वत्थामोवाच– गच्छ वत्स सहाऽन्यैस्त्वं युध्यस्वाऽमरविक्रम ॥ ९३ ॥
नहि पुत्रेण हैडिम्बे पिता न्याय्यः प्रबाधितुम् ।
कामं खलु न रोषो मे हैडिम्बे विद्यते त्वयि ॥ ९४ ॥
किं तु रोषान्वितो जन्तुर्हन्यादात्मानमप्युत ।
सञ्जय उवाच— श्रुत्वैतत्क्रोधताम्राक्षः पुत्रशोकसमन्वितः ॥ ९५ ॥
अश्वत्थामानमायस्तो भैमसेनिरभाषत ।
किमहं कातरो द्रौणे पृथग्जन इवाऽऽहवे ॥ ९६ ॥
यन्मां भीषयसे वाग्भिरसदेतद्वचस्तव ।
भीमात्खलु समुत्पन्नः कुरूणां विपुले कुले ॥ ९७ ॥

अञ्जनपर्वाको मरते देख तेजस्वी बाहुभूषण धारण करनेवाला घटोत्कच निर्भय चित्तसे अश्वत्थामाके समीप आकर यह वचन कहने लगा, हे द्रोणपुत्र ! खडे रहो तुम मेरे समुम्खसे जीते जी किसी प्रकारसे भी मुक्त न होसकोगे। जैसे अग्निपुत्र स्वामिकार्त्तिकने क्रौञ्चपर्वतको विदीर्ण किया था, आज मैं भी उस ही भांतिसे तुम्हारे शरीरको विदीर्ण करूंगा। (९०–९३)

घटोत्कचके ऐसे वचन सुनकर अश्वत्थामा बोले। हे तात ! हे हिडम्बापुत्र ! जाओ दूसरे पुरुषके सङ्ग युद्ध करो; क्योंकि मैं तुम्हारे पिताके समान हूं, इससे पिताके सङ्ग पुत्रको युद्धमें प्रवृत्त होना उचित नहीं है। मैं अपने अन्तःकरणसे निश्चय करके यह वचन कहता हूं, कि तुम्हारे ऊपर मुझे तनिक भी क्रोध नहीं है, परन्तु जब प्राणी क्रोधके वशमें होते हैं तब अपने आत्मीय पुरुषोंके नाश करनेमें भी मुंह नहीं मोडते। (९३–९५)

सञ्जय बोले, पुत्र शोकसे कातर घटोत्कचने अश्वत्थामाके ऐसे वचनोंको सुनकर क्रोधसे नेत्र लाल करके उत्तर दिया। हे द्रोणपुत्र ! तुमने जो कुछ वचन कहे वे सम्पूर्ण वचन साधु पुरुषोंसे सम्मत नहीं हैं। क्या मैं साधारण पुरुषोंकी भांति युद्धसे कातर हुआ हूं ! जो तुम वचनसे मुझे भयभीत कर रहे हो ? तुम इस बातको जानते हो, कि मैं इस विशाल कौरवकुलमें भीमसेनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डवानामहं पुत्रः समरेष्वनिवर्तिनाम् ।
राक्षसाधिराजोऽहं दशग्रीवसमो बले ॥ ९८ ॥
तिष्ठ तिष्ठ न मे जीवन्द्रोणपुत्र गमिष्यसि ।
युद्धश्रद्धामहं तेऽद्य विनेष्यामि रणाजिरे ॥ ९९ ॥
इत्युक्त्वा क्रोधताम्राक्षो राक्षसः सुमहाबलः ।
द्रौणिमभ्यद्रवत्क्रुद्धो गजेन्द्रमिव केसरी ॥ १०० ॥
रथाक्षमात्रैरिषुभिरभ्यवर्षद्घटोत्कचः ।
रथिनामृषभं द्रौणिं धाराभिरिव तोयदः ॥ १०१ ॥
शरवृष्टिं शरैर्द्रौणिरप्राप्तां तां व्यशातयत् ।
ततोऽन्तरिक्षे बाणानां संग्रामोऽन्य इवाऽभवत् ॥ १०२ ॥
अथाऽस्त्रसंमर्दकृतैर्विस्फुलिङ्गैस्तदाबभौ ।
विभावरीमुखे व्योम खद्योतैरिव चित्रितम् ॥ १०३ ॥
निशाम्य निहतां मायां द्रौणिना रणमानिना ।
घटोत्कचस्ततो मायां ससर्जाऽन्तर्हितः पुनः ॥ १०४ ॥

वीर्यसे उत्पन्न हुआ हूं; विशेष करके मैं युद्धमें पीछे न हटनेवाले पाण्डवोंका पुत्र रावणके समान बलवान् और राक्षसोंका राजा हूं ॥ जो इस समय तुम क्षण भरतक युद्धभूमिके बीच खडे रहोगे तो मेरे हाथसे जीते जी किसी प्रकारसे भी न बच सकोगे । आज मैं रणभूमिके बीच तुम्हारी युद्धकी अभिलाषा पूरी कर दूंगा ॥ (९५-९९)

महाराज ! क्रुद्ध सिंह जैसे गजराजकी ओर दौडता है, वैसे ही बलवान् राक्षस घटोत्कच ऐसा वचन कहके क्रोधपूर्वक अश्वत्थामाकी ओर दौडा; और अश्वत्थामाके ऊपर इस प्रकार रथके अक्षके समान अपने भयङ्कर बाणोंकी वर्षा करने लगा जैसे बादल आकाशसे पृथ्वीके ऊपर जलकी वर्षा करता है ॥ १००-१०१

द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने घटोत्कच के धनुषसे छूटी हुई बाण-वर्षाको समीप न पहुंचते ही पहुंचते मार्गमें ही अपने बाणों के प्रभावसे निवारण किया । तब आकाश में दूसरा बाणोंका युद्ध होता हुआ दीखने लगा ॥ और उन दोनोंके धनुषसे छूटे हुए बाणोंके आपसमें रगड खानेसे अग्नि उत्पन्न होने लगी; तथा उससे आकाशमण्डल खद्योतसमूहकी भांति प्रकाशित होने लगा । जब युद्धविद्या जानने वाले अश्वत्थामाके अस्त्रोंके प्रभावसे घटोत्कचके सम्पूर्ण अस्त्र निष्फल हुए। तब उसने अन्तर्द्धान होकर राक्षसी माया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोऽभवद्गिरिरत्युच्चः शिखरैस्तरुसङ्कटैः ।
शूलप्रासासिमुसलजलप्रस्रवणो महान् ॥ १०५ ॥
तमञ्जनगिरिप्रख्यं द्रौणिर्दृष्ट्वा महीधरम् ।
प्रपतद्भिश्च बहुभिः शस्त्रसङ्घैर्न विव्यथे ॥ १०६ ॥
ततो हसन्निव द्रौणिर्वज्रमस्त्रमुदैरयत् ।
स तेनाऽस्त्रेण शैलेन्द्रः क्षिप्तः क्षिप्रं व्यनश्यत ॥१०७॥
ततः स तोयदो भूत्वा नीलः सेन्द्रायुधो दिवि ।
अश्मवृष्टिभिरत्युग्रो द्रौणिमाच्छादयद्रणे ॥ १०८ ॥
अथ सन्धाय वायव्यमस्त्रमस्त्रविदां वरः ।
व्यधमद् द्रोणतनयो नीलमेघं समुत्थितम् ॥ १०९ ॥
स मार्गणगणैर्द्रौणिर्दिशः प्रच्छाद्य सर्वशः ।
शतं रथसहस्राणां जघान द्विपदां वरः ॥ ११० ॥
स दृष्ट्वा पुनरायान्तं रथेनाऽऽयतकार्मुकम् ।
घटोत्कचमसम्भ्रान्तं राक्षसैर्बहुभिर्वृतम् ॥ १११ ॥
सिंहशार्दूलसदृशैर्मत्तद्विरदविक्रमैः ।

प्रकट करी ॥ (१०२—१०४)

उससे त्रिशूल, तलवार फरस, मूशल, रूपी जलके झरने और वृक्षोंसे युक्त शिखरसे शोभित अत्यन्त ऊंचे एक बडे पर्वतका रूप धारण किया, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा घटोत्कचको कज्जलगिरिके समान पर्वत का स्वरूप धारण करते और उससे अनेक भांतिके शस्त्रकी वर्षा होते देख तनिक भी कातर न हुए और निर्भय चित्तसे अपने दिव्य अस्त्रोंको प्रकट किया ॥ अश्वत्थामाके दिव्य अस्त्रके प्रभावसे वह मायामय पर्वत उसही समय नष्ट होगया ॥ (१०५-१०७)

जब मायाका पर्वत नष्ट हुआ तब घटोत्कच आकाशमें जाकर इन्द्रधनुष शोभित अत्यन्त भयङ्कर बादलका रूप धारण करके पत्थरोंकी वर्षासे अश्वत्थामाको छिपाने लगा ॥ शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महावीर अश्वत्थामाने वायव्य अस्त्र चलाकर उस मायामय नील बादलका नाश किया, फिर लगातार अपने तेज बाणोंको चलाकर दशों दिशाको परिपूरित करके एक लाख रथियोंका वध किया ॥ (१०८—११०)

तिसके अनन्तर घटोत्कच फिर रथ पर चढके धनुष फेरता हुआ राक्षसी सेना सङ्ग लेकर रणभूमिमें उपस्थित हुआ। उसकी सेनाके राक्षसोंके बीच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजस्थैश्च रथस्थैश्च वाजिपृष्ठगतैरपि ॥ ११२ ॥
विकृतास्थिशिरोग्रीवैर्हिडिम्बानुचरैः सह ।
पौलस्त्यैर्यातुधानैश्च तामसैश्चेन्द्रविक्रमैः ॥ ११३ ॥
नानाशस्त्रधरैर्वीरैर्नानाकवचभूषणैः ।
महाबलैर्भीमरवैः संरम्भोद्वृत्तलोचनैः ॥ ११४ ॥
उपस्थितैस्ततो युद्धे राक्षसैर्युद्धदुर्मदैः ।
विषण्णमभिसम्प्रेक्ष्य पुत्रं ते द्रौणिरब्रवीत् ॥ ११५ ॥
तिष्ठ दुर्योधनाऽद्य त्वं न कार्यः संभ्रमस्त्वया ।
सहैभिर्भ्रातृभिर्वीरैः पार्थिवैश्चेन्द्रविक्रमैः ॥ ११६ ॥
निहनिष्याम्यमित्रांस्ते न तवाऽस्ति पराजयः ।
सत्यं ते प्रतिजानामि पर्याश्वासय वाहिनीम् ॥ ११७ ॥
दुर्योधन उवाच—न त्वेतदद्भुतं मन्ये यत्ते महादिदं मनः ।

कितने ही सिंह और शार्दूलके समान रूपवाले थे; वे सम्पूर्ण राक्षस मतवारे हाथीके समान पराक्रमी थे; उन सम्पूर्ण राक्षसोंके बीच कितने ही हाथी घोडे और कितनेही राक्षस रथोंपर चढे हुए थे। परन्तु वे सब ही भयङ्कर शरीर, सिर, कान, आंख और भयानक गर्दन वाले थे। उन सम्पूर्ण तामसी प्रकृति-वाले राक्षसोंके बीच कितनेही हिडम्ब और कितने ही पुलस्त्य वंशीय राक्षसों-के वंशमें उत्पन्न हुए थे। वे सब ही राक्षस इन्द्रके समान पराक्रमी क्रोधसे लाल नेत्र किये हुए नाना भांतिके अस्त्र शस्त्रोंको धारण किये और अनेक प्रकार के कवच पहने हुए रणभूमिके बीच उपस्थित हुए। महाराज ! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधन भयङ्कर शब्द करनेवाले उन सम्पूर्ण युद्धदुर्मद राक्षसोंके सहित रणभूमिमें घटोत्कचको आया हुआ देख कर अत्यन्त ही दुःखित हुए।१११-११५

राजा दुर्योधनको दुःखित देख द्रोणपुत्र अश्वत्थामा उन्हें इस भांतिसे धीरज धारण कराने लगे। हे महाराज दुर्योधन ! तुम्हें भयभीत होना उचित नहीं है, इस समय तुम इन्द्रके समान पराक्रमी राजाओं और महावीर भाइयों-के सहित रणभूमिमें स्थित होकर सेनाके पुरुषोंको धीरज धारण कराओ। तुम्हारी कदापि पराजय न होसकेगी, मैं तुम्हारे समीप सत्य प्रतिज्ञा करता हूं, कि युद्धभूमिमें अवश्य तुम्हारे शत्रुओंका वध करूंगा।(११५ ११७)

महाराज ! दुर्योधनने अश्वत्थामा के इस प्रकार धैर्यपूरित वचनको सुनकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्मासु च परा भक्तिस्तव गौतमिनन्दन ॥ ११८ ॥
सञ्जय उवाच— अश्वत्थामानमुक्त्वैवं ततः सौबलमब्रवीत् ।
वृतं रथसहस्रेण हयानां रणशोभिनाम् ॥ ११९ ॥
षष्ट्या रथसहस्रैश्च प्रयाहि त्वं धनञ्जयम् ।
कर्णश्च वृषसेनश्च कृपो नीलस्तथैव च ॥ १२० ॥
उदीच्याः कृतवर्मा च पुरुमित्रः सुतापनः ।
दुःशासनो निकुम्भश्च कुण्डभेदी पराक्रमः ॥ १२१ ॥
पुरञ्जयो दृढरथः पताकी हेमकम्पनः ।
शल्यारुणीन्द्रसेनाश्च सञ्जयो विजयो जयः ॥ १२२ ॥
कमलाक्षः परक्राथी जयवर्मा सुदर्शनः ।
एते त्वामनुयास्यन्ति पत्तीनामयुतानि षट् ॥ १२३ ॥
जहि भीमं यमौ चोभौ धर्मराजं च मातुल ।
असुरानिव देवेन्द्रो जयाशा मे त्वयि स्थिता ॥ १२४ ॥
दारितान्द्रौणिना बाणैर्भृशं विक्षतविग्रहान् ।

उन्हें यह उत्तर दिया। हे शारद्वतीपुत्र! जब तुम्हारा चित्त ऐसा ऊंचा और हम लोगोंके ऊपर अनुरक्त है तब मुझे इस विषयमें कुछ आश्चर्य नहीं मालुम होता है। (११८)

सञ्जय बोले, महाराज! तुम्हारे पुत्र दुर्योधन अश्वत्थामासे ऐसा वचन कहकर सौ हजार घुडसवारोंकी सेनासे घिरे हुए सुबल पुत्र शकुनिसे यह वचन बोले, हे मामा! तुम साठ हजार रथियोंकी सेना लेकर अर्जुनके विरुद्ध युद्ध करनेके वास्ते गमन करो। कर्ण, वृषसेन, कृपाचार्य, नील, कृतवर्मा, पुरुमित्र, सुतापन, दुःशासन, निकुम्भ, कुम्भभेदी, पराक्रम, पुरञ्जय, पताकी, हेमकम्पन, शल्य, अरुणि, इन्द्रसेन, सञ्जय, विजय, जय, कमलाक्ष, परक्राथी, जयवर्मा और सुदर्शन आदि महारथी योद्धाओंके सहित उदीच्य देशीय शूरवीर और साठ हजार पैदल गमन करने वाले योद्धालोग तुम्हारे अनुगामी होंगे॥ (११९-१२३)

हे मामा! मेरी सम्पूर्ण विजयकी आशा तुम्हारे ऊपर निर्भर है, इससे जैसे देवराज इन्द्रने असुरोंका संहार किया था वैसे ही तुम भी भीमसेन, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिरका नाश करो॥ विशेष करके कुन्तीपुत्र आचार्य पुत्र अश्वत्थामाके बाणोंसे अत्यन्त ही पीडित होकर क्षतविक्षत शरीरसे युक्त हो रहे हैं, इस समयमें तुम उन लोगोंको इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहि मातुल कौन्तेयानसुरानिव पावकिः ॥ १२५ ॥
एवमुक्तो ययौ शीघ्रं पुत्रेण तव सौबलः ।
पिप्रीषुस्ते सुतान्राजन्दिधक्षुश्चैव पाण्डवान् ॥ १२६ ॥
अथ प्रववृते युद्धं द्रौणिराक्षसयोर्मृधे ।
विभावर्यां सुतुमुलं शक्रप्रल्हादयोरिव ॥ १२७ ॥
ततो घटोत्कचो बाणैर्दशभिर्गौतमीसुतम् ।
जघानोरसि संक्रुद्धो विषाग्निप्रतिमैर्दृढैः ॥ १२८ ॥
स तैरभ्याहतो गाढं शरैर्भीमसुतेरितैः ।
चचाल रथमध्यस्थो वातोद्धूत इव द्रुमः ॥ १२९ ॥
भूयश्चाऽञ्जलिकेनाऽथ मार्गणेन महाप्रभम् ।
द्रौणिहस्तस्थितं चापं चिच्छेदाऽऽशु घटोत्कचः ॥ १३० ॥
ततोऽन्यद् द्रौणिरादाय धनुर्भारसहं महत् ।
ववर्ष विशिखांस्तीक्ष्णान्वारिधारा इवाऽम्बुदः ॥ १३१ ॥
ततः शारद्वतीपुत्रः प्रेषयामास भारत ।
सुवर्णपुङ्खाञ्छ्वभ्राञ्खचरान्खचरं प्रति ॥ १३२ ॥

भांतिसे नष्ट करो जैसे अग्निपुत्र स्कन्दने दानवोंका नाश किया था ॥ महाराज ! सुबलपुत्र शकुनिने राजा दुर्योधनके इस प्रकारके वचन सुनकर तुह्मारे पुत्रों की इच्छा पूरी करनेके वास्ते पाण्डवोंके वधकी अभिलाषा कर शीघ्रताके सहित युद्ध करनेके वास्ते उनकी ओर गमन किया ॥ (१२४–१२६)

इधर उस महाघोर रात्रिके समय इन्द्र और प्रह्लादके समान द्रोणपुत्र अश्वत्थामा और राक्षस घटोत्कचका आपसमें अत्यन्त भयङ्कर दारुण संग्राम होने लगा ॥ घटोत्कचने अत्यन्त क्रुद्ध होके विष और अग्निमें बुझाये हुए दश तीक्ष्ण बाणोंसे अश्वत्थामाके वक्षस्थलमें प्रहार किया ॥ शारद्वतीपुत्र अश्वत्थामा घटोचत्कचके दृढ बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर इस प्रकार रथमें विचलित हुए, जैसे वायुके चलनेसे वृक्ष विचलित होने लगते हैं ॥ (१२७–१२९)

घटोत्कचने फिर एक अञ्जालिक अस्त्रसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके हाथमें स्थित अत्यन्त दृढ धनुषको काट दिया ॥ तब पराक्रमी अश्वत्थामा एक दूसरा दृढ धनुष ग्रहण करके जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति तेज बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ तिसके अनन्तर अश्वत्थामा आकाशचारी राक्षसोंके ऊपर सुवर्ण दण्ड-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्बाणैरर्दितं यूथं रक्षसां पीनवक्षसाम् ।
सिंहैरिव बभौ मत्तं गजानामाकुलं कुलम् ॥ १३३ ॥
विधम्य राक्षसान्बाणैः साश्वसूतरथद्विपान् ।
ददाह भगवान्वह्निर्भूतानीव युगक्षये ॥ १३४ ॥
स दग्ध्वाऽक्षौहिणीं बाणैर्नैर्ऋतीं रुरुचे नृप ।
पुरेव त्रिपुरं दग्ध्वा दिवि देवो महेश्वरः ॥ १३५ ॥
युगान्ते सर्वभूतानि दग्ध्वेव वसुरुल्बणः ।
रराज जयतां श्रेष्ठो द्रोणपुत्रस्तवाऽहितान् ॥ १३६ ॥
ततो घटोत्कचः क्रुद्धो रक्षसां भीमकर्मणाम् ।
द्रौणिं हतेति महतीं चोदयामास तां चमूम् ॥१३७॥
घटोत्कचस्य तामाज्ञां प्रतिगृह्याऽथ राक्षसाः ।
दंष्ट्रोज्ज्वला महावक्त्रा घोररूपा भयानकाः ॥१३८॥
व्यात्तानना घोरजिह्वाः क्रोधताम्रेक्षणा भृशम् ।
सिंहनादेन महता नादयन्तो वसुन्धराम् ॥ १३९ ॥

भूषित शत्रुओंके नाश करनेवाले आकाश गामी बाण चलाने लगे ॥ (१३०–१३२)

महाराज ! तिसके अनन्तर अश्वत्थामाके बाणोंसे पीडित होके चौडी छातीवाले राक्षसोंके समूह इस प्रकार विकल होगये, जैसे सिंहके आक्रमणसे मतवारे हाथियोंका समूह व्याकुल होजाता है ॥ जैसे प्रलय कालके समय प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित होकर सम्पूर्ण प्राणियोंको भस्म कर देती है वैसे ही अश्वत्थामा अपने तेज बाणरूपी अग्निसे राक्षसोंको जलाकर घोडे, हाथी और सारथियोंके सहित रथियोंको भस्म करने लगे ॥ महाराज ! पहिले समयमें जैसे देवोंके देव महादेव आकाशमें स्थित त्रिपुरको जलाकर शोभित हुए थे वैसे ही द्रोणपुत्र अश्वत्थामा एक अक्षौहिणी राक्षसी सेना भस्म करके रणभूमिके बीच शोभित होने लगे ॥ विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोणपुत्र अश्वत्थामा तुम्हारे शत्रुओंका नाश करके प्रलयकालकी प्रचण्ड अग्निकी भांति प्रकाशित होने लगे ॥ १३३-१३६

तिसके अनन्तर घटोत्कचने क्रोध पूर्वक भयङ्कर मूर्तिवाली अपनी राक्षसी सेनाके पुरुषोंको आज्ञा दिया, कि "तुम लोग अश्वत्थामाका वध करो।" महाराज ! बिकट रूप, जीभ निकले हुए, भयानक मुखसे युक्त, सम्पूर्ण प्राणियोंको भयभीत करनेवाले राक्षस लोग घटोत्कचकी आज्ञा सुनकर अत्यन्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हन्तुमभ्यद्रवन्द्रौणिं नानाप्रहरणायुधाः ।
शक्तीः शतघ्नीः परिघानशनीः शूलपट्टिशान् ॥१४०॥
खड्गान्गदाभिन्दिपालान्मुसलानि परश्वधान् ।
प्रासानसींस्तोमरांश्च कणपान्कम्पनाञ्छितान्॥१४१ ॥
स्थूलान्भुशुण्ड्यश्मगदास्थूणान्काष्णायसांस्तथा ।
मुद्गरांश्च महाघोरान्समरे शत्रुदारणान् ॥ १४२ ॥
द्रौणिमूर्ध्न्यसंत्रस्ता राक्षसा भीमविक्रमाः ।
चिक्षिपुः क्रोधताम्राक्षाः शतशोऽथ सहस्रशः ॥१४३॥
तच्छस्त्रवर्षं सुमहद् द्रोणपुत्रस्य मूर्धनि ।
पतमानं समीक्ष्याऽथ योधास्ते व्यथिताऽभवन्॥१४४॥
द्रोणपुत्रस्तु विक्रान्तस्तद्वर्षं घोरमुच्छ्रितम् ।
शरैर्विध्वंसयामास वज्रकल्पैः शिलाशितैः ॥ १४५ ॥
ततोऽन्यैर्विशिखैस्तूर्णं स्वर्णपुङ्खैर्महामनाः ।
निजघ्ने राक्षसान्द्रौणिर्दिव्यास्त्रप्रतिमन्त्रितैः ॥ १४६ ॥
तद्बाणैरर्दितं यूथं रक्षसां पीनवक्षसाम् ।

क्रुद्ध हुए और लाल नेत्र करके नाना भांतिके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण कर अपने सिंहनादके शब्दसे पृथ्वीको परिपूरित करते हुए अश्वत्थामाके वधके वास्ते शीघ्रता के सहित उन की ओर दौडे ॥ (१३७—१४०)

अनन्तर वे महाघोर पराक्रमशाली राक्षस लोग शक्ति, शतघ्नी, परिघ, अशनि, शूल, पट्टिश, तलवार, गदा, भिन्दिपाल, मूशल, परश्वध, प्रास, तोमर, पत्थर, तेजधार, कम्पन, स्थूल, भुषण्डी, काले रूपवाले लोहमय स्थूणा, शत्रुओंके शरीरको विदीर्ण करनेवाले भयङ्कर मुद्गर इत्यादि अनेक भांतिके सैकडों सहस्रों अस्त्र शस्त्रोंको इकबारगी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके ऊपर चलाने लगे ॥ (१४१—१४३)

महाराज ! तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष अश्वत्थामाके ऊपर इस प्रकार अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा होती देखकर अत्यन्त ही भयभीत हुए ॥ परन्तु महातेजस्वी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने निर्भयचित्तसे शिलापर घिसे हुए अपने वज्रसमान बाणोंसे उन सम्पूर्ण राक्षसोंके चलाये हुए अस्त्रशस्त्रोंको निवारण किया ॥ और शीघ्र ही दिव्य अस्त्र प्रकट करके सुवर्ण पङ्खवाले बाणोंसे राक्षसीसेनाके शूरवीरोंके ऊपर प्रहार करने लगे । चौडी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहैरिव बभौ मत्तं गजानामाकुलं कुलम् ॥ १४७ ॥
ते राक्षसाः सुसंक्रुद्धा द्रोणपुत्रेण ताडिताः ।
क्रुद्धाः स प्राद्रवन्द्रौणिं जिघांसन्तो महाबलाः॥ १४८ ॥
तत्राऽद्भुतमिमं द्रौणिर्दर्शयामास विक्रमम् ।
अशक्यं कर्तुमन्येन सर्वभूतेषु भारत ॥ १४९ ॥
यदेको राक्षसीं सेनां क्षणाद् द्रौणिर्महास्त्रवित् ।
ददाह ज्वलितैर्बाणै राक्षसेन्द्रस्य पश्यतः ॥ १५० ॥
स हत्वा राक्षसानीकं रराज द्रौणिराहवे ।
युगान्ते सर्वभूतानि संवर्त्तक इवाऽनलः ॥ १५१ ॥
तं दहन्तमनीकानि शरैराशीविषोपमैः ।
तेषु राजसहस्रेषु पाण्डवेयेषु भारत ॥ १५२ ॥
नैनं निरीक्षितुं कश्चिदशक्नोद् द्रौणिमाहवे ।
ऋते घटोत्कचाद्वीराद्राक्षसेन्द्रान्महाबलात् ॥ १५३ ॥
स पुनर्भरतश्रेष्ठ क्रोधादुद्भ्रान्तलोचनः ।

छातीवाले राक्षस लोग अश्वत्थामाके बाणोंसे पीडित होकर इस भांति विकल होगये जैसे सिंहके आक्रमणसे मतवारे हाथियोंका समूह व्याकुल होजाता है । परन्तु अत्यन्त क्रोधी महाबलवान राक्षस लोग अश्वत्थामाके बाणोंसे इस प्रकार पीडित होकर भी उनके वधकी अभिलाष करके फिर उनकी ओर दौडे ॥ (१४४—१४८)

महाराज ! उस स्थलमें द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने ऐसा आश्चर्यमय पराक्रम प्रकाशित किया कि वैसा कर्म सम्पूर्ण प्राणियोंसे भी असाध्य बोध हुआ, क्योंकि महा अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले अश्वत्थामाने मुहूर्त भरके बीच में अकेलेही जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान बाणोंसे राक्षसराज घटोत्कचके सम्मुखमें ही सम्पूर्ण राक्षसी सेनाको भस्म कर दिया ॥ संग्रामभूमिके बीच पराक्रमी अश्वत्थामा राक्षसी सेनाका नाश करके प्रलयकालकी अग्निसमान प्रकाशित हुए ॥ (१४९—१५१)

अधिक क्या कहूं जिस समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा विषधर सर्पके समान अपने तेज बाणोंसे राक्षसोंका वध कर रहे थे उस समय महाबली राक्षसेन्द्र घटोत्कचको छोडके पाण्डवोंकी ओरके सहस्रों राजाओंके बीच कोई भी अश्वत्थामाकी ओर देखनेमें भी समर्थ न हुए॥ तब घटोत्कच क्रोधसे दोनों नेत्र लाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलं तलेन संहत्य संदश्य दशनच्छदम् ॥ १५४ ॥
स्वं सूतमब्रवीत्क्रुद्धो द्रोणपुत्राय मां वह ।
स ययौ घोररूपेण सुपताकेन भास्वता ॥ १५५ ॥
द्वैरथं द्रोणपुत्रेण पुनरप्यरिसूदनः ।
स विनद्य महानादं सिंहवद्भीमविक्रमः ॥ १५६ ॥
चिक्षेपाऽऽविध्य संग्रामे द्रोणपुत्राय राक्षसः ।
अष्टघण्टां महाघोरामशनिं देवनिर्मिताम् ॥ १५७ ॥
तामवप्लुत्य जग्राह द्रौणिर्न्यस्य रथे धनुः ।
चिक्षेप चैनां तस्यैव स्यन्दनात्सोऽवपुप्लुवे ॥ १५८ ॥
साश्वसूतध्वजं यानं भस्म कृत्वा महाप्रभा ।
विवेश वसुधां भित्त्वा साऽशनिर्भृशदारुणा॥ १५९ ॥
द्रौणेस्तत्कर्म दृष्ट्वा तु सर्वभूतान्यपूजयन् ।
यदवप्लुत्य जग्राह घोरां शङ्करनिर्मिताम् ॥ १६० ॥
धृष्टद्युम्नरथं गत्वा भैमसेनिस्ततो नृप ।
धनुर्घोरं समादाय महदिन्द्रायुधोपमम् ।

करके ओठ काटता हुआ अपने सारथीसे बोला, हे सारथी ! तुम मुझे अश्वत्थामाके समीप ले चलो ॥ १५२-१५५

ऐसा कह कर घटोत्कच अपने उस भयानक रथ पर चढके द्वैरथ युद्ध करनेके वास्ते अश्वत्थामाके समीप उपस्थित हुआ । अनन्तर शत्रु नाशन अत्यन्त पराक्रमी भीमसेन पुत्र घटोत्कचने भयङ्कर शब्दके सहित सिंहनाद करके आठ घण्टियोंसे युक्त देवताओंकी बनाई एक महाघोर शक्ति घुमाकर अश्वत्थामाकी ओर चलायी । द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अपना धनुष रखके रथसे कूद कर उस शक्तिको ग्रहण करके घटोत्कचकी ओर चलाया । उस भयङ्कर शक्तिको सम्मुख आती देख घटोत्कच रथसे कूद कर पृथ्वी पर स्थित हुआ ॥ (१५५-१५८)

अनन्तर वह प्रकाशमान महाघोर शक्ति घटोत्कचके घोडे सारथी और ध्वजाके सहित रथको भस्म करके पृथ्वी में घुस गई ॥ परन्तु द्रोणपुत्र पराक्रमी अश्वत्थामाने जो उस भयङ्करी शक्तिको कूदके ग्रहण किया, उसे देखकर सम्पूर्ण प्राणी उनके इस कार्यकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे ॥ घटोत्कच धृष्टद्युम्नके रथ पर चढके इन्द्रधनुषके समान अपना प्रचण्ड धनुष फेरते हुए अपने चोखे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुमोच निशितान्बाणान्पुनद्रौणेर्महोरसि ॥ १६१ ॥
धृष्टद्युम्नस्त्वसंभ्रान्तो मुमोचाऽऽशीविषोपमान्।
सुवर्णपुङ्खान्विशिखान्द्रोणपुत्रस्य वक्षसि ॥ १६२ ॥
ततो मुमोच नाराचान्द्रौणिस्तांश्च सहस्रशः।
तावप्यग्निशिखप्रख्यैर्जघ्नतुस्तस्य मार्गणान् ॥ १६३ ॥
अतितीव्रं महद्युद्धं तयोः पुरुषसिंहयोः।
योधानां प्रीतिजननं द्रौणेश्च भरतर्षभ ॥ १६४ ॥
ततो रथसहस्रेण द्विरदानां शतैस्त्रिभिः।
षड्भिर्वाजिसहस्रैश्च भीमस्तं देशमागमत् ॥ १६५ ॥
ततो भीमात्मजं रक्षो धृष्टद्युम्नं च सानुगम्।
अयोधयत धर्मात्मा द्रौणिरक्लिष्टविक्रमः ॥ १६६ ॥
तत्राऽद्भुततमं द्रौणिर्दर्शयामास विक्रमम्।
अशक्यं कर्तुमन्येन सर्वभूतेषु भारत ॥ १६७ ॥
निमेषान्तरमात्रेण साश्वसूतरथद्विपाम्।
अक्षौहिणीं राक्षसानां शितैर्बाणैरशातयत् ॥ १६८ ॥

बाणोंसे अश्वत्थामाके वक्षस्थलमें प्रहार करने लगा ॥ (१५९-१६१)

उस ही समय धृष्टद्युम्न भी विषधर सर्पके समान तेजस्वी बहुतसे तेज बाणोंसे अश्वत्थामाके वक्षस्थलमें प्रहार करने लगे ॥ उस समय अश्वत्थामा उन दोनोंके ऊपर एकबारही एक एक हजार बाण चलाने लगे; अश्वत्थामाके चलाये बाणोंको सम्मुख न आतेही उन दोनों वीरोंने अग्निके समान तेजस्वी अपने तेज बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ महाराज! इसी भांति धृष्टद्युम्न ओर घटोत्कचके सङ्ग द्रोणपुत्र अश्वत्थामाका शूरवीरोंके हर्षको बढानेवाला महाघोर संग्राम होने लगा॥ १६२-१६४

उस ही समय भीमसेन एक हजार रथ तीन सौ हाथी और छः हजार घुडसवारोंकी सेना लेकर वहां उपस्थित हुए ॥ भीमसेनके उस स्थान पर उपस्थित होने पर भी धर्मात्मा अश्वत्थामा निर्भय चित्तसे सम्पूर्ण योद्धाओंसे युक्त धृष्टद्युम्न और घटोत्कचके संग युद्ध करने लगे ॥ महाराज! द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने उस समय जैसा पराक्रम प्रकाशित किया वैसा कर्म सम्पूर्ण प्राणियोंसे भी असाध्य है ॥ (१६५-१६७)

उन्होंने क्षण भरके बीच अपने अत्यन्त चोखे बाणोंके प्रभावसे भीमसेन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिषतो भीमसेनस्य हैडिम्बेः पार्षतस्य च ।
यमयोर्धर्मपुत्रस्य विजयस्याच्युतस्य च ॥ १६९ ॥
प्रगाढमज्ञोगतिभिर्नाराचैरभिताडिताः ।
निपेतुर्द्विरदा भूमौ सशृङ्गा इव पर्वताः ॥ १७० ॥
निकृतैर्हस्तिहस्तैश्च विचलद्भिरितस्ततः ।
रराज वसुधा कीर्णा विसर्पद्भिरिवोरगैः ॥ १७१ ॥
क्षितैः काञ्चनदण्डैश्च नृपच्छत्रैः क्षितिर्बभौ ।
द्यौरिवोदितचंद्रार्का ग्रहाकीर्णा युगक्षये ॥ १७२ ॥
प्रवृद्धध्वजमण्डूकां भेरीविस्तीर्णकच्छपाम् ।
छत्रहंसावलीजुष्टां फेनचामरमालिनीम् ॥ १७३ ॥
कङ्कगृध्रमहाग्राहां नैकायुधझषाकुलाम् ।
विस्तीर्णगजपाषाणां हताश्वमकराकुलाम् ॥ १७४ ॥
रथक्षिप्तमहावप्रां पताकारुचिरद्रुमाम् ।

घटोत्कच, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव धर्मपुत्र युधिष्ठिर, श्वेतवाहन अर्जुन और श्रीकृष्णके सम्मुखमें ही घोडे सारथी और हाथियोंसे युक्त एक अक्षौहिणी राक्षसी सेनाका नाश किया ॥ उस समय हाथियोंके समूह अश्वत्थामाके वेगगामी बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर मानों शृङ्ग-से युक्त पर्वतके समान मर कर पृथ्वीमें गिरने लगे ॥ बाणोंकी चोटसे कितने ही हाथियोंके सूण्ड कटकर रणभूमिमें चलते हुए सर्पके समान पडे हुए दिखाई देने लगे ॥ (१६८—१७१)

राजाओंके सुवर्ण दण्डयुक्त सफेद छत्र रणभूमिमें गिर कर ऐसे प्रकाशित हो रहे थे जैसे चन्द्र सूर्य आदि ग्रहोंसे युक्त प्रलयकालके समय आकाशमण्डल शोभित होता है ॥ इसी प्रकार द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने उस युद्धभूमिके बीच बडे बडे हाथी घोडे और शूरवीर मनुष्योंके मृतशरीरसे युक्त उनके रुधिरसे भयङ्करी नदी उत्पन्न कर दी । कटी हुई ध्वजा उस नदीमें मेढक भेरी उसमें बडे शरीरवाले कछुवे और छत्र उसमें हंसोंकी पांतकी भांति बहते हुए दिखाई देते थे । चबंर उसमें फेंनके समान दीख पडते थे ॥ (१७२–१७३)

कौवे गिद्ध आदि पक्षी उसमें ग्राह-रूपी बोध होते थे । इधर उधर गिरे पडे बहुतेरे अस्त्र-शस्त्र उसमें मछरी, मांस-मज्जा उस नदीके कीचड मरे हुए हाथियोंके समूह उसमें पत्थरोंकी चट्टान समान दीख पडते थे, मरे हुए घोडोंके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरमीनां महारौद्रां प्रासशक्त्यृष्टिदुण्डुभाम् ॥ १७५ ॥
मज्जामांसमहापङ्कां कबन्धावर्जितोडुपाम् ।
केशशैवलकल्माषां भीरूणां कश्मलावहाम् ॥ १७६ ॥
नागेन्द्रहययोधानां शरीरव्ययसंभवाम् ।
शोणितौघमहाघोरां द्रौणिः प्रावर्तयन्नदीम् ॥ १७७ ॥
योधार्तरवनिर्घोषां क्षतजोर्मिसमाकुलाम् ।
श्वापदातिमहाघोरां यमराष्ट्रमहोदधिम् ॥ १७८ ॥
निहत्य राक्षसान्बाणैर्द्रौणिर्हैडिंबिमार्दयत् ।
पुनरप्यतिसंक्रुद्धः सवृकोदरपार्षतान् ॥ १७९ ॥
सनाराचगणैः पार्थान्द्रौणिर्विद्धो महाबलः ।
जघान सुरथं नाम द्रुपदस्य सुतं विभुः ॥ १८० ॥
पुनः शत्रुञ्जयं नाम द्रुपदस्यात्मजं रणे ।
बलानीकं जयानीकं जयाश्वं चाभिजघ्निवान् ॥ १८१ ॥
श्रुताह्वयं च राजानं द्रौणिर्निन्ये यमक्षयम् ।
त्रिभिश्चान्यैः शरैस्तीक्ष्णैः सुपुङ्खैर्हेममालिनम् ॥ १८२ ॥

शरीर उसमें मकर रूपी मालूम होते थे, टूटे हुए रथ उसमें तीरके समान बहे जाते थे, उत्तम दण्डके सहित पताका मानो नदीके किनारे वाले वृक्षकी भांति दिखाई देती थीं केश उसमें काले रङ्ग-वाली शिवारकी भांति दिखाई देते थे; योद्धाओंका आर्त्त नाद ही उस नदीके हरहराहट शब्द के समान बोध होता था और योद्धाओंके कटे हुए शरीरसे जो रुधिर बह रहाथा वही उसमें जल के समान मालूम हो रहा था। वह रुधिर की नदी यमराज रूपी महा सागरसे मिलकर तथा मांसभक्षी पशु पक्षी और राक्षसोंसे सेवित होकर अत्यन्त ही भय-ङ्करी होकर कादर पुरुषोंके भयको बढाने लगी ॥ (१७४—१७८)

महाराज ! द्रोणपुत्र अश्वत्थामा फिर अत्यन्त क्रुद्ध होकर भीमसेन, धृष्टद्युम्न और बहुतेरे राक्षसोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीडित करके हिडम्बापुत्र घटोत्कचको अपने तेज बाणोंसे विद्ध करने लगे ॥ इसी प्रकार महाबल युद्धविद्या ज्ञाता अश्वत्थामाने भीमसेन आदि वीरोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करके पाञ्चालराज द्रुपदके पुत्र सुरथका वध किया ॥ तिसके अनन्तर उन्होंने सुरथ-के भ्राता शत्रुञ्जय, बलानीक, जयानीक और जयाश्वको यमपुरीमें भेज दिया,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जघान स पृषध्रं च चन्द्रसेनं च मारिष।
कुन्तिभोजसुतांश्चाऽऽसौ दशभिर्दश जघ्निवान्॥१८३॥
अश्वत्थामा सुसंक्रुद्धः सन्धायोग्रमजिह्मगम्।
मुमोचाऽऽकर्णपूर्णेन धनुषा शरमुत्तमम् ॥ १८४ ॥
यमदंडोपमं घोरमुद्दिश्याऽऽशु घटोत्कचम्।
स भित्त्वा हृदयं तस्य राक्षसस्य महाशरः ॥ १८५ ॥
विवेश वसुधां शीघ्रं सपुङ्खः पृथिवीपते।
तं हतं पतितं ज्ञात्वा धृष्टद्युम्नो महारथः ॥ १८६ ॥
द्रौणेः सकाशाद्राजेन्द्र व्यपनिन्ये रथोत्तमम्।
ततः पराङ्मुखनृपं सैन्यं यौधिष्ठिरं नृप ॥ १८७ ॥
पराजित्य रणे वीरो द्रोणपुत्रो ननाद ह।
पूजितः सर्वभूतेषु तव पुत्रैश्च भारत ॥ १८८ ॥
अथ शरशतभिन्नकृत्तदेहैर्हतपतितैः क्षणदाचरैः समन्तात्।
निधनमुपगतैर्महीं कृताऽभूद्गिरिशिखरैरिव दुर्गमाऽतिरौद्रा ॥ १८९ ॥

उस ही समय उन्होंने सुवर्ण पुंखवाले अत्यन्त चोखे तीन बाणोंसे राजाओंमें श्रेष्ठ श्रुताव्हय और महाबली हेममाली का वध करके पृथ्वीमें गिराया॥ फिर सिंहनाद करके अपने तेज बाणोंसे पृषध्र और महामानी चन्द्रका शिर काट कर दश बाणोंसे कुन्तिभोज राजाके दस पुत्रोंका वध किया॥ (१७९–१८३)

तिसके अनन्तर अश्वत्थामा अत्यन्त क्रुद्ध हुए और एक यमदण्डके समान भयङ्कर बाण धनुष पर चढा कर धनुषको कर्ण पर्यंत खींचकर घटोत्कचकी ओर चलाया॥ वह भयङ्कर बाण अश्वत्थामाके धनुषसे छूटकर घटोत्कचके हृदयको भेद करके वेगपूर्वक पृथ्वीमें घुस गया। उस भयङ्कर बाणकी चोटसे घटोत्कच पृथ्वीमें गिर पडा; महारथी धृष्टद्युम्न घटोत्कच को मरा हुआ समझके शीघ्रताके सहित रथ हांक कर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके समीपसे भाग गये। (१८४–१८७)

इसी भांति जब सम्पूर्ण महारथी योद्धा युद्धभूमिसे भाग गये तब महावीर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा सेनापतिसे रहित युधिष्ठिरकी सम्पूर्ण सेनाको पराजित करके सिंहनाद करने लगे। उस समय तुम्हारे पुत्रोंके सहित सम्पूर्ण प्राणी अश्वत्थामाकी प्रशंसा करने लगे॥ महाराज! उस समय पर्वतके शिखर समान रूपवाले बहुतेरे राक्षस लोग जो अश्वत्थामाके सैकडों बाणोंसे मरे अध-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं सिद्धगन्धर्वपिशाचसङ्घा नागाः सुपर्णाः पितरो वयांसि।
रक्षोगणा भूतगणाश्च द्रौणिमपूजयन्नप्सरसः सुराश्च ॥ १९० ॥ [६९४०]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे षट्पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५६ ॥

सञ्जय उवाच— द्रुपदस्याऽऽत्मजान्दृष्ट्वा कुन्तिभोजसुतांस्तथा।
द्रोणपुत्रेण निहतान्राक्षसांश्च सहस्रशः ॥ १ ॥
युधिष्ठिरो भीमसेनो धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः।
युयुधानश्च संयत्ता युद्धायैव मनो दधुः ॥ २ ॥
सोमदत्तः पुनः क्रुद्धो दृष्ट्वा सात्यकिमाहवे।
महता शरवर्षेण च्छादयामास भारत ॥ ३ ॥
ततः समभवद्युद्धमतीव भयवर्धनम्।
त्वदीयानां परेषां च घोरं विजयकांक्षिणाम् ॥ ४ ॥
तं दृष्ट्वा समुपायान्तं रुक्मपुङ्खैः शिलाशितैः।
दशभिः सात्वतस्याऽर्थे भीमो विव्याध सायकैः॥ ५॥
सोमदत्तोऽपि तं वीरं शतेन प्रत्यविध्यत।
सात्वतस्त्वभिसंक्रुद्धः पुत्राधिभिरभिश्रुतम् ॥ ६ ॥

मरे और कटेहुए शरीरसे रणभूमिके बीच चारों ओर पडे थे उससे वह रणभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर बोध होती थी॥ इस अद्भुत कर्मको देखकर देवता, पितर, सिद्ध, गन्धर्व, अप्सरा, राक्षस, भूत, पिशाच, पक्षी और सर्प आदि सम्पूर्ण प्राणी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकी प्रशंसा करने लगे॥ (१८७—१९०)

द्रोणपर्वमें एकसौ छप्पन अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ सतावन अध्याय।

सञ्जय बोले महाराज! धर्मपुत्र युधिष्ठिर, भीमसेन, सात्यकि और धृष्टद्युम्न, इन कई वीरोंने द्रुपद और कुन्तिभोज राजाके पुत्रों और अनगिनत राक्षसोंको द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके बाणोंसे मरते देख सावधान होकर युद्ध करना आरम्भ किया॥ परन्तु सोमदत्त सात्यकिको युद्धभूमि में देखकर फिर क्रोधपूर्वक अपने बाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपाने लगे॥ अनन्तर तुम्हारी और पाण्डवों की सेनाके शूरवीरोंका आपसमें अत्यन्त भयङ्कर संग्राम होने लगा। (१-४)

उसी समय भीमसेनने सोमदत्त को सात्यकिकी ओर आते देख सात्यकि की सहायता की इच्छासे शिलापर घिसे हुए दश बाणोंसे सोमदत्तको विद्ध किया॥ सोमदत्तनेभी पराक्रमी भीमसेनको एक सौ बाणोंसे विद्ध किया। अनन्तर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धं वृद्धगुणैर्युक्तं ययातिमिव नाहुषम् ।
विव्याध दशभिस्तीक्ष्णैः शरैर्वज्रनिपातनैः ॥ ७ ॥
शक्त्या चैनं विनिर्भिद्य पुनर्विव्याध सप्तभिः ।
ततस्तु सात्यकेरर्थे भीमसेनो नवं दृढम् ॥ ८ ॥
मुमोच परिघं घोरं सोमदत्तस्य मूर्धनि ।
सात्वतोऽप्यग्निसङ्काशं मुमोच शरमुत्तमम् ॥ ९ ॥
सोमदत्तोरसि क्रुद्धः सुपत्रं निशितं युधि ।
युगपत्पेततुर्वीर घोरौ परिघमार्गणौ ॥ १० ॥
शरीरे सोमदत्तस्य स पपात महारथः ।
श्यामोहिते तु तनये बाह्लीकस्तमुपाद्रवत् ॥ ११ ॥
विसृजञ्छरवर्षाणि कालवर्षीव तोयदः ।
भीमोऽथ सात्वतस्यार्थे बाह्लीकं नवभिः शरैः ॥ १२ ॥
प्रपीडयन्महात्मानं विव्याध रणमूर्धनि ।
प्रतिपेयस्तु संक्रुद्धः शक्तिं भीमस्य वक्षसि ॥ १३ ॥
निचखान महाबाहुः पुरन्दर इवाऽशनिम् ।

सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर नहुषपुत्र ययातिके समान गुणयुक्त, पुत्र शोकसे दुःखी बूढे सोमदत्तको अत्यन्त चोखे दश तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध किया ॥ ५-७

तिसके अनन्तर सात्यकिने एक शक्तिसे सोमदत्तके शरीरको भेद करके फिर उन्हें सात बाणोंसे विद्ध किया । उस ही समय भीमसेनने सात्यकिकी सहायता करनेकी अभिलाषासे एक भयङ्कर परिघ चला कर सोमदत्तके सिरमें प्रहार किया ॥ तब सात्यकिने भी अग्नितुल्य एक तीक्ष्ण बाण सोमदत्तकी छाती पर छोड दिया ॥ महाराज ! उन दोनों वीरोंके चलाये हुए परिघ और बाण एक ही समय सोमदत्तके शरीरपर गिरनेसे वह उसी समय मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये । (८-११)

अपने पुत्र सोमदत्तको मूर्च्छित देख कर राजा बाह्लिक लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए सात्यकिकी ओर ऐसे दौडे जैसे बादल आकाशसे इकबारगी जलकी वर्षा करते हैं॥ भीमसेनने सात्यकिकी रक्षाके वास्ते रणभूमि में स्थित बाह्लिकको दृढताके सहित नव बाणोंसे विद्ध किया । तब महाबाहु प्रतीपनन्दन बाह्लिक अत्यन्त क्रुद्ध हुए और इन्द्र जैसे वज्र चलाते हैं, वैसे ही एक शक्ति ग्रहण करके भीमसेनके वक्षस्थलमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तथाऽभिहतो भीमश्चकम्पे च मुमोह च ॥ १४ ॥
प्राप्य चेतश्च बलवान्गदामस्मै ससर्ज ह।
सा पाण्डवेन प्रहिता बाह्लीकस्य शिरोऽहरत् ॥ १५ ॥
स पपात हतः पृथ्व्यां वज्राहत इवाऽद्रिराट्।
तस्मिन्विनिहते वीरे बाह्लीके पुरुषर्षभ ॥ १६ ॥
पुत्रास्तेऽभ्यर्दयन्भीमं दश दाशरथेः समाः।
नागदत्तो दृढरथो महाबाहुरयोभुजः ॥ १७ ॥
दृढः सुहस्तो विरजाः प्रमाथ्युग्रोऽनुयाय्यपि।
तान्दृष्ट्वा चुक्रुधे भीमो जगृहे भारसाधनान् ॥ १८ ॥
एकमेकं समुद्दिश्य पातयामास मर्मसु।
ते विद्धा व्यसवः पेतुः स्यन्दनेभ्यो हतौजसः ॥१९ ॥
चण्डवातप्रभग्नास्तु पर्वताग्रान्महीरुहाः।
नाराचैर्दशभिर्भीमस्तान्निहत्य तवाऽऽत्मजान् ॥ २० ॥
कर्णस्य दयितं पुत्रं वृषसेनमवाकिरत्।
ततो वृकरथो नाम भ्राता कर्णस्य विश्रुतः ॥ २१ ॥

प्रहार किया। (११-१४)

महाबली भीमसेन उस शक्तिके लगने से अत्यन्त पीडित होकर मूर्च्छित होगये; परन्तु फिर सावधान होकर भीमसेनने एक गदा ग्रहण करके बाह्लिक की ओर चलाया॥ वह भयानक गदा भीमसेनके हाथसे छूटकर बाह्लिकके सिर-पर गिरी और उस ही गदाकी चोटसे बाह्लिकका सिर टुकडे टुकडे होगया। राजा बाह्लिक उस ही समय प्राणरहित होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिर पडे जैसे वज्रकी चोटसे पर्वत टुकडे टुकडे होके पृथ्वीपर गिर पडता है॥ (१४-१६)

महाराज! जब पुरुषश्रेष्ठ महावीर बाह्लिक मारे गये तब दशरथपुत्रके समान पराक्रमी नागदत्त, दृढरथ, महा-बाहु, अयोभुज, दृढ, सुहस्त, विरजा, प्रमाथी, उग्र और अनुयायी ये तुम्हारे दश पुत्र भीमसेनकी ओर दौडे, सम्मुख आते ही भीमसेनने तीन बाणोंसे एक एकके मर्मस्थलको विद्ध कर उन दशों वीरोंका वध किया॥ तब तेरे दस पुत्र बडे वायुसे टूटकर पर्वतके ऊपरसे गिरने वाले वृक्षोंके समान अपने रथपरसे पृथ्वीमें गिर पडे॥ (१६—२०)

महाराज! इस प्रकार तेरे पुत्रोंको तीक्ष्ण बाणोंसे मारकर पराक्रमी भीमसेन अपने बाणोंसे कर्णके प्रिय पुत्र वृषसेनको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जघान भीमं नाराचैस्तमप्यभ्यद्रवद्बली ।
ततः सप्त रथान्वीरः स्यालानां तव भारत ॥ २२ ॥
निहत्य भीमो नाराचैः शतचन्द्रमपोथयत् ।
अमर्षयन्तो निहतं शतचन्द्रं महारथम् ॥ २३ ॥
शकुनेर्भ्रातरो वीरा गवाक्षः शरभो विभुः ।
सुभगो भानुदत्तश्च शूराः पञ्च महारथाः ॥ २४ ॥
अभिद्रुत्य शरैस्तीक्ष्णैर्भीमसेनमताडयन् ।
स ताड्यमानो नाराचैर्वृष्टिवेगैरिवाऽचलः ॥ २५ ॥
जघान पञ्चभिर्बाणैः पञ्चैवाऽतिरथान्बली ।
तान्दृष्ट्वा निहतान्वीरान्विचेलुर्नृपसत्तमाः ॥ २६ ॥
ततो युधिष्ठिरः क्रुद्धस्तवाऽनीकमशातयत् ।
मिषतः कुरुभयोनेस्तु पुत्राणां तव चाऽनघ ॥ २७ ॥
अम्बष्ठान्मालवाञ्छूरांस्त्रिगर्तान्सशिबीनपि ।
प्राहिणोन्मृत्युलोकाय क्रुद्धो युद्धे युधिष्ठिरः ॥ २८ ॥
अभीषाहाञ्छूरसेनान्बाह्लीकान्सवसातिकान् ।

छिपाने लगे। उस ही समय कर्णके भाई वृकरथने अपने तीक्ष्ण नाराच बाणोंसे भीमसेनके शरीरमें प्रहार किया; महाबली भीमसेनने उसी समय उसे मारडाला। तिसके अनन्तर पाण्डुपुत्र भीमसेनने तुम्हारे सालोंके बीच सात रथियोंका वध करके शतचन्द्रको भी मार डाला ॥ (२०–२३)

गवाक्ष, शरभ, विभु, सुभग और भानुदत्त ये युद्धविद्यामें निपुण शकुनिके पराक्रमी महारथी पांच भ्राता शतचन्द्र का मरना न सहके क्रोधपूर्वक भीमसेन की ओर दौडे; और अपने तीक्ष्ण बाणोंके समूहसे भीमसेनको पीडित करने लगे। जैसे बलवान् वृषभ जलकी वर्षासे पीडित होता है वैसे ही पराक्रमी भीमसेनने उन शूरवीर योद्धाओंके बाणोंकी चोटसे पीडित होकर पांच बाणोंसे उन पांच महारथियोंका वध किया। महाराज ! सम्पूर्ण राजा लोग उन शूरवीरोंको मरते देख भयभीत होगये ॥ (२३–२६)

उसी समय राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य और दुर्योधनके सम्मुखमें ही तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका नाश करने लगे। वह क्रुद्ध होकर अम्बष्ठ, मालव, त्रिगर्त्त और शिबिदेशीय योद्धाओंका वध करके उन्हें यमपुरीमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकृत्य पृथिवीं राजा चक्रे शोणितकर्दमाम् ॥ २९ ॥
यौधेयान्मालवान्राजन्मद्रकाणां गणान्युधि ।
प्राहिणोन्मृत्युलोकाय शूरान्बाणैर्युधिष्ठिरः ॥ ३० ॥
हताऽऽहरत गृह्णीत विध्यत व्यवकृन्तत ।
इत्यासीत्तुमुलः शब्दो युधिष्ठिररथं प्रति ॥ ३१ ॥
सैन्यानि द्रावयन्तं तं द्रोणो दृष्ट्वा युधिष्ठिरम् ।
चोदितस्तव पुत्रेण सायकैरभ्यवाकिरत् ॥ ३२ ॥
द्रोणस्तु परमक्रुद्धो वायव्यास्त्रेण पार्थिवम् ।
विव्याध सोऽपि तद्दिव्यमस्त्रमस्त्रेण जघ्निवान्॥ ३३ ॥
तस्मिन्विनिहते चास्त्रे भारद्वाजो युधिष्ठिरे ।
वारुणं याम्यमाग्नेयं त्वाष्ट्रं सावित्रमेव च ॥ ३४ ॥
चिक्षेप परमक्रुद्धो जिघांसुः पाण्डुनन्दनम् ।
क्षिप्तानि क्षिप्यमाणानि तानि चास्त्राणि धर्मजः॥३५॥
जघानाऽस्त्रैर्महाबाहुः कुम्भयोनेरविस्मयन् ।
सत्यां चिकीर्षमाणस्तु प्रतिज्ञां कुम्भसम्भवः ॥ ३६ ॥
प्रादुश्चक्रेऽस्त्रमैन्द्रं वै प्राजापत्यं च भारत ।

भेजने लगे॥ उस समय राजा युधिष्ठिरने अभीषाह, शूरसेन बाह्लिक और वसातिदेशीय वीरोंको अपने अस्त्रोंसे खण्ड खण्ड करके उनके रुधिरसे रणभूमिको पूरित कर दिया ॥ और यौधेय मालव और मद्रदेशीय शूरवीरोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंके प्रहारसे प्राण रहित करके यमलोकमें भेजा ॥ (२७-३०)

महाराज ! उस समय युधिष्ठिरके रथके निकट 'पकडो, मारो, काटो !' इसी प्रकार महाघोर तुमुल शब्द सुनाई देने लगा ॥ परन्तु द्रोणाचार्य राजा युधिष्ठिरको सेनाको तितर बितर करते देख दुर्योधनकी आज्ञासे अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें छिपाने लगे ॥ तिसके अनन्तर द्रोणाचार्यने अत्यन्त क्रुद्ध होकर वायव्यास्त्र चलाया, युधिष्ठिरने उसे दिव्यास्त्रसे निवारण किया ॥ (३१-३३)

वायव्यास्त्रको निष्फल होते देख द्रोणाचार्यने कुपित होकर युधिष्ठिरके वधकी अभिलाषा करके वारुणास्त्र, याम्य, आग्नेय, त्वाष्ट्र और सावित्र इत्यादि बहुतसे दिव्य अस्त्रोंको प्रकट किया। महाराज ! भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको महाबाहु धर्मपुत्र युधिष्ठिर निर्भयताके सहित अपने दिव्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिघांसुर्धर्मतनयं तव पुत्रहिते रतः ॥ ३७ ॥
पतिः कुरूणां गजसिंहगामी विशालवक्षाः पृथुलोहिताक्षः ।
प्रादुश्चकाराऽस्त्रमहीनतेजा माहेन्द्रमन्यत्स जघान तेन ॥ ३८ ॥
विहन्यमानेष्वस्त्रेषु द्रोणः क्रोधसमन्वितः ।
युधिष्ठिरवधं प्रेप्सुर्ब्रह्मास्त्रमुदैरयत् ॥ ३९ ॥
ततो नाऽज्ञायिषं किञ्चिद्घोरेण तमसाऽऽवृते ।
सर्वभूतानि च परं त्रासं जग्मुर्महीपते ॥ ४० ॥
ब्रह्मास्त्रमुद्यतं दृष्ट्वा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
ब्रह्मास्त्रेणैव राजेन्द्र तदस्त्रं प्रत्यवारयत् ॥ ४१ ॥
ततः सैनिकमुख्यास्ते प्रशशंसुर्नरर्षभौ ।
द्रोणपार्थौ महेष्वासौ सर्वयुद्धविशारदौ ॥ ४२ ॥
ततः प्रमुच्य कौन्तेयं द्रोणो द्रुपदवाहिनीम् ।
व्यधमत्क्रोधताम्राक्षो वायव्यास्त्रेण भारत ॥ ४३ ॥
ते हन्यमाना द्रोणेन पञ्चालाः प्राद्रवन्भयात् ।

अस्त्रोंसे निवारण करने लगे । ३४-३६

तब तुम्हारे पुत्रके हितकी इच्छा करनेवाले द्रोणाचार्यने धर्मपुत्र युधिष्ठिर के वधकी इच्छा तथा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेकी अभिलाषासे प्राजापत्य और ऐन्द्र अस्त्र प्रकट किया । मतवारे हाथी और सिंहके समान पराक्रमी, लाल नेत्रसे युक्त, महातेजस्वी युधिष्ठिर ने अत्यन्त प्रचण्ड माहेन्द्रास्त्र प्रकट करके द्रोणाचार्यके चलाये हुए उन दोनों दिव्य अस्त्रोंको निवारण किया ॥ इसी भांति जब बार बार सम्पूर्ण अस्त्र निष्फल होने लगे तब द्रोणाचार्यने महाकोप करके युधिष्ठिरके वधकी अभिलाषसे ब्रह्मास्त्र चलाया ॥ (३६–३९)

महाराज ! ब्रह्मास्त्र छूटने पर सम्पूर्ण दिशाओंमें इस प्रकार महाघोर अन्धकार हो गया, कि उस समयमें हमलोगोंको कुछ भी मालूम नहीं होता था और उस अस्त्रके तेजसे सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होगये ॥ परन्तु कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने ब्रह्मास्त्र चलाकर ही द्रोणाचार्यके चलाये हुए ब्रह्मास्त्रको निवारण किया ॥ उससे सेनाके योद्धालोग सम्पूर्ण युद्धविद्या जाननेवाले धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी पुरुष श्रेष्ठ द्रोणाचार्य और युधिष्ठिरकी प्रशंसा करने लगे ॥ (४०–४२)

तिसके अनन्तर द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को त्याग के क्रोधपूर्वक वायव्यास्त्र चलाकर पाञ्चाल सेनाके योद्धाओंको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्यतो भीमसेनस्य पार्थस्य च महात्मनः ॥ ४४ ॥
ततः किरीटी भीमश्च सहसा संन्यवर्तताम् ।
महद्भ्यां रथवंशाभ्यां परिगृह्य बलं तदा ॥ ४५ ॥
बीभत्सुर्दक्षिणं पार्श्वमुत्तरं च वृकोदरः ।
भारद्वाजं शरौघाभ्यां महद्भ्यामभ्यवर्षताम् ॥ ४६ ॥
केकयाः सृञ्जयाश्चैव पञ्चालाश्च महौजसः ।
अन्वगच्छन्महाराज मत्स्याश्च सह सात्वतैः ॥ ४७ ॥
ततः सा भारती सेना वध्यमाना किरीटिना ।
तमसा निद्रया चैव पुनरेव व्यदीर्यत ॥ ४८ ॥
द्रोणेन वार्यमाणास्ते स्वयं तव सुतेन च ।
नाऽशक्नुवन्त महाराज योधा वारयितुं तदा॥ ४९ ॥ ६९८९

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे द्रोणयुधिष्ठिरयुद्धे सप्तपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५७ ॥

सञ्जय उवाच— उदीर्यमाणं तद् दृष्ट्वा पाण्डवानां महद्बलम् ।
अविषह्यं च मन्वानः कर्णं दुर्योधनोऽब्रवीत् ॥ १ ॥

विद्ध करने लगे ॥ पाञ्चाल योद्धा द्रोणाचार्यके अस्त्रोंसे पीडित होकर महात्मा भीमसेन और अर्जुनके सम्मुखमें ही रणभूमिसे भागने लगे ॥ अपनी ओरके योद्धाओंको भागते देख, पराक्रमी भीमसेन और किरीटमाली अर्जुन तुम्हारी सेनाके उत्तर और दक्षिण भागसे आक्रमण करके द्रोणाचार्यकी ओर दौडे और उनके ऊपर लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ (४३–४६)

उस ही समय महातेजस्वी पाञ्चाल, सृञ्जय और मत्स्यदेशीय सेनाके योद्धा लोग सात्यकिकी सेनाके योद्धाओंके सङ्ग मिलकर भीमसेन और अर्जुनके अनुगामी हुए ॥ कुरुसेनाके योद्धा लोग पहिलेसे ही निद्रा और अन्धकारसे व्याकुल थे, उसपर फिर अर्जुनके बाणोंसे पीडित होने लगे, अनन्तर कुरुसेनाके योद्धा छिन्न भिन्न होकर रणभूमिसे भागने लगे। उस समय उन योद्धाओंको द्रोणाचार्य और राजा दुर्योधन स्वयं भागनेसे निषेध करने लगे परन्तु किसी भांतिसे भी उन योद्धाओंको लौटानेमें समर्थ न हुए ॥ (४७—४९) [६९८९]

द्रोणपर्वमें एकसौ सतावन अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ अठावन अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज ! कुरुराज दुर्योधन पाण्डवोंकी महासेनाको वेगपूर्वक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयं स काल सम्प्राप्तो मित्राणां मित्रवत्सल ।
त्रायस्व समरे कर्ण सर्वान्योधान्महारथान् ॥ २ ॥
पञ्चालैर्मत्स्यकैकेयैः पाण्डवैश्च महारथैः ।
वृतान्समन्तात्संक्रुद्धैर्निःश्वसद्भिरिवोरगैः ॥ ३ ॥
एते नदन्ति संहृष्टाः पाण्डवा जितकाशिनः ।
शक्रोपमाश्च बहवः पञ्चालानां रथव्रजाः ॥ ४ ॥

कर्ण उवाच— परित्रातुमिह प्राप्तो यदि पार्थं पुरन्दरः ।
तमप्याशु पराजित्य ततो हन्तास्मि पाण्डवम् ॥ ५ ॥
सत्यं ते प्रतिजानामि समाश्वसिहि भारत ।
हन्तास्मि पाण्डुतनयान्पञ्चालांश्च समागतान् ॥ ६ ॥
जयं ते प्रतिदास्यामि वासवस्येव पावकिः ।
प्रियं तव मया कार्यमिति जीवामि पार्थिव ॥ ७ ॥
सर्वेषामेव पार्थानां फाल्गुनो बलवत्तरः ।

बढी आती देख तथा पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंको निवारण करनेमें असमर्थ होकर कर्णसे बोले, हे मित्रवत्सल कर्ण ! मनुष्य जिस कार्यके वास्ते मित्रकी इच्छा करते हैं इस समय मित्रोंके मित्रता दिखानेका यही समय उपस्थित हुआ है । यह देखो मेरी ओरके महारथी योद्धा लोग बार बार लम्बी सांस छोडनेवाले क्रोधी सर्पके समान पाञ्चाल, केकय, मत्स्य और पाण्डवोंकी सेनाके महारथ योद्धाओंके बीचमें घिर गये हैं इससे तुम उन लोगोंको इस विपतसे उबारो ॥ ये सम्पूर्ण इन्द्रके समान पराक्रमी बहुतेरे पाञ्चालदेशीय रथी योद्धा और जयकी अभिलाष करनेवाले पाण्डव लोग अत्यन्त ही हर्षपूर्वक सिंहनाद कर रहे हैं ॥ १-४

दुर्योधनके वचनको सुनकर कर्ण बोले, महाराज ! पृथापुत्र अर्जुनकी सहायता करनेके वास्ते यदि इन्द्र स्वयं आके युद्धभूमिमें उपस्थित होंगे, तो मैं उन्हें भी पराजित करके अर्जुनका वध करूंगा । हे राजेन्द्र ! मैं तुम्हारे निकट सत्य प्रतिज्ञा करता हूं, कि इस रणभूमिमें इकट्ठे हुए पाण्डव और पञ्चालसेनाके योद्धाओंका नाश करूंगा, इससे तुम धीरज धरो ॥ हे राजन् ! जैसे अग्निसे उत्पन्न हुए स्वामिकार्त्तिकने इन्द्रकी विजयके वास्ते प्रतिज्ञा किया था, वैसे ही मैं भी तुम्हारी विजयके निमित्त प्रतिज्ञा करता हूं । अधिक क्या कहूं, मैं तुम्हारे प्रिय कार्यको पूर्ण करनेहीके वास्ते अब तक जीवित हूं ॥ (५-७)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्याऽमोघां विमोक्ष्यामि शक्तिं शक्रविनिर्मिताम् ॥ ८ ॥
तस्मिन्हते महेष्वासे भ्रातरस्तस्य मानद ।
तव वश्या भविष्यन्ति वनं यास्यन्ति वा पुनः ॥ ९ ॥
मयि जीवति कौरव्य विषादं मा कृथाः क्वचित् ।
अहं जेष्यामि समरे सहितान्सर्वपाण्डवान् ॥ १० ॥
पञ्चालान्केकयांश्चैव वृष्णींश्चाऽपि समागतान् ।
बाणौघैः शकलीकृत्य तव दास्यामि मेदिनीम् ॥ ११ ॥
सञ्जय उवाच— एवं ब्रुवाणं कर्णं तु कृपः शारद्वतोऽब्रवीत् ।
सम्यञ्चिव महाबाहुः सूतपुत्रमिदं वचः ॥ १२ ॥
शोभनं शोभनं कर्ण सनाथः कुरुपुङ्गवः ।
त्वया नाथेन राधेय वचसा यदि सिध्यति ॥ १३ ॥
बहुशः कत्थसे कर्ण कौरवस्य समीपतः ।
न तु ते विक्रमः कश्चिद् दृश्यते फलमेव वा ॥ १४ ॥
समागमः पाण्डुसुतैर्दृष्टस्ते बहुशो युधि ।

हे मानप्रद ! देखिये कुन्तीपुत्रोंके बीच अर्जुन ही सबसे अधिक पराक्रमी है । इससे मैं इन्द्रकी अमोघशक्ति उसी के ऊपर छोड़ूंगा । क्योंकि धनुर्धारियों में अग्रणी अर्जुनके मारे जाने पर उसके भ्राता लोग या तो तुम्हारे वशमें हो जावेंगे अथवा फिर वनवासी होंगे । मेरे जीवित रहते आप दुखी न होइये मैं अवश्य ही युद्धभूमिमें सम्पूर्ण सेना के सहित इकट्ठे हुए पाण्डवोंको पराजित करूंगा; और पाञ्चाल, केकय तथा वृष्णिवंशियोंको अपने बाणोंसे खण्ड खण्ड करके यह सम्पूर्ण पृथ्वी तुम्हें प्रदान करूंगा ॥ (८—११)

सञ्जय बोले महाराज ! सूतपुत्र कर्णने जब ऐसे वचन कहे तब शरद्वत-पुत्र महाबाहु कृपाचार्य मानों कर्णकी अवज्ञा करते हुए यह वचन बोले, हे कर्ण ! वाह वाः क्या कहना है यदि वचनसे ही कार्य सिद्ध होजावे तो अकेले तुम्हारी सहायतासे ही कुरुराज दुर्योधन सहाय सम्पन्न हुए हैं इस में सन्देह नहीं है । तुम सदा ही कुरुराज दुर्योधनके समीप इसी भांति अपनी बढाई किया करते हो; परन्तु किसी समय भी तुम्हारा वैसा पराक्रम या वचन के अनुसार कोई फल नहीं दीख पडते ॥ (१२—१४)

हे सूतपुत्र ! रणभूमिमें पाण्डुपुत्रोंके सङ्ग तुम्हारा कई बार युद्ध हुआ है परन्तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वत्र निर्जितश्चाऽसि पाण्डवैः सूतनन्दन ॥ १५ ॥
ह्रियमाणे तदा कर्ण गन्धर्वैर्धृतराष्ट्रजे ।
तदाऽयुध्यन्त सैन्यानि त्वमेकोऽग्रेऽपलायिथाः ॥१६॥
विराटनगरे चापि समेताः सर्वकौरवाः ।
पार्थेन निर्जिता युद्धे त्वं च कर्ण सहानुजः ॥ १७ ॥
एकस्याऽप्यसमर्थस्त्वं फाल्गुनस्य रणाजिरे ।
कथमुत्सहसे जेतुं सकृष्णान्सर्वपाण्डवान् ॥ १८ ॥
अब्रुवन्कर्ण युध्यस्व कत्थसे बहु सूतज ।
अनुक्त्वा विक्रमेद्यस्तु तद्वै सत्पुरुषव्रतम् ॥ १९ ॥
गर्जित्वा सूतपुत्र त्वं शारदाभ्रमिवाऽजलम् ।
निष्फलो दृश्यसे कर्ण तच्च राजा न बुध्यते ॥ २० ॥
तावद्गर्जस्व राधेय यावत्पार्थं न पश्यसि ।
आरात्पार्थं हि ते दृष्ट्वा दुर्लभं गर्जितं पुनः ॥ २१ ॥
त्वमनासाद्य तान्बाणान्फाल्गुनस्य विगर्जसि ।
पार्थसायकविद्धस्य दुर्लभं गर्जितं तव ॥ २२ ॥

तुम ही हर एक युद्ध में पराजित हुए हो ॥ हे कर्ण ! जिस समय धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधनको गन्धर्वोंने हरण किया था उस समय सम्पूर्ण सेनाके पुरुष युद्ध कर रहे थे तौभी तुम सबसे पहिले ही रण-भूमिसे भागे थे ॥ इसके अतिरिक्त विराटनगरमें सम्पूर्ण सेनाके सहित इकट्ठे हुए कौरव लोग और अपने भाईयोंके सहित तुम भी अर्जुनके सम्मुखसे पराजित हुए थे ॥ युद्धभूमि में जब तुम अकेले अर्जुनसे ही युद्ध करनेमें असमर्थ हो तब कृष्णके सहित इकट्ठे हुए सम्पूर्ण सेनासमेत पाण्डवोंको पराजित करनेके निमित्त कैसे उत्साह कर रहे हो ? (१५—१८)

हे सूतपुत्र ! तुम बार बार अपनी बढाई करते हो परन्तु, जो मनुष्य कुछ भी न कहके केवल समय पर पराक्रम प्रकाशित करते हैं उनके वही कार्य सत्पुरुषोंके योग्य व्रत कहके गिने जाते हैं इससे तुम वागाडम्बर त्यागके युद्ध करो ॥ हे सूतपुत्र! तुम जलरहित शरद् कालके बादलकी भांति वृथा गर्जन करके जनसमाज के बीच हास्यास्पद हो रहे हो, परन्तु राजा दुर्योधन इस बातको नहीं समझते हैं ॥ हे कर्ण ! जो हो, तुम जबतक अर्जुनको नहीं देखते हो तभीतक गर्जना कर लो; क्योंकि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहुभिः क्षत्रियाः शूरा वाग्भिः शूरा द्विजातयः।
धनुषा फाल्गुनः शूरः कर्णः शूरो मनोरथैः ॥ २३ ॥
तोषितो येन रुद्रोऽपि कः पार्थं प्रतिघातयेत्।
एवं संरुषितस्तेन तदा शारद्वतेन ह ॥ २४ ॥
कर्णः प्रहर्तां श्रेष्ठः कृपं वाक्यमथाऽब्रवीत्।
शूरा गर्जन्ति सततं प्रावृषीव बलाहकाः ॥ २५ ॥
फलं चाऽऽशु प्रयच्छन्ति बीजमुप्तमृताविव।
दोषमत्र न पश्यामि शूराणां रणमूर्धनि ॥ २६ ॥
तत्तद्विकत्थमानानां भारं चोद्वहतां मृधे।
यं भारं पुरुषो वोढुं मनसा हि व्यवस्यति ॥ २७ ॥
दैवमस्य ध्रुवं तत्र सहाय्यायोपपद्यते।
व्यवसायद्वितीयोऽहं मनसा भारमुद्वहन् ॥ २८ ॥
हत्वा पाण्डुसुतानाजौ सकृष्णान्सहसात्वतान्।
गर्जामि यद्यहं विप्र तव किं तत्र नश्यति ॥ २९ ॥

अर्जुनको समीपमें देखकर ऐसा गर्जना दुर्लभ हो जावेगा ॥ (१९—२१)

जबतक तुम्हारा अर्जुन के बाणोंके सङ्ग सामना नहीं होता है तभीतक ऐसा गर्जना सुन पडता है अर्जुन के बाणोंसे विद्ध होने पर ऐसा गर्जना दुर्लभ हो जावेगा ॥ क्षत्रिय पुरुष अपने भुजाके बल, ब्राह्मण वाक्यबल और अर्जुन अपने धनुषके बलसे शूरवीर कहके विख्यात हैं, परन्तु कर्ण केवल एक मात्र मनोरथसे ही शूरवीर बनते हैं ॥ अरे ! जिस अर्जुनने साक्षात् भगवान् रुद्रको अपने पराक्रमसे संतुष्ट किया था, उस अर्जुनको मारनेमें कौन समर्थ है ? (२२—२४)

महाराज ! योद्धाओं में श्रेष्ठ कर्णने शरद्वत्त पुत्र कृपाचार्यके ऐसे अवज्ञासूचक वचनोंको सुनके अत्यन्त क्रुद्ध होकर उन्हें यह उत्तर दिया ॥ शूरवीर पुरुष जैसे वर्षाकालके जलयुक्त बादलों की भांति गर्जते हैं, वैसे ही यथा उचित समय में रोपित हुए बीजकी भांति शीघ्र ही फल भी प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त युद्धभूमिके बीच शूरवीर पुरुष वचनसे पराक्रम प्रकाशित कर जैसा भार उठानेका उत्साह करते हैं, अवश्य ही दैव उस विषयमें उनकी सहायता करता है। (२४-२८)

हे विप्र ! मैं भी यदि इस युद्धका भार उठाकर युद्धभूमि के बीच कृष्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृथा शूरा न गर्जन्ति शारदा इव तोयदाः ।
सामर्थ्यमात्मनो ज्ञात्वा ततो गर्जन्ति पण्डिताः ॥३०॥
सोऽहमद्य रणे यत्तौ सहितौ कृष्णपाण्डवौ ।
उत्सहे मनसा जेतुं ततो गर्जामि गौतम ॥ ३१ ॥
पश्य त्वं गर्जितस्याऽस्य फलं मे विप्र सानुगान् ।
हत्वा पाण्डुसुतानाजौ सहकृष्णान्ससात्वतान् ॥३२॥
दुर्योधनाय दास्यामि पृथिवीं हतकण्टकाम् ।
कृप उवाच— मनोरथप्रलापा मे न ग्राह्यास्तव सूतज ॥ ३३ ॥
सदा क्षिपसि वै कृष्णौ धर्मराजं च पाण्डवम् ।
ध्रुवस्तत्र जयः कर्ण यत्र युद्धविशारदौ ॥ ३४ ॥
देवगन्धर्वयक्षाणां मनुष्योरगरक्षसाम् ।
दंशितानामपि रणे अजेयौ कृष्णपाण्डवौ ॥ ३५ ॥
ब्रह्मण्यः सत्यवाग्दान्तो गुरुदैवतपूजकः ।

और सम्पूर्ण सेनाके सहित पाण्डवों को पराजित करने तथा उनके नाश करनेके वास्ते उत्साही होकर गर्जन करता हूं, तो उसमें तुम्हारी कौनसी नुकसानी है? और तुम यह भी समझ रक्खो कि बुद्धिमान् शूरवीर पुरुष कभी भी शरद्कालके बादलकी भांति वृथा गर्जन नहीं करते; वह अपनी सामर्थ का विचार कर के ही गर्जना किया करते हैं!! (२८–३०)

हे कृपाचार्य ! इससे मैं आज यत्नपरायण कृष्णकी सहायतासे युक्त अर्जुन को पराजित करूंगा, ऐसा ही निश्चय करके उत्साह पूर्वक गर्ज रहा हूं ॥ हे विप्र ! इस समय तुम मेरे गर्जने का फल प्रत्यक्ष देखो; आज मैं युद्धभूमिमें अनुयाइयोंके सहित तथा कृष्णकी सहायतासे युक्त पाण्डु पुत्रोंको मारकर राजा दुर्योधनको निष्कण्टक पृथ्वीका राज्य प्रदान करूंगा । (३१–३३)

महाराज ! कर्णके ऐसे अभिमानयुक्त वचनोंको सुनकर कृपाचार्य बोले, हे सूतपुत्र ! तुम जो धर्मराज युधिष्ठिर और कृष्ण अर्जुनको पराजित करनेकी इच्छा करते हो, उस तुम्हारे व्यर्थ मनोरथ तथा प्रलापयुक्त वचनों को मैं नहीं मान सकता । तुम इस बातको अपने चित्तमें भली भांतिसे जान रक्खो कि युद्धभूमिमें इकट्ठे हुए देवता यक्ष, गन्धर्व, मनुष्य, सर्प और राक्षसोंसे भी अजेय सम्पूर्ण युद्धविद्या जाननेवाले कृष्ण अर्जुन जिस सेनामें स्थित हैं उसी ओरकी जय होगी । (३३—३५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्यं धर्मरतश्चैव कृतास्त्रश्च विशेषतः ॥ ३६ ॥
धृतिमांश्च कृतज्ञश्च धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः।
भ्रातरश्चाऽस्य बलिनः सर्वास्त्रेषु कृतश्रमाः ॥ ३७ ॥
गुरुवृत्तिरताः प्राज्ञा धर्मनित्या यशस्विनः।
सम्बन्धिनश्चेन्द्रवीर्याः स्वनुरक्ताः प्रहारिणः ॥ ३८ ॥
धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च दौर्मुखिर्जनमेजयः।
चन्द्रसेनो रुद्रसेनो कीर्तिधर्मा ध्रुवोऽधरः ॥ ३९ ॥
वसुचन्द्रो दामचन्द्रः सिंहचन्द्रः सुतेजनः।
द्रुपदस्य तथा पुत्रा द्रुपदश्च महास्त्रवित् ॥ ४० ॥
येषामर्थाय संयत्तो मत्स्यराजः सहानुजः।
शतानीकः सूर्यदत्तः श्रुतानीकः श्रुतध्वजः ॥ ४१ ॥
बलानीको जयानीको जयाश्वो रथवाहनः।
चन्द्रोदयः समरथो विराटभ्रातरः शुभाः ॥ ४२ ॥
यमौ च द्रौपदेयाश्च राक्षसश्च घटोत्कचः।
येषामर्थाय युध्यन्ते न तेषां विद्यते क्षयः ॥ ४३ ॥
एते चाऽन्ये च बहवो गणाः पाण्डुसुतस्य वै।

विशेष करके धर्मपुत्र युधिष्ठिर ब्राह्मणोंमें निष्ठावान्, सत्यवादी, जितेन्द्रिय गुरु और देवताओंकी पूजा करनेवाला, सदा ही धर्मके कार्योंमें रत, कृतास्त्र, बुद्धिमान् और कृतज्ञ है, उसके सहोदर भाई भी कृतास्त्र, बलवान्, यशस्वी, गुरुकी आज्ञामें चलने वाले, बुद्धिमान् और धर्मात्मा हैं। (३६—३८)

इसके अतिरिक्त उन लोगोंके सम्बन्धी महा अस्त्रोंके जाननेवाले राजा द्रुपद तथा उनके पुत्र धृष्टद्युम्न, शिखण्डि, द्रौर्मुखि, जनमेजय, चन्द्रसेन, भद्रसेन, कीर्तिवर्मा, ध्रुव, अधर, वसुचन्द्र, दामचन्द्र, सिंहचन्द्र और सुतेजन, ये सम्पूर्ण वीर इन्द्रके समान पराक्रमी शस्त्र चलानेमें निपुण और युधिष्ठिर के अनुरक्त हैं। (३८—४०)

इसके अतिरिक्त शतानीक, सूर्यदत्त, श्रुतानीक, श्रुतध्वज, बलानीक, जयानीक, जयाश्व, रथवाहन, चन्द्रोदय, और समरथ, इन सम्पूर्ण कृतविद्य भाईयोंकी सहायतासे युक्त मत्स्यराज विराट जिसकी प्रयोजनसिद्धिके वास्ते यत्नवान् होकर रणभूमिमें स्थित हैं; और पराक्रमी नकुल, सहदेव, द्रौपदी के पांचों पुत्र, घटोत्कच तथा इनके अतिरिक्त और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामं खलु जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम् ॥ ४४ ॥
सयक्षराक्षसगणं सभूतभुजगद्विपम् ।
निःशेषमस्त्रवीर्येण कुर्याते भीमफाल्गुनौ ॥ ४५ ॥
युधिष्ठिरश्च पृथिवीं निर्दहेद्घोरचक्षुषा ।
अप्रमेयबलः शौरिर्येषामर्थे च दंशितः ॥ ४६ ॥
कथं तान्संयुगे कर्ण जेतुमुत्सहसे परान् ।
महानपनयस्त्वेष नित्यं हि तव सूतज ॥ ४७ ॥
यस्त्वमुत्सहसे योद्धुं समरे शौरिणा सह ।

सञ्जय उवाच— एवमुक्तस्तु राधेयः प्रहसन्भरतर्षभ ॥ ४८ ॥
अब्रवीच्च तदा कर्णो गुरुं शारद्वतं कृपम् ।
सत्यमुक्तं त्वया ब्रह्मन्पाण्डवान्प्रति यद्वचः ॥ ४९ ॥
एते चाऽन्ये च बहवो गुणाः पाण्डुसुतेषु वै ।
अजय्याश्च रणे पार्था देवैरपि सवासवैः ॥ ५० ॥
स दैत्ययक्षगन्धर्वैः पिशाचोरगराक्षसैः ।

भी बहुतेरे आत्मीय सुहृद् पुरुष जिसके वास्ते युद्ध कर रहे हैं उनका किसी प्रकार से भी नाश नहीं हो सकता । ४१-४४

अधिक क्या कहूं; देवता, मनुष्य, यक्ष, राक्षस, भूत, हाथी और सर्प आदि प्राणियोंसे युक्त इस सम्पूर्ण संसारको अकेले भीमसेन और अर्जुन अपने भुजबलके प्रभावसे नष्ट कर सकते हैं ॥ और राजा युधिष्ठिर भी अपनी कोप दृष्टिसे इस सम्पूर्ण जगत्को जलाने में समर्थ हैं । हे कर्ण ! चाहे जो हो, अत्यन्त बली यदुकुल शिरोमणि कृष्ण जिस अर्जुनकी रक्षाके वास्ते सज्जित होकर रणभूमिमें स्थित हैं तुम वैसे पराक्रमी शत्रुको युद्धभूमिमें पराजित करने के वास्ते कैसे उत्साह कर रहे हो ? हे कर्ण ! तुम जो सदा सर्वदा कृष्ण और अर्जुनके सङ्ग युद्ध करनेका उत्साह किया करते हो वह तुम्हारे वास्ते महा अनर्थ का विषय मालूम होरहा है । ४४-४८

सञ्जय बोले, महाराज ! राधापुत्र कर्णने गुरु शारद्वत कृपाचार्यके ऐसे वचनोंको सुन हंसकर उत्तर दिया । हे ब्राह्मण ! पाण्डवोंके विषयमें तुमने जो कुछ वचन कहे, वह सम्पूर्ण सत्य हैं; ऐसा क्या, वे लोग तुम्हारे कहे हुए वचनोंके अतिरिक्त और अनेक गुणोंसे युक्त हैं । यद्यपि पृथापुत्र यक्ष गन्धर्व पिशाच सर्प राक्षस असुर और देवतोंके सहित इन्द्रसे भी अजेय हैं; तौ भी मैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथापि पार्थाञ्जेष्यामि शक्त्या वासवदत्तया ॥ ५१ ॥
मम ह्यमोघा दत्तेयं शक्तिः शक्रेण वै द्विज ।
एतया निहनिष्यामि सव्यसाचिनमाहवे ॥ ५२ ॥
हते तु पाण्डवे कृष्णे भ्रातरश्चास्य सोदराः ।
अनर्जुना न शक्ष्यन्ति महीं भोक्तुं कथञ्चन ॥ ५३ ॥
तेषु नष्टेषु सर्वेषु पृथिवीयं ससागरा ।
अयत्नात्कौरवेन्द्रस्य वशे स्थास्यति गौतम ॥ ५४ ॥
सुनीतैरिह सर्वार्थाः सिध्यन्ते नाऽत्र संशयः ।
एतमर्थमहं ज्ञात्वा ततो गर्जामि गौतम ॥ ५५ ॥
त्वं तु विप्रश्च वृद्धश्च अशक्तश्चाऽपि संयुगे ।
कृतस्नेहश्च पार्थेषु मोहान्मामवमन्यसे ॥ ५६ ॥
यद्येवं वक्ष्यसे भूयो ममाऽप्रियमिह द्विज ।
ततस्ते खड्गमुद्यम्य जिह्वां छेत्स्यामि दुर्मते ॥ ५७ ॥
यद्यापि पाण्डवान्विप्र स्तोतुमिच्छसि संयुगे ।
भीषयन्सर्वसैन्यानि कौरवेयाणि दुर्मते ॥ ५८ ॥

उन लोगोंको इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिसे रणभूमिमें पराजित करूंगा, हे विप्र ! मैं इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिसे अवश्य ही रणभूमिके बीच अर्जुनका वध करूंगा ॥ (४८—५२)

पाण्डुपुत्र अर्जुनके मरने पर उसके सहोदर भाई और श्रीकृष्ण किसी प्रकार से भी अर्जुन रहित पृथ्वी को भोगने में समर्थ न होसकेंगे ॥ हे गोतमपुत्र ! यदि कृष्ण और पाण्डवलोग इसी भांतिसे नष्ट होजावें तो विना यत्नके ही यह सम्पूर्ण पृथ्वी कुरुराज दुर्योधनके वशमें होजावेगी ॥ देखो इस संसारमें सुनीतिके अवलम्बसे समस्त कार्योंकी सिद्धि होती है इसमें कुछ सन्देह नहीं है, मैं इस विषयको जान कर ही गर्ज रहा हूं ॥ (५३-५५)

परन्तु तुम एक तो ब्राह्मण, उस पर भी बूढे, युद्ध करनेमें असमर्थ हो और पाण्डवोंके ऊपर प्रीति भी करते हो । इससे उस ही अज्ञानताके कारण तुम मुझे इस भांतिसे अवमानित कर रहे हो ॥ हे दुष्टबुद्धिवाले ब्राह्मण ! यदि फिर कभी मेरे समीप ऐसे अप्रिय वचनोंका प्रयोग करोगे, तो मैं अपनी इस तलवारसे तुम्हारी जीभ काट लूंगा ॥ हे नीच बुद्धिवाले ब्राह्मण ! तुम जो इस सम्पूर्ण कुरुसेनाको भय भीत करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्रापि शृणु मे वाक्यं यथावद् ब्रुवतो द्विज ।
दुर्योधनश्च द्रोणश्च शकुनिर्दुर्मुखो जयः ॥ ५९ ॥
दुःशासनो वृषसेनो मद्रराजस्त्वमेव च ।
सोमदत्तश्च भूरिश्च तथा द्रौणिर्विविंशतिः ॥ ६० ॥
तिष्ठेयुर्दंशिता यत्र सर्वे युद्धविशारदाः ।
जयेदेतान्नरः को नु शक्रतुल्यबलोऽप्यरिः ॥ ६१ ॥
शूराश्च हि कृतास्त्राश्च बलिनः स्वर्गलिप्सवः ।
धर्मज्ञा युद्धकुशला हन्युर्युद्धे सुरानपि ॥ ६२ ॥
एते स्थास्यन्ति संग्रामे पाण्डवानां वधार्थिनः ।
जयमाकांक्षमाणा हि कौरवेयस्य दंशिताः ॥ ६३ ॥
दैवायत्तमहं मन्ये जयं सुबलिनामपि ।
यत्र भीष्मो महाबाहुः शेते शरशताचितः ॥ ६४ ॥
विकर्णश्चित्रसेनश्च बाह्लिकोऽथ जयद्रथः ।
भूरिश्रवा जयश्चैव जलसन्धः सुदक्षिणः ॥ ६५ ॥

पाण्डवोंकी स्तुति कर रहे हो, उस विषयमें भी मैं जो कुछ वचन कहता हूं उसे सुनो । (५६–५९)

तुम, कुरुराज दुर्योधन, द्रोणाचार्य, शकुनि, दुर्मुख, जय, दुःशासन, वृषसेन, मद्रराज शल्य, सोमदत्त, भूरि, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा और विविंशति; ये सब युद्धविद्या जाननेवाले शूरवीर जिस स्थान पर इकट्ठे होकर व्यूहबद्ध सेनाके सहित रणभूमिमें स्थित रहें; उस स्थल पर शत्रुओंकी ओर इन्द्रके समान पराक्रमी पुरुष भी आवे तो क्या उसकी विजय हो सकेगी ? ये सब कोई शूर कृतास्त्र बलवान् धर्मात्मा और युद्ध करनेमें अत्यन्त निपुण हैं; ऐसा क्या यदि ये सबकोई मिल कर स्वर्गलोकके राज्य लेने की अभिलाषासे युद्ध करें तो सम्पूर्ण देवतोंके सहित इन्द्रको भी पराजित कर सकते हैं ॥ (५९–६२)

इससे ये सम्पूर्ण शूरवीर पुरुष व्यूहबद्ध कुरुसेनाके सहित दुर्योधनके विजय और पाण्डवोंके वधकी इच्छासे रणभूमिके बीच स्थित रहेंगे । परन्तु जिस स्थलमें महाबाहु भीष्म पितामह सौ सौ बाणोंके छिदे हुए शरीरसे युक्त होकर शरशय्या पर शयन कर रहे हैं, उस स्थान पर महाबलवान् होने पर भी मेरे विचारमें उनका विजय लाभ दैवके आधीन है ॥ हे अधम पुरुष ! युद्ध भूमिमें विकर्ण, चित्रसेन, बाह्लिक, जयद्रथ, भूरिश्रवा,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शलश्च रथिनां श्रेष्ठो भगदत्तश्च वीर्यवान् ।
एते चाऽन्ये च राजानो देवैरपि सुदुर्जयाः ॥ ६६ ॥
निहताः समरे शूराः पाण्डवैर्बलवत्तराः ।
किमन्यद्दैवसंयोगान्मन्यसे पुरुषाधम ॥ ६७ ॥
यांश्च तांस्तौषि सततं दुर्योधनरिपून्द्विज ।
तेषामपि हताः शूराः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ६८ ॥
क्षीयन्ते सर्वसैन्यानि कुरूणां पाण्डवैः सह ।
प्रभावं नाऽत्र पश्यामि पाण्डवानां कथञ्चन ॥ ६९ ॥
यस्तान्बलवतो नित्यं मन्यसे त्वं द्विजाधम ।
यतिष्येऽहं यथाशक्ति योद्धुं तैः सह संयुगे ।
दुर्योधनहितार्थाय जयो दैवे प्रतिष्ठितः ॥ ७० ॥ [७०५९]

इति श्रीमहाभारते० घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे कृपकर्णवाक्येऽष्टपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५८ ॥

सञ्जय उवाच-- तथा परुषितं दृष्ट्वा सूतपुत्रेण मातुलम् ।
खड्गमुद्यम्य वेगेन द्रौणिरभ्यपतद् द्रुतम् ॥ १ ॥
ततः परमसंक्रुद्धः सिंहो मत्तमिव द्विपम् ।

जय, जलसन्ध, सुदक्षिण, रथियोंमें मुख्य शल और पराक्रमी भगदत्त आदि महारथी और दूसरे भी बहुतसे महाबलवान् देवतोंसे भी अपराजित अनगिनत शूरवीर राजा लोग जब पाण्डवोंके हाथसे मारे गये तब दैवकी प्रतिकूलताके अतिरिक्त और तुम क्या समझ रहे हो? (६३-६७)

हे विप्र! तुम जो दुर्योधनके शत्रुओंकी सदा स्तुति करते रहते हो, इस समय देखो उन लोगोंके भी सैकडों तथा सहस्रों महाबलवान् शूरवीर मारे गये हैं॥ इससे पाण्डवोंकी ओरके शूरवीरोंके द्वारा जो अनगिनत कुरुसेनाके वीरोंका नाश हो रहा है उसमें मुझे पाण्डुपुत्रोंका कुछ भी प्रभाव नहीं दीख पडता है॥ चाहे जो हो, हे अधम ब्राह्मण! तुम जिन लोगोंको सदा सर्वदा बलवान् समझते रहते हो, मैं दुर्योधनके हितकी अभिलाषसे रणभूमिके बीच उन्हीं पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करनेमें अपनी शक्तिके अनुसार यत्न करूंगा; तब विजय होनी दैवके आधीन है॥ (६८-७०) [७०५९]

द्रोणपर्वमें एकसौ अठावन अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ उनसठ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोणपुत्र अश्वत्थामा अपने मामा कृपाचार्यको कर्णके वचनोंसे अवमानित होते देख मियानसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेक्षतः कुरुराजस्य द्रौणिः कर्णं समभ्ययात् ॥ २ ॥
अश्वत्थामोवाच- यदर्जुनगुणांस्तथ्यान्कीर्तयानं नराधम ।
शूरं द्वेषात्सुदुर्बुद्धे त्वं भर्त्सयसि मातुलम् ॥ ३ ॥
विकत्थमानः शौर्येण सर्वलोकधनुर्धरम् ।
दर्पोत्सेधगृहीतोऽद्य न कञ्चिद्गणयन्मृधे ॥ ४ ॥
क्व ते वीर्यं क्व चाऽस्त्राणि यं त्वां निर्जित्य संयुगे ।
गाण्डीवधन्वा हतवान्प्रेक्षतस्ते जयद्रथम् ॥ ५ ॥
येन साक्षान्महादेवो योधितः समरे पुरा ।
तमिच्छसि वृथा जेतुं सूताधम मनोरथैः ॥ ६ ॥
यं हि कृष्णेन सहितं सर्वशस्त्रभृतां वरम् ।
जेतुं न शक्ताः सहिताः सेन्द्रा अपि सुरासुराः ॥ ७ ॥
लोकैकवीरमजितमर्जुनं सूत संयुगे ।
किं पुनस्त्वं सुदुर्बुद्धे सहैभिर्वसुधाधिपैः ॥ ८ ॥

तलवार खींचकर कुरुराज दुर्योधनके सम्मुखमें ही इस प्रकार वेगपूर्वक कर्णकी ओर दौडे जैसे क्रोधी सिंह मतवारे हाथीकी ओर दौडता है ॥ (१-२)

अनन्तर सम्पूर्ण राजाओंके सम्मुखमें ही अश्वत्थामा इस प्रकारके वचन कहने लगे । अरे नीचबुद्धिवाले अधम पुरुष ! मेरे शूर मामाने अर्जुनके यथार्थ गुणोंका वर्णन किया है, तौ भी तू द्वेषसे युक्त होकर उनकी निन्दा कर रहा है ॥ तुम इस शूरता और अभिमानसे मतवारे होकर किसी की कुछ भी पर्वाह न करके इन सम्पूर्ण धनुर्धारियोंके सम्मुखमें ही अपनी बडाई कर रहे हो; परन्तु गाण्डीव धनुर्द्धारी अर्जुनने जब तुम्हें पराजित करके रणभूमिमें तुम्हारे सम्मुखमें ही जयद्रथका वध किया था उस समय तुम्हारा पराक्रम और अस्त्रोंका बल कहां गया था ? (३-५)

अरे सूतकुलकलङ्क ! पहिले जिस अर्जुनने महादेवके संग युद्ध किया था; उस अर्जुनको जो तुम जीतनेकी अभिलाषा करते हो वह तुम्हारे मनकी व्यर्थ कल्पना मात्र है ॥ रे नीचबुद्धि सूत ! जब कि सम्पूर्ण असुर और इन्द्र आदि देवता लोग भी इकट्ठे होकर सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कृष्णकी सहायतासे युक्त अर्जुनको पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं तब तुम क्या जगत्के सम्पूर्ण प्राणियोंसे अजेय अद्वितीय वीर अर्जुनको इन सम्पूर्ण राजाओंके सङ्ग मिलकर जीत सकते हो ? अरे नीचबुद्धिवाले कर्ण !

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ण पश्य सुदुर्बुद्धे तिष्ठेदानीं नराधम ।
एष तेऽद्य शिरः कायादुद्धरामि सुदुर्मते ॥ ९ ॥
सञ्जय उवाच— तमुद्यतं तु वेगेन राजा दुर्योधनः स्वयम् ।
न्यवारयन्महातेजाः कृपश्च द्विपदां वरः ॥ १० ॥
कर्ण उवाच— शूरोऽयं समरश्लाघी दुर्मतिश्च द्विजाधमः ।
आसादयतु मद्वीर्यं मुञ्चेमं कुरुसत्तम ॥ ११ ॥
अश्वत्थामोवाच- तवैतत्क्षम्यतेऽस्माभिः सूतात्मज सुदुर्मते ।
दर्पमुत्सिक्तमेतत्ते फाल्गुनो नाशयिष्यति ॥ १२ ॥
दुर्योधन उवाच- अश्वत्थामन्प्रसीदस्व क्षन्तुमर्हसि मानद ।
कोपः खलु न कर्तव्यः सूतपुत्रं कथञ्चन ॥ १३ ॥
त्वयि कर्णे कृपे द्रोणे मद्रराजेऽथ सौबले ।
महत्कार्यं समासक्तं प्रसीद द्विजसत्तम ॥ १४ ॥
एते ह्यभिमुखाः सर्वे राधेयेन युयुत्सवः ।
आयान्ति पाण्डवा ब्रह्मन्नाह्वयन्तः समन्ततः ॥ १५ ॥

इस समय खडा रह, यह देखो मैं तुम्हारा सिर इसी क्षण शरीरसे पृथक् किये देता हूं ॥ (६-९)

सञ्जय बोले, महाराज ! अश्वत्थामा ऐसा कहकर वेगपूर्वक कर्णकी ओर दौडे । अश्वत्थामाको कर्णकी ओर दौडते देख, बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य और राजा दुर्योधनने उन्हें निवारण किया ॥ उसे देखकर कर्ण कुरुराज दुर्योधनसे बोले, हे कुरुसत्तम ! शूर और युद्धमें प्रशंसित यह अधम ब्राह्मण आके मेरे पराक्रमको मालूम करे, आप उसे न रोकिये । तब अश्वत्थामा बोले, रे नीचबुद्धिवाले सूतपुत्र ! मैंने तेरा यह अपराध क्षमा किया परन्तु अर्जुन तुम्हारे इस बढे हुए अभिमानका नाश करेंगे ॥ (१०-१२)

महाराज ! राजा दुर्योधन उन दोनों को इसी प्रकार आपसमें विवाद करते देख अश्वत्थामासे बोले, हे माननीय अश्वत्थामा ! आप शान्त होईये, सूतपुत्रके ऊपर क्रोध करना तुम्हें उचित नहीं है; इससे आप प्रसन्न होईये । देखिये आप, कर्ण, कृपाचार्य, मद्रराज शल्य और सुबलपुत्र शकुनि इन कई एक वीरोंके ऊपर मेरे बहुत बडे कार्य का भार अर्पित है, हे द्विजसत्तम ! इससे आप प्रसन्न होईये ॥ हे ब्राह्मण ! यह देखो पाण्डव लोग चारों ओरसे कर्णको आवाहन करते हुए युद्ध करनेके वास्ते उनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— प्रसाद्यमानस्तु ततो राज्ञा द्रौणिर्महामनाः ।
प्रससाद महाराज क्रोधवेगसमन्वितः ॥ १६ ॥
ततः कृपोऽप्युवाचेदमाचार्यः सुमहामनाः ।
सौम्यस्वभावाद्राजेन्द्र क्षिप्रमागतमार्दवः ॥ १७ ॥
कृप उवाच— तवैतत्क्षम्यतेऽस्माभिः सूतात्मज सुदुर्मते ।
दर्पमुत्सिक्तमेतत्ते फाल्गुनो नाशयिष्यति ॥ १८ ॥
सञ्जय उवाच— ततस्ते पाण्डवा राजन्पञ्चालाश्च यशस्विनः ।
आजग्मुः सहिताः कर्णं तर्जयन्तः समन्ततः ॥ १९ ॥
कर्णोऽपि रथिनां श्रेष्ठश्चापमुद्यम्य वीर्यवान् ।
कौरवाग्र्यैः परिवृतः शक्रो देवगणैरिव ॥ २० ॥
पर्यतिष्ठत तेजस्वी स्वबाहुबलमाश्रितः ।
ततः प्रववृते युद्धं कर्णस्य सह पाण्डवैः ॥ २१ ॥
भीषणं सुमहाराज सिंहनादविराजितम् ।
ततस्ते पाण्डवा राजन्पञ्चालाश्च यशस्विनः ॥ २२ ॥
दृष्ट्वा कर्णं महाबाहुमुच्चैः शब्दमथाऽनदन् ।
अयं कर्णः कुतः कर्णस्तिष्ठ कर्ण महारणे ॥ २३ ॥

संमुख आरहे हैं ॥ (१३–१५)

सञ्जय बोले, महाराज ! क्रोध और मानसे युक्त महात्मा द्रोणपुत्र अश्वत्थामा दुर्योधनकी प्रार्थनासे कर्णके ऊपर प्रसन्न हुए । तिसके अनन्तर महात्मा कृपाचार्य अपने सुन्दर स्वभाव धीरता और मृदुताके सहित कर्णसे बोले, हे दुष्ट बुद्धिवाले सूतपुत्र ! मैंने तुम्हारे इस अपराधको क्षमा किया, परन्तु अर्जुन तुम्हारे इस बढे हुए अभिमानका नाश करेंगे ॥ (१६—१८)

संजय बोले,महाराज ! इधर यशस्वी पाण्डव और पाञ्चाल योद्धा लोग इकट्ठे होकर चारों ओरसे सिंहनाद करते हुए युद्ध करनेकी इच्छासे कर्णके संमुख आके उपस्थित हुए ॥ उन योद्धाओंको संमुख आते देखकर महापराक्रमी अत्यन्त तेजस्वी रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णभी अपने बाहु बलके आसरे और देवतोंसे घिरे हुए इन्द्रकी भांति मुख्य मुख्य कौरवोंके बीचमें स्थित होकर अपना धनुष चढाके युद्ध भूमिमें स्थित हुए ॥ (१९–२१)

महाराज ! तिसके अनन्तर पाण्डवों के सङ्ग क्रोधी कर्णका सिंहनाद शब्दके सहित महाघोर युद्ध होने लगा । पाण्डव लोग और यशस्वी पाञ्चाल योद्धा उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युध्यस्व सहितोऽस्माभिर्दुरात्मन्पुरुषाधम ।
अन्ये तु दृष्ट्वा राधेयं क्रोधरक्तेक्षणाऽब्रुवन् ॥ २४ ॥
हन्यतामयमुत्सिक्तः सूतपुत्रोऽल्पचेतनः ।
सर्वैः पार्थिवशार्दूलैर्नाऽनेनाऽर्थोऽस्ति जीवता ॥ २५ ॥
अत्यन्तवैरी पार्थानां सततं पापपूरुषः ।
एष मूलमनर्थानां दुर्योधनमते स्थितः ॥ २६ ॥
घ्नतैनमिति जल्पन्तः क्षत्रियाः समुपाद्रवन् ।
महता शरवर्षेण च्छादयन्तो महारथाः ॥ २७ ॥
वधार्थं सूतपुत्रस्य पाण्डवेयेन चोदिताः ।
तांस्तु सर्वांस्तथा दृष्ट्वा धावमानान्महारथान् ॥ २८ ॥
न विव्यथे सूतपुत्रो न च त्रासमगच्छत ।
दृष्ट्वा संहारकल्पं तमुद्भूतं सैन्यसागरम् ॥ २९ ॥
पिप्रीषुस्तव पुत्राणां संग्रामेष्वपराजितः ।
सायकौघेन बलवान्क्षिप्रकारी महाबलः ॥ ३० ॥
वारयामास तत्सैन्यं समन्ताद्भरतर्षभ ।

रणभूमिके बीच कर्णको देखकर यही कर्ण है कहां है कर्ण ! अरे नीच ! रे दुष्ट ! मेरे सङ्गमें आके युद्ध कर ! इसी प्रकार महाघोर शब्दके सहित कोलाहल मचाने लगे । (२१–२४)

दूसरे कोई पुरुष राधापुत्र कर्णको देखते ही क्रोधसे दोनों नेत्र लाल करके यह वचन कहने लगे । हे राज शार्दूल पुरुषो ! आप लोग सब कोई मिलकर इस नीच तथा अभिमानी सूतपुत्रका शीघ्र ही नाश करो; इसे जीवित रखनेकी कौनसी आवश्यकता है क्योंकि यह पापी सदा ही दुर्योधनके मत पर चलता है, यही कुन्ती पुत्रोंका वैरी और उनके दुःखकी जड है, इससे इसका ही इस समय वध करना उचित है । यह वचन कहके महारथ क्षत्रिय योद्धा लोग राजा युधिष्ठिरकी आज्ञासे अपने अनेक बाणों की वर्षासे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूरित करते हुए कर्णके वधके निमित्त उनकी ओर दौडे । (२४—२८)

महाराज ! युद्धमें अपराजित महाबली सूतपुत्र कर्ण उन सम्पूर्ण महा रथियोंको अपनी ओर आते देख तनिक भी भयभीत नहीं हुए । वह तुम्हारे पुत्रोंके हितकी इच्छा करके उथलते हुए समुद्रके समान युधिष्ठिरकी सेनाके पुरुषोंको सैकडों अस्त्र शस्त्रोंसे निवारण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततस्तु शरवर्षेण पार्थिवास्तमवारयन् ॥ ३१ ॥
धनूंषि ते विधुन्वानाः शतशोऽथ सहस्रशः ।
अयोधयन्त राधेयं शक्रं दैत्यगणा इव ॥ ३२ ॥
शरवर्षं तु तत्कर्णः पार्थिवैः समुदीरितम् ।
शरवर्षेण महता समन्ताद्व्यकिरत्प्रभो ॥ ३३ ॥
तद्युद्धमभवत्तेषां कृतप्रतिकृतैषिणाम् ।
यथा देवासुरे युद्धे शक्रस्य सह दानवैः ॥ ३४ ॥
तत्राऽद्भुतमपश्याम सूतपुत्रस्य लाघवम् ।
यदेनं सर्वतो यत्ता नाऽऽप्नुवन्ति परे युधि ॥ ३५ ॥
निवार्य च शरौघांस्तान्पार्थिवानां महारथः ।
युगेष्वीषासु च्छत्रेषु ध्वजेषु च हयेषु च ॥ ३६ ॥
आत्मनामाङ्कितान्घोरान्राधेयः प्राहिणोच्छरान् ।
ततस्ते व्याकुलीभूता राजानः कर्णपीडिताः ॥ ३७ ॥

करने लगे । (२८–३१)

हे राजेन्द्र ! वे सम्पूर्ण राजा लोग अपने धनुषको फेरते हुए अपनी बाणोंकी वर्षासे कर्णको निवारण करतेहुए राधापुत्र कर्णके संग इस प्रकार युद्ध करने लगे, जैसे दानवोंके राजाने इन्द्रके संग युद्ध किया था ।। राजाओंके धनुषसे उस समय जब चारों ओरसे बाणोंकी वर्षा होने लगी, तब पराक्रमी कर्णने अपने अनेक बाणोंको चला कर उन लोगोंके चलाये हुए बाणोंको निवारण किया ॥ जैसे देवासुर युद्धके समय दानवोंके सहित देवराज इन्द्रका युद्ध हुआ था वैसे ही आपसमें एक दूसरेके वधकी अभिलाष करनेवाले उन शूरवीरोंका आपसमें महाघोर संग्राम होने लगा ॥ (३१–३४)

महाराज ! उस समय हम लोगोंने सूतपुत्र कर्णका अत्यन्त आश्चर्यमय हस्तलाघव और अस्त्र चलानेकी फुर्त्तीको अवलोकन किया कि उस समय सम्पूर्ण शत्रुसेनाके योद्धा लोग अपनी शक्तिके अनुसार पराक्रम प्रकाशित करके भी कर्णको अपने वशमें न कर सके ॥ महारथ राधापुत्र कर्णने क्षण भरके बीच उन सम्पूर्ण राजाओंके चलाये हुए बाणजालको निवारण करके कर्ण नामसे अङ्कित सुवर्ण भूषित अनेक बाणोंको किसीके रथ किसीकी ध्वजा किसीके हाथी किसीके घोडे और किसीके सारथीके ऊपर चलाया ॥ (३५–३७)

वे सम्पूर्ण राजालोग इसी प्रकार कर्णके बाणोंसे पीडित होकर उनके संमुख

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बभ्रमुस्तत्र तत्रैव गावः शीतार्दिता इव।
हयानां वध्यमानानां गजानां रथिनां तथा ॥ ३८ ॥
तत्रतत्राऽभ्यवेक्षाम सङ्गान्कर्णेन ताडितान्।
शिरोभिः पतितैः राजन्बाहुभिश्च समन्ततः ॥ ३९ ॥
आस्तीर्णा वसुधा सर्वा शूराणामनिवर्तिनाम्।
हतैश्च हन्यमानैश्च निष्टनद्भिश्च सर्वशः ॥ ४० ॥
बभूवाऽऽयोधनं रौद्रं वैवस्वतपुरोपमम्।
ततो दुर्योधनो राजा दृष्ट्वा कर्णस्य विक्रमम् ॥ ४१ ॥
अश्वत्थामानमासाद्य वाक्यमेतदुवाच ह।
युध्यतेऽसौ रणे कर्णो दंशितः सर्वपार्थिवैः ॥ ४२ ॥
पश्यैतां द्रवतीं सेनां कर्णसायकपीडिताम्।
कार्तिकेयेन विध्वस्तामासुरीं पृतनामिव ॥ ४३ ॥
दृष्ट्वैतां निर्जितां सेनां रणे कर्णेन धीमता।
अभियात्येष बीभत्सुः सूतपुत्रजिघांसया ॥ ४४ ॥
तद्यथा प्रेक्षमाणानां सूतपुत्रं महारथम्।

खडे होनेमें समर्थ नहीं हुए वे लोग शीतसे पीडित गौवोंकी भांति इधर उधर दौडने लगे। उस समय में हाथी घोडे और मनुष्योंको केवल कर्णके बाणोंसे पीडित होकर इधर उधर भागते हुए देखने लगा। महाराज! युद्धमें पीछे न हटनेवाले उन शूरवीरोंके कटे हुए अनगिनत सिरों और भुजाओंसे वह रणभूमि एकबारगी परिपूर्ण होगई। कहीं कहीं मरे हुए हाथी घोडे और किसी किसी स्थानमें मृत पुरुषोंके शरीरसे वह रणभूमि ऐसी भयङ्कर दिखाई देने लगी कि साक्षात् यमपुरीके समान बोध होने लगी। ३७-४१

महाराज! तिसके अनन्तर राजा दुर्योधन कर्णका ऐसा पराक्रम देखकर अश्वत्थामासे यह वचन बोले, हे आचार्यपुत्र! कर्ण अकेले ही युद्धभूमिमें स्थित होकर पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण राजाओंके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं, यह देखो जैसे असुरोंकी सेना पार्वतीपुत्र स्वामिकार्त्तिकके अस्त्रोंसे पीडित होकर इधर उधर भाग गई थी वैसेही कर्णके तेज बाणोंसे पीडित होकर पञ्चाल योद्धा लोग चारों ओर भाग रहे हैं; परन्तु अर्जुन बुद्धिमान कर्णके बाणोंसे अपनी सेनाके पुरुषोंको पराजित होते देखकर क्रोधपूर्वक कर्णकी ओर आ रहे हैं॥ इससे पाण्डुपुत्र अर्जुन जिससे तुम्हारे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हन्यात्पाण्डवः संख्ये तथा नीतिर्विधीयताम् ॥४५॥
ततो द्रौणिः कृपः शल्यो हार्दिक्यश्च महारथः ।
प्रत्युद्ययुस्तदा पार्थं सूतपुत्रपरीप्सया ॥ ४६ ॥
आयान्तं वीक्ष्य कौन्तेयं शक्रं दैत्यचमूमिव ।
बीभत्सुरपि राजेन्द्र पञ्चालैरभिसंवृतः ॥ ४७ ॥
प्रत्युद्ययौ तदा कर्णं यथा वृत्रं शतक्रतुः ।

धृतराष्ट्र उवाच— संरब्धं फाल्गुनं दृष्ट्वा कालान्तकयमोपमम् ॥ ४८ ॥
कर्णो वैकर्तनः सूत प्रत्यपद्यत्किमुत्तरम् ।
यो ह्यस्पर्धत पार्थेन नित्यमेव महारथः ॥ ४९ ॥
आशंसते च बीभत्सुं युद्धे जेतुं सुदारुणम् ।
स तु तं सहसा प्राप्तं नित्यमत्यन्तवैरिणम् ॥ ५० ॥
कर्णो वैकर्तनः सूत किमुत्तरमपद्यत ।

सञ्जय उवाच— आयान्तं पाण्डवं दृष्ट्वा गजं प्रतिगजो यथा ॥ ५१ ॥
असम्भ्रान्तो रणे कर्णः प्रत्युदीयाद्धनञ्जयम् ।
तमापतन्तं वेगेन वैकर्तनमजिह्मगैः ॥ ५२ ॥

संमुखमें ही महारथ सूतपुत्र कर्णका वध न कर सके, आप वैसेही उपायका विधान कीजिये ॥ (४२–४५)

तिसके अनन्तर द्रोणपुत्र अश्वत्थामा, कृपाचार्य, शल्य और हृदिकपुत्र कृतवर्माने सूतपुत्र कर्णकी रक्षाके वास्ते अर्जुनके संमुख गमन किया ॥ हे महाराज ! जैसे देवराज इन्द्र वृत्रासुर की ओर दौडा था, वैसे ही अर्जुन भी पांचाल सेनाके साथ कर्णकी ओर दौडे ॥ (४६–४८)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! सूर्यपुत्र कर्णने क्रोधी यमराजके समान अर्जुनको संमुख आते देख उस समयके अनुसार किस कार्यका अनुष्ठान किया ? क्योंकि वह महारथी सूतपुत्र कर्ण सदा ही अर्जुनसे द्वेष किया करता है ॥ और महायुद्धमें अर्जुनके जीतनेकी आशा भी करता है; इससे सदासे शत्रुभावयुक्त अर्जुनको संमुख आया देख, अपने कर्त्तव्य-कर्मके विषयमें क्या निश्चय किया ? (४८–५१)

सञ्जय बोले, महाराज ! जैसे एक मतवारे हाथीको देखकर दूसरा मतवारा हाथी उसकी ओर दौडता है, वैसे ही राधापुत्र कर्ण अर्जुनको अपनी ओर आते देख निर्भयचित्तसे उनकी ओर दौडे । महातेजस्वी शत्रुनाशन अर्जुन भी सूतपुत्र कर्णको वेगपूर्वक अपनी ओर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छादयामास पार्थोऽथ कर्णस्तु विजयं शरैः।
स कर्णं शरजालेन च्छादयामास पाण्डवः ॥ ५३ ॥
ततः कर्णः सुसंरब्धः शरैस्त्रिभिरविध्यत।
तस्य तल्लाघवं पार्थो नाऽमृष्यत महाबलः ॥ ५४ ॥
तस्मै बाणाञ्शिलाधौतान्प्रसन्नाग्रानजिह्मगान्।
प्राहिणोत्सूतपुत्राय त्रिशतं शत्रुतापनः ॥ ५५ ॥
विव्याध चैनं संरब्धो बाणेनैकेन वीर्यवान्।
सव्ये भुजाग्रे बलवान्नाराचेन हसन्निव ॥ ५६ ॥
तस्य विद्धस्य बाणेन कराद्चापं पपात ह।
पुनरादाय तच्चापं निमेषार्धान्महाबलः ॥ ५७ ॥
छादयामास बाणौघैः फाल्गुनं कृतहस्तवत्।
शरवृष्टिं तु तां मुक्तां सूतपुत्रेण भारत ॥ ५८ ॥
व्यधमच्छरवर्षेण स्मयन्निव धनञ्जयः।
तौ परस्परमासाद्य शरवर्षेण पार्थिव ॥ ५९ ॥
छादयेतां महेष्वासौ कृतप्रतिकृतैषिणौ।
तदद्भुतं महद्युद्धं कर्णपाण्डवयोर्मृधे ॥ ६० ॥

आते देख अपने तेज बाणोंकी वर्षासे उन्हें निवारण करने लगे॥ (५१-५३)

हे भारत! तब राधा पुत्र कर्ण अपने बाणोंके जालसे अर्जुनको छिपा कर फिर तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध करने लगे, परन्तु महाबली शत्रुनाशन पृथापुत्र अर्जुनसे कर्णका हस्तलाघव न सहा गया, उन्होंने कर्णके ऊपर शिलापर घिसे हुए तीन सौ तेज बाणोंको चलाया। महाबली प्रतापी अर्जुनने क्रुद्ध होकर एक बाणसे कर्णके बायें हाथकी हथेली को विद्ध किया। महाराज! हथेली विद्ध होते ही कर्णके हाथसे धनुष छूटकर गिर पडा; परन्तु उस महाबलवान् कर्णने अर्धनिमेषमें फिर धनुष ग्रहण करके उत्तम पानी चढे हुए तेज बाणोंसे फिर अर्जुनको छिपा दिया। (५४-५८)

परन्तु अर्जुनने निर्भयचित्तसे कर्णके चलाये हुए बाणोंको अपने बाणोंसे निवारण किया। महाराज! इसी प्रकार धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी महारथ पृथापुत्र अर्जुन और कर्ण एक दूसरेके वधकी इच्छा करके अपने बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेको छिपाने लगे। ऐसा कया जैसे ऋतुमती हथिनीके वास्ते दो क्रोधी मतवारे हाथियोंका आपसमें युद्ध होता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रुद्धयोर्बासिताहेतोर्वन्ययोर्गजयोरिव ।
ततः पार्थो महेष्वासो दृष्ट्वा कर्णस्य विक्रमम् ॥ ६१ ॥
मुष्टिदेशे धनुस्तस्य चिच्छेद त्वरयाऽन्वितः ।
अश्वांश्च चतुरो भल्लैरनयद्यमसादनम् ॥ ६२ ॥
सारथेश्च शिरः कायादहरच्छत्रुतापनः ।
अथैनं छिन्नधन्वानं हताश्वं हतसारथिम् ॥ ६३ ॥
विव्याध सायकैः पार्थश्चतुर्भिः पाण्डुनन्दनः ।
हताश्वात्तु रथात्तूर्णमवप्लुत्य नरर्षभः ॥ ६४ ॥
आरुरोह रथं तूर्णं कृपस्य शरपीडितः ।
स नुन्नोऽर्जुनबाणौघैराचितः शल्यको यथा ॥ ६५ ॥
जीवितार्थमभिप्रेप्सुः कृपस्य रथमारुहत् ।
राधेयं निर्जितं दृष्ट्वा तावका भरतर्षभ ॥ ६६ ॥
धनञ्जयशरैर्नुन्नाः प्राद्रवन्त दिशो दश ।
द्रवतस्तान्समालोक्य राजा दुर्योधनो नृप ॥ ६७ ॥
निवर्तयामास तदा वाक्यमेतदुवाच ह ।
अलं द्रुतेन वः शूरास्तिष्ठध्वं क्षत्रियर्षभाः ॥ ६८ ॥
एष पार्थवधायाऽहं स्वयं गच्छामि संयुगे ।

वैसे ही उन दोनों वीरोंका आपसमें महाघोर युद्ध होने लगा । (५८–६१)

अनन्तर महाधनुर्द्धर शत्रुनाशन अर्जुनने कर्णका पराक्रम देख शीघ्रताके सहित उनके धनुषकी मुट्ठी काट दिया। अनन्तर भल्लास्त्रसे उनके रथके चारों घोडोंका वध करके फिर एक बाणसे उनके सारथीका सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया । तिसके अनन्तर अर्जुनने धनुष घोडे और सारथीसे रहित कर्णको चार बाणोंसे विद्ध किया । तब पुरुषश्रेष्ठ कर्ण अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर घोडोंसे रहित रथसे कूदकर अपने जीवित की रक्षाके लिये कृपाचार्यके रथपर जा चढे । (६१–६६)

हे राजेन्द्र ! तुम्हारी ओरके शूरवीर अर्जुनके बाणोंसे क्षतविक्षत शरीरसे युक्त थे उसपर भी कर्णको पराजित देखकर चारों ओर भागने लगे । कुरुराज दुर्योधन अपनी सेनाके योद्धाओंको भागते देख उन्हें निवृत्त करतेहुए कहने लगे। हे क्षत्रिय श्रेष्ठ शूरवीर पुरुषो ! तुम लोग क्यों भागते हो लौटके युद्ध करो, मैं अर्जुनका वध करनेके निमित्त स्वयं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहं पार्थान्हनिष्यामि सपञ्चालान्ससोमकान् ॥ ६९ ॥
अद्य मे युध्यमानस्य सह गाण्डीवधन्वना।
द्रक्ष्यन्ति विक्रमं पार्थाः कालस्येव युगक्षये ॥ ७० ॥
अद्य मद्बाणजालानि विमुक्तानि सहस्रशः।
द्रक्ष्यन्ति समरे योधाः शलभानामिवाऽऽयतीः ॥७१॥
अद्य बाणमयं वर्ष सृजतो मम धन्विनः।
जीमूतस्येव घर्मान्ते द्रक्ष्यन्ति युधि सैनिकाः ॥ ७२ ॥
जेष्यामद्य रणे पार्थं सायकैर्नतपर्वभिः।
तिष्ठध्वं समरे शूरा भयं त्यजत फाल्गुनात् ॥ ७३ ॥
न हि मद्वीर्यमासाद्य फाल्गुनः प्रसहिष्यति।
यथा वेलां समासाद्य सागरो मकरालयः ॥ ७४ ॥
इत्युक्त्वा प्रययौ राजा सैन्येन महता वृतः।
फाल्गुनं प्रति दुर्धर्षः क्रोधात्संरक्तलोचनः ॥ ७५ ॥
तं प्रयान्तं महाबाहुं दृष्ट्वा शारद्वतस्तदा।
अश्वत्थामानमासाद्य वाक्यमेतदुवाच ह ॥ ७६ ॥

युद्धभूमिमें उसके संमुख गमन करता हूं। मैं पाञ्चाल और सोमकों के सहित पाण्डवोंका नाश करूंगा। (६६-६९)

आज मैं गाण्डीवधनुष धारण करनेवाले अर्जुनके संग युद्धमें प्रवृत्त होऊंगा; आज कुन्तीके पुत्र प्रलयकालके यमराज समान मेरा पराक्रम देखेंगे॥ आज शूरवीर योद्धा लोग मेरे धनुषसे छूटे हुए शलभसमूहकी भांति अनगिनत बाणोंको अर्जुनकी ओर चलते हुए देखेंगे॥ आज जब मैं युद्धभूमिके बीच अपना धनुष चढा कर लगातार बाणोंको वर्षाने लगूंगा, तब सेनाके पुरुष मुझे जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति मालूम करेंगे॥ हे शूरवीर पुरुषो! आज मैं अपने तीक्ष्णबाणोंसे अवश्य ही अर्जुनको पराजित करूंगा, इससे तुम लोग भय त्यागके निर्भयताके सहित रणभूमिमें स्थित रहो॥ जैसे समुद्रके वेगको तट रोकता है, वैसे ही अर्जुन भी मेरा पराक्रम देखकर आगे बढनेमें असमर्थ होजावेगा॥ (७०-७४)

महाराज! पराक्रमी राजा दुर्योधन ऐसा वचन कह कर क्रोधसे नेत्र लाल करके अपनी महासेनाके बीच घिर कर अर्जुनकी ओर दौडे॥ तब शरद्वतपुत्र कृपाचार्य राजा दुर्योधनको अर्जुनकी ओर गमन करते देख अपने भानजे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एष राजा महाबाहुरमर्षी क्रोधमूर्छितः ।
पतङ्गवृत्तिमास्थाय फाल्गुनं योद्धुमिच्छति ॥ ७७ ॥
यावन्नः पश्यमानानां प्राणान्पार्थेन सङ्गतः ।
न जह्यात्पुरुषव्याघ्रस्तावद्वारय कौरवम् ॥ ७८ ॥
यावत्फाल्गुनबाणानां गोचरं नाऽद्य गच्छति ।
कौरवः पार्थिवो वीरस्तावद्वारय संयुगे ॥ ७९ ॥
यावत्पार्थशरैर्घोरैर्निर्मुक्तोरगसन्निभैः ।
न भस्मीक्रियते राजा तावद्युद्धान्निवार्यताम् ॥ ८० ॥
अयुक्तमिव पश्यामि तिष्ठत्स्वस्मासु मानद ।
स्वयं युद्धाय यद्राजा पार्थं यात्यसहायवान् ॥ ८१ ॥
दुर्लभं जीवितं मन्ये कौरव्यस्य किरीटिना ।
युद्ध्यमानस्य पार्थेन शार्दूलेनेव हस्तिनः ॥ ८२ ॥
मातुलेनैवमुक्तस्तु द्रौणिः शस्त्रभृतां वरः ।
दुर्योधनमिदं वाक्यं त्वरितः समभाषत ॥ ८३ ॥

अश्वत्थामासे यह वचन बोले ॥ देखो क्रोधके वशमें होकर कुरुराज दुर्योधन अर्जुनकी ओर इस प्रकार गमन कर रहे हैं, जैसे पतङ्ग अग्निकी ओर दौडते हैं; इससे जबतक राजा दुर्योधन अर्जुनके समीप पहुंच कर प्राण त्याग नहीं करते हैं उससे पहिले ही तुम उन्हें अर्जुनकी ओर जानेसे निवृत्त करो ॥ (७५-७८)

जब तक पराक्रमी दुर्योधन अर्जुनके बाणके सम्मुख नहीं उपस्थित होते हैं उससे पहिले ही तुम उन्हें युद्धभूमिमें निवृत्त करो ॥ जब तक अर्जुनके गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए केंचुलीसे रहित सर्पके समान तेजस्वी बाण कुरुराज दुर्योधनको भस्म नहीं करते हैं उससे पहिले ही तुम उन्हें अर्जुनके समीप जानेसे निवृत्त करो॥ हे प्यारे अश्वत्थामा ! मैं इस कार्यको अत्यन्त ही अनुचित समझ रहा हूं, कि हम सब लोगोंके रहते ही राजा दुर्योधन सहायकोंसे रहित पुरुषकी भांति स्वयं ही अर्जुनकी ओर युद्धके वास्ते गमन कर रहे हैं ॥ विशेष करके कुरुराज दुर्योधन यदि अर्जुनके सङ्ग आज युद्ध करने में प्रवृत्त होंगे, तो शार्दूलके सङ्ग युद्ध करते हुए हाथीकी भांति उनका प्राण बचनेमें अत्यन्तही कठिनता होवेगी॥(७९-८२)

महाराज ! शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा अपने मामाकी आज्ञा सुनकर शीघ्रताके सहित दुर्योधनके समीप जाकर यह वचन बोले, हे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मयि जीवति गान्धारे न युद्धं गन्तुमर्हसि ।
मामनादृत्य कौरव्य तव नित्यं हितैषिणम् ॥ ८४ ॥
न हि ते संभ्रमः कार्यः पार्थस्य विजयं प्रति ।
अहमावारयिष्यामि पार्थं तिष्ठ सुयोधन ॥ ८५ ॥
दुर्योधन उवाच- आचार्यः पाण्डुपुत्रान्वै पुत्रवत्परिरक्षति ।
त्वमप्युपेक्षां कुरुषे तेषु नित्यं द्विजोत्तम ॥ ८६ ॥
मम वा मन्दभाग्यत्वान्मन्दस्ते विक्रमो युधि ।
धर्मराजप्रियार्थं वा द्रौपद्या वा न विद्म तत् ॥ ८७ ॥
धिगस्तु मम लुब्धस्य यत्कृते सर्वबान्धवाः ।
सुखार्हाः परमं दुःखं प्राप्नुवन्त्यपराजिताः ॥ ८८ ॥
को हि शस्त्रविदां मुख्यो महेश्वरसमो युधि ।
शत्रुं न क्षपयेच्छक्तो यो न स्याद्गौतमीसुतः ॥ ८९ ॥
अश्वत्थामन्प्रसीदस्व नाशयैतान्ममाऽहितान् ।
त्वयाऽस्त्रगोचरे शक्ताः स्थातुं देवा न दानवाः॥ ९० ॥

गान्धारीपुत्र ! देखो, तुम्हारे हितकी सदा अभिलाष करनेवाला मैं जीवित हूं, मेरा अनादर करके स्वयं युद्ध करनेके वास्ते अर्जुनके समीप जाना तुम्हें उचित नहीं है ॥ अर्जुनको पराजित करनेके वास्ते तुम कुछ भी चिन्ता मत करो। तुम यहां ही स्थित रहो, मैं अर्जुनको युद्धसे निवारण करूंगा ॥ (८३-८५)

महाराज! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधन गुरुपुत्र अश्वत्थामाके वचनोंको सुनकर बोले, हे द्विजसत्तम ! देखिये आचार्य रणभूमिमें पाण्डुपुत्रोंको अपने पुत्रकी भांति रक्षा करते रहते हैं, और तुम भी सदा उन लोगोंका युद्धभूमि में देखकर उपेक्षा करते हो ॥ इसके अतिरिक्त मेरे अभाग्यसे होवे अथवा धर्मराज युधिष्ठिर और द्रोपदीके प्रियकार्य को करनेके निमित्त ही होवे, युद्धभूमिमें जो आप लोगोंका पराक्रम पूर्णरूपसे प्रकाशित नहीं होता इसका कारण मुझे मालूम नहीं होता है ॥ मुझे धिक्कार है ! मुझ लोभीके वास्ते ही ये सम्पूर्ण बन्धु बान्धव लोग सदा सुख भोग करनेके योग्य होकर भी दुःख पारहे हैं ॥ (८६-८८)

सब शस्त्रधारियोंमें अग्रणी और युद्धमें महादेवके समान पराक्रमी होकर भी तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कौन पुरुष शत्रुओंके विषयमें उपेक्षा कर सकता है? हे पापरहित अश्वत्थामा ! आप मेरे ऊपर प्रसन्न होइये। देखिये, तुम्हारे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चालान्सोमकांश्चैव जहि द्रौणे सहानुगान् ।
वयं शेषान्हनिष्यामस्त्वयैव परिरक्षिताः ॥ ९१ ॥
एते हि सोमका विप्र पञ्चालाश्च यशस्विनः ।
मम सैन्येषु संक्रुद्धा विचरन्ति दवाग्नियत् ॥ ९२ ॥
तान्वारय महाबाहो केकयांश्च नरोत्तम ।
पुरा कुर्वन्ति निःशेषं रक्ष्यमाणाः किरीटिना ॥ ९३ ॥
अश्वत्थामंस्त्वरायुक्तो याहि शीघ्रमरिन्दम ।
आदौ वा यदि वा पश्चात्तवेदं कर्म मारिष ॥ ९४ ॥
त्वमुत्पन्नो महाबाहो पञ्चालानां वधं प्रति ।
करिष्यसि जगत्सर्वमपञ्चालं किलोद्यतः ॥ ९५ ॥
एवं सिद्धाऽब्रुवन्वाचो भविष्यति च तत्तथा ।
तस्मात्त्वं पुरुषव्याघ्र पञ्चालाञ्जहि सानुगान् ॥ ९६ ॥
न तेऽस्त्रगोचरे शक्ताः स्थातुं देवाः सवासवाः ।

बाणोंके संमुखमें देवता लोग भी नहीं ठहर सकते! इससे आप मेरे शत्रुओंका नाश कीजिये ॥ हे द्रोणपुत्र ! आप अनुयायियोंके सहित सोमकवंशी और पाञ्चाल योद्धाओंका नाश कीजिये; फिर हम लोग तुमसे रक्षित होकर बाकी बचे हुए शत्रुओंका वध करेंगे ॥ (८९-९१)

यह देखिये यशस्वी पाञ्चाल और सोमकवंशीय योद्धा लोग क्रुद्ध होकर दावाग्निकी भांति मेरी सेनारूपी वनमें भ्रमण कर रहे हैं ॥ हे महाबाहो द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ! इससे जब तक पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष अर्जुनसे रक्षित होकर मेरी सेनाके योद्धाओंका नाश नहीं करते हैं, उससे पहिले ही आप केकय और पाञ्चालसेनाके वीरोंका नाश कीजिये । हे शत्रुनाशन अश्वत्थामा ! आगे हो चाहे पीछे हो; आप शीघ्र ही शत्रुओंके विरुद्ध युद्धके निमित्त रणभूमिमें गमन कीजिये; यह तुम्हारा ही कर्त्तव्य कर्म है ॥ (९२-९४)

हे पापरहित अश्वत्थामा ! देखो पाञ्चाल वीरोंके नाश करनेहीके वास्ते तुम उत्पन्न हुए हो; इससे तुम अवश्य ही इस जगत्को पाञ्चाल योद्धालोगोंसे रहित करोगे । विशेष करके सिद्ध लोग भी जब तुम्हारे विषयमें ऐसा वचन कहा करते हैं तब यह कार्य अवश्य ही पूर्ण होवेगा । हे पुरुषशार्दूल ! इससे आप अनुयायियोंके सहित पाञ्चाल वीरोंका नाश कीजिये ॥ मैं तुमसे यह वचन कहता हूं, कि पाञ्चाल और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किमु पार्थाः सपञ्चालाः सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ९७ ॥
न त्वां समर्थाः संग्रामे पाण्डवाः सह सोमकैः।
बलाद्योधयितुं वीर सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ९८ ॥
गच्छ गच्छ महाबाहो न नः कालात्ययो भवेत्।
इयं हि द्रवते सेना पार्थसायकपीडिता ॥ ९९ ॥
शक्तो ह्यसि महाबाहो दिव्येन स्वेन तेजसा।
निग्रहे पाण्डुपुत्राणां पञ्चालानां च मानद ॥१००॥ [७१५९]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे दुर्योधनवाक्ये एकोनषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५९ ॥

सञ्जय उवाच— दुर्योधनेनैवमुक्तो द्रौणिराहवदुर्मदः।
चकाराऽरिवधे यत्नमिन्द्रो दैत्यवधे यथा ॥
प्रत्युवाच महाबाहुस्तव पुत्रमिदं वचः ॥ १ ॥
सत्यमेतन्महाबाहो यथा वदसि कौरव।
प्रिया हि पाण्डवा नित्यं मम चाऽपि पितुश्च मे ॥२ ॥
तथैवाऽऽवां प्रियौ तेषां न तु युद्धे कुरूद्वह।

पाण्डवोंकी तो कुछ बातही नहीं है, इन्द्र के सहित सम्पूर्ण देवताभी तुम्हारे अस्त्रों के सम्मुख नहीं ठहर सकते ॥ (९५–९७)

हे वीर! मुझे पूरा निश्चय है, कि सोमकवंशियोंके सहित पाण्डव लोग कभी भी रणभूमिमें पराक्रम प्रकाशित करके तुम्हारे सङ्ग युद्ध करनेमें समर्थ न हो सकेंगे ॥ यह देख, सेनाके योद्धा लोग अर्जुनके बाणोंसे पीडित होकर चारों ओर भाग रहे हैं। इससे अब हम लोगोंको वृथा समय बितानेकी कुछ भी आवश्यकता नहीं है; आप शीघ्रताके सहित शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते गमन कीजिये। हे महाबाहो! आप अपने दिव्य तेज तथा पराक्रमके प्रभावसे पाञ्चाल योद्धाओं और पाण्डुपुत्रोंको पराजित करनेमें समर्थ हैं ॥ (९८–१००)

द्रोणपर्वमें एकसौ उनसठ अध्याय। [७१५९]

द्रोणपर्वमें एकसौ साठ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधनके ऐसे वचनोंको सुनकर युद्धदुर्मद महाबाहु द्रोणपुत्र अश्वत्थामा उनसे यह वचन बोले, हे महाबाहो कुरुराज दुर्योधन! तुमने जो कुछ वचन कहे, वह सब सत्य हैं, अर्थात् पाण्डव लोग जैसे मुझे और मेरे पिताको प्रिय हैं; वैसे ही हम दोनों भी उन लोगोंके प्रीतिके पात्र हैं; परन्तु युद्धके समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तितस्तात युध्यामस्त्यक्त्वा प्राणानभीतवत् ॥३॥
अहं कर्णश्च शल्यश्च कृपो हार्दिक्य एव च ।
निमेषात्पाण्डवीं सेनां क्षपयेम नृपोत्तम ॥ ४ ॥
ते चापि कौरवीं सेनां निमेषार्धात्कुरूद्वह ।
क्षपयेयुर्महाबाहो न स्याम यदि संयुगे ॥ ५ ॥
युध्यतां पाण्डवाञ्छक्त्या तेषां चाऽस्मान्युयुत्सताम् ।
तेजस्तेजः समासाद्य प्रशमं याति भारत ॥ ६ ॥
अशक्या तरसा जेतुं पाण्डवानामनीकिनी ।
जीवत्सु पाण्डुपुत्रेषु तद्धि सत्यं ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥
आत्मार्थं युध्यमानास्ते समर्थाः पाण्डुनन्दनाः ।
किमर्थं तव सैन्यानि न हनिष्यन्ति भारत ॥ ८ ॥
त्वं तु लुब्धतमो राजन्निकृतिज्ञश्च कौरव ।
सर्वाभिशङ्की मानी च ततोऽस्मानभिशङ्कसे ॥ ९ ॥
मन्ये त्वं कुत्सितो राजन्पापात्मा पापपूरुषः ।

यह बात नहीं रहती । हे भ्राता ! युद्धके समय हम लोग निर्भयचित्तसे प्राणकी आशा छोडके शक्तिके अनुसार युद्ध किया करते हैं ॥ (१—३)

हे राजेन्द्र ! रणभूमिमें यदि पाण्डव लोग उपस्थित न रहें; तो मैं, कर्ण, शल्य, मेरे मामा कृपाचार्य और हृदीकपुत्र कृतवर्मा इत्यादि हम लोग निमेष भरमें पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेनाका नाश कर सकते हैं; और हम लोग यदि युद्धभूमिमें स्थित न रहें; तो पाण्डव लोग भी अर्धनिमेष भरमें तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश कर सकते हैं ॥ परन्तु पाण्डव लोग और हम लोग अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करनेमें प्रवृत्त हैं इसहीसे आपसमें एकके तेजका प्रभाव दूसरेके संमुखमें शान्त होजाता है । इससे मैं तुमसे यह निश्चित वचन कहता हूं, कि पाण्डुपुत्रोंके जीवित रहते यत्न पूर्वक उनकी सेनाको पराजित करना असाध्य कर्म समझियेगा ॥ (४–७)

हे भारत ! पाण्डवलोग सब कोई सामर्थ्यवान् हैं, इससे वह लोग अपने प्रयोजनकी सिद्धिके निमित्त युद्ध कर रहे हैं; तब वे तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश क्यों न करेंगे ? आप अत्यन्त ही लोभी, अभिमानी, कपटबुद्धिसे युक्त और सम्पूर्ण विषयोंमें शङ्कित हैं, इस ही निमित्तसे आप हम लोगोंके विषयमें शङ्का किया करते हैं ॥ हे क्षुद्रबुद्धिवाले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यानपि स नः क्षुद्र शङ्कसे पापभावितः ॥ १० ॥
अहं तु यत्नमास्थाय त्वदर्थे त्यक्तजीवितः।
एष गच्छामि संग्रामं त्वत्कृते कुरुनन्दन ॥ ११ ॥
योत्स्येऽहं शत्रुभिः सार्धं जेष्यामि च वरान्वरान्।
पञ्चालैः सह योत्स्यामि सोमकैः केकयैस्तथा ॥ १२ ॥
पाण्डवेयैश्च संग्रामे त्वत्प्रियार्थमरिन्दम।
अद्य मद्बाणनिर्दग्धाः पञ्चालाः सोमकास्तथा ॥ १३ ॥
सिंहेनेवार्दिता गावो विद्रविष्यन्ति सर्वशः।
अद्य धर्मसुतो राजा दृष्ट्वा मम पराक्रमम् ॥ १४ ॥
अश्वत्थाममयं लोकं मंस्यते सह सोमकैः।
आगमिष्यति निर्वेदं धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ १५ ॥
दृष्ट्वा विनिहतान्संख्ये पञ्चालान्सोमकैः सह।
ये मां युद्धेऽभियोत्स्यन्ति तान्हनिष्यामि भारत॥१६॥
न हि ते वीर मोक्ष्यन्ते मद्बाह्वन्तरमागताः।

राजन्! तुम पापी और पापमूर्त्ति होकर अत्यन्त कुत्सित हैं तथा पाप विचारोंसे भरा हुआ है इस वास्ते दूसरे और हमलोगोंके विषय में सदा शंका किया करते हो ॥ (८–१०)

हे कुरुनन्दन महाराज दुर्योधन! चाहे जैसा ही होवे तुम्हारे निमित्त मैं अपने प्राणकी आशा छोडके यत्नवान् होकर रणभूमिमें गमन करता हूं। आज मैं तुम्हारे प्रिय कार्यको सिद्ध करनेके वास्ते सोमकवंशी आदि पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करके मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध करूंगा। आज मेरे तीक्ष्ण बाणोंकी चोटसे पाञ्चाल तथा सोमक वंशी शूरवीर योद्धा इस प्रकार रणभूमिके बीचसे चारों ओर भाग जावेंगे जैसे सिंहके संमुखसे भयभीत होकर गौवोंका समूह इधर उधर भाग जाता है। (११–१४)

आज सोमकों के सङ्ग मुझे युद्ध करते देखकर राजा युधिष्ठिर इस संसार को अश्वत्थामामय समझेंगे। आज राजा युधिष्ठिर पाञ्चाल और सोमक वीरोंको मेरे अस्त्रोंसे मरे हुए देखकर अत्यन्त ही दुःखित होवेंगे। हे वीर कुरुराज दुर्योधन! मैं तुमसे अधिक क्या कहूं आज जो पुरुष मेरे संमुख आके युद्ध करेंगे मैं अवश्यही उन्हें अपने अस्त्रोंके प्रभाव से प्राणरहित करके यमपुरीमें भेज दूंगा क्योंकि मेरी भुजाके भीतर आके वे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवमुक्त्वा महाबाहुः पुत्रं दुर्योधनं तव ॥ १७ ॥
अभ्यवर्तत युद्धाय त्रासयन्सर्वधन्विनः ।
चिकीर्षुस्तव पुत्राणां प्रियं प्राणभृतां वरः ॥ १८ ॥
ततोऽब्रवीत्स कैकेयान्पञ्चालान्गौतमीसुतः ।
प्रहरध्वमितः सर्वे मम गात्रे महारथाः ॥ १९ ॥
स्थिरीभूताश्च युद्धयध्वं दर्शयन्तोऽस्त्रलाघवम् ।
एवमुक्तास्तु ते सर्वे शस्त्रवृष्टीरपातयन् ॥ २० ॥
द्रौणिं प्रति महाराज जले जलधरा इव ।
तान्निहत्य शरान्द्रौणिर्दश वीरानपोथयत् ॥ २१ ॥
प्रमुखे पाण्डुपुत्राणां धृष्टद्युम्नस्य च प्रभो ।
ते हन्यमानाः समरे पञ्चालाः सोमकास्तथा ॥ २२ ॥
परित्यज्य रणे द्रौणिं व्यद्रवन्त दिशो दश ।
तान्दृष्ट्वा द्रवतः शूरान्पञ्चालान्सहसोमकान् ॥ २३ ॥
धृष्टद्युम्नो महाराज द्रौणिमभ्यद्रवद्रणे ।

लोग किसी प्रकारसे भी जीते हुए न लौट सकेंगे । (१४—१७)

हे राजेन्द्र ! महाबाहु प्राणियोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाने तुम्हारे पुत्र दुर्योधनसे ऐसा वचन कहकर तेरे पुत्रके प्रियसाधन के लिये योद्धाओं को त्रस्त करते हुए पाण्डव तथा पाञ्चाल योद्धाओं के सङ्ग युद्ध करने के वास्ते प्रस्थान किया ॥ अनन्तर अपने संमुखमें पाञ्चाल और केकय योद्धाओंको स्थित देखकर पराक्रमी अश्वत्थामा उनसे यह वचन बोले, हे महारथी शूरवीरो ! तुम लोग सब कोई मिलकर अपने अस्त्रशस्त्रोंसे मेरे ऊपर प्रहार करो; और अपना हस्तलाघव दिखाते हुए स्थित होके मेरे सङ्ग युद्ध करो । अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुनकर पाञ्चाल और सोमक योद्धा लोग उनके ऊपर इस प्रकार अस्त्रशस्त्रोंकी वर्षा करने लगे, जैसे बादल आकाशसे जलकी वर्षा करते हैं । (१७—२१)

महाराज ! द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने पाण्डवों और धृष्टद्युम्नके संमुखमें ही उन लोगोंके बीचसे दश पराक्रमी वीरोंका वध किया । पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग अश्वत्थामाके बाणोंसे पीडित होकर युद्धभूमिसे हटके चारों ओर भागने लगे । (२१—२३)

पाञ्चालराजपुत्र महारथी धृष्टद्युम्न उन योद्धाओंको भागते देख युद्धसे पीछे न हटने वाले सजल बादलकी भांति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः काञ्चनचित्राणां सजलाम्बुदनादिनाम् ॥ २४ ॥
वृतः शतेन शूराणां रथानामनिवर्तिनाम् ।
पुत्रः पञ्चालराजस्य धृष्टद्युम्नो महारथः ॥ २५ ॥
द्रौणिमित्यब्रवीद्वाक्यं दृष्ट्वा योधान्निपातितान् ।
आचार्यपुत्र दुर्बुद्धे किमन्यैर्निहतैस्तव ॥ २६ ॥
समागच्छ मया सार्धं यदि शूरोऽसि संयुगे ।
अहं त्वां निहनिष्यामि तिष्ठेदानीं ममाऽग्रतः॥ २७ ॥
ततस्तमाचार्यसुतं धृष्टद्युम्नः प्रतापवान् ।
मर्मभिद्भिः शरैस्तीक्ष्णैर्जघान भरतर्षभ ॥ २८ ॥
ते तु पंक्तीकृता द्रौणिं शरा विविशुराशुगाः ।
रुक्मपुङ्खाः प्रसन्नाग्राः सर्वकायावदारणाः ॥ २९ ॥
मध्वर्थिन इवोद्दामा भ्रमराः पुष्पितं द्रुमम् ।
सोऽतिविद्धो भृशं क्रुद्धः पदाऽऽक्रान्त इवोरगः॥ ३० ॥
मानी द्रौणिरसम्भ्रान्तो बाणपाणिरभाषत ।
धृष्टद्युम्न स्थिरो भूत्वा मुहूर्तं प्रतिपालय ॥ ३१ ॥
यावत्त्वां निशितैर्बाणैः प्रेषयामि यमक्षयम् ।

गंभीर शब्दसे गर्जनेवाले एक सौ शूर वीरोंके सङ्गमें घिरकर अश्वत्थामाकी ओर दौडे; और अपनी सेनाके योद्धाओंका नाश होते देख अश्वत्थामासे बोले, हे द्रोणपुत्र ! सेनाके साधारण पुरुषोंका वध करके तुम कौनसा प्रशंसित पराक्रम प्रकाशित कर रहे हो, आके मेरे सङ्ग युद्ध करो, यदि तुम शूरवीर पुरुष हो, तो मेरे संमुख खडे होकर युद्ध करो, मैं अवश्य ही तुम्हें यमपुरीमें भेज दूंगा ॥ (२३--२७)

प्रतापी धृष्टद्युम्न ऐसा वचन कहके अश्वत्थामाके ऊपर अत्यन्त तीक्ष्ण मर्मभेदी बाणोंसे प्रहार करने लगे ॥ महाराज ! जैसे मधुके लोभी भौरोंके समूह चारों ओरसे घूमकर फूले हुए वृक्षके ऊपर वेगपूर्वक गिरते हैं वैसे ही धृष्टद्युम्नके चलाये हुए शरीरको भेद करनेवाले चोखे बाणोंके समूह अश्वत्थामाके ऊपर पडने लगे ॥ २८–३०

महामानी अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर इस प्रकार क्रुद्ध हुए जैसे पांवसे पूछ दबनेपर सर्प क्रुद्ध होता है ॥ अनन्तर अश्वत्थामा हाथमें एक बाण ग्रहण करके बोले, हे धृष्टद्युम्न ! तुम क्षण भर मेरे संमुख

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रौणिरेवमथाऽऽभाष्य पार्षतं परवीरहा ॥ ३२ ॥
छादयामास बाणौघैः समन्ताल्लघुहस्तवत् ।
स बाध्यमानः समरे द्रौणिना युद्धदुर्मदः ॥ ३३ ॥
द्रौणिं पाञ्चालतनयो वाग्भिरातर्जयत्तदा ।
न जानीषे प्रतिज्ञां मे विप्रोत्पत्तिं तथैव च ॥ ३४ ॥
द्रोणं हत्वा किल मया हन्तव्यस्त्वं सुदुर्मते ।
ततस्त्वाऽहं न हन्म्यद्य द्रोणे जीवति संयुगे ॥ ३५ ॥
इमां तु रजनीं प्राप्तामुप्रभातां सुदुर्मते ।
निहत्य पितरं तेऽद्य ततस्त्वामपि संयुगे ॥ ३६ ॥
नेष्यामि प्रेतलोकाय ह्येतन्मे मनसि स्थितम् ।
यस्ते पार्थेषु विद्वेषो या भक्तिः कौरवेषु च ॥ ३७ ॥
तां दर्शय स्थिरो भूत्वा न मे जीवन्विमोक्ष्यसे ।
यो हि ब्राह्मण्यमुत्सृज्य क्षत्रधर्मरतो द्विजः ॥ ३८ ॥
स वध्यः सर्वलोकस्य यथा त्वं पुरुषाधमः ।

युद्धभूमिमें रहो तो सही, मैं इस ही समय अपने तीक्ष्ण बाणोंसे तुम्हारा वध करके तुम्हें यमपुरीमें भेजता हूं । शत्रु-नाशन अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नसे ऐसा वचन कहके अपना हस्तलाघव प्रकाशित करते हुए लगातार अपने बाणोंको वर्षाकर चारों ओरसे धृष्टद्युम्नको छिपा दिया ॥ (३०-३३)

तिसके अनन्तर पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न अश्वत्थामाके बाणजालसे छिपकर उन्हें निवारण करते हुए यह वचन कहने लगे, हे विप्र ! तुम मेरी उत्पति और प्रतिज्ञाके विषयसे अजान नहीं हो ॥ अरे दुष्टबुद्धिवाले ! मैं पहिले द्रोणाचार्यका वध करके पीछे तेरा भी प्राण नाश करूंगा; द्रोणाचार्यके जीवित रहते आज तुम्हारा वध नहीं करूंगा ॥ हे नीचबुद्धिवाले ब्राह्मण ! आज इस ही रात्रिके समय सबेरा होनेसे पहिले ही युद्धभूमिमें तुम्हारे पिताका वध करके पीछे तुम्हें भी यमपुरीमें भेजूंगा, मैंने अपने मनमें ऐसा ही निश्चय किया है । (३३-३७)

कुन्तीपुत्रों के ऊपर तुम्हारा जैसा द्वेष और कौरवोंके ऊपर तुम्हारी जैसी भक्ति है, युद्धभूमिमें स्थित होके आज तुम उसका फल पूर्ण रीतिसे देखोगे, परन्तु जीते जी तुम मेरे सम्मुखसे मुक्त न हो सकोगे । हे ब्राह्मणाधम ! जो ब्राह्मण तेरी भांति ब्राह्मणका कर्म

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्युक्तः परुषं वाक्यं पार्षतेन द्विजोत्तमः ॥ ३९ ॥
क्रोधमाहारयत्तीव्रं तिष्ठ तिष्ठेति चाऽब्रवीत् ।
निर्दहन्निव चक्षुर्भ्यां पार्षतं सोऽभ्यवैक्षत ॥ ४० ॥
छादयामास च शरैर्निःश्वसन्पन्नगो यथा ।
स च्छाद्यमानः समरे द्रौणिना राजसत्तम ॥ ४१ ॥
सर्वपाञ्चालसेनाभिः संवृतो रथसत्तमः ।
नाऽकम्पत महाबाहुः स्ववीर्यं समुपाश्रितः ॥ ४२ ॥
सायकांश्चैव विविधानभ्यस्यन्नि सुनाभ हे ।
तौ पुनः संन्यवर्तेतां प्राणद्यूतपणे रणे ॥ ४३ ॥
निपीडयन्तौ बाणौघैः परस्परममर्षिणौ ।
उत्सृजन्तौ महेष्वासौ शरवृष्टीः समन्ततः ॥ ४४ ॥
द्रौणिपार्षतयोर्युद्धं घोररूपं भयानकम् ।
दृष्ट्वा सम्पूजयामासुः सिद्धचारणवातिकाः ॥ ४५ ॥
शरौघैः पूरयन्तौ तावाकाशं च दिशस्तथा ।

छोडके क्षत्रिय धर्ममें रत होता है वह सम्पूर्ण पुरुषोंका ही वध्य होजाता है। (३७-३९)

महाराज ! द्विजसत्तम अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके ऐसे कडवे वचनोंको सुनकर अत्यन्तही क्रुद्ध होकर इस प्रकार उनकी ओर देखने लगे मानो दृष्टिसे देखकर ही उसे भस्म कर देंगे। अनन्तर अश्वत्थामा सर्पके समान बार बार लम्बी और गर्म सांस छोडके खडा रह ! खडा रह ! कहके अपने अनेक बाणोंकी वर्षासे धृष्टद्युम्नको छिपाने लगे। (३९-४१)

हे महाराज ! पाञ्चाल सेनाके बीच घिरे हुए रथियोंमें मुख्य धृष्टद्युम्न अश्वत्थामा के बाणोंसे छिपे जानेपर थोडा भी विचलित नहीं हुए और वीर्य बलके आसरेसे अश्वत्थामाकी ओर अनेक तीक्ष्ण बाण चलाने लगे। इसी भांति वे दोनो महाधनुर्द्धारी वीर प्राणपणसे रणभूमिके बीच स्थित होके एक दूसरेके वधकी इच्छा करके अपने बाणोंसे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करके दोनों ही पीडित हुए फिर जलधाराकी भांति चारों ओर लगातार अपने बाणोंको वर्षाने लगे। पृषत वंशीय धृष्टद्युम्न और द्रोण पुत्र अश्वत्थामाके महाघोर भयङ्कर युद्धको देखकर सिद्ध चारण और वायुमें गमन करनेवाले प्राणी उन दोनों वीरों की अत्यन्त ही प्रशंसा करने लगे ॥ (४१-४५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलक्ष्यौ समयुध्येतां महत्कृत्वा शरैस्तमः ॥ ४६ ॥
नृत्यमानाविव रणे मण्डलीकृतकार्मुकौ ।
परस्परवधे यत्तौ सर्वभूतभयङ्करौ ॥ ४७ ॥
अयुध्येतां महाबाहू चित्रं लघु च सुष्ठु च ।
सम्पूज्यमानौ समरे योधमुख्यैः सहस्रशः ॥ ४८ ॥
तौ प्रबुद्धौ रणे दृष्ट्वा वने वन्यौ गजाविव ।
उभयोः सेनयोर्हर्षस्तुमुलः समपद्यत ॥ ४९ ॥
सिंहनादरवांश्चाऽऽसन्दृष्ट्वा युद्धांश्च सैनिकाः ।
वादित्राण्यभ्यवाद्यन्त शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ५० ॥
तस्मिंस्तु तुमुले युद्धे भीरूणां भयवर्धने ।
मुहूर्तमपि तद्युद्धं समरूपं तदाऽभवत् ॥ ५१ ॥
ततो द्रौणिर्महाराज पार्षतस्य महात्मनः ।
ध्वजं धनुस्तथा छत्रमुभौ च पार्ष्णिसारथी ॥ ५२ ॥
सूतमश्वांश्च चतुरो निहत्याऽभ्यद्रवद्रणे ।
पञ्चालांश्चैव तान्सर्वान्बाणैः सन्नतपर्वभिः ॥ ५३ ॥

उन दोनों वीरोंने अपने बाणोंको चलाकर सब दिशा और आकाशमण्डल को परिपूरित कर के ऐसा अन्धकार उत्पन्न किया, कि दोनों ही अदृश्य हो कर युद्ध करने लगे ॥ आपस में एक दूसरेके वधकी इच्छा करनेवाले यत्नवान् और महाबलवान् वे दोनो वीर मण्डलाकार गतिसे धनुष फेरते तथा एक दूसरेको जीतनेकी अभिलाषासे नाना भांतिके युद्ध कौशल दिखाते हुए सहस्रों सेनाध्यक्ष पुरुषोंसे प्रशंसित होकर युद्ध करने लगे ॥ (४६–४८)

महाराज ! सेनाके लोग दोनोंको वन के दो मतवारे हाथीकी भांति रणभूमिमें युद्ध करते देख हर्षपूर्वक बार बार शंख और युद्धके सैकडों सहस्रों जुझाऊ बाजे बजाकर सिंहनाद करने लगे । कादरोंके भयको बढानेवाले उस महाघोर तुमुल संग्रामके समय मुहूर्त्त भरतक उन दोनों का समभावसे युद्ध होता रहा ॥ ४९-५१

तिसके अनन्तर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने महात्मा धृष्टद्युम्नके रथकी ध्वजा, दण्ड, छत्र, चारों घोडे, सारथी, दो पृष्ठरक्षक योद्धाओं और उनके धनुषको काट दिया । अनन्तर पराक्रमी अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नकी ओर दौडे । उस समय अत्यन्त तेजस्वी अश्वत्थामा सैकडों सहस्रों पाञ्चाल योद्धाओंको अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यद्रावयदमेयात्मा शतशोऽथ सहस्रशः ।
ततस्तु विव्यथे सेना पाण्डवी भरतर्षभ ॥ ५४ ॥
दृष्ट्वा द्रौणेर्महत्कर्म वासवस्येव संयुगे ।
शतेन च शतं हत्वा पञ्चालानां महारथः ॥ ५५ ॥
त्रिभिश्च निशितैर्बाणैर्हत्वा त्रीन्वै महारथान् ।
द्रौणिर्द्रुपदपुत्रस्य फाल्गुनस्य च पश्यतः ॥ ५६ ॥
नाशयामास पञ्चालान्भूयिष्ठं ये व्यवस्थिताः ।
ते वध्यमानाः पञ्चालाः समरे सह सृञ्जयैः ॥ ५७ ॥
अगच्छन्द्रौणिमुत्सृज्य विप्रकीर्णरथध्वजाः ।
स जित्वा समरे शत्रून्द्रोणपुत्रो महारथः ॥ ५८ ॥
ननाद सुमहानादं तपान्ते जलदो यथा ।
स निहत्य बहून्शूरानश्वत्थामा व्यरोचत ।
युगान्ते सर्वभूतानि भस्म कृत्वेव पावकः ॥ ५९ ॥

बाणोंके प्रहारसे पीडित करके उन्हें छिन्न भिन्न कर के युद्धभूमिसे भगाने लगे। (५२—५४)

हे राजन् ! रणभूमिके बीच द्रोणपुत्र अश्वत्थामाका इन्द्रके समान पराक्रम देखकर पाण्डव और पाञ्चाल सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भयभीत होगये; क्योंकि महा रथी अश्वत्थामाने एक सौ बाणोंसे एक सौ और तीन चोखे बाणोंसे तीन महारथियोंका वध किया। अधिक क्या कहा जावे, उस समय पाञ्चाल सेनाके जितने योद्धा अश्वत्थामाके संमुख उपस्थित हुए, पराक्रमी अश्वत्थामाने अर्जुन और धृष्टद्युम्नके संमुखमेंही उन शूरवीरों के बीचसे अनेक योद्धाओंका वध करके उन्हें यमपुरीमें भेज दिया ॥ ५४-५७

इसी भांति पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग अश्वत्थामाके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर ध्वजा दण्ड आदि टूटे हुए रथोंपर चढके उनके संमुखसे भागने लगे। उस समय महारथी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा रणभूमिके बीच अनगिनत शत्रुओंको पराजित करके वर्षाकाल के बादलकी भांति सिंहनाद करके गर्जने लगे। और जैसे प्रलयकालकी अग्नि सम्पूर्ण प्राणियोंको भस्म करके प्रकाशित होती है, वैसे ही पराक्रमी अश्वत्थामा भी शत्रुओंका नाश करके युद्धभूमिके बीच शोभित हुए ॥ जैसे देवराज इन्द्र दानवोंकी सेनाका नाश करके शोभित हुए थे वैसेही प्रतापी अश्वत्थामा भी युद्धभूमि के बीच सहस्रों शत्रुओं का नाश

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पूज्यमानो युधि कौरवेयैर्निर्जित्य संख्येऽरिगणान्सहस्रशः ।
व्यरोचत द्रोणसुतः प्रतापवान्यथा सुरेन्द्रोऽरिगणान्निहत्य वै ॥६०॥ ७

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे अश्वत्थामपराक्रमे षष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः

सञ्जय उवाच— ततो युधिष्ठिरश्चैव भीमसेनश्च पाण्डवः ।
द्रोणपुत्रं महाराज समन्तात्पर्यवारयन् ॥ १ ॥
ततो दुर्योधनो राजा भारद्वाजेन संवृतः ।
अभ्ययात्पाण्डवान्संख्ये ततो युद्धमवर्तत ॥ २ ॥
घोररूपं महाराज भीरूणां भयवर्धनम् ।
अम्बष्ठान्मालवान्वङ्गाञ्छिबींस्त्रैगर्तकानपि ॥ ३ ॥
प्राहिणोन्मृत्युलोकाय गणान्क्रुद्धो वृकोदरः । [७२३८]
अभीषाहाञ्शूरसेनान्क्षत्रियान्युद्धदुर्मदान् ॥ ४ ॥
निकृत्य पृथिवीं चक्रे भीमः शोणितकर्दमाम् ।
यौधेयानद्रिजान्राजन्मद्रकान्मालवानपि ॥ ५ ॥
प्राहिणोन्मृत्युलोकाय किरीटी निशितैः शरैः ।
प्रगाढमज्जोगतिभिर्नाराचैरभिताडिताः ॥ ६ ॥
निपेतुर्द्विरदा भूमौ द्विशृङ्गा इव पर्वताः ।

करके कौरवोंसे सम्मानित तथा प्रशंसित होकर शोभित होने लगे ॥ (५७-६०)

द्रोणपर्वमें एकसौ साठ अध्याय समाप्त । ७२१९

द्रोणपर्वमें एकसौ इकसठ अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! तिसके अनन्तर भीमसेन और धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने चारों ओरसे अश्वत्थामाको घेर लिया ॥ वैसे ही कुरुराज दुर्योधन भी भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यके सहित पाण्डवोंकी ओर दौडे॥ अनन्तर डरपोक पुरुषोंके भयको बढानेवाला उन शूरवीरोंका आपसमें महाघोर दारुण संग्राम होने लगा ॥ (१-३)

उस समय धर्मपुत्र युधिष्ठिर अम्बष्ठ, मालव, वङ्ग, शिबि और त्रिगर्त्त देशीय योद्धाओंका वध करके उन्हें यमपुरीमें भेजने लगे । भीमसेनने भी युद्ध दुर्मद अभीषाह और शूरसेन देशीय क्षत्रियोंको खंड खंड करके उनके रुधिरसे पृथ्वीको कीचडमयी कर दिया । उस ही समय किरीटमाली अर्जुन भी यौधेय, अद्रिज, मालव और मद्र देशीय वीरोंको अपने चोखे बाणोंसे प्राण विहीन करके यमपुरीमें भेजने लगे । सेनाके बीच बहुतेरे मतवारे हाथी अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर दोशृङ्गवाले पर्वतकी भांति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकृत्तैर्हस्तिहस्तैश्च चेष्टमानैरितस्ततः ॥ ७ ॥
रराज वसुधा कीर्णा विसर्पद्भिरिवोरगैः।
क्षितैः कनकचित्रैश्च नृपच्छत्रैः क्षितिर्बभौ ॥ ८ ॥
द्यौरिवाऽऽदित्यचन्द्राद्यैर्ग्रहैः कीर्णा युगक्षये।
हत प्रहरताऽभीता विध्यत व्यवकृन्तत ॥ ९ ॥
इत्यासीत्तुमुलः शब्दः शोणाश्वस्य रथं प्रति।
द्रोणस्तु परमक्रुद्धो वायव्यास्त्रेण संयुगे ॥ १० ॥
व्यधमत्तान्महावायुर्मेघानिव दुरत्ययः।
ते हन्यमाना द्रोणेन पञ्चालाः प्राद्रवन्भयात् ॥ ११ ॥
पश्यतो भीमसेनस्य पार्थस्य च महात्मनः।
ततः किरीटी भीमश्च सहसा संन्यवर्तताम् ॥ १२ ॥
महता रथवंशेन परिगृह्य बलं महत्।
बीभत्सुर्दक्षिणं पार्श्वमुत्तरं तु वृकोदरः ॥ १३ ॥
भारद्वाजं शरौघाभ्यां महद्भ्यामभ्यवर्षताम्।
तौ तथा सृञ्जयाश्चैव पञ्चालाश्च महौजसः ॥ १४ ॥
अन्वगच्छन्महाराज मत्स्यैश्च सह सोमकैः।

मरकर रणभूमिमें गिरने लगे। (३–७)

रणभूमिमें गिरे हुए तथा कटे हुए कितने ही हाथियोंके सूण्ड रणभूमिमें गिर कर सर्पके समान दिखाई देते थे; और सुवर्णचित्रित राजाओंके छत्र जो इधर उधर कटके पृथ्वीमें पडे थे उनसे वह रणभूमि इस प्रकार प्रकाशित होरही थी जैसे प्रलयकालके समय सूर्य चन्द्रमा और तारोंसे युक्त आकाशमण्डल शोभित होता है। महाराज! उस समय "मारो, शस्त्र चलाओ, निर्भय होके विद्ध करो! काटो" लाल घोडोंसे युक्त द्रोणाचार्यके रथके निकट इसी प्रकार शब्द सुनाई देने लगे। (७–१०)

जैसे प्रचण्ड वायु बादलोंके समूहको छिन्न भिन्न कर देता है वेसे ही क्रुद्ध द्रोणाचार्यके अस्त्रोंसे पीडित होकर पाञ्चाल योद्धालोग महात्मा भीमसेन और अर्जुनके सम्मुखमें ही रणभूमिमें भागने लगे। (१०–१२)

तिसके अनन्तर भीमसेन और अर्जुनने बहुतसी रथियोंकी सेना सङ्ग लेकर क्रमसे उत्तर और दक्षिणसे द्रोणाचार्यको आक्रमण करके उनके ऊपर अनेक तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे। तब मत्स्य और सोमकवंशीय वीरोंके सहित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथैव तव पुत्रस्य रथोदाराः प्रहारिणः ॥ १५ ॥
महत्या सेनया राजञ्जग्मुर्द्रोणरथं प्रति ।
ततः सा भारती सेना हन्यमाना किरीटिना ॥ १६ ॥
तमसा निद्रया चैव पुनरेव व्यदीर्यत ।
द्रोणेन वार्यमाणास्ते स्वयं तव सुतेन च ॥ १७ ॥
नाऽशक्नुवन्त महाराज योधा वारयितुं तदा ।
सा पाण्डुपुत्रस्य शरैर्दीर्यमाणा महाचमूः ॥ १८ ॥
तमसा संवृते लोके व्यद्रवत्सर्वतोमुखी ।
उत्सृज्य शतशो वाहांस्तत्र केचिन्नराधिपाः ।
प्राद्रवन्त महाराज भयाविष्टाः समन्ततः ॥ १९ ॥ [७२३८]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे संकुलयुद्धे एकषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः॥१६१॥

सञ्जय उवाच— सोमदत्तं तु सम्प्रेक्ष्य विधुन्वानं महद्धनुः ।
सात्यकिः प्राह यन्तारं सोमदत्ताय मां वह ॥ १ ॥
नह्यहत्वा रणे शत्रुं सोमदत्तं महाबलम् ।
निवर्तिष्ये रणात्सूत सत्यमेतद्ब्रवो मम ॥ २ ॥

पाञ्चाल योद्धा उनके अनुगामी हुए । वैसे ही तुम्हारी सेनाके भी मुख्य मुख्य योद्धा लोग सेनाके अनेक पुरुषोंके सहित द्रोणाचार्यकी सहायतामें उपस्थित हुए; परन्तु अन्धकार और निद्रासे दुःखित हुए कुरुसेनाके योद्धा लोग अर्जुनके बाणोंसे पीडित होकर फिर छिन्न भिन्न होगये । (१२–१७)

उस समय उन योद्धाओंको भागते देख पराक्रमी द्रोणाचार्य और तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने स्वयं निवारण किया; परन्तु तौ भी वे लोग भागनेसे निवृत्त नहीं हुए । महाराज ! उस महाघोर अन्धकारके समय तुम्हारे पुत्रोंकी सेना पाण्डुपुत्रोंके अस्त्रोंकी चोटसे व्याकुल होके चारों ओर दौडने लगी ॥ सेनापति योद्धा तथा पराक्रमी राजा लोग अपने वाहनोंको त्याग करके भयभीत होकर चारों ओर भागने लगे॥ (१७-१९)

द्रोणपर्वमें एकसौ इकसठ अध्याय समाप्त। ७२३८

द्रोणपर्वमें एकसौ बासठ अध्याय ।

सञ्जय बोले महाराज ! इस ही समय सात्यकि सोमदत्तको धनुष फेरते देख, अपने सारथीसे बोले, हे सूत ! तुम मुझे सोमदत्तके समीप लेचलो ॥ मैं सत्य वचन कहता हूं, कि आज मैं विना इस कुरुकुलाधम सोमदत्तको मारे युद्धसे निवृत्त न होऊंगा ॥ (१–२)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः सम्प्रैषयद्यन्ता सैन्धवांस्तान्मनोजवान् ।
तुरङ्गमाञ्छङ्खवर्णान्सर्वशब्दातिगान्रणे ॥ ३ ॥
तेऽवहन्युयुधानं तु मनोमारुतरंहसः ।
यथेन्द्रं हरयो राजन्पुरा दैत्यवधोद्यतम् ॥ ४ ॥
तमापतन्तं संप्रेक्ष्य सात्वतं रभसं रणे ।
सोमदत्तो महाबाहुरसम्भ्रान्तो न्यवर्तत ॥ ५ ॥
विसृञ्छरवर्षाणि पर्जन्य इव वृष्टिमान् ।
छादयामास शैनेयं जलदो भास्करं यथा ॥ ६ ॥
असम्भ्रान्तश्च समरे सात्यकिः कुरुपुङ्गवम् ।
छादयामास बाणौघैः समन्ताद्भरतर्षभ ॥ ७ ॥
सोमदत्तस्तु तं षष्ट्या विव्याधोरसि माधवम् ।
सात्यकिश्चाऽपि तं राजन्नविध्यत्सायकैः शितैः॥ ८ ॥
तावन्योन्यं शरैः कृत्तौ व्यराजेतां नरर्षभौ।
सुपुष्पौ पुष्पसमये पुष्पिताविव किंशुकौ ॥ ९ ॥
रुधिरोक्षितसर्वाङ्गौ कुरुवृष्णियशस्करौ ।

सारथीने सात्यकिका वचन सुनकर मनके समान शीघ्र गमन करनेवाले शङ्ख के समान सफेद कान वाले सिन्धु देशीय सुन्दर घोडोंको वेगपूर्वक सोमदत्तकी ओर चलाया ॥ महाराज ! जैसे असुरोंके नाश करनेवाले देवराज इन्द्रके रथके घोडे उनके रथको खींचते हुए रणभूमि में गमन करते हैं, वैसेही मन और वायु के समान शीघ्र गमन करनेवाले घोडे सात्यकिके रथको खींचते हुए रणभूमि के बीच गमन करने लगे ॥ (३-४)

महाबाहु सोमदत्तने सात्यकिको वेग पूर्वक अपनी ओर आते देख जैसे जल युक्त बादल सूर्यको छिपाता है, वैसेही सात्यकिको अपने बाणोंसे छिपाते हुए निर्भयचित्तसे उनकी ओर दौडे ॥ सात्यकि भी निर्भयचित्तसे अपने बाणोंकी वर्षा करके चारों ओरसे कौरवोंमें मुख्य सोमदत्तको छिपाने लगे ॥ (५—७)

तिसके अनन्तर सोमदत्तने आठ बाणोंसे यदुवंशी सात्यकिके वक्षस्थलमें प्रहार किया और सात्यकिने भी अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे सोमदत्तको विद्ध किया ॥ महाराज ! इसी भांति कौरव और वृष्णिवंशके यशको बढानेवाले पुरुषश्रेष्ठ सोमदत्त और सात्यकि आपसमें एक दूसरेके बाणकी चोटसे रुधिरपूरित तथा क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होकर फूले हुए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परमवेक्षेतां दहन्ताविव लोचनैः ॥ १० ॥
रथमण्डलमार्गेषु चरन्तावरिमर्दनौ ।
घोररूपौ हि तावास्तां वृष्टिमन्ताविवाऽम्बुदौ ॥ ११ ॥
शरसम्भिन्नगात्रौ तु सर्वतः शकलीकृतौ ।
श्वाविधाविव राजेन्द्र दृश्येतां शरविक्षतौ ॥ १२ ॥
सुवर्णपुङ्खैरिषुभिराचितौ तौ व्यराजताम् ।
खद्योतैरावृतौ राजन्प्रावृषीव वनस्पती ॥ १३ ॥
संप्रदीपितसर्वाङ्गौ सायकैस्तैर्महारथौ ।
अदृश्येतां रणे क्रुद्धावुल्काभिरिव कुञ्जरौ ॥ १४ ॥
ततो युधि महाराज सोमदत्तो महारथः ।
अर्धचन्द्रेण चिच्छेद माधवस्य महद्धनुः ॥ १५ ॥
अथैनं पञ्चविंशत्या सायकानां समार्पयत् ।
त्वरमाणस्त्वराकाले पुनश्च दशभिः शरैः ॥ १६ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय सात्यकिर्वेगवत्तरम् ।
पञ्चभिः सायकैस्तूर्णं सोमदत्तमविध्यत ॥ १७ ॥

पलाश वृक्षकी भांति रणभूमिमें शोभित हुए; और इस भांति वे दोनों आपसमें एक दूसरेको देखने लगे, मानो देखकर ही एक दूसरेको भस्म कर देंगे ॥ (८-१०)

दोनों शत्रुनाशन वीर मण्डलाकार गतिसे रथपर घूमते हुए इस प्रकार अपने बाणोंको वर्षाने लगे जैसे बादल जलकी वर्षा करते हैं ॥ उस समय वे दोनों वीर आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे इस प्रकार विद्ध हुए कि उन दोनोंके शरीर बाणमय दिखाई देने लगे । और वे दोनों वीर सुवर्ण पुंखवाले बाणोंसे परिपूरित शरीर होकर मानो वर्षाकालके खद्योतसमूहसे युक्त दो वृक्षकी भांति मालूम होने लगे ॥ (११-१३)

इसी प्रकार महारथी सोमदत्त और सात्यकि आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे पीडित होकर मानो रणभूमिमें लुकसे युक्त दो हाथियोंकी भांति युद्धभूमिमें विराजमान हुए ॥ तिसके अनन्तर महारथी सोमदत्तने अर्धचंद्र बाणसे यदुवीर सात्यकिके बडे धनुषको काट दिया और पचीस बाणोंसे उन्हें विद्ध करके शीघ्रताके सहित फिर दश बाणोंसे विद्ध किया ॥ (१४-१६)

तब सात्यकिने एक दृढ धनुष ग्रहण करके पांच बाणोंसे सोमदत्तको विद्ध किया ॥ तिसके अनन्तर सात्यकिने फिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततोऽपरेण भल्लेन ध्वजं चिच्छेद काञ्चनम् ।
बाह्लीकस्य रणे राजन्सात्यकिः प्रहसन्निव ॥ १८ ॥
सोमदत्तस्त्वसम्भ्रान्तो दृष्ट्वा केतुं निपातितम् ।
शैनेयं पञ्चविंशत्या सायकानां समाचिनोत् ॥ १९ ॥
सात्वतोऽपि रणे क्रुद्धः सोमदत्तस्य धन्विनः ।
धनुश्चिच्छेद भल्लेन क्षुरप्रेण शितेन ह ॥ २० ॥
अथैनं रुक्मपुङ्खानां शतेन नतपर्वणाम् ।
आचिनोद्बहुधा राजन्भग्नदंष्ट्रमिव द्विपम् ॥ २१ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय सोमदत्तो महारथः ।
सात्यकिं छादयामास शरवृष्ट्या महाबलः ॥ २२ ॥
सोमदत्तं तु संक्रुद्धो रणे विव्याध सात्यकिः ।
सात्यकिं शरजालेन सोमदत्तोऽप्यपीडयत् ॥ २३ ॥
दशभिः सात्वतस्याऽर्थे भीमोऽहन्बाह्लिकात्मजम् ।
सोमदत्तोऽप्यसम्भ्रान्तो भीममार्च्छच्छितैः शरैः॥२४॥
ततस्तु सात्वतस्याऽर्थे भीमसेनो नवं दृढम् ।
मुमोच परिघं घोरं सोमदत्तस्य वक्षसि ॥ २५ ॥

एक बाण चलाकर बाह्लिकपुत्र सोमदत्तके रथकी सुवर्णदण्डभूषित ध्वजा काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ सोमदत्तने अपने रथकी ध्वजाको सात्यकिके बाणसे कटती देख निर्भयचित्तसे शिनिपौत्र सात्यकिके शरीरमें वीस बाणोंसे प्रहार किया ॥ (१७–१९)

अनन्तर सात्यकिने भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक तेज क्षुरप्र अस्त्रसे सोमदत्तका धनुष काट दिया ! और दांत टूटे हुए हाथीकी भांति सोमदत्तको सुवर्णदण्डवाले अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे छिपाने लगे ॥ अनन्तर महाबली सोमदत्त दूसरा धनुष ग्रहण करके अपने बाणोंको वर्षाकर सात्यकिको छिपाने लगे ॥ (२०-२२)

इसी प्रकार वे दोनों वीर क्रुद्ध होकर अपने अनगिनत बाणोंसे एक दूसरेको पीडित करने लगे। इस ही समय भीमसेनने सात्यकिकी सहायता करनेके वास्ते दश बाणोंसे सोमदत्तके शरीरमें प्रहार किया; परन्तु सोमदत्त निर्भय चित्तसे केवल भीमसेनकोही अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे ॥ तिसके अनन्तर भीमसेनने सात्यकिकी सहायता करनेकी इच्छासे अत्यन्त दृढ एक परिघ उठाकर सोमदत्तकी ओर चलाया ॥ (२३–२५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमापतन्तं वेगेन परिघं घोरदर्शनम् ।
द्विधा चिच्छेद समरे प्रहसन्निव कौरवः ॥ २६ ॥
स पपात द्विधा च्छिन्न आयसः परिघो महान् ।
महीधरस्येव महच्छिखरं वज्रदारितम् ॥ २७ ॥
ततस्तु सात्यकी राजन्सोमदत्तस्य संयुगे ।
धनुश्चिच्छेद भल्लेन हस्तावापं च पञ्चभिः ॥ २८ ॥
ततश्चतुर्भिश्च शरैस्तूर्णं तांस्तुरगोत्तमान् ।
समीपं प्रेषयामास प्रेतराजस्य भारत ॥ २९ ॥
सारथेश्च शिरः कायाद्भल्लेन नतपर्वणा ।
जहार नरशार्दूलः प्रहसञ्छिनिपुङ्गवः ॥ ३० ॥
ततः शरं महाघोरं ज्वलन्तमिव पावकम् ।
मुमोच सात्वतो राजन्स्वर्णपुङ्खं शिलाशितम् ॥ ३१ ॥
स विमुक्तो बलवता शैनेयेन शरोत्तमः ।
घोरस्तस्योरसि विभो निपपाताऽऽशु भारत ॥ ३२ ॥
सोऽतिविद्धो महाराज सात्वतेन महारथः ।
सोमदत्तो महाबाहुर्निपपात ममार च ॥ ३३ ॥
तं दृष्ट्वा निहतं तत्र सोमदत्तं महारथाः ।

महाराज ! कौरवोंमें मुख्य सोमदत्तने उस भयानक परिघको अपनी ओर आते देख निर्भयताके सहित तीक्ष्ण बाणोंसे काटके दो खण्ड कर दिया ॥ महाराज ! वह लोहमय परिघ सोमदत्तके बाणसे दो टुकडे होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा जैसे वज्रकी चोटसे पर्वत टुकडे टुकडे हो गिर पडता है ॥ (२६–२७)

उसे देखकर शिनिपौत्र सात्यकिने शीघ्रताके सहित भल्लास्त्रसे उनका धनुष काट कर पांच बाणोंसे उनके हस्तत्राण और चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोडोंको मार डाला ॥ फिर हंसते हंसते एक तीक्ष्ण भल्लास्त्र से उन के सारथी का सिर काट के धड से अलग कर दिया ॥ (२८–३०)

तिसके अनन्तर सात्यकिने शिलापर घिसे हुए महाभयङ्कर बाण ग्रहण करके सोमदत्तकी ओर चलाये । महाराज ! अत्यन्त भयङ्कर वह बाण शिनिपौत्र बलवान् सात्यकिके धनुषसे छूटकर शीघ्रही सोमदत्तके वक्षस्थल पर गिरा॥ राथियोंमें मुख्य महाबाहु सोमदत्त उस बाणसे अत्यन्त विद्ध होके उसही समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महता शरवर्षेण युयुधानमुपाद्रवन् ॥ ३४ ॥
छाद्यमानं शरैर्दृष्ट्वा युयुधानं युधिष्ठिरः ।
पाण्डवाश्च महाराज सह सर्वैः प्रभद्रकैः ॥
महत्या सेनया सार्धं द्रोणानीकमुपाद्रवन् ॥ ३५ ॥
ततो युधिष्ठिरः क्रुद्धस्तावकानां महाबलम् ।
शरैर्विद्रावयामास भारद्वाजस्य पश्यतः ॥ ३६ ॥
सैन्यानि द्रावयन्तं तु द्रोणो दृष्ट्वा युधिष्ठिरम् ।
अभिदुद्राव वेगेन क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ ३७ ॥
ततः सुनिशितैर्बाणैः पार्थं विव्याध सप्तभिः ।
युधिष्ठिरोऽपि संक्रुद्धः प्रतिविव्याध पञ्चभिः ॥ ३८ ॥
सोऽतिविद्धो महाबाहुः सृक्किणी परिसंलिहन् ।
युधिष्ठिरस्य चिच्छेद ध्वजं कार्मुकमेव च ॥ ३९ ॥
स च्छिन्नधन्वा त्वरितस्त्वराकाले नृपोत्तमः ।
अन्यदादत्त वेगेन कार्मुकं समरे दृढम् ॥ ४० ॥
ततः शरसहस्रेण द्रोणं विव्याध पार्थिवः ।

मर कर पृथ्वीमें गिर पडे ॥ (३१-३३)

कुरुसेनाके योद्धा लोग महारथी सोमदत्तको मरते देख महाघोर बाणोंकी वर्षा करते हुए सात्यकिकी ओर दौडे ॥ धर्मपुत्र युधिष्ठिर सात्यकिको तुम्हारी सेनाके वीरोंके बाणजालमें छिपे देख अपनी बडी सेनाके सहित द्रोणाचार्यकी सेनाकी ओर दौडे ॥ उस समय राजा युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्यके सम्मुखमें ही तुम्हारी महासेनाके योद्धाओंको रणभूमिमें तितर बितर करने लगे ॥ (३४-३६)

तब द्रोणाचार्य राजा युधिष्ठिरको अपनी ओरके योद्धाओंको छिन्न भिन्न करते देख क्रोधसे लाल नेत्र करके उनकी ओर दौडे और सात तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। राजा युधिष्ठिरने अत्यन्त क्रुद्ध होकर पांच बाणोंसे द्रोणाचार्यको विद्ध किया ॥ महाबाहु द्रोणाचार्यने युधिष्ठिरके तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त विद्ध हो दांत पीसते हुए उनका धनुष और उनके रथकी ध्वजाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे काट दिया ॥ (३७-३९)

धनुष कटने पर राजा युधिष्ठिरने शीघ्रताके सहित फिर एक दृढ धनुष ग्रहण करके घोडे सारथी और रथके सहित द्रोणाचार्यको अनगिनत बाणोंसे विद्ध किया, उस समय युधिष्ठिरका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साश्वसूतध्वजरथं तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ ४१ ॥
ततो मुहूर्तं व्यथितः शरपातप्रपीडितः ।
निषसाद रथोपस्थे द्रोणो भरतसत्तम ॥ ४२ ॥
प्रतिलभ्य ततः संज्ञां मुहूर्ताद् द्विजसत्तमः ।
क्रोधेन महताऽऽविष्टो वायव्यास्त्रमवासृजत् ॥ ४३ ॥
असम्भ्रान्तस्ततः पार्थो धनुराकृष्य वीर्यवान् ।
ततस्तदस्त्रमस्त्रेण स्तम्भयामास भारत ॥ ४४ ॥
चिच्छेद च धनुर्दीर्घं ब्राह्मणस्य च पाण्डवः ।
ततोऽन्यद्धनुरादाय द्रोणः क्षत्रियमर्दनः ॥ ४५ ॥
तदप्यस्य शितैर्भल्लैश्चिच्छेद कुरुपुङ्गवः ।
ततोऽब्रवीद्वासुदेवः कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ ४६ ॥
युधिष्ठिर महाबाहो यत्त्वां वक्ष्यामि तच्छृणु ।
उपारमस्व युद्धे त्वं द्रोणाद्भरतसत्तम ॥ ४७ ॥
यतते हि सदा द्रोणो ग्रहणे तव संयुगे ।
नाऽनुरूपमहं मन्ये युद्धमस्य त्वया सह ॥ ४८ ॥
योऽस्य सृष्टो विनाशाय स एवैनं हनिष्यति ।

पराक्रम अद्भुतरूपसे दीख पडा॥४०-४१

द्रोणाचार्य राजा युधिष्ठिरके बाणोंसे पीडित होकर ऐसे कातर हुए कि मुहूर्त्त भर तक रथ पर मूर्च्छित रहे ॥ थोडी देरके बाद द्रोणाचार्यने सावधान होकर क्रोध पूर्वक वायव्य अस्त्र चलाया ॥ महाराज ! पराक्रमी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने निर्भयचित्तसे अपने अस्त्रोंके वायव्य अस्त्रको निवारण [illegible] चार्यका धनुष काटा, कर्ण और शत्रु-नाश करनेवाले भीमसेन और सात्यकि, धनुष्य ग्रहण कि[illegible] युधिष्ठिरने उस धनु[illegible]

भल्ल बाणोंसे काटडाला । (४२—४६)

उस ही समय श्रीकृष्णजी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरको पुकारके यह वचन बोले, हे महाबाहु युधिष्ठिर ! मैं तुमसे जो कुछ कहता हूं उसे सुनो; आप द्रोणाचार्यसे युद्ध न कीजिये ॥ क्योंकि वह युद्धभूमि में तुम्हें पकडने के वास्ते हर समय आशा कर रहे हैं; विशेष करके द्रोणाचार्य के सङ्ग तुम्हारा संग्राम उचित नहीं मालूम होता है, जिन्होंने द्रोणाचार्यके वध करनेके वास्ते इस पृथ्वीपर जन्म लिया है, वही धृष्टद्युम्न कल्ह भोरके समय अन्धेरा [illegible] करेंगे । आप द्रोणा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्ज्य गुरुं याहि यत्र राजा सुयोधनः ॥ ४९ ॥
राजा राज्ञा हि योद्धव्यो नाऽराज्ञा युद्धमिष्यते ।
तत्र त्वं गच्छ कौन्तेय हस्त्यश्वरथसंवृतः ॥ ५० ॥
यावन्मात्रेण च मया सहायेन धनञ्जयः ।
भीमश्च रथशार्दूलो युध्यते कौरवैः सह ॥ ५१ ॥
वासुदेववचः श्रुत्वा धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
मुहूर्तं चिन्तयित्वा तु ततो दारुणमाहवम् ॥ ५२ ॥
प्रायाद् द्रुतमभित्रघ्नो यत्र भीमो व्यवस्थितः ।
विनिघ्नंस्तावकान्योधान्व्यादितास्य इवाऽन्तकः ॥५३॥
रथघोषेण महता नादयन्वसुधातलम् ।
पर्जन्य इव घर्मान्ते नादयन्वै दिशो दश ॥ ५४ ॥
भीमस्याऽनिघ्नतः शत्रून्पार्ष्णिं जग्राह पाण्डवः ।
द्रोणोऽपि पाण्डुपञ्चालान्व्यधमद्रजनीमुखे ॥ ५५ ॥ [७२९३]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे द्विषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १६२ ॥

सञ्जय उवाच— वर्तमाने तथा युद्धे घोररूपे भयावहे ।

चार्यको त्यागके जहांपर राजा सुयोधन स्थित है उस ही स्थानमें गमन कीजिये क्योंकि राजा लोगोंको राजाके सङ्ग ही युद्ध करना उचित है । हे राजेन्द्र ! इस स्थलमें पुरुषसिंह भीमसेन और अर्जुन केवल अकेले मेरी सहायतासे ही शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हैं । आप से[illegible]थी घोडे और रथियोंकी सेनाके यु[illegible]हित दुर्योधनके समीप गमन कीजिये ॥ (४७—५१)

धर्मराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णके वचनको सुनकर क्षण भर तक उस महाघोर संग्रामके विषयको विचारते रहे, फिर जिस स्थान पर शत्रुनाशन भीमसेन दृढताके सहित रणभूमिमें स्थित होके वर्षाकालके बादल गर्जनेकी भांति अपने रथके गम्भीर घरघराहटके शब्दसे दशों दिशा तथा पृथ्वीको अनुनादित करते हुए तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका वध कर रहे थे, उस ही स्थान पर जाकर धर्मराज युधिष्ठिर शत्रुनाशन भीमसेनकी पृ[illegible]था करने लगे। उस महाघोर रात्रि दे[illegible]गोंसे के द्रोणाचार्य पाण्डव और पाञ्चाल य[illegible] धनुष कट[illegible]ने अस्त्ररूपी अग्निसे भस्म [illegible]घताके सहित फिर[illegible]५) [७२९३] ग्रहण करके घोडे सारथी [illegible]राय समाप्त। सहित द्रोणाचार्यको अनरि[illegible]ठ अध्याय। विद्ध किया, उस समर[illegible]राज ! अन्धकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमसा संवृते लोके रजसा च महीपते ॥ १ ॥
नाऽपश्यन्त रणे योधाः परस्परमवस्थिताः ।
अनुमानेन संज्ञाभिर्युद्धं तद्ववृधे महत् ॥ २ ॥
नरनागाश्वमथनं परमं लोमहर्षणम् ।
द्रोणकर्णकृपा वीरा भीमपार्षतसात्यकाः ॥ ३ ॥
अन्योन्यं क्षोभयामासुः सैन्यानि नृपसत्तम ।
वध्यमानानि सैन्यानि समन्तात्तैर्महारथैः ॥ ४ ॥
तमसा संवृते चैव समन्ताद्विप्रदुद्रुवुः ।
ते सर्वतो विद्रवन्तो योधा विध्वस्तचेतनाः ॥ ५ ॥
अहन्यन्त महाराज धावमानाश्च संयुगे ।
महारथसहस्राणि जघ्नुरन्योन्यमाहवे ॥ ६ ॥
अन्धे तमसि मूढानि पुत्रस्य तव मन्त्रिते ।
ततः सर्वाणि सैन्यानि सेनागोपाश्च भारत ॥
व्यमुह्यन्त रणे तत्र तमसा संवृते सति ॥ ७ ॥

और धूलिसे सम्पूर्ण रणभूमि और आकाशमण्डल परिपूर्ण होगया, उस ही समय दोनों ओरकी सेनाके वीरोंका महाभयङ्कर संग्राम होने लगा। रणभूमिमें स्थित योद्धा लोग उस समय एक दूसरेको नहीं देख सकते थे, उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग केवल अपने नामको सुनाते हुए अनुमानसे ही हाथी, घोडे और मनुष्योंका नाश करते हुए महाघोर युद्ध करने लगे। (१–३)

उस ही समय हमलोगोंकी ओरसे द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण और शत्रुओंकी ओरसे भीमसेन और सात्यकि, ये महारथी योद्धा लोग युद्धमें प्रवृत्त होकर आपसमें एक दूसरेकी सेनाको छिन्न भिन्न करके रणभूमिसे भगाने लगे। महाराज ! सेनाके योद्धा लोग पहिलेसे ही अन्धकार और धूलिके उडनेसे व्याकुल होरहे थे; उस पर फिर भी महारथियोंके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर चारों ओर भागने लगे। वे शूरवीर योद्धा लोग जब भयभीत होकर इधर उधर दौड रहे थे; उस समय दौडते हुए भी महारथियोंके बाणोंसे कितने ही योद्धा मर कर पृथ्वीमें गिर पडे। ऐसा क्या ! उस महाघोर अन्धकारके समयमें तुम्हारे पुत्रकी अनीतिसे ही सहस्रों महारथियोंने अपनी ओरके ही सहस्रों योद्धाओंका वध किया। जब चारों ओर अन्धेरा छा गया, तब सम्पूर्ण सेनाके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृतराष्ट्र उवाच- तेषां संलोड्यमानानां पाण्डवैर्विहतौजसाम् ।
अन्धे तमसि मग्नानामासीत्किं वो मनस्तदा ॥ ८ ॥
कथं प्रकाशस्तेषां वा मम सैन्यस्य वा पुनः ।
बभूव लोके तमसा तथा सञ्जय संवृतः ॥ ९ ॥
सञ्जय उवाच — ततः सर्वाणि सैन्यानि हतशिष्टानि यानि वै ।
सेनागोप्तृनथाऽऽदिश्य पुनर्व्यूहमकल्पयत् ॥ १० ॥
द्रोणः पुरस्ताज्जघने तु शल्यस्तथा द्रौणिः कृतवर्मा सौबलश्च ।
स्वयं तु सर्वाणि बलानि राजन्राजाऽभ्ययाद्गोपयन्वै निशायाम् ॥११॥
उवाच सर्वांश्च पदातिसङ्घान्दुर्योधनः पार्थिव सान्त्वपूर्वम् ।
उत्सृज्य सर्वे परमायुधानि गृह्णीत हस्तैर्ज्वलितान्प्रदीपान् ॥ १२ ॥
ते चोदिताः पार्थिवसत्तमेन ततः प्रहृष्टा जगृहुः प्रदीपान् ।
देवर्षिगन्धर्वसुरर्षिसङ्घा विद्याधराश्चाऽप्सरसां गणाश्च ॥ १३ ॥
नागाः सयक्षोरगकिन्नराश्च हृष्टा दिविस्था जगृहुः प्रदीपान् ।

योद्धा तथा सेनापति लोग भी मोहित होगये ॥ (३-७)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! उस समय जब तुम लोग पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके अस्त्र शस्त्रोंसे पीडित और अन्धकारसे व्याकुल हुए थे, उस समयमें तुम लोगोंकी बुद्धि किस प्रकार युद्धभूमिमें स्थिर हुई; और मेरी सेना तथा पाण्डवोंकी सेनामें किस भांति प्रकाश हुआ ? (८-९)

सञ्जय बोले, महाराज ! तिसके अनन्तर मरनेसे बची हुई सेना सेनापतियोंकी आज्ञासे फिर व्यूहबद्ध होकर युद्धभूमिमें स्थित हुई, उस रात्रिके समय तुम्हारी व्यूहबद्ध सेनाके आगाडी द्रोणाचार्य और पांवके स्थानमें राजा शल्य स्थित हुए । उस व्यूहके दहिने पार्श्वमें अश्वत्थामा और बायें पार्श्वमें सुबलपुत्र शकुनि स्थित हुए । राजा दुर्योधन अपनी सम्पूर्ण सेनाकी रक्षा करते हुए स्वयं शत्रुओंकी ओर गमन करने लगे; और पैदल योद्धाओंसे यह वचन बोले, कि तुम लोग उत्तम शस्त्रोंको त्यागके जलते हुए मशाल ग्रहण करो ॥ (१०-१२)

पैदल चलनेवाले वीरोंने राजाकी आज्ञा सुनकर प्रसन्न चित्तसे शीघ्र ही जलते हुए लुक, दीपक तथा मशाल ग्रहण किये । उस समय (युद्ध देखनेके लिये आये हुए) आकाश चारी देव, ऋषि, गंधर्व और देवर्षियोंके संघ, विद्याधर और अप्सराओंके गण तथा नाग, यक्ष,उरग और किन्नर ये सब दीपकोंको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिग्दैवतेभ्यश्च समापतन्तोऽदृश्यन्त दीपाः ससुगन्धितैलाः ॥ १४ ॥
विशेषतो नारदपर्वताभ्यां सम्बोध्यमानाः कुरुपाण्डवार्थम् ।
सा भूय एव ध्वजिनी विभक्ता व्यरोचताऽग्निप्रभया निशायाम्॥१५॥
महाधनैराभरणैश्च दिव्यैः शस्त्रैश्च दीप्तैरपि सम्पतद्भिः ।
रथे रथे पञ्च विदीपकास्तु प्रदीपकास्तत्र गजे त्रयश्च ॥ १६ ॥
प्रत्यश्वमेकश्च महाप्रदीपः कृतास्तु तैः पाण्डवैः कौरवैर्यैः ।
क्षणेन सर्वे विहिताः प्रदीपा व्यादीपयन्तो ध्वजिनीं तवाऽऽशु ॥१७॥
सर्वास्तु सेना व्यतिसेव्यमानाः पदातिभिः पावकतैलहस्तैः ।
प्रकाश्यमाना ददृशुर्निशायां यथाऽन्तरिक्षे जलदास्तडिद्भिः ॥ १८ ॥
प्रकाशितायां तु ततो ध्वजिन्यां द्रोणोऽग्निकल्पः प्रतपन्समन्तात् ।
रराज राजेन्द्र सुवर्णवर्मा मध्यङ्गतः सूर्य इवांऽशुमाली ॥ १९ ॥
जाम्बूनदेष्वाभरणेषु चैव निष्केषु शुद्धेषु शरासनेषु ।
पीतेषु शस्त्रेषु च पावकस्य प्रतिप्रभास्तत्र तदा बभूवुः ॥ २० ॥
गदाश्च शैक्याः परिघाश्च शुभ्रा रथेषु शक्त्यश्च विवर्तमानाः ।

लेकर स्थित हुए। तब सुगन्ध तैलसे युक्त अनेक दीप दिग्देवताओंसे गिरते हुए दिखाई देने लगे ॥ विशेष करके पर्वत और नारदने कौरव पाण्डवोंके लिये अनेक दीप जलाये थे। वह विभक्त कौरवोंकी सेना उस रात्रिके समय अग्निके प्रकाशसे और बहुमूल्य दिव्य आभूषण तथा प्रकाशमान गिरनेवाले शस्त्रास्त्रोंसे अत्यंत शोभने लगी। तब प्रत्येक रथमें पांच दीप, प्रति हाथीमें तीन दीप और प्रत्येक घोडेके ऊपर एक एक महा दीप लगाया था। महाराज! इस भांति क्षणभरके बीच उन जलते हुए लुक तथा दीपकोंसे तुम्हारी सेना प्रकाशित होने लगी ॥ (१३–१७)

उस रात्रिके समय सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग हाथमें दीपक ग्रहण करनेवाले पैदल सेनाके पुरुषोंसे युक्त होकर ऐसे प्रकाशित हुए, जैसे आकाशमें बिजलीसे युक्त बादल शोभित होते हैं ॥ उस ही समयमें सुवर्ण वर्मधारी पराक्रमी द्रोणाचार्य अग्निके समान शत्रुसेनाके पुरुषोंको चारों ओरसे तपाते हुए प्रचण्ड किरणवाले दोपहर के सूर्य समान रणभूमिमें विराजमान हुए ॥ हे अजमीढकुलभूषण! उस समय सुवर्णके रत्नजटित आभरण, मुहर, सुवर्णभूषित धनुष और शिलापर घिसे हुए अस्त्रशस्त्रोंके ऊपर अग्निकी प्रभा प्रतिबिंबित होने लगी ॥ (१८-२०)

शिकल करी हुई लोहमयी गदा,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिप्रभा रश्मिभिराजमीढ पुनः पुनः सञ्जनयन्ति दीपान् ॥ २१ ॥
छत्राणि वालव्यजनानि खड्गा दीप्ता महोल्काश्च तथैव राजन्।
व्याघूर्णमानाश्च सुवर्णमाला व्यायच्छतां तत्र तदा विरेजुः ॥ २२ ॥
शस्त्रप्रभाभिश्च विराजमानं दीपप्रभाभिश्च तदा बलं तत्।
प्रकाशितं चाऽभरणप्रभाभिर्भृशं प्रकाशं नृपते बभूव ॥ २३ ॥
पीतानि शस्त्राण्यसृगुक्षितानि वीरावधूतानि तनुच्छदानि।
दीप्तां प्रभां प्राजनयन्त तत्र तपात्यये विद्युदिवाऽन्तरिक्षे ॥ २४ ॥
प्रकम्पितानामभिघातवेगैरभिघ्नतां चाऽऽपततां जवेन।
वक्त्राण्यकाशन्त तदा नराणां वाय्वीरितानीव महाम्बुजानि ॥२५॥
महावने दारुमये प्रदीप्ते यथा प्रभा भास्करस्याऽपि नश्येत्।
तथा तदाऽऽसीद् ध्वजिनी प्रदीप्ता महाभया भारत भीमरूपा ॥ २६ ॥
तत्सम्प्रदीप्तं बलमस्मदीयं निशम्य पार्थास्त्वरितास्तथैव।

फेंद परिघ और रथके ऊपर विराजमान शक्तियोंमेंसे परिवर्तित दीपोंके किरणोंसे ऐसा मालूम हुआ, कि उन गदाआदिकोंसे मानो नवीन दीप उत्पन्न हो रहे हैं। इस ही प्रकारसे युद्धमें प्रवृत्त हुए क्षत्रियोंके इधर उधर घुमनेसे उनके छत्र चंवर, मणिजटित माला और प्रकाशमान खड्ग लुकेकी भांति प्रकाशित होने लगे॥ उस समय पहले शस्त्रोंकी प्रभासे प्रकाशित फिर दीपकों से प्रकाशित हुआ वह सैन्य आभूषणोंकी प्रभासे से बहुत ही शोभित होने लगा॥ (२१–२३)

शूरवीरोंके रत्नजटित कवच और रुधिर लिपटे हुए प्रकाशमान अस्त्रशस्त्र इस भांतिसे प्रकाशित होने लगे जैसे ग्रीष्म ऋतुके समाप्त होनेपर बादलोंके समूहमें बिजली प्रकाशित होती हैं॥ आपसमें शस्त्र चलानेमें प्रवृत्त दूसरी सेनाके ऊपर वेगसे प्रहार करनेसे कंपित शूरवीरोंके शिर इस प्रकार शोभित होने लगे, जैसे वायुसे हिलते हुए कमलोंके वन शोभित होते हैं॥ अधिक क्या कहा जावे, उस समय ऐसा बोध होने लगा, जैसे लकडीका महावन प्रचण्ड दावाग्निके लगनेसे ऐसा प्रकाशित होता है, कि जिससे सूर्यकी प्रभा भी छिप जाती है, वेसे ही वे सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोग दीपक और अस्त्रशस्त्रोंके सहित अत्यन्त ही शोभित होने लगे॥ (२४–२६)

तब पाण्डवोंने हम लोकोंकी सेनाके बीच प्रकाश देखकर शीघ्र ही अपनी सेनाके पैदल गमन करनेवाले योद्धाओंको भी हाथमें जलते हुए दीपक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वेषु सैन्येषु पदातिसङ्घानचोदयंस्तेऽपि चक्रुः प्रदीपान् ॥ २७ ॥
गजे गजे सप्त कृताः प्रदीपा रथे रथे चैव दश प्रदीपाः ।
द्वावश्वपृष्ठे परिपार्श्वतोऽन्ये ध्वजेषु चाऽन्ये जघनेषु चाऽन्ये ॥ २८ ॥
सेनासु सर्वासु च पार्श्वतोऽन्ये पश्चात्पुरस्ताच्च समन्ततश्च ।
मध्ये तथाऽन्ये ज्वलिताग्निहस्ता व्यदीपयन्पाण्डुसुतस्य सेनाम्॥२९॥
मध्ये तथाऽन्ये ज्वलिताग्निहस्ताः सेनाद्वयेऽपि स्म नरा विचेरुः ।
सर्वेषु सैन्येषु पदातिसङ्घा विमिश्रिता हस्तिरथाश्ववृन्दैः ॥ ३० ॥
व्यदीपयंस्ते ध्वजिनीं प्रदीप्तास्तथा बलं पाण्डवेयाभिगुप्तम् ।
तेन प्रदीप्तेन तथा प्रदीप्तं बलं तवाऽऽसीद्बलवद्बलेन ॥ ३१ ॥
भाः कुर्वता भानुमता शतेन दिवाकरेणाऽग्निरिवाऽभिगुप्तः ।
तयोः प्रभाः पृथिवीमन्तरिक्षं सर्वा व्यतिक्रम्य दिशश्च वृद्धाः ॥३२॥
तेन प्रकाशेन भृशं प्रकाशं बभूव तेषां तव चैव सैन्यम् ।
तेन प्रकाशेन दिवं गतेन सम्बोधिता देवगणाश्च राजन् ॥ ३३ ॥

ग्रहण करनेके वास्ते आज्ञा दिया; उन लोगोंने उस ही समय जलते हुए लुक और मशाल ग्रहण किये ॥ उसी भांति हर एक हाथियोंपर सात सात, रथोंपर दश दश, घोडोंपर दो दो और रथकी ध्वजा सेनाके दहिने बायें और पीछे बहुतसे दीपक जलाये गये ॥ इसी भांति सम्पूर्ण सेनाके बीच आगे पीछे दहिने बायें तथा सम्पूर्ण स्थलोंमें पैदल चलनेवाले शूरवीर योद्धाओंने चारों ओर दीपक जलाकर पाण्डवोंकी सेनाको प्रकाशित किया ॥ (२७–२९)

इसके अतिरिक्त और भी बहुतेरे मनुष्य हाथमें जलते हुए लुक ग्रहण करके दोनों सेनाके बीच भ्रमण करने लगे । महाराज ! इसी भांति दानों ओरकी सेनामें पैदल चलनेवाले पुरुषोंने हाथमें दीपक ग्रहण करके हाथी घोडे और रथोंको प्रकाशित किया, तिसके बीच शत्रुओंकी सेना पाण्डवोंसे रक्षित होकर प्रकाशित हुई । जैसे प्रचण्ड किरणवाले भगवान् सूर्यके तेजसे अग्नि अत्यन्त ही उत्तापित होती है वैसे ही तुम्हारी सेनाके पुरुष शत्रुसेनाके पुरुषोंको देखकर और भी प्रकाशित होने लगे । (३०–३२)

उस समय आकाश पृथ्वी तथा सम्पूर्ण दिशाको अतिक्रम करके दोनों-सेनाके दीपज्योतिका प्रकाश शोभित होने लगा; दीपकके प्रकाशसे दोनों ओरकी सेना अत्यन्त प्रकाशित होने लगीं । उस समय दीपकोंके प्रकाशसे आकाश-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घाः समागमन्नप्सरसश्च सर्वाः।
तद्देवगन्धर्वसमाकुलं च यक्षासुरेन्द्राप्सरसां गणैश्च ॥ ३४ ॥
हतैश्च शूरैर्दिवमारुहद्भिरायोधनं दिव्यकल्पं बभूव।
रथाश्वनागाकुलदीपदीप्तं संरुध्ययोधं हतविद्रुताश्वम् ॥ ३५ ॥
महद्बलं व्यूढरथाश्वनागं सुरासुरव्यूहसमं बभूव।
तच्छक्तिसङ्घाकुलचण्डवातं महारथाभ्रं गजवाजिघोषम् ॥ ३६ ॥
शस्त्रौघवर्षं रुधिराम्बुधारं निशि प्रवृत्तं रथदुर्दिनं तत्।
तस्मिन्महाग्निप्रतिमो महात्मा सन्तापयन्पाण्डवान्विप्रमुख्यः ॥ ३७ ॥
गभस्तिभिर्मध्यगतो यथाऽर्को वर्षात्यये तद्वदभून्नरेन्द्र ॥ ३८ ॥ [७३३१]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे दीपोद्योतने त्रिषष्टयधिकशततमोऽध्यायः ॥१६३

सञ्जय उवाच— प्रकाशिते तदा लोके रजसा तमसाऽऽवृते।
समाजग्मुरथो वीराः परस्परवधैषिणः ॥ १ ॥

मण्डल प्रकाशित होगया तब आकाशचारी देवता, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा और सिद्ध लोग फिर युद्ध देखनेके वास्ते आकाशमें इकट्ठे हुए। उसही समय शूर वीर योद्धा रणभूमिमें मरकर स्वर्ग लोकमें जाने लगे। देवता, गन्धर्व, यक्ष आदि आकाशमें स्थित होकर कुरुपाण्डवोंके महाघोर युद्धको देखने लगे॥ ३२–३५

उस रात्रिके समय हाथी घोडे और रथोंके सहित दीपकसे युक्त वह सम्पूर्ण सेना क्रुद्ध हुए योद्धाओंके अस्त्रोंके प्रहारसे पीडित होकर इधर उधर दौडती हुई व्यूहबद्ध दानव और देवताकी सेनाकी भांति बोध होने लगी। महाराज! वह रात्रिका संग्राम प्रलय कालके समयके समान मालूम होने लगा। शक्ति आदि अस्त्रशस्त्र ही उसमें प्रचण्ड वायु, घोडे और रथोंके समूह उसमें भयानक बादलोंके समूह, अस्त्र-शस्त्रोंका चलना ही उसमें जलकी वर्षा और रुधिरका झरना ही उसमें जलधारा बहनेके समान मालूम होता था॥ उस रणभूमिमें अग्निके समान तेजस्वी ब्राह्मण-श्रेष्ठ प्रतापी द्रोणाचार्य शरद् ऋतुके प्रचण्ड किरण धारण करनेवाले दोपहरके सूर्यकी भांति प्रकाशित होकर पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे विकल करते हुए रणभूमिके बीच घूमने लगे॥ (३५–३८) [७३३१]

द्रोणपर्वमें एकसौ तिरसठ अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ चौसठ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! अन्धकार और धूलि उडनेसे जो सम्पूर्ण दिशा छिप गई थीं, वे फिर प्रकाशित हुईं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते समेत्य रणे राजञ्शस्त्रप्रासासिधारिणः ।
परस्परमुदैक्षन्त परस्परकृतागसः ॥ २ ॥
प्रदीपानां सहस्रैश्च दीप्यमानैः समन्ततः ।
रत्नाचितैः स्वर्णदण्डैर्गन्धतैलावसिञ्चितैः ॥ ३ ॥
देवगन्धर्वदीप्याद्यैः प्रभाभिरधिकोज्ज्वलैः ।
विरराज तदा भूमिर्ग्रहैर्द्यौरिव भारत ॥ ४ ॥
उल्काशतैः प्रज्वलितै रणभूमिर्व्यराजत ।
दह्यमानेव लोकानामभावे च वसुन्धरा ॥ ५ ॥
व्यदीप्यन्त दिशः सर्वाः प्रदीपैस्तैः समन्ततः ।
वर्षाप्रदोषे खद्योतैर्वृता वृक्षा इवाऽऽबभुः ॥ ६ ॥
असज्जन्त ततो वीरा वीरेष्वेव पृथक् पृथक् ।
नागा नागैः समाजग्मुस्तुरगा हयसादिभिः ॥ ७ ॥
रथा रथवरैरेव समाजग्मुर्मुदा युताः ।
तस्मिन्रात्रिमुखे घोरे तव पुत्रस्य शासनात् ॥ ८ ॥
चतुरङ्गस्य सैन्यस्य सम्पातश्च महानभूत् ।
ततोऽर्जुनो महाराज कौरवाणामनीकिनीम् ॥ ९ ॥

शूरवीर योद्धा लोग इकट्ठे होकर प्रास तलवार आदि नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके एक दूसरेके वधकी इच्छासे छिद्र खोजते हुए आपसमें एक दूसरेकी ओर क्रोधपूर्वक देखने लगे, चारों ओर सेनाके बीच सहस्रों दीपक जल रहे थे उनसे तथा आकाशमें रत्न-खचित सुवर्णके दंडवाले सुगंधतैलयुक्त अधिक प्रभावाले देवगंधर्वोंके दीपोंसे वह रणभूमि तारोंसे युक्त आकाशमण्डलकी भांति शोभित होने लगी । और सैकडों लुकोंके इधर उधर जलनेसे वह रणभूमि मानो प्राणियोंसे रहित अग्निसे जलती हुई पृथ्वीकी भांति मालूम होने लगी ॥ (१-५)

उसी समय दीपक लुक तथा मशालोंके जलनेसे सम्पूर्ण दिशा इस भांति प्रकाशमय होगई, जैसे वर्षा ऋतुमें खद्योत समूहसे युक्त वृक्ष शोभित होते हैं ॥ महाराज ! उस महाघोर भयङ्करी रात्रिके समय तुम्हारे पुत्रकी आज्ञासे तुम्हारी ओरके शूरवीर योद्धा लोग पृथक् पृथक् रथी रथीसे, गजपति गजपतिसे और घुडसवार घुडसवारोंके सम्मुख होकर अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करने लगे । इस ही समय महावीर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यधमत्त्वरया युक्तः क्षपयन्सर्वपार्थिवान् ।
धृतराष्ट्र उवाच- तस्मिन्प्रविष्टे संरब्धे मम पुत्रस्य वाहिनीम् ॥ १० ॥
अमृष्यमाणे दुर्धर्षे कथमासीन्मनो हि वः ।
किमकुर्वत सैन्यानि प्रविष्टे परपीडने ॥ ११ ॥
दुर्योधनश्च किं कृत्यं प्राप्तकालममन्यत ।
के चैनं समरे वीरं प्रत्युद्ययुरारिन्दमाः ॥ १२ ॥
द्रोणं च के व्यरक्षन्त प्रविष्टे श्वेतवाहने ।
केऽरक्षन्दक्षिणं चक्रं के च द्रोणस्य सव्यतः ॥ १३ ॥
के पृष्ठतश्चाऽप्यभवन्वीरा वीरान्विनिघ्नतः ।
के पुरस्तादगच्छन्त निघ्नन्तः शात्रवान्रणे ॥ १४ ॥
यत्प्राविशन्महेष्वासः पञ्चालानपराजितः ।
नृत्यन्निव नरव्याघ्रो रथमार्गेषु वीर्यवान् ॥ १५ ॥
यो ददाह शरैर्द्रोणः पञ्चालानां रथव्रजान् ।
धूमकेतुरिव क्रुद्धः कथं मृत्युमुपेयिवान् ॥ १६ ॥

अर्जुन सम्पूर्ण राजाओंको अपने बाणोंसे पीडित करके कुरुसेनाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे भस्म करने लगे ॥ (६-१०)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! युद्धमें अत्यन्त पराक्रमी श्वेतवाहन अर्जुनने जब क्रोधपूर्वक मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया, उस समय तुम लोगोंके चित्तमें कैसा विकार उत्पन्न हुआ था ? उस परपीडक अर्जुनने जब मेरी सेनाके बीच प्रवेश किया, तब हमारे सैनिक पुरुषोंने किस कार्यका अनुष्ठान किया और दुर्योधनने ही उस समयके अनुसार किस कार्यका विधान किया था ? और मेरी ओरके कौन कौन शत्रुनाशन पराक्रमी योद्धा अर्जुनके सम्मुख उपस्थित हुए ? (१०-१२)

कौन कौनसे योद्धाओंने युद्धके समय द्रोणाचार्यके दहिने और बायें चक्रकी रक्षा किया; तथा कौनसे शूरवीर योद्धा उनकी पृष्ठरक्षामें नियुक्त हुए थे ॥ और जब वहां धनुर्धारियोंमें श्रेष्ठ युद्धमें अपराजित पराक्रमी पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य अपने रथपर चढकर रणभूमिके बीच घूमते हुए पाञ्चालसेनाके बीच प्रवेश करके शत्रुओंका नाश करने लगे, तब शत्रुओंकी सेनासे कौन कौन योद्धा लोग युद्ध करनेके वास्ते उनके सम्मुख उपस्थित हुए थे ? (१३-१५)

ओहो ! जो द्रोणाचार्य क्रुद्ध होकर धूएंसे रहित अग्निकी भांति अपने शस्त्रों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यग्रानेव हि परान्कथयस्यपराजितान् ।
हृष्टानुदीर्णान्संग्रामे न तथा सूत मामकान् ॥ १७ ॥
हतांश्चैव विदीर्णांश्च विप्रकीर्णांश्च शंससि ।
रथिनो विरथांश्चैव कृतान्युद्धेषु मामकान् ॥ १८ ॥

सञ्जय उवाच — द्रोणस्य मतमाज्ञाय योद्धुकामस्य तां निशाम् ।
दुर्योधनो महाराज वश्यान्भ्रातॄनुवाच ह ॥ १९ ॥
कर्णं च वृषसेनं च मद्रराजं च कौरव ।
दुर्धर्षं दीर्घबाहुं च ये च तेषां पदानुगाः ॥ २० ॥
द्रोणं यत्ताः पराक्रान्ताः सर्वे रक्षन्तु पृष्ठतः ।
हार्दिक्यो दक्षिणं चक्रं शल्यश्चैवोत्तरं तथा ॥ २१ ॥
त्रिगर्तानां च ये शूरा हतशिष्टा महारथाः ।
तांश्चैव पुरतः सर्वान्पुत्रस्ते समचोदयत् ॥ २२ ॥
आचार्यो हि सुसंयत्तो भृशं यत्ताश्च पाण्डवाः ।

से पाञ्चालसेनाको भस्म करते थे वह किस प्रकार युद्धभूमिमें मारे गये ? हे सञ्जय ! जो हो तुम शत्रुओंकी ओरके पुरुषोंको युद्धमें स्थित सावधान अपराजित प्रसन्न और मेरी सेनाकी ओर दौडते हुए कहके वर्णन करते हो, और मेरी सेनाके योद्धाओंको इससे विपरीत तथा उत्साह रहित कहके वर्णन कर रहे हो । मेरी सेनाके पुरुषोंको हत, घावसे युक्त, पीडित, तथा रथियोंको रथभ्रष्ट और नाना भांतिसे विपदसे युक्त सुना रहे हो ! (१६—१८)

सञ्जय बोले, महाराज ! राजा दुर्योधन उस रात्रिके समय युद्धके अभिलाषी द्रोणाचार्यके अभिप्रायको जानकर अपने आज्ञाकारी भ्राताओं तथा कर्ण, वृषसेन, मद्रराज शल्य, दीर्घबाहु और दुर्द्धर्ष तथा उनके अनुयायी सेनाके पुरुषोंसे यह वचन बोले,—हे पराक्रमशाली शूरवीर पुरुषो ! तुम सब कोई यत्नवान् होकर द्रोणाचार्य की पृष्ठरक्षा करो, हृदीकपुत्र कृतवर्मा और मद्रराज शल्य द्रोणाचार्यके दहिने और बायें चक्रकी रक्षा करें ॥ (१९—२१)

हे राजेन्द्र ! तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने ऐसा वचन कहकर फिर अगाडी स्थित मरनेसे बचे हुए त्रिगर्त्तदेशीय शूरवीर और महारथियोंसे यह वचन बोले,—इस समय द्रोणाचार्य अत्यन्त ही सावधानताके सहित युद्ध करनेमें तत्पर हुए हैं और पाण्डव लोग भी यत्नवान् होकर रणभूमिमें स्थित हैं; इससे तुम सब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं रक्षत सुसंयत्ता निघ्नन्तं शात्रवान्रणे ॥ २३ ॥
द्रोणो हि बलवान्युद्धे क्षिप्रहस्तः प्रतापवान्।
निर्जयेत्त्रिदशान्युद्धे किमु पार्थान्ससोमकान् ॥ २४ ॥
ते यूयं सहिताः सर्वे भृशं यत्ता महारथाः।
द्रोणं रक्षत पाञ्चाला धृष्टद्युम्नान्महारथान् ॥ २५ ॥
पाण्डवीयेषु सैन्येषु न तं पश्याम कञ्चन।
यो योधयेद्रणे द्रोणं धृष्टद्युम्नादृते नृपः ॥ २६ ॥
तस्मात्सर्वात्मना मन्ये भारद्वाजस्य रक्षणम्।
सुगुप्तः पाण्डवान्हन्यात्सृञ्जयांश्च ससोमकान् ॥ २७ ॥
सृञ्जयेष्वथ सर्वेषु निहतेषु चमूमुखे।
धृष्टद्युम्नं रणे द्रौणिर्हनिष्यति न संशयः ॥ २८ ॥
तथाऽर्जुनं च राधेयो हनिष्यति महारथः।
भीमसेनमहं चापि युद्धे जेष्यामि दीक्षितः ॥ २९ ॥
शेषांश्च पाण्डवान्योधाः प्रसभं हीनतेजसः।

कोई मिलकर अत्यन्त ही यत्नवान् होके सावधानीके साथ शत्रुओंको मारनेवाले द्रोणाचार्यकी रक्षा करो॥ महाबली प्रतापी द्रोणाचार्य अत्यन्त ही हस्तलाघवके सहित अस्त्र शस्त्रोंको चला सकते हैं। द्रोणाचार्यके क्रुद्ध होनेपर सोमकवंशियोंके सहित पाण्डुपुत्रोंकी तो बात ही क्या है, पराक्रमी आचार्य अपने अस्त्रशस्त्रोंके बलसे देवताओंको भी जीत सकते हैं॥ (२२—२४)

हे महारथी शूरवीर पुरुषो! इससे तुम लोग सब कोई इकट्ठे होकर सब भांतिसे यत्नपूर्वक महाबलवान् धृष्टद्युम्नसे द्रोणाचार्यकी रक्षा करो॥ हे राजा लोगो! पाण्डवोंकी सेनाके बीच मैं धृष्टद्युम्नको छोडके और ऐसे दूसरे किसी पुरुषको भी नहीं देखता हूं कि जो द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्ध कर सके॥ इससे सब प्रकार यत्नपूर्वक भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यकी रक्षा करना मैं बहुत ही उत्तम कार्य समझता हूं। वह रक्षित होनेसे ही सोमकवंशी क्षत्रियों तथा सृञ्जयोंका नाश कर सकेंगे। (२५—२७)

व्यूहके दरवाजेपर सम्पूर्ण सृञ्जय योद्धाओंके मरे जानेपर अश्वत्थामा अवश्य ही धृष्टद्युम्नका वध करेंगे॥ महावीर कर्ण अर्जुनका नाश करेंगे और मैं स्वयं युद्धभूमिमें भीमसेनको पराजित करूंगा, तिसके अनन्तर तेजरहित शेष पाण्डवोंको हमारी सेनाके योद्धा लोग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोऽयं मम जयो व्यक्तो दीर्घकालं भविष्यति ॥३०॥
तस्माद्रक्षत संग्रामे द्रोणमेव महारथम् ।
इत्युक्त्वा भरतश्रेष्ठ पुत्रो दुर्योधनस्तव ॥ ३१ ॥
व्यादिदेश तथा सैन्यं तस्मिंस्तमसि दारुणे ।
ततः प्रववृते युद्धं रात्रौ भरतसत्तम ॥ ३२ ॥
उभयोः सेनयोर्घोरं परस्परजिगीषया ।
अर्जुनः कौरवं सैन्यमर्जुनं चापि कौरवाः ॥ ३३ ॥
नानाशस्त्रसमावायैरन्योन्यं समपीडयन् ।
द्रौणिः पञ्चालराजं च भारद्वाजश्च सृञ्जयान् ॥ ३४ ॥
छादयाञ्चक्रिरे संख्ये शरैः सन्नतपर्वभिः ।
पाण्डुपाञ्चालसैन्यानां कौरवाणां च भारत ॥ ३५ ॥
आसीन्निष्टानको घोरो निघ्नतामितरेतरम् ।
नैवाऽस्माभिस्तथा पूर्वैर्दृष्टपूर्वं तथाविधम् ॥ ३६ ॥
श्रुतं वा यादृशं युद्धमासीद्रौद्रं भयानकम् ॥ ३७ ॥ [७३६८]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे संकुलयुद्धे चतुःषष्टयधिकशततमोऽध्यायः ॥१६४

ही नाश कर देंगे। ऐसा होनेसे ही बहुत दिनोंके वास्ते स्पष्टरूपसे मेरी जय होवेगी। इससे युद्धभूमिमें तुम लोग सबसे पहिले द्रोणाचार्यकी ही रक्षा करो। (२८–३१)

हे भरतर्षभ! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधनने ऐसा वचन कहके जब उस महाघोर रात्रिके समय सेनाके पुरुषोंको युद्ध करनेके वास्ते आज्ञा दिया; तब उस भयानक रात्रिके समय विजयकी इच्छासे दोनों सेनाके योद्धाओंका आपसमें महाघोर युद्ध होने लगा॥ अर्जुन कौरवोंकी सेनाको और कुरुसेनाके योद्धा लोग अर्जुनको अपने अस्त्रशस्त्रोंसे पीडित करने लगे। (३१—३४)

इस ही समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा पाञ्चालराजको और पराक्रमी द्रोणाचार्य सृञ्जयों को अपने अनगिनत तीक्ष्ण बाणोंसे छिपाने लगे। महाराज! इसी भांति जब पाण्डव पाञ्चाल और कुरुसेनाके योद्धा लोग आपसमें युद्ध करने लगे, तब उस समय महाघोर कोलाहल होने लगा। उस रात्रि के समय उन दोनों ओरके योद्धाओंका जैसा भयङ्कर युद्ध हुआ वैसा संग्राम पूर्वपुरुष लोग और हम लोगोंने न कभी देखा और न सुना ही था॥ (३४—३७)[७३६८]

द्रोणपर्वमें एकसौ चौसठ अध्याय समाप्त।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— वर्तमाने तदा रौद्रे रात्रियुद्धे विशाम्पते।
सर्वभूतक्षयकरे धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ १ ॥
अब्रवीत्पाण्डवांश्चैव पञ्चालांश्चैव सोमकान्।
अभिद्रवत संयात द्रोणमेव जिघांसया ॥ २ ॥
राज्ञस्ते वचनाद्राजन्पञ्चालाः सृञ्जयास्तथा।
द्रोणमेवाऽभ्यवर्तन्त नदन्तो भैरवान्रवान् ॥ ३ ॥
तं तु ते प्रतिगर्जन्तः प्रत्युद्यातास्त्वमर्षिताः।
यथाशक्ति यथोत्साहं यथासत्त्वं च संयुगे ॥ ४ ॥
कृतवर्मा तु हार्दिक्यो युधिष्ठिरमुपाद्रवत्।
द्रोणं प्रति समायान्तं मत्तो मत्तमिव द्विपम् ॥ ५ ॥
शैनेयं शरवर्षाणि विकिरन्तं समन्ततः।
अभ्ययात्कौरवो राजन्भूरिः संग्राममूर्धनि ॥ ६ ॥
सहदेवमथाऽऽयान्तं द्रोणप्रेप्सुं महारथम्।
कर्णो वैकर्तनो राजन्वारयामास पाण्डवम् ॥ ७ ॥
भीमसेनमथाऽऽयान्तं व्यादितास्यमिवाऽन्तकम्।

द्रोणपर्वमें एकसौ पैंसठ अध्याय।

सञ्जय बोले! महाराज! जब सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले रात्रिके समय महाघोर संग्राम होने लगा, तब धर्मपुत्र युधिष्ठिरने पाण्डव पाञ्चाल और सोमकवंशीय योद्धाओंको आज्ञा दिया, हे शूरवीर पुरुषो! तुम लोग सावधानीके सहित शीघ्रही द्रोणाचार्यकी ओर दौडो॥ हे राजेन्द्र! पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग राजा युधिष्ठिरकी आज्ञाको सुनके भयङ्कर शब्दके सहित सिंहनाद करते हुए द्रोणाचार्यकी ओर दौडे॥ (१-३)

उन योद्धाओंको अपनी ओर बढे आते देख हम लोग भी पराक्रम उत्साह और शक्तिके अनुसार गर्जते हुए उन लोगोंके सम्मुख उपस्थित हुए। महाराज! उस ही समय राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्ध करनेकी इच्छासे उनकी ओर गमन करने लगे। अनन्तर जैसे एक मतवारा हाथी दूसरे मतवारे हाथीकी ओर दौडता है वैसेही हृदीकपुत्र कृपवर्मा राजा युधिष्ठिरकी ओर दौडे॥ इसी भांति रणभूमिमें स्थित शिनिपौत्र सात्यकिको चारों ओर बाण वर्षाते देख कुरुवंशीय पराक्रमी भूरि उनके संमुख उपस्थित हुए॥ (४-६)

अनन्तर महारथ सात्यकिको द्रोणाचार्यकी ओर आते देख विकर्तन पुत्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं दुर्योधनो राजा प्रतीपं मृत्युमाव्रजत् ॥ ८ ॥
नकुलं च युधां श्रेष्ठं सर्वयुद्धविशारदम् ।
शकुनिः सौबलो राजन्वारयामास सत्वरः ॥ ९ ॥
शिखण्डिनमथाऽऽयान्तं रथेन रथिनां वरम् ।
कृपः शारद्वतो राजन्वारयामास संयुगे ॥ १० ॥
प्रतिविन्ध्यमथाऽऽयान्तं मयूरसदृशैर्हयैः ।
दुःशासनो महाराज यत्तो यत्तमवारयत् ॥ ११ ॥
भैमसेनिमथाऽऽयान्तं मायाशतविशारदम् ।
अश्वत्थामा महाराज राक्षसं प्रत्यषेधयत् ॥ १२ ॥
द्रुपदं वृषसेनस्तु ससैन्यं सपदानुगम् ।
वारयामास समरे द्रोणप्रेप्सुं महारथम् ॥ १३ ॥
विराटं द्रुतमायान्तं द्रोणस्य निधनं प्रति ।
मद्रराजः सुसंक्रुद्धो वारयामास भारत ॥ १४ ॥
शतानीकमथाऽऽयान्तं नाकुलिं रभसं रणे ।
चित्रसेनो रुरोधाऽऽशु शरैर्द्रोणपरीप्सया ॥ १५ ॥

कर्णने उसे निवारण किया तथा मुख बाये हुए यमराज और साक्षात् मृत्युकी भाँति सम्मुख आये हुए भीमसेनको राजा दुर्योधन स्वयं निवारण करने लगे। सम्पूर्ण युद्धविद्या जाननेवाले योद्धाओंमें मुख्य नकुलको सुबलपुत्र शकुनि युद्धभूमिमें सत्वर निवारण करने लगे ॥ (७-९)

द्रोणाचार्यके वधकी अभिलाषासे उनके सम्मुख उपस्थित हुए महारथी शिखण्डीको शरद्वतपुत्र कृपाचार्य निवारण करने लगे ॥ मयूरवर्णवाले घोड़ोंसे युक्त प्रतिविन्ध्यको संमुख आया देख महारथ दुःशासन उन्हें निवारण करने में प्रवृत्त हुए ॥ सैकड़ों राक्षसी माया जानने वाले भीमसेनपुत्र घटोत्कचको द्रोणाचार्यकी ओर आते देख, पराक्रमी अश्वत्थामा उसे युद्धभूमिमें निवारण करने लगे ॥ (१०-१२)

अनुयायी और सेनाके सहित महारथ द्रुपदको द्रोणाचार्यके संमुख आते देख महारथ वृषसेन उन्हें निवारण करने लगे॥ महाराज ! द्रोणाचार्यके वधके लिये राजा विराटको उनकी ओर आते देख मद्रराज शल्य क्रुद्ध होकर विराटकी ओर दौड़े ॥ नकुलपुत्र शतानीकको वेगपूर्वक द्रोणाचार्यकी ओर आते देख पराक्रमी चित्रसेनने शीघ्रताके सहित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जुनं च युधां श्रेष्ठं प्राद्रवन्तं महारथम् ।
अलम्बुषो महाराज राक्षसेन्द्रो न्यवारयत् ॥ १६ ॥
तथा द्रोणं महेष्वासं निघ्नन्तं शात्रवान्रणे ।
धृष्टद्युम्नोऽथ पाञ्चाल्यो हृष्टरूपमवारयत् ॥ १७ ॥
तथाऽन्यान्पाण्डुपुत्राणां समायातान्महारथान् ।
तावका रथिनो राजन्वारयामासुरोजसा ॥ १८ ॥
गजारोहा गजैस्तूर्णं सन्निपत्य महामृधे ।
योधयन्तश्च मृद्नन्तः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १९ ॥
निशीथे तुरगा राजन्द्रावयन्तः परस्परम् ।
समदृश्यन्त वेगेन पक्षवन्तो यथाऽद्रयः ॥ २० ॥
सादिनः सादिभिः सार्धं प्रासशक्त्यृष्टिपाणयः ।
समागच्छन्महाराज विनदन्तः पृथक् पृथक् ॥ २१ ॥
नरास्तु बहवस्तत्र समाजग्मुः परस्परम् ।
गदाभिर्मुसलैश्चैव नानाशस्त्रैश्च संयुगे ॥ २२ ॥

उन्हें निवारण किया ॥ (१३-१५)

शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्यकी ओर आते हुए योद्धाओंमें मुख्य महारथी अर्जुनको राक्षसराज अलम्बुष निवारण करने लगे ॥ उसही समय धनुर्द्धारियों-में अग्रणी पराक्रमी द्रोणाचार्य जब शत्रुओंके नाश करनेमें प्रवृत्त हुए तब उन्हें पाञ्चालराजके पुत्र पराक्रमी धृष्ट-द्युम्न निवारण करने लगे ॥ १६-१७

महाराज ! इसी भांति पाण्डवोंकी ओरके जिन महारथी योद्धाओंने द्रोणा-चार्यके समीप गमन किया, उन्हें तुम्हारी ओरके महारथी योद्धा पराक्रम के सहित यत्नवान् होकर युद्धभूमिमें निवारण करने लगे । उस महाभयङ्करी रात्रिके समय सैकडों सहस्रों गजसवार योद्धालोग गजपतियोंकी ओर दौड कर युद्ध करते हुए दीख पडते थे, घुडस-वार योद्धा लोग अपने घोडों पर चढे हुए एक दूसरी सेनाकी ओर दौडते और युद्ध करते हुए इस प्रकार युद्धभूमिमें शोभित होते थे जैसे दोनों ओर पङ्खवाले दो पर्वत दीख पडते हैं ॥ (१८-२०)

प्रास शक्ति और ऋष्टि ग्रहण करने वाले घुड ार योद्धालोग भयंकर सिंह-नाद करते हुए युद्ध करनेके वास्ते घुड-सवारोंके संमुख उपस्थित हुए। उस ही भांति पैदल चलनेवाले योद्धालोग भी गदा और मूषल आदि नाना भांतिके शस्त्रोंको ग्रहण करके आपसमें एक दूसरे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतवर्मा तु हार्दिक्यो धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् ।
वारयामास संक्रुद्धो वेलेवोद्वृत्तमर्णवम् ॥ २३ ॥
युधिष्ठिरस्तु हार्दिक्यं विध्वा पञ्चभिराशुगैः ।
पुनर्विव्याध विंशत्या तिष्ठतिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥ २४ ॥
कृतवर्मा तु संक्रुद्धो धर्मपुत्रस्य मारिष ।
धनुश्चिच्छेद भल्लेन तं च विव्याध सप्तभिः ॥ २५ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय धर्मपुत्रो महारथः ।
हार्दिक्यं दशभिर्बाणैर्बाह्वोरुरसि चाऽर्पयत् ॥ २६ ॥
माधवस्तु रणे विद्धो धर्मपुत्रेण मारिष ।
प्राकम्पत च रोषेण सप्तभिश्चाऽर्दयच्छरैः ॥ २७ ॥
तस्य पार्थो धनुश्छित्वा हस्तावापं निकृत्य च ।
प्राहिणोन्निशितान्बाणान्पञ्च राजञ्छिलाशितान् ॥ २८ ॥
ते तस्य कवचं भित्त्वा हेमचित्रं महाधनम् ।
प्राविशन्धरणीं भित्त्वा वल्मीकमिव पन्नगाः ॥ २९ ॥
अक्ष्णोर्निमेषमात्रेण सोऽन्यदादाय कार्मुकम् ।

के संमुख उपस्थित होकर युद्ध करने लगे ॥ (२१–२२)

उस समय हृदीकपुत्र कृतवर्माने राजा युधिष्ठिरको इस प्रकार निवारण किया जैसे तट समुद्रके वेगको रोकता है ॥ युधिष्ठिरने भी पांच बाणोंसे कृतवर्माको विद्ध करके फिर खडा रह ! खडा रह ! कहके बीस बाणोंसे विद्ध किया ॥ तब कृतवर्माने अत्यन्त क्रुद्ध होकर भल्लास्त्रसे राजा युधिष्ठिरका धनुष काट दिया, और शीघ्रताके सहित उन्हें सात बाणोंसे विद्ध किया ॥ (२३–२५)

राजा युधिष्ठिरने दूसरा धनुष ग्रहण करके दश बाणोंसे कृतवर्माके भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया ॥ महाराज ! यदुवंशीय कृतवर्मा युधिष्ठिरके बाणोंसे विद्ध होकर क्रोधसे कांपने लगे और सात तीक्ष्ण बाणोंसे धर्मपुत्र युधिष्ठिरको पीडित किया ॥ पृथापुत्र युधिष्ठिरने अपने तेज बाणोंसे कृतवर्माके धनुष और हस्तत्राणको काट दिया; फिर शिला पर घिसे हुए पांच तीक्ष्ण बाणोंसे कृतवर्माके शरीरमें प्रहार किया ॥ जैसे सर्प बिलके भीतर प्रवेश करते हैं वैसे ही युधिष्ठिरके धनुषसे छूटे हुए वे चोखे बाण कृतवर्माके सुवर्ण चित्रित महामूल्यवान कवचको काटके पृथ्वीमें घुस गये ॥ (२६–२९)

कृतवर्माने निमेष भरमें दूसरा धनुष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विव्याध पाण्डवं षष्ट्या सूतं च नवभिः शरैः ॥ ३० ॥
तस्य शक्तिममेयात्मा पाण्डवो भुजगोपमाम् ।
चिक्षेप भरतश्रेष्ठ रथे न्यस्य महद्धनुः ॥ ३१ ॥
सा हेमचित्रा महती पाण्डवेन प्रवेरिता ।
निर्भिद्य दक्षिणं बाहुं प्राविशद्धरणीतलम् ॥ ३२ ॥
एतस्मिन्नेव काले तु गृह्य पार्थः पुनर्धनुः ।
हार्दिक्यं छादयामास शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ३३ ॥
ततस्तु समरे शूरो वृष्णीनां प्रवरो रथी ।
व्यश्वसूतरथं चक्रे निमेषार्धाद्युधिष्ठिरम् ॥ ३४ ॥
ततस्तु पाण्डवो ज्येष्ठः खड्गचर्म समाददे ।
तदस्य निशितैर्बाणैर्व्यधमन्माधवो रणे ॥ ३५ ॥
तोमरं तु ततो गृह्य स्वर्णदण्डं दुरासदम् ।
अप्रैषीत्समरे तूर्णं हार्दिक्यस्य युधिष्ठिरः ॥ ३६ ॥
तमापतन्तं सहसा धर्मराजभुजच्युतम् ।
द्विधा चिच्छेद हार्दिक्यः कृतहस्तः स्वयन्निव ॥ ३७ ॥

चढाकर राजा युधिष्ठिरको साठ और उनके सारथीको नौ बाणोंसे विद्ध किया॥ तब पराक्रमी महात्मा युधिष्ठिरने अपना बडा धनुष रथमें रख कर सूर्यके समान रूपवाली एक शक्ति ग्रहण करके कृतवर्माकी ओर चलायी ॥ युधिष्ठिरके हाथसे छूटी हुई वह सुवर्णभूषित भयंङ्करी शक्ति कृतवर्माकी दहिनी भुजाको छेद करके पृथ्वीमें गिर पडी ॥ (३०-३२

उस ही समय धर्मराज युधिष्ठिर फिर अपना धनुष ग्रहण करके तीक्ष्ण बाणोंसे कृतवर्माको छिपाने लगे ॥ तिसके अनन्तर रथियों में मुख्य वृष्णिवंशीय महाबलवान् कृतवर्माने निमेष भर में राजा युधिष्ठिरके रथके घोडे और सारथीको प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ घोडे और सारथीको मरते देख धर्मराज युधिष्ठिरने ढाल तलवार ग्रहण किया; यदुवंशियोंमें मुख्य कृतवर्माने उस ही समय उनके ढाल तलवारको अपने तेज बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (३३—३५)

ढाल तलवारको कटते देख राजा युधिष्ठिरने शीघ्रताके सहित एक भयङ्कर तोमर ग्रहण करके कृतवर्माकी ओर चलाया ॥ युधिष्ठिरके हाथसे छूटे हुए तोमरको अपनी ओर आते देख हृदीक पुत्र कृतवर्माने हस्तलाघवके सहित निर्भ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः शरशतेनाऽऽजौ धर्मपुत्रमवाकिरत् ।
कवचं चाऽस्य संक्रुद्धः शरैस्तीक्ष्णैरदारयत ॥ ३८ ॥
हार्दिक्यशरसंछन्नं कवचं तन्महाधनम् ।
व्यशीर्यत रणे राजंस्ताराजालमिवाऽम्बरात् ॥ ३९ ॥
स च्छिन्नधन्वा विरथः शीर्णवर्मा शरार्दितः ।
अपायासीद्रणात्तूर्णं धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ४० ॥
कृतवर्मा तु निर्जित्य धर्मात्मानं युधिष्ठिरम् ।
पुनर्द्रोणस्य जुगुपे चक्रमेव महात्मनः ॥ ४१ ॥ [७४०९]

इति श्रीमहा० द्रोण० घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे युधिष्ठिरापयानं नाम पंचषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः॥१६५

सञ्जय उवाच— भूरिस्तु समरे राजञ्शैनेयं रथिनां वरम् ।
आपतन्तमपासेधत्प्रयाणादिव कुञ्जरम् ॥ १ ॥
अथैनं सात्यकिः क्रुद्धः पञ्चभिर्निशितैः शरैः ।
विव्याध हृदये तस्य प्रास्रवत्तस्य शोणितम् ॥ २ ॥
तथैव कौरवो युद्धे शैनेयं युद्धदुर्मदम् ।

यचित्तसे अपने बाणोंसे उसे दो टुकडे कर के पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ अनन्तर कृतवर्माने अत्यन्तही क्रुद्ध होकर रण भूमिमें स्थित धर्मपुत्रराजा युधिष्ठिर को सैकडों बाणोंसे छिपाकर अपने तेज बाणोंसे उनका कवच काट दिया ॥ (३६–३८)

महाराज ! राजा युधिष्ठिर का मूल्यवान् कवच हृदीकपुत्र कृतवर्माके अनगिनत बाणोंसे कटके इस प्रकार रणभूमिमें गिरके प्रकाशित होने लगा, जैसे आकाशसे गिरते हुए तारोंके समूह शोभित होते हैं ॥ धर्मपुत्र युधिष्ठिर कृतवर्माके अस्त्रोंसे रथभ्रष्ट धनुषरहित तथा कवचसे हीन होकर उनके बाणोंसे अत्यन्त ही पीडित हुए और शीघ्रताके सहित वहांसे भाग गये ॥ महाबलवान् कृतवर्मा इसी भांति धर्मराज युधिष्ठिर को पराजित करके फिर द्रोणाचार्यकी चक्ररक्षा करने में प्रवृत्त हुए ॥ ३९-४१

द्रोणपर्वमें एकसौ पैंसठ अध्याय समाप्त। ७४०९

द्रोणपर्वमें एकसौ छासठ अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! कुरुवंशीय भूरि द्रोणाचार्यकी ओर सात्यकि को आते देख उन्हें इस प्रकार निवारण करने लगे जैसे मतवारा हाथी ऊंची भूमिसे धीरे धीरे नीचे उतरता है ॥ शिनिपौत्र सात्यकिने क्रुद्ध होकर पांच तेज बाणोंसे भूरिके हृदयमें प्रहार किया, उससे भूरिके वक्षस्थलसे उसही समय रुधिर बहने लगा ॥ तिसके अनन्तर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशभिर्निशितैस्तीक्ष्णैरविध्यत भुजान्तरे ॥ ३ ॥
तावन्योन्यं महाराज ततक्षाते शरैर्भृशम् ।
क्रोधसंरक्तनयनौ क्रोधाद्विस्फार्य कार्मुके ॥ ४ ॥
तयोरासीन्महाराज शस्त्रवृष्टिः सुदारुणा ।
क्रुद्धयोः सायकमुचोर्यमान्तकनिकाशयोः ॥ ५ ॥
तावन्योन्यं शरै राजन्संछाद्य समवास्थितौ ।
मुहूर्तं चैव तद्युद्धं समरूपमिवाऽभवत् ॥ ६ ॥
ततः क्रुद्धो महाराज शैनेयः प्रहसन्निव ।
धनुश्चिच्छेद समरे कौरव्यस्य महात्मनः ॥ ७ ॥
अथैनं छिन्नधन्वानं नवभिर्निशितैः शरैः ।
विव्याध हृदये तूर्णं तिष्ठतिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥ ८ ॥
सोऽतिविद्धो बलवता शत्रुणा शत्रुतापनः ।
धनुरन्यत्समादाय सात्वतं प्रत्यविध्यत ॥ ९ ॥
स विध्वा सात्वतं बाणैस्त्रिभिरेव विशाम्पते ।
धनुश्चिच्छेद भल्लेन सुतीक्ष्णेन हसन्निव ॥ १० ॥

पराक्रमी भूरिने भी दशबाणोंसे युद्धदुर्मद सात्यकिके वक्षस्थल में प्रहार किया। (१—३)

महाराज! इसी भांति वे दोनों पराक्रमी वीर क्रोधसे नेत्र लाल करके धनुष फेरते हुए दूसरेके शरीरको अपने तेज बाणोंके प्रहारसे क्षत-विक्षत करने लगे॥ उस समय लगातार बाण चलानेवाले यमराज तथा मृत्युकी भांति क्रोधी भूरि और सात्यकि के भयङ्कर बाणोंकी वर्षा होती हुई दीख पडने लगी॥ जब युद्धभूमिमें स्थित वे दोनों वीर एक दूसरेको अपने बाणोंसे छिपाने लगे, उस समय मुहूर्त्त भर तक उन दोनों वीरोंका संग्राम समभावसे ही होता रहा॥ (४—६)

तिसके अनन्तर शिनिपौत्र सात्यकिने क्रुद्ध होकर मानो हंसके ही महात्मा कुरुवंशीय भूरिके धनुषको काट दिया फिर खडा रह! खडा रह! कहके अपने नौ तेज बाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार किया॥ शत्रुनाशन भूरि बलवान् सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त ही विद्ध होकर कटा हुआ धनुष त्याग कर दूसरा धनुष ग्रहण करके फिर सात्यकिको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे॥ ७-९

हे राजेन्द्र! कुरुवंशीय भूरिने अपने तीन बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिन्नधन्वा महाराज सात्यकिः क्रोधमूर्च्छितः ।
प्रजहार महावेगां शक्तिं तस्य महोरसि ॥ ११ ॥
स तु शक्त्या विभिन्नाङ्गो निपपात रथोत्तमात् ।
लोहिताङ्ग इवाऽऽकाशाद्दीप्तरश्मिर्यदृच्छया ॥ १२ ॥
तं तु दृष्ट्वा हतं शूरमश्वत्थामा महारथः ।
अभ्यधावत वेगेन शैनेयं प्रति संयुगे ॥ १३ ॥
तिष्ठतिष्ठेति चाऽऽभाष्य शैनेयं स नराधिप ।
अभ्यवर्षच्छरौघेण मेरुं वृष्ट्या यथाऽम्बुदः ॥ १४ ॥
तमापतन्तं संरब्धं शैनेयस्य रथं प्रति ।
घटोत्कचोऽब्रवीद्राजन्नादं मुक्त्वा महारथः ॥ १५ ॥
तिष्ठतिष्ठ न मे जीवन्द्रोणपुत्र गमिष्यसि ।
एष त्वां निहनिष्यामि महिषं षण्मुखो यथा ॥ १६ ॥
युद्धश्रद्धामहं तेऽद्य विनेष्यामि रणाजिरे ।
इत्युक्त्वा क्रोधताम्राक्षो राक्षसः परवीरहा ॥ १७ ॥
द्रौणिमभ्यद्रवत्क्रुद्धो गजेन्द्रमिव केसरी ।

एक तेज भल्लास्त्रसे उनका धनुष काट दिया ॥ धनुष कटने पर सात्यकिने क्रोधसे मूर्छित होकर एक शक्ति चला कर भूरिके हृदयमें प्रहार किया ॥ महाराज ! पराक्रमी भूरि सात्यकीके हाथसे छूटी हुई उस ही शक्तिकी चोट से प्राणरहित होकर अपने उत्तम रथसे इस प्रकार पृथ्वी पर गिरके प्रकाशित हुए मानो आकाशमण्डलसे प्रकाशमान मङ्गल ग्रह पृथ्वी पर गिरे हुए प्रकाशित होरहे हैं ॥ (१०—१२)

महारथी अश्वत्थामा युद्धभूमिमें पराक्रमी भूरिको मरते देख शीघ्रताके सहित सात्यकिकी ओर दौडे और खडा रह ! खडा रह ! कहके सात्यकिके ऊपर इस प्रकार अपने बाणोंको वर्षाने लगे जैसे बादल आकाशसे मेरुपर्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं ॥ रथियोंमें मुख्य पराक्रमी घटोत्कच अश्वत्थामाको क्रोधपूर्वक सात्यकिकी ओर गमन करते देख ऊंचे स्वरसे उनसे यह वचन कहने लगा,—हे द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ! आज तुम जीते हुए मेरे समीपसे गमन नहीं कर सकोगे । जैसे स्कन्दराजने महिषासुरका वध किया था, वैसे ही मैं भी युद्धभूमिमें तुम्हारी युद्धकी अभिलाषाको पूरी करके आज ही तुम्हारा वध करूंगा। १३—१७

शत्रुनाशन राक्षस घटोत्कच ऐसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथाक्षमात्रैरिषुभिरभ्यवर्षद्घटोत्कचः ॥ १८ ॥
रथिनामृषभं द्रौणिं धाराभिरिव तोयदः।
शरवृष्टिं तु तां प्राप्तां शरैराशीविषोपमैः ॥ १९ ॥
शातयामास समरे तरसा द्रौणिरुत्स्मयन्।
ततः शरशतैस्तीक्ष्णैर्मर्मभेदिभिराशुगैः ॥ २० ॥
समाचिनोद्राक्षसेन्द्रं घटोत्कचमरिन्दमम्।
स शरैराचितस्तेन राक्षसो रणमूर्धनि ॥ २१ ॥
व्यकाशत महाराज श्वाविच्छललितो यथा।
ततः क्रोधसमाविष्टो भैमसेनिः प्रतापवान् ॥ २२ ॥
शरैरवचकर्तोग्रैर्द्रौणिं वज्राशनिप्रभैः।
क्षुरप्रैरर्धचन्द्रैश्च नाराचैः सशिलीमुखैः ॥ २३ ॥
वराहकर्णैर्नालीकैर्विकर्णैश्चाऽभ्यवीवृषत्।
तां शस्त्रवृष्टिमतुलां वज्राशनिसमस्वनाम् ॥ २४ ॥
पतन्तीमुपरि क्रुद्धो द्रौणिरव्यथितेन्द्रियः।

वचन कहके क्रोधसे नेत्र लाल करके इस प्रकार अश्वत्थामाकी ओर दौडा, जैसे क्रुद्ध सिंह मतवारे हाथीकी ओर दौडता है। अनन्तर राक्षस घटोत्कच अश्वत्थामाके ऊपर अपने मोटे मोटे तेज बाणोंको इस प्रकार चलाने लगा, जैसे बादल आकाशसे पृथ्वीके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं। (१७—१९)

द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने घटोत्कचके चलाये हुए बाणोंको खेलवाडकी भांति अपने तेज बाणोंसे निवारित किया। तिसके अनन्तर पराक्रमी अश्वत्थामा शत्रुओंके नाश करनेवाले राक्षसराज घटोत्कचको सैकडों बाणोंसे पीडित करने लगे। भीमसेनपुत्र प्रतापी घटोत्कचका शरीर अश्वत्थामाके बाणोंसे परिपूरित होकर इस प्रकार शोभित होने लगा, जैसे कांटोंसे युक्त शल्यकी शोभित होती है। (१९—२२)

फिर घटोत्कच अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर क्षुरप्र, अर्द्धचन्द्र, नाराच, वराहकर्ण, नालिक, सुतीक्ष्ण और विकर्ण इत्यादि वज्रके समान अनेक शस्त्रों और अनगिनत बाणोंको चलाकर अश्वत्थामाके शरीरको क्षत विक्षत करने लगा; वे वज्रके समान शब्दसे युक्त अत्यन्त भयङ्कर बाण लगातार अश्वत्थामाके ऊपर पडने लगे। अनन्तर जैसे प्रचण्ड वायु बादलोंके समूहको छिन्नभिन्न कर देता है, वैसे ही पराक्रमी अश्वत्थामाने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स दुःसहां शरैर्घोरैर्दिव्यास्त्रप्रतिमन्त्रितैः ॥ २५ ॥
व्यधमत्सुमहातेजा महाभ्राणीव मारुतः ।
ततोऽन्तरिक्षे बाणानां संग्रामोऽन्य इवाऽभवत् ॥२६॥
घोररूपो महाराज योधानां हर्षवर्धनः ।
ततोऽस्त्रसङ्घर्षकृतैर्विस्फुलिङ्गैः समन्ततः ॥ २७ ॥
बभौ निशामुखे व्योम खद्योतैरिव संवृतम् ।
स मार्गणगणैर्द्रौणिर्दिशः प्रच्छाद्य सर्वतः ॥ २८ ॥
प्रियार्थं तव पुत्राणां राक्षसं समवाकिरत् ।
ततः प्रववृते युद्धं द्रौणिराक्षसयोर्मृधे ॥ २९ ॥
विगाढे रजनीमध्ये शक्रप्रह्लादयोरिव ।
ततो घटोत्कचो बाणैर्दशभिर्द्रौणिमाहवे ॥ ३० ॥
जघानोरसि संक्रुद्धः कालज्वलनसन्निभैः ।
स तैरभ्याहतैर्विद्धो राक्षसेन महाबलः ॥ ३१ ॥
चचाल समरे द्रौणिर्वातनुन्न इव द्रुमः ।
स मोहमनुसम्प्राप्तो ध्वजयष्टिं समाश्रितः ॥ ३२ ॥

अपने अनेक भयङ्कर बाणोंको चलाकर घटोत्कचके चलाये हुए बाणोंको निवारण किया । (२२—२६)

उससे ऐसा मालूम हुआ, कि मानो आकाशमण्डलमें शूरवीर योद्धाओंके हर्षको बढानेवाला बाणयुद्ध हो रहा है । उन बाणोंके आपसमें रगड खानेसे उनसे अग्निकी चिनगारी प्रकट होके इधर उधर गिरती हुई इस प्रकार दिखाई देने लगीं;—जैसे रात्रिके समय उडते हुए खद्योतोंके समूह शोभित होते हैं ॥ महाराज ! उस समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा तुम्हारे पुत्रोंके प्रियकार्यको पूर्ण करनेकी इच्छा करके अपने बाणोंसे सम्पूर्ण दिशाको परिपूरित करके घटोत्कचको तेज बाणोंसे पीडित करने लगे । इसी प्रकार उस महाघोर रात्रिके समय इन्द्र और प्रह्लादकी भांति पराक्रमी अश्वत्थामा और राक्षसराज घटोत्कचका महाघोर संग्राम होने लगा । (२६–३०)

अनन्तर घटोत्कचने अत्यन्त क्रुद्ध होकर मृत्युके समान भयङ्कर दश बाणोंसे अश्वत्थामाके वक्षस्थलमें प्रहार किया । महाराज ! द्रोणपुत्र पराक्रमी अश्वत्थामा घटोत्कचके अत्यन्त चोखे बाणोंसे विद्ध होकर वायुके वेगसे कम्पित होते हुए वृक्षकी भांति विचलित हुए । उस समय अश्वत्थामा घटोत्कचके बाणोंकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो हाहाकृतं सैन्यं तव सर्वं जनाधिप ।
हतं स्म मेनिरे सर्वे तावकास्तं विशाम्पते ॥ ३३ ॥
तं तु दृष्ट्वा तथावस्थमश्वत्थामानमाहवे ।
पञ्चालाः सृञ्जयाश्चैव सिंहनादं प्रचक्रिरे ॥ ३४ ॥
प्रतिलभ्य ततः संज्ञामश्वत्थामा महाबलः ।
धनुः प्रपीड्य वामेन करेणाऽमित्रकर्शनः ॥ ३५ ॥
मुमोचाऽऽकर्णपूर्णेन धनुषा शरमुत्तमम् ।
यमदण्डोपमं घोरमुद्दिश्याऽऽशु घटोत्कचम् ॥ ३६ ॥
स भित्त्वा हृदयं तस्य राक्षसस्य शरोत्तमः ।
विवेश वसुधामुग्रः सपुङ्खः पृथिवीपते ॥ ३७ ॥
सोऽतिविद्धो महाराज रथोपस्थ उपाविशत् ।
राक्षसेन्द्रः सुबलवान्द्रौणिना रणशालिना ॥ ३८ ॥
दृष्ट्वा विमूढं हैडिम्बं सारथिस्तु रणाजिरात् ।
द्रौणेः सकाशात्सम्भ्रान्तस्त्वपनिन्ये त्वरान्वितः ॥ ३९ ॥
तथा तु समरे विध्वा राक्षसेन्द्रं घटोत्कचम् ।
ननाद सुमहानादं द्रोणपुत्रो महारथः ॥ ४० ॥

चोटसे मोहित होके रथदण्ड पकडके रथपर स्थित हुए ॥ (३०–३२)

उस समय तुम्हारी ओरके योद्धा लोग हाहाकार शब्दके सहित महाघोर कोलाहल करने लगे और सेनापतियोंने समझा कि अश्वत्थामा मारे गये ॥ उस ही समय पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग अश्वत्थामाको मूर्च्छित देख, हर्षित होके सिंहनाद करने लगे । इतने ही समयमें शत्रुनाशन अश्वत्थामाने सावधान होकर बायें हाथसे अपने प्रचण्ड धनुषकी मूठीको दृढताके सहित ग्रहण किया और शीघ्र ही यमदण्डके समान भयङ्कर एक बाण धनुषपर रखके कान पर्यन्त धनुष खींचके घटोत्कचकी ओर चलाया । वह भयङ्कर बाण राक्षसराज घटोत्कचके हृदयको भेदकर शीघ्रताके सहित पृथ्वीमें घुस गया ॥ ३३-३७

महाबली राक्षसेन्द्र घटोत्कच अश्वत्थामाके बाणकी चोटसे अत्यन्त विकल होके रथमें बैठ गया ॥ उसके सारथीने उसे मूर्च्छित देख भयभीत होकर शीघ्रताके सहित रथ हांकके अश्वत्थामाके समीपसे प्रस्थान किया ॥ महारथी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा राक्षसेन्द्र घटोत्कचको इसी भांति मूर्च्छित करके ऊंचे स्वरसे सिंह-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजितस्तव पुत्रैश्च सर्वयोधैश्च भारत ।
वपुषाऽतिप्रजज्वाल मध्याह्न इव भास्करः ॥ ४१ ॥
भीमसेनं तु युध्यन्तं भारद्वाजरथं प्रति ।
स्वयं दुर्योधनो राजा प्रत्यविध्यच्छितैः शरैः ॥ ४२ ॥
तं भीमसेनो दशभिः शरैर्विव्याध मारिष ।
दुर्योधनोऽपि विंशत्या शराणां प्रत्यविध्यत ॥ ४३ ॥
तौ सायकैरवच्छिन्नावदृश्येतां रणाजिरे ।
मेघजालसमाच्छन्नौ नभसीवेन्दुभास्करौ ॥ ४४ ॥
अथ दुर्योधनो राजा भीमं विव्याध पत्रिभिः ।
पञ्चभिर्भरतश्रेष्ठ तिष्ठ तिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥ ४५ ॥
तस्य भीमो धनुश्छित्त्वा ध्वजं च दशभिः शरैः ।
विव्याध कौरवश्रेष्ठं नवत्या नतपर्वणाम् ॥ ४६ ॥
ततो दुर्योधनः क्रुद्धो धनुरन्यन्महत्तरम् ।
गृहीत्वा भरतश्रेष्ठो भीमसेनं शितैः शरैः ।
अपीडयद्रणमुखे पश्यतां सर्वधन्विनाम् ॥ ४७ ॥
तान्निहत्य शरान्भीमो दुर्योधनधनुश्च्युतान् ।

नाद करने लगे ॥ महाराज ! उस समय पराक्रमी अश्वत्थामा तुम्हारे पुत्र और सम्पूर्ण योद्धाओंसे प्रशंसित होकर अपने शरीरसे इस प्रकार प्रकाशित होने लगे जैसे दोपहरके सूर्य अपने तेजसे प्रकाशित होते हैं ॥ (३८—४१)

इधर द्रोणाचार्यके समीप भीमसेन को युद्ध में प्रवृत्त देखकर राजा दुर्योधन स्वयं उन्हें अपने चोखे बाणोंसे विद्ध करने लगे ॥ भीमसेनने भी उन्हें दश बाणोंसे विद्ध किया, तब दुर्योधनने फिर वीस बाणोंसे भीमसेनके शरीरमें प्रहार किया ॥ रणभूमिमें वे दोनों वीर एक दूसरेके बाणजाल में इस प्रकार छिप गये, जैसे बादलोंके समूह में घिरे हुए सूर्य और चन्द्रमा दीख पडते हैं ॥ (४२-४४)

तिसके अनन्तर राजा दुर्योधनने भीमसेनको खडा रह ! खडा रह! कहके उन्हें पांच बाणोंसे विद्ध किया ॥ तब भीमसेनने दश बाणोंसे उनका धनुष और रथदण्ड काटके नव्वे बाणोंसे उन्हें विद्ध किया ॥ अनन्तर राजा दुर्योधनने क्रुद्ध होकर एक दृढ-धनुष ग्रहण किया और सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके संमुखमेंही भीमसेनको अपने बाणोंसे पीडित करने लगे ॥ ४५-४७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौरवं पञ्चविंशत्या क्षुद्रकाणां समार्पयत् ॥ ४८ ॥
दुर्योधनस्तु संक्रुद्धो भीमसेनस्य मारिष ।
क्षुरप्रेण धनुश्छित्त्वा दशभिः प्रत्यविध्यत ॥ ४९ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय भीमसेनो महाबलः ।
विव्याध नृपतिं तूर्णं सप्तभिर्निशितैः शरैः ॥ ५० ॥
तदप्यस्य धनुः क्षिप्रं चिच्छेद लघुहस्तवत् ।
द्वितीयं च तृतीयं च चतुर्थं पञ्चमं तथा ॥ ५१ ॥
आत्तमात्तं महाराज भीमस्य धनुराच्छिनत् ।
तव पुत्रो महाराज जितकाशी मदोत्कटः ॥ ५२ ॥
स तथा भिद्यमानेषु कार्मुकेषु पुनः पुनः ।
शक्तिं चिक्षेप समरे सर्वपारसवीं शुभाम् ॥ ५३ ॥
मृत्योरिव स्वसारं हि दीप्तां वह्निशिखामिव ।
सीमन्तमिव कुर्वन्तीं नभसोऽग्निसमप्रभाम् ॥ ५४ ॥
अप्राप्तामेव तां शक्तिं त्रिधा चिच्छेद कौरवः ।
पश्यतः सर्वलोकस्य भीमस्य च महात्मनः ॥ ५५ ॥

भीमसेनने दुर्योधनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको निवारण करके उन्हें पचीस क्षुद्रकास्त्रसे पीडित किया ॥ महाराज ! दुर्योधनने अत्यन्त क्रुद्ध होके क्षुरप्रअस्त्रसे भीमसेनका धनुष काटकर उन्हें दश बाणोंसे विद्ध किया ॥ महाबली भीमसेनने शीघ्रही दूसरे धनुष पर रोंदा चढाया और शीघ्रताके सहित सात चोखे बाणोंसे कुरुराज दुर्योधनको विद्ध किया। महाराज! तुम्हारे पुत्र विजयी श्रेष्ठ पराक्रमी दुर्योधनने उस ही समय हस्तलाघवके सहित बाण चलाकर भीमसेनके सउ धनुषको भी काटके गिरा दिया; इसी भांति दूसरे, तीसरे, चौथे पांचवें तथा जितनी वार भीमसेनने कटे धनुषको त्यागके अन्य धनुष ग्रहण किया, दुर्योधनने बार बार उनके धनुषको काट काटके पृथ्वीमें गिराया ॥ (४८-५२)

उस समय बार बार दुर्योधनके बाणोंसे अपने धनुषोंको कटते देख, भीमसेनने लोहमयी एक दृढ शक्ति ग्रहण करके दुर्योधनकी ओर चलायी ॥ महाराज ! आकाशमण्डलमें जलते हुए लुककी भांति उस महाभयङ्करी शक्तिको समीप न पहुंचते ही पहुंचते दुर्योधनने महात्मा भीमसेन और सम्पूर्ण योद्धाओंके संमुख में ही उसे अपने बाणोंसे दो टुकडे करके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (५३-५५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो भीमो महाराज गदां गुर्वीं महाप्रभाम् ।
चिक्षेपाऽऽविध्य वेगेन दुर्योधनरथं प्रति ॥ ५६ ॥
ततः सा सहसा वाहांस्तव पुत्रस्य संयुगे ।
सारथिं च गदा गुर्वी ममर्दाऽस्य रथं पुनः ॥ ५७ ॥
पुत्रस्तु तव राजेन्द्र भीमाद्भीतिः प्रणश्य च ।
आरुरोह रथं चाऽन्यं नन्दकस्य महात्मनः ॥ ५८ ॥
ततो भीमो हतं मत्वा तव पुत्रं महारथम् ।
सिंहनादं महच्चक्रे तर्जयन्निशि कौरवान् ॥ ५९ ॥
तावकाः सैनिकाश्चाऽपि मेनिरे निहतं नृपम् ।
ततोऽतिचुक्रुशुः सर्वे ते हाहेति समन्ततः ॥ ६० ॥
तेषां तु निनदं श्रुत्वा त्रस्तानां सर्वयोधिनाम् ।
भीमसेनस्य नादं च श्रुत्वा राजन्महात्मनः ॥ ६१ ॥
ततो युधिष्ठिरो राजा हतं मत्वा सुयोधनम् ।
अभ्यवर्तत वेगेन यत्र पार्थो वृकोदरः ॥ ६२ ॥
पञ्चालाः केकया मत्स्याः सृञ्जयाश्च विशाम्पते ।

उसे देखकर भीमसेनने एक प्रकाशमान लोहमयी भारी गदाको घुमाके दुर्योधनके रथ पर फेंक दिया। महाराज! वह अत्यन्त ही भारी गदा भीमसेनके हाथसे छूट कर कुरुराज दुर्योधनके रथपर गिरी और उस गदाकी चोटसे दुर्योधनका सारथी और उनके रथके घोडे प्राणरहित होकर गिर पडे; तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधन उस सुवर्णभूषित रथसे कूद कर नन्दकके रथपर चढ गये॥ (५६-५८)

परन्तु भीमसेन दुर्योधनको मरा हुआ समझके कौरवोंके बीच बार बार गर्जतेहुए सिंहनाद करने लगे, भीमसेनका गर्जना तथा उनके सिंहनादको सुनकर तुम्हारी ओरके भी बहुतेरे वीरोंने समझा, कि कुरुराज दुर्योधन मारेगये; ऐसा समझके तुम्हारी सेनाके पुरुष हाहाकार शब्दके सहित चारों ओरसे महाघोर कोलाहल मचाने लगे ॥ (५९-६०)

राजायुधिष्ठिरने भयसे व्याकुल कौरवी सेनाके योद्धाओंके हाहाकार शब्द और महात्मा भीमसेनके सिंहनादको सुन कर दुर्योधनको मरा हुआ जाना और जिस स्थलपर भीमसेन रणभूमिमें स्थित थे राजा युधिष्ठिर शीघ्रताके सहित उस ही स्थान पर उपस्थित हुए॥ (६१-६२)

अनन्तर पाञ्चाल केकय सृञ्जय और मत्स्यदेशीय योद्धालोग सब भांतिसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोद्योगेनाऽभिजग्मुर्द्रोणमेव युयुत्सया ॥ ६३ ॥
तत्राऽऽसीत्सुमहद्युद्धं द्रोणस्याऽथ परैः सह ।
घोरे तमसि मग्नानां निघ्नतामितरेतरम् ॥ ६४ ॥ [७४७३]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे दुर्योधनापयाने षट्षष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६६

सञ्जय उवाच— सहदेवमथाऽऽयान्तं द्रोणप्रेप्सुं विशाम्पते ।
कर्णो वैकर्तनो युद्धे वारयामास भारत ॥ १ ॥
सहदेवस्तु राधेयं विध्वा नवभिराशुगैः ।
पुनर्विव्याध दशभिर्विशिखैर्नतपर्वभिः ॥ २ ॥
तं कर्णः प्रतिविव्याध शतेन नतपर्वणाम् ।
सज्यं चाऽस्य धनुः शीघ्रं चिच्छेद लघुहस्तवत् ॥ ३ ॥
ततोऽन्यद्धनुरादाय माद्रीपुत्रः प्रतापवान् ।
कर्णं विव्याध विंशत्या तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ ४ ॥
तस्य कर्णो हयान्हत्वा शरैः सन्नतपर्वभिः ।
सारथिं चाऽस्य भल्लेन द्रुतं निन्ये यमक्षयम् ॥ ५ ॥
विरथः सहदेवस्तु खड्गं चर्म समाददे ।

यत्नवान् होकर द्रोणाचार्यकी ओर गमन करने लगे ॥ अनन्तर उस भयङ्करी रात्रिके समय जब दोनों सेनाके पुरुष आपसमें युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, तब शत्रुओंके सङ्ग द्रोणाचार्यका महाघोर युद्ध होने लगा ॥ (६३-६४)[७४७३]

द्रोणपर्वमें एकसौ छासठ अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ सैंसठ अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! युद्धभूमिमें स्थित विकर्त्तन पुत्र कर्ण सहदेवको द्रोणाचार्यकी ओर गमन करते देख उन्हें निवारण करने लगे ॥ सहदेवने राधा-नन्दन कर्णको नौ बाणोंसे विद्ध करके फिर शीघ्रताके सहित दश बाणोंसे विद्ध किया ॥ कर्णने भी एक सौ बाणोंसे सहदेवको विद्ध करके शीघ्रतापूर्वक रोदेके सहित उनका धनुष काट दिया ॥ १-३

धनुष कटनेपर माद्रीपुत्र सहदेवने दूसरा धनुष ग्रहण करके बीस बाणोंसे कर्णको विद्ध किया उस समय सहदेवका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पडा ॥ तब कर्णने क्रुद्ध होकर अपने तेज बाणोंसे सहदेवके रथके घोडोंको प्राणरहित करके उनके सारथीको भी एक भल्लास्त्रसे मारकर यमपुरीमें भेज दिया । महाराज ! रथसे रहित होनेपर माद्रीपुत्र सहदेवने ढाल तलवार ग्रहण किया; कर्णने उनके ढाल तलवारको भी खेलवाडकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदप्यस्य शरैः कर्णो व्यधमत्प्रहसन्निव ॥ ६ ॥
अथ गुर्वीं महाघोरां हेमचित्रां महागदाम् ।
प्रेषयामास संक्रुद्धो वैकर्तनरथं प्रति ॥ ७ ॥
तामापतन्तीं सहसा सहदेवप्रचोदिताम् ।
व्यष्टम्भयच्छरैः कर्णो भूमौ चैनामपातयत् ॥ ८ ॥
गदां विनिहतां दृष्ट्वा सहदेवस्त्वरान्वितः ।
शक्तिं चिक्षेप कर्णाय तामप्यस्याऽच्छिनच्छरैः ॥ ९ ॥
ससंभ्रमं ततस्तूर्णमवप्लुत्य रथोत्तमात् ।
सहदेवो महाराज दृष्ट्वा कर्णं व्यवस्थितम् ॥ १० ॥
रथचक्रं प्रगृह्याऽऽजौ मुमोचाऽऽधिरथं प्रति ।
तदापतद्वै सहसा कालचक्रमिवोद्यतम् ॥ ११ ॥
शरैरनेकसाहस्रैराच्छिनत्सूतनन्दनः ।
तस्मिंस्तु निहते चक्रे सूतजेन महात्मना ॥ १२ ॥
ईषादण्डकयोक्त्रांश्च युगानि विविधानि च ।
हस्त्यङ्गानि तथाऽश्वांश्च मृतांश्च पुरुषान्बहून् ॥ १३ ॥
चिक्षेप कर्णमुद्दिश्य कर्णस्तान्व्यधमच्छरैः ।

भांति अपने तेज बाणोंसे काटके गिरा दिया ॥ (४—६)

अनन्तर सहदेवने सोनेके तारोंसे खचित एक भयङ्करी और भारी गदाको कर्णकी ओर चलाया, सहदेवकी भुजासे छूटी हुई उस गदाको अपनी ओर आती देख कर्णने बाणोंको चलाकर उसे मार्गही में रोकके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ गदाको निष्फल होती देख सहदेवने शीघ्रताके सहित कर्णकी ओर एक शक्ति चलाई। कर्णने उस शक्तिको भी अपने बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (७-९)

महाराज! इसी भांति सम्पूर्ण शस्त्रों के निष्फल होनेपर माद्रीपुत्र सहदेव ने शीघ्रता के सहित रथ से कूदकर एक रथचक्र उठा कर कर्णकी ओर चलाया। साक्षात् कालचक्रकी भांति उस रथचक्रको सम्मुख आते देख कर्णने कई हजार बाणोंसे उसे काटके पृथ्वीमें गिराया। महात्मा कर्णके बाणोंसे रथ-चक्रको कटते देख सहदेव रथके दण्ड, धुरी, काष्ठ, रणभूमिमें पडे हुए हाथी, घोडे और मृत पुरुषोंके शरीरको उठा उठाकर कर्णकी ओर फेंकने लगे। कर्णने अपने बाणोंके प्रभावसे उन सम्पूर्ण सामग्रियोंको काट काटके पृथ्वीमें गिरा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स निरायुधमात्मानं ज्ञात्वा माद्रवतीसुतः ॥ १४ ॥
वार्यमाणस्तु विशिखैः सहदेवो रणं जहौ।
तमभिद्रुत्य राधेयो मुहूर्ताद्भरतर्षभ ॥ १५ ॥
अब्रवीत्प्रहसन्वाक्यं सहदेवं विशाम्पते।
मा युध्यस्व रणेऽधीर विशिष्टै रथिभिः सह ॥ १६ ॥
सहशैर्युध्य माद्रेय वचो मे मा विशङ्किथाः।
अथैनं धनुषोऽग्रेण तुदन्भूयोऽब्रवीद्वचः ॥ १७ ॥
एषोऽर्जुनो रणे तूर्णं युध्यते कुरुभिः सह।
तत्र गच्छस्व माद्रेय गृहं वा यदि मन्यसे ॥ १८ ॥
एवमुक्त्वा तु तं कर्णो रथेन रथिनां वरः।
प्रायात्पाञ्चालपाण्डूनां सैन्यानि प्रदहन्निव ॥ १९ ॥
वधं प्राप्तं तु माद्रेयं नाऽवधीत्समरेऽरिहा।
कुन्त्याः स्मृत्वा वचो राजन्सत्यसन्धो महायशाः॥२०॥
सहदेवस्ततो राजन्विमनाः शरपीडितः।
कर्णवाक्शरतप्तश्च जीवितान्निरविद्यत ॥ २१ ॥

दिया। (१०—१४)

इसी भांतिसे माद्रीपुत्र सहदेव कर्णके बाणोंसे निवारित होकर रणभूमि छोड-कर उनके सम्मुखसे भागे; परन्तु कर्णने उसी समय दौडके उन्हें पकड लिया ! और हंसते हंसते यह वचन कहने लगे। हे माद्रीपुत्र ! तुम मेरी बातोंको मत टालो जो मैं कहता हूं उसे सुनो। तुम अपने समान पुरुषके सङ्ग युद्ध करो; कभी अपनेसे अधिक बलवान् रथीके सङ्ग युद्ध मत करना। (१४-१७)

तिसके अनन्तर कर्ण सहदेवको धनु-षके अग्रभागसे पीडित करके यह वचन बोले,-रे माद्रीपुत्र ! यह देख ! अर्जुन यत्नवान् होकर कौरवोंके सङ्ग युद्ध कर रहा है, तुम उसी स्थानपर चले जाओ अथवा यदि इच्छा होवे तो घर भी जासकते हो। कर्णने हंसते हंसते सह-देवसे ऐसा वचन कहकर उन्हें छोडके पाण्डव और पाञ्चालसेनाके बीच प्रवेश किया॥ महाराज ! शत्रुनाशन महारथी सत्यपराक्रमी कर्णने युद्धभूमिके बीच सहदेवको अपने वशमें करके भी कुन्तीको जो वरदान दिया था, उसे स्मरण करके सहदेवका वध नहीं किया॥ १७-२०

परन्तु सहदेव कर्ण के बाणों से पीडित और उनके वचनरूपी शलाकासे विद्ध होकर ऐसे दुःखित हुए कि उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरुरोह रथं चापि पाञ्चाल्यस्य महात्मनः ।
जनमेजयस्य समरे त्वरायुक्तो महारथः ॥ २२ ॥
विराटं सहसेनं तु द्रोणं वै द्रुतमागतम् ।
मद्रराजः शरौघेण च्छादयामास धन्विनम् ॥ २३ ॥
तयोः समभवद्युद्धं समरे दृढधन्विनोः ।
यादृशं ह्यभवद्राजञ्जम्भवासवयोः पुरा ॥ २४ ॥
मद्रराजो महाराज विराटं वाहिनीपतिम् ।
आजघ्ने त्वरितस्तूर्णं शतेन नतपर्वणाम् ॥ २५ ॥
प्रतिविव्याध तं राजन्नवभिर्निशितैः शरैः ।
पुनश्चैनं त्रिसप्तत्या भूयश्चैव शतेन तु ॥ २६ ॥
तस्य मद्राधिपो हत्वा चतुरो रथवाजिनः ।
सूतं ध्वजं च समरे शराभ्यां संन्यपातयत् ॥ २७ ॥
हताश्वात्तु रथात्तूर्णमवप्लुत्य महारथः ।
तस्थौ विस्फारयंश्चापं विमुञ्चंश्च शिताञ्शरान् ॥ २८ ॥
शतानीकस्ततो दृष्ट्वा भ्रातरं हतवाहनम् ।

समय उन्हें जीवन धारण करना भी भारी मालूम होने लगा ॥ तिसके अनन्तर वह पाञ्चालराजपुत्र रथियोंमें मुख्य जनमेजयके रथपर जा चढे ॥ २१–२२

इस ही समय मद्रराज शल्य सेनाके सहित महारथ विराटको द्रोणाचार्यकी ओर गमन करते देख अपने बाणोंसे उन्हें छिपाने लगे ॥ महाराज ! जैसे पहिले समयमें इन्द्र और जम्भासुरका संग्राम हुआ था, वैसे ही रणभूमिके बीच स्थित दृढ धनुर्द्धारी दोनों वीरोंका युद्ध होने लगा ॥ महाराज ! मद्रराज शल्यने शीघ्रताके सहित अपने चोखे सौ बाणोंसे सेनापति विराटके शरीरमें प्रहार किया ॥ तब मत्स्यराज विराटने नव चोखे बाणोंसे शल्यको विद्ध करके फिर तिहत्तर और उसके अनन्तर एक सौ बाणोंसे उन्हें विद्ध किया ॥ (२३–२६)

अनन्तर मद्रराज शल्यने चार बाणोंसे राजा विराटके रथमें जुते हुए चारों घोडे और दो बाणोंसे उनके सारथी और रथकी ध्वजाको काटके पृथ्वीमें गिरा गिया ॥ मत्स्यराज विराट घोडे और सारथी से रहित रथ से कूद कर पृथ्वीपर स्थित हुए और अपना धनुष फेरते हुए शल्यके ऊपर तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ राजा विराटको रथ-रहित देखकर उनके भाई शतानीक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथेनाऽभ्यपतत्तूर्णं सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ २९ ॥
शतानीकमथाऽऽयान्तं मद्रराजो महामृधे।
विशिखैर्बहुभिर्विद्ध्वा ततो निन्ये यमक्षयम् ॥ ३० ॥
तस्मिंस्तु निहते वीरे विराटो रथसत्तमः।
आरुरोह रथं तूर्णं तमेव ध्वजमालिनम् ॥ ३१ ॥
ततो विस्फार्य नयने क्रोधाद् द्विगुणविक्रमः।
मद्रराजरथं तूर्णं छादयामास पत्त्रिभिः ॥ ३२ ॥
ततो मद्राधिपः क्रुद्धः शरेणाऽऽनतपर्वणा।
आजघानोरसि दृढं विराटं वाहिनीपतिम् ॥ ३३ ॥
सोऽतिविद्धो महाराज रथोपस्थ उपाविशत्।
कश्मलं चाऽऽविशत्तीव्रं विराटो भरतर्षभः ॥ ३४ ॥
सारथिस्तमपोवाह समरे शरविक्षतम्।
ततः सा महती सेना प्राद्रवन्निशि भारत ॥ ३५ ॥
वध्यमाना शरशतैः शल्येनाऽऽहवशोभिना।
तां दृष्ट्वा विद्रुतां सेनां वासुदेवधनञ्जयौ ॥ ३६ ॥
प्रयातौ तत्र राजेन्द्र यत्र शल्यो व्यवस्थितः।

सम्पूर्ण पुरुषोंके सम्मुखमें ही अपने रथको बढा कर वहां पर उपस्थित हुए॥ मद्रराज शल्यने शतानीकको अपने सन्मुख आते देख उन्हें अनेक बाणोंसे विद्ध करके उसी समय यमपुरीमें भेज दिया॥ (२७-३०)

महावीर शतानीकके मरनेपर रथियों में मुख्य राजा विराट ध्वजा पताकासे शोभित अपने भाईके रथ पर शीघ्रताके सहित चढ गये। अनन्तर राजा विराट क्रोधसे नेत्र लाल करके दूना पराक्रम प्रकाशित करते हुए, मद्रराज शल्यके रथको अपने बाणोंके समूहसे छिपाने लगे॥ तब मद्रराज शल्यने एकसौ चोखे बाणोंसे सेनापति विराटके वक्षःस्थलमें प्रहार किया॥ (३१-३३)

हे राजेन्द्र! राजा विराट शल्यके बाणोंकी चोटसे अत्यन्त विद्ध होकर मूर्च्छित होके रथमें बैठ गये॥ सारथीने राजा विराटके शरीरको क्षत विक्षत और उन्हें मूर्च्छित देखकर वहांसे प्रस्थान किया। तिसके अनन्तर उस रात्रिके समय मत्स्यदेशीय बडी सेना शल्यके सैकडों बाणोंसे पीडित होकर चारों ओर भागने लगी। महाराज! कृष्ण अर्जुन ने सेनाके उन सम्पूर्ण पुरुषोंको भागते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौ तु प्रत्युद्ययौ राजन्राक्षसेन्द्रो ह्यलम्बुषः ॥ ३७ ॥
अष्टचक्रसमायुक्तमास्थाय प्रवरं रथम् ।
तुरङ्गममुखैर्युक्तं पिशाचैर्घोरदर्शनैः ॥ ३८ ॥
लोहितार्द्रपताकं तं रक्तमाल्यविभूषितम् ।
काष्णायसमयं घोरमृक्षचर्मसमावृतम् ॥ ३९ ॥
रौद्रेण चित्रपक्षेण विवृताक्षेण कूजता ।
ध्वजेनोच्छ्रितदण्डेन गृध्रराजेन राजता ॥ ४० ॥
स बभौ राक्षसो राजन्भिन्नाञ्जनचयोपमः ।
रुरोधाऽर्जुनमायान्तं प्रभञ्जनमिवाऽद्रिराट् ॥ ४१ ॥
किरन्बाणगणान्राजञ्शतशोऽर्जुनमूर्धनि ।
अतितीव्रं महद्युद्धं नरराक्षसयोस्तदा ॥ ४२ ॥
द्रष्टृणां प्रीतिजननं सर्वेषां तत्र भारत ।
गृध्रकाकबलोलूककङ्कगोमायुहर्षणम् ॥ ४३ ॥
तमर्जुनः शतेनैव पत्रिणां समताडयत् ।
नवभिश्च शितैर्बाणैर्ध्वजं चिच्छेद भारत ॥ ४४ ॥
सारथिं च त्रिभिर्बाणैस्त्रिभिरेव त्रिवेणुकम् ।

देख, जिस स्थानमें मद्रराज शल्य स्थित थे उस ही स्थलमें गमन किया ।(३४-३७)

उसी समय राक्षसराज अलम्बुष घोडेके रूप समान आकृतिवाले भयंकर पिशाच जूते हुए रक्तवर्णकी पताकासे युक्त लाल मालासे भूषित ऋक्षके चमडेसे घिरे हुए, आठ चक्केसे युक्त काले रङ्गवाले एक बहुत बडे रथ पर चढके कृष्ण अर्जुनके सम्मुख उपस्थित हुआ । उसके रथकी ऊंची ध्वजा पर बैठा हुआ विचित्र पंखोंसे शोभित एक भयङ्कर गिद्ध डरावनी बोली बोल रहा था ॥ महाराज ! कज्जलगिरिके समान रूपवाले उस राक्षसने अपने रथपर चढके सैकडों बाणोंको चलाते हुए कृष्ण अर्जुनको इस भांति आगे बढनेसे रोक दिया जैसे सुमेरु पर्वत वायुकी गतिको रोक देता है ॥ ३७-४१)

उस समय मनुष्य और राक्षसका ऐसा कठिन युद्ध होने लगा, कि देखने वाले अत्यन्त ही आनन्दित हुए और कौवे गिद्ध कङ्क उल्लू और सियार आदि मांसभक्षी जीव हर्षित होके मांस खाते और रुधिर पीते जाते थे । तिसके अनन्तर अर्जुनने एक सौ बाणोंसे उसे पीडित करके फिर नौ चोखे बाणोंसे उसके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुरेकेन चिच्छेद चतुर्भिश्चतुरो हयान् ॥ ४५ ॥
पुनः सज्यं कृतं चापं तदप्यस्य द्विधाऽच्छिनत्।
विरथस्योद्यतं खड्गं शरेणाऽस्य द्विधाऽकरोत् ॥ ४६ ॥
अथैनं निशितैर्बाणैश्चतुर्भिर्भरतर्षभ।
पार्थोऽविध्यद्राक्षसेन्द्रं स विद्धः प्राद्रवद्भयात् ॥ ४७ ॥
तं विजित्याऽर्जुनस्तूर्णं द्रोणान्तिकमुपाययौ।
किरञ्शरगणान्राजन्नरवारणवाजिषु ॥ ४८ ॥
वध्यमाना महाराज पाण्डवेन यशस्विना।
सैनिका न्यपतन्भुव्यां वातनुन्ना इव द्रुमाः ॥ ४९ ॥
तेषु तूत्साद्यमानेषु फाल्गुनेन महात्मना।
सम्प्राद्रवद्बलं सर्वं पुत्राणां ते विशाम्पते ॥ ५० ॥ [७५२३]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धेऽलंबुषपराभवे सप्तषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १६७ ॥

सञ्जय उवाच— शतानीकं शरैस्तूर्णं निर्दहन्तं चमूं तव।

रथकी ध्वजा, तीन बाणोंसे सारथी, तीनसे त्रिवेणु, एक बाणसे धनुष और चार बाणोंसे उसके रथके चारों घोडोंको तथा पुनः सज्ज किये हुए उनके धनुष्यको काट डाला ॥ (४२-४६)

उस राक्षसने रथरहित होकर तलवार को ग्रहण किया, अर्जुनने उस तलवारको भी एक तेज बाणसे दोटुकडे करके पृथ्वी में गिरा दिया, और शिला पर घिसे हुए चार चोखे बाणोंसे उसे पीडित किया। वह राक्षस अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त ही पीडित होकर अपना प्राण बचा कर उनके संमुखसे भाग गया। उस समय अर्जुन उस राक्षसको पराजित करके हाथी, घोडे और मनुष्योंके ऊपर अनगिनत बाण चलाते हुए शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्यकी ओर गमन करने लगे ॥ (४६—४८)

महाराज ! तुम्हारी सेनाके योद्धा पाण्डुपुत्र यशस्वी अर्जुनके बाणोंसे पीडित होके इस प्रकार पृथ्वी में गिरने लगे जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे बहुतेरे वृक्ष टूटके पृथ्वीमें गिर पडते हैं ॥ इसी भांति जब बहुतसे शूरवीर योद्धाओंका अर्जुनके बाणोंसे नाश होने लगा, तब उस समय तुम्हारे पुत्र दुर्योधनकी सम्पूर्ण सेना चारों ओर भागने लगी ॥ (४९—५०) [७५२३]

द्रोणपर्वमें एक सौ सैंसठ अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ अडसठ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज ! नकुलपुत्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रसेनस्तव सुतो वारयामास भारत ॥ १ ॥
नाकुलिश्चित्रसेनं तु विध्वा पञ्चभिराशुगैः ।
स तु तं प्रतिविव्याध दशभिर्निशितैः शरैः ॥ २ ॥
चित्रसेनो महाराज शतानीकं पुनर्युधि ।
नवभिर्निशितैर्बाणैराजघान स्तनान्तरे ॥ ३ ॥
नाकुलिस्तस्य विशिखैर्वर्म सन्नतपर्वभिः ।
गात्रात्संच्यावयामास तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ ४ ॥
सोऽपेतवर्मा पुत्रस्ते विरराज भृशं नृप ।
उत्सृज्य काले राजेन्द्र निर्मोकमिव पन्नगः ॥ ५ ॥
ततोऽस्य निशितैर्बाणैर्ध्वजं चिच्छेद नाकुलिः ।
धनुश्चैव महाराज यतमानस्य संयुगे ॥ ६ ॥
स च्छिन्नधन्वा समरे विवर्मा च महारथः ।
धनुरन्यन्महाराज जग्राहाऽरिविदारणम् ॥ ७ ॥
ततस्तूर्णं चित्रसेनो नाकुलिं नवभिः शरैः ।
विव्याध समरे क्रुद्धो भरतानां महारथः ॥ ८ ॥
शतानीकोऽथ संक्रुद्धश्चित्रसेनस्य मारिष ।

शतानीक वेगपूर्वक अपने बाणरूपी अग्नि से कौरवोंकी सेनाको भस्म करने लगे; सेनाको नष्ट होती देख तुम्हारे पुत्र चित्रसेन शतानीकको निवारण करने लगे ॥ तब शतानीकने पांच तीक्ष्ण बाणोंसे चित्रसेनको पीडित किया; चित्रसेनने भी अपने दस चोखे बाणोंसे शतानीकको विद्ध करके फिर उत्तम पानी चढे हुए नव बाणोंसे उनके हृदयमें प्रहार किया ॥ (१—३)

अनन्तर शतानीकने अनेक बाणोंको चला कर चित्रसेनका कवच काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ महाराज ! तुम्हारे पुत्र चित्रसेन कवचसे हीन होकर केंचुली रहित सर्पके समान शोभित हुए ॥ तिसके अनन्तर नकुलपुत्र शतानीकने अपने चोखे बाणोंसे युद्धभूमिमें यत्नवान् चित्रसेनकी ध्वजा और धनुषको काटके पृथ्वीमें गिराया ॥ (४—६)

भरतोंमें महारथ चित्रसेनने युद्धभूमिमें वर्मसे रहित हो तथा धनुष कटने पर क्रोधपूर्वक दूसरा धनुष ग्रहण करके नव बाणोंसे शतानीकको विद्ध किया ॥ उससे पुरुषश्रेष्ठ शतानीकने अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर चित्रसेनके रथके चारों घोडे और उन के सारथी का वध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जघान चतुरो वाहान्सारथिं च नरोत्तमः ॥ ९ ॥
अवप्लुत्य रथात्तस्माच्चित्रसेनो महारथः।
नाकुलिं पञ्चविंशत्या शराणामार्दयद्बली ॥ १० ॥
तस्य तत्कुर्वतः कर्म नकुलस्य सुतो रणे।
अर्धचन्द्रेण चिच्छेद चापं रत्नविभूषितम् ॥ ११ ॥
स च्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
आरुरोह रथं तूर्णं हार्दिक्यस्य महात्मनः ॥ १२ ॥
द्रुपदं तु सहानीकं द्रोणप्रेप्सुं महारथम्।
वृषसेनोऽभ्ययात्तूर्णं किरञ्शरशतैस्तदा ॥ १३ ॥
यज्ञसेनस्तु समरे कर्णपुत्रं महारथम्।
षष्ट्या शराणां विव्याध बाह्वोरुरसि चाऽनघ ॥ १४ ॥
वृषसेनस्तु संक्रुद्धो यज्ञसेनं रथे स्थितम्।
बहुभिः सायकैस्तीक्ष्णैराजघान स्तनान्तरे ॥ १५ ॥
तावुभौ शरनुन्नाङ्गौ शरकण्टकितौ रणे।
व्यभ्राजेतां महाराज श्वाविधौ शललैरिव ॥ १६ ॥
रुक्मपुङ्खैः प्रसन्नाग्रैः शरैश्छिन्नतनुच्छदौ।

किया ॥ (७-९)

बलवान् चित्रसेन घोडे सारथीसे रहित रथसे कूदकर पृथ्वीपर स्थित हुए और पृथ्वीपर खडे होकरही पचीस बाणोंसे शतानीकको पीडित किया; जब चित्रसेन पृथ्वीपर खडे होकर युद्ध करने लगे, तब नकुलपुत्र शतानीकने शीघ्रताके सहित उनके रत्नभूषित धनुषको अर्द्धचन्द्र बाणसे काट दिया। चित्रसेन घोडे रथ सारथी और धनुषरहित होकर शीघ्रताके सहित महात्मा हृदीकपुत्र कृतवर्माके रथपर चढ गये॥ (१०-१२)

कर्णपुत्र वृषसेन राजा द्रुपदको द्रोणाचार्यकी ओर सेनाके सहित युद्धके निमित्त गमन करते देख सैकडों सहस्रों बाणोंसे महारथी द्रुपदको छिपाते हुए वेगपूर्वक उनकी ओर दौडे॥ महाराज! पाञ्चालराज यज्ञसेनने साठ बाणोंसे महारथी वृषसेनकी भुजा और वक्षस्थलमें प्रहार किया॥ उससे कर्णपुत्र वृषसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अनेक तीक्ष्ण बाणोंसे राजा द्रुपदके हृदयमें प्रहार किया॥ (१३-१५)

उस समय वे दोनों वीर एक दूसरेके बाणोंसे पीडित और विद्ध होकर कांटोंसे युक्त शल्यकीके समान शोभित हुए॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुधिरौघपरिक्लिन्नौ व्यभ्राजेतां महामृधे ॥ १७ ॥
तपनीयनिभौ चित्रौ कल्पवृक्षाविवाऽद्भुतौ ।
किंशुकाविव चोत्फुल्लौ व्यकाशेतां रणाजिरे ॥ १८ ॥
वृषसेनस्ततो राजन्द्रुपदं नवभिः शरैः ।
विध्वा विव्याध सप्तत्या पुनरन्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः॥१९॥
ततः शरसहस्राणि विमुञ्चन्विबभौ तदा ।
कर्णपुत्रो महाराज वर्षमाण इवाऽम्बुदः ॥ २० ॥
द्रुपदस्तु ततः क्रुद्धो वृषसेनस्य कार्मुकम् ।
द्विधा चिच्छेद भल्लेन पीतेन निशितेन च ॥ २१ ॥
सोऽन्यत्कार्मुकमादाय रुक्मबद्धं नवं दृढम् ।
तूणादाकृष्य विमलं भल्लं पीतशितं दृढम् ॥ २२ ॥
कार्मुके योजयित्वा तं द्रुपदं सन्निरीक्ष्य च ।
आकर्णपूर्णं मुमुचे त्रासयन्सर्वसोमकान् ॥ २३ ॥
हृदयं तस्य भित्त्वा च जगाम वसुधातलम् ।
कश्मलं प्राविशद्राजा वृषसेनशराहतः ॥ २४ ॥

तपाये हुए सोनेके समान रूपवाले वे दोनों पराक्रमी वीर एक दूसरेके चलाये हुए चोखे बाणोंके प्रहारसे कवचरहित और रुधिरपूरित शरीरसे युक्त होकर कल्पवृक्ष वा पलाश वृक्षके फूलकी भांति युद्धभूमिमें शोभित हुए ॥ (१६-१८)

तिसके अनन्तर पराक्रमी वृषसेनने द्रुपदको नव बाणोंसे विद्ध करके फिर तिहत्तर बाणोंसे विद्ध किया ॥ महाराज! इसी भांति कर्णपुत्र महारथ वृषसेन सहस्रों बाणोंको एक ही बार चलाते हुए जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति युद्धभूमिमें शोभित हुए॥ अनन्तर द्रुपदने अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक चोखे भल्ल बाणसे वृषसेनका धनुष्य बीचोंबीच काट डाला ॥ (१९-२१)

वृषसेनने भी फिर सुवर्णभूषित एक दृढ नवीन धनुष्य हाथमें लिया और तूणीरसे अत्यन्त प्रकाशमान एक चोखे भल्ल बाणको निकालके उसे धनुषके ऊपर चढाया। धनुष्यको कानपर्यन्त खींचकर द्रुपदकी ओर देखा और वह बाण उसकी ओर चलाया। तब सम्पूर्ण सोमक योद्धा त्रस्त हुए। वृषसेनसे चलाया हुआ वह बाण द्रुपदके हृदयको विदीर्ण करके पृथ्वीमें प्रविष्ट हुआ। वृषसेनके बाणसे अत्यन्त विद्ध होकर द्रुपद मूर्छित हुए तब सारथीके कर्तव्यको जाननेवाले उसके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारथिस्तमपोवाह स्मरन्सारथिचेष्टितम् ।
तस्मिन्प्रभग्ने राजेन्द्र पञ्चालानां महारथे ॥ २५ ॥
ततस्तु द्रुपदानीकं शरैश्छिन्नतनुच्छदम् ।
सम्प्राद्रवत्तदा राजन्निशीथे भैरवे सति ॥ २६ ॥
प्रदीपैरपरित्यक्तैर्ज्वलद्भिस्तैः समन्ततः ।
व्यराजत मही राजन्वीताभ्रा द्यौरिव ग्रहैः ॥ २७ ॥
तथाऽङ्गदैर्निपतितैर्व्यराजत वसुन्धरा ।
प्रावृट्काले महाराज विद्युद्भिरिव तोयदः ॥ २८ ॥
ततः कर्णसुतात्त्रस्ताः सोमका विप्रदुद्रुवुः ।
यथेन्द्रभयवित्रस्ता दानवास्तारकामये ॥ २९ ॥
तेनाऽर्द्यमानाः समरे द्रवमाणाश्च सोमकाः ।
व्यराजन्त महाराज प्रदीपैरवभासिताः ॥ ३० ॥
तांस्तु निर्जित्य समरे कर्णपुत्रोऽप्यरोचत ।
मध्यन्दिनमनुप्राप्तो घर्मांशुरिव भारत ॥ ३१ ॥
तेषु राजसहस्रेषु तावकेषु परेषु च ।

सारथिने उसको ऐसी अवस्थामें देख वहां से दूसरी ओर प्रस्थान किया। (२२-२५)

उस रात्रिके समय राजा द्रुपदकी सम्पूर्ण सेना द्रुपदको भग्न हुए देख और वृषसेनके बाणोंसे कवचरहित होके युद्धभूमिसे भागने लगी। भागनेके समय सेनाके पुरुषोंके हाथसे जलते हुए दीपक नहीं छूटे वे हाथमें ही रहे। उससे वह रणभूमि इस प्रकार शोभित होने लगी जैसे बादलसे रहित होनेपर तारोंसे युक्त आकाश शोभित होता है। शरीरसे अंगद कटके पृथ्वीपर इस प्रकार शोभित होरहे थे जैसी वर्षाकालके बादलके बीच बिजली ॥ जैसे देवासुर युद्धमें दानव लोग भयभीत होकर इन्द्र के सम्मुखसे भाग गये थे वैसे ही सोमकवंशीय योद्धा लोग वृषसेनके भयसे चारों ओर भागने लगे ॥ (२६-२९)

युद्धभूमिमें सोमकवंशीय योद्धा लोग यद्यपि वृषसेनसे भयभीत होकर चारों ओर भाग रहे थे तौभी उस महाघोर अन्धकारसे युक्त रात्रिके समय हाथमें धारण किये हुए दीपकके प्रकाशसे दिखाई देते थे॥ कर्णपुत्र वृषसेन सोमकवंशी योद्धाओंको परा।जित करके सहस्र किरण धारी दोपहरके सूर्यकी भांति युद्धभूमिके बीच शोभित हुए॥ महाराज! उस समय तुम्हारी सेना और शत्रुओंकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक एव ज्वलंस्तस्थौ वृषसेनः प्रतापवान् ॥ ३२ ॥
स विजित्य रणे शूरान्सोमकानां महारथान् ।
जगाम त्वरितस्तत्र यत्र राजा युधिष्ठिरः ॥ ३३ ॥
प्रतिविन्ध्यमथ क्रुद्धं प्रदहन्तं रणे रिपून् ।
दुःशासनस्तव सुतः प्रत्यगच्छन्महारथः ॥ ३४ ॥
तयोः समागमो राजंश्चित्ररूपो बभूव ह ।
व्यपेतजलदे व्योम्नि बुधभास्करयोरिव ॥ ३५ ॥
प्रतिविन्ध्यं तु समरे कुर्वाणं कर्म दुष्करम् ।
दुःशासनस्त्रिभिर्बाणैर्ललाटे समविध्यत ॥ ३६ ॥
सोऽतिविद्धो बलवता तव पुत्रेण धन्विना ।
विरराज महाबाहुः सशृङ्ग इव पर्वतः ॥ ३७ ॥
दुःशासनं तु समरे प्रतिविन्ध्यो महारथः ।
नवभिः सायकैर्विध्वा पुनर्विव्याध सप्तभिः ॥ ३८ ॥
तत्र भारत पुत्रस्ते कृतवान्कर्म दुष्करम् ।

ओरके सहस्रों राजाओंकी मण्डलीके बीच अकेले वृषसेन ही जलती हुई अग्निकी भांति रणभूमिमें स्थित रहे ॥ इसी भांति कर्णपुत्र वृषसेनने सोमकोंको तथा महारथी शूरवीर योद्धाओं को पराजित करके जिस स्थान पर राजा युधिष्ठिर युद्धभूमिमें स्थित थे उस ही स्थल पर शीघ्रता के सहित गमन किया ॥ (३०–३३)

सञ्जय बोले, महाराज ! उसी समय युधिष्ठिरपुत्र प्रातिविन्ध्य क्रुद्ध होकर कुरुसेनाके पुरुषोंको अपने बाणोंसे भस्म करने लगे, तब तुम्हारे पुत्र दुःशासन पराक्रमी प्रतिविन्ध्यको निवारण करने लगे । हे राजेन्द्र ! जैसे बादलसे रहित आकाशमण्डलमें बुध और सूर्य ग्रहका समागम होता है वैसे ही उन दोनों वीरोंको अद्भुत संग्राम होने लगा ॥ अनन्तर दुःशासनने युद्धभूमिमें कठिन कर्म करनेवाले प्रतिविन्ध्यके ललाटमें तीन बाणोंसे प्रहार किया ॥ महाराज ! महाबाहु प्रतिविन्ध्य बलवान् दुःशासन के बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर शृङ्ग-युक्त पर्वतकी भांति शोभित हुए ॥ (३४—३७)

अनन्तर महारथी प्रतिविन्ध्यने दुःशासनको नव बाणोंसे विद्ध करके फिर सात बाणोंसे विद्ध किया ॥ उसी समय तुम्हारे पुत्र दुःशासनने युद्धभूमि के बीच अत्यन्त कठिन कर्म किया;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिविन्ध्यहयानुग्रैः पातयामास सायकैः ॥ ३९ ॥
सारथिं चाऽस्य भल्लेन ध्वजं च समपातयत् ।
रथं च तिलशो राजन्व्यधमत्तस्य धन्विनः ॥ ४० ॥
पताकाश्च सतूणीरा रश्मीन्योक्त्राणि च प्रभो ।
चिच्छेद तिलशः क्रुद्धः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ४१ ॥
विरथः स तु धर्मात्मा धनुष्पाणिरवस्थितः ।
अयोधयत्तव सुतं किरञ्शरशतान्बहून् ॥ ४२ ॥
क्षुरप्रेण धनुस्तस्य छिच्छेद तनयस्तव ।
अथैनं दशभिर्बाणैश्छिन्नधन्वानमार्दयत् ॥ ४३ ॥
तं दृष्ट्वा विरथं तत्र भ्रातरोऽस्य महारथाः ।
अन्ववर्तन्त वेगेन महत्या सेनया सह ॥ ४४ ॥
आप्लुतः स ततो यानं सुतसोमस्य भास्वरम् ।
धनुर्गृह्य महाराज विव्याध तनयं तव ॥ ४५ ॥
ततस्तु तावकाः सर्वे परिवार्य सुतं तव ।
अभ्यवर्तन्त संग्रामे महत्या सेनया वृताः ॥ ४६ ॥
ततः प्रववृते युद्धं तव तेषां च भारत ।

क्योंकि उन्होंने अपने तेज बाणोंसे प्रतिविन्ध्यके घोडे, भल्लास्त्रसे उनके सारथी और ध्वजाको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। फिर दुःशासनने अपने चोखे बाणोंसे प्रतिविन्ध्यके रथ घोडोंकी बागडोर, रथकी धुरी, और तूणीरके सहित उनके उत्तम रथको टुकडे टुकडे कर दिया। (३८-४१)

तब धर्मात्मा प्रतिविन्ध्य रथसे रहित होकर हाथमें धनुष लेकर पृथ्वीपर स्थित हुए और सैकडों बाणोंको चलाते हुए तुम्हारे पुत्र दुःशासनके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ प्रतिविन्ध्यका पराक्रम देख तुम्हारे पुत्र दुःशासनने एक क्षुरप्र अस्त्रसे उनका धनुष काटा और दश बाणोंसे फिर उन्हें पीडित किया ॥ प्रतिविन्ध्यके भ्राता लोग उन्हें रथसे रहित देख अपनी सेनाके सहित उनके समीप उपस्थित हुए ॥ (४२-४४)

तब प्रतिविन्ध्य अपने भाई सुतसोम के रथपर चढके धनुष फेरते हुए दुःशासनको अपने बाणोंसे विद्ध करने लगे ॥ अनन्तर तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भी बडी सेनाके सहित दुःशासनको घेरकर युद्धभूमिमें स्थित हुए। महाराज! तिसके अनन्तर उस महाघोर रात्रिके समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशीथे दारुणे काले यमराष्ट्रविवर्धनम् ॥ ४७ ॥ [७५७०]

इति श्रीमहा० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे शतानीकादियुद्धे अष्टषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः॥१६८॥

सञ्जय उवाच- नकुलं रभसं युद्धे निघ्नन्तं वाहिनीं तव ।
अभ्ययात्सौबलः क्रुद्धस्तिष्ठतिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥ १ ॥
कृतवैरौ तु तौ वीरावन्योन्यवधकांक्षिणौ ।
शरैः पूर्णायतोत्सृष्टैरन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥ २ ॥
यथैव नकुलो राजञ्शरवर्षाण्यमुञ्चत ।
तथैव सौबलश्चापि शिक्षां सन्दर्शयन्युधि ॥ ३ ॥
तावुभौ समरे शूरौ शरकण्टकिनौ तदा ।
व्यराजेतां महाराज श्वाविधौ शललैरिव ॥ ४ ॥
रुक्मपुङ्खैरजिह्माग्रैः शरैश्छिन्नतनुच्छदौ ।
रुधिरौघपरिक्लिन्नौ व्यभ्राजेतां महामृधे ॥ ५ ॥
तपनीयनिभौ चित्रौ कल्पवृक्षाविव द्रुमौ ।
किंशुकाविव चोत्फुल्लौ प्रकाशेते रणाजिरे ॥ ६ ॥
तावुभौ समरे शूरौ शरकण्टकिनौ तदा ।

दोनों ओरके शूरवीरोंका यमपुरीकी वृद्धि करनेवाला महाघोर दारुण संग्राम होने लगा ॥ (४५-४७) [७५७०]

द्रोणपर्वमें एकसौ अडसठ अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ उनत्तर अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! पाण्डुपुत्र नकुल वेगपूर्वक तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश करने लगे; उसे देख सुबलपुत्र शकुनि खडा रह ! खडा रह ! कहके नकुलकी ओर दौडे ॥ पहिलेकी शत्रुताको स्मरण करके वे दोनों वीर कान पर्यन्त धनुष खींचकर अपने बाणोंसे एक दूसरेके शरीरमें प्रहार करने लगे ॥ महाराज ! युद्धभूमिके बीच नकुल जिस भांतिसे अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, वैसे ही युद्धविद्या जाननेवाले शकुनि भी लगातार अपने बाणोंको वर्षाने लगे ॥ (१-३)

उस समय उन दोनोंका शरीर एक दूसरेके बाणोंसे इसप्रकार पूरित होगया जैसे कांटोंसे युक्त शल्लकीका वृक्ष शोभित होता है ॥ तपाये हुए सुवर्णकी भांति प्रकाशमान विचित्र शरीर वाले वे दोनों वीर एक दूसरेके स्वर्णपङ्खवाले तेज बाणोंके प्रहारसे कवच रहित होकर रुधिर पूरित शरीरसे इस प्रकार शोभित हुए जैसे कल्पवृक्ष वा फूले हुए पलाशके वृक्ष शोभित होते हैं ॥ (४—६)

उस समय उन दोनोंका शरीर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यराजेतां महाराज कण्टकैरिव शाल्मली ॥ ७ ॥
सुजिह्मं प्रेक्षमाणौ च राजन्विवृतलोचनौ ।
क्रोधसंरक्तनयनौ निर्दहन्तौ परस्परम् ॥ ८ ॥
स्यालस्तु तव संक्रुद्धो माद्रीपुत्रं हसन्निव ।
कर्णिनैकेन विव्याध हृदये निशितेन ह ॥ ९ ॥
नकुलस्तु भृशं विद्धः स्यालेन तव धन्विना ।
निषसाद रथोपस्थे कश्मलं चाऽऽविशन्महत् ॥ १० ॥
अत्यन्तवैरिणं दृप्तं दृष्ट्वा शत्रुं तथाऽऽगतम् ।
ननाद शकुनी राजंस्तपान्ते जलदो यथा ॥ ११ ॥
प्रतिलभ्य ततः संज्ञां नकुलः पाण्डुनन्दनः ।
अभ्ययात्सौबलं भूयो व्यात्ताननइवाऽन्तकः ॥ १२ ॥
संक्रुद्धः शकुनिं षष्ट्या विव्याध भरतर्षभ ।
पुनश्चैनं शतेनैव नाराचानां स्तनान्तरे ॥ १३ ॥
अथाऽस्य सशरं चापं मुष्टिदेशेऽच्छिनत्तदा ।
ध्वजं च त्वरितं छित्त्वा रथाद्भूमावपातयत् ॥ १४ ॥
विशिखेन च तीक्ष्णेन पीतेन निशितेन च ।

बाणोंसे परिपूर्ण होकर इस प्रकार शोभित हुआ जैसे कांटोंसे युक्त सेमलका वृक्ष शोभित होता है ॥ महाराज ! वे दोनों वीर क्रोधसे नेत्र लाल करके इस प्रकार एक दूसरेकी ओर टेढी दृष्टिसे देखने लगे, मानो दृष्टिसे देखकर ही एक दूसरेको भस्म किये डालते हैं ॥ तिसके अनन्तर तुम्हारे शाले शकुनिने अत्यन्त क्रुद्ध होके एक तीक्ष्ण कर्णिक अस्त्रसे खेलवाडकी भांति माद्रीपुत्र नकुलके वक्षस्थलमें प्रहार किया ॥ (७-९)

पाण्डुपुत्र नकुल तुम्हारे शाले धनुर्द्धारी शकुनिके अस्त्रसे अत्यन्त विद्ध होकर चेतरहितकी भांति मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये ॥ शकुनि अत्यन्त ही वैर-भावसे युक्त तेजस्वी शत्रु नकुलको मूर्च्छित देख, वर्षाकालके बादलकी भांति गंभीर स्वरसे गर्जते हुए सिंहनाद करने लगे ॥ थोडी देरके बाद नकुल सावधान होकर मुख बाये हुए यमराजकी भांति शकुनिकी ओर दौडे और क्रोधपूर्वक उन्हें साठ बाणोंसे विद्ध करके फिर एक सौ बाणोंसे विद्ध किया ॥ (१०-१३)

तिसके अनन्तर पराक्रमी नकुलने बाणके सहित शकुनिके धनुषकी मुट्ठी और रथकी ध्वजाको काटके पृथ्वीमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊरू निर्भिद्य चैकेन नकुलः पाण्डुनन्दनः ॥ १५ ॥
इयेनं सपक्षं व्याधेन पातयामास तं तदा ।
सोऽतिविद्धो महाराज रथोपस्थ उपाविशत् ॥ १६ ॥
ध्वजयष्टिं परिक्लिश्य कामुकः कामिनीं यथा ।
तं विसंज्ञं निपतितं दृष्ट्वा स्यालं तवाऽनघ ॥ १७ ॥
अपोवाह रथेनाऽऽशु सारथिर्ध्वजिनीमुखात् ।
ततः संचुक्रुशुः पार्था ये च येषां पदानुगाः ॥ १८ ॥
निर्जित्य च रणे शत्रुं नकुलः शत्रुतापनः।
अब्रवीत्सारथिं क्रुद्धो द्रोणानीकाय मां वह ॥ १९ ॥
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा माद्रीपुत्रस्य सारथिः ।
प्रायात्तेन तदा राजन्यत्र द्रोणो व्यवस्थितः ॥ २० ॥
शिखण्डिनं तु समरे द्रोणप्रेप्सुं विशाम्पते ।
कृपः शारद्वतो यत्तः प्रत्यगच्छत्स वेगितः ॥ २१ ॥
गौतमं द्रुतमायान्तं द्रोणानीकमरिन्दमम् ।
विव्याध नवभिर्भल्लैः शिखण्डी प्रहसन्निव ॥ २२ ॥

गिरा दिया और एक बाणसे उसकी दोनों जंघाओंको विद्ध किया । महाराज ! तुम्हारे शाले शकुनि नकुलके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होके मुर्च्छित हुए, और जैसे कामी पुरुष कामिनीके कन्धेको ग्रहण करते हैं, वैसे ही रथ दण्ड पकड-के रथमें बैठ गये । हे पापरहित राजेन्द्र ! तुम्हारे शाले शकुनिको मूर्च्छित होकर रथमें बैठे हुए देख, उनके सारथीने शीघ्रताके सहित रथ हांकके वहांसे प्रस्थान किया ॥ शकुनिको पराजित होते देख सेनाके सहित पाण्डव लोग ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करने लगे॥ १४-१८

शत्रु नाशन नकुल इसी भांति शकुनिको पराजित करके क्रोधपूर्वक अपने सारथीसे यह वचन बोले, मेरे रथको द्रोणाचार्यकी सेनाके बीच लेचलो ॥ सारथी बुद्धिमान नकुलके वचनको सुनकर जहां पर द्रोणाचार्य युद्ध कर रहे थे उस ही स्थल पर नकुलके रथको लेकर उपस्थित हुआ ॥ (१९-२०)

इस ही समय शरद्वतपुत्र कृपाचार्य शिखण्डीको द्रोणाचार्यकी ओर आते देख यत्नवान् होकर वेगपूर्वक उसकी ओर दौडे॥ शिखण्डीने द्रोणाचार्यकी सहायता के वास्ते शत्रुनाशन कृपाचार्य को शीघ्रता पूर्वक सम्मुख आये देखकर हंसकर नव बाणोंसे उन्हें विद्ध किया॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमाचार्यो महाराज विध्वा पञ्चभिराशुगैः ।
पुनर्विव्याध विंशत्या पुत्राणां प्रियकृत्तव ॥ २३ ॥
महद्युद्धं तयोरासीद्घोररूपं भयानकम् ।
यथा देवासुरे युद्धे शम्बरामरराजयोः ॥ २४ ॥
शरजालावृतं व्योम चक्रतुस्तौ महारथौ ।
मेघाविव तपापाये वीरौ समरदुर्मदौ ॥ २५ ॥
प्रकृत्या घोररूपं तदासीद्घोरतरं पुनः ।
रात्रिश्च भरतश्रेष्ठ योधानां युद्धशालिनाम् ॥ २६ ॥
कालरात्रिनिभा ह्यासीद्घोररूपा भयानका ।
शिखण्डी तु महाराज गौतमस्य महद्धनुः ॥ २७ ॥
अर्धचन्द्रेण चिच्छेद सज्यं सविशिखं तदा ।
तस्य क्रुद्धः कृपो राजञ्शक्तिं चिक्षेप दारुणाम्॥२८ ॥
स्वर्णदण्डामकुण्ठाग्रां कर्मारपरिमार्जिताम् ।
तामापतन्तीं चिच्छेद शिखण्डी बहुभिः शरैः ॥२९॥
साऽपतन्मेदिनीं दीप्ता भासयन्ती महाप्रभा ।

महाराज! तुम्हारे पुत्रोंके प्रियकार्य करने वाले कृपाचार्यने पहिले शिखण्डीको पांच बाणोंसे विद्ध करके फिर बीस बाणोंसे विद्ध किया ॥ देवासुर संग्राम में जैसे इन्द्रके सङ्ग शम्बरासुरका युद्ध हुआ था, वैसे ही कृपाचार्यके सङ्ग शिखण्डीका महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा ॥ (२१–२४)

महाराज! अन्धकारमय रात्रिके समय आकाशमण्डल स्वभाविक ही घोररूपसे दिखाई देरहा था, उस पर भी वर्षा कालके बादलकी भांति युद्धदुर्मद महारथी कृपाचार्य और शिखण्डीके बाणोंसे परिपूरित होकर अत्यन्त ही भयानक दिखाई देने लगा। अधिक क्या कहूं, वह भयङ्करी रात्रि युद्ध करने वाले शूरवीर योद्धाओंके निमित्त कालरात्रि स्वरूप होगई। (२५–२७)

तिसके अनन्तर शिखण्डीने गोतम पुत्र कृपाचार्यके धनुषको रोदे और बाणसमेत अपने अर्धचन्द्र बाणसे काटके गिरा दिया। धनुष कटनेपर कृपाचार्यने क्रुद्ध होकर सुवर्णदण्डयुक्त अत्यन्त ही तेजधारवाली एक भयानक शक्ति ग्रहण करके शिखण्डीकी ओर चलायी! शिखण्डीने उस प्रकाशमान भयङ्कर शक्तिको अनेक बाणोंसे काट डाला, तब वह कटी हुई भयङ्करी शक्ति पृथ्वी में गिर के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाऽन्यद्धनुरादाय गौतमो रथिनां वरः ॥ ३० ॥
प्राच्छादयच्छितैर्बाणैर्महाराज शिखण्डिनम् ।
स च्छाद्यमानः समरे गौतमेन यशस्विना ॥ ३१ ॥
न्यषीदत रथोपस्थे शिखण्डी रथिनां वरः
सीदन्तं चैनमालोक्य कृपः शारद्वतो युधि ॥ ३२ ॥
आजघ्ने बहुभिर्बाणैर्जिघांसन्निव भारत ।
विमुखं तु रणे दृष्ट्वा याज्ञसेनिं महारथम् ॥ ३३ ॥
पञ्चालाः सोमकाश्चैव परिवव्रुः समन्ततः ।
तथैव तव पुत्राश्च परिवव्रुर्द्विजोत्तमम् ॥ ३४ ॥
महत्या सेनया सार्धं ततो युद्धमवर्तत ।
रथानां च रणे राजन्नन्योन्यमभिधावताम् ॥ ३५ ॥
बभूव तुमुलः शब्दो मेघानां गर्जतामिव ।
द्रवतां सादिनां चैव गजानां च विशाम्पते ॥ ३६ ॥
अन्योन्यमभितो राजन्क्रूरमायोधनं बभौ ।
पत्तीनां द्रवतां चैव पादशब्देन मेदिनी ॥ ३७ ॥

प्रकाशित होने लगी । (२७-३०)

इतने ही समयमें कृपाचार्य दूसरा धनुष ग्रहण करके अपने तीक्ष्ण बाणोंसे शिखण्डीको छिपाने लगे। रथियोंमें मुख्य शिखण्डी कृपाचार्यके बाणोंसे पीडित होकर मूर्च्छित होगये; और चेतरहितके समान रथमें बैठ गये। महाराज ! शरद्वतपुत्र कृपाचार्य शिखण्डीको मूर्च्छित देख अनेक बाणोंको चलाकर उसके शरीरमें प्रहार करने लगे। पाञ्चाल और सोमकवंशी वीर योद्धालोग शिखण्डीको मूर्च्छित और युद्धसे विमुख देखकर उन्हें चारों ओरसे घेरकर युद्धभूमिमें स्थित हुए। वैसे ही तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग और तुम्हारे पराक्रमी पुत्र बडी सेनाको सङ्ग लेकर द्रोणाचार्यको घेर कर रणभूमिके बीच स्थित हुए ॥ (३०-३४)

फिर दोनों ओरके शूरवीरोंका महाघोर युद्ध होने लगा। इस ही समय रथी योद्धा लोग एक दूसरेकी ओर दौडे। उस समय रणभूमिमें गर्जते हुए बादलकी भांति शूरवीरोंका महाघोर शब्द सुनाई देने लगा ॥ अनन्तर घुडसवार योद्धा लोग दोनों सेनाके बीचमें पृथक् होके आपसमें एक दूसरेकी ओर दौडने लगे। उस समय वह रणभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर दिखाई देने लगी ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकम्पत महाराज भयत्रस्तेव चाऽङ्गना।
रथिनो रथमारुह्य प्रद्रुता वेगवत्तरम् ॥ ३८ ॥
अगृह्णन्बहवो राजञ्शलभान्वायसा इव।
तथा गजान्प्रभिन्नांश्च सम्प्रभिन्ना महागजाः ॥ ३९ ॥
तस्मिन्नेव पदे यत्ता निगृह्णन्ति स्म भारत।
सादी सादिनमासाद्य पत्तयश्च पदातिनम् ॥ ४० ॥
समासाद्य रणेऽन्योन्यं संरब्धा नाऽतिचक्रमुः।
धावतां द्रवतां चैव पुनरावर्ततामपि ॥ ४१ ॥
बभूव तत्र सैन्यानां शब्दः सुविपुलो निशि।
दीप्यमानाः प्रदीपाश्च रथवारणवाजिषु ॥ ४२ ॥
अदृश्यन्त महाराज महोल्का इव खाच्च्युताः।
सा निशा भरतश्रेष्ठ प्रदीपैरवभासिता ॥ ४३ ॥
दिवसप्रतिमा राजन्बभूव रणमूर्धनि।
आदित्येन यथा व्याप्तं तमो लोके प्रणश्यति ॥ ४४ ॥
तथा नष्टं तमो घोरं दीपैर्दीप्तैरितस्ततः।

इस भांति एक दूसरेकी ओर दोडते हुए पैदल सेनाके वीरोंके पांवकी ठोकरसे पृथ्वी भयभीत हुई स्त्री की भांति कांपने लगी। (३४-३८)

महाराज! अनगिनत रथी योद्धा लोग भी वेगपूर्वक शत्रुसेनाके रथियोंकी ओर गमन करके जैसे कौवें शलभोंको पकडते हैं उसी भांति एक दूसरेको पकडने लगे। इसी समय मदचूते हाथी शत्रुसेनाके मतवारे हाथियोंके समीप गमन करके आपसमें दांत और सूण्डोंसे युद्ध करने लगे॥ इसी भांति घुडसवार और पैदल सेनाके योद्धा लोग क्रोधपूर्वक आपसमें एक दूसरी सेनाके वीरोंको आक्रमण करके कोई दूसरी सेनाके वीरोंको पीछे न हटा सके। परन्तु उस रात्रिके समय दोनों सेनाके वीरोंके बार बार दौडने भागने फिर युद्धके निमित्त लौटनेसे रणभूमिके बीच महाघोर कोलाहल होने लगा। (३८-४२)

महाराज! हाथी घोडे और रथोंसे गिरते हुए दीपक आकाशसे गिरते हुए लुककी भांति दिखाई देने लगे। अधिक क्या कहूं वह रणभूमि चारों ओर दीपकके प्रकाशसे युक्त होकर दिनकी भांति शोभित होने लगी। जैसे सूर्य उदय होने पर जगत्का सम्पूर्ण अन्धकार नष्ट होजाता है वैसे ही दीपकोंके प्रकाशसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवं च पृथिवीं चैव दिशश्च प्रदिशस्तथा ॥ ४५ ॥
रजसा तमसा व्याप्ता द्योतिताः प्रभया पुनः ।
अस्त्राणां कवचानां च मणीनां च महात्मनाम् ॥४६॥
अन्तर्दधुः प्रभाः सर्वा दीपैस्तैरवभासिताः ।
तस्मिन्कोलाहले युद्धे वर्तमाने निशामुखे ॥ ४७ ॥
न किञ्चिद्विदुरात्मानमयमस्मीति भारत ।
अवधीत्समरे पुत्रं पिता भरतसत्तम ॥ ४८ ॥
पुत्रश्च पितरं मोहात्सखायं च सखा तथा ।
स्वसीयं मातुलश्चापि स्वसीयश्चापि मातुलम् ॥ ४९ ॥
स्वे स्वान्परे परांश्चापि निजघ्नुरितरेतरम् ।
निर्मर्यादमभूद्युद्धं रात्रौ भीरुभयानकम् ॥ ५० ॥ [७६२०]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे संकुलयुद्धे ऊनसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१६९॥

सञ्जय उवाच— तस्मिन्सुतुमुले युद्धे वर्तमाने भयावहे ।
धृष्टद्युम्नो महाराज द्रोणमेवाऽभ्यवर्तत ॥ १ ॥
सन्दधानो धनुः श्रेष्ठं ज्यां विकर्षन्पुनः पुनः ।
अभ्यद्रवत द्रोणस्य रथं रुक्मविभूषितम् ॥ २ ॥

उस रणभूमिमें इधर उधर अन्धकार नष्ट होगया । परन्तु जब चारों ओर दीपक के प्रकाश फैल गये तब शूरवीर पुरुषों के अस्त्र शस्त्र कवच और मणिजटित आभूषणोंका प्रकाश इकबारगी छिप गया । (४२–४७)

महाघोर रात्रिके समय जब भयङ्कर कोलाहलके सहित शूरवीरोंका युद्ध होने लगा तब योद्धाओंको मैं अमुक पुरुष हूं यह ज्ञान भी न रहा । उस समय मोहके वशमें होकर पिता पुत्रका, पुत्र पिताका, मित्र मित्रका, मामा भानजेका और भानजे मामाका वध करने लगे । इसी भांति आत्मीय पुरुष अपने आत्मीय लोगोंके ऊपर और शत्रु शत्रुओंके ऊपर अपने अस्त्र शस्त्रोंसे प्रहार करने लगे । उस भयङ्करी रात्रिके समय कायरोंके भयको बढानेवाला मर्यादारहित युद्ध होने लगा ॥ (४७–५०) [७६०२]

द्रोणपर्वमें एकसौ उनत्तर अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ सत्तर अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! जब महा भयङ्कर तुमुल युद्ध होने लगा तब धृष्टद्युम्न अपने बडे धनुषको ग्रहण करके बार बार धनुष टङ्कार करते हुए द्रोणाचार्यके सुवर्णभूषित रथकी ओर दौडे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृष्टद्युम्नमथाऽऽयान्तं द्रोणस्याऽन्तचिकीर्षया।
परिवव्रुर्महाराज पञ्चालाः पाण्डवैः सह ॥ ३ ॥
तथा परिवृतं दृष्ट्वा द्रोणमाचार्यसत्तमम्।
पुत्रास्ते सर्वतो यत्ता ररक्षुर्द्रोणमाहवे ॥ ४ ॥
बलार्णवौ ततस्तौ तु समेयातां निशामुखे।
वातोद्धूतौ क्षुब्धसत्वौ भैरवौ सागराविव ॥ ५ ॥
ततो द्रोणं महाराज पाञ्चाल्यः पञ्चभिः शरैः।
विव्याध हृदये तूर्णं सिंहनादं ननाद च ॥ ६ ॥
तं द्रोणः पञ्चविंशत्या विध्वा भारत संयुगे।
चिच्छेदाऽन्येन भल्लेन धनुरस्य महास्वनम् ॥ ७ ॥
धृष्टद्युम्नस्तु निर्विद्धो द्रोणेन भरतर्षभ।
उत्ससर्ज धनुस्तूर्णं सन्दश्य दशनच्छदम् ॥ ८ ॥
ततः क्रुद्धो महाराज धृष्टद्युम्नः प्रतापवान्।
आददेऽन्यद्धनुः श्रेष्ठं द्रोणस्याऽन्तचिकीर्षया ॥ ९ ॥

जब धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्यके वधकी इच्छासे उनकी ओर गमन किया, तब धृष्टद्युम्नके अनुयायी पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंने चारों ओरसे द्रोणाचार्यको घेर लिया ॥ (१–३)

तुम्हारे पुत्र उस महाघोर संग्रामके समय द्रोणाचार्यको शत्रुओंके बीच घिरे देख कर सब भांतिसे यत्नपूर्वक उनकी रक्षा करने लगे ॥ प्रचण्ड वायुके वेगसे उथलते हुए जैसे दो समुद्र बढके आपसमें मिलकर भयङ्कर रूपसे दीखपडते हैं वैसे ही रात्रिके समय समुद्र समान दोनों ओरकी महासेना आपसमें एक ही स्थान पर मिल गई ॥ (३–५)

तिसके अनन्तर पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने शीघ्रताके सहित पांच बाणोंसे द्रोणाचार्यके हृदयमें प्रहार करके सिंहनाद किया। तब द्रोणाचार्यने पचीस बाणोंसे धृष्टद्युम्नको विद्ध करके एक भल्लास्त्रसे उनका धनुष काट दिया ॥ महाराज! प्रतापी धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्यके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होके क्रोधपूर्वक ओंठ काटते और दांत कटकटाते हुए कटे धनुषको त्यागकर द्रोणाचार्यके वधकी इच्छा करके दूसरा दृढ धनुष ग्रहण किया ॥ (६—८)

अनन्तर शत्रु नाशन धृष्टद्युम्न अपने विचित्र धनुषको कान पर्यन्त खींच कर द्रोणाचार्यके नाश करनेमें समर्थ एक महाभयङ्कर बाण उनकी ओर चलाया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकृष्य च धनुश्चित्रमाकर्णात्परवीरहा।
द्रोणस्याऽन्तकरं घोरं व्यसृजत्सायकं ततः ॥ १० ॥
स विसृष्टो बलवता शरो घोरो महामृधे।
भासयामास तत्सैन्यं दिवाकर इवोदितः ॥ ११ ॥
तं तु दृष्ट्वा शरं घोरं देवगन्धर्वमानवाः।
स्वस्त्यस्तु समरे राजन्द्रोणायेत्यब्रुवन्वचः ॥ १२ ॥
तं तु सायकमायान्तमाचार्यस्य रथं प्रति।
कर्णो द्वादशधा राजंश्चिच्छेद कृतहस्तवत् ॥ १३ ॥
स च्छिन्नो बहुधा राजन्सूतपुत्रेण धन्विना।
निपपात शरस्तूर्णं निर्विषो भुजगो यथा ॥ १४ ॥
धृष्टद्युम्नं ततः कर्णो विव्याध दशभिः शरैः।
पञ्चभिर्द्रोणपुत्रस्तु स्वयं द्रोणस्तु सप्तभिः ॥ १५ ॥
शल्यश्च दशभिर्बाणैस्त्रिभिर्दुःशासनस्तथा।
दुर्योधनस्तु विंशत्या शकुनिश्चापि पञ्चभिः ॥ १६ ॥
पाञ्चाल्यं त्वरयाऽविध्यन्सर्व एव महारथाः।
स विद्धः सप्तभिर्वीरैर्द्रोणस्याऽर्थे महाहवे ॥ १७ ॥

महाराज ! उस महाघोर संग्रामके समय वह भयङ्कर बाण धृष्टद्युम्नके धनुषसे छूटकर तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको उस भांति सन्तापित करने लगा जैसे सूर्य उदय होके अपने तेजसे सम्पूर्ण प्राणियों-को तपाके विकल कर देते हैं। अधिक क्या कहूं उस समय उस भयङ्कर बाणको देख कर देवता गन्धर्व और मनुष्य द्रोणाचार्यके मङ्गलकामनाकी इच्छासे स्वस्तिवाचन करने लगे ॥ (९-१२)

परन्तु कर्णने उस भयंकर बाणको द्रोणाचार्यके रथकी ओर आते देख अपना हस्तलाघव प्रकाशित करते हुए अपने तेज बाणोंसे बारह टुकडे करके पृथ्वीमें गिरा दिया॥ वह बाण धनुर्द्धर क-र्णके बाणोंसे टुकडे टुकडे होकर विषरहित सर्पकी भांति शीघ्र ही पृथ्वीमें गिर पडा॥ उस बाणको काटकर कर्णने दश तीक्ष्ण बाणोंसे धृष्टद्युम्नको विद्ध किया। तिसके अनन्तर अश्वत्थामाने पांच, द्रोणाचार्यने सात, शल्यने दस, दुःशासनने तीन, दुर्यो-धनने वीस और शकुनिने पांच बाणोंसे पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नको विद्ध किया ॥ (१३-१६)

पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने द्रोणाचा-र्यकी रक्षा करनेवाले छः महारथी और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वानसम्भ्रमाद्राजन्प्रत्यविद्ध्यत्त्रिभिस्त्रिभिः ।
द्रोणं द्रौणिं च कर्णं च विव्याध च तवाऽऽत्मजम् ॥१८॥
ते भिन्ना धन्विना तेन धृष्टद्युम्नं पुनर्मृधे ।
विव्यधुः पञ्चभिस्तूर्णमेकैको रथिनां वरः ॥ १९ ॥
द्रुमसेनस्तु संक्रुद्धो राजन्विव्याध पत्त्रिणा ।
त्रिभिश्चाऽन्यैः शरैस्तूर्णं तिष्ठतिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥२०॥
स तु तं प्रतिविव्याध त्रिभिस्तीक्ष्णैरजिह्गैः ।
स्वर्णपुङ्खैः शिलाधौतैः प्राणान्तकरणैर्युधि ॥ २१ ॥
भल्लेनाऽन्येन तु पुनः सुवर्णोज्ज्वलकुण्डलम् ।
निचकर्त शिरः कायाद् द्रुमसेनस्य वीर्यवान् ॥ २२ ॥
तच्छिरो न्यपतद्भूमौ सन्दष्टौष्ठपुटं रणे ।
महावातसमुद्धूतं पक्वं तालफलं यथा ॥ २३ ॥
तान्स विध्वा पुनर्योधान्वीरः सुनिशितैः शरैः ।
राधेयस्याऽच्छिनद्भल्लैः कार्मुकं चित्रयोधिनः ॥ २४ ॥
न तु तन्ममृषे कर्णो धनुषश्छेदनं तथा ।

स्वयं द्रोणाचार्यके सहित सात महारथियोंके बाणोंसे विद्ध होकर द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण और तुम्हारे पुत्र आदि सबको तीन तीन बाणोंसे विद्ध किया ॥ रथियोंमें मुख्य उन सम्पूर्ण वीरोंसे युद्ध भूमिके बीच धनुर्द्धर धृष्टद्युम्नके बाणोंसे विद्ध होकर उन लोगोंने फिर वेगपूर्वक धृष्टद्युम्नको अपने पांच पांच बाणोंसे विद्ध किया ॥ (१६–१९)

महाराज ! उस ही समय द्रुमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर धृष्टद्युम्नको एक बाणसे विद्ध करके फिर खडा रह ! खडा रह ! कहके तीन बाणोंसे विद्ध किया ॥ तब पराक्रमी धृष्टद्युम्नने शिलापर घिसे हुए अत्यन्त चोखे स्वर्णपुंखवाले प्राणघातक तीन बाणोंसे द्रुमसेनको विद्ध किया। अनन्तर धृष्टद्युम्नने एक भल्लास्त्रसे सुवर्ण कुण्डल भूषित द्रुमसेनके प्रकाशमान सिरको इस भांति काटके शरीरसे पृथक् करके गिरा दिया जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे पके हुए तालके फल वृक्षसे टूटके पृथ्वीमें गिर पडते हैं ॥ (२०–२३)

अनन्तर पाञ्चालराजपुत्र महावीर धृष्टद्युम्न अपने तेज बाणोंसे फिर तुम्हारी ओरके महारथियोंको विद्ध करने लगे और भल्लास्त्रसे महावीर कर्णका धनुष काट दिया ॥ महाराज ! सिंह जैसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकर्तनमिवाऽत्युग्रं लांगूलस्य महाहरिः ॥ २५ ॥
सोऽन्यद्धनुः समादाय क्रोधरक्तेक्षणः श्वसन् ।
अभ्यद्रवच्छरौघैस्तं धृष्टद्युम्नं महाबलम् ॥ २६ ॥
दृष्ट्वा कर्णं तु संरब्धं ते वीराः षड्रथर्षभाः ।
पाञ्चाल्यपुत्रं त्वरिताः परिवव्रुर्जिघांसया ॥ २७ ॥
षण्णां योधप्रवीराणां तावकानां पुरस्कृतम् ।
मृत्योरास्यमनुप्राप्तं धृष्टद्युम्नममंस्महि ॥ २८ ॥
एतस्मिन्नेव काले तु दाशार्हो विकिरञ्छरान् ।
धृष्टद्युम्नं पराक्रान्तं सात्यकिः प्रत्यपद्यत ॥ २९ ॥
तमायान्तं महेष्वासं सात्यकिं युद्धदुर्मदम् ।
राधेयो दशभिर्बाणैः प्रत्यविध्यदजिह्मगैः ॥ ३० ॥
तं सात्यकिर्महाराज विव्याध दशभिः शरैः ।
पश्यतां सर्ववीराणां मा गास्तिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥ ३१ ॥
स सात्यकेस्तु बलिनः कर्णस्य च महात्मनः ।
आसीत्समागमो राजन्बलिवासवयोरिव ॥ ३२ ॥

अपनी पूंछको कटती देख नहीं सह सकता; वैसे ही राधापुत्र कर्णने भी धृष्टद्युम्नके अस्त्रसे अपना धनुष कटता हुआ देखकर सहन नहीं किया ॥ वह क्रोधसे लाल नेत्र करके दूसरा धनुष ग्रहण कर बाणोंको वर्षाते हुए महाबलवान् धृष्टद्युम्नकी ओर दौडे ॥ कर्ण और अश्वत्थामा आदि छः महारथियोंने क्रुद्ध होकर धृष्टद्युम्नके वधकी अभिलाषा करके शीघ्रताके सहित उन्हे चारों ओरसे घेर लिया ॥ (२४–२७)

महाराज ! उस समय हम लोग धृष्टद्युम्नको कर्ण और ऊपर कहे हुए छः महारथियोंके संमुखमें स्थित देखकर उसे मृत्युके मुखमें पडा हुआ ही समझने लगे ॥ उस ही समय यदुवंशीय सात्यकि धृष्टद्युम्नको बचानेके वास्ते अपने बाणों को चलाते हुए वहांपर उपस्थित हुए; इसी भांति जब महाधनुर्द्धर युद्धदुर्मद सात्यकि आके वहांपर उपस्थित हुए तब कर्णने दश तेज बाणोंसे उन्हें विद्ध किया ॥ (२८–३०)

महाराज ! अनन्तर सात्यकि सम्पूर्ण योद्धाओंके संमुखमें ही कर्णको 'भागना मत, खडे रहो' ऐसा वचन कहके दश बाणोंसे उन्हें विद्ध किया। तब कर्ण और सात्यकिका इन्द्र और बलिकी भांति युद्ध होने लगा ॥ क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ सात्यकिने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रासयन्रथघोषेण क्षत्रियान्क्षत्रियर्षभः ।
राजीवलोचनं कर्णं सात्यकिः प्रत्यविध्यत ॥ ३३ ॥
कम्पयन्निव घोषेण धनुषो वसुधां बली ।
सुतपुत्रो महाराज सात्यकिं प्रत्ययोधयत् ॥ ३४ ॥
विपाठकर्णिनाराचैर्वत्सदन्तैः क्षुरैरपि ।
कर्णः शरशतैश्चापि शैनेयं प्रत्यविद्ध्यत ॥ ३५ ॥
तथैव युद्ध्यमानोऽपि वृष्णीनां प्रवरो युधि ।
अभ्यवर्षच्छरैः कर्णं तद्युद्धमभवत्समम् ॥ ३६ ॥
तावकाश्च महाराज कर्णपुत्रश्च दंशितः ।
सात्यकिं विव्यधुस्तूर्णं समन्तान्निशितैः शरैः॥ ३७ ॥
अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य तेषां कर्णस्य वा विभो ।
अविध्यत्सात्यकिः क्रुद्धो वृषसेनं स्तनान्तरे ॥ ३८ ॥
तेन बाणेन निर्विद्धो वृषसेनो विशाम्पते ।
न्यपतत्स रथे मूढो धनुरुत्सृज्य वीर्यवान् ॥ ३९ ॥
ततः कर्णो हतं मत्वा वृषसेनं महारथम् ।
पुत्रशोकाभिसन्तप्तः सात्यकिं प्रत्यपीडयत् ॥ ४० ॥

अपने रथघोषके शब्दसे सम्पूर्ण क्षत्रियों को भयभीत करके राजीवलोचन कर्णको अपने बाणोंसे विद्ध किया। वैसे ही महा धनुर्द्धर कर्ण भी धनुषटङ्कारके शब्दसे पृथ्वीको कंपाते हुए सात्यकिके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ (३१–३४)

कर्णने विपाट कर्णिक, नाराच वत्सदन्त क्षुरप्र आदि सैकडों अस्त्रोंसे शिनि पौत्र सात्यकिको विद्ध किया ॥ रथियों में मुख्य वृष्णिवंशीय सात्यकि भी उसी भांति अस्त्रोंको चला कर कर्णको विद्ध करने लगे। कुछ समय तक उन दोनों वीरोंका युद्ध समभावसे ही होता रहा॥ तिसके अनन्तर तुम्हारी ओरके रथी योद्धा और कर्णके पुत्र लोग इकट्ठे होकर अपने बाणोंको चलाकर चारों ओरसे सात्यकिको विद्ध करने लगे॥ उसे देखके यदुवंशी सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर कर्ण और उनके पुत्रोंके चलाये हुए बाणों को निवारण करके वृषसेनके हृदयमें अपने बाणसे प्रहार किया॥ (३५–३८)

पराक्रमी वृषसेन सात्यकिके बाणकी चोटसे अत्यन्त पीडित होकर धनुष त्यागके मूर्च्छित होकर रथमें गिरपडे॥ उससे कर्ण अपने पुत्र महारथी वृषसेन को मरा हुआ समझ कर पुत्र शोकसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीड्यमानस्तु कर्णेन युयुधानो महारथः ।
विव्याध बहुभिः कर्णं त्वरमाणः पुनः पुनः ॥ ४१ ॥
स कर्णं दशभिर्विद्ध्वा वृषसेनं च सप्तभिः ।
सहस्तावापधनुषी तयोश्चिच्छेद सात्वतः ॥ ४२ ॥
तावन्ये धनुषी सज्ये कृत्वा शत्रुभयङ्करे ।
युयुधानमविध्येतां समन्तान्निशितैः शरैः ॥ ४३ ॥
वर्तमाने तु संग्रामे तस्मिन्वीरवरक्षये ।
अतीव शुश्रुवे राजन्गाण्डीवस्य महास्वनः ॥ ४४ ॥
श्रुत्वा तु रथनिर्घोषं गाण्डीवस्य च निःस्वनम् ।
सूतपुत्रोऽब्रवीद्राजन्दुर्योधनमिदं वचः ॥ ४५ ॥
एष सर्वां चमूं हत्वा मुख्यांश्चैव नरर्षभान् ।
पौरवांश्च महेष्वासो विक्षिपन्नुत्तमं धनुः ॥ ४६ ॥
पार्थो विजयते तत्र गाण्डीवनिनदो महान् ।
श्रूयते रथघोषश्च वासवस्येव नर्दतः ॥ ४७ ॥
करोति पाण्डवो व्यक्तं कर्मौपयिकमात्मनः ।

अत्यन्त ही दुःखित हुए और अपने बाणोंसे सात्यकिको पीडित करने लगे॥ महारथी सात्यकी कर्णके बाणोंसे पीडित हो शीघ्रताके सहित अनेक बाणोंको चला कर कर्णको बार बार विद्ध करने लगे॥ (३९--४१)

तिसके अनन्तर सात्यकिने कर्णको दश और सावधान हुए वृषसेन को सात बाणों से विद्ध करके फिर उन दोनोंके अंगुलित्राण और धनुषको काट दिया॥ तब कर्ण और वृषसेन दूसरे धनुष पर रोंदा चढाकर सात्यकिको अनगिनत बाणोंसे विद्ध करने लगे॥ महाराज ! उस समय वीरोंके नाश करनेवाले उस महाघोर संग्रामके समय हम लोगोंको महाभयङ्कर गाण्डीव धनुषका शब्द सुनाई देने लगा॥ ४२-४४

सूतपुत्र कर्ण गाण्डीव धनुष और अर्जुनके रथका शब्द सुन कर तुम्हारे पुत्र दुर्योधनसे यह वचन बोले, महाराज! जिस स्थलमें इन्द्रके धनुषके समान लगातार अर्जुनके गाण्डीव धनुष और उसके रथका शब्द सुन पडता है अवश्य ही उस स्थान पर महा धनुर्द्धारी पृथापुत्र अर्जुन मुख्य मुख्य सम्पूर्ण शिबि और पुरुष श्रेष्ठ पौरवोंका वध करके धनुषटङ्कार कर रहा है मुझे यह स्पष्ट ही मालूम हो रहा है कि अर्जुन अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एषा विदार्यते राजन्बहुधा भारती चमूः ॥ ४८ ॥
विप्रकीर्णान्यनेकानि नहि तिष्ठन्ति कर्हिचित् ।
वातेनेव समुद्धूतमभ्रजालं विदीर्यते ॥ ४९ ॥
सव्यसाचिनमासाद्य भिन्ना नौरिव सागरे ।
द्रवतां योधमुख्यानां गाण्डीवप्रेषितैः शरैः ॥ ५० ॥
विद्धानां शतशो राजञ्श्रूयते निःस्वनो महान् ।
शृणु दुन्दुभिनिर्घोषमर्जुनस्य रथं प्रति ॥ ५१ ॥
निशीथे राजशार्दूल स्तनयित्नोरिवाऽम्बरे ।
हाहाकाररवांश्चैव सिंहनादांश्च पुष्कलान् ॥ ५२ ॥
शृणु शब्दान्बहुविधानर्जुनस्य रथं प्रति ।
अयं मध्ये स्थितोऽस्माकं सात्यकिः सात्वतां वरः॥५३॥
इह चेल्लभ्यते लक्ष्यं कृत्स्नाञ्जेष्यामहे परान् ।
एष पाञ्चालराजस्य पुत्रो द्रोणेन सङ्गतः ॥ ५४ ॥
सर्वतः संवृतो योधैः शूरैश्च रथसत्तमैः ।
सात्यकिं यदि हन्याम धृष्टद्युम्नं च पार्षतम् ॥ ५५ ॥

पराक्रमके अनुसार ही कर्म कर रहा है। यह देखो, यह व्यूहबद्ध भारती सेना इधर उधर भाग रही है॥ ४५-४८

जैसे प्रबल वायुके वेगसे बादलोंके समूह छिन्न भिन्न होजाते हैं वैसे ही अर्जुनके बाणोंसे पीडित होके सेनाके पुरुष किसी प्रकारसे भी युद्धभूमिमें खडे नहीं होसकते हैं॥ अधिक क्या कहें, जैसे छोटी नौका समुद्रके लहरसे उलट जाती है, वैसे ही यह भारती सेना अर्जुनके बाणोंसे तितर बितर होके भाग रही है। हे राजेन्द्र! यह देखो गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे पीडित होके भागते हुए मुख्य मुख्य सैकडों योद्धाओंके महाघोर कोलाहल सुनाई देरहे हैं। रात्रिके समय आकाशमें स्थित बादल गर्जनेकी भांति अर्जुनके रथके समीपमें नगाडोंके शब्द शूरवीरोंके हाहाकार और सिंहनाद आदि अनेक भांतिके शब्द सुनाई देरहे हैं। (४९-५३)

परन्तु इस स्थानमें हम सब लोगोंके बीचमें स्थित यदुवंशियोंमें मुख्य सात्यकिको यदि लक्ष्य रूपसे प्राप्त कर सकें तो अवश्य ही सम्पूर्ण शत्रुओंको पराजित कर सकेंगे। यह देखिये द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त हुए पाञ्चालराज धृष्टद्युम्न तुम्हारे शूरवीर सहोदर भाइयोंके बीच चारों ओरसे घिर गये हैं। इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंशयं महाराज ध्रुवो नो विजयो भवेत् ।
सौभद्रवादिमौ वीरौ परिवार्य महारथौ ॥ ५६ ॥
प्रयतामो महाराज निहन्तुं वृष्णिपार्षतौ ।
सव्यसाची पुरोऽभ्येति द्रोणानीकाय भारत ॥ ५७ ॥
संसक्तं सात्यकिं ज्ञात्वा बहुभिः कुरुपुङ्गवैः ।
तत्र गच्छन्तु बहवः प्रवरा रथसत्तमाः ॥ ५८ ॥
यावत्पार्थो न जानाति सात्यकिं बहुभिर्वृतम् ।
ते त्वरध्वं तथा शूराः शराणां मोक्षणे भृशम् ॥ ५९ ॥
यथा त्विह व्रजत्येष परलोकाय माधवः ।
तथा कुरु महाराज सुनीत्या सुप्रयुक्तया ॥ ६० ॥
कर्णस्य मतमास्थाय पुत्रस्ते प्राह सौबलम् ।
यथेन्द्रः समरे राजन्प्राह विष्णुं यशस्विनम् ॥ ६१ ॥
वृतः सहस्रैर्दशभिर्गजानामनिवर्तिनाम् ।
रथैश्च दशसाहस्रैस्तूर्णं याहि धनञ्जयम् ॥ ६२ ॥

समय यदि हम लोग सात्यकि और पृषत् कुलभूषण धृष्टद्युम्नका नाश कर सकें तो अवश्य ही हम लोगोंकी जीत होवेगी । (५३–५६)

सुभद्रापुत्र अभिमन्युकी भांति हम लोग वृष्णि और पृषतवंशीय महारथी सात्यकि तथा धृष्टद्युम्नको चारों ओरसे घेर कर उनके नाश करनेका यत्न करेंगे। यह देखिये संमुखमें सव्यसाची अर्जुन सात्यकिको अनेक कुरुसेनाके वीरोंके सङ्ग युद्ध करते हुए देखकर द्रोणाचार्य की सेनाकी ओर आरहा है; इससे जब तक अर्जुन विशेषरूपसे यह न जान सके कि सात्यकि अनेक योद्धाओंके बीचमें घिर गया है उससे पहिले ही हम लोगोंकी ओरसे बहुतसे मुख्य मुख्य रथी लोग उसको इधर आनेमें बाधा देनेके वास्ते शीघ्रताके सहित उसके समीप गमन करें। और यहां पर जितने योद्धा लोग स्थित हैं वे लोग शीघ्रताके सहित लगातार इस प्रकार सात्यकिके ऊपर अपने बाणोंको वर्षावें जिसमें यदुवंशीय सात्यकि शीघ्र ही यमलोकमें गमन करे ॥ (५७–६०)

महाराज ! तुम्हारे पुत्र दुर्योधनने कर्णके अभिप्रायको समझके जैसे देवराज इन्द्र यशस्वी विष्णुकी आज्ञाको पूर्ण करते हैं वैसे ही राजा दुर्योधन कर्णकी आज्ञा सुनके शकुनिसे बोले, हे मामा ! आप युद्धमें पीछे न हटनेवाले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःशासनो दुर्विषहः सुबाहुर्दुष्प्रधर्षणः ।
एते त्वामनुयास्यन्ति पत्तिभिर्बहुभिर्वृताः ॥ ६३ ॥
जहि कृष्णौ महाबाहो धर्मराजं च मातुल ।
नकुलं सहदेवं च भीमसेनं तथैव च ॥ ६४ ॥
देवानामिव देवेन्द्रे जयाशा त्वयि मे स्थिता ।
जहि मातुल कौन्तेयानसुरानिव पावकिः ॥ ६५ ॥
एवमुक्तो ययौ पार्थान्पुत्रेण तव सौबलः ।
महत्या सेनया सार्धं सह पुत्रैश्च ते विभो ॥ ६६ ॥
प्रियार्थं तव पुत्राणां दिधक्षुः पाण्डुनन्दनान् ।
ततः प्रववृते युद्धं तावकानां परैः सह ॥ ६७ ॥
प्रयाते सौबले राजन्पाण्डवानामनीकिनीम् ।
बलेन महता युक्तः सूतपुत्रस्तु सात्वतम् ॥ ६८ ॥
अभ्ययात्त्वरितो युद्धे किरञ्शरशतान्बहून् ।
तथैव पार्थिवाः सर्वे सात्यकिं पर्यवारयन् ॥ ६९ ॥

दश हजार हाथी और दश सहस्र रथियोंके सहित अर्जुनके विरुद्ध युद्ध करनेके वास्ते गमन करो, और दुःशासन, दुर्विषह, सुबाहु और दुष्प्रधर्षण आदि मेरे सहोदर भ्राता भी अनेक पैदल चलने वाले शूरवीरोंके सहित तुम्हारे अनुगामी होंगे ॥ हे महाभुज मातुल ! तुम युद्धभूमिमें जाकर कृष्ण अर्जुन धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और भीमसेन का वध करो ॥ देखिये जैसे देवताओंकी विजय देवराज इन्द्र पर निर्भर रहती है वैसे ही मेरी भी विजयकी आशा तुम्हारी ऊपर निर्भर है । जैसे स्वामिकार्त्तिकने असुरोंकी सेनाको नाश किया था; वैसे ही आप भी कुन्तीपुत्रों का नाश कीजिये ॥ (६१–६५)

सञ्जय बोले महाराज ! सुबलपुत्र शकुनिने कुरुराज दुर्योधनकी ऐसी आज्ञा सुनकर दुःशासन आदि राजपुत्रों और बडी सेनाके सहित कौरवोंके प्रिय कार्य को करनेकी इच्छासे कुन्तीपुत्रोंके वधके वास्ते उनकी ओर गमन किया । इसी भांति जब शकुनिने पाण्डवोंकी सेनाके बीच प्रवेश किया तब शत्रुओंके सङ्ग तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका महाघोर युद्ध होने लगा ॥ (६६–६७)

इधर सूतपुत्र कर्ण बडी सेनाके बीच घिरकर अनागिनत बाणोंकी वर्षा करते हुए शीघ्रताके सहित सात्यकिकी ओर दौडे । तिसके अनन्तर सम्पूर्ण राजाओंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारद्वाजस्ततो गत्वा धृष्टद्युम्नरथं प्रति ।
महद्युद्धं तदासीत्तु द्रोणस्य निशि भारत ।
धृष्टद्युम्नेन वीरेण पञ्चालैश्च सहाऽद्भुतम् ॥ ७० ॥ [७६९०]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे संकुलयुद्धे सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१७०॥

सञ्जय उवाच— ततस्ते प्राद्रवन्सर्वे त्वरिता युद्धदुर्मदाः ।
अमृष्यमाणाः संरब्धा युयुधानरथं प्रति ॥ १ ॥
ते रथैः कल्पितै राजन्हेमरूप्यविभूषितैः ।
सादिभिश्च गजैश्चैव परिवव्रुः समन्ततः ॥ २ ॥
अथैनं कोष्ठकीकृत्य सर्वतस्ते महारथाः ।
सिंहनादांस्ततश्चक्रुस्तर्जयन्ति स्म सात्यकिम् ॥ ३ ॥
तेऽभ्यवर्षञ्छरैस्तीक्ष्णैः सात्यकिं सत्यविक्रमम् ।
त्वरमाणा महावीरा माधवस्य वधैषिणः ॥ ४ ॥
तान्दृष्ट्वाऽऽपततस्तूर्णं शैनेयः परवीरहा ।
प्रत्यगृह्णान्महाबाहुः प्रमुञ्चन्विशिखान्बहून् ॥ ५ ॥
तत्र वीरो महेष्वासः सात्यकिर्युद्धदुर्मदः ।

चारों ओरसे सात्यकिको घेर लिया । उस रात्रिके समय महावीर धृष्टद्युम्न और पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग द्रोणाचार्यका अत्यन्त ही अद्भुत महाघोर संग्राम होने लगा ॥ (६८–७०) [७६९०]

द्रोणपर्वमें एकसौ सत्तर अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ इकत्तर अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! तिसके अनन्तर कुरुसेनाके शूरवीर योद्धा लोग निर्भय चित्तसे क्रोधपूर्वक शीघ्रताके सहित सात्यकिके रथकी ओर दौडे ॥ उन लोगोंने सोने और चांदीसे भूषित रथोंपर चढके घुडसवार और गजपतियोंके समूहसे चारों ओरसे सात्यकिको घेर लिया ॥ इसी भांति तुम्हारी सेनाके महारथी योद्धा लोग चारों ओरसे सात्यकिको घेर कर सिंहनाद शब्दके सहित बार बार गर्जने लगे और सात्यकिको निन्दने लगे ॥ महाबलवान् कौरव लोग यदुवंशीय मुख्य सत्य पराक्रमी सात्यकिके वधकी अभिलाष करके लगातार उसके ऊपर तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ (१–४)

शिनिपौत्र सात्यकि उन सम्पूर्ण योद्धाओंको वेगपूर्वक अपनी ओर आये हुए देखकर असंख्य बाणोंसे उनको निवारण करने लगे ॥ महाराज ! उस ही समय धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी युद्धदुर्मद सात्यकि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निचकर्त शिरांस्युग्रैः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ६ ॥
हस्तिहस्तान्हयग्रीवा बाहूनपि च सायुधान् ।
क्षुरप्रैः शातयामास तावकानां स माधवः ॥ ७ ॥
पतितैश्चामरैश्चैव श्वेतच्छत्रैश्च भारत ।
बभूव धरणी पूर्णा नक्षत्रैर्द्यौरिव प्रभो ॥ ८ ॥
एतेषां युयुधानेन युध्यतां युधि भारत ।
बभूव तुमुलः शब्दः प्रेतानां क्रन्दतामिव ॥ ९ ॥
तेन शब्देन महता पूरिताऽभूद्वसुन्धरा ।
रात्रिः समभवच्चैव तीव्ररूपा भयावहा ॥ १० ॥
दीर्यमाणं बलं दृष्ट्वा युयुधानशराहतम् ।
श्रुत्वा च विपुलं नादं निशीथे लोमहर्षणे ॥ ११ ॥
सुतस्तवाऽब्रवीद्राजन्सारथिं रथिनां वरः ।
यत्रैष शब्दस्तत्राऽश्वांश्चोदयेति पुनः पुनः ॥ १२ ॥
तेन सञ्चोद्यमानस्तु ततस्तांस्तुरगोत्तमान् ।
सूतः सञ्चोदयामास युयुधानरथं प्रति ॥ १३ ॥
ततो दुर्योधनः क्रुद्धो दृढधन्वा जितक्लमः ।

अपने तेज बाणोंसे और क्षुरप्र अस्त्रसे तुम्हारी सेनाके बहुतेरे योद्धाओंके सिर भुजा हाथियोंके सूण्ड और घोडोंकी गर्दन काट काट कर पृथ्वीमें गिराने लगे ॥ (५-७)

उस समय वह रणभूमि इधर उधर पडे हुए चंवर, सफेद छत्र आदि वस्तुओंसे युक्त होकर इस प्रकार शोभित हुई जैसे तारोंसे युक्त आकाशमण्डल शोभित होता है ॥ और सात्यकिके सङ्ग युद्ध करते हुए योद्धाओंके ऐसे महाघोर तुमुल शब्द सुनाई देने लगे मानो प्रेत रुदन कर रहे हैं ॥ उस महाघोर शब्दसे पृथ्वी परिपूरित होगई और रात्रि भी अत्यन्त ही भयङ्कर होकर प्राणियोंको डरावनी बोध होने लगी ॥ (८—१०)

उस भयङ्करी रात्रिके समय अपनी सेनाके पुरुषोंको भागते देख तथा उन लोगोंके महाघोर आर्त्तशब्दको सुनकर राजा दुर्योधन बार बार अपने सारथीसे बोले, कि जिधर यह महाघोर शब्द सुन पडता है, उसी ओर घोडोंको ले चलो ॥ सारथी राजा दुर्योधनकी आज्ञा सुनकर उत्तम घोडोंसे युक्त उनके रथको सात्यकिके रथकी ओर चलाने लगा ॥ (११—१३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्रहस्तश्चित्रयोधी युयुधानमुपाद्रवत् ॥ १४ ॥
ततः पूर्णायतोत्सृष्टैः शरैः शोणितभोजनैः ।
दुर्योधनं द्वादशभिर्माधवः प्रत्यविध्यत ॥ १५ ॥
दुर्योधनस्तेन तथा पूर्वमेवाऽर्दितः शरैः ।
शैनेयं दशभिर्बाणैः प्रत्यविध्यदमर्षितः ॥ १६ ॥
ततः समभवद्युद्धं तुमुलं भरतर्षभ ।
पञ्चालानां च सर्वेषां भरतानां च दारुणम् ॥ १७ ॥
शैनेयस्तु रणे क्रुद्धस्तव पुत्रं महारथम् ।
सायकानामशीत्या तु विव्याधोरसि भारत ॥ १८ ॥
ततोऽस्य वाहान्समरे शरैर्निन्ये यमक्षयम् ।
सारथिं च रथात्तूर्णं पातयामास पत्त्रिणा ॥ १९ ॥
हताश्वे तु रथे तिष्ठन्पुत्रस्तव विशाम्पते ।
मुमोच निशितान्बाणाञ्शैनेयस्य रथं प्रति ॥ २० ॥
शरान्पञ्चशतांस्तांस्तु शैनेयः कृतहस्तवत् ।
चिच्छेद समरे राजन्प्रेषितांस्तनयेन ते ॥ २१ ॥
अथाऽपरेण भल्लेन सुष्टिदेशे महद्धनुः ।
चिच्छेद तरसा युद्धे तव पुत्रस्य माधवः ॥ २२ ॥

अनन्तर युद्धमें श्रमरहित महाबलवान् शीघ्र अस्त्र चलानेवाले दृढ धनुर्द्धारी कुरुराज दुर्योधन सात्यकिके समीप प्राप्त हुआ तब सात्यकिने कान पर्यन्त धनुषको खींचके रुधिर पीनेवाले बारह बाणोंको चलाकर उसके हृदयमें प्रहार किया ॥ शिनिपौत्र सात्यकिके बाणोंसे पहले पीडित हुए दुर्योधनने फिर क्रोध पूर्वक दश बाणों से सात्यकि को विद्ध किया ॥ उस समय कौरव और पाञ्चाल योद्धाओंका महाघोर भयङ्कर युद्ध होने लगा ॥ (१४–१७)

तिसके अनन्तर सात्यकिने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अस्सी बाणोंसे तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके हृदयमें प्रहार किया ॥ फिर अनेक बाणोंसे उनके रथके घोडोंका वध करके एक बाणसे सारथिको भी मारकर रथसे पृथ्वीपर गिरा दिया ॥ महाराज ! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधनने घोडोंसे रहित रथ पर ही स्थित होकर सात्यकिके रथ की ओर पचास बाण चलाये, सात्यकि ने हस्तलाघवके सहित दुर्योधनके चलाये हुए बाणोंको टुकडे टुकडे करके पृथ्वी में गिराया और एक भल्लास्त्रसे तुम्हारे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरथो विधनुष्कश्च सर्वलोकेश्वरः प्रभुः।
आरुरोह रथं तूर्णं भास्वरं कृतवर्मणः ॥ २३ ॥
दुर्योधने परावृत्ते शैनेयस्तव वाहिनीम्।
द्रावयामास विशिखैर्निशामध्ये विशाम्पते ॥ २४ ॥
शकुनिश्चाऽर्जुनं राजन्परिवार्य समन्ततः।
रथैरनेकसाहस्रैर्गजैश्चाऽपि सहस्रशः ॥ २५ ॥
तथा हयसहस्रैश्च नानाशस्त्रैरवाकिरत्।
ते महास्त्राणि सर्वाणि विकिरन्तोऽर्जुनं प्रति ॥ २६ ॥
अर्जुनं योधयन्ति स्म क्षत्रियाः कालचोदिताः।
तान्यर्जुनः सहस्राणि रथवारणवाजिनाम् ॥ २७ ॥
प्रत्यवारयदायस्तः प्रकुर्वन्निपुलं क्षयम्।
ततस्तु समरे शूरः शकुनिः सौबलस्तदा ॥ २८ ॥
विव्याध निशितैर्बाणैरर्जुनं प्रहसन्निव।
पुनश्चैव शतेनाऽस्य संरुरोध महारथम् ॥ २९ ॥

पुत्र दुर्योधनके धनुषकी मूंठी काट दिया ॥ (१८—२२)

उस समय राजा दुर्योधन धनुषके कटने पर घोडोंसे सहित रथसे उतरके कृतवर्माके प्रकाशमान रथ पर जाचढे ॥ हे प्रजानाथ! उस रात्रिके समय जब तुम्हारे पुत्र दुर्योधन सात्यकिके संमुखसे पराजित हुए तब पराक्रमी सात्यकि अपने बाणोंकी वर्षा कर तुम्हारी सेनाके योद्धाओंको छिन्न भिन्न करने लगे ॥ (२३-२४)

इस ही समय शकुनि सहस्रों रथी हाथी और घुडसवारोंकी सेना लेकर चारों ओरसे अर्जुनको घेरकर उनके ऊपर लगातार अनेक प्रकारके बाणोंको वर्षाने लगे ॥ महाराज वे सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा लोग कालके वशमें होकर महा अस्त्रोंको चलाते हुए अर्जुनके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ (२५-२७)

तब अर्जुन क्रोधपूर्वक तुम्हारी महासेनाके योद्धाओंके नाश करनेमें प्रवृत्त हुए और सहस्रों गजसवार घुडसवार और रथियोंको युद्धभूमिसे निवारण करने लगे ॥ जब अर्जुन इसी भांति शत्रुसेनाके पुरुषोंका नाश करने लगे तब शकुनिने क्रोधसे नेत्र लाल करके उन्हें बीस बाणोंसे दृढताके सहित विद्ध किया। तिसके अनन्तर शकुनि सैकडों बाणोंको चलाकर कपिध्वजासे युक्त अर्जुनके रथको छिपाने लगे ॥ (२७-२९)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमर्जुनस्तु विंशत्या विव्याध युधि भारत ।
अथेतरान्महेष्वासांस्त्रिभिस्त्रिभिरविध्यत ॥ ३० ॥
निवार्य तान्बाणगणैर्युधि राजन्धनञ्जयः ।
जघान तावकान्योधान्वज्रपाणिरिवाऽसुरान् ॥ ३१ ॥
भुजैश्छिन्नैर्महीपाल हस्तिहस्तोपमैर्मृधे ।
समाकीर्णा मही भाति पञ्चास्यैरिव पन्नगैः ॥ ३२ ॥
शिरोभिः सकिरीटैश्च सुनसैश्चारुकुण्डलैः ।
सन्दष्टौष्ठपुटैः क्रुद्धैस्तथैवोद्वृत्तलोचनैः ॥ ३३ ॥
निष्कचूडामणिधरैः क्षत्रियाणां प्रियंवदैः ।
पङ्कजैरिव विन्यस्तैः पर्वतैर्विबभौ मही ॥ ३४ ॥
कृत्वा तत्कर्म बीभत्सुरुग्रमुग्रपराक्रमः ।
विव्याध शकुनिं भूयः पञ्चभिर्नतपर्वभिः ॥ ३५ ॥
अताडयदुलूकं च त्रिभिरेव तथा शरैः ।
उलूकस्तु तथा विद्धो वासुदेवमताडयत् ॥ ३६ ॥

अनन्तर अर्जुनने बीस बाणोंसे शकुनि और अन्य महारथियोंको तीन तीन बाणोंसे विद्ध किया ॥ महाराज ! इतने ही समयके बीच महावीर अर्जुन शत्रुओं के चलाये हुए बाणोंको निवारण करके फिर असुरोंको मारनेवाले इन्द्रके समान तुम्हारी सेनाके योद्धाओंका प्राण नाश कर उन लोगोंको यमपुरीमें भेजने लगे । उस समय हाथीके सूण्डसमान शूरवीर पुरुषोंकी भुजा अर्जुनके बाणोंसे कटके पृथ्वीमें गिरने लगीं उससे वह रणभूमि मानो पांच सिरवाले सर्पोंकी भांति उन कटी हुई भुजाओंसे पूरित होगई ॥ (३०–३२)

इसी भांति स्वर्णमुद्रा चूडामणि किरीट और कुण्डलोंसे शोभित मनोहर नासिकाके सहित शूरवीर पुरुषोंके बहुतेरे सिर शरीरसे कटकर पृथ्वीपर गिरने लगे ॥ ओहो ! जिन क्षत्रियोंके शरीरसे सदा सर्वदा प्रिय वचन सुनाई देते थे इस समय वे क्रोधके वशमें होकर ओंठ काटते हुए युद्धमें प्रवृत्त हुए और उस ही भांति अर्जुनके बाणोंसे उनके सिर कटके पृथ्वीमें गिरे तब वह रणभूमि कमलोंसे से युक्त पर्वतोंकी भांति शोभित होने लगी ॥ (३३—३४)

महापराक्रमी अर्जुनने युद्धभूमिके बीच ऐसा भयङ्कर कर्म करके फिर पांच तीक्ष्ण बाणोंसे शकुनि और तीन बाणोंसे उनके पुत्र उलूकको पीडित किया ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ननाद च महानादं पूरयन्निव मेदिनीम् ।
अर्जुनः शकुनेश्चापं सायकैरच्छिनद्रणे ॥ ३७ ॥
निन्ये च चतुरो वाहान्यमस्य सदनं प्रति ।
ततो रथादवप्लुत्य सौबलो भरतर्षभ ॥ ३८ ॥
उलूकस्य रथं तूर्णमारुरोह विशाम्पते ।
तावेकरथमारूढौ पितापुत्रौ महारथौ ॥ ३९ ॥
पार्थं सिषिचतुर्बाणैर्गिरिं मेघाविवाऽम्बुभिः ।
तौ तु विध्वा महाराज पाण्डवो निशितैः शरैः ॥ ४० ॥
विद्रावयंस्तव चमूं शतशो व्यधमच्छरैः ।
अनिलेन यथाऽभ्राणि विच्छिन्नानि समन्ततः ॥ ४१ ॥
विच्छिन्नानि तथा राजन्बलान्यासन्विशाम्पते ।
तद्बलं भरतश्रेष्ठ वध्यमानं तदा निशि ॥ ४२ ॥
प्रदुद्राव दिशः सर्वा वीक्षमाणं भयार्दितम् ।
उत्सृज्य वाहान्समरे चोदयन्तस्तथाऽपरे ॥ ४३ ॥
सम्भ्रान्ताः पर्यधावन्त तस्मिंस्तमसि दारुणे ।

उलूकने अर्जुनके बाणोंसे विद्ध होकर अपने बाणोंसे श्रीकृष्णको परिपूरित किया और अनेक बाणोंसे पृथ्वीको परिपूरित करके सिंहनाद किया। ३५-३७

अनन्तर अर्जुनने अनेक बाण चलाकर शकुनिका धनुष काटा और उनके चारों घोडोंका वध करके पृथ्वीमें गिराया। शकुनि घोडोंसे रहित रथसे कूदके उलूकके रथपर जा चढे। महाराज! जैसे दो बादल पर्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं वैसे ही एक रथपर चढेहुए पिता पुत्र शकुनि और उलूक अर्जुनके ऊपर लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। (३७-४०)

अनन्तर पाण्डुपुत्र अर्जुन अपने तेज बाणोंसे उन दोनोंको विद्ध करके फिर तुम्हारी व्यूहबद्ध सेनाके अनगिनत योद्धाओंको अपने बाणरूपी अग्निसे भस्म करने लगे। जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे बादलोंके समूह छिन्न भिन्न हो जाते हैं वैसे ही कुरुसेनाके योद्धा लोग अर्जुनके बाणोंसे चारों ओर तितर बितर होगये। महाराज! उस महाघोर रात्रिके समय तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग भयभीत और अर्जुनके बाणोंसे पीडित होकर चारों ओर देखते हुए वेगपूर्वक भागने लगे। उस महाघोर अन्धकारके समय भागते हुए योद्धाओंके बीच कितने ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजित्य समरे योधांस्तावकान्भरतर्षभ ॥ ४४ ॥
दध्मतुर्मुदितौ शङ्खौ वासुदेवधनञ्जयौ ।
धृष्टद्युम्नो महाराज द्रोणं विध्वा त्रिभिः शरैः ॥ ४५ ॥
चिच्छेद धनुषस्तूर्णं ज्यां शरेण शितेन ह ।
तन्निधाय धनुर्भूमौ द्रोणः क्षत्रियमर्दनः ॥ ४६ ॥
आददेऽन्यद्धनुः शूरो वेगवत्सारवत्तरम् ।
धृष्टद्युम्नं ततो द्रोणो विध्वा सप्तभिराशुगैः ॥ ४७ ॥
सारथिं पञ्चभिर्बाणै राजन्विव्याध संयुगे ।
तं निवार्य शरैस्तूर्णं धृष्टद्युम्नो महारथः ॥ ४८ ॥
व्यधमत्कौरवीं सेनामासुरीं मघवानिव ।
वध्यमाने बले तस्मिंस्तव पुत्रस्य मारिष ॥ ४९ ॥
प्रावर्तत नदी घोरा शोणितौघतरङ्गिणी ।
उभयोः सेनयोर्मध्ये नराश्वद्विपवाहिनी ॥ ५० ॥
यथा वैतरणी राजन्यमराजपुरं प्रति ।
द्रावयित्वा तु तत्सैन्यं धृष्टद्युम्नः प्रतापवान् ॥ ५१ ॥

योद्धा हाथी, घोडे आदि अपने वाहनोंको त्यागकर पैदलही छिपकर भागने लगे । हे भारत ! श्रीकृष्ण और अर्जुन इसी भांति शत्रुओंको पराजित करके हर्षपूर्वक अपने शङ्ख बजाने लगे। (४०—४५)

उस ही समय धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य को तीन बाणोंसे विद्ध करके शीघ्रताके सहित एक तेज बाणसे उनके धनुषका रोदा काट दिया । तब क्षत्रियोंके नाश करनेवाले महावीर द्रोणाचार्यने रोदेसे रहित धनुषको रथमें रखकर महावेगशील दूसरा धनुष ग्रहण किया; अनन्तर द्रोणाचार्यने धृष्टद्युम्नको सात बाणोंसे विद्ध करके पांच बाणोंसे उनके सारथी को विद्ध किया ॥ (४५–४८)

महाराज ! महारथी धृष्टद्युम्नने अपने बाणोंकी वर्षासे मुहूर्त्तभरके बीच द्रोणाचार्यको निवारण किया; और जैसें देवराज इन्द्रने दानवोंकी सेनाका नाश किया था; वैसे ही कौरवी सेनाका नाश करने लगे । महाराज ! इसही भांति जब तुम्हारे पुत्रकी सेनाके पुरुष मरने लगे, तब दोनों सेनाके बीच यमलोकमें स्थित वैतरणी नदीकी भांति भयङ्करी एक रुधिरका प्रवाह और रुधिरके तरंग वाली नदी बह निकली उसमें मनुष्य हाथी और घोडे बहने लगे। (४७–५१)

महाराज ! उस समय प्रतापी धृष्टद्युम्न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यराजत तेजस्वी शक्रो देवगणेष्विव ।
अथ दध्मुर्महाशङ्खान्धृष्टद्युम्नाशिखण्डिनौ ॥ ५२ ॥
यमौ च युयुधानश्च पाण्डवश्च वृकोदरः ।
जित्वा रथसहस्राणि तावकानां महारथाः ॥ ५३ ॥
सिंहनादरवांश्चक्रुः पाण्डवा जितकाशिनः ।
पश्यतस्तव पुत्रस्य कर्णस्य च रणोत्कटाः ।
तथा द्रोणस्य शूरस्य द्रौणेश्चैव विशाम्पते ॥ ५४ ॥ [७७४४]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे संकुलयुद्धे एकसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१७१॥

सञ्जय उवाच— विद्रुतं स्वबलं दृष्ट्वा वध्यमानं महात्मभिः ।
क्रोधेन महताऽऽविष्टः पुत्रस्तव विशाम्पते ॥ १ ॥
अभ्येत्य सहसा कर्णं द्रोणं च जयतां वरम् ।
अमर्षवशमापन्नो वाक्यज्ञो वाक्यमब्रवीत् ॥ २ ॥
भवद्भ्यामिह संग्रामः क्रुद्धाभ्यां सम्प्रवर्तितः ।
आहवे निहतं दृष्ट्वा सैन्धवं सव्यसाचिना ॥ ३ ॥
निहन्यमानां पाण्डूनां बलेन मम वाहिनीम् ।

कुरुसेना के योद्धाओं को छिन्न भिन्न करके अपनी सेनाके बीचमें घिरकर इस प्रकार रणभूमिमें स्थित हुए जैसे देवताओंके बीचमें इन्द्र विराजमान होते हैं॥ अनन्तर पाण्डुपुत्र भीमसेन, नकुल, सहदेव भी शिखण्डी और धृष्टद्युम्नके सङ्ग मिलकर अपने अपने शङ्ख बजाने लगे, इसी भांति युद्धमें पराक्रमी महारथी पाण्डव लोग तुम्हारे पुत्र दुर्योधन, राधा-पुत्र कर्ण, महावीर द्रोणाचार्य और अश्वत्थामाके सम्मुखमें ही कुरुसेनाके सहस्रों रथियोंको पराजित करके सिंहकी भांति भयङ्कर शब्दके सहित सिंहनाद करने लगे ॥ (५१–५४) [७७४४]

द्रोणपर्वमें एकसौ इकत्तर अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ बाहत्तर अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधन पाण्डवोंकी ओरके कई एक महारथियोंके अस्त्रोंसे अपनी सेनाके पुरुषोंको पीडित होकर भागते देख अत्यन्त ही क्रुद्ध हुए, और विजयी श्रेष्ठ द्रोणाचार्य और कर्णके समीप जाकर यह वचन बोले, रणभूमिमें अर्जुनके बाणोंसे सिन्धुराज जयद्रथको मरते देख कर आप लोगोंने ही यह संग्राम आरम्भ किया है; इस समय आप लोग पाण्डवों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूत्वा तद्विजये शक्तावशक्ताविव पश्यतः ॥ ४ ॥
यद्यहं भवतोस्त्याज्यो न वाच्योऽस्मि तदैव हि ।
आवां पाण्डुसुतान्संख्ये जेष्याव इति मानदौ ॥ ५ ॥
तदैवाऽहं वचः श्रुत्वा भवद्भ्यामनुसम्मतम् ।
नाऽकरिष्यमिदं पार्थैर्वैरं योधविनाशनम् ॥ ६ ॥
यदि नाऽहं परित्याज्यो भवद्भ्यां पुरुषर्षभौ ।
युध्यतामनुरूपेण विक्रमेण सुविक्रमौ ॥ ७ ॥
वाक्प्रतोदेन तौ वीरौ प्रणुन्नौ तनयेन ते ।
प्रावर्तयेतां संग्रामं घट्टिताविव पन्नगौ ॥ ८ ॥
ततस्तौ रथिनां श्रेष्ठौ सर्वलोकधनुर्धरौ ।
शैनेयप्रमुखान्पार्थानभिदुद्रुवतू रणे ॥ ९ ॥
तथैव सहिताः पार्थाः सर्वसैन्येन संवृताः ।
अभ्यवर्तन्त तौ वीरौ नर्दमानौ मुहुर्मुहुः ॥ १० ॥
अथ द्रोणो महेष्वासो दशभिः शिनिपुङ्गवम् ।
अविध्यत्त्वरितं क्रुद्धः सर्वशस्त्रभृतां वरः ॥ ११ ॥

को जीतनेमें समर्थ होकर भी असमर्थ की भांति हमारी सेनाको नष्ट होती हुई देख रहे हैं ॥ (१–४)

मुझे यदि आप लोगोंको त्याग करनेकी ही इच्छा थी, तो पहिले "हम युद्धभूमिमें पाण्डुपुत्रोंको पराजित करेंगे" ऐसा वचन बोलना उचित नहीं था । क्योंकि आप लोगोंका यदि मैं वैसा अभिप्राय जानता, तो कभी पाण्डुपुत्रोंके सङ्ग शत्रुता करके अपनी सेनाके पुरुषों का नाश न कराता ॥ हे पुरुषश्रेष्ठ ! यदि मैं आप दोनोंके त्याग किये जानेके योग्य न होऊं, तो आप दोनों लोग जैसे बल पराक्रमसे युक्त हैं, उसके अनुसार ही युद्ध करनेमें प्रवृत्त होइये ॥ (५-७)

महाराज ! महावीर द्रोणाचार्य और कर्ण दुर्योधनके वचनरूपी कोडेसे विद्ध होकर क्रुद्ध हुए सर्पकी भांति युद्ध करने में प्रवृत्त हुए । इसी भांति सम्पूर्ण लोकोंके बीच धनुर्द्धर रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य और कर्ण सात्यकि आदि पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौडे ॥ पाण्डव लोग भी उसी भांति अपनी सेनाके बीच घिरकर बार बार सिंहनाद करनेवाले द्रोणाचार्य और कर्ण की ओर दौडे ॥ (८–१०)

तिसके अनन्तर सम्पूर्ण शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणाचार्यने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णश्च दशभिर्बाणैः पुत्रश्च तव सप्तभिः।
दशभिर्वृषसेनश्च सौबलश्चाऽपि सप्तभिः ॥ १२ ॥
एते कौरवसंक्रन्दे शैनेयं पर्यवाकिरन्।
दृष्ट्वा च समरे द्रोणं निघ्नन्तं पाण्डवीं चमूम् ॥ १३ ॥
विव्यधुः सोमकास्तूर्णं समन्ताच्छरवृष्टिभिः।
तत्र द्रोणोऽहरत्प्राणान्क्षत्रियाणां विशाम्पते ॥ १४ ॥
रश्मिभिर्भास्करो राजंस्तमांसीव समन्ततः।
द्रोणेन वध्यमानानां पञ्चालानां विशाम्पते ॥ १५ ॥
शुश्रुवे तुमुलः शब्दः क्रोशतामितरेतरम्।
पुत्रानन्ये पितॄनन्ये भ्रातॄनन्ये च मातुलान् ॥ १६ ॥
भागिनेयान्वयस्यांश्च तथा सम्बन्धिबान्धवान्।
उत्सृज्योत्सृज्य गच्छन्ति त्वरिता जीवितेप्सवः ॥१७॥
अपरे मोहिता मोहात्तमेवाऽभिमुखा ययुः।
पाण्डवानां रणे योधाः परलोकं गताः परे ॥ १८ ॥
सा तथा पाण्डवी सेना पीड्यमाना महात्मना।
निशि सम्प्राद्रवद्राजन्नुत्सृज्योल्काः सहस्रशः ॥ १९ ॥

क्रुद्ध होकर दश बाणोंसे शिनिपौत्र सात्यकिको विद्ध किया ॥ फिर कर्णने दश, दुर्योधनने सात, वृषसेनने दश और सुबलपुत्र शकुनिने सात बाणोंसे सात्यकिको विद्ध किया। अधिक क्या कहूं उस समय उन सम्पूर्ण योद्धाओंने शिनिपौत्र सात्यकिको अपने बाणजालसे छिपा दिया ॥ (११–१३)

सोमकवंशी योद्धा लोग द्रोणाचार्यको इस भांति पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंका नाश करते देखकर शीघ्रताके सहित उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। उस ही समय द्रोणाचार्य चारों ओर अपने बाणोंको चलाकर इस प्रकार क्षत्रियोंका वध करने लगे जैसे सूर्य चारों ओर अपनी किरणोंके प्रकाशसे अन्धकारको नष्ट कर देते हैं। उस समय द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित हुए पाञ्चाल योद्धाओंका महाघोर तुमुल शब्द सुनाई देनेलगा। उससमय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग कोई पुत्र, कोई पिता, कोई भ्राता, कोई मामा और कोई भानजे, कोई मित्र और कोई अपने सम्बन्धी तथा बन्धु बान्धवोंको रणभूमिमें त्यागके वेगपूर्वक भागने लगे। कोई कोई योद्धा मोहित होकर द्रोणाचार्यहीकी ओर दौडे ॥ (१३–१८)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्यतो भीमसेनस्य विजयस्याऽच्युतस्य च ।
यमयोर्धर्मपुत्रस्य पार्षतस्य च पश्यतः ॥ २० ॥
तमसा संवृते लोके न प्राज्ञायत किञ्चन ।
कौरवाणां प्रकाशेन दृश्यन्ते विद्रुताः परे ॥ २१ ॥
द्रवमाणं तु तत्सैन्यं द्रोणकर्णौ महारथौ ।
जघ्नतुः पृष्ठतो राजन्किरन्तौ सायकान्बहून् ॥ २२ ॥
पञ्चालेषु प्रभग्नेषु क्षीयमाणेषु सर्वतः ।
जनार्दनो दीनमनाः प्रत्यभाषत फाल्गुनम् ॥ २३ ॥
द्रोणकर्णौ महेष्वासावेतौ पार्षतसात्यकी ।
पञ्चालांश्चैव सहितौ जघ्नतुः सायकैर्भृशम् ॥ २४ ॥
एतयोः शरवर्षेण प्रभग्ना नो महारथाः ।
वार्यमाणाऽपि कौन्तेय पृतना नाऽवतिष्ठते ॥ २५ ॥

उस रात्रिके समय पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग महात्मा द्रोणाचार्यके बाणोंसे अत्यन्त ही पीडित होकर भीमसेन अर्जुन, श्रीकृष्ण, नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्नके संमुखमें स्थित सहस्रों लुक इधर उधर फेंकके युद्धभूमिसे भागने लगे । जिस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग लुक फेंकके भागने लगे, यद्यपि उस समय लुकोंके फेंक देनेसे अन्धकारके कारण कुछ भी मालूम होनेकी संभावना नहीं थी; परन्तु तुम्हारी ओरकी सेनाके बीच जो दीपकोंका प्रकाश होरहा था, उससे भागते हुए शत्रु सेनाके योद्धा लोग स्पष्टरूपसे दिखाई देने लगे ॥ महाराज ! महारथी द्रोणाचार्य और कर्ण उन भागते हुए सेनाके पुरुषोंके पीछे अनागिनत बाणोंको चला कर उनके शरीरमें प्रहार करने लगे ॥ (१९-२२)

इसी भांति जब पाञ्चाल योद्धा चारों ओर भागते हुए द्रोणाचार्य और कर्णके बाणोंसे नष्ट होने लगे, तब जनार्दन कृष्ण दुःखित होकर अर्जुनसे यह वचन बोले, हे अर्जुन ! यह देखो धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणाचार्य और कर्ण पाञ्चाल योद्धाओंके सहित धृष्टद्युम्न और सात्यकी के ऊपर अपने बाणोंसे अत्यन्त ही प्रहार कर रहे हैं । अधिक क्या कहा जावे, उन दोनोंकी बाणवर्षासे हम लोगोंकी सेनाके महारथ योद्धा लोग बार बार युद्धभूमिसे विमुख होरहे हैं; उससे सेनाके पुरुष बार बार निवारित किये जाने पर भी युद्धभूमिमें स्थित नहीं हो सकते हैं ॥ (२३-२५)

तब भागती हुई अपनी सेनाको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तां तु विद्रवतीं दृष्ट्वा ऊचतुः केशवार्जुनौ ।
मा विद्रवत वित्रस्ता भयं त्यजत पाण्डवाः ॥ २६ ॥
तावावां सर्वसैन्यैश्च व्यूहैः सम्यगुदायुधैः ।
द्रोणं च सूतपुत्रं च प्रयतावः प्रबाधितुम् ॥ २७ ॥
एतौ हि बलिनौ शूरौ कृतास्त्रौ जितकाशिनौ ।
उपेक्षितौ तव बलैर्नाशयेतां निशामिमाम् ॥ २८ ॥
तयोः संवदतोरेवं भीमकर्मा महाबलः ।
आयाद्वृकोदरः शीघ्रं पुनरावर्त्य वाहिनीम् ॥ २९ ॥
वृकोदरमथाऽऽयान्तं दृष्ट्वा तत्र जनार्दनः ।
पुनरेवाऽब्रवीद्राजन्हर्षयन्निव पाण्डवम् ॥ ३० ॥
एष भीमो रणश्लाघी वृतः सोमकपाण्डवैः ।
अभ्यवर्त्तत वेगेन द्रोणकर्णौ महारथौ ॥ ३१ ॥
एतेन सहितौ युध्य पञ्चालैश्च महारथैः ।
आश्वासनार्थं सैन्यानां सर्वेषां पाण्डुनन्दन ॥ ३२ ॥

देखकर कृष्ण और अर्जुन उस सेनाको निवृत्त करने के लिये यह वचन बोले, हे पाण्डवोंकी ओर के योद्धाओ ! आप त्रस्त होकर मत भागो, आप भयको छोड कर यहां आओ। चलो हम लोग शस्त्र ग्रहण किये हुए सेनाके योद्धाओं के सङ्ग मिल कर सूतपुत्र कर्ण और द्रोणाचार्यको रोकनेके वास्ते विशेषरूपसे यत्न करें॥ इस समय श्रीकृष्ण अर्जुनसे बोले, कृतास्त्र बलवान् और जय प्रभाव से युक्त इन दोनों वीरोंके विषयमें यदि हम लोग उपेक्षा करेंगे तो इसी रात्रिके बीच ये लोग तुम्हारी सेनाके पुरुषोंका नाश कर देंगे ॥ (२६-२८)

श्रीकृष्ण और अर्जुन इसी भांति विचार कर रहे थे उसी समय महाबलवान् पराक्रमी भीमसेन शीघ्र ही भागती हुई सेनाको लौटा कर रणभूमिमें द्रोणाचार्यकी ओर गमन करने लगे ॥ भीमसेनको सेना सहित रणभूमिमें द्रोणाचार्यकी ओर आते देख श्रीकृष्ण अर्जुन से बोले, हे पाण्डुपुत्र अर्जुन ! युद्धमें प्रशंसित भीमसेन क्रुद्ध होकर सोमक और पाण्डवोंकी सेनाके बहुतेरे योद्धाओं के सहित वेगपूर्वक महारथी द्रोणाचार्य और कर्णकी ओर गमन कर रहे हैं। तुम अपनी सेनाके पुरुषोंको धीरज देते हुए महारथी पाञ्चाल योद्धाओं और भीमसेनके सङ्ग मिलकर शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करो ॥ (२९-३२)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततस्तौ पुरुषव्याघ्रावुभौ माधवपाण्डवौ ।
द्रोणकर्णौ समासाद्य धिष्ठितौ रणमूर्धनि ॥ ३३ ॥
सञ्जय उवाच— ततस्तत्पुनरावृत्तं युधिष्ठिरबलं महत् ।
ततो द्रोणश्च कर्णश्च परान्ममृदतुर्युधि ॥ ३४ ॥
स सम्प्रहारस्तुमुलो निशि प्रत्यभवन्महान् ।
यथा सागरयो राजंश्चन्द्रोदयविवृद्धयोः ॥ ३५ ॥
तत उत्सृज्य पाणिभ्यां प्रदीपांस्तव वाहिनी ।
युयुधे पाण्डवैः सार्धमुन्मत्तवदसंकुला ॥ ३६ ॥
रजसा तमसा चैव संवृते भृशदारुणे ।
केवलं नामगोत्रेण प्रायुध्यन्त जयैषिणः ॥ ३७ ॥
अश्रूयन्त हि नामानि श्राव्यमाणानि पार्थिवैः ।
प्रहरद्भिर्महाराज स्वयंवर इवाऽऽहवे ॥ ३८ ॥
निःशब्दमासीत्सहसा पुनः शब्दो महानभूत् ।
क्रुद्धानां युध्यमानानां जीयतां जयतामपि ॥ ३९ ॥

महाराज ! पुरुषसिंह कृष्ण और अर्जुन इसी भांति आपस में बातचीत करके द्रोणाचार्य और कर्णकी ओर देखते हुए युद्धभूमिमें स्थित हुए ॥ सञ्जय बोले, इधर युधिष्ठिरकी महासेना जिस स्थानमें द्रोणाचार्य और कर्ण शत्रुओंका नाश कर रहे थे उसी स्थानमें फिर लौटके उपस्थित हुई ॥ उस समय पूर्णमासी के दिन चंद्रोदयके समय उछालित हुए दो समुद्रके समान कौरव और पाण्डवों की सेनाका आपसमें महाघोर संग्राम होने लगा ॥ (३३–३५)

अनन्तर तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग उन्मत्तकी भांति हाथमें स्थित दीपकोंको फेंक कर निर्भय चित्तसे पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ परन्तु उस समय अन्धकार और धूलि उडनेसे कुछ भी नहीं सूझ पडता था, तब विजयकी इच्छासे वीर लोग केवल अपना नाम और गोत्र सुना कर युद्ध करने लगे ॥ महाराज ! जैसे स्वयंवरके बीच राजाओंके नाम और गोत्र सुन पडते हैं, वैसे ही युद्धभूमिके बीच युद्ध करते हुए योद्धाओंके नाम और गोत्र सुनाई देनेलगे ॥ (३६–३८)

महाराज ! उस समय रणभूमिके बीच थोडे समय तक सन्नाटा छागया, पर फिर जब सेनाके पुरुष क्रुद्ध होकर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए; तब युद्ध में पराजित और जययुक्त दोनों ओरकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्र यत्र स्म दृश्यन्ते प्रदीपाः कुरुसत्तम ।
तत्र तत्र स्म शूरास्ते निपतन्ति पतङ्गवत् ॥ ४० ॥
तथा संयुध्यमानानां विगाढाऽऽसीन्महानिशा ।
पाण्डवानां च राजेन्द्र कौरवाणां च सर्वशः ॥४१॥ [७७८५]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे संकुलयुद्धे द्विसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः॥१७२॥

सञ्जय उवाच— ततः कर्णो रणे दृष्ट्वा पार्षतं परवीरहा ।
आजघानोरसि शरैर्दशभिर्मर्मभेदिभिः ॥ १ ॥
प्रतिविव्याध तं तूर्णं धृष्टद्युम्नोऽपि मारिष ।
दशभिः सायकैर्हृष्टस्तिष्ठतिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥ २ ॥
तावन्योन्यं शरैः संख्ये सञ्छाद्य सुमहारथौ ।
पुनः पूर्णायतोत्सृष्टैर्विव्यधाते परस्परम् ॥ ३ ॥
ततः पञ्चालमुख्यस्य धृष्टद्युम्नस्य संयुगे ।
सारथिं चतुरश्चाऽश्वान्कर्णो विव्याध सायकैः ॥ ४ ॥
कार्मुकप्रवरं चापि प्रचिच्छेद शितैः शरैः ।
सारथिं चाऽस्य भल्लेन रथनीडादपातयत् ॥ ५ ॥

सेनाके बीच महाघोर कोलाहल होने लगा ॥ हे राजेन्द्र ! उस समय जिस स्थान पर दीपकका प्रकाश दिखाई देता था शूरवीर पुरुष पतङ्गकी भांति उसी ओर दौडके युद्ध करने लगते थे ॥ इसी भांति जब कौरव और पाण्डव लोग रण भूमिके बीच युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए,तब क्रमसे वह महाघोर रात्रि अत्यन्त ही भयङ्कर मालूम होने लगी ॥(३९-४१)

एकसौ बाहत्तर अध्याय समाप्त । [७७८५]

द्रोणपर्वमें एकसौ तिहत्तर अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! तिसके अनन्तर शत्रुनाशन कर्णने पृषत्कुल-भूषण धृष्टद्युम्नके वक्षस्थलमें दश मर्मभेदी बाणोंसे प्रहार किया ॥ धृष्टद्युम्नने कर्णके बाणोंसे विद्ध होकर निर्भयताके सहित खडा रह ! खडा रह कहके दश बाणोंसे कर्णको विद्ध किया ॥ इसी भांति वे दोनों महारथी योद्धा कान पर्यन्त धनुष खींचके अपने बाणोंको वर्षा कर एक दूसरेको छिपाने लगे॥(१-३)

अनन्तर सूतपुत्र कर्णने रणभूमिके बीच पाञ्चाल योद्धाओंमें मुख्य धृष्टद्युम्न के चारों घोडोंको मारके गिरा दिया और अनेक बाणोंसे उनके सारथीको विद्ध करके एक तेज बाणसे धृष्टद्युम्नका धनुष काट दिया; अनन्तर कर्णने भल्लास्त्रसे धृष्टद्युम्नके सारथीका वध करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृष्टद्युम्नस्तु विरथो हताश्वो हतसारथिः ।
गृहीत्वा परिघं घोरं कर्णस्याऽश्वानपीपिषत् ॥ ६ ॥
विद्धश्च बहुभिस्तेन शरैराशीविषोपमैः ।
ततो युधिष्ठिरानीकं पद्भ्यामेवाऽन्वपद्यत ॥ ७ ॥
आरुरोह रथं चापि सहदेवस्य मारिष ।
प्रयातुकामः कर्णाय वारितो धर्मसूनुना ॥ ८ ॥
कर्णस्तु सुमहातेजाः सिंहनादविमिश्रितम् ।
धनुःशब्दं महच्चक्रे दध्मौ तारेण चाऽम्बुजम् ॥ ९ ॥
दृष्ट्वा विनिर्जितं युद्धे पार्षतं ते महारथाः ।
अमर्षवशमापन्नाः पञ्चालाः सहसोमकाः ॥ १० ॥
सूतपुत्रवधार्थाय शस्त्राण्यादाय सर्वशः ।
प्रययुः कर्णमुद्दिश्य मृत्युं कृत्वा निवर्तनम् ॥ ११ ॥
कर्णस्याऽपि रथे वाहानन्यान्सूतोऽभ्ययोजयत् ।
शङ्खवर्णान्महावेगान्सैन्धवान्साधुवाहिनः ॥ १२ ॥
लब्धलक्षस्तु राधेयः पञ्चालानां महारथान् ।

उसे रथसे पृथ्वी पर गिरा दिया ॥ तब धृष्टद्युम्नने घोडे और सारथीसे रहित रथसे उतरके एक परिघ चलाकर कर्णके रथके चारों घोडोंको मारके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (४–६)

परन्तु धृष्टद्युम्न कर्णके धनुषसे छूटे हुए विषधर सर्प समान बाणोंसे अत्यन्त ही विद्ध हुए थे, इससे पैदल ही दौडके युधिष्ठिरकी सेनाके बीच प्रवेश करके सहदेवके रथपर जा चढे और फिर कर्णकी ओर जानेकी इच्छा की परन्तु धर्मपुत्र युधिष्ठिरने उसे उस कार्यसे निवृत्त किया ॥ (७–८)

इधर महातेजस्वी कर्णने सिंहनाद करके धनुषटंकार किया और जोरसे अपना शंख बजाया ॥ इस प्रकार कर्णसे धृष्टद्युम्नको पराजित हुए देख कर महारथी सोमक और पांचाल योद्धा अत्यंत क्रुद्ध हुए और मृत्युका भय छोडकर कर्णको मारनेके लिये शस्त्रास्त्र लेकर चारों ओर से कर्णकी ओर दौडे ॥ ९-११

इधर कर्णके सारथीने भी अत्यन्त वेगवान् सिन्धुदेशीय सफेद रङ्गके उत्तम घोडोंको लेकर कर्णके रथमें जोत दिया। महाराज ! जैसे जलसे युक्त बादल पर्वतके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, वैसे ही लक्ष्य वेधनेवालोंमें श्रेष्ठ महावीर कर्ण पाञ्चाल सेनाके महारथियोंको अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यपीडयदायस्तः शरैर्मेघ इवाऽचलम् ॥ १३ ॥
सा पीड्यमाना कर्णेन पञ्चालानां महाचमूः ।
सम्प्राद्रवत्सुसन्त्रस्ता सिंहेनेवाऽर्दिता मृगी ॥ १४ ॥
पतितास्तुरगेभ्यश्च गजेभ्यश्च महीतले ।
रथेभ्यश्च नरास्तूर्णमदृश्यन्त ततस्ततः ॥ १५ ॥
धावमानस्य योधस्य क्षुरप्रैः स महामृधे ।
बाहू चिच्छेद वै कर्णः शिरश्चैव सकुण्डलम् ॥ १६ ॥
ऊरू चिच्छेद चाऽन्यस्य गजस्थस्य विशाम्पते ।
वाजिपृष्ठगतस्याऽपि भूयिष्ठस्य च मारिष ॥ १७ ॥
नाऽज्ञासिषुर्धावमाना बहवश्च महारथाः ।
सञ्छिन्नान्यात्मगात्राणि वाहनानि च संयुगे ॥ १८ ॥
ते वध्यमानाः समरे पञ्चालाः सृञ्जयैः सह ।
तृणप्रस्पन्दनाच्चाऽपि सूतपुत्रं स्म मेनिरे ॥ १९ ॥
अपि स्वं समरे योधं धावमानं विचेतसम् ।

बाणोंसे पीडित करने लगे ॥ पाञ्चाल योद्धा कर्णके बाणोंसे पीडित होकर इस प्रकार रणभूमिमें चारों ओर भागने लगे, जैसे सिंहसे भयभीत होके हरिणी चारों ओर भागने लगती है ॥ (१२-१४)

उस समय मैंने देखा, कि सेनाके पुरुष कर्णके बाणोंकी चोटसे मरकर हाथी, घोडे और रथोंके ऊपरसे लगातार पृथ्वीमें गिरने लगे ॥ उस महाघोर संग्रामके समय जो सब घुडसवार गजपति पैदल गमन करनेवाले योद्धा लोग युद्धभूमिसे भाग रहे थे, कर्णने क्षुरप्र अस्त्रसे उन लोगोंके बीचसे कितने ही योद्धाओंके कुण्डल भूषित सिर भुजा और चरणोंको काट काटके पृथ्वी में गिरा दिया॥ उस समय कर्णने कितनेही गजसवारों की तथा घुडसवारोंकी दोनों जघाएं काट डालीं॥ अधिक क्या कहूं, उस समय बहूतेरे महारथी योद्धा भी युद्धभूमिके बीच कर्णके संमुखसे भागने लगे ॥ परन्तु भागनेके समय कब उनके वाहन और शरीर कटके गिर पडे वह उन लोगोंको मालूम भी नहीं हुआ ॥ (१५-१८)

महाराज ! कर्णके बाणोंसे पीडित होकर पांचाल और सृंजय योद्धालोग इस भांति मोहित होगये थे, कि तृण हिलने परभी कर्णको आया हुआ समझने लगे ॥ और अपनी ओरके चेतरहित योद्धा को भी भागते देख कर्ण आता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णमेवाऽभ्यमन्यन्त ततो भीता द्रवन्ति ते ॥ २० ॥
तान्यनीकानि भग्नानि द्रवमाणानि भारत ।
अभ्यद्रवद् द्रुतं कर्णः पृष्ठतो विकिरञ्छरान् ॥ २१ ॥
अवेक्ष्यमाणास्त्वन्योन्यं सुसम्मूढा विचेतसः ।
नाऽशक्नुवन्नवस्थातुं कार्य्यमाना महात्मना ॥ २२ ॥
कर्णेनाऽभ्याहता राजन्पञ्चालाः परमेषुभिः ।
द्रोणेन च दिशः सर्वा वीक्षमाणाः प्रदुद्रुवुः ॥ २३ ॥
ततो युधिष्ठिरो राजा स्वसैन्यं प्रेक्ष्य विद्रुतम् ।
अपयाने मनः कृत्वा फाल्गुनं वाक्यमब्रवीत् ॥ २४ ॥
पश्य कर्णं महेष्वासं धनुष्पाणिमवस्थितम् ।
निशीथे दारुणे काले तपन्तमिव भास्करम् ॥ २५ ॥
कर्णसायकनुन्नानां क्रोशतामेष निःस्वनः ।
अनिशं श्रूयते पार्थ त्वद्बन्धूनामनाथवत् ॥ २६ ॥
एषा विसृजतश्चाऽस्य सन्दधानस्य चाऽऽशुगान् ।
पश्यामि नाऽन्तरं पार्थ क्षपयिष्यति नो ध्रुवम् ॥ २७ ॥

है ऐसा जानके भयभीत होकर वेग पूर्वक भागने लगे ॥ परन्तु कर्ण उन भागते हुए योद्धाओंके ऊपर बाण चलाते हुए उनके पीछे दौडे ॥ १९-२१

महात्मा कर्णके बाणोंसे पीडित और मोहित होकर शत्रुसेनाके योद्धा लोग अपने कर्त्तव्य कर्मके विषयमें कुछ भी निश्चय न कर सके बल्कि आपसमें एक दूसरेकी ओर देखने लगे और युद्धभूमि में किसी भांति भी खडे होनेमें समर्थ न हुए । इसी प्रकार पाञ्चाल योद्धालोग कर्ण और द्रोणाचार्यके अस्त्रोंसे पीडित होकर चारों ओर देखते हुए वेगपूर्वक भागने लगे ॥ (२२–२३)

तिसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाके योद्धाओंको भागते देख स्वयं भी रणभूमिसे भागनेकी इच्छा करके अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन ! यह देखो धनुर्धारियोंमें अग्रणी पराक्रमी कर्ण हाथमें धनुष ग्रहण करके अपने बाणोंसे इस महाघोर रात्रिके समय मेरी सेनाके पुरुषोंको दूसरे सूर्यकी भांति भस्म कर रहे हैं ॥ तुम्हारे आत्मीय बन्धु बान्धव कर्णके बाणोंसे क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होकर अनाथकी भांति आर्त्तनादके सहित महाघोर कोलाहल मचा रहे हैं । और यह सूतपुत्र कर्ण जिस प्रकार बाण साधता धनुषपर रखता और चलाता है,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदत्राऽनन्तरं कार्यं प्राप्तकालं च पश्यसि ।
कर्णस्य वधसंयुक्तं तत्कुरुष्व धनञ्जय ॥ २८ ॥
एवमुक्तो महाराज पार्थः कृष्णमथाऽब्रवीत् ।
भीतः कुन्तीसुतो राजा राधेयस्याऽद्य विक्रमात्॥२९॥
एवङ्गते प्राप्तकालं कर्णानीके पुनः पुनः ।
भवान्व्यवस्यतु क्षिप्रं द्रवते हि बरूथिनी ॥ ३० ॥
द्रोणसायकनुन्नानां भग्नानां मधुसूदन ।
कर्णेन त्रास्यमानानामवस्थानं न विद्यते ॥ ३१ ॥
पश्यामि च तथा कर्णं विचरन्तमभीतवत् ।
द्रवमाणान्रथोदारान्किरन्तं निशितैः शरैः ॥ ३२ ॥
नैनं शक्ष्यामि संसोढुं चरन्तं रणमूर्धनि ।
प्रत्यक्षं वृष्णिशार्दूल पादस्पर्शमिवोरगः ॥ ३३ ॥
स भवांस्तत्र यात्वाशु यत्र कर्णो महारथः ।
अहमेनं हनिष्यामि मां वैष मधुसूदन ॥ ३४ ॥

उससे उसका तनिक भी छिद्र नहीं दीख पडता है; इससे कर्ण अवश्यही हम लोगोंका नाश कर देगा ॥ इस उपस्थित समयमें कर्ण वधके विषयमें जिस कर्त्तव्य कर्मको करना उचित होवे उसे विचारके शीघ्र ही करो ॥ (२४-२८)

महाराज ! अर्जुन राजा युधिष्ठिरके वचनको सुनकर कृष्णसे बोले, हे कृष्ण ! आज धर्मपुत्र युधिष्ठिर कर्णके पराक्रमका प्रभाव देखकर भयभीत हुए हैं; विशेष करके जब कर्णकी सेनाके पुरुष धीरे धीरे महाप्रचण्ड होके पराक्रम प्रकाशित कर रहे हैं, तब उन लोगोंके विषयमें जो कुछ कार्य करना होवे शीघ्र ही उसका अनुष्ठान करो । क्यों कि हमारी सेनाके योद्धा लोग रणभूमिमें पीठ दिखाके भाग रहे हैं ॥ (२९-३०)

यह देखो सेनाके पुरुष अकेले द्रोणाचार्यके बाणोंसे ही क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होकर युद्धभूमिसे विचलित होरहे हैं; उस पर कर्णके अस्त्रोंसे भयभीत होकर किसी प्रकार भी रणभूमिके बीच नहीं ठहर सकते हैं ॥ हे वृष्णिकुलभूषण कृष्ण ! जैसे सर्प किसीके पांवकी चोटको नहीं सह सकता वैसे ही हम लोगोंके सम्मुखमें ही कर्णके ऐसे व्यवहारको मैं नहीं सह सकता हूं ॥ हे कृष्ण ! इस लिये अब तुम मेरे रथको जहां कर्ण है उस स्थानोंमें लेचलो । आज मैं उसको मारूंगा अथवा वह मुझे मारेंगे॥ (३१-३४)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीवासुदेव उवाच-पश्यामि कर्णं कौन्तय देवराजमिवाऽऽहवे ।
विचरन्तं नरव्याघ्रमतिमानुषविक्रमम् ॥ ३५ ॥
नैतस्याऽन्योऽस्ति संग्रामे प्रत्युद्याता धनञ्जय ।
ऋते त्वां पुरुषव्याघ्र राक्षसाद्वा घटोत्कचात् ॥ ३६ ॥
न तु तावदहं मन्ये प्राप्तकालं तवाऽनघ ।
समागमं महाबाहो सूतपुत्रेण संयुगे ॥ ३७ ॥
दीप्यमाना महोल्केव तिष्ठत्यस्य हि वासवी ।
त्वदर्थं हि महाबाहो सूतपुत्रेण संयुगे ॥ ३८ ॥
रक्ष्यते शक्तिरेषा हि रौद्रं रूपं बिभर्ति च ।
घटोत्कचस्तु राधेयं प्रत्युद्यातु महाबलः ॥ ३९ ॥
स हि भीमेन बलिना जातः सुरपराक्रमः ।
तस्मिन्नस्त्राणि दिव्यानि राक्षसान्यासुराणि च ॥ ४० ॥
सततं चाऽनुरक्तो वो हितैषी च घटोत्कचः ।
विजेष्यति रणे कर्णमिति मे नाऽत्र संशयः ॥ ४१ ॥

अर्जुनके ऐसे वचनोंको सुनके श्रीकृष्ण बोले, हे कुन्तीपुत्र ! आज मैं मनुष्योंसे अधिक पराक्रमशाली पुरुषसिंह कर्णको देवराज इन्द्रकी भांति युद्धभूमिके बीच घूमते हुए देख रहा हूं ॥ हे पुरुषश्रेष्ठ ! तुम और राक्षस घटोत्कच इन दो पुरुषोंको छोडके और कोई भी ऐसा पुरुष वर्त्तमान नहीं है जो इस समय युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिके बीच सूतपुत्र कर्णके विरुद्ध गमन कर सके ॥ परन्तु जबतक कर्णके समीप महालुकको भांति प्रकाशमान इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्ति विद्यमान है तबतक मैं तुम्हें कर्णके सङ्ग द्वैरथ युद्धमें प्रवृत्त होना उत्तम नहीं समझता हूं; क्योंकि कर्ण उस अमोघ शक्तिको तुम्हारे वधके ही वास्ते रक्खे हुआ है और उस ही शक्तिके प्रभावसे उसने अत्यन्त ही भयङ्कर मूर्त्ति धारण की है । (३५-३९)

इससे महाबलवान् राक्षस घटोत्कच ही इस समय राधापुत्र कर्णके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते उसके समीप गमन करे, घटोत्कच महाबली भीमसेनके वीर्यसे उत्पन्न हुआ है और स्वयं भी महापराक्रमी है; और दिव्य आसुरी तथा राक्षसी नाना प्रकारके अस्त्रशस्त्रोंकी विद्यामें भी राक्षस घटोत्कच निपुण है विशेष करके घटोत्कच तुम लोगोंके ऊपर अनुरक्त है, और तुम्हारे हितकी इच्छा भी करता है इससे वह जो युद्धभूमिमें कर्णको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवमुक्तो महाबाहुः पार्थः पुष्करलोचनः ।
आजुहावाऽथ तद्रक्षस्तचाऽऽसीत्प्रादुरग्रतः ॥ ४२ ॥
कवची सशरः खड्गी सधन्वा च विशाम्पते ।
अभिवाद्य ततः कृष्णं पाण्डवं च धनञ्जयम् ॥
अब्रवीच्च तदा कृष्णमयमस्म्यनुशाधि माम् ॥ ४३ ॥
ततस्तं मेघसङ्काशं दीप्तास्यं दीप्तकुण्डलम् ।
अभ्यभाषत हैडिम्बं दाशार्हः प्रहसन्निव ॥ ४४ ॥
वासुदेव उवाच—घटोत्कच विजानीहि यत्त्वां वक्ष्यामि पुत्रक ।
प्राप्तो विक्रमकालोऽयं तव नाऽन्यस्य कस्यचित्॥४५ ॥
स भवान्मज्जमानानां बन्धूनां त्वं प्लवो भव ।
विविधानि तवाऽस्त्राणि सन्ति माया च राक्षसी॥४६॥
पश्य कर्णेन हैडिम्बे पाण्डवानामनीकिनी ।
काल्यमाना यथा गावः पालेन रणमूर्धनि ॥ ४७ ॥
एष कर्णो महेष्वासो मतिमान्दृढविक्रमः ।

पराजित करेगा उसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं मालूम होता है॥ (३९-४१)

सञ्जय बोले, महाराज! कमलनेत्रवाले महाबाहु अर्जुनने श्रीकृष्णके ऐसे वचनको सुनके घटोत्कचको आह्वान किया। आवाहन करते ही राक्षस घटोत्कच धनुष बाण और तलवार ग्रहण करके कृष्ण अर्जुनके समीप जाके उन दोनों महात्माओंको प्रणाम करके बोला, यही मैं उपस्थित हूं, कहिये क्या आज्ञा है॥ (४२-४३)

तिसके अनन्तर दाशार्ह कृष्ण उज्ज्वल कुण्डलोंसे प्रकाशमान मेघवर्ण शरीरवाले राक्षस घटोत्कचसे हंसके यह वचन बोले, हे पुत्र घटोत्कच! मैं जो कुछ वचन कहता हूं उसे तुम भली भांतिसे सुनो। इस समय किसीके बल पराक्रमसे कार्य सिद्ध न होवेगा; इससे अब तुम्हारे पराक्रमको प्रकाशित करनेका समय उपस्थित हुआ है॥ तुममें अनेक प्रकारके अस्त्रशस्त्र और नाना भांतिकी राक्षसी माया प्रतिष्ठित हैं; इससे तुम डूबते हुए बन्धु बान्धवोंके निमित्त नौकारूपी होकर सबका उद्धार करो॥ (४४-४६)

यह देखो, युद्धभूमिके बीच कर्णके अस्त्रोंसे पीडित होकर पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष इस प्रकार भयभीत होगये हैं जैसे गोपालककी लाठीके प्रहारके भयसे गौवोंका समूह भयभीत होकर चारों ओर से दौडते हुए एक स्थानमें सिमिटके स्थित होजाता है॥ यह महाधनुर्द्धारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डवानामनीकेषु निहन्ति क्षत्रियर्षभान् ॥ ४८ ॥
किरन्तः शरवर्षाणि महान्ति दृढधन्विनः ।
न शक्नुवन्त्यवस्थातुं पीड्यमानाः शरार्चिषा ॥ ४९ ॥
निशीथे सूतपुत्रेण शरवर्षेण पीडिताः ।
एते द्रवन्ति पञ्चालाः सिंहेनेवार्दिता मृगाः ॥ ५० ॥
एतस्यैवं प्रवृद्धस्य सूतपुत्रस्य संयुगे ।
निषेद्धा विद्यते नाऽन्यस्त्वामृते भीमविक्रम ॥ ५१ ॥
स त्वं कुरु महाबाहो कर्म युक्तमिहाऽऽत्मनः ।
मातुलानां पितॄणां च तेजसोऽस्त्रबलस्य च ॥ ५२ ॥
एतदर्थं हि हैडिम्बे पुत्रानिच्छन्ति मानवाः ।
कथं नस्तारयेदुःखात्स त्वं तारय बान्धवान् ॥ ५३ ॥
इच्छन्ति पितरः पुत्रान्स्वार्थहेतोर्घटोत्कच ।
इह लोकात्परे लोके तारयिष्यन्ति ये हिताः ॥ ५४ ॥

दृढ पराक्रमी बुद्धिमान् कर्ण पाण्डवोंकी सेनाके मुख्य मुख्य योद्धाओंका वध कर रहा है ॥ दृढ धनुर्द्धारी क्षत्रिय योद्धा लोग लगातार बाणोंको वर्षा रहे हैं तौ भी कर्णके बाणरूपी अग्निसे पीडित होकर किसी प्रकारसे भी युद्धभूमिमें नहीं ठहर सकते हैं ॥ (४७–४९)

यह देखो इस मध्यरात्रिके समय पाञ्चाल सेनाके सम्पूर्ण पुरुष कर्णके बाणोंसे पीडित होकर इस प्रकार युद्धभूमिसे भाग रहे हैं, जैसे सिंहके भयसे हरिनोंके समूह चारों ओर भाग जाते हैं ॥ हे भयङ्कर पराक्रम प्रकाशित करनेवाले भीमपुत्र महाबाहु घटोत्कच ! इस समय सूतपुत्र कर्ण जिस प्रकार हम लोगोंकी सेनाकी ओर दौड रहा है उससे तुम्हें छोडके और कोई पुरुष भी ऐसा विद्यमान नहीं है जो सूतपुत्र कर्णको रणभूमिमें निवारण कर सके ॥ इससे तुम पितृकुल और अपने अस्त्र बल तथा पराक्रमके अनुसार कार्य करनेमें प्रवृत्त हो जाओ ॥ (५०–५२)

हे हिडम्बापुत्र घटोत्कच ! जिस प्रकार हो सके तुम हम लोगोंको इस विपदसे रक्षा करो, इसी समयके वास्ते मनुष्य लोग पुत्रकी इच्छा करते हैं, इससे तुम अपने बन्धु बान्धवोंको इस विपदसे उबारो ॥ हे घटोत्कच ! पितरलोक अपने स्वार्थके लिये ही पुत्रकी इच्छा करते हैं, क्योंकि पुत्रलोग इस लोकमें रहकर ही पितरोंके हितकी इच्छासे जो कर्म करते रहते हैं इससे परलोकमें पितर दुःखसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव ह्यत्र बलं भीमं मायाश्च तव दुस्तराः।
संग्रामे युध्यमानस्य सततं भीमनन्दन ॥ ५५ ॥
पाण्डवानां प्रभग्नानां कर्णेन निशि सायकैः।
मज्जतां धार्तराष्ट्रेषु भव पारं परन्तप ॥ ५६ ॥
रात्रौ हि राक्षसा भूयो भवन्त्यमितविक्रमाः।
बलवन्तः सुदुर्धर्षाः शूरा विक्रान्तचारिणः ॥ ५७ ॥
जहि कर्णं महेष्वासं निशीथे मायया रणे।
पार्था द्रोणं वधिष्यन्ति धृष्टद्युम्नपुरोगमाः ॥ ५८ ॥
सञ्जय उवाच— केशवस्य वचः श्रुत्वा बीभत्सुरपि राक्षसम्।
अभ्यभाषत कौरव्य घटोत्कचमरिन्दमम् ॥ ५९ ॥
घटोत्कच भवांश्चैव दीर्घबाहुश्च सात्यकिः।
मतौ मे सर्वसैन्येषु भीमसेनश्च पाण्डवः ॥ ६० ॥
तद्भवान्यातु कर्णेन द्वैरथं युध्यतां निशि।
सात्यकिः पृष्ठगोपस्ते भविष्यति महारथः ॥ ६१ ॥
जहि कर्णं रणे शूरं सात्वतेन सहायवान्।

मुक्त होते हैं ॥ हे भीमपुत्र ! यदि तुम युद्ध करते रहो तो कोई पुरुष भी तुम्हारी माया और तुम्हारे भयङ्कर अस्त्रशस्त्रोंसे परित्राण नहीं पा सकेगा ॥ (५३-५५)

हे शत्रुनाशन! तुम इस रात्रिके समय धार्त्तराष्ट्र सेनारूपी समुद्रमें डूबते हुए पाण्डवी सेनाके वास्ते तटस्वरूप होके अपने आत्मीय पुरुषोंकी रक्षा करो ॥ क्योंकि रात्रिके समय बलवान् राक्षस लोग ही अत्यन्त पराक्रमी शूर और प्रतापी हुआ करते हैं ॥ इससे तुम इस समय अपनी मायाके प्रभावसे युद्धभूमिमें स्थित राधापुत्र कर्णका नाश करो। ऐसा होनेसे ही धृष्टद्युम्नको आगे करके पाण्डव लोग द्रोणाचार्यका वध कर सकेंगे ॥ (५६-५८)

सञ्जय बोले महाराज ! श्रीकृष्णके वचनोंको सुनकर अर्जुन भी उस समय राक्षस घटोत्कचसे बोले, हे घटोत्कच ! हम लोगोंकी इस सेनाके बीच भीमसेन महाबाहु सात्यकि और तुम—ये ही तीन वीर मेरे मनमें श्रेष्ठ हो, इससे तुम इस रात्रिके समय कर्णके सङ्ग द्वैरथयुद्धमें प्रवृत्त हो जाओ; इस युद्धमें महारथी सात्यकि तुम्हारे पृष्ठरक्षक बनेंगे ॥ पहिले जैसे देवराज इन्द्रने स्वामीकार्त्तिककी सहायतासे तारकासुरका वध किया था, वैसे ही तुम भी सात्यकिकी सहायतासे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथेन्द्रस्तारकं पूर्वं स्कन्देन सह जघ्निवान् ॥ ६२ ॥
घटोत्कच उवाच–अलमेवाऽस्ति कर्णाय द्रोणायाऽऽलं च भारत ।
अन्येषां क्षत्रियाणां च कृतास्त्राणां महात्मनाम् ॥६३॥
अद्य दास्यामि संग्रामं सूतपुत्राय तं निशि ।
यं जनाः सम्प्रवक्ष्यन्ति यावद्भूमिर्धरिष्यति ॥ ६४ ॥
न चाऽत्र शूरान्मोक्ष्यामि न भीतान्न कृताञ्जलीन् ।
सर्वानेव वधिष्यामि राक्षसं धर्ममास्थितः ॥ ६५ ॥
सञ्जय उवाच— एवमुक्त्वा महाबाहुर्हैडिम्बिर्वरवीरहा ।
अभ्ययात्तुमुले कर्ण तव सैन्यं विभीषयन् ॥ ६६ ॥
तमापतन्तं संक्रुद्धं दीप्तास्यं दीप्तमूर्धजम् ।
प्रहसन्पुरुषव्याघ्रः प्रतिजग्राह सूतजः ॥ ६७ ॥
तयोः समभवद्युद्धं कर्णराक्षसयोर्मृधे ।
गर्जतो राजशार्दूल शक्रप्रह्लादयोरिव ॥ ६८ ॥ [७८५३]

इति श्रीमहा० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे घटोत्कचप्रोत्साहने त्रिसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः॥१७३॥

युद्धमें शूर कर्णका वध करो ॥ (५९–६२)

कृष्ण अर्जुनके वचनोंको सुनके घटोत्कच कहने लगा, हे पुरुषश्रेष्ठ ! महात्मा पुरुषो ! युद्धभूमिके बीच द्रोणाचार्य कर्ण अथवा चाहे और कोई कृतास्त्र महात्मा क्षत्रिय पुरुषही क्यों न होवें मैं इन सम्पूर्ण योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें समर्थ हूं ॥ आज इस रात्रिके समय मैं सुतपुत्र कर्णके सङ्ग ऐसा युद्ध करूंगा, कि मनुष्य लोग पृथ्वीके बीच उस संग्रामको बहुत दिनोंतक गाया करेंगे ॥ इस युद्धमें मैं भयभीत वा हाथ जोडके शरणमें आये हुए किसी पुरुषको भी नहीं छोडूंगा, वरन राक्षसधर्म के अनुसार उन सम्पूर्ण पुरुषोंका वध करूंगा । ६३-६५

सञ्जय बोले, महाराज ! शत्रुओंको नाश करनेवाला हिडम्बापुत्र घटोत्कच ऐसा वचन कहके तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको भयभीत करके महाघोर तुमुल संग्राम करते हुए युद्धभूमिके बीच स्थित कर्णकी ओर दौडा ॥ धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी सूतपुत्र कर्णने प्रकाशमान क्रोधी सर्पकी भांति घटोत्कचको क्रोधपूर्वक अपनी ओर आते देख अपने बाणजाल से उसे आगे बढनेसे रोक दिया ॥ हे राजेद्र ! तिसके अनन्तर सिंहनाद शब्द के सहित गर्जते हुए कर्ण और राक्षस घटोत्कचका इन्द्र और प्रह्लादकी भांति महाघोर संग्राम होने लगा ॥ (६६–६८)

एकसौ तिहत्तर अध्याय समाप्त । [७८५३]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— दृष्ट्वा घटोत्कचं राजन्सूतपुत्ररथं प्रति ।
आयान्तं तु तथा युक्तं जिघांसुं कर्णमाहवे ॥ १ ॥
अब्रवीत्तत्र पुत्रस्ते दुःशासनमिदं वचः ।
एतद्रक्षो रणे तूर्णं दृष्ट्वा कर्णस्य विक्रमम् ॥ २ ॥
अभियाति द्रुतं कर्णं तद्वारय महारथम् ।
वृतः सैन्येन महता याहि यत्र महाबलः ॥ ३ ॥
कर्णो वैकर्तनो युद्धे राक्षसेन युयुत्सति ।
रक्ष कर्णं रणे यत्तो वृतः सैन्येन मानद ॥ ४ ॥
मा कर्णं राक्षसो घोरः प्रमादान्नाशयिष्यति ।
एतस्मिन्नन्तरे राजञ्जटासुरसुतो बली ॥ ५ ॥
दुर्योधनमुपागम्य प्राह प्रहरतां वरः ।
दुर्योधन तवाऽमित्रान्प्रख्यातान्युद्धदुर्मदान् ॥ ६ ॥
पाण्डवान्हन्तुमिच्छामि त्वयाऽऽज्ञप्तः सहानुगान् ।
जटासुरो मम पिता रक्षसां ग्रामणीः पुरा ॥ ७ ॥
प्रयुज्य कर्म रक्षोघ्नं क्षुद्रैः पार्थैर्निपातितः ।

द्रोणपर्वमें एकसौ चौहत्तर अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज तुम्हारे पुत्र दुर्योधन युद्धभूमिके बीच क्रोधपूर्वक शीघ्रताके सहित घटोत्कचको सूतपुत्र कर्णकी ओर आते देख अपने भाई दुःशासनसे बोले,—हे भ्राता ! वह राक्षस कर्णके वेग और पराक्रमको देखकर शीघ्रताके सहित उनकी ओर दौड रहा है; इससे तुम इस महारथी घटोत्कचको निवारण करो । महारथ सूतपुत्र कर्ण इस राक्षसके सङ्ग युद्ध करनेकी इच्छासे रणभूमिके बीच जिस स्थलपर गमन कर रहे हैं; तुम उस ही स्थानपर अपनी बडी सेनाके सहित गमन करो । हे वीर ! तुम सेनाके सहित यत्नवान् होकर कर्णकी रक्षा करो, जिससे यह भयानक शरीर वाला राक्षस असावधानीमें कर्णका वध न कर सके, तुम युद्धभूमिमें वैसा ही यत्न करना । (१–५)

महाराज ! जब दुर्योधनने इस प्रकार दुःशासनको आज्ञा दी, उस ही समय महाबलवान् जटासुरका पुत्र अलम्बुष उनके निकट आके यह वचन बोला, महाराज ! मैं तुम्हारी आज्ञासे तुम्हारे शत्रु युद्धदुर्मद पाण्डवोंको अनुयायियोंके सहित नाश करनेकी इच्छा करता हूं । क्योंकि इन नीच स्वभाववाले पाण्डवोंने पहिले मेरे पिता जटासुरका वध किया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्याऽपचितिमिच्छामि शत्रुशोणितपूजया ॥
शत्रुमांसैश्च राजेन्द्र मामनुज्ञातुमर्हसि ॥ ८ ॥
तमब्रवीत्ततो राजा प्रीयमाणः पुनः पुनः ।
द्रोणकर्णादिभिः सार्धं पर्याप्तोऽहं द्विषद्वधे ॥ ९ ॥
त्वं तु गच्छ मयाऽऽज्ञप्तो जहि युद्धे घटोत्कचम् ।
राक्षसं क्रूरकर्माणं रक्षोमानुषसम्भवम् ॥ १० ॥
पाण्डवानां हितं नित्यं हस्त्यश्वरथघातिनम् ।
वैहायसगतं युद्धे प्रेषयेर्यमसादनम् ॥ ११ ॥
तथेत्युक्त्वा महाकायः समाहूय घटोत्कचम् ।
जटासुरिर्भैमसेनिं नानाशस्त्रैरवाकिरत् ॥ १२ ॥
अलम्बुषं च कर्णं च कुरुसैन्यं च दुस्तरम् ।
हैडिम्बिः प्रममाथैको महावातोऽम्बुदानिव ॥ १३ ॥
ततो मायाबलं दृष्ट्वा रक्षस्तूर्णमलम्बुषः ।
घटोत्कचं शरव्रातैर्नानालिङ्गैः समार्पयत् ॥ १४ ॥

है; इससे मैं भी तुम्हारी आज्ञासे उन लोगोंका नाश करके शत्रुओंके रक्त और मांससे पिताके ऋणसे मुक्त होनेकी इच्छा करता हूं तुम मुझे आज्ञा दो। (५-८)

कुरुराज दुर्योधन बार बार उस राक्षसकी प्रार्थना सुन कर यह वचन बोले, मैं द्रोणाचार्य और कर्णके सङ्ग मिलकर अपने शत्रुओंको नाश करनेमें समर्थ होऊंगा; परन्तु तुम मनुष्यके वीर्य और राक्षसीके गर्भसे उत्पन्न हुए कठिन कर्म करनेवाले राक्षस घटोत्कचका वध करो। यह दुष्टात्मा युद्धभूमिके बीच सदा पाण्डवोंके हितके लिये मेरी सेनाके हाथी घोडे और रथियोंका नाश कर रहा है; इससे तुम पहिले आकाश चारी घटोत्कच राक्षसका वध करो ॥ (९—११)

कुरुराज दुर्योधनके ऐसे वचनको सुनकर विशाल शरीर वाला जटासुर पुत्र अलम्बुषने कहा "ऐसा ही होगा।" ऐसा कहके वह राक्षस भीमसेन-पुत्र घटोत्कचको आवाहन करके उसके ऊपर नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा करने लगा ॥ महाराज ! जैसे प्रचण्ड वायु बादलोंके समूहको छिन्न भिन्न कर देता है, वैसे ही घटोत्कच राक्षस अकेले ही राक्षस अलम्बुष, कर्ण और कुरुसेनाके पुरुषोंको अपने अस्त्रोंसे पीडित करने लगा ॥ (१२-१३)

अनन्तर महाबलवान् अलम्बुष घटोत्कचको मायाबलसे युक्त देख नाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्ध्वा च बहुभिर्बाणैर्भैमसेनिं महाबलः ।
व्यद्रावयच्छरव्रातैः पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ १५ ॥
तेन विद्राव्यमाणानि पाण्डुसैन्यानि भारत ।
निशीथे विप्रकीर्यन्ते वातनुन्ना घना इव ॥ १६ ॥
घटोत्कचशरैर्नुन्ना तथैव तव वाहिनी ।
निशीथे प्राद्रवद्राजन्नुत्सृज्योल्काः सहस्रशः ॥ १७ ॥
अलम्बुषस्ततः क्रुद्धो भैमसेनिं महामृधे ।
आजघ्ने दशभिर्बाणैस्तोत्रैरिव महाद्विपम् ॥ १८ ॥
तिलशस्तस्य संवाहं सूतं सर्वायुधानि च ।
घटोत्कचः प्रचिच्छेद प्रणदंश्चाऽतिदारुणम् ॥ १९ ॥
ततः कर्णं शरव्रातैः कुरूनन्यान्सहस्रशः ।
अलम्बुषं चाऽभ्यवर्षन्मेघो मेरुमिवाऽचलम् ॥ २० ॥
ततः संचुक्षुभे सैन्यं कुरूणां राक्षसार्दितम् ।
उपर्युपरि चाऽन्योन्यं चतुरङ्गं ममर्द ह ॥ २१ ॥

प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसे उसे पीडित करने लगा ।। इसी प्रकार घटोत्कचको अनेक बाणोंसे विद्ध करके फिर अनेक बाणोंसे पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंको तितर बितर करने लगा । उस रात्रिके समय पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष अलम्बुषके बाणोंसे पीडित होकर इस प्रकार चारों ओर तितर बितर होने लगे, जैसे वायुके वेगसे बादल छिन्न भिन्न होजाते हैं । इसी समय कुरुसेनाके योद्धा लोग भी घटोत्कचके बाणोंसे पीडित होकर हाथमें स्थित सहस्रों लुकोंको इधर उधर फेंक कर रणभूमिसे भागने लगे ।१४-१७

उस महाघोर संग्रामके समय अलम्बुष ने दश तीक्ष्ण बाणोंसे घटोत्कचके शरीरमें इस प्रकारसे प्रहार किया जैसे अंकुशसे हाथीको पीडित करते हैं । अनन्तर अलम्बुषके पराक्रमको देखकर घटोत्कच राक्षस उसके रथ, सारथी और अस्त्रोंको तिलके परिमाणके अनुसार काटके भयानक शब्दसे सिंहनाद करने लगा ।। तिसके अनन्तर घटोत्कच राक्षस ने अलम्बुष कर्ण और दूसरे कुरुसेनाके सहस्रों योद्धाओंके ऊपर इस प्रकार अपने अस्त्र-शस्त्रोंको वर्षाया, जैसे बादल सुमेरु पर्वत के ऊपर जल की वर्षा करते हैं ।। (१८-२०)

महाराज ! उस समय तुम्हारी चतुरङ्गिणी सेना उस राक्षसके बाणोंसे ऐसी पीडित हुई कि बहुतेरे पुरुष अपनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाटासुरिर्महाराज विरथो हतसारथिः ।
घटोत्कचं रणे क्रुद्धो मुष्टिनाऽभ्याहनद् दृढम् ॥ २२ ॥
मुष्टिनाऽभ्याहतस्तेन प्रचचाल घटोत्कचः ।
क्षितिकम्पे यथा शैलः सवृक्षस्तृणगुल्मवान् ॥ २३ ॥
ततः सपरिघाभेन द्विट्सङ्घघ्नेन बाहुना ।
जाटासुरिं भैमसेनिरवधीन्मुष्टिना भृशम् ॥ २४ ॥
तं प्रमथ्य ततः क्रुद्धस्तूर्णं हैडिम्बिराक्षिपत् ।
दोर्भ्यामिन्द्रध्वजाभाभ्यां निष्पिपेष च भूतले ॥२५॥
जाटासुरिर्मोक्षयित्वा आत्मानं च घटोत्कचात् ।
पुनरुत्थाय वेगेन घटोत्कचमुपाद्रवत् ॥ २६ ॥
अलम्बुषोऽपि विक्षिप्य समुत्क्षिप्य च राक्षसम् ।
घटोत्कचं रणे रोषान्निष्पिपेष च भूतले ॥ २७ ॥
तयोः समभवद्युद्धं गर्जतोरतिकाययोः ।
घटोत्कचालम्बुषयोस्तुमुलं लोमहर्षणम् ॥ २८ ॥
विशेषयन्तावन्योन्यं मायाभिरतिमायिनौ ।

सेनाके पुरुषोंका ही मर्द्दन करते हुए अपने वाहनोंको दौडा कर युद्धभूमिसे भागने लगे । तुम्हारी सेनाके पुरुषोंको भागते देख रथ सारथी और घोडोंसे रहित जटासुरपुत्र अलम्बुषने घटोत्कचके शरीरमें मुष्टिकासे प्रहार किया । भूकम्प होनेसे जैसे वृक्ष और लताके सहित पर्वत हिलने लगता है वैसे ही घटोत्कच अलम्बुषके मुक्केसे विचलित हुआ ॥ (२१–२३)

अनन्तर घटोत्कचने परिघके समान अपनी विशालभुजा उठाकर एक भयङ्कर मुक्केसे अलम्बुषके शरीरमें प्रहार किया; और फिर क्रोध पूर्वक उसे पीडित करके इन्द्रध्वजाकी भांति अपनी लम्बी भुजाओंसे उसे उठा कर पृथ्वी पर दे मारा ॥ (२४–२५)

अनन्तर बलवान् अलम्बुष किसी प्रकार घटोत्कचके हाथसे छूटकर वेगपूर्वक उसकी ओर दौडा और क्रोधपूर्वक उसे उठाके पृथ्वीपर पटक दिया; फिर उसके शरीरमें प्रहार करनेलगा; महाराज! इसी भांति बडे शरीर वाले राक्षस घटोत्कच और अलम्बुषका रोएं को खडा करनेवाला महाभयङ्कर तुमुल संग्राम होने लगा ॥ बलि और इन्द्रके समान महाबलवान् राक्षसी मायामें निपुण वे दोनों वीर क्षण क्षणके बीच एक दूसरेके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युयुधाते महावीर्याविन्द्रवैरोचनाविव ॥ २९ ॥
पावकाम्बुनिधी भूत्वा पुनर्गरुडतक्षकौ ।
पुनर्मेघमहावातौ पुनर्वज्रमहाचलौ ॥ ३० ॥
पुनः कुञ्जरशार्दूलौ पुनः स्वर्भानुभास्करौ ।
एवं मायाशतसृजावन्योन्यवधकांक्षिणौ ॥ ३१ ॥
भृशं चित्रमयुध्येतामलम्बुषघटोत्कचौ ।
परिघैश्च गदाभिश्च प्रासमुद्गरपट्टिशैः ॥ ३२ ॥
मुसलैः पर्वताग्रैश्च तावन्योन्यं विजघ्नतुः ।
हयाभ्यां च गजाभ्यां च रथाभ्यां च पदातिभिः ३३॥
युयुधाते महामायौ राक्षसप्रवरौ युधि ।
ततो घटोत्कचो राजन्नलम्बुषवधेप्सया ॥ ३४ ॥
उत्पपात भृशं क्रुद्धः श्येनवन्निपपात च ।
गृहीत्वा च महाकायं राक्षसेन्द्रमलम्बुषम् ॥ ३५ ॥
उद्यम्य न्यवधीद्भूमौ मयं विष्णुरिवाऽऽहवे ।
ततो घटोत्कचः खड्गमुद्यम्याऽद्भुतदर्शनम् ॥ ३६ ॥
रौद्रस्य कायाद्धि शिरो भीमं विकृतदर्शनम् ।

अधिक पराक्रम प्रकाशित करते हुए महाघोर युद्ध करने लगे ॥ (२६–२९)

उस समय वे दोनों एक दूसरेके वध की इच्छा करते हुए सैकडों भांतिकी माया उत्पन्न करके कभी अग्नि, कभी समुद्र, गरुड सर्प, बादल वायु, वज्र पर्वत, हाथी शार्दूल और कभी राहु और सूर्यकी मूर्ति धारण करके गदा परिघ प्रास मुद्गर पर्वतके शिखर समान मूषल आदि अनेक भांतिके अस्त्र शस्त्रोंसे एक दूसरेके ऊपर प्रहार करते हुए अद्भुत रूपसे युद्ध करने लगे। महाराज ! इसी भांति वे दोनों राक्षसोंमें मुख्य मायावी घटोत्कच और अलम्बुष कभी हाथी कभी घोडे और कभी रथोंपर चढके लडते और कभी पैदल ही युद्ध भूमिमें स्थित होके युद्ध करने लगते थे ॥ (३०–३४)

तिसके अनन्तर घटोत्कच अत्यन्त क्रुद्ध होकर अलम्बुषके वधकी इच्छा करके बाजपक्षीकी भांति कूदके वेगपूर्वक उसको ग्रहण करके उठाकर इस प्रकार पृथ्वीमें फेंक दिया जैसे विष्णुने मय-दानवको पृथ्वीमें गिराया था ॥ इससे भयङ्कर रूपवाला राक्षस अलम्बुष इधर उधर छटपटाते हुए भयानक शब्दसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्फुरतस्तस्य समरे नदतश्चाऽतिभैरवम् ॥ ३७ ॥
निचकर्त महाराज शत्रोरमितविक्रमः ।
शिरस्तचाऽपि संगृह्य केशेषु रुधिरोक्षितम् ॥ ३८ ॥
ययौ घटोत्कचस्तूर्णं दुर्योधनरथं प्रति ।
अभ्येत्य च महाबाहुः स्मयमानः स राक्षसः ॥ ३९ ॥
शिरो रथेऽस्य निक्षिप्य विकृताननमूर्धजम् ।
प्राणदद्भैरवं नादं प्रावृषीव बलाहकः ॥ ४० ॥
अब्रवीच्च ततो राजन्दुर्योधनमिदं वचः ।
एष ते निहतो बन्धुस्त्वया दृष्टोऽस्य विक्रमः ॥ ४१ ॥
पुनर्द्रष्टासि कर्णस्य निष्ठामेतां तथाऽऽत्मनः ।
स्वधर्ममर्थं कामं च त्रितयं योऽभिवाञ्छति ॥ ४२ ॥
रिक्तपाणिर्न पश्येत राजानं ब्राह्मणं स्त्रियम् ।
तिष्ठस्व तावत्सुप्रीतो यावत्कर्णं वधाम्यहम् ॥ ४३ ॥
एवमुक्त्वा ततः प्रायात्कर्णं प्रति नरेश्वर ।
किरञ्छरगणांस्तीक्ष्णान्रुषितो रणमूर्धनि ॥ ४४ ॥
ततः समभवद्युद्धं घोररूपं भयानकम् ।

चिल्लाने लगा । उस समय अत्यन्त पराक्रमी घटोत्कचने अद्भुत रूपवाली अपनी तलवारको मियानसे खींचकर उसके भयङ्कर सिरको शरीरसे अलगकर दिया। फिर रुधिर बहते हुए उस अलम्बुष राक्षसके सिरके केशको पकडके घटोत्कच दुर्योधनके रथकी ओर दौडा !! (३४—३९)

महाराज ! तिसके अनन्तर महाबाहु घटोत्कच अलम्बुषके उस कटे हुए भयङ्कर सिरको दुर्योधनके रथपर फेंककर वर्षाकालके बादलकी भांति भयानक शब्दके सहित गर्जने लगा और अभिमानपूर्वक उनसे कहने लगा। हे दुर्योधन ! तुमने इतने समयतक जिसके पराक्रमको देखा था यह वही तुम्हारा बन्धु अलम्बुष मारा गया; अब उसी भांति पराक्रमसे युक्त कर्णकी भी तुम ऐसी ही दशा देखोगे ॥ धर्म अर्थ और कामकी इच्छा करनेवाला पुरुष रिक्त हाथसे राजा, ब्राह्मण और स्त्रीको न देखे । हे राजन् ! तुम तब तक इस अलम्बुषके शिरसे ही संतुष्ट रहो जब तक मैं कर्णको मारूंगा ॥ (३९–४३)

महाराज ! घटोत्कच ऐसा वचन कहके कर्णके ऊपर सैकडों तीक्ष्ण बाणोंको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विस्मापनं महाराज नरराक्षसयोर्मृधे ॥ ४५ ॥ [७८९८]

इति श्रीमहाभारते० घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धेऽलंबुषपराभवे सप्तषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७४ ॥

धृतराष्ट्र उवाच—यत्तद्वैकर्तनः कर्णो राक्षसश्च घटोत्कचः ।
निशीथे समसज्जेतां तद्युद्धमभवत्कथम् ॥ १ ॥
कीदृशं चाऽभवद्रूपं तस्य घोरस्य रक्षसः ।
रथश्च कीदृशस्तस्य हयाः सर्वायुधानि च ॥ २ ॥
किम्प्रमाणा हयास्तस्य रथकेतुर्धनुस्तथा ।
कीदृशं वर्म चैवाऽस्य शिरस्त्राणं च कीदृशम् ॥ ३ ॥
पृष्टस्त्वमेतदाचक्ष्व कुशलो ह्यसि सञ्जय ।

सञ्जय उवाच— लोहिताक्षो महाकायस्ताम्रास्यो निम्नितोदरः ॥ ४ ॥
ऊर्ध्वरोमा हरिश्मश्रुः शंकुकर्णो महाहनुः ।
आकर्णदारितास्यश्च तीक्ष्णदंष्ट्रः करालवान् ॥ ५ ॥
सुदीर्घताम्रजिह्वोष्ठो लम्बभ्रूः स्थूलनासिकः ।

वर्षाता हुआ उनकी ओर दौडा ॥ अनन्तर कर्ण और राक्षस घटोत्कचका सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करनेवाला अत्यन्त भयङ्कर महाघोर युद्ध आरम्भ हुआ ॥ (४४-४५) [७८९८]

द्रोणपर्वमें एकसौ चौहत्तर अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ पचत्तर अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! सूर्यपुत्र कर्ण और राक्षस घटोत्कच जब उस रात्रिके समय रणभूमिमें युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए; तब उन दोनों वीरोंका किस प्रकार संग्राम हुआ था ? युद्धके समय उस भयङ्कर रूप वाले राक्षसने कैसा स्वरूप धारण किया और उसके घोडे रथ तथा अस्त्र शस्त्र किस भांतिके थे ? और उसके धनुष रथकी ध्वजा रथ और घोडोंके लम्बाई चौडाईका कितना परिमाण था ? और उसका वर्म तथा शिरस्त्राण कैसा था ? हे सञ्जय ! तुम वचन बोलनेमें अत्यन्त निपुण हो इससे मैं जो कुछ पूंछता हूं वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे समीप वर्णन करो । (१-४)

सञ्जय बोले, महाराज ! उस बडे शरीरवाले राक्षसका उदर निम्न, नेत्र और मुख लाल तथा रोएं खडे थे; उसकी कमर मोटी, कान हाथीके कानके समान, केश सिंहके केशरकी भांति दीख पडते थे; उसके कपोल जीभ ओंठ और मुख लालवर्णके थे; मुखमें बडे बडे लम्बे चौडे मोटे और चोखे भयङ्कर दांत दीख पडते थे उससे वह राक्षस मानो रौद्ररसका स्वरूप ही मालूम होता था ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलाङ्गो लोहितग्रीवो गिरिवर्ष्मा भयङ्करः ॥ ६ ॥
महाकायो महाबाहुर्महाशीर्षो महाबलः ।
विकृतः परुषस्पर्शो विकचोद्वृद्धपिण्डकः ॥ ७ ॥
स्थूलस्फिग्गूढनाभिश्च शिथिलोपचयो महान् ।
तथैव हस्ताभरणी महामायोऽङ्गदी तथा ॥ ८ ॥
उरसा धारयन्निष्कमग्निमालां यथाऽचलः ।
तस्य हेममयं चित्रं बहुरूपाङ्गशोभितम् ॥ ९ ॥
तोरणप्रतिमं शुभ्रं किरीटं मूर्ध्न्यशोभत ।
कुण्डले बालसूर्याभे मालां हेममयीं शुभाम् ॥ १० ॥
धारयन्विपुलं कांस्यं कवचं च महाप्रभम् ।
किङ्किणीशतनिर्घोषं रक्तध्वजपताकिनम् ॥ ११ ॥
ऋक्षचर्मावनद्धाङ्गं नल्वमात्रं महारथम् ।
सर्वायुधवरोपेतमास्थितं ध्वजमालिनम् ॥ १२ ॥
अष्टचक्रसमायुक्तं मेघगम्भीरनिःस्वनम् ।

उसकी नासिका स्थूल और सम्पूर्ण अङ्ग काले थे । इसके अतिरिक्त उसका शरीर पर्वतके समान भयङ्कर दीख पडता था, उस बडे शरीरवाले महाबली महाबाहु भयंकर राक्षसका सिर बहुत बडा था उसके शरीरका चमडा अत्यन्त कडा था, जानुके ऊपरका हिस्सा मांससे अत्यन्त पुष्ट था और बिकट रूपसे दीख पडता था ॥ (४–७)

कटिके पीछेका भाग अत्यन्त ही स्थूल और नाभिस्थान गभीर (गहिरा) था । वह अनेक राक्षसी माया जाननेवाला राक्षस बहुतसी अपने खाने पीने की अभिलषित अन्न आदि वस्तु सहज हीमें खाने पीनेमें समर्थ था। महाराज! जैसे पर्वत अग्निकी लपट रूपी मालासे शोभित होते हैं वैसे ही वह राक्षस सुवर्णके कवच मुहर और हाथमें पहिरने योग्य आभूषणोंको पहरके शोभित हो रहा था। उसके सिरके ऊपर सफेद वर्ण तोरण आकृतिसे युक्त अनेक भांतिके रत्नोंसे जटित सुवर्णमय एक किरीट शोभित होता था । उस राक्षसने बालसूर्यकी प्रभाके समान प्रकाशमान दोनों कुण्डल और रत्नमयी मालासे अलंकृत होके प्रकाशमान कांसेके कवचको धारण किया, और सैकडों किङ्किणि शब्दसे युक्त लालवर्णकी ध्वजासे शोभित ऋक्षके चमडेसे घिरा हुआ उत्तम अस्त्र शस्त्रोंसे परिपूरित अनेक पताकाओंके सहित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत्तमातङ्गसङ्काशा लोहिताक्षा विभीषणाः ॥ १३ ॥
कामवर्णजवा युक्ता बलवन्तः शतं हयाः।
वहन्तो राक्षसं घोरं बालवन्तो जितश्रमाः ॥ १४ ॥
विपुलाभिः सटाभिस्ते हेषमाणा मुहुर्मुहुः।
राक्षसोऽस्य विरूपाक्षः सूतो दीप्तास्यकुण्डलः॥ १५ ॥
रश्मिभिः सूर्यरश्म्याभैः सञ्जग्राह हयान्रणे।
स तेन सहितस्तस्थावरुणेन यथा रविः ॥ १६ ॥
संसक्त इव चाऽभ्रेण यथाऽद्रिर्महता महान्।
दिवःस्पृक् सुमहान्केतुः स्यन्दनेऽस्य समुच्छ्रितः॥ १७ ॥
रक्तोत्तमाङ्गः क्रव्यादो गृध्रः परमभीषणः।
वासवाशनिनिर्घोषं दृढज्यमतिविक्षिपन् ॥ १८ ॥
व्यक्तं किष्कुपरीणाहं द्वादशारत्निकार्मुकम्।
रथाक्षमात्रैरिषुभिः सर्वाः प्रच्छादयन्दिशः ॥ १९ ॥
तस्यां वीरापहारिण्यां निशायां कर्णमभ्ययात्।

आठ चक्केसे युक्त बादलकी भांति गम्भीर शब्दसे परिपूर्ण चार सौ हाथके परिमाणवाले एक बडे रथ पर चढा था। (८–१३)

उस रथमें मतवारे हाथीके समान रूपवाले लाल नेत्रसे युक्त इच्छानुसार वर्ण और वेग धारण किये हुए महाबली भयङ्कर मूर्तिवाले एकसौ घोडे जुते हुए थे। वे परिश्रमसे न थकनेवाले अनेक केशरोंसे शोभित बार बार हिनहिनाते और उस भयंकर रूपवाले राक्षसके रथको खींचते हुए रणभूमिके बीच गमन करने लगे। महाराज! उसका सारथी भी प्रकाशमान सफेद कुण्डलोंसे शोभित एक भयंकर मूर्त्तिवाला राक्षस था, वह सूर्य किरणके समान प्रकाशमान घोडोंकी रासको ग्रहण करके उन घोडोंको हांकता था। महाराज! राक्षस घटोत्कच ऐसे रथ और सारथीसे युक्त होकर बादलोंसे युक्त बडे पर्वत तथा अरुणसे युक्त सूर्यकी भांति शोभित हुआ। (१३–१७)

उसके रथकी ऊंची ध्वजा आकाशमें लहरा रही थी; उसके ऊपर लालनेत्रसे युक्त मांसभक्षी एक भयंकर गिद्ध विराजमान था। घटोत्कच इस प्रकार रथ पर चढके इन्द्रधनुषके समान अपने प्रचण्ड धनुष पर रोदा चढाके मोटे मोटे बाणोंसे सम्पूर्ण दिशाको परिपूरित करके उस भयङ्करी रात्रिके समय कर्णकी ओर दौडा। महाराज! जब वह राक्षस अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्य विक्षिपतश्चापं रथे विष्टभ्य तिष्ठतः ॥ २० ॥
अश्रूयत धनुर्घोषो विस्फूर्जितमिवाऽशनेः ।
तेन वित्रास्यमानानि तव सैन्यानि भारत ॥ २१ ॥
समकम्पन्त सर्वाणि सिन्धोरिव महोर्मयः ।
तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य विरूपाक्षं विभीषणम् ॥ २२ ॥
उत्स्मयन्निव राधेयस्त्वरमाणोऽभ्यवारयत् ।
ततः कर्णोऽभ्ययादेनमस्यन्नस्यन्तमन्तिकात् ॥ २३ ॥
मातङ्ग इव मातङ्गं यूथर्षभमिवर्षभः ।
स सन्निपातस्तुमुलस्तयोरासीद्विशाम्पते ॥ २४ ॥
कर्णराक्षसयो राजन्निन्द्रशम्बरयोरिव ।
तौ प्रगृह्य महावेगे धनुषी भीमनिःस्वने ॥ २५ ॥
प्राच्छादयेतामन्योन्यं तक्षमाणौ महेषुभिः ।
ततः पूर्णायतोत्सृष्टैरिषुभिर्नतपर्वभिः ॥ २६ ॥
न्यवारयेतामन्योन्यं कांस्ये निर्भिद्य वर्मणी ।
तौ नखैरिव शार्दूलौ दन्तैरिव महाद्विपौ ॥ २७ ॥

रथ पर स्थित होके धनुषटंकार करने लगा। उस समय सम्पूर्ण शब्दोंको अतिक्रम करके वज्रके समान उसके धनुष टङ्कारका शब्द सुनाई देने लगा। उससे तुम्हारी सेनाके पुरुष भयभीत होके इस प्रकार कांपने लगे जैसे वायुके वेगसे समुद्रकी तरङ्ग कम्पित होती है। १७-२२

उस भयङ्कर मूर्त्तिवाले राक्षसको इस भांतिसे अपनी ओर आते देख राधापुत्र कर्ण शीघ्रताके सहित खेलवाडकी भांति उसे निवारण करने लगे। जैसे हाथी और यूथपति ऋषभ क्रुद्ध होकर एक दूसरेकी ओर दौडते हैं वैसे ही कर्ण अपने बाणोंकी वर्षा करते हुए राक्षस घटोत्कचकी ओर दौडे। हे राजेन्द्र! उस समय कर्ण और राक्षस घटोत्कचका इन्द्र और शम्बरासुरकी भांति संग्राम होने लगा। (२२-२४)

वे दोनों वीर महावेगशील भयङ्कर टंकार शब्दसे परिपूरित प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके अपने महा अस्त्रोंसे क्षत-विक्षत शरीरसे युक्त होकर अपने बाण जालसे एक दूसरेको छिपाने लगे। अनन्तर कान पर्यन्त धनुष खींच कर अपने बाणोंके समूहसे वे दोनों वीर एक दूसरे के कवचको भेद करके फिर अपने बाणोंसे एक दूसरेको क्षत विक्षत करने लगे। जैसे दो शार्दूल नखोंसे और दो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथशक्तिभिरन्योन्यं विशिखैश्च ततक्षतुः।
सञ्छिन्दन्तौ च गात्राणि सन्दधानौ च सायकान्॥२८॥
दहन्तौ च शरोल्काभिर्दुष्प्रेक्ष्यौ च बभूवतुः।
तौ तु विक्षतसर्वाङ्गौ रुधिरौघपरिप्लुतौ ॥ २९ ॥
विभ्राजेतां यथा वारि स्रवन्तौ गैरिकाचलौ।
तौ शराग्रविनुन्नाङ्गौ निर्भिन्दन्तौ परस्परम् ॥ ३० ॥
नाऽकम्पयेतामन्योन्यं यतमानौ महाद्युती।
तत्प्रवृत्तं निशायुद्धं चिरं सममिवाऽभवत् ॥ ३१ ॥
प्राणयोर्दीव्यतो राजन्कर्णराक्षसयोर्मृधे।
तस्य सन्दधतस्तीक्ष्णाञ्छरांश्चाऽऽसक्तमस्यतः॥ ३२ ॥
धनुर्घोषेण वित्रस्ताः स्वे परे च तदाऽभवन्।
घटोत्कचं यदा कर्णो विशोषयति नो नृप ॥ ३३ ॥
ततः प्रादुष्करोद्दिव्यमस्त्रमस्त्रविदां वरः।

हाथी अपने दातोंसे युद्ध करते हैं वैसे ही वे दोनों शक्ति आदि अस्त्र और अनेक बाणोंको वर्षा कर बाणोंकी चोट से क्षतविक्षत शरीरसे युक्त होगये। इसी भांति वे दोनों कभी बाण साधते कभी अस्त्रोंको चलाके एक दूसरेके शरीरमें प्रहार करते और कभी अपने अस्त्ररूपी अग्निसे एक दूसरेको भस्म करनेकी इच्छासे अस्त्र शस्त्रोंको चलाते हुए इस प्रकार युद्ध करते थे कि सेनाके बहुतेरे पुरुष उन दोनोंके युद्धको देखनेमें भी समर्थ न हुए। (२४–२९)

अधिक क्या कहा जावे उस समय उन दोनों वीरोंका शरीर बाणोंसे परिपूरित होगया, और उनके शरीरसे इस प्रकार रुधिर बहने लगा जैसे पर्वतोंके ऊपरसे गेरुकी धारा बहती है। आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे पीडित होके उन दोनों वीरोंने एक दूसरेके शरीरको अपने बाणोंसे क्षतविक्षत कर दिया यह ठीक है; परन्तु यत्नवान् होकर भी कोई किसीको युद्धभूमिसे विचलित न कर सका। महाराज! प्राणपणसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए कर्ण और राक्षस घटोत्कचका संग्राम बहुत समय तक समभावसे ही होता रहा। परन्तु घटोत्कचको निर्भय चित्तसे बाण साधते और चलाते देख तुम्हारी सेनाके और पर सेनाके सम्पूर्ण पुरुष उसके धनुष टङ्कारके शब्दसे भयभीत हो गये। (२९–३३)

महाराज! सब अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले महावीर कर्ण जब किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्णेन सन्धितं दृष्ट्वा दिव्यमस्त्रं घटोत्कचः ॥ ३४ ॥
प्रादुश्चक्रे महामायां राक्षसीं पाण्डुनन्दनः ।
शूलमुद्गरधारिण्या शैलपादपहस्तया ॥ ३५ ॥
रक्षसां घोररूपाणां महत्या सेनया वृतः ।
तमुद्यतमहाचापं दृष्ट्वा ते व्यथिता नृपाः ॥ ३६ ॥
भूतान्तकमिवाऽऽयान्तं कालदण्डोग्रधारिणम् ।
घटोत्कचप्रयुक्तेन सिंहनादेन भीषिताः ॥ ३७ ॥
प्रसुस्रुवुर्गजा मूत्रं विव्यथुश्च नरा भृशम् ।
ततोऽश्मवृष्टिरत्युग्रा महत्यासीत्समन्ततः ॥ ३८ ॥
अर्धरात्रेऽधिकबलैर्विमुक्ता रक्षसां बलैः ।
आयसानि च चक्राणि भुशुण्ड्यः शक्तितोमराः ॥ ३९ ॥
पतन्त्यविरलाः शूलाः शतघ्न्यः पट्टिशास्तथा ।
तदुग्रमतिरौद्रं च दृष्ट्वा युद्धं नराधिप ॥ ४० ॥
पुत्राश्च तव योधाश्च व्यथिता विप्रदुद्रुवुः ।
तत्रैकोऽस्त्रबलश्लाघी कर्णो मानी न विव्यथे ॥ ४१ ॥

प्रकारसे भी घटोत्कचसे अधिक न हो सके, तब वह दिव्य अस्त्रोंको प्रकट करने लगे । भीमसेन पुत्र घटोत्कचने कर्णको दिव्य अस्त्र प्रकट करते देख, राक्षसी मायाको उत्पन्न किया । उससे वह क्षण भरके बीच शूल मुद्गर वृक्ष और पत्थर ग्रहण करनेवाली और भयङ्कर रूपवाली राक्षसी सेनासे युक्त होगया, राजा लोग सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले दण्ड-धारी यमराजके समान हाथमें धनुष ग्रहण किये और राक्षसोंकी महासेनासे युक्त घटोत्कचको संमुख आते देख अत्यन्त ही शोकित हुए । (३३–३७)

ऐसा क्या उस समय उसके सिंह-नाद शब्दसे भयभीत होकर हाथी घोडे मलमूत्र त्याग करने लगे और सेनाके पुरुष अत्यन्त ही कातर हुए । अनन्तर उस समय रात्रिके प्रभावसे स्वाभाविक ही अधिक बलवान् राक्षसोंकी सेनाके पुरुषोंके हाथसे रणभूमिमें चारों ओर शिलाकी वर्षा होने लगी । लोहमय चक्र, भुशुण्डी, शक्ति, तोमर, शूल, शतघ्नी और पट्टिश आदि अनेक भांतिके अस्त्र शस्त्र चारों ओरसे तुम्हारी सेनाके ऊपर पडने लगे । (३७–४०)

महाराज ! तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग उस भयङ्कर युद्धको देखकर भयभीत होकर चारों ओर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यधमच्च शरैर्मायां तां घटोत्कचनिर्मिताम् ।
मायायां तु प्रहीणायाममर्षाच्च घटोत्कचः ॥ ४२ ॥
विससर्ज शरान्घोरान्सूतपुत्रं त आविशन् ।
ततस्ते रुधिराभ्यक्ता भित्त्वा कर्णं महाहवे ॥ ४३ ॥
विविशुर्धरणीं बाणाः संक्रुद्धा इव पन्नगाः ।
सूतपुत्रस्तु संक्रुद्धो लघुहस्तः प्रतापवान् ॥ ४४ ॥
घटोत्कचमतिक्रम्य बिभेद दशभिः शरैः ।
घटोत्कचो विनिर्भिन्नः सूतपुत्रेण मर्मसु ॥ ४५ ॥
चक्रं दिव्यं सहस्रारमगृह्णाद्व्यथितो भृशम् ।
क्षुरान्तं बालसूर्याभं मणिरत्नविभूषितम् ॥ ४६ ॥
चिक्षेपाऽऽधिरथेः क्रुद्धो भैमसेनिर्जिघांसया ।
प्रविद्धमतिवेगेन विक्षिप्तं कर्णसायकैः ॥ ४७ ॥
अभाग्यस्येव सङ्कल्पस्तन्मोघमपतद्भुवि ।
घटोत्कचस्तु संक्रुद्धो दृष्ट्वा चक्रं निपातितम् ॥ ४८ ॥
कर्णं प्राच्छादयद्बाणैः स्वर्भानुरिव भास्करम् ।

भागने लगे। उस समय केवल अस्त्रबलमें प्रशंसित अकेले कर्ण ही युद्धसे कातर नहीं हुए बरन अपने दिव्य अस्त्रके प्रभावसे घटोत्कचकी सम्पूर्ण मायाको भस्म कर दिया। माया नष्ट होने पर घटोत्कच क्रुद्ध होके सूतपुत्र कर्णके ऊपर महाघोर बाणोंकी वर्षा करने लगा; वे सम्पूर्ण बाण कर्णके शरीरमें घुस गये। महाराज! कर्णके शरीरको छेद कर रुधिरसे लिपटे हुए वे सम्पूर्ण बाण क्रोधी सर्पोंके समान पृथ्वीमें गिरे। (४०-४४)

तब प्रतापी कर्णने क्रुद्ध होकर हस्तलाघवके सहित दश बाणोंसे घटोत्कचके शरीरको भेद किया। महापराक्रमी सूतपुत्र कर्णके बाणोंसे घटोत्कचके मर्मस्थल अत्यन्त ही पीडित हुए, तब उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक सहस्र क्षुरधार से युक्त देवताओंके बनाये हुए चक्रको ग्रहण करके कर्णकी ओर चलाया। महाराज! जैसे भाग्यहीन पुरुषके मनोरथ निष्फल होजाते हैं, वैसे ही अत्यन्त वेगसे घुमाके चलाया हुआ वह चक्र कर्णके बाणोंके प्रभावसे उलटके पृथ्वीमें गिर पडा। (४४-४८)

चक्रको निष्फल होते देख, घटोत्कचने अपने बाणजालसे इस प्रकार कर्णको छिपा दिया, जैसे राहु सूर्यको छिपादेता है। वैसे ही रुद्र विष्णु और इन्द्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूतपुत्रस्त्वसम्भ्रान्तो रुद्रोपेन्द्रेन्द्रविक्रमः ॥ ४९ ॥
घटोत्कचरथं तूर्णं छादयामास पत्त्रिभिः ।
घटोत्कचेन क्रुद्धेन गदा हेमाङ्गदा तदा ॥ ५० ॥
क्षिप्ता भ्राम्य शरैः साऽपि कर्णेनाऽभ्याहताऽपतत् ।
ततोऽन्तरिक्षमुत्पत्य कालमेघ इवोन्नदन् ॥ ५१ ॥
प्रववर्ष महाकायो द्रुमवर्षं नभस्तलात् ।
ततो मायाविनं कर्णो भीमसेनसुतं दिवि ॥ ५२ ॥
मार्गणैरभिविव्याध घनं सूर्य इवांऽशुभिः ।
तस्य सर्वान्हयान्हत्वा सञ्छिद्य शतधा रथम् ॥ ५३ ॥
अभ्यवर्षच्छरैः कर्णः पर्जन्य इव वृष्टिमान् ।
न चाऽस्याऽऽसीदनिर्भिन्नं गात्रे ह्यंगुलमन्तरम् ॥ ५४ ॥
सोऽदृश्यत मुहूर्तेन श्वाविच्छललतो यथा ।
न हयान्न रथं तस्य न ध्वजं न घटोत्कचम् ॥ ५५ ॥

के समान पराक्रमी सूतपुत्र कर्णने भी निर्भयचित्तसे अपने बाणजालसे घटोत्कचके रथको शीघ्रताके सहित छिपा दिया। तब घटोत्कचने क्रुद्ध होकर सुवर्णतारसे खचित एक भारी गदाको घुमाकर कर्णकी ओर फेंक दिया; वह गदा भी कर्णके बाणोंसे निवारित होकर पृथ्वीमें गिर पडी। अनन्तर बडे शरीर वाला वह राक्षस घटोत्कच आकाशमें चला गया और आकाशसे कर्णके ऊपर वृक्षोंकी वर्षा करने लगा। (४८–५२)

उसे देख सूतपुत्र कर्ण अपने प्रकाशमान बाणोंको चलाकर उसके रथके घोडे और सारथीका नाश करके इस प्रकार घटोत्कचके शरीरको छेदने लगे, जैसे सूर्य अपनी किरणोंसे अन्धकारको नष्ट कर देता है। कर्ण जब राक्षसी मायामें निपुण भीमसेनपुत्र घटोत्कचके रथ और घोडोंको टुकडे टुकडे करके गिरा कर जलकी वर्षा करनेवाले बादलकी भांति उसके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे, तब उस समय घटोत्कचके शरीरमें ऐसा दो अंगुल स्थान भी बाकी न रहा जो कर्णके बाणोंसे विद्ध न हुआ हो। अधिक क्या कहा जावे उस समय घटोत्कचका शरीर मुहूर्त्त भरके बीच कर्णके बाणोंसे इस प्रकार परिपूरित होगया, जैसे कांटोंसे युक्त शल्यकीका वृक्ष शोभित होता है। महाराज ! उस समय राक्षस घटोत्कच कर्णके बाणोंसे इस प्रकार छिप गया, कि कोई पुरुष उसका रथ, घोडे और उसे देख भी न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टवन्तः स्म समरे शरौघैराभिसंवृतम् ।
स तु कर्णस्य तद्दिव्यमस्त्रमस्त्रेण शातयन् ॥ ५६ ॥
मायायुद्धेन मायावी सूतपुत्रमयोधयत् ।
सोऽयोधयत्तदा कर्णं मायया लाघवेन च ॥ ५७ ॥
अलक्ष्यमाणानि दिवि शरजालानि चाऽपतन् ।
भैमसेनिर्महामायो मायया कुरुसत्तम ॥ ५८ ॥
विचचार महाकायो मोहयन्निव भारत ।
स तु कृत्वा विरूपाणि वदनान्यशुभानि च ॥ ५९ ॥
अग्रसत्सूतपुत्रस्य दिव्यान्यस्त्राणि मायया ।
पुनश्चापि महाकायः सञ्छिन्नः शतधा रणे ॥ ६० ॥
गतसत्वो निरुत्साहः पतितः खाद्यदृश्यत ।
तं हतं मन्यमानाः स्म प्राणदन्कुरुपुङ्गवाः ॥ ६१ ॥
अथ देहैर्नवैरन्यैर्दिक्षु सर्वास्वदृश्यत ।
पुनश्चापि महाकायः शतशीर्षः शतोदरः ॥ ६२ ॥

सके। (५२-५६)

परन्तु मायाविद्या जाननेवाला घटोत्कच कर्णके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको अपने दिव्य अस्त्रोंसे निवारण करता हुआ मायामय युद्ध करने लगा। जब वह मायासे शीघ्रताके सहित कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगा, उस समय आकाशमण्डलसे अनगिनत बाणोंकी वर्षा होती हुई दिखाई देने लगी। हे राजेन्द्र! मायाविद्यामें निपुण बडे शरीरवाला वह राक्षस इसी भांति अपनी मायासे तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाके पुरुषों को मोहित कर रणभूमिमें घूमने लगा। उसका मुख स्वाभाविक ही भयङ्कर था, उसपर भी उसने मायाबलसे विरूप और अशुभ अनेक मुख बनाकर कर्णके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको ग्रास किया। (५६-६०)

तिसके अनन्तर वह बडे शरीरवाला युद्धसे उत्साहहीन और प्राण रहितके समान होकर कटके सैंकडों टुकडे होके आकाशसे गिरते हुए दीख पडा। तब उसके शरीरको कटके गिरते देख कुरुसेनाके योद्धाओंने समझा, कि घटोत्कच मारा गया, ऐसा समझके तुम्हारी सेनाके लोग सिंहनाद करने लगे। वह उस ही समय मायाके प्रभावसे अनेक शरीर धारण करके एकही समय चारों ओर दिखाई देने लगा। वह मायाके प्रभावसे कभी एकसौ सिर एक सौ उदरवाला बडा शरीर धारण करके मैनाक पर्वतकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यदृश्यत महाबाहुर्मैनाक इव पर्वतः ।
अंगुष्ठमात्रो भूत्वा च पुनरेव स राक्षसः ॥ ६३ ॥
सागरोर्मिरिवोद्भूतस्तिर्यगूर्ध्वमवर्तत ।
वसुधां दारयित्वा च पुनरप्सु न्यमज्जत ॥ ६४ ॥
अदृश्यत तदा तत्र पुनरुन्मज्जितोऽन्यतः ।
सोऽवतीर्य पुनस्तस्थौ रथे हेमपरिष्कृते ॥ ६५ ॥
क्षितिं खं च दिशश्चैव मायया ऽभ्येत्य दंशितः ।
गत्वा कर्णरथाभ्याशं व्यचरत्कुण्डलाननः ॥ ६६ ॥
प्राह वाक्यमसम्भ्रान्तः सूतपुत्रं विशाम्पते ।
तिष्ठेदानीं क्व मे जीवन्सूतपुत्र गमिष्यसि ॥ ६७ ॥
युद्धश्रद्धामहं तेऽद्य विनेष्यामि रणाजिरे ।
इत्युक्त्वा रोषताम्राक्षं रक्षः क्रूरपराक्रमम् ॥ ६८ ॥
उत्पपाताऽन्तरिक्षं च जहास च सुविस्तरम् ।
कर्णमभ्यहनच्चैव गजेन्द्रमिव केसरी ॥ ६९ ॥
रथाक्षमात्रैरिषुभिरभ्यवर्षद्घटोत्कचः ।
रथिनामृषभं कर्ण धाराभिरिव तोयदः ॥ ७० ॥

भांति दिखाई देने लगी ॥ कभी अंगुष्ठ मात्र होकर फिर उठती हुई समुद्रकी तरङ्गकी भांति वक्र गतिसे ऊपरको बढने लगा । (६०-६४)

कभी पृथ्वीको विदारण करके जलके बीच छिप जाता था, क्षण भरके बीच दूसरे स्थानपर प्रकट होके फिर उसी स्थलपर दीख पडता था । इसी भांति वह राक्षस मायाके प्रभावसे पृथ्वी आकाश और सम्पूर्ण दिशामें घूमकर फिर कवच और कुण्डल पहने हुए सुवर्णमय रथपर चढके सूतपुत्र कर्णके रथके समीप उपास्थित हुआ । और निर्भयताके सहित उनसे कहने लगा, हे सूतपुत्र ! खडारह ! अब तू जीते हुए मेरे संमुखसे कहां जासकता है ? आज रणभूमिके बीच मैं तुम्हारी युद्धकी अभिलाषा पूर्ण कर दूंगा ॥ (६४-६८)

महाराज ! अत्यन्त पराक्रमी घटोत्कच ऐसा वचन कहके क्रोधपूर्वक आकाशमें गया और भयानक स्वरसे हंसता हुआ कर्णके शरीरमें इस प्रकार अपने बाणोंसे प्रहार करने लगा; जैसे सिंह गजराजके ऊपर प्रहार करता है। उस समय घटोत्कच रथियोंमें मुख्य कर्ण के ऊपर अपने मोटे मोटे बाणों को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरवृष्टिं च तां कर्णो दूरात्प्राप्तामशातयत् ।
दृष्ट्वा च विहतां मायां कर्णेन भरतर्षभ ॥ ७१ ॥
घटोत्कचस्ततो मायां ससर्जाऽन्तर्हितः पुनः ।
सोऽभवद्गिरिरत्युच्चः शिखरैस्तरुसङ्कटैः ॥ ७२ ॥
शूलप्रासासिमुसलजलप्रस्रवणो महान् ।
तमञ्जनचयप्रख्यं कर्णो दृष्ट्वा महीधरम् ॥ ७३ ॥
प्रपातैरायुधान्युग्राण्युद्वहन्तं न चुक्षुभे ।
स्मयन्निव ततः कर्णो दिव्यमस्त्रमुदैरयत् ॥ ७४ ॥
ततः सोऽस्त्रेण शैलेन्द्रो विक्षिप्तो वै व्यनश्यत ।
ततः स तोयदो भूत्वा नीलः सेन्द्रायुधो दिवि ॥७५॥
अश्मवृष्टिभिरत्युग्रः सूतपुत्रमवाकिरत् ।
अथ सन्धाय वायव्यमस्त्रमस्त्रविदां वरः ॥ ७६ ॥
व्यधमत्कालमेघं तं कर्णो वैकर्तनो वृषः ।
स मार्गणगणैः कर्णो दिशः प्रच्छाद्य सर्वशः ॥ ७७ ॥
जघानाऽस्त्रं महाराज घटोत्कचसमीरितम् ।

आकाशसे इस प्रकार वर्षाने लगा; जैसे बादल पृथ्वीके ऊपर जलकी वर्षा करते हैं, पर कर्ण उसके चलाये हुए बाणोंको समीप न पहुंचते ही अपने बाणोंके प्रभावसे मार्गहीमें काट काटके गिराने लगे। महाराज! कर्णके अस्त्रोंसे माया निष्फल होती देख, घटोत्कचने फिर अन्तर्द्धान होके राक्षसी माया उपजायी। (६९–७२)

उस समय वह मायाके प्रभावसे शूल प्रास, मूशल आदि शस्त्ररूपी जलके झरनेसे युक्त, अनेक शिखरोंसे शोभित वृक्षलतासे परिपूर्ण एक बहुत ऊंचे बडे पर्वतका रूप धारण किया। महाराज! कर्ण अञ्जनगिरिके समान जल झरनेके स्थलमें अनेक अस्त्र शस्त्रोंको निकलते हुए उस पर्वतको देखकर तनिक भी भयभीत नहीं हुए; वरन उत्साह पूर्वक दिव्य अस्त्रोंको प्रकाशित किया। कर्णके दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे वह पर्वत क्षणभरमें टुकडे टुकडे होकर नष्ट होगया। उसे देखकर घटोत्कच आकाशमें इन्द्रधनुषसे शोभित काले बादलका रूप धारण करके वहांसे ही सूतपुत्र कर्णके ऊपर शिला वर्षाने लगा॥ (७२–७६)

तब अस्त्रधारियोंमें मुख्य कर्णने वायव्य अस्त्र चलाकर उस काले मेघमण्डलको आकाशमें छिन्न भिन्न करके नष्ट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः प्रहस्य समरे भैमसेनिर्महाबलः ॥ ७८ ॥
प्रादुश्चक्रे महामायां कर्णं प्रति महारथम्।
स दृष्ट्वा पुनरायान्तं रथेन रथिनां वरम् ॥ ७९ ॥
घटोत्कचमसम्भ्रान्तं राक्षसैर्बहुभिर्वृतम्।
सिंहशार्दूलसदृशैर्मत्तमातङ्गविक्रमैः ॥ ८० ॥
गजस्थैश्च रथस्थैश्च वाजिपृष्ठगतैस्तथा।
नानाशस्त्रधरैर्घोरैर्नानाकवचभूषणैः ॥ ८१ ॥
वृतं घटोत्कचं क्रूरैर्मरुद्भिरिव वासवम्।
दृष्ट्वा कर्णो महेष्वासो योधयामास राक्षसम् ॥ ८२ ॥
घटोत्कचस्ततः कर्णं विद्ध्वा पञ्चभिराशुगैः।
ननाद भैरवं नादं भीषयन्सर्वपार्थिवान् ॥ ८३ ॥
भूयश्चाऽञ्जलिकेनाऽथ समार्गणगणं महत्।
कर्णहस्तस्थितं चापं चिच्छेदाऽऽशु घटोत्कचः ॥८४ ॥
अथाऽन्यद्धनुरादाय दृढं भारसहं महत्।
विचकर्ष बलात्कर्ण इन्द्रायुधमिवोच्छ्रितम् ॥ ८५ ॥

कर दिया। तब कर्णने अपने बाणोंसे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूर्ण करके घटोत्कचके चलाये हुए अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे निवारण किया। अनन्तर महाबलवान् भीमसेनपुत्र घटोत्कच ऊंचे स्वरसे हंसके महारथी कर्ण के समीप महाघोर माया प्रकाशित करने लगा। (७६-७९)

उस समय रथियोंमें मुख्य घटोत्कच घोडे हाथी और रथों पर चढे हुए नाना भांतिके कवचोंसे भूषित, मतवारे हाथीके समान पराक्रमी सिंह और शार्दूलकी आकृतिवाले अनगिनत क्रूर स्वभाववाले राक्षसोंकी सेनासे युक्त होकर इस प्रकार युद्ध भूमिमें आगमन करने लगा, जैसे मरुत् गणोंसे घिरे हुए इन्द्र आगमन करते हैं। (७९-८२)

घटोत्कचको रथ पर चढे हुए निर्भय चित्तसे फिर अपनी ओर आते देख महा धनुर्धर कर्ण यत्नवान् होकर उसके सङ्ग युद्ध करने लगे। घटोत्कचने पहिले कर्णको पांच बाणोंसे विद्ध किया, फिर सम्पूर्ण राजाओंको भयभीत करते हुए भयानक शब्दसे सिंहनाद करने लगा॥ तिसके अनन्तर घटोत्कचने अञ्जलिक अस्त्रसे कर्णके हाथमें स्थित उनके दृढ धनुषको बाण और रोदेके सहित काटके गिरा दिया॥ तब कर्ण इन्द्रधनुषके समान एक महावेगवान्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः कर्णो महाराज प्रेषयामास सायकान् ।
सुवर्णपुङ्खाञ्छत्रुघ्नान्खेचरान्राक्षसान्प्रति ॥ ८६ ॥
तद्बाणैरर्दितं यूथं रक्षसां पीनवक्षसाम् ।
सिंहेनेवाऽर्दितं वन्यं गजानामाकुलं कुलम् ॥ ८७ ॥
विधम्य राक्षसान्बाणैः साश्वसूतगजान्विभुः ।
ददाह भगवान्वह्निर्भूतानीव युगक्षये ॥ ८८ ॥
स हत्वा राक्षसीं सेनां शुशुभे सूतनन्दनः ।
पुरेव त्रिपुरं दग्ध्वा दिवि देवो महेश्वरः ॥ ८९ ॥
तेषु राजसहस्रेषु पाण्डवेयेषु मारिष ।
नैनं निरीक्षितुमपि कश्चिच्छक्नोति पार्थिवः ॥ ९० ॥
ऋते घटोत्कचाद्राजन्राक्षसेन्द्रान्महाबलात् ।
भीमवीर्यबलोपेतात्क्रुद्धाद्वैवस्वतादिव ॥ ९१ ॥
तस्य क्रुद्धस्य नेत्राभ्यां पावकः समजायत ।
महोल्काभ्यां यथा राजन्सार्चिषः स्नेहबिन्दवः ॥ ९२ ॥
तलं तलेन संहत्य सन्दश्य दशनच्छदम् ।

प्रचण्ड धनुष ग्रहण करके बलपूर्वक धनुष खींच कर आकाशचारी राक्षसोंके ऊपर स्वर्ण दण्डवाले तीक्ष्ण बाणोंको चलाने लगे ॥ (८२–८६)

महाराज! ऊंची छातीवाले वे सम्पूर्ण राक्षस कर्णके बाणोंसे पीडित होकर इस प्रकार विकल होगये जैसे सिंहसे पीडित होकर हाथियोंका समूह व्याकुल होजाता है ॥ जैसे प्रलय कालके समय अग्नि सम्पूर्ण प्राणियोंको भस्म कर देती है वैसे ही युद्धविद्याके जाननेवाले सुतपुत्र कर्ण हाथी घोडे रथ और सारथियोंके सहित उन सम्पूर्ण राक्षसोंको बलपूर्वक अपने बाणरूपी अग्निसे भस्म करने लगे। हे राजेन्द्र ! जैसे पहिले समयमें देवोंके देव महादेव त्रिपुरको जलाकर शोभित हुए थे वैसे ही सूतपुत्र कर्ण भी सम्पूर्ण राक्षसी सेनाका नाश करके युद्धभूमिके बीच शोभित हुए ॥ (८७–८९)

अधिक क्या कहा जावे उस समय पाण्डवोंकी ओरके सहस्रों राजाओंके बीच भयानक बल और पराक्रमसे भीमसेनके समान महाबलवान् क्रुद्ध हुए यमराजके समान दीखनेवाले राक्षसराज घटोत्कचको छोडके और दूसरे कोई पुरुष कर्णकी ओर देखनेमें भी समर्थ न हुए। उस समय वह राक्षस ऐसा क्रुद्ध हुआ कि जैसे जलते हुए महालुकके ऊपर तेल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथमास्थाय च पुनर्मायया निर्मितं तदा ॥ ९३ ॥
युक्तं गजनिभैर्वाहैः पिशाचवदनैः खरैः
स सूतमब्रवीत्क्रुद्धः सूतपुत्राय मां वह ॥ ९४ ॥
स ययौ घोररूपेण रथेन रथिनां वरः ।
द्वैरथं सूतपुत्रेण पुनरेव विशाम्पते ॥ ९५ ॥
स चिक्षेप पुनः क्रुद्धः सूतपुत्राय राक्षसः ।
अष्टचक्रां महाघोरामशनिं रुद्रनिर्मिताम् ॥ ९६ ॥
द्वियोजनसमुत्सेधां योजनायामविस्तराम् ।
आयसीं निशितां शूलैः कदम्बमिव केसरैः ॥ ९७ ॥
तामवप्लुत्य जग्राह कर्णो न्यस्य महद्धनुः ।
चिक्षेप चैनां तस्यैव स्यन्दनात्सोऽवपुप्लुवे ॥ ९८ ॥
साश्वसूतध्वजं यानं भस्म कृत्वा महाप्रभा ।
विवेश वसुधां भित्त्वा सुरास्तत्र विसिस्मियुः ॥९९ ॥
कर्णं तु सर्वभूतानि पूजयामासुरञ्जसा ।

पडता है । अनन्तर उसके दोनों नेत्रोंसे लगातार अग्निके कण निकलते हुए दिखाई देने लगे । अनन्तर घटोत्कच पिशाच वदनके समान रूप और विशाल शरीरवाले खर जूते और मायासे बने हुए रथपर चढके क्रोधसे ओंठ काटता हुआ सारथीसे बोला, हे सारथी ! तुम मुझे सूतपुत्र कर्णके समीप ले चलो॥ (९०–९४)

हे राजेन्द्र ! वह रथियोंमें मुख्य राक्षस घटोत्कच इसी भांति भयङ्कर मूर्ति धारण करके फिर सुतपुत्र कर्णसे युद्ध करनेकी इच्छासे उनकी ओर गमन करने लगा, और अत्यन्त क्रुद्ध होकर दो योजन लम्बी एक योजन चौडी आठ चक्रसे युक्त अनेक शूलोंसे परिपूरित लोहमयी महा भयंकरी महादेवकी बनाई हुई एक तलवार ग्रहण करके सूतपुत्र कर्ण की ओर चलायी । उसे देखकर कर्णने अपने बडे धनुषको रथमें रखके उस समय रथसे कूदकर उस भयङ्करी तलवारको ग्रहण करके फिर उसे घटोत्कचहीकी ओर चलाई । घटोत्कच उसी समय रथसे कूदकर पृथ्वीपर स्थित हुआ ॥ (९१–९८)

पर कर्णकी भुजासे छूटी हुई वह प्रकाशमान तलवार घटोत्कचके घोडे सारथी और रथको भस्म करके पृथ्वीमें प्रविष्ट हुई । कर्णके ऐसे कठिन कर्मको देखकर देवता लोग अत्यन्त ही विस्मित हुए ॥ अधिक क्या कहूं, उस समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदवप्लुत्य जग्राह देवसृष्टां महाशनिम् ॥ १०० ॥
एवं कृत्वा रणे कर्ण आरुरोह रथं पुनः ।
ततो मुमोच नाराचान्सूतपुत्रः परन्तप ॥ १०१ ॥
अशक्यं कर्तुमन्येन सर्वभूतेषु मानद ।
यदकार्षीत्तदा कर्णः संग्रामे भीमदर्शने ॥ १०२ ॥
स हन्यमानो नाराचैर्धाराभिरिव पर्वतः ।
गन्धर्वनगराकारः पुनरन्तरधीयत ॥ १०३ ॥
एवं स वै महाकायो मायया लाघवेन च ।
अस्त्राणि तानि दिव्यानि जघान रिपुसूदनः ॥ १०४॥
निहन्यमानेष्वस्त्रेषु मायया तेन रक्षसा ।
असम्भ्रान्तस्तदा कर्णस्तद्रक्षः प्रत्ययुध्यत ॥ १०५ ॥
ततः क्रुद्धो महाराज भैमसेनिर्महाबलः ।
चकार बहुधाऽऽत्मानं भीषयाणो महारथान् ॥ १०६॥
ततो दिग्भ्यः समापेतुः सिंहव्याघ्रतरक्षवः ।
अग्निजिह्वाश्च भुजगा विहगाश्चाऽप्ययोमुखाः ॥१०७॥

कर्णने जो सहसा कूदके महादेवकी बनाई उस प्रचण्ड तलवारको ग्रहण किया उसे देख सम्पूर्ण प्राणियोंने सूत-पुत्र कर्णकी अत्यन्त ही प्रशंसा किया॥ अनन्तर शत्रुनाशन कर्ण रणभूमिके बीच ऐसा कठिन कर्म करके फिर अपने रथपर चढके घटोत्कचकी ओर अनेक तेज नाराच बाण चलाने लगे॥९९-१०१

हे प्रजानाथ! उस भयङ्कर संग्रामके समय कर्णने जैसा कर्म किया; वैसे कर्मको करनेमें सम्पूर्ण प्राणियोंके बीच कोई भी पुरुष समर्थ नहीं है। जो हो; जैसे पर्वतके ऊपर लगातार जलकी वर्षा होती है वैसेही घटोत्कच लगातार कर्ण के बाणोंसे पीडित होकर गन्धर्व नगर की भांति फिर अन्तर्द्धान हुआ॥ महाराज! महाघोर राक्षसी मायासे युक्त शत्रुओंको नाश करनेवाले उस बडे शरीरवाले राक्षसने मायाबल और हस्त-लाघवके सहित अपने अस्त्रोंसे कर्णके चलाये हुए सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंको निवारण किया॥ (१०२–१०४)

परन्तु मायाके प्रभावसे बार बार सम्पूर्ण अस्त्रोंके निष्फल होने पर भी कर्ण निर्भयचित्तसे उस राक्षसके सङ्ग युद्ध करने लगे॥ कर्णका पराक्रम देख भीमसेन पुत्र घटोत्कचने अनेक रूप धारण किये; उससे सिंह बाघ तेंदुए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स कीर्यमाणो विशिखैः कर्णचापच्युतैः शरैः ।
नागराडिव दुष्प्रेक्ष्यस्तत्रैवाऽन्तरधीयत ॥ १०८ ॥
राक्षसाश्च पिशाचाश्च यातुधानास्तथैव च ।
शालावृकाश्च बहवो वृकाश्च विकृताननाः ॥ १०९ ॥
ते कर्णं क्षपयिष्यन्तः सर्वतः समुपाद्रवन् ।
अथैनं वाग्भिरुग्राभिस्त्रासयाञ्चक्रिरे तदा ॥ ११० ॥
उद्यतैर्बहुभिर्घोरैरायुधैः शोणितोक्षितैः ।
तेषामनेकैरेकैकं कर्णो विव्याध सायकैः ॥ १११ ॥
प्रतिहत्य तु तां मायां दिव्येनाऽस्त्रेण राक्षसीम् ।
आजघान हयानस्य शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ११२ ॥
ते भग्ना विक्षताङ्गाश्च भिन्नपृष्ठाश्च सायकैः ।
वसुधामन्वपद्यन्त पश्यतस्तस्य रक्षसः ॥ ११३ ॥
स भग्नमायो हैडिम्बिः कर्णं वैकर्तनं तदा ।
एष ते विदधे मृत्युमित्युक्त्वाऽन्तरधीयत ॥११४॥ [८०१२]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि रात्रियुद्धे कर्णघटोत्कचयुद्धे पञ्चसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७५ ॥

अग्निजिह्व सर्प और लोहमुख वाले पक्षियोंका रूप धारण करके चारों ओरसे अनेक राक्षस रणभूमिके बीच उपस्थित हुए ॥ (१०५–१०७)

महाराज! वह इस प्रकार युद्धभूमिमें उपस्थित होने पर भी कर्णके धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे छिप जानेसे नागराजके समान दुष्प्रेक्ष्य होकर वहाँ ही अन्तर्धान होगया ॥ तिसके अनन्तर भयङ्कर मुखवाले अनगिनत राक्षस और पिशाच अपनी सेनाके सहित भेढिये और शियार रूपसे कर्णको भक्षण करनेके वास्ते चारों ओरसे दौडने लगे । और वे सब राक्षस तथा पिशाच लोग रुधिर लिपटे हुए अनेक भांतिके भयंकर अस्त्रशस्त्रोंको ग्रहण करके कठोर वचन कहते हुए कर्णको भयभीत करने लगे ॥ (१०८–१११)

कर्ण उन हर एक राक्षसोंको अनगिनत बाणोंसे विद्ध करने लगे । अनन्तर दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे कर्णने राक्षसी मायाका नाश किया ॥ फिर अनेक चोखे बाणोंसे घटोत्कचके रथके घोडोंके शरीरमें प्रहार किया, उन घोडोंका कर्णके बाणोंसे सम्पूर्ण शरीर क्षतविक्षत होगया, और वे सम्पूर्ण घोडे घटोत्कचके सम्मुखहीमें प्राणरहित होकर पृथ्वीमें गिर पडे ॥ महाराज! इस प्रकार जब सम्पूर्ण माया नष्ट हुई तब हिडिम्बापुत्र घटोत्कच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— तस्मिंस्तथा वर्तमाने कर्णराक्षसयोर्मृधे।
अलायुधो राक्षसेन्द्रो वीर्यवानभ्यवर्तत ॥ १ ॥
महत्या सेनया युक्तो दुर्योधनमुपागमत्।
राक्षसानां विरूपाणां सहस्रैः परिवारितः ॥ २ ॥
नानारूपधरैर्वीरैः पूर्ववैरमनुस्मरन्।
तस्य ज्ञातिर्हि विक्रान्तो ब्राह्मणादो बको हतः ॥ ३ ॥
किर्मीरश्च महातेजा हिडिम्बश्च सखा तदा।
स दीर्घकालाध्युषितं पूर्ववैरमनुस्मरन् ॥ ४ ॥
विज्ञायैतन्निशायुद्धं जिघांसुर्भीममाहवे।
स मत्त इव मातङ्गः संक्रुद्ध इव चोरगः ॥ ५ ॥
दुर्योधनमिदं वाक्यमब्रवीद्युद्धलालसः।
विदितं ते महाराज यथा भीमेन राक्षसाः ॥ ६ ॥
हिडिम्बबककिर्मीरा निहता मम बान्धवाः।
परामर्शश्च कन्याया हिडिम्बायाः कृतः पुरा ॥ ७ ॥
किमन्यद्राक्षसानन्यानस्मांश्च परिभूय ह।

ने कर्णसे कहा "अब मैं तुम्हारी मृत्युका उपाय करता हूं" ऐसा कहके फिर अन्तर्द्धान हुआ ॥ (१११–११४) [८०१२]

द्रोणपर्वमें एकसौ पचत्तर अध्याय समाप्त

द्रोणपर्वमें एकसौ छिहत्तर अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! जब कर्ण और घटोत्कचका ऐसा युद्ध होने लगा, उसी समय पराक्रमी राक्षसराज अलायुध पुरानी शत्रुताके स्मरण करके नानावर्णवाले सहस्रों पराक्रमी और भयंकर राक्षसोंकी सेनाके सहित दुर्योधनके समीप उपस्थित हुआ। पहिले भीमसेन ने उसकी जातिके पराक्रमी विप्रघाती बक किर्मीर और उसके मित्र हिडिम्बका वध किया था। (१–४)

इस समय उससे रात्रिके युद्धके विषयको जानके अपने जाति–वधरूपी बहुत दिनोंकी शत्रुताको स्मरण करके भीमसेनके वधकी अभिलाषा किया। तब मतवारे हाथीकी भांति वह राक्षस क्रुद्ध होकर दुर्योधनके निकट उपस्थित होके इस प्रकार प्रार्थना करने लगा, हे राजेन्द्र! पहिले भीमसेनने मेरे बन्धु बक किर्मीर और हिडिम्बको जिस प्रकारसे मारा था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम्हें विदित है। विशेष करके उसने दूसरे राक्षस और मेरी अवमानना करके कन्या अवस्थामें हिडम्बा का धर्म नष्ट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमहं सगणं राजन्सवाजिरथकुञ्जरम् ॥ ८ ॥
हैडिम्बि च सहामात्यं हन्तुमभ्यागतः स्वयम् ।
अद्य कुन्तीसुतान्सर्वान्वासुदेवपुरोगमान् ॥ ९ ॥
हत्वा सम्भक्षयिष्यामि सर्वैरनुचरैः सह ।
निवारय बलं सर्वं वयं योत्स्याम पाण्डवान् ॥ १० ॥
तस्यैतद्वचनं श्रुत्वा हृष्टो दुर्योधनस्तदा ।
प्रतिगृह्याऽब्रवीद्वाक्यं भ्रातृभिः परिवारितः ॥ ११ ॥
त्वां पुरस्कृत्य सगणं वयं योत्स्यामहे परान् ।
नहि वैरान्तमनसः स्थास्यन्ति मम सैनिकाः ॥ १२ ॥
एवमस्त्विति राजानमुक्त्वा राक्षसपुङ्गवः ।
अभ्ययात्त्वरितो भैमिं सहितः पुरुषादकैः ॥ १३ ॥
दीप्यमानेन वपुषा रथेनाऽऽदित्यवर्चसा ।
तादृशेनैव राजेन्द्र यादृशेन घटोत्कचः ॥ १४ ॥
तस्याऽप्यतुलनिर्घोषो बहुतोरणचित्रितः ।

किया था । (४-८)

इससे आज मैं हाथी घोडे रथ और पैदल सेनाके सहित पाण्डवोंके और अनुयाइयोंके सहित हिडम्बापुत्र घटोत्कचके वधकी इच्छा करके स्वयं तुम्हारे समीप आके उपस्थित हुआ हूं। आज मैं कृष्ण के सहित कुन्ती पुत्रोंको मारके अपने अनुयायी राक्षसोंके सहित उनका मांस भक्षण करूंगा । इससे तुम अपनी सेनाके पुरुषोंको युद्धभूमिसे निवृत्त करो; हम लोग पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करेंगे।८-१०

भाइयोंके बीचमें घिरे हुए महाराजा दुर्योधन अलायुधराक्षसके वचनको सुनकर प्रसन्नताके सहित सत्कार करके यह वचन बोले, हे वीर ! मेरी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा शत्रुताको शेष करनेके वास्ते उत्सुक होकर पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं इससे वे लोग किसी प्रकारसे भी युद्धसे निवृत्त न होंगे पर हम लोग उन्हे और सेनाके योद्धाओंको अगाडी करके शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होंगे । (११-१२)

सञ्जय बोले, महाराज ! राक्षसराज अलायुध दुर्योधनके वचनको सुनकर ऐसा ही होवे कहके घटोत्कचका जैसा शरीर था, वैसा ही प्रकाशमान शरीर धारण करके सूर्यके समान प्रकाशमान रथपर चढा और मनुष्योंको भक्षण करनेवाले राक्षसोंकी सेनाको सङ्ग लेकर शीघ्रताके सहित घटोत्कचकी ओर दौडा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋक्षचर्मावनद्धाङ्गो नल्वमात्रो महारथः ॥ १५ ॥
तस्यापि तुरगाः शीघ्रा हस्तिकायाः खरस्वनाः।
शतं युक्ता महाकाया मांसशोणितभोजनाः ॥ १६ ॥
तस्यापि रथनिर्घोषो महामेघरवोपमः।
तस्यापि सुमहच्चापं दृढज्यं कनकोज्ज्वलम् ॥ १७ ॥
तस्याऽप्यक्षसमा बाणा रुक्मपुङ्खाः शिलाशिताः।
सोऽपि वीरो महाबाहुर्यथैव स घटोत्कचः ॥ १८ ॥
तस्यापि गोमायुबलाभिगुप्तो बभूव केतुर्ज्वलनार्कतुल्यः।
स चापि रूपेण घटोत्कचस्य श्रीमत्तमो व्याकुलदीपितास्यः ॥ १९ ॥
दीप्ताङ्गदो दीप्तकिरीटमाली बद्धस्रगुष्णीषनिबद्धखड्गः।
गदी भुशुण्डी मुसली हली च शरासनी वारणतुल्यवर्ष्मा ॥ २० ॥
रथेन तेनाऽनलवर्चसा तदा विद्रावयन्पाण्डववाहिनीं ताम्।
रराज संख्ये परिवर्तमानो विद्युन्माली मेघ इवाऽन्तरिक्षे ॥ २१ ॥

अलायुधका रथ भी बहुत बडा सुन्दर गंभीर घरघराहट शब्दसे युक्त भालूके चमडेसे घिरा हुआ और तोरण पताकासे शोभित था। उसके रथके घोडे भी घटोत्कचके घोडोंकी भांति शीघ्रगामी हाथीके समान शरीरवाले गधेकी भांति शब्द करनेवाले और मांसभोजी थे, उनकी संख्या भी एकसौसे कम नहीं थी। उसका धनुष भी घटोत्कचकी भांति दृढ रोदेसे युक्त और सुवर्णके तारोंसे प्रकाशित होरहा था ॥ (१२–१७)

शिलापर घिसे हुए सोनेके पंखवाले उसके बाण भी शोभित होरहे थे। इसी भांति उसके रथके ऊपर ऊंची ध्वजा अग्नि और सूर्यकी भांति प्रकाशित हो रही थी, वह ध्वजा गीदडोंके समूहसे रक्षित थी। वह स्वयं भी घटोत्कचकी भांति भुजबलमें समान था; उसके भयङ्कर रूपको देख सम्पूर्ण प्राणी व्याकुल हुए। महाराज! उस समय वह हाथीके समान रूप धारण करके सफेद किरीट कवच आभूषण माला आदि वस्तुओंसे शोभित हुआ और धनुष तलवार गदा भुशुण्डी मूसल और हल आदि अनेक भांतिके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके अग्निके समान अपने प्रकाशमान रथपर चढके चारों ओर पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंको छिन्न भिन्न करता हुआ इस प्रकार युद्धभूमिके बीच घूमने लगा, जैसे बिजलीसे युक्त जलकी वर्षा करनेवाले बादल चारों ओर आकाश मण्डलमें भ्रमण करते हैं ॥ (१८–२१)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते चापि सर्वप्रवरा नरेन्द्र महाबला वर्मिणश्चर्मिणश्च ।
हर्षान्विता युयुधुस्तस्य राजन्समन्ततः पाण्डवयोधवीराः॥२२॥ [८०३४]

इति श्रीमहा० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे अलायुधयुद्धे षट्सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१७६॥

सञ्जय उवाच— तमागतमभिप्रेक्ष्य भीमकर्माणमाहवे ।
हर्षमाहारयाञ्चक्रुः कुरवः सर्व एव ते ॥ १ ॥
तथैव तव पुत्रास्ते दुर्योधनपुरोगमाः ।
अप्लवाः प्लवमासाद्य तर्तुकामा इवार्णवम् । ॥ २ ॥
पुनर्जातमिवाऽऽत्मानं मन्वानाः पुरुषर्षभाः ।
अलायुधं राक्षसेन्द्रं स्वागतेनाऽभ्यपूजयन् ॥ ३ ॥
तस्मिंस्त्वमानुषे युद्धे वर्तमाने महाभये ।
कर्णराक्षसयोर्नक्तं दारुणप्रतिदर्शने ॥ ४ ॥
उपप्रैक्षन्त पञ्चालाः सृयमानाः सराजकाः ।
तथैव तावका राजन्वीक्षमाणास्ततस्ततः ॥ ५ ॥
चुक्रुशुर्नेदमस्तीति द्रोणद्रौणिकृपादयः ।

उसे इसप्रकार युद्धभूमिके बीच घूमते देख पाण्डवोंकी सेनाके महाबलवान् मुख्य मुख्य राजा लोग भी कवच धारण कियेहुए तथा अस्त्र-शस्त्रोंसे सज्जित होकर प्रसन्न चित्तसे उसके चारों ओर युद्ध करने में प्रवृत्त हुए ॥ (२२) [८०३४]

द्रोणपर्वमें एकसौ छिहत्तर अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ सतत्तर अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! उस समय कौरव लोग उस भयङ्कर रूपवाले उस राक्षसराजको युद्धमें प्रवृत्त देख कर अत्यन्त ही हर्षित हुए, और अपनेको पुनः जन्मलेते हुए के समान माननेवाले दुर्योधन आदि तुम्हारे पुत्रोंने अलायुधको देखकर इस प्रकार स्वागत प्रश्न करके उसका आदर किया, जैसे समुद्रसे पार होनेकी इच्छावाले पुरुष नौका रहित होकर फिर नौकाको पाकर प्रसन्न होते हैं ॥ (१—३)

हे भारत ! कर्ण और घटोत्कचका उस रात्रिके समय जब महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा; उस समय हिडिम्बापुत्र घटोत्कच और महावीर कर्णके पराक्रमको देखते हुए शत्रुसेनाके सम्पूर्ण राजा और पाञ्चाल सेनाके योद्धा लोग विस्मित होकर केवल मध्यस्थ पुरुषोंकी भांति उन दोनों वीरोंका युद्ध देखने लगे और अश्वत्थामा द्रोणाचार्य कृपाचार्य आदि तुम्हारी ओरके महारथी योद्धा लोग घटोत्कचका पराक्रम देखकर भयभीत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्कर्म दृष्ट्वा सम्भ्रान्ता हैडिम्बस्य रणाजिरे ॥ ६ ॥
सर्वमाविग्नमभवद्धाहाभूतमचेतनम् ।
तव सैन्यं महाराज निराशं कर्णजीविते ॥ ७ ॥
दुर्योधनस्तु सम्प्रेक्ष्य कर्णमार्तं परां गतम् ।
अलायुधं राक्षसेन्द्रं समाहूयेदमब्रवीत् ॥ ८ ॥
एष वैकर्तनः कर्णो हैडिम्बेन समागतः ।
कुरुते कर्म सुमहद्यदस्यौपयिकं मृधे ॥ ९ ॥
पश्यैतान्पार्थिवाञ्शूरान्निहतान्भैमसेनिना ।
नानाशस्त्रैरभिहतान्पादपानिव दन्तिना ॥ १० ॥
तवैष भागः समरे राजमध्ये मया कृतः ।
तवैवाऽनुमते वीर तं विक्रम्य निबर्हय ॥ ११ ॥
पुरा वैकर्तनं कर्णमेष पापो घटोत्कचः ।
मायाबलं समाश्रित्य कर्षयत्यरिकर्शन ॥ १२ ॥
एवमुक्तः स राज्ञा तु राक्षसो भीमविक्रमः ।
तथेत्युक्त्वा महाबाहुर्घटोत्कचमुपाद्रवत् ॥ १३ ॥

होकर ऊंचे स्वरसे पुकारके कहने लगे, सम्पूर्ण योद्धाओंका नाश हुआ चाहता है ॥ (४–६)

विशेष करके तुम्हारी सेनाके पुरुष कर्णके जीवनसे निराश होकर हाहाकार शब्दके सहित कोलाहल मचाने लगे। उस ही समय कुरुराज दुर्योधन कर्णको घटोत्कचके अस्त्रोंसे अत्यन्त पीडित देख राक्षसराज अलायुधको आवाहन करके उससे यह वचन बोले, हे वीर ! यह देखो वैकर्त्तन कर्ण रणभूमिके बीच घटोत्कचके सङ्ग अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध कर रहे हैं; तौ भी मेरी सेनाके बहुतेरे योद्धा और राजा लोग घटोत्कचके नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसे पीडित होकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिर रहे हैं; जैसे हाथीके सूण्डसे टूटके बहुतेरे वृक्ष पृथ्वी पर गिर पडते हैं ॥ (७–१०)

हे वीर ! इससे जब तक यह पापी राक्षस मायाबलके आसरेसे शत्रुनाशन कर्णका वध नहीं करता है, उससे पहिले ही तुम पराक्रम प्रकाशित करके घटोत्कचका वध करो; क्योंकि तुम्हारी अनुमतिसे ही इस राक्षसको मैंने तुम्हारा भाग निश्चित किया है ॥ (११–१२)

जब राजा दुर्योधनने ऐसा वचन कहा, तब महा पराक्रमी महाबाहु अलायुध राक्षस उनके वचनको स्वीकार करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः कर्णं समुत्सृज्य भैमसेनिरपि प्रभो ।
प्रत्यमित्रमुपायान्तमर्दयामास मार्गणैः ॥ १४ ॥
तयोः समभवद्युद्धं क्रुद्धयो राक्षसेन्द्रयोः ।
मत्तयोर्वासिताहेतोर्द्विपयोरिव कानने ॥ १५ ॥
रक्षसा विप्रमुक्तस्तु कर्णोऽपि रथिनां वरः ।
अभ्यद्रवद्भीमसेनं रथेनाऽऽदित्यवर्चसा ॥ १६ ॥
तमायान्तमनादृत्य दृष्ट्वा ग्रस्तं घटोत्कचम् ।
अलायुधेन समरे सिंहेनेव गवां पतिम् ॥ १७ ॥
रथेनाऽऽदित्यवपुषा भीमः प्रहरतां वरः ।
किरञ्छरौघान्प्रययावलायुधरथं प्रति ॥ १८ ॥
तमायान्तमभिप्रेक्ष्य स तदाऽलायुधः प्रभो ।
घटोत्कचं समुत्सृज्य भीमसेनं समाह्वयत् ॥ १९ ॥
तं भीमः सहसाऽभ्येत्य राक्षसान्तकरः प्रभो ।
सगणं राक्षसेन्द्रं तं शरवर्षैरवाकिरत् ॥ २० ॥
तथैवाऽलायुधो राजञ्शिलाधौतैरजिह्मगैः ।

घटोत्कचकी ओर दौडा ॥ भीमपुत्र घटोत्कच भी युद्धभूमिमें कर्णको त्यागके संमुख आये हुए निज शत्रु अलायुधको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीडित करने लगा ॥ महाराज ! उस समय उन दोनों क्रोधी राक्षसराज घटोत्कच और अलायुधका इस प्रकार महाघोर युद्ध होने लगा जैसे वनके बीच हाथिनीके वास्ते दो मतवारे हाथियोंका युद्ध होता है ॥ (१३--१५)

इधर महारथियोंमें मुख्य कर्ण घटोत्कचसे मुक्त होकर उस समय सूर्यके समान अपने प्रकाशमान रथ पर चढके भीमसेनकी ओर दौडे ! परन्तु कर्ण इस प्रकार भीमसेनकी ओर गमन कर रहे थे तौ भी भीमसेन सिंहसे पकडे गये वृषभकी भांति अपने पुत्र घटोत्कचको अलायुध राक्षसके अस्त्रोंसे पीडित देखकर कर्णसे युद्ध न करके सूर्य किरणके समान प्रकाशमान रथपर चढके अपने बाणोंको चलाते हुए अलायुधके रथकी ओर गमन करने लगे ॥ (१६-१८)

अलायुधने भीमसेनको अपनी ओर आते देख घटोत्कचको त्यागके युद्धभूमिमें भीमसेन ही को आवाहन किया ॥ राक्षसोंके नाश करनेवाले भीमसेन राक्षसी सेनाके सहित राक्षसराज अलायुधको आक्रमण करके उसे अपने बाणोंसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यवर्षत कौन्तेयं पुनः पुनररिन्दम ॥ २१ ॥
तथा ते राक्षसाः सर्वे भीमसेनमुपाद्रवन् ।
नानाप्रहरणा भीमास्त्वत्सुतानां जयैषिणः ॥ २२ ॥
स ताड्यमानो बहुभिर्भीमसेनो महाबलः ।
पञ्चभिः पञ्चभिः सर्वांस्तानविध्यच्छितैः शरैः ॥२३॥
ते वध्यमाना भीमेन राक्षसाः क्रूरबुद्धयः ।
विनेदुस्तुमुलान्नादान्दुद्रुवुस्ते दिशो दश ॥ २४ ॥
तांस्त्रास्यमानान्भीमेन दृष्ट्वा रक्षो महाबलम् ।
अभिदुद्राव वेगेन शरैश्चैनमवाकिरत् ॥ २५ ॥
तं भीमसेनः समरे तीक्ष्णाग्रैरक्षिणोच्छरैः ।
अलायुधस्तु तानस्तान्भीमेन विशिखान्रणे ॥ २६ ॥
चिच्छेद कांश्चित्समरे त्वरया कांश्चिदग्रहीत् ।
स तं दृष्ट्वा राक्षसेन्द्रं भीमो भीमपराक्रमः ॥ २७ ॥
गदां चिक्षेप वेगेन वज्रपातोपमां तदा ।
तामापतन्तीं वेगेन गदां ज्वालाकुलां ततः ॥ २८ ॥

पीडित करने लगे ॥ उसी भांति अलायुध भी भीमसेनके ऊपर शिलापर घिसे हुए तीक्ष्ण बाणोंको चलाने लगा ॥ और उसकी सेनाके भयङ्कर रूपवाले राक्षस लोग भी नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके कौरवोंके विजयकी इच्छा करतेहुए भीमसेनकी ओर दौडे॥१९-२२

महाबलवान् भीमसेनने इसी भांति राक्षसोंके अस्त्रोंसे पीडित होकर उन हर एक राक्षसोंको पांच पांच बाणोंसे विद्ध किया ॥ क्रूर बुद्धिवाले राक्षस लोग भीमसेनके बाणोंसे पीडित होकर महा-घोर कोलाहल मचाते हुए चारों ओर भागने लगे । (२३-२४)

महाबलवान् अलायुध राक्षस अपनी सेनाके राक्षसोंको भयभीत देख, वेग पूर्वक भीमसेनकी ओर दौडके उन्हें अपने बाणोंसे छिपाने लगा ॥ वैसे ही भीमसेन भी अपने तीक्ष्ण-बाणोंको अला-युधके ऊपर वर्षाने लगे, अलायुधने भीमसेन के चलाये हुए कितने ही बाणों को अपने तेज बाणोंसे काटके गिराया और कितनेही बाणोंको शीघ्रता के सहित ग्रहण किया । उसे देखकर भीमसेनने वज्रके समान गदा उठाके अलायुधकी ओर चलायी । (२५-२८)

महाराज ! अग्निके समान प्रकाशमान् उस गदाको सम्मुख आती देख अलायुध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गदया ताडयामास सा गदा भीममाव्रजत् ।
स राक्षसेन्द्रं कौन्तेयः शरवर्षैरवाकिरत् ॥ २९ ॥
तानप्यस्याऽकरोन्मोघान्राक्षसो निशितैः शरैः ।
ते चाऽपि राक्षसाः सर्वे रजन्यां भीमरूपिणः ॥ ३० ॥
शासनाद्राक्षसेन्द्रस्य निजघ्नू रथकुञ्जरान् ।
पञ्चालाः सृञ्जयाश्चैव वाजिनः परमद्विपाः ॥ ३१ ॥
न शान्तिं लेभिरे तत्र राक्षसैर्भृशपीडिताः ।
तं तु दृष्ट्वा महाघोरं वर्तमानं महाहवम् ॥ ३२ ॥
अब्रवीत्पुण्डरीकाक्षो धनञ्जयमिदं वचः ।
पश्य भीमं महाबाहुं राक्षसेन्द्रवशङ्गतम् ॥ ३३ ॥
पदमस्याऽनुगच्छ त्वं मा विचारय पाण्डव ।
धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च युधामन्यूत्तमौजसौ ॥ ३४ ॥
सहितौ द्रौपदेयाश्च कर्णं यान्तु महारथाः ।
नकुलः सहदेवश्च युयुधानश्च वीर्यवान् ॥ ३५ ॥
इतरान्राक्षसान्घ्नन्तु शासनात्तव पाण्डव ।

ने अपनी गदाको चलाकर भीमसेनकी गदाको निवारण किया । अलायुधकी गदासे निवारित होकर वह गदा भीमसेनकी ही ओर चली । अनन्तर कुन्तीपुत्र भीमसेन अलायुधको अनगिनत बाणोंसे छिपाने लगे ॥ परन्तु उसने अपने तीक्ष्ण बाणों के प्रभावसे भीमसेन के सम्पूर्ण बाणोंको निष्फल किया ॥ (२८-३०)

उस रात्रिके समय अलायुधकी आज्ञा से महापराक्रमी भयङ्कर रूपवाले राक्षस लोग पाण्डवोंके रथ और गजसेनाका नाश करने लगे । उस समय बडे बडे हाथी घोडे और पाञ्चाल सृञ्जय आदि योद्धा लोग राक्षसोंके अस्त्रोंसे पीडित होकर युद्धभूमिमें विचलित होने लगे । पुण्डरीकाक्ष कृष्ण उस महाभयंकर संग्रामके उपस्थित होने पर अर्जुनसे यह वचन बोले, हे अर्जुन ! यह देखो, महाबाहु भीमसेन अलायुध के वशमें होगये हैं इससे कुछभी विचार न करके भीमसेनकी सहायताके वास्ते गमन करो ॥ ३०-३४

हे पुरुषशार्दूल ! तुम्हारी आज्ञाके अनुसार महारथी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, युधामन्यु, उत्तमौजा और द्रौपदीके पांच पुत्र मिलकर कर्णके विरुद्ध युद्धके वास्ते उनके समीप गमन करें; पराक्रमी सात्यकि नकुल और सहदेव अलायुध की सेनाके राक्षसोंका नाश करें । और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वमपीमां महाबाहो चमूं द्रोणपुरस्कृताम् ॥ ३६ ॥
वारयस्व नरव्याघ्र महद्धि भयमागतम् ।
एवमुक्ते तु कृष्णेन यथोद्दिष्टा महारथाः ॥ ३७ ॥
जग्मुर्वैकर्तनं कर्णं राक्षसांश्चैव तान्रणे ।
अथ पूर्णायतोत्सृष्टैः शरैराशीविषोपमैः ॥ ३८ ॥
धनुश्चिच्छेद भीमस्य राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् ।
हयांश्चाऽस्य शितैर्बाणैः सारथिं च महाबलः ॥ ३९ ॥
जघान मिषतः संख्ये भीमसेनस्य राक्षसः ।
सोऽवतीर्य रथोपस्थाद्धताश्वो हतसारथिः ॥ ४० ॥
तस्मै गुर्वीं गदां घोरां विनदन्नुत्ससर्ज ह ।
ततस्तां भीमनिर्घोषामापतन्तीं महागदाम् ॥ ४१ ॥
गदया राक्षसो घोरो निजघान ननाद च ।
तद् दृष्ट्वा राक्षसेन्द्रस्य घोरं कर्म भयावहम् ॥ ४२ ॥
भीमसेनः प्रहृष्टात्मा गदामाशु परामृशत् ।
तयोः समभवद्युद्धं तुमुलं नररक्षसोः ॥ ४३ ॥
गदानिपातसंहादैर्भुवं कम्पयतोर्भृशम् ।

द्रोणाचार्यसे रक्षित इस व्यूहबद्ध सेनाके योद्धाओंका तुम स्वयं निवारण करो; क्यों कि इस समय महाभय उपस्थित हुआ है। श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुनकर वे महारथी योद्धा लोग वैकर्तन कर्ण और अलायुधकी सेनाकी ओर दौडे। (३४—३८)

महाराज ! इतने ही समयके बीच महाबली प्रतापी राक्षसराज अलायुधने विषधर सर्पके समान तेजस्वी बाणोंसे भीमसेनके धनुष घोडे और सारथीको काट डाला ॥ घोडे सारथीके मरने और धनुष कटने पर भीमसेनने रथमेंसे एक भारी गदा उठाके गर्जते हुए अलायुध राक्षसकी ओर चलायी। उस महाघोर गदाको भयङ्कर शब्दके सहित अपनी ओर आती देख भयङ्कर रूपवाला अलायुध राक्षस अपनी गदाको चला कर भीमसेनकी गदाको निवारण करके सिंहनाद करने लगा। (३८–४२)

महाराज ! भीमसेनने उस राक्षस श्रेष्ठ अलायुधके ऐसे महाघोर भयङ्कर कर्मको देख फिर हर्षित होकर गदा ग्रहण किया। जब इसी भांति उन दोनों वीरोंका युद्ध होने लगा तब गदाके खटखट शब्दसे पृथ्वी कांपने लगी। तिसके अनन्तर वे दोनों वीर गदा फेंक एक दूसरेको ग्रहण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गदाविमुक्तौ तौ भूयः समासाद्येतरेतरम् ॥ ४४ ॥
मुष्टिभिर्वज्रसंहादैरन्योन्यमभिजघ्नतुः ।
रथचक्रैर्युगैरक्षैरधिष्ठानैरुपस्करैः ॥ ४५ ॥
यथासन्नमुपादाय निजघ्नतुरमर्षणौ ।
तौ विक्षरन्तौ रुधिरं समासाद्येतरेतरम् ॥ ४६ ॥
मत्ताविव महानागौ चकृषाते पुनः पुनः ।
तद्दृष्ट्वा वृष्णिकेशः पाण्डवानां हिते रतः ॥ ४७ ॥
स भीमसेनरक्षार्थं हैडिम्बं पर्यचोदयत् ॥ ४८ ॥ [८०८२]

इति श्रीमहा० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे अलायुधयुद्धे सप्तसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः॥१७७॥

सञ्जय उवाच— सन्दृश्य समरे भीमं रक्षसा ग्रस्तमान्तिकात् ।
वासुदेवोऽब्रवीद्राजन्घटोत्कचमिदं वचः ॥ १ ॥
पश्य भीमं महाबाहो रक्षसा ग्रस्तमाहवे ।
पश्यतां सर्वसैन्यानां तव चैव महाद्युते ॥ २ ॥
स कर्णं त्वं समुत्सृज्य राक्षसेन्द्रमलायुधम् ।
जहि क्षिप्रं महाबाहो पश्चात्कर्णं वधिष्यसि ॥ ३ ॥
स वार्ष्णेयवचः श्रुत्वा कर्णमुत्सृज्य वीर्यवान् ।

करके अपने मुक्केसे प्रहार करने लगे और रथके चक्के, धुरी, काष्ठ, तथा और जो कुछ वस्तु उन दोनोंने अपने समीप में पाया वह सब वस्तु उठा उठाके एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे॥ ४२-४५

तिसके अनन्तर एक दूसरेको ग्रहण करके मल्लयुद्ध करते हुए मतवारे हाथीकी भांति एक दूसरेको अपनी ओर आकर्षण करने लगे। उस समय उन दोनों वीरोंके शरीरसे लगातार रुधिरकी धारा बहने लगी। पाण्डवोंके हितैषी श्रीकृष्ण उन दोनों वीरोंका ऐसा युद्ध देखकर भीमसेनकी रक्षाके वास्ते घटोत्कचसे यह वचन बोले ॥ (४६-४८) [८०८२]

द्रोणपर्वमें एकसौ सतत्तर अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ अठत्तर अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज! श्रीकृष्णचन्द्र युद्धभूमिके बीच भीमसेनको राक्षसके वशमें होते देख घटोत्कचसे बोले ॥ हे तेजस्वी श्रेष्ठ महाबाहु घटोत्कच! यह देखो यह भीमसेन तुम्हारे और सम्पूर्ण सेनाके संमुखमें ही राक्षसके वशमें होगये हैं; इससे तुम इस समय कर्णको त्यागके अलायुध राक्षसका वध करो पीछे कर्णका नाश करना ॥ (१-३)

पराक्रमी घटोत्कच वृष्णिनन्दन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युयुधे राक्षसेन्द्रेण बकभ्रात्रा घटोत्कचः ॥ ४ ॥
तयोः सुतुमुलं युद्धं बभूव निशि रक्षसोः।
अलायुधस्य चैवोग्रं हैडिम्बेश्चाऽपि भारत ॥ ५ ॥
अलायुधस्य योधांश्च राक्षसान्भीमदर्शनान्।
वेगेनाऽऽपततः शूरान्प्रगृहीतशरासनान् ॥ ६ ॥
आत्तायुधः सुसंक्रुद्धो युयुधानो महारथः।
नकुलः सहदेवश्च चिच्छिदुर्निशितैः शरैः ॥ ७ ॥
सर्वांश्च समरे राजन्किरीटी क्षत्रियर्षभान्।
परिचिक्षेप बीभत्सुः सर्वतः प्रकिरञ्छरान् ॥ ८ ॥
कर्णश्च समरे राजन्व्यद्रावयत पार्थिवान्।
धृष्टद्युम्नशिखण्ड्यादीन्पञ्चालानां महारथान् ॥ ९ ॥
तान्वध्यमानान्दृष्ट्वाऽथ भीमो भीमपराक्रमः।
अभ्ययात्त्वरितः कर्णं विशिखान्प्रकिरन्रणे ॥ १० ॥
ततस्तेऽप्याययुर्हत्वा राक्षसान्यत्र सूतजः।
नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्च महारथः ॥ ११ ॥
ते कर्णं योधयामासुः पञ्चाला द्रोणमेव तु।

कृष्णके ऐसे वचनको सुनकर बकके भाई अलायुध राक्षसके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुआ, अनन्तर उस रात्रिके समय उन दोनों राक्षसोंका महाघोर तुमुल संग्राम होने लगा। इसी समय जब अलायुधकी सेनाके भयानक रूपवाले राक्षस लोग धनुष चढाकर पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौडे तब शस्त्रधारियोंमें मुख्य सात्यकि नकुल और सहदेव अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उन सम्पूर्ण राक्षसोंके शरीरको खण्ड खण्ड करके पृथ्वीमें गिराने लगे॥ ४-७ इधर किरीटमाली अर्जुन अपने बाणोंको चलाकर मुख्य मुख्य क्षत्रियोंको पीडित करने लगे। वैसे ही सूतपुत्र कर्ण धृष्टद्युम्न शिखण्डी आदि पाञ्चाल सेनाके महारथी राजाओंको छिन्न भिन्न करके युद्धभूमिमें भगाने लगे। महापराक्रमी भीमसेन उन महारथी वीरोंको कर्णके बाणोंसे पीडित देखकर अपने बाणोंको वर्षाते हुए शीघ्रताके सहित कर्णकी ओर दौडे॥ (८-१०)

महाराज! इस ही समय सात्यकि नकुल और सहदेव क्षणभरके बीच राक्षसोंका वध करके जिस स्थानपर सूतपुत्र कर्ण युद्ध कर रहे थे उस ही स्थलपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलायुधस्तु संक्रुद्धो घटोत्कचमरिन्दमम् ॥
परिघेणाऽतिकायेन ताडयामास मूर्धनि ॥ १२ ॥
स तु तेन प्रहारेण भैमसेनिर्महाबलः ।
ईषन्मूर्च्छितमात्मानमस्तम्भयत वीर्यवान् ॥ १३ ॥
ततो दीप्ताग्निसंकाशां शतघण्टामलंकृताम् ।
चिक्षेप तस्मै समरे गदां काञ्चनभूषिताम् ॥ १४ ॥
सा हयांश्च रथं चाऽस्य सारथिं च महास्वना ।
चूर्णयामास वेगेन विसृष्टा भीमकर्मणा ॥ १५ ॥
स भग्नहयचक्राक्षाद्विशीर्णध्वजकूबरात् ।
उत्पपात रथात्तूर्णं मायामास्थाय राक्षसीम् ॥ १६ ॥
स समास्थाय मायां तु ववर्ष रुधिरं बहु ।
विद्युद्भिश्राजितं चाऽऽसीत्तुमुलाभ्राकुलं नभः ॥ १७ ॥
ततो वज्रनिपाताश्च साशनिस्तनयित्नवः ।
महांश्चटचटाशब्दस्तत्राऽऽसीच्च महाहवे ॥ १८ ॥
तां प्रेक्ष्य महतीं मायां राक्षसो राक्षसस्य च ।

आके उपस्थित हुए ॥ अनन्तर जब वे लोग कर्णके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए तब पाञ्चाल सेनाके योद्धा लोग द्रोणाचार्य की ओर दौडे । इधर शत्रुनाशन अलायुधने एक बडा परिघ उठाके घटोत्कचके ऊपर प्रहार किया ॥ घटोत्कच अलायुधके परिघकी चोटसे मूर्च्छितप्राय होगया ॥ (११—१३)

तिसके अनन्तर घटोत्कचने सावधान होकर एक सौ घण्टियोंसे युक्त एक भयंकर गदाको ग्रहण करके अलायुधकी ओर चलायी ॥ महाराज ! वह भयंकरी गदा पराक्रमी घटोत्कचके हाथसे छूटकर महाघोर शब्दके सहित अलायुधके रथपर गिरी, उस गदाकी चोटसे अलायुधके घोडे सारथी और रथ टुकडे टुकडे होकर पृथ्वीमें गिर पडे ॥ तब अलायुध ध्वजा, धुरी, चक्र, घोडे और सारथीसे रहित रथसे उतरके राक्षसी माया प्रगट करके रुधिरकी वर्षा करने लगा। उस समय आकाशमण्डल बादलोंसे परिपूरित होकर अन्धकारसे युक्त होगया उस समय आकाशमें बादल गर्जने लगे बिजली चमकने लगी और वज्रका शब्द सुनाई देने लगा । उस समय उस महाघोर संग्रामभूमिमें अस्त्रशस्त्रोंके चलनेसे चटचट शब्द होने लगा ॥ (१४-१८)

तब हिडिम्बापुत्र घटोत्कच अलायुध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्ध्वमुत्पत्य हैडिम्बिस्तां मायां मायया ऽवधीत् ॥ १९ ॥
सोऽभिवीक्ष्य हतां मायां मायावी माययैव हि ।
अश्मवर्षं सुतुमुलं विससर्ज घटोत्कचे ॥ २० ॥
अश्मवर्षं स तं घोरं शरवर्षेण वीर्यवान् ।
दिक्षु विध्वंसयामास तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ २१ ॥
ततो नानाप्रहरणैरन्योन्यमभिवर्षताम् ।
आयसैः परिघैः शूलैर्गदामुसलमुद्गरैः ॥ २२ ॥
पिनाकैः करवालैश्च तोमरप्रासकम्पनैः ।
नाराचैर्निशितैर्भल्लैः शरैश्चक्रैः परश्वधैः ।
अयोगुडैर्भिन्दिपालैर्गोशीर्षोलूखलैरपि ॥ २३ ॥
उत्पाटितैर्महाशाखैर्विविधैर्जगतीरुहैः ।
शमीपीलुकदम्बैश्च चम्पकैश्चैव भारत ॥ २४ ॥
इंगुदैर्बदरीभिश्च कोविदारैश्च पुष्पितैः ।
पलाशैश्चाऽरिमेदैश्च प्लक्षन्यग्रोधपिप्पलैः ॥ २५ ॥
महद्भिः समरे तस्मिन्नन्योन्यमभिजघ्नतुः ।
विपुलैः पर्वताग्रैश्च नानाधातुभिराचितैः ॥ २६ ॥

राक्षसकी ऐसी महाघोर मायाको देखकर आकाशमें गया और मुहूर्त्त भरके बीच अपनी मायासे उसकी मायाको नष्ट कर दिया ॥ मायावी अलायुध राक्षस अपनी मायाको नष्ट होती देख घटोत्कचके ऊपर शिलाकी वर्षा करने लगा; शिलाकी वर्षाको देखकर पराक्रमी घटोत्कच राक्षस सम्पूर्ण दिशाओंको अपने बाणोंसे परिपूरित करके इस प्रकार अपने बाणोंको वर्षाने लगा, कि उससे क्षण भरके बीच शिलाकी वर्षा नष्ट होगई, उस समय घटोत्कचका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पडा ॥ (१९–२१)

तिसके अनन्तर वे दोनो वीर लोहमय परिघ, शूल, गदा, मूषल, मुद्गर, पिनाक, करवाल, तोमर, प्रास, कम्पन, नाराच, तेजधारवाले भाले, बाण, चक्र, फरशे, भिन्दिपाल आदि अनेक भांतिके अस्त्रोंको चलाते हुए एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे। फिर बडे बडे शाखाओंसे युक्त शमी, चम्पा, इंगुद, बदरी, फुले हुए काञ्चन, पलाश, अरिमेद, प्लक्ष और पीपल आदि अनेक प्रकारके बडे वृक्ष और नाना भांतिकी धातुओंसे युक्त पर्वतके शिखरोंको उखाडके एक दूसरेके ऊपर प्रहार करने लगे ॥ २२-२६

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेषां शब्दो महानासीद्वज्राणां भिद्यतामिव ।
युद्धं समभवद्घोरं भैम्यलायुधयोर्नृप ॥ २७ ॥
हरीन्द्रयोर्यथा राजन्वालिसुग्रीवयोः पुरा ।
तौ युद्ध्वा विविधैर्घोरैरायुधैर्विशिखैस्तथा ।
प्रगृह्य च शितौ खड्गावन्योन्यमभिपेततुः ॥ २८ ॥
तावन्योन्यमभिद्रुत्य केशेषु सुमहाबलौ ।
भुजाभ्यां पर्यगृह्णीतां महाकायौ महाबलौ ॥ २९ ॥
तौ स्विन्नगात्रौ प्रस्वेदं सुस्रुवाते जनाधिप ।
रुधिरं च महाकायावतिवृष्टाविवाऽम्बुदौ ॥ ३० ॥
अथाऽभिपत्य वेगेन समुद्भ्राम्य च राक्षसम् ।
बलेनाऽऽक्षिप्य हैडिम्बिश्चकर्ताऽस्य शिरो महत् ॥ ३१ ॥
सोऽपहृत्य शिरस्तस्य कुण्डलाभ्यां विभूषितम् ।
तदा सुतुमुलं नादं ननाद सुमहाबलः ॥ ३२ ॥
हतं दृष्ट्वा महाकायं बकज्ञातिमरिन्दमम् ।
पञ्चालाः पाण्डवाश्चैव सिंहनादान्विनेदिरे ॥ ३३ ॥

उस समय जब वे दोनों वीर युद्ध करने लगे तब पर्वतोंके शिखरोंके भेदन होनेका बडाभारी वज्रके महाघोर शब्दकी भांति नाद सुनाई देने लगा। महाराज उस समय अलायुध और घटोत्कचका ऐसा महाभयङ्कर संग्राम होने लगा जैसे पहिले समयमें वानरराज वालि और सुग्रीवका युद्ध हुआ था। इसी भांति वे दोनों बडे शरीरवाले महाबलवान् राक्षस बहुत समयतक नाना भांतिके अस्त्रशस्त्रोंसे युद्ध करके फिर दोनों उत्तम पानी चढे हुए तलवारको ग्रहण करके तलवारयुद्ध करने लगे ॥ अनन्तर उन दोनोंने दौडके एक दूसरेके केशको ग्रहण किया। महाराज ! उस समय उन दोनोंके शरीरसे इस प्रकार पसीना और रुधिर बाहर होने लगा, जैसे पर्वतके ऊपरसे जलकी धारा बहती है ॥ (२७-३०)

अनन्तर हिडिम्बापुत्र घटोत्कचने शीघ्रताके सहित अलायुधको घुमाकर पृथ्वीमें पटका और तलवारसे उसका सिर काट डाला ॥ उस समय घटोत्कच अलायुधके कुण्डल शोभित सिरको काटके गंभीर स्वरसे गर्जने लगा ॥ पाञ्चाल योद्धा और पाण्डव लोग बक राक्षसके भाई अलायुध राक्षसको मरते देख आनन्दित होके महाघोर सिंहनाद करने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो भेरीसहस्राणि शङ्खानामयुतानि च ।
अवादयन्पाण्डवेया राक्षसे निहते युधि ॥ ३४ ॥
अतीव सा निशा तेषां बभूव विजयावहा ।
विद्योतमाना विबभौ समन्ताद्दीपमालिनी ॥ ३५ ॥
अलायुधस्य तु शिरो भैमसेनिर्महाबलः ।
दुर्योधनस्य प्रमुखे चिक्षेप गतचेतसः ॥ ३६ ॥
अथ दुर्योधनो राजा दृष्ट्वा हतमलायुधम् ।
बभूव परमोद्विग्नः सह सैन्येन भारत ॥ ३७ ॥
तेन ह्यस्य प्रतिज्ञातं भीमसेनमहं युधि ।
हन्तेति स्वयमागम्य स्मरता वैरमुत्तमम् ॥ ३८ ॥
ध्रुवं स तेन हन्तव्य इत्यमन्यत पार्थिवः ।
जीवितं चिरकालं हि भ्रातॄणां चाऽप्यमन्यत ॥ ३९ ॥
स तं दृष्ट्वा विनिहतं भीमसेनात्मजेन वै ।
प्रतिज्ञां भीमसेनस्य पूर्णामेवाऽभ्यमन्यत ॥ ४० ॥ [८१२२]

इति श्रीमहा० द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे अलायुधवधे अष्टसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७८ ॥

लगे, और सहस्रों भेरी, शंख, ढोल, मृदङ्ग, आदि युद्धके जुझाऊ बाजोंको बजाने लगे ॥ (३१-३४)

महाराज ! जब युद्धभूमिमें अलायुध राक्षस मारा गया, तब चारों ओरसे दीपकके प्रकाशसे शोभित पाण्डवोंकी सेना उस रात्रिके समय जययुक्त होकर अत्यन्त ही प्रकाशित होने लगी ॥ उसी समय महाबलवान् घटोत्कचने प्राणरहित अलायुध राक्षसके कटे हुए सिरको उठाकर विह्वलचित्तसे युक्त दुर्योधनके संमुख फेंक दिया ॥ (३५-३६)

हे महाराज ! राजा दुर्योधन अलायुधको मरा हुआ देखकर अपनी सेनाके पुरुषोंके सहित अत्यन्त ही व्याकुल हुए ॥ क्योंकि अलायुधने पाण्डवोंकी पुरानी शत्रुताको स्मरण करके तुम्हारी सेनाके बीच स्वयं आके दुर्योधनके समीप "मैं भीमसेनका वध करूंगा," ऐसा कहके प्रतिज्ञा कियी थी; उससे दुर्योधनने यह समझा था, कि इसके हाथसे भीमसेन अवश्य ही मारा जावेगा, और भीमसेनके मरनेसे भाइयोंके सहित मेरा जीवन बहुत दिनों तक निर्विघ्नताके सहित बीतेगा ॥ परन्तु इस समय भीमसेनपुत्र घटोत्कचके हाथसे अलायुधको ही मरते देखकर दुर्योधनने समझा, कि अब अवश्य ही भीमसेनकी प्रतिज्ञा पूर्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— निहत्याऽलायुधं रक्षः प्रहृष्टात्मा घटोत्कचः ।
ननाद विविधान्नादान्वाहिन्याः प्रमुखे तव ॥ १ ॥
तस्य तं तुमुलं शब्दं श्रुत्वा कुञ्जरकम्पनम् ।
तावकानां महाराज भयमासीत्सुदारुणम् ॥ २ ॥
अलायुधविषक्तं तु भैमसेनिं महाबलम् ।
दृष्ट्वा कर्णो महाबाहुः पञ्चालान्समुपाद्रवत् ॥ ३ ॥
दशभिर्दशभिर्बाणैर्धृष्टद्युम्नशिखण्डिनौ ।
दृढैः पूर्णायतोत्सृष्टैर्बिभेद नतपर्वभिः ॥ ४ ॥
ततः परमनाराचैर्युधामन्यूत्तमौजसौ ।
सात्यकिं च रथोदारं कम्पयामास मार्गणैः ॥ ५ ॥
तेषामप्यस्यतां संख्ये सर्वेषां सव्यदक्षिणम् ।
मण्डलान्येव चापानि व्यदृश्यन्त जनाधिप ॥ ६ ॥
तेषां ज्यातलनिर्घोषो रथनेमिस्वनश्च ह ।
मेघानामिव घर्मान्ते बभूव तुमलो निशि ॥ ७ ॥

होवेगी ॥ (३७-४०) [८१२२]

द्रोणपर्वमें एकसौ अठत्तर अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ उनासी अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! घटोत्कच अलायुध राक्षसका वध करके अपने सेनाके अगाडी स्थित होकर भयानक शब्दसे सिंहनाद करने लगा ॥ उस समय हाथियोंके यूथको भी कम्पित करनेवाले उसके भयङ्कर शब्दको सुनकर तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग अत्यन्त ही भयभीत हुए ॥ हे भारत ! इसके पहिले महाबाहु कर्णने भीमसेनपुत्र घटोत्कचको अलायुधके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त देखकर पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग जैसा संग्राम किया था; इस समय उस युद्धके वृत्तान्तको भी सुनिये ॥ (१-३)

उस समय कर्णने कान पर्यन्त धनुष खींचके दश तीक्ष्ण बाणोंसे दृढताके सहित धुष्टद्युम्न और शिखण्डीको विद्ध करके फिर अपने तेज नाराच बाणोंके प्रहारसे युधामन्यु उत्तमौजा और सात्यकिको पीडित किया । वैसे ही जब वे पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण महारथी योद्धा लगातार कर्णके ऊपर अपने दांयी बायीं ओरसे बाणोंको वर्षाने लगे तब उस समय केवल मण्डलाकार गतिसे घूमते हुए उन महारथियोंके धनुष ही दीख पडते थे ॥ (४-६)

उस रात्रिके समय उन महारथियोंके धनुषटङ्कार, तलत्राण और रथकी घर-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यानेमिघोषस्तनयित्नुमान्वै धनुस्तडिन्मण्डलकेतुशृङ्गः ।
शरौघवर्षाकुलवृष्टिमांश्च संग्राममेघः स बभूव राजन् ॥ ८ ॥
तदद्भुतं शैल इवाऽप्रकम्पो वर्षं महाशैलसमानसारः ।
विध्वंसयामास रणे नरेन्द्र वैकर्तनः शत्रुगणावमर्दी ॥ ९ ॥
ततोऽतुलैर्वज्रनिपातकल्पैः शितैः शरैः काञ्चनचित्रपुङ्खैः ।
शत्रून्व्यपोहत्समरे महात्मा वैकर्तनः पुत्रहिते रतस्ते ॥ १० ॥
सञ्छिन्नभिन्नध्वजिनश्च केचित्केचिच्छरैरर्दितभिन्नदेहाः ।
केचिद्विसूता विहयाश्च केचिद्वैकर्तनेनाऽऽशु कृता बभूवुः ॥ ११ ॥
अविन्दमानास्त्वथ शर्म संख्ये यौधिष्ठिरं ते बलमभ्यपद्यन् ।
तान्प्रेक्ष्य भग्नान्विमुखीकृतांश्च घटोत्कचो रोषमतीव चक्रे ॥ १२ ॥
आस्थाय तं काञ्चनरत्नचित्रं रथोत्तमं सिंहवत्संननाद ।
वैकर्तनं कर्णमुपैत्य चापि विव्याध वज्रप्रतिमैः पृषत्कैः ॥ १३ ॥
तौ कर्णिनाराचशिलीमुखैश्च नालीकदण्डासनवत्सदन्तैः ।

घराहटके शब्द वर्षाकालके बादल गर्जनेकी भांति सुनाई देते थे ॥ इसी भांति धनुषटंकारका शब्द बादलका गर्जन, ध्वजा पताका और शूरवीरोंके धनुष बिजली, बाणोंका चलना ही जलकी वर्षा और वह युद्ध ही मेघमण्डलरूपी बोध होने लगा ॥ परन्तु महापर्वतके समान निर्भय स्वभाववाले शत्रुनाशन कर्णने उन सम्पूर्ण महारथियोंकी बाणवर्षाको क्षण भरके बीच अपने अस्त्रोंके प्रभावसे भस्म कर दिया ॥ (७-९)

तिसके अनन्तर महात्मा कर्ण तुम्हारे पुत्रके हितकी अभिलाष करके वज्रके समान वेगगामी सुवर्ण चित्रित पङ्ख युक्त चोखे बाणोंसे शत्रुओंका नाश करने लगे ॥ उस समय सात्यकि आदि पाण्डवोंकी ओरके महारथी योद्धा लोग मुहूर्त्त भरके बीच कर्णके बाणोंके प्रहारसे कोई पीडित, कोई क्षत विक्षत शरीरसे युक्त, कोई कटीहुई ध्वजा, कोई सारथीसे तथा कोई घोडोंसे रहित होगये और कितने ही योद्धा कर्णके सम्मुख युद्धभूमिमें खडे भी न होसके, वे सब कोई अन्तमें वहांसे भागकर युधिष्ठिरकी सेनामें जाघुसे ॥ (१०-१२)

घटोत्कच अपनी ओरके सम्पूर्ण योद्धाओंको भागते देख अत्यन्त ही क्रुद्ध हुआ; और सुवर्ण रत्न चित्रित अपने उत्तम रथ पर चढके महाघोर सिंहनाद करते हुए कर्णके समीप जाके उन्हें वज्रके समान तीक्ष्ण बाणोंसे विद्ध करने लगा ॥ अनन्तर उन दोनों वीरोंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वराहकर्णैः सविपाठशृङ्गैः क्षुरप्रवर्षैश्च विनेदतुः खम् ॥ १४ ॥
तद्बाणधारावृतमन्तरिक्षं तिर्यग्गताभिः समरे रराज ।
सुवर्णपुङ्खज्वलितप्रभाभिर्विचित्रपुष्पाभिरिव प्रजाभिः ॥ १५ ॥
समाहितावप्रतिमप्रभावावन्योन्यमाजघ्नतुरुत्तमास्त्रैः ।
तयोर्हि वीरोत्तमयोर्न कश्चिददर्श तस्मिन्समरे विशेषम् ॥ १६ ॥
अतीव तच्चित्रमतुल्यरूपं बभूव युद्धं रविभीमसूनवोः ।
समाकुलं शस्त्रनिपातघोरं दिवीव राहुंशुमतोः प्रमत्तम् ॥ १७ ॥

सञ्जय उवाच— घटोत्कचं यदा कर्णो न विशेषयते नृप ।
ततः प्रादुश्चकारोग्रमस्त्रमस्त्रविदां वरः ॥ १८ ॥
तेनाऽस्त्रेणाऽवधीत्तस्य रथं सहयसारथिम् ।
विरथश्चापि हैडिम्बिः क्षिप्रमन्तरधीयत ॥ १९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच—तस्मिन्नन्तर्हिते तूर्णं कूटयोधिनि राक्षसे ।

कर्णी, नाराच, शिलीमुख, नालीक, दण्डासन, वत्सदन्त, वराहकर्ण, विपाठशृंग, क्षुरप्र आदि अस्त्र तथा बाणोंको चलाके आकाशमण्डलको परिपूरित कर दिया ॥ वे सम्पूर्ण स्वर्ण पङ्खवाले बाण जब टीडीदलकी भांति आकाशमें परिपूरित होगये, उस समय आकाशमण्डल विचित्र पुष्पमालासे युक्त हुएकी भांति शोभित होने लगा ॥ (१२–१५)

अत्यन्त बल और पराक्रमसे युक्त जब वे दोनों वीर युद्धभूमिमें स्थित होकर अपने उत्तम शस्त्रोंसे युद्ध करने लगे, उस समय कोई पुरुष उन दोनों वीरोंके बीच किसीको भी विशिष्ट होते न देख सके ॥ महाराज ! उस समय आकाशस्थित राहु और सूर्यके समागमकी भांति सूर्यपुत्र कर्ण और भीमसेनपुत्र घटोत्कच राक्षसके शस्त्रोंकी खटपटाहटसे परिपूरित सम्पूर्ण प्राणियोंको दुःखित करनेवाला अत्यन्त भयङ्कर अद्भुत संग्राम होने लगा ॥ (१६–१७)

सञ्जय बोले, हे महाराज ! परन्तु अस्त्र शस्त्रोंकी विद्यामें अत्यन्त निपुण सूतपुत्र कर्ण जब किसी प्रकार भी घटोत्कचसे अधिक न हो सके तब उन्होंने भयंकर दिव्य अस्त्रोंको प्रकट किया, उससे घटोत्कचका रथ सारथी और घोडोंके सहित उस ही समय भस्म हो गया; परन्तु घटोत्कच रथसे भ्रष्ट होकर अन्तर्द्धान होगया ॥ (१८–१९)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! जब वह कूटयुद्ध करनेवाला मायावी राक्षस चकित होकर अन्तर्द्धान हुआ, उस समय मेरी ओरके योद्धाओंने जिस कार्यका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामकैः प्रतिपन्नं यत्तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ २० ॥
सञ्जय उवाच— अन्तर्हितं राक्षसेन्द्रं विदित्वा सम्प्राक्रोशन्कुरवः सर्व एव।
कथं नाऽयं राक्षसः कूटयोधी हन्यात्कर्णं समरे दृश्यमानः ॥ २१ ॥
ततः कर्णो लघुचित्रास्त्रयोधी सर्वा दिशः प्रावृणोद्बाणजालैः।
न वै किञ्चित्प्रापतत्तत्र भूतं तमोभूते सायकैरन्तरिक्षे ॥ २२ ॥
नैवाऽऽददानो न च सन्दधानो न चेषुधी स्पृश्यमानः कराग्रैः।
अदृश्यद्वै लाघवात्सूतपुत्रः सर्वं बाणैश्छादयानोऽन्तरिक्षम् ॥ २३ ॥
ततो मायां दारुणामन्तरिक्षे घोरां भीमां विहितां राक्षसेन।
अपश्याम लोहिताभ्रप्रकाशां देदीप्यन्तीमग्निशिखामिवोग्राम् ॥ २४ ॥
ततस्तस्यां विद्युतः प्रादुरासन्नुल्काश्चापि ज्वलिताः कौरवेन्द्र।
घोषश्चाऽस्याः प्रादुरासीत्सुघोरः सहस्रशो नदतां दुन्दुभीनाम्॥२५॥
ततः शराः प्रापतन्रुक्मपुङ्खाः शक्त्यृष्टिप्रासमुसलान्यायुधानि।
परश्वधास्तैलधौताश्च खड्गाः प्रदीप्ताग्रास्तोमराः पट्टिशाश्च ॥ २६ ॥

अनुष्ठान किया था, वह वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो ॥ (२०)

सञ्जय बोले, महाराज! कौरव लोग घटोत्कचको अन्तर्द्धान होते देख, आपसमें कहने लगे, यह कूटयोधी राक्षस छिपके किसी प्रकारसे असावधानीमें सूतपुत्र कर्णका वध न करै; ऐसे ही वचन कहते हुए महाघोर कोलाहल मचाने लगे ॥ अनन्तर अत्यन्त हस्तलाघवके सहित महावीर कर्णने अपने अनगिनत बाणोंको चलाकर सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलको इस प्रकार परिपूरित करके अन्धकारमय कर किया; कि उस समय वहां पर प्राणीमात्र इधर उधर चलने फिरनेमें असमर्थ होगये ॥ महाराज! इसी प्रकार जब सूर्यपुत्र कर्ण हस्तलाघवके सहित लगातार बाणोंको चारों ओर वर्षाने लगे तब उन्हें बाण ग्रहण करते साधते छोडते और अपने तूणीरसे निकालते हुए कोई पुरुष भी न देख सके ॥ (२१–२३)

तिसके अनन्तर घटोत्कचने आकाशमें अत्यन्त भयंकर महाघोर माया उत्पन्न किया, उस समय हम लोग अग्निशिखाके समान प्रकाशमान लालवर्णवाले बादलके समान दीखनेवाली उस मायाको देखने लगे ॥ उस मायाके बीचसे बार बार सैकडों लुक और बिजली प्रकट होके जलती हुई प्रकाशित होने लगीं फिर सहस्रों नगाडोंके शब्दके समान उससे महाघोर शब्द सुनाई देने लगा ॥ तिसके अनन्तर स्वर्णपंखवाले अनगिनत बाण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मयूखिनः परिघा लोहबद्धा गदाश्चित्राः शितधाराश्च शूलाः ।
गुर्व्यो गदा हेमपट्टावनद्धाः शतघ्न्यश्च प्रादुरासन्समन्तात् ॥ २७ ॥
महाशिलाश्चाऽपतंस्तत्र तत्र सहस्रशः साशनयश्च वज्राः ।
चक्राणि चाऽनेकशतक्षुराणि प्रादुर्बभूवुर्ज्वलनप्रभाणि ॥ २८ ॥
तां शक्तिपाषाणपरश्वधानां प्रासासिवज्राशनिमुद्गराणाम् ।
वृष्टिं विशालां ज्वलितां पतन्तीं कर्णः शरौघैर्न शशाक हन्तुम् ॥२९॥
शराहतानां पततां हयानां वज्राहतानां च तथा गजानाम् ।
शिलाहतानां च महारथानां महान्निनादः पततां बभूव ॥ ३० ॥
सुभीमनानाविधशस्त्रपातैर्घटोत्कचेनाऽभिहतं समन्तात् ।
दौर्योधनं वै बलमार्तरूपमावर्तमानं ददृशे भ्रमत्तत् ॥ ३१ ॥
हाहाकृतं सम्परिवर्तमानं संलीयमानं च विषण्णरूपम् ।
ते त्वार्यभावात्पुरुषप्रवीराः पराङ्मुखा नो बभूवुस्तदानीम् ॥ ३२ ॥
तां राक्षसीं भीमरूपां सुघोरां वृष्टिं महाशस्त्रमयीं पतन्तीम् ।

शक्ति, ऋष्टि, प्रास, मूषल, शिकल किये हुए फरशे, प्रकाशमान तलवार, तेज धार वाले तोमर, पट्टिश, प्रकाशमान परिघ, अत्यन्त सुन्दर सैकडों पुरुषोंको नाश करनेवाली विचित्र गदा, तीक्ष्ण-धारवाले सहस्रों शस्त्र, शतघ्नी, अग्नियुक्त वज्र, चक्र और जलते हुए अनगिनत क्षुरप्र आदि अस्त्र शस्त्र चारों ओरसे रणभूमिके बीच गिरने लगे ॥ (२४–२८)

अग्निशिखाकी भांति जब प्रकाशमान भयानक बरछी, पत्थर, फरशे, प्रास और मुद्गर आदि अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा होने लगी, तब कर्ण उसे अपने बाणोंसे निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए ॥ उस समय बाणोंसे घोडे, वज्रास्त्रसे हाथी और पत्थरोंकी शिला वर्षानेसे शूरवीर महारथ योद्धालोग मरके पृथ्वीमें गिरने लगे; उस समय रणभूमिके बीच तुम्हारी सेनाके वीरोंका महाघोर आर्त्तनाद शब्द सुनाई देने लगा ॥ महाराज ! घटोत्कचके अस्त्रोंसे पीडित होकर कुरुसेनाके योद्धा लोग जब इधर उधर भ्रमण करने लगे, उस समय बोध होने लगा, जैसे वायुके वेगसे समुद्रका जल उथलित होने लगता है । उस समय तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग चारों ओर दौडते और हाहाकार करते हुए जगह जगह घटोत्कचके अस्त्रोंसे पीडित होकर रणभूमिमें गिरने लगे । परन्तु पुरुषसिंह महारथी योद्धा लोग वीर-धर्मको स्मरण करके युद्धभूमिमें किसी प्रकार भी पीछे न हटे ॥ (२९–३२)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्ट्वा बलौघांश्च निपात्यमानान्महद्भयं तव पुत्रान्विवेश ॥ ३३ ॥
शिवाश्च वैश्वानरदीप्तजिह्वाः सुभीमनादाः शतशो नन्दतीः ।
रक्षोगणान्नर्दतश्चापि वीक्ष्य नरेन्द्रयोधा व्यथिता बभूवुः ॥ ३४ ॥
ते दीप्तजिह्वानलतीक्ष्णदंष्ट्रा विभीषणाः शैलनिकाशकायाः ।
नभोगताः शक्तिविषक्तहस्ता मेघा व्यमुञ्चन्निव वृष्टिमुग्राम् ॥ ३५ ॥
तैराहतास्ते शरशक्तिशूलैर्गदाभिरुग्रैः परिघैश्च दीप्तैः ।
वज्रैः पिनाकैरशनिप्रहारैः शतघ्निचक्रैर्मथिताश्च पेतुः ॥ ३६ ॥
शूला भुशुण्डयोऽश्मगुडाः शतघ्न्यः स्थूलाश्च काष्णायसपट्टनद्धाः ।
तेऽवाकिरंस्तव पुत्रस्य सैन्यं ततो रौद्रं कश्मलं प्रादुरासीत् ॥ ३७ ॥
विकीर्णान्त्रा विहतैरुत्तमाङ्गैः सभग्नाङ्गाः शिश्यिरे तत्र शूराः ।
छिन्ना हयाः कुञ्जराश्चापि भग्नाः संचूर्णिताश्चैव रथाः शिलाभिः ॥ ३८ ॥
एवं महच्छस्त्रवर्षं सृजन्तस्ते यातुधाना भुवि घोररूपाः ।

तुम्हारे पुत्र लोग घटोत्कचके महाघोर भयङ्कर अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षासे अपनी सेनाके पुरुषोंका नाश होते देख अत्यंत ही भयभीत हुए ॥ अनन्तर जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान जीभ निकाले हुए सैकडों सियार भयङ्कर डरावनी बोली बोलने लगे। राक्षस लोग गर्जने लगे; उसे देखके तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग अत्यन्तही कातर हुए॥ महाराज! वे प्रकाशमान जीभ दांत और शरीरसे युक्त पर्वतके समान शरीर धारण किये हुए राक्षस लोग आकाशमण्डलसे जलवर्षा करनेवाले बादलों की भांति तुम्हारी सेनाके ऊपर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे वर्षा करने लगे॥ (३३–३५)

उस समय बाण बरछी गदा प्रकाशमान परिघ तलवार पिनाक वज्र और सैकडों पुरुषोंके नाश करनेमें समर्थ बहुतेरे चक्र आदि अस्त्र शस्त्रोंकी चोटसे मर कर बहुतसे शूरवीर योद्धा लोग पृथ्वीमें गिर पडे; और शूल, भुशुण्डी, दण्ड, शतघ्नी और स्थूणा आदि अस्त्र शस्त्र तुम्हारे पुत्रकी सेनाके ऊपर पडने लगे; उस समय सेनाके पुरुषोंका अत्यन्त ही नाश होने लगा॥ उस समय किसीके अन्त्र इधर ऊधर गिर पडे, किसीके सिर टुकडे टुकडे हो गये; कितने ही पुरुषोंके हाथ पांव टुट गये और कितने ही पुरुष मरकर पृथ्वीमें गिर पडे। इसी प्रकार हाथी घोडे और मनुष्योंके शरीर राक्षसोंके अस्त्रोंसे कटने लगे और रथ पत्थरोंकी शिलाके वर्षनेसे चूर चूर होके पृथ्वीमें गिरने लगे॥ (३६–३८)

महाराज! घटोत्कचकी मायासे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायाः सृष्टास्तत्र घटोत्कचेन नाऽमुञ्चन्वै याचमानं न भीतम् ॥ ३९ ॥
तस्मिन्घोरे कुरुवीरावमर्दे कालोत्सृष्टे क्षत्रियाणामभावे ।
ते वै भग्नाः सहसा व्यद्रवन्त प्राक्रोशन्तः कौरवाः सर्व एव ॥ ४० ॥
पलायध्वं कुरवो नैतदस्ति सेन्द्रा देवा घ्नन्ति नः पाण्डवार्थे ।
तथा तेषां मज्जतां भारतानां तस्मिन्द्वीपः सूतपुत्रो बभूव ॥ ४१ ॥
तस्मिन्संक्रन्दे तुमुले वर्तमाने सैन्ये भग्ने लीयमाने कुरूणाम् ।
अनीकानां प्रविभागे प्रकाशे नाऽऽज्ञायन्ते कुरवो नेतरे च ॥ ४२ ॥
निर्मर्यादे विद्रवे घोररूपे सर्वा दिशः प्रेक्षमाणाः स्म शून्याः ।
तां शस्त्रवृष्टिमुरसा गाहमानं कर्णं स्मैकं तत्र राजन्नपश्यन् ॥ ४३ ॥
ततो बाणैरावृणोदन्तरिक्षं दिव्यां मायां योधयन्राक्षसस्य ।
ह्रीमान्कुर्वन्दुष्करं चाऽऽर्यकर्म नैवाऽमुह्यत्संयुगे सूतपुत्रः ॥ ४४ ॥

उत्पन्न हुए सम्पूर्ण लोगोंको भयभीत करनेवाले राक्षसोंने इसी प्रकार अनेक अस्त्र-शस्त्रोंको वर्षा कर प्रार्थना करनेवाले और भयभीत आदि किसी पुरुषको भी न छोडा ॥ कालके प्रभावसे जब उन राक्षसोंके अस्त्रोंसे क्षत्रियोंका नाश होने लगा, उस समय युद्धभूमिसे भागते हुए योद्धा लोग चिल्लाते हुए यह वचन कहने लगे,—हे कौरव लोगो ! आज पाण्डवोंकी सहायता करनेकी इच्छासे इन्द्र आदिक देवता लोग अवश्य ही हम लोगोंकी सेनाके पुरुषोंका नाश कर रहे हैं, आज कोई भी जीता न बचेगा इससे तुम लोग युद्धभूमिसे भाग कर पृथक् हो जाओ । ऐसे ही वचन कहके तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग महाघोर शब्दसे कोलाहल मचाते हुए वेगपूर्वक भागने लगे । महाराज ! इस प्रकार विपद सागरमें डूबते हुए कौरवोंके वास्ते उस समय केवल सूर्यपुत्र कर्ण ही द्वीपस्वरूप हुए ॥ (३९–४१)

उस भयङ्कर तुमुल संग्रामके समय कुरुसेनाके पुरुषोंके मरने तथा इधर उधर भागनेसे व्यूह भङ्ग हो गया; तब कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष चीन्ह नहीं पडते थे । उस अमर्याद भयङ्कर उपद्रव के समय हम लोगोंने सब दिशाओंको सूनी देखा तथा अकेले सूर्यपुत्र कर्णको ही उन सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र और बाणोंकी वर्षाको निर्भयचित्तसे अपने वक्षस्थल पर धारण करते देखा ॥ ऐसे अवसरमें तेजस्वी कर्ण तनिक भी मोहित नहीं हुए; बल्कि वीर-धर्मको स्मरण करके कठिन कार्य करनेकी इच्छासे राक्षसी मायाको नष्ट करनेके वास्ते आकाशको अपने दिव्य अस्त्रोंसे परिपूर्ण कर दिया ॥ (४२–४४)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो भीताः समुदैक्षन्त कर्णं राजन्सर्वे सैन्धवा बाल्हिकाश्च ।
असंमोहं पूजयन्तोऽस्य संख्ये सम्पश्यन्तो विजयं राक्षसस्य ॥ ४५ ॥
तेनोत्सृष्टा चक्रयुक्ता शतघ्नी समं सर्वांश्चतुरोऽश्वाञ्जघान ।
ते जानुभिर्जगतीमन्वपद्यन्गतासवो निर्दशनाक्षिजिह्वाः ॥ ४६ ॥
ततो हताश्वादवरुह्य यानाद्न्तर्मनाः कुरुषु प्राद्रवत्सु ।
दिव्ये चाऽस्त्रे मायया वध्यमाने नैवाऽमुह्यच्चिन्तयन्प्राप्तकालम् ॥४७॥
ततोऽब्रुवन्कुरवः सर्व एव कर्णं दृष्ट्वा घोररूपां च मायाम् ।
शक्त्या रक्षो जहि कर्णाऽद्य तूर्णं नश्यन्त्येते कुरवो धार्तराष्ट्राः ॥४८॥
करिष्यतः किञ्च नो भीमपार्थौ तपन्तमेनं जहि पापं निशीथे ।
यो नः संग्रामाद्घोररूपाद्विमुञ्चेत्स नः पार्थान्सबलान्योधयेत ॥ ४९ ॥
तस्मादेनं राक्षसं घोररूपं शक्त्या जहि त्वं दत्तया वासवेन ।

उस समय भीत सिन्धु और बाह्लीक देशीय योद्धा लोग एकटक नेत्रसे कर्ण और घटोत्कचके युद्धको देखने लगे; और घटोत्कचको विजय लाभमें समर्थ और कर्णका अत्यन्त पराक्रम देख सब कोई घटोत्कचकी प्रशंसा करने लगे ॥ उस ही समय घटोत्कचकी चलायी हुई चक्रयुक्त एक शतघ्नी अकस्मात् सूतपुत्र कर्णके घोडोंके ऊपर गिरी और उसके प्रहारसे कर्णके रथके घोडे प्राणरहित होकर दांत आंख और जीभ निकालके पृथ्वीमें गिर पडे ॥ अनन्तर घटोत्कच मायाके प्रभावसे बार बार कर्णके दिव्य अस्त्रोंको निष्फल करने लगा; और उसके अस्त्रोंके प्रभावसे कुरुसेनाके योद्धालोग भागने लगे ! तब कर्ण शीघ्रताके सहित घोडोंसे रहित रथसे उतरे; पर घटोत्कचकी माया तथा अस्त्रोंसे कर्ण तनिक भी मोहित न होकर उस समयके अनुसार कर्त्तव्य कार्यके विषयमें विचार करने लगे ॥ (४५-४७)

इसी समय दुर्योधन आदि कौरव लोग घटोत्कचकी भयङ्कर माया देखकर कर्णसे बोले, हे कर्ण ! आज कौरवोंकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुषोंका नाश हुआ चाहता है, इससे अब तुम इन्द्रकी दी हुई उसी अमोघ शक्तिसे इस राक्षसका वध करो, भीमसेन अर्जुन हम लोगोंका क्या कर सकेंगे ? तुम इस रात्रिके समय मेरी सम्पूर्ण सेनाको पीडित करनेवाले इस पापी राक्षसका नाश करो । हम लोगोंके बीचसे जो पुरुष इस भयङ्कर महासंग्रामसे जीवित बचेगा वह अवश्य ही पृथापुत्रोंके सङ्ग युद्ध करनेमें समर्थ होगा । हे कर्ण ! इन्द्रके समान पराक्रमी कौरव लोगोंका सम्पूर्ण योद्धाओंके सहित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा कौरवाः सर्व एवेन्द्रकल्पा रात्रियुद्धे कर्ण नेशुः सयोधाः ॥ ५० ॥
स वध्यमानो रक्षसा वै निशीथे दृष्ट्वा राजंस्त्रास्यमानं बलं च ।
महच्चूरुत्वा निनदं कौरवाणां मतिं दधे शक्तिमोक्षाय कर्णः॥ ५१ ॥
स वै क्रुद्धः सिंह इवाऽत्यमर्षी नाऽमर्षयन्प्रतिघातं रणेऽसौ ।
शक्तिं श्रेष्ठां वैजयन्तीमसह्यां समाददे तस्य वधं चिकीर्षन् ॥ ५२ ॥
याऽसौ राजन्निहिता वर्षपूगान्वधायाऽऽजौ सत्कृता फाल्गुनस्य ।
यां वै प्रादात्सूतपुत्राय शक्रः शक्तिं श्रेष्ठां कुण्डलाभ्यां निमाय ॥५३॥
तां वै शक्तिं लेलिहानां प्रदीप्तां पाशैर्युक्तामन्तकस्येव जिह्वाम् ।
मृत्योः स्वसारं ज्वलितामिवोल्कां वैकर्तनः प्राहिणोद्राक्षसाय ॥ ५४ ॥
तामुत्तमां परकायावहन्त्रीं दृष्ट्वा शक्तिं बाहुसंस्थां ज्वलन्तीम् ।
भीतं रक्षो विप्रदुद्राव राजन्कृत्वाऽऽत्मानं विन्ध्यतुल्यप्रमाणम् ॥ ५५ ॥

जिसमें नाश न होजावे, इस वास्ते तुम इसी समय इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्तिसे इस भयङ्कर मूर्त्तिवाले राक्षसका वध करो ॥ (४८–५०)

कर्णने उस रात्रिके समय कुरुसेनाके सम्पूर्ण पुरुषोंको भयभीत देख कौरवोंके आर्त्तनादको सुनकर तथा स्वयं भी घटोत्कचके अस्त्रोंसे पीडित होके इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिको चलानेकी इच्छा किया ॥ क्रुद्धस्वभाववाले सूर्यपुत्र कर्णने सिंहकी भांति क्रुद्ध होकर घटोत्कचके अस्त्र लाघवको सहन नहीं किया। उन्हों ने घटोत्कच राक्षसके वधकी अभिलाषा करके सम्पूर्ण प्राणियोंसे भी असह्य उस उत्तम वैजयन्ती महा अमोघशक्तिको ग्रहण किया ॥ महाराज ! सूतपुत्र कर्णने जिस शक्तिको कई वर्ष पर्यन्त आदर पूर्वक अर्जुनके वधके वास्ते रक्खा था जिस अमोघशक्तिको पहिले देवराज इन्द्रने कर्णको प्रदान किया था; और उन्होंने जिस प्रकाशमान अमोघशक्तिको गर्भसे ही उत्पन्न हुए अपने अभेद कवच कुण्डलके पलटेमें इन्द्रसे पाया था। मृत्युके समान भयङ्करी तथा जलते हुए लुकको भांति प्रकाशमान यमराजके पाशसे युक्त कालरात्रि स्वरूपिणी और अग्निके समान तेजस्विनी उस महाघोर अमोघशक्तिको कर्णने इस समय बल-पूर्वक घटोत्कचके वधके निमित्त उसकी ओर चलाया ॥ (५१–५४)

महाराज ! घटोत्कचने सम्पूर्ण प्राणि-योंके शरीरको विदारण करनेवाली इन्द्र-की दी हुई अग्निकी भांति उस अमोघ शक्तिको कर्णके हाथमें देखते ही विन्ध्या-चल पर्वतके समान शरीर धारण करके भागनेकी इच्छा किया। अधिक क्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्ट्वा शक्तिं कर्णबाह्वन्तरस्थां नेदुर्भूतान्यन्तरिक्षे नरेन्द्र ।
ववुर्वातास्तुमुलाश्चापि राजन्सनिर्घाता चाऽशनिर्गां जगाम ॥ ५६ ॥
सा तां मायां भस्म कृत्वा ज्वलन्ती भित्त्वा गाढं हृदयं राक्षसस्य ।
ऊर्ध्वं ययौ दीप्यमाना निशायां नक्षत्राणामन्तराण्याविवेश ॥ ५७ ॥
स निर्भिन्नो विविधैरस्त्रपूगैर्दिव्यैर्नागैर्मानुषै राक्षसैश्च ।
नदन्नादान्विविधान्भैरवांश्च प्राणानिष्टांस्त्याजितः शक्रशक्त्या॥ ५८ ॥
इदं चाऽन्यच्चित्रमाश्चर्यरूपं चकाराऽसौ कर्म शत्रुक्षयाय ।
तस्मिन्काले शक्तिनिर्भिन्नमर्मा बभौ राजञ्शैलमेघप्रकाशः ॥ ५९ ॥
ततोऽन्तरिक्षादपतद्गतासुः स राक्षसेन्द्रो भुवि भिन्नदेहः ।
अवाक्शिराः स्तब्धगात्रो विजिह्मो घटोत्कचो महदास्थाय रूपम्॥ ६० ॥
स तद्रूपं भैरवं भीमकर्मा भीमं कृत्वा भैमसेनिः पपात ।
हतोऽप्येवं तव सैन्यैकदेशमपोथयत्स्वेन देहेन राजन् ॥ ६१ ॥
पतद्रक्षः स्वेन कायेन तूर्णमतिप्रमाणेन विवर्धता च ।

कहूं कर्णके हाथमें स्थित उस अमोघ शक्तिको देखते ही आकाशवासी सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होकर हाहाकार शब्दके सहित चिल्लाते हुए कांपने लगे। उस समय प्रचण्ड वायु अत्यन्त ही वेगपूर्वक बहने लगी, वज्र तलवार आदि अस्त्र पृथ्वीको विदारण करके भूगर्भमें प्रविष्ट होने लगे। इतने ही समयमें कर्णकी चलाई हुई जलती अग्निकी भांति वह अमोघशक्ति सम्पूर्ण राक्षसी मायाको भस्म करके घटोत्कचके हृदयको विदारण करती हुई प्रकाशित होके आकाशमार्गसे नक्षत्र मण्डलमें प्रविष्ट हुई ॥ (५५–५७)

महाराज! महावीर घटोत्कच राक्षसने अनेक भांतिके विचित्र अस्त्रशस्त्र तथा मायासे मनुष्य और राक्षसोंके सङ्ग वीरनाद शब्दके सहित युद्ध करके अन्तमें इन्द्रकी दी हुई कर्णके भुजासे छूटी हुई अमोघशक्तिसे अपने प्रिय प्राणको परित्याग किया ॥ उस समय वह अमोघशक्तिसे सम्पूर्ण मर्मस्थल विदारित होने पर भी शत्रुओंके नाश करनेके वास्ते अत्यन्त आश्चर्यमय रूप धारण करके पर्वत और बादलकी भांति प्रकाशित होने लगा। महाराज! अमोघशक्तिसे शरीर विदारित होने पर भी महापराक्रमी भीमसेनपुत्र राक्षसराज घटोत्कचने प्राण त्यागनेके समयमें ऐसी भयङ्कर मूर्त्ति धारण करी, कि उस बडे शरीरको धारणकर वेगपूर्वक आकाशसे गिरके तुम्हारी सेनाके एक भागको अपने शरीरके नीचे दबाके एक अक्षौहिणी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियं कुर्वन्पाण्डवानां गतासुरक्षौहिणीं तव तूर्णं जघान ॥ ६२ ॥
ततो मिश्राः प्राणदन्सिंहनादैर्भेर्यः शङ्खा मुरजाश्चाऽनकाश्च ।
दग्धां मायां निहतं राक्षसं च दृष्ट्वा हृष्टाः प्राणदन्कौरवेयाः ॥६३॥
ततः कर्णः कुरुभिः पूज्यमानो यथा शक्रो वृत्रवधे मरुद्भिः ।
अन्वारूढस्तव पुत्रस्य यानं हृष्टश्चापि प्राविशत्तत्स्वसैन्यम् ॥६४॥ [८१८६]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे घटोत्कचवधे ऊनसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७९ ॥

सञ्जय उवाच— हैडिम्बे निहतं दृष्ट्वा विशीर्णमिव पर्वतम् ।
बभूवुः पाण्डवाः सर्वे शोकबाष्पाकुलेक्षणाः ॥ १ ॥
वासुदेवस्तु हर्षेण महताऽभिपरिप्लुतः ।
ननाद सिंहनादं वै पर्यष्वजत फाल्गुनम् ॥ २ ॥
स विनद्य महानादमभीषून्सन्नियम्य च ।
ननर्त्त हर्षसंवीतो वातोद्धूत इव द्रुमः ॥ ३ ॥
ततः परिष्वज्य पुनः पार्थमास्फोट्य चाऽसकृत् ।

योद्धाओंका नाश किया ॥ (५८-६२)

अनन्तर कौरव लोग राक्षसी मायाको भस्म हुई और घटोत्कचको मरते देख, आनन्दित होके सिंहनाद करने लगे ॥ अनन्तर तुम्हारी सेनाके पुरुषोंके सिंहनादके सङ्ग मिलकर बहुतसे शंख, भेरी, ढोल, झांझ और नगाडे आदि युद्धके जुझाऊ बाजोंके शब्द सुनाई देने लगे॥ जैसे वृत्रासुरवधके समयमें देवराज इन्द्र देवताओंसे पूजित हुएथे;इससमय कर्णभी उसीभांति कौरवोंसे पूजित और सत्कृत होकर तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके रथमें बैठ कर अपनी सेनाके बीच जाकर विराज मान हुए ॥ (६३-६४) [८१८६]

द्रोणपर्वमें एकसौ उनासी अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ अस्सी अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! जैसे पर्वत वज्रकी चोटसे टुकडे टुकडे होकर गिर पडता है, वैसे ही हिडिम्बापुत्र घटोत्कचको अमोघशक्तिसे मरते देख, पाण्डव लोग तथा उनकी सेनाके पुरुषोंको शोकसे आंखोंमें आंसू भर आये ॥ परन्तु श्रीकृष्ण अत्यन्त हर्षके सहित आनन्दित होकर अर्जुनको आलिङ्गन करने लगे । उस समय श्रीकृष्ण घोडोंकी रास खींचके सिंहनाद करते हुए आनन्दित होके इस प्रकार नाचने लगे, जैसे वायुके चलनेसे वृक्षके पत्ते हिलते हुए नृत्य करने लगते हैं ॥ रथपर स्थित बुद्धिमान् कृष्ण अर्जुनको अपनी ओर स्थित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथोपस्थगतो धीमान्प्राणदत्पुनरच्युतः ॥ ४ ॥
प्रहृष्टमनसं ज्ञात्वा वासुदेवं महाबलः ।
अर्जुनोऽथाऽब्रवीद्राजन्नाऽतिहृष्टमना इव ॥ ५ ॥
अतिहर्षोऽयमस्थाने तवाऽद्य मधुसूदन ।
शोकस्थाने तु सम्प्राप्ते हैडिम्बस्य वधेन तु ॥ ६ ॥
विमुखानीह सैन्यानि हतं दृष्ट्वा घटोत्कचम् ।
वयं च भृशमुद्विग्ना हैडिम्बेस्तु निपातनात् ॥ ७ ॥
नैतत्कारणमल्पं हि भविष्यति जनार्दन ।
तदद्य शंस मे पृष्टः सत्यं सत्यवतां वर ॥ ८ ॥
यद्येतन्न रहस्यं ते वक्तुमर्हस्यरिन्दम ।
धैर्यस्य वैकृतं ब्रूहि त्वमद्य मधुसूदन ॥ ९ ॥
समुद्रस्येव संशोषं मेरोरिव विसर्पणम् ।
तथैतदद्य मन्येऽहं तव कर्म जनार्दन ॥ १० ॥
वासुदेव उवाच—अतिहर्षमिमं प्राप्तं शृणु मे त्वं धनञ्जय ।
अतीव मनसः सद्यः प्रसादकरमुत्तमम् ॥ ११ ॥

करके फिर बार बार ताली बजाके अत्यन्त गम्भीर स्वरसे सिंहनाद करने लगे ॥ (१-४)

महाबली अर्जुन श्रीकृष्णको अत्यन्त ही आनन्दित देख, दुःखितचित्तसे यह बचन बोले,हे मधुसूदन कृष्ण! हिडिम्बा पुत्र घटोत्कचके मरनेसे हमारी सेनाके पुरुषोंको शोक हुआ है; परन्तु तुम्हें इस अनुचित समयमें भी हर्ष उत्पन्न होरहा है ॥ देखिये, घटोत्कचको मरा हुआ देखकर मेरी सम्पूर्ण सेनाके पुरुष युद्ध-भूमिसे भाग रहे हैं; अधिक क्या कहूं उसके मरनेसे मैंभी अत्यन्त ही व्याकुल होरहा हूं ॥ (५-७)

हे शत्रुनाशन जनार्दन कृष्ण ! मुझे मालूम होता है, कि इस विषयमें कोई विशेष कारण होगा । जो हो, तुम सत्य वादियोंमें अग्रगण्य हो इससे मैं पूंछता हूं,-तुम इस विषयको यथार्थरूपसे वर्णन करो ॥ आज तुम्हारा यह कार्य समुद्र सूखने और सुमेरु पर्वतके कांपनेकी भांति मुझे असम्भव मालूम होता है । इससे यदि यह विषय छिपाने योग्य न होवे, तो तुम अपने इस धैर्यच्युतिके कारणको प्रकट करके वर्णन करो ॥ ८-१०

अर्जुनके ऐसे वचनोंको सुनकर श्री-कृष्ण बोले, हे महाबुद्धिमान् अर्जुन ! मेरे एकबारगी चित्त प्रसन्न होनेके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तिं घटोत्कचेनेमां व्यंसयित्वा महाद्युते ।
कर्णं निहतमेवाऽऽजौ विद्धि सद्यो धनञ्जय ॥ १२ ॥
शक्तिहस्तं पुनः कर्णं को लोकेऽस्ति पुमानिह ।
य एनमभितस्तिष्ठेत्कार्तिकेयमिवाऽऽहवे ॥ १३ ॥
दिष्ट्याऽपनीतकवचो दिष्ट्याऽपहृतकुण्डलः ।
दिष्ट्या सा व्यंसिता शक्तिरमोघाऽस्य घटोत्कचे ॥१४॥
यदि हि स्यात्सकवचस्तथैव स्यात्सकुण्डलः ।
सामरानपि लोकांस्त्रीनेकः कर्णो जयेद्रणे ॥ १५ ॥
वासवो वा कुबेरो वा वरुणो वा जलेश्वरः ।
यमो वा नोत्सहेत्कर्णं रणे प्रतिसमासितुम् ॥ १६ ॥
गाण्डीवमुद्यम्य भवांश्चक्रं चाऽहं सुदर्शनम् ।
न शक्तौ स्वो रणे जेतुं तथा युक्तं नरर्षभम् ॥ १७ ॥
त्वद्धितार्थं तु शक्रेण मायापहृतकुण्डलः ।
विहीनकवचश्चाऽयं कृतः परपुरञ्जयः ॥ १८ ॥

कारण और इस हर्षके विषयको सुनो ॥ आज घटोत्कचके मरनेसे कर्ण इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिसे रहित होगया; इससे अब तुम कर्णको मरा हुआ ही समझ रक्खो ॥ दूसरे स्वामी कार्त्तिककी भांति कर्ण यदि युद्धभूमिके बीच हाथमें इन्द्रकी अमोघशक्ति लेकर खडा होवे, तो इस पृथ्वीके बीच ऐसा कोई भी पुरुष नहीं है; जो कर्णके सम्मुख खडे होनेमें समर्थ होसके ॥ (११–१३)

हे अर्जुन ! तुम्हारी प्रारब्धसे वह पहिले अपने शरीरके सङ्गसे ही उत्पन्न हुए कवच और कुण्डलोंसे रहित होगया है; और इस समय भी तुम्हारी प्रारब्धसे ही उसने अमोघशक्तिको घटोत्कचके ऊपर चलाया है ॥ यदि यह बलवान् कर्ण उस अभेद कवचकुण्डलको पहरके युद्धभूमिके बीच उपस्थित होता, तो देवताओंके सहित तीनों लोकको पराजित कर सकता ॥ इन्द्र, कुबेर, वरुण और यमराज ये कोई भी रणभूमिके बीच कर्णके विरुद्ध गमन करनेमें समर्थ न होसकते ॥ अधिक क्या कहूं; तुम गाण्डीव धनुष और मैं सुदर्शनचक्र ग्रहण करके भी इस पुरुष श्रेष्ठ कर्णको पराजित न कर सकता ॥ (१४–१७)

हे अर्जुन ! पहिले देवराज इन्द्रने तुम्हारे हितकी अभिलाषासे शत्रुनाशन कर्णको मायाके प्रभावसे मोहित करके उसे कवच कुण्डलोंसे रहित किया था ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कृत्य कवचं यस्मात्कुण्डले विमले च ते ।
प्रादाच्छक्राय कर्णो वै तेन वैकर्तनः स्मृतः ॥ १९ ॥
आशीविष इव क्रुद्धो जृम्भितो मन्त्रतेजसा ।
तथाऽद्य भाति कर्णो मे शान्तज्वाल इवाऽनलः॥ २० ॥
यदाप्रभृति कर्णाय शक्तिर्दत्ता महात्मना ।
वासवेन महाबाहो क्षिप्ता याऽसौ घटोत्कचे ॥ २१ ॥
कुण्डलाभ्यां निमायाऽथ दिव्येन कवचेन च ।
तां प्राप्याऽमन्यत वृषः सततं त्वां हतं रणे ॥ २२ ॥
एवङ्गतोऽपि शक्योऽयं हन्तुं नाऽन्येन केनचित् ।
ऋते त्वां पुरुषव्याघ्र शपे सत्येन चाऽनघ ॥ २३ ॥
ब्रह्मण्यः सत्यवादी च तपस्वी नियतव्रतः ।
रिपुष्वपि दयावांश्च तस्मात्कर्णो वृषः स्मृतः ॥ २४ ॥
युद्धशौण्डो महाबाहुर्नित्योद्यतशरासनः ।
केसरीव वने नर्दन्मातङ्ग इव यूथपान् ॥ २५ ॥

कर्णने देवराज इन्द्रको कवच कुण्डल प्रदान किया, इसीसे वह पृथ्वीके बीच वैकर्त्तन नामसे विख्यात हुआ है। परन्तु इस समय वह मन्त्रके प्रभावसे स्तम्भित पराक्रमसे युक्त क्रोधी विषधर सर्प और शिखारहित अग्निकी भांति मालूम होरहा है ॥ (१८-२०)

हे अर्जुन! जबसे इन्द्रने सूतपुत्र कर्णको अमोघशक्ति प्रदान किया था, आज जो शक्ति घटोत्कचके ऊपर छूटके उसका प्राण नाश करके शान्त हुई है, उस अमोघशक्तिको कर्णने अपने दिव्य कुण्डलके पल्टेमें इन्द्रसे ग्रहण किया था॥ और उस शक्तिको पाकर युद्धभूमिमें तुम्हें मरा हुआ ही समझता था ॥ हे पुरुष शार्दूल! मैं सत्यके द्वारा शपथ करके कहता हूं कि यद्यपि कर्ण कवच कुण्डल और अमोघ शक्तिसे रहित होगया है; तौ भी तुम्हें छोड कर और दूसरे किसी पुरुषको भी सामर्थ्य नहीं है, जो युद्धभूमि में कर्णका वध कर सके ॥ (२१-२३)

यह सूतपुत्र कर्ण सदा व्रताचरण करनेवाला, सत्यवादी, तपस्वी, ब्राह्मणोंमें निष्ठावान् और शत्रुओंके ऊपर सदा दया करता रहता है; इस ही कारण वह इस लोकके बीच वृष नामसे विख्यात हुआ है ॥ यह युद्धदुर्मद महाबाहु कर्ण हाथमें धनुष लेकर युद्धभूमिमें विपक्षी सेनाके रथियोंके अभिमानको इस प्रकार नाश

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमदान्रथशार्दूलान्कुरुते रणमूर्धनि ।
मध्यङ्गत इवाऽऽदित्यो यो न शक्यो निरीक्षितुम् ॥२६॥
त्वदीयैः पुरुषव्याघ्र योधमुख्यैर्महात्मभिः ।
शरजालसहस्रांशुः शरदीव दिवाकरः ॥ २७ ॥
तपान्ते जलदो यद्वच्छरधाराः क्षरन्मुहुः ।
दिव्यास्त्रजलदः कर्णः पर्जन्य इव वृष्टिमान् ॥ २८ ॥
त्रिदशैरपि चाऽऽस्यद्भिः शरवर्षं समन्ततः ।
अशक्यस्तदयं जेतुं स्रवद्भिर्मांसशोणितम् ॥ २९ ॥
कवचेन विहीनश्च कुण्डलाभ्यां च पाण्डव ।
सोऽद्य मानुषतां प्राप्तो विमुक्तः शक्रदत्तया ॥ ३० ॥
एको हि योगोऽस्य भवेद्वधाय च्छिद्रे ह्येनं स्वप्रमत्तः प्रमत्तम् ।
कृच्छ्रप्राप्तं रथचक्रे विमग्ने हन्याः पूर्वं त्वं तु संज्ञां विचार्य ॥ ३१ ॥
न ह्युद्यतास्त्रं युधि हन्यादजय्यमप्येकवीरो बलभित्सवज्रः ।

करता रहता है, जैसे वनके बीच पराक्रमी सिंह हाथियोंके गर्वको नष्ट किया करता है । (२४-२६)

हे पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन ! तुम्हारी ओरसे मुख्य मुख्य महात्मा क्षत्रिय योद्धा लोग बाण वर्षा करते हुए जिस कर्णको सहस्रकिरण धारण करनेवाले दोपहरके सूर्यकी भांति युद्धभूमिमें देखनेमें भी समर्थ नहीं हैं, वह कर्ण जलकी वर्षा करनेवाले बादलोंकी भांति यदि लगातार अपने दिव्य अस्त्ररूपी जलकी वर्षा करता रहे; तो और पुरुषोंकी तो कुछ बात ही नहीं है; देवता लोग भी चारों ओरसे अपने अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा करके इस महारथी कर्णको पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं; वरन उन्हीं लोगोंके शरीरसे मांसके सहित रुधिरकी धारा बहती रहेगी ॥ आज वही कर्ण कवच कुण्डल और इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्तिसे रहित होके सामान्य मनुष्य भावको प्राप्त हुआ है ॥ (२६-३०)

परन्तु उसके विषयमें एक विशेष उपाय है, जब तुमसे कर्णका द्वैरथ युद्ध होगा तब उसके रथके चक्र पृथ्वीमें घुस जावेंगे, उस समय जब वह दुःखित होके विपद्ग्रस्त होगा, उसी समय तुम सावधानताके सहित मेरे सङ्केतके अनुसार उसका नाश करना ॥ क्योंकि यह अपराजित कर्ण जो अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके युद्धभूमिमें खडा रहे तो वीरोंमें अग्रणी पुरुषोंके पराक्रमको नाश करने वाले इन्द्र भी यदि हाथमें वज्र लेकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरासन्धश्चेदिराजो महात्मा महाबाहुश्चैकलव्यो निषादः ॥ ३२ ॥
एकैकशो निहताः सर्व एते योगैस्तैस्तैस्त्वद्धितार्थं मयैव ।
अथाऽपरे निहता राक्षसेन्द्रा हिडिम्बकिर्मीरबकप्रधानाः ।
अलायुधः परचक्रावमर्दी घटोत्कचश्चोग्रकर्मा तरस्वी ॥ ३३ ॥ [८२१९]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि रात्रियुद्धे घटोत्कचवधे श्रीकृष्णहर्षेऽशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८० ॥

अर्जुन उवाच— कथमस्माद्धितार्थं ते कश्च योगैर्जनार्दन ।
जरासन्धप्रभृतयो घातिताः पृथिवीश्वराः ॥ १ ॥
वासुदेव उवाच- जरासन्धश्चेदिराजो नैषादिश्च महाबलः ।
यदि स्युर्न हताः पूर्वमिदानीं स्युर्भयङ्कराः ॥ २ ॥
दुर्योधनस्तानवश्यं वृणुयाद्रथसत्तमान् ।
तेऽस्मासु नित्यविद्विष्टाः संश्रयेयुश्च कौरवान् ॥ ३ ॥
ते हि वीरा महेष्वासाः कृतास्त्रा दृढयोधिनः ।

युद्धभूमिके बीच आगमन करें; तो भी कर्णका वध न कर सकेंगे॥ (३१-३२)

हे अर्जुन ! पहिले मैंने तुम्हारे हितके निमित्त ही महाबाहु महात्मा जरासन्ध, चेदिराज शिशुपाल, निषादराज एकलव्य, आदि वीरोंका पृथक् पृथक् नाना उपाय रचके उनका नाश किया है। इसी प्रकार राक्षसराज हिडिम्ब, किर्मीर, बक, शत्रु नाशन अलायुध और कठिन कर्म करने वाले पराक्रमी घटोत्कच आदि राक्षस और तामसी प्रकृतिवाले बहुतेरे क्षत्रिय योद्धा भी अनेक उपायोंसे मारे गये हैं॥ (३२-३३) [८२१९]

द्रोणपर्वमें एकसौ अस्सी अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ एकासी अध्याय।

श्रीकृष्णके वचनोंको सुनकर अर्जुन बोले, हे जनार्दन कृष्ण ! आपने किस प्रकार हमलोगोंके हितके वास्ते किन किन उपायोंसे जरासन्ध आदि राजाओं-का नाश किया है ? (१)

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्जुन ! मगध-राज जरासन्ध, चेदिराज शिशुपाल और महाबलवान् निषादराज एकलव्य आदि दुष्ट राजा लोग यदि पहिले न मारे गये होते, तो इस समय वे लोग अत्यन्त ही भयङ्कर हो जाते॥ क्योंकि इस युद्धमें दुर्योधन उन रथियोंमें मुख्य राजाओंको अवश्य ही वरन करता और वे लोग भी हम लोगोंके ऊपर पहिलेसे ही शत्रुता रखते थे इससे वे लोग कौरवों के ही पक्षको अवलम्बन करते, इसमें कुछ सन्देह नहीं है॥ ऐसा होने पर वे सब धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी दृढ पराक्रमी कृतास्त्र वीर लोग युद्धभूमिमें देवताओंकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्तराष्ट्रचमूं कृत्स्नां रक्षेयुरमरा इव ॥ ४ ॥
सूतपुत्रो जरासन्धश्चेदिराजो निषादजः ।
सुयोधनं समाश्रित्य जयेयुः पृथिवीमिमाम् ॥ ५ ॥
योगैरपि हता यैस्ते तन्मे शृणु धनञ्जय ।
अजय्या हि विना योगैर्मृधे ते दैवतैरपि ॥ ६ ॥
एकैको हि पृथक्तेषां समस्तां सुरवाहिनीम् ।
योधयेत्समरे पार्थ लोकपालाभिरक्षिताम् ॥ ७ ॥
जरासन्धो हि रुषितो रौहिणेयप्रधर्षितः ।
अस्मद्वधार्थं चिक्षेप गदां वै सर्वघातिनीम् ॥ ८ ॥
सीमन्तमिव कुर्वाणां नभसः पावकप्रभाम् ।
अदृश्यताऽऽपतन्ती सा शक्रमुक्ता यथाऽशनिः ॥ ९ ॥
तामापतन्तीं दृष्ट्वैव गदां रोहिणिनन्दनः ।
प्रतिघातार्थमस्त्रं वै स्थूणाकर्णमवासृजत् ॥ १० ॥

भांति कुरुसेनाके योद्धाओंकी रक्षा करते ॥ (२–४)

अधिक क्या कहूं सूतपुत्र कर्ण, मगधराज जरासन्ध, चेदिराज शिशुपाल और निषादराज एकलव्य यदि दुर्योधन के पक्षको अवलम्बन करके युद्धभूमिमें स्थित होते, तो सम्पूर्ण पृथ्वीके योद्धाओंको अपने अस्त्रोंसे पीडित कर सकते। हे अर्जुन ! उन राजाओंके वधसे तुम्हारा कैसा हित हुआ है, वह तुमने जाना; अब वे पराक्रमी राजा लोग जिन जिन उपायोंसे मारे गये उस वृत्तान्तको भी सुनो। उपायके विना वे अपराजित वीर राजा लोग युद्धभूमिमें देवताओंसे भी अवध्य थे ॥ हे अर्जुन ! उन सब राजाओंकी बात तो दूर रही उनके बीच एक एक वीरमें इतनी सामर्थ्य थी, कि लोकपालोंसे रक्षित सम्पूर्ण देवताओंकी सेनाके सङ्गमें भी वह लोग युद्ध कर सकते ॥ (५–७)

पहिले जरासन्धने रोहिणीपुत्र बलदेवके निकटसे पराजित होके क्रोध पूर्वक हम लोगोंके वधके वास्ते एक सर्वघातक गदा उठाकर हमारी ओर चलायी ॥ अग्निके समान प्रकाशमान उस गदाके गिरनेके समय ऐसा मालूम होने लगा, मानो इन्द्रके हाथसे छूटा हुआ वज्र आकाशमण्डलको सीमन्तयुक्त करता हुआ पृथ्वीपर गिर रहा है ॥ रोहिणी पुत्र बलदेवने उस गदाको सम्मुख आती देख उसे निवारण करनेके वास्ते स्थूणाकर्ण नाम अस्त्र चलाया। उस अस्त्रके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्त्रवेगप्रतिहता सा गदा प्रापतद्भुवि ।
दारयन्ती धरां देवीं कम्पयन्तीव पर्वतान् ॥ ११ ॥
तत्र सा राक्षसी घोरा जरा नाम्नी सुविक्रमा ।
सन्दधे सा हि सञ्जातं जरासन्धमरिन्दमम् ॥ १२ ॥
द्वाभ्यां जातो हि मातृभ्यामर्धदेहः पृथक्पृथक् ।
जरया सन्धितो यस्माज्जरासन्धस्ततोऽभवत् ॥ १३ ॥
सा तु भूमिं गता पार्थ हता ससुतबान्धवा ।
गदया तेन चास्त्रेण स्थूणाकर्णेन राक्षसी ॥ १४ ॥
विनाभूतः स गदया जरासन्धो महामृधे ।
निहतो भीमसेनेन पश्यतस्ते धनञ्जय ॥ १५ ॥
यदि हि स्याद्गदापाणिर्जरासन्धः प्रतापवान् ।
सेन्द्रा देवा न तं हन्तुं रणे शक्ता नरोत्तम ॥ १६ ॥
त्वद्धितार्थं च नैषादिरंगुष्ठेन वियोजितः ।
द्रोणेनाऽऽचार्यकं कृत्वा छद्मना सत्यविक्रमः ॥ १७ ॥

वेगसे गदा निवारित होने पर ऐसा हुआ मानो वह गदा पर्वतोंको कंपाती और पृथ्वीको विदारण करती हुई आकाशसे गिरी ॥ (८-११)

उस ही स्थलपर महा पराक्रमसे युक्त जरा नामकी भयङ्करी राक्षसी वास करती थी; जिसने पहिले जन्मके समयमें शत्रु-नाशन जरासन्धकी दोनों फांकोंको जोडा था; क्योंकि वह राजकुमार जन्मके समयमें दो माताके गर्भसे दो फांक होके उत्पन्न हुआ था और जरा राक्षसीने उन दोनों फांकोंको एकमें जोड दिया था इस ही कारण वह राजकुमार जरासन्ध नामसे विख्यात हुआ था ॥ वह जरा राक्षसी स्थूणाकर्ण अस्त्र और गदाके गिरनेसे उसके नीचे दबके पुत्र और बन्धु बान्धवोंके सहित मर गई; और जरासन्ध उस गदासे रहित होनेसे ही तुम्हारे सम्मुखमें भीमसेनके हाथसे मारा गया ॥ यदि वह प्रतापी जरासन्ध हाथमें उस गदाको लेकर युद्धभूमिमें स्थित होता, तो इन्द्र आदिक देवता लोग भी युद्धभूमिके बीच उसका नाश न कर सकते !! (१२-१६)

हे अर्जुन ! देखो पहिले तुम्हारे हितकी अभिलाषा करके द्रोणाचार्यने कपट वेषसे निषादराजके समीप जाकर आचार्यपना जनाकर गुरुदक्षिणामें सत्यपराक्रमी निषादराजको अंगूठेसे रहित किया था । क्योंकि वह दृढ पराक्रमी निषाद-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तु बद्धांगुलित्राणो नैषादिर्दृढविक्रमः ।
अतिमानी वनचरो बभौ राम इवाऽपरः ॥ १८ ॥
एकलव्यं हि सांगुष्ठमशक्ता देवदानवाः ।
सराक्षसोरगाः पार्थ विजेतुं युधि कर्हिचित् ॥ १९ ॥
किमु मानुषमात्रेण शक्यः स्यात्प्रतिवीक्षितुम् ।
दृढमुष्टिः कृती नित्यमस्यमानो दिवानिशम् ॥ २० ॥
त्वद्धितार्थं तु स मया हतः संग्राममूर्धनि ।
चेदिराजश्च विक्रान्तः प्रत्यक्षं निहतस्तव ॥ २१ ॥
स चाप्यशक्यः संग्रामे जेतुं सर्वसुरासुरैः ।
बाधार्थं तस्य जातोऽहमन्येषां च सुरद्विषाम् ॥ २२ ॥
त्वत्सहायो नरव्याघ्र लोकानां हितकाम्यया ।
हिडिम्बबककिर्मीरा भीमसेनेन पातिताः ॥ २३ ॥
रावणेन समप्राणा ब्रह्मयज्ञविनाशनाः ।
हतस्तथैव मायावी हैडिम्बेनाऽप्यलायुधः ॥ २४ ॥
हैडिम्बश्चाऽप्युपायेन शक्त्या कर्णेन घातितः ।

राज अंगुलित्राण धारण करके वनके बीच सदा अस्त्रशस्त्रोंका अभ्यास करके परशुरामके समान अस्त्रोंका ज्ञाता हुआ था ॥ अधिक क्या कहूं यदि वह अंगूठेसे युक्त होता तो देवता दानव राक्षस और सर्प आदि कोई भी उसे युद्धभूमिमें पराजित न कर सकते और मनुष्य लोग तो युद्धभूमिमें उसकी ओर देख भी न सकते ॥ मैंने उस दृढ पराक्रमी कृतास्त्र सदा अस्त्र चलानेमें समर्थ निषादराज एकलव्यको तुम्हारे हितके निमित्त ही युद्धभूमिमें मारा है । (१७–२१)

इसके अतिरिक्त देवता और असुरोंसे अजेय चेदिराज शिशुपालको भी मैंने तुम्हारे सम्मुखमें ही मारा है । हे पुरुषसिंह अर्जुन ! तुम यह निश्चय समझ रक्खो कि मैंने इस जगत्के हितकामनासे शिशुपाल और दूसरे देवद्रोही दुष्ट पुरुषोंके नाश करनेके ही वास्ते तुम्हारे सहित अवतार लिया है । इससे ब्राह्मण और यज्ञके नाशक रावणके समान पराक्रमी हिडिम्ब बक और किर्मीर आदि राक्षसोंको भीमसेन मेरे ही प्रभावसे मारनेमें समर्थ हुए । इसी भांति अलायुध राक्षसको हिडम्बापुत्र घटोत्कचके हाथसे नष्ट कराया और घटोत्कचको भी उपाय रचके कर्णके हाथसे मरवाया है । (२१–२५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि ह्येनं नाऽहनिष्यत्कर्णः शक्त्या महामृधे ॥ २५ ॥
मया वध्यो भविष्यत्स भैमसेनिर्घटोत्कचः ।
मया न निहतः पूर्वमेष युष्मत्प्रियेप्सया ॥ २६ ॥
एष हि ब्राह्मणद्वेषी यज्ञद्वेषी च राक्षसः ।
धर्मस्य लोप्ता पापात्मा तस्मादेष निपातितः ॥ २७ ॥
व्यंसिता चाप्युपायेन शक्रदत्ता मयाऽनघ ।
ये हि धर्मस्य लोप्तारो वध्यास्ते मम पाण्डव ॥ २८ ॥
धर्मसंस्थापनार्थं हि प्रतिज्ञैषा ममाऽव्यया ।
ब्रह्म सत्यं दमः शौचं धर्मो ह्रीः श्रीर्धृतिः क्षमा॥ २९ ॥
यत्र तत्र रमे नित्यमहं सत्येन ते शपे ।
न विषादस्त्वया कार्यः कर्ण वैकर्तनं प्रति ॥ ३० ॥
उपदेक्ष्याम्युपायं ते येन तं प्रसहिष्यसि ।
सुयोधनं चापि रणे हनिष्यति वृकोदरः ॥ ३१ ॥
तस्याऽपि च वधोपायं वक्ष्यामि तव पाण्डव ।

परन्तु कर्ण यदि आज इन्द्रकी अमोघ शक्तिसे घटोत्कचको न मारता तो मैं भविष्यमें अपने हाथसे घटोत्कचका वध करता, तब पहिले जो मैंने घटोत्कचका वध नहीं किया वह तुम लोगोंके प्रिय-कामनाकी इच्छा ही समझनी चाहिये। क्योंकि यह राक्षस सदा यज्ञ और ब्राह्मणोंका द्वेषी धर्मनाश करनेवाला और पापी था इस ही कारण युद्धभूमिमें मारा गया ॥ और कौशलके प्रभावसे इन्द्रकी दी हुई कर्णके हाथमें स्थित अमोघ शक्तिको भी मैंने कर्णके समीपसे पृथक् किया है। (२५–२८)

हे अर्जुन! मैंने धर्म स्थापन करनेके वास्ते पहिले इस प्रकारसे दृढ प्रतिज्ञा करी है कि जो धर्मकी लोप करेगा मैं अवश्य ही उसका वध करूंगा। मैं तुम्हारे समीप सत्य ही शपथ करके कहता हूं कि जिस स्थानपर वेद, सत्य, इन्द्रियसंयम, पवित्रता, धर्म, लज्जा, सौभाग्य, धृति और क्षमा निवास करती है मैं सदासर्वदा उस ही स्थानमें वास करता हूं। इससे कर्णवधके वास्ते तुम दुःखित न होना, उस विषयमें मैं ऐसी उपाय बताऊंगा जिससे तुम कर्णका अनायास ही वध कर सकोगे। (२८-३१)

इसके अतिरिक्त पाण्डुपुत्र भीमसेन भी युद्धभूमिके बीच जिस प्रकारसे सुयोधनका वध करनेमें समर्थ होंगे मैं उस विषयमें भी उत्तम उपायको तुम्हारे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्धते तुमुलस्त्वेष शब्दः परचमूं प्रति ॥ ३२ ॥
विद्रवन्ति च सैन्यानि त्वदीयानि दिशो दश ।
लब्धलक्ष्या हि कौरव्या विधमन्ति चमूं तव ।
दहत्येष च वः सैन्यं द्रोणः प्रहरतां वरः ॥ ३३ ॥[८२५२]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे कृष्णवाक्ये एकाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच—एकवीरवधे मोघा शक्तिः सूतात्मजे यदा ।
कस्मात्सर्वान्समुत्सृज्य स तां पार्थे न मुक्तवान् ॥ १ ॥
तस्मिन्हते हता हि स्युः सर्वे पाण्डवसृञ्जयाः ।
एकवीरवधे कस्माद्युद्धे न जयमादधे ॥ २ ॥
आहूतो न निवर्त्तेयमिति तस्य महाव्रतम् ।
स्वयं मार्गयितव्यः स सूतपुत्रेण फाल्गुनः ॥ ३ ॥
ततो द्वैरथमानीय फाल्गुनं शक्रदत्तया ।

समीप वर्णन करूंगा ॥ इस समय सेनाके पुरुषोंके परित्राण करनेके वास्ते तुम यत्नवान् होकर युद्ध करो; क्योंकि शत्रुसेनाके बीच महाघोर हर्ष नाद हो रहा है । देखो तुम्हारी सेनाके योद्धालोग भयसे दशदिशामें भागरहे हैं,तथा लक्ष्य-वेधनेवाले कुरुसेनाके योद्धा लोग तुम्हारी सेनाके व्यूहको भङ्ग करनेमें प्रवृत्त हो रहे हैं; और योद्धाओंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य भी तुम्हारी सेनाको अपने अस्त्रोंसे भस्म कर रहे हैं ॥ (३१-३३) [८२५२]

द्रोणपर्वमें एकसौ एकासी अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ बियासी अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! यदि इन्द्रकी दीहुई कर्णके हाथमें स्थित शक्ति एक ही पुरुषको मारके निष्फल होकर कर्णके समीपसे पृथक् होजावेगी,--ऐसे गुणसे युक्त थी तो कर्णने किस निमित्त सम्पूर्ण पुरुषोंको त्यागके उसे अर्जुनके ऊपर नहीं चलाया ? अर्जुनके मारे जानेसे ही पाण्डव और सृञ्जय आदि सम्पूर्ण योद्धा विनष्ट होते । जिस स्थान-में एक ही वीरके नाश होनेसे ही विजय लाभ होना संभव था वैसे विजय लाभको किस कारणसे हम लोग नहीं प्राप्त कर सके ? विशेष करके जब अर्जु-नको मैं युद्धभूमिमें आवाहन करनेसे क-दापि निवृत्त न होऊंगा,ऐसी प्रतिज्ञा है तब सूतपुत्र कर्णका अर्जुनको युद्धभूमिमें आवाहन करना ही कर्त्तव्य कार्य था ॥ हे सृञ्जय ! ऐसी उपायके उपस्थित रहते भी कर्णने किस कारणसे द्वैरथ युद्धमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जघान न वृषः कस्मात्तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय ॥ ४ ॥
नूनं बुद्धिविहीनश्चाऽप्यसहायश्च मे सुतः।
शत्रुभिर्व्यसितः पापः कथं नु स जयेदरीन् ॥ ५ ॥
पाह्यस्य परमा शक्तिर्जयस्य च परायणम्।
सा शक्तिर्वासुदेवेन व्यंसिता च घटोत्कचे ॥ ६ ॥
कुणेर्यथा हस्तगतं ह्रियेत्फलं बलीयसा।
तथा शक्तिरमोघा सा मोघीभूता घटोत्कचे ॥ ७ ॥
यथा वराहस्य शुनश्च युध्यतोस्तयोरभावे श्वपचस्य लाभः।
मन्ये विद्वन्वासुदेवस्य तद्वद्युद्धे लाभः कर्णहैडिम्बयोर्वै ॥ ८ ॥
घटोत्कचो यदि हन्याद्धि कर्णं परो लाभः स भवेत्पाण्डवानाम्।
वैकर्तनो वा यदि तं निहन्यात्तथाऽपि कृत्यं शक्तिनाशात्कृतं स्यात् ॥९॥
इति प्राज्ञः प्रज्ञयैतद्विचिन्त्य घटोत्कचं सूतपुत्रेण युद्धे।

अर्जुनको आवाहन करके उसका वध नहीं किया ? तुम यह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे समीप वर्णन करो ॥ (१–४)

इस समय मेरा पुत्र एकबारगी सहायकोंसे रहित और बुद्धिहीन हुआ है इसमें सन्देह नहीं है ॥ जब शत्रुओंने उसे इस प्रकारसे उपाय रहित किया है तब वह अब किस प्रकारसे उन लोगोंको पराजित कर सकेगा ? ओहो ! जो इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्ति मेरे पुत्रके वास्ते परमशक्ति और विजय प्राप्त करनेके विषयमें परम आश्रय स्वरूप थी, श्रीकृष्णने वैसी शक्तिको भी घटोत्कच राक्षसके ऊपर छुडवाके उसे निष्फल कर दिया। हे सञ्जय ! जैसे रोगादि कारणसे बलरहित हाथवाले किसी पुरुषके हाथमें स्थित फल कोई बलवान् पुरुष हर लेता है वेसेही कर्णके हाथमें स्थित अमोघ शक्ति घटोत्कचके ऊपर छोडी जाने पर कर्णके सपीपसे पृथक् होगई; वह श्रीकृष्णके उपायके बलसे कर्णके समीपसे पृथक् करी गयी ही मालूम होरही है ॥ (५–७)

हे बुद्धिमान् सञ्जय ! जैसे युद्धमें प्रवृत्त हुए सूकर और कुत्तेके बीचसे एकके नाश होनेसे चाण्डालको अवश्य ही लाभ होता है, मेरे विचारमें कर्ण और घटोत्कचके युद्धमें श्रीकृष्णको भी उसी भांतिसे लाभ हुआ है ॥ युद्धभूमिके बीच यदि घटोत्कच कर्णका वध कर सके तो पाण्डवोंका परम उपकार होगा और यदि सूतपुत्र कर्ण घटोत्कचका वध करेगा तो भी अमोघ शक्तिके निष्फल होनेसे बहुत बडा कार्य सिद्ध होवेगा;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अघातयद्वासुदेवो नृसिंहः प्रियं कुर्वन्पाण्डवानां हितं च ॥ १० ॥
सञ्जय उवाच— एतच्चिकीर्षितं ज्ञात्वा कर्णस्य मधुसूदनः ।
नियोजयामास तदा द्वैरथे राक्षसेश्वरम् ॥ ११ ॥
घटोत्कचं महावीर्यं महाबुद्धिर्जनार्दनः ।
अमोघाया विघातार्थं राजन्दुर्मन्त्रिते तव ॥ १२ ॥
तदैव कृतकार्या हि वयं स्याम कुरूद्वह ।
न रक्षेद्यदि कृष्णस्तं पार्थं कर्णान्महारथात् ॥ १३ ॥
साश्वध्वजरथः संख्ये धृतराष्ट्र पतेद्भुवि ।
विना जनार्दनं पार्थो योगानामीश्वरं प्रभुम् ॥ १४ ॥
तैस्तैरुपायैर्बहुभी रक्ष्यमाणः स पार्थिव ।
जयत्यभिमुखः शत्रून्पार्थः कृष्णेन पालितः ॥ १५ ॥
स विशेषात्त्वमोघायाः कृष्णोऽरक्षत पाण्डवम् ।
हन्यात्क्षिप्रं हि कौन्तेयं शक्तिर्वृक्षमिवाऽशनिः॥१६॥

बुद्धिमान् कृष्णने ऐसा ही विचारके पाण्डवोंके प्रिय कार्य करनेकी अभिलाषासे सूतपुत्र कर्णके हाथसे घटोत्कचका वध कराया ॥ (८–१०)

सञ्जय बोले, महाराज ! मधुदैत्यको नाश करनेवाले महा बुद्धिमान जनार्दन कृष्णने कर्णके ऐसे अभिप्रायको जानकेही इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिको निष्फल करनेकी इच्छासे कर्णके सङ्ग घटोत्कचको द्वैरथ युद्धमें प्रवृत्त किया था ॥ परन्तु यह सब घटना तुम्हारी दुष्ट नीतिसे ही होती हुई समझनी उचित है ॥ हे कुरुश्रेष्ठ ! श्रीकृष्ण यदि रणभूमिके बीच अर्जुनको महारथी कर्णके हाथसे न बचाते तो हम लोग उस ही समय कृतकार्य हो सकते थे ॥ (११–१३)

सर्वशक्तिमान् परम योगेश्वर जनार्दन कृष्ण रणभूमिके बीच यदि अर्जुनकी रक्षा न करते होते तो अवश्य ही घोडे रथ और ध्वजाके सहित अर्जुन प्राणरहित होके पृथ्वीमें गिर पडते इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥ अर्जुन कृष्णसे अनेक उपायोंसे रक्षित रहते हैं उस ही कारण युद्धभूमिमें संमुख उपस्थित हुए महारथी शत्रुओं को पराजित करनेमें समर्थ होते हैं ॥ जो हो कृष्णने अमोघ शक्तिसे अर्जुनकी विशेष रूपसे रक्षा करी है नहीं तो कर्णकी भुजासे छूटी वह अमोघ शक्ति कुन्तीपुत्र अर्जुनके शरीरको इस प्रकार विदारण कर देती जैसे वज्रकी चोटसे पर्वत विदीर्ण होजाते हैं ॥ (१४-१६)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृतराष्ट्र उवाच—विरोधी च कुमन्त्री च प्राज्ञमानी ममाऽऽत्मजः।
यस्यैष समतिक्रान्तो वधोपायो जयं प्रति ॥ १७ ॥
स वा कर्णो महाबुद्धिः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
न मुक्तवान्कथं सूत ताममोघां धनञ्जये ॥ १८ ॥
तवापि समतिक्रान्तमेतद्गावल्गणे कथम्।
एतमर्थं महाबुद्धे यत्त्वया नाऽवबोधितः ॥ १९ ॥
सञ्जय उवाच— दुर्योधनस्य शकुनेर्मम दुःशासनस्य च।
रात्रौ रात्रौ भवत्येषा नित्यमेव समर्थना ॥ २० ॥
श्वः सर्वसैन्यानुत्सृज्य जहि कर्ण धनञ्जयम्।
प्रेष्यवत्पाण्डुपञ्चालानुपभोक्ष्यामहे ततः ॥ २१ ॥
अथवा निहते पार्थे पाण्डवान्यतमं ततः।
स्थापयेद्यदि वार्ष्णेयस्तस्मात्कृष्णो हि हन्यताम् ॥ २२ ॥
कृष्णो हि मूलं पाण्डूनां पार्थः स्कन्ध इवोद्धतः।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! मेरा पुत्र दुर्योधन अपनेको बुद्धिमान् मानने वाला, अच्छे लोगोंसे विरोध करनेवाला और दुष्ट विचारमें निपुण है, नहीं तो अर्जुनके वधके विषयमें क्या ऐसी उपाय भी निष्फल होती! और सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ बुद्धिमान कर्णने ही किस कारणसे अर्जुनके ऊपर उस अमोघ शक्तिको नहीं चलाया? हे गवल्गणपुत्र! उस समय क्या तुम्हारी भी बुद्धि भ्रमयुक्त होगई थी? यदि तुम्हारी बुद्धि भ्रमित नहीं थी तो तुमने क्यों नहीं अमोघ शक्ति चलानेका विषय कर्णको स्मरण कराया? (१७-१९)

सञ्जय बोले, महाराज! दुर्योधन शकुनि दुःशासन और मैं—हम सब कोई प्रति दिन रात्रिके समय अपनी बुद्धिसे स्थिर करके कर्णसे यह वचन कहते थे, ॥ हे कर्ण! कल्ह सवेरे तुम सबको छोडके अर्जुनको ही मारो! अर्जुनके मरनेसे ही हम लोग दूसरे सम्पूर्ण पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंको सहजमें पराजित करेंगे तथा उन्हें अपने वशमें करके इस सम्पूर्ण पृथ्वीके राज्यको भोग करेंगे; अथवा अर्जुनके मारे जानेपर यदि वृष्णिनन्दन कृष्ण पाण्डवोंकी ओरसे दूसरे वीरको युद्धके कार्यमें नियुक्त करें इससे कृष्णहीको मारो, क्योंकि कृष्ण ही पाण्डवोंके सब कार्योंके सिद्ध करनेके मूल हैं॥ २०-२२

अर्जुन कृष्णरूपी वृक्षकी बडी शाखा दूसरे पाण्डव लोग छोटी शाखा और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाखा इवेतरे पार्थाः पञ्चालाः पत्रसंज्ञिताः ॥ २३ ॥
कृष्णाश्रयाः कृष्णबलाः कृष्णनाथाश्च पाण्डवाः ।
कृष्णः परायणं चैषां ज्योतिषामिव चन्द्रमाः ॥ २४ ॥
तस्मात्पर्णानि शाखाश्च स्कन्धं चोत्सृज्य सूतज ।
कृष्णं हि विद्धि पाण्डूनां मूलं सर्वत्र सर्वदा ॥ २५ ॥
हन्याद्यदि हि दाशार्हं कर्णो यादवनन्दनम् ।
कृत्स्ना वसुमती राजन्वशे तस्य न संशयः ॥ २६ ॥
यदि हि स निहतः शयीत भूमौ यदुकुलपाण्डवनन्दनो महात्मा ।
ननु तव वसुधा नरेन्द्र सर्वा सगिरिसमुद्रवना वशं व्रजेत ॥ २७ ॥
सा तु बुद्धिः कृताऽप्येवं जाग्रति त्रिदशेश्वरे ।
अप्रमेये हृषीकेशे युद्धकालेऽप्यमुह्यत ॥ २८ ॥
अर्जुनं चापि राधेयात्सदा रक्षति केशवः ।
न ह्येनमैच्छत्प्रमुखे सौतेः स्थापयितुं रणे ॥ २९ ॥

पाञ्चालयोद्धा लोग उसके पत्रस्वरूप हैं ॥ अधिक क्या कहा जावे, कृष्ण ही पाण्डवोंके आश्रय बल और सहायक हैं। जैसे चंद्रमा सम्पूर्ण ज्योतिवाले पदार्थोंके आश्रय हैं वैसे ही कृष्ण भी पाण्डवोंके परम आश्रयस्वरूप हैं; हे कर्ण ! इससे तुम शाखा और पत्र आदि सबको छोडके पाण्डववृक्षके मूल स्वरूप कृष्णहीका सबसे पहिले नाश करो । हे राजेन्द्र ! हम लोग कर्णसे ऐसे ही वचन कहके फिर दुर्योधनसे कहते थे,—हे राजन् ! सूतनन्दन कर्ण यदि यदुकुलभूषण दाशार्ह कृष्णका वध कर सके तो यह सम्पूर्ण पृथ्वी तुम्हारे वशमें हो जावेगी; इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥ (२३–२६)

हे राजेन्द्र ! यदुवंशियों और पाण्डवोंके आनन्दको बढानेवाले कृष्ण मरके पृथ्वीपर शयन करें तो निश्चय ही वन पर्वत और समुद्रके सहित यह सम्पूर्ण पृथ्वी तुम्हारे अधिकारमें होजावेगी ॥ महाराज ! इसी भांति सदा सर्वान्तर्यामी तीनों लोकके ईश्वर श्रीकृष्णके वधके विषयमें नित्य रात्रिके समय हम लोग अपनी बुद्धिसे ऐसा ही निश्चय करते थे तो भी सबेरे युद्धके समय हम लोगोंकी बुद्धि मोहित होजाती थी ॥ जबतक कर्णके निकट इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्ति उपस्थित थी तब तक श्रीकृष्ण नित्य ही कर्णसे अर्जुनकी रक्षा करते थे अर्थात् श्रीकृष्ण कभी भी कर्णके सम्मुख अर्जुनके रथको खडा नहीं करते थे ॥ (२७–२९)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यांश्चाऽस्मै रथोदारानुपास्थापयदच्युतः ।
अमोघां तां कथं शक्तिं मोघां कुर्यामिति प्रभो ॥३०॥
यश्चैवं रक्षते पार्थं कर्णात्कृष्णो महामनाः ।
आत्मानं स कथं राजन्न रक्षेत्पुरुषोत्तमः ॥ ३१ ॥
परिचिन्त्य तु पश्यामि चक्रायुधमरिन्दमम् ।
न सोऽस्ति त्रिषु लोकेषु यो जयेत जनार्दनम् ॥ ३२ ॥

सञ्जय उवाच— ततः कृष्णं महाबाहुं सात्यकिः सत्यविक्रमः ।
पप्रच्छ रथशार्दूलः कर्णं प्रति महारथः ॥ ३३ ॥
अयं च प्रत्ययः कर्णे शक्तिश्चाऽमितविक्रमा ।
किमर्थं सूतपुत्रेण न मुक्ता फाल्गुने तु सा ॥ ३४ ॥

वासुदेव उवाच—दुःशासनश्च कर्णश्च शकुनिश्च ससैन्धवः ।
सततं मन्त्रयन्ति स्म दुर्योधनपुरोगमाः ॥ ३५ ॥
कर्ण कर्ण महेष्वास रणेऽमितपराक्रम ।
नाऽन्यस्य शक्तिरेषा ते मोक्तव्या जयतां वर ॥ ३६ ॥

किस प्रकारसे राधापुत्र कर्णके निकटसे अमोघ शक्तिको निष्फल कराऊं, इसी भांति चिन्ता करके श्रीकृष्ण पाण्डवोंकी ओरके अन्य महारथियोंको कर्णके सम्मुख युद्धके निमित्त भेजते थे ॥ महाराज ! जब पुरुषोत्तम महाबुद्धिमान् कृष्णने अर्जुनको इस प्रकार कर्णके हाथसे बचाया है तब अपनी रक्षा वह क्यों नहीं कर सकेंगे ? इससे मैं भली भांति विशेष रूपसे विचार करके देखता हूं, कि तीनों लोकके बीच ऐसा कोई भी पुरुष नहीं है जो सुदर्शन चक्रधारी शत्रु नाशन जनार्दन कृष्णको पराजित कर सके ॥ (३०-३२)

संजय बोले, तब रथियोंमें मुख्य सत्य पराक्रमी सात्यकिनेभी कर्णके विषयमें महाबाहु कृष्णसे पूंछा था, हे कृष्ण ! इन्द्रकी दी हुई शक्ति अत्यन्त पराक्रमशालिनी और अमोघ है, उस विषयमें कर्णको दृढरूपसे विश्वास था, तब उसने किस कारणसे उस अमोघ शक्तिको अर्जुनके ऊपर नहीं चलाया ? (३३-३४)

सात्यकिके वचनको सुन कर श्रीकृष्ण बोले, हे शिनिकुल भूषण सात्यकि ! दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि और सिन्धुराज जयद्रथ; ये सब कोई प्रति दिन रात्रिके समय आपसमें यही विचार करके स्थिर करते थे, हे अत्यन्त पराक्रमी कर्ण ! हे महाधनुर्द्धर विजयी पुरुषोंमें श्रेष्ठ महाबाहु कर्ण ! कुन्तीपुत्र अर्जुनके अतिरिक्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋते महारथात्कर्ण कुन्तीपुत्राद्धनञ्जयात् ।
स हि तेषामतियशा देवानामिव वासवः ॥ ३७ ॥
तस्मिन्विनिहते पार्थे पाण्डवाः सृञ्जयैः सह ।
भविष्यन्ति गतात्मानः सुरा इव निरग्नयः ॥ ३८ ॥
तथेति च प्रतिज्ञातं कर्णेन शिनिपुङ्गव ।
हृदि नित्यं च कर्णस्य वधो गाण्डीवधन्वनः ॥ ३९ ॥
अहमेव तु राधेयं मोहयामि युधां वर ।
ततो नाऽवसृजच्छक्तिं पाण्डवे श्वेतवाहने ॥ ४० ॥
फाल्गुनस्य हि सा मृत्युरिति चिन्तयतोऽनिशम् ।
न निद्रा न च मे हर्षो मनसोऽस्ति युधां वर ॥ ४१ ॥
घटोत्कचे व्यंसितां तु दृष्ट्वा तां शिनिपुङ्गव ।
मृत्योरास्यान्तरान्मुक्तं पश्याम्यद्य धनञ्जयम् ॥ ४२ ॥
न पिता न च मे माता न यूयं भ्रातरस्तथा ।
न च प्राणास्तथा रक्ष्या यथा बीभत्सुराहवे ॥ ४३ ॥

और किसी पुरुषके ऊपर तुम इस अमोघ शक्तिको मत चलाना ! क्योंकि जैसे देवतोंके बीचमें इन्द्र है, वैसे ही पाण्डवोंके बीचमें अर्जुन ही मुख्य वीर और यशस्वी है; इससे अर्जुनके मारे जानेसे ही अग्निहीन देवतोंकी भांति सृञ्जय और पाण्डलोग सब कोई सहजमें ही नष्ट हो सकेंगे ॥ (३५–३८)

हे सात्यकि ! कर्णने उन लोगोंके वचनको सुनके ऐसाही होगा यह वचन कहके प्रतिज्ञा की थी; और उस ही समयसे गाण्डीवधारी अर्जुनके वधका विषय उसके अन्तःकरणमें नित्य ही स्थित रहता था; केवल मैं ही योद्धाओंमें श्रेष्ठ राधापुत्र कर्णको मोहित करता था, इस ही कारणसे उसने श्वेतवाहन अर्जुनके ऊपर अमोघ शक्ति नहीं चलायी ॥ हे योद्धाओंमें श्रेष्ठ सात्यकि ! मैंने उस इन्द्रकी अमोघ शक्तिको अर्जुनसे निवारित न होनेवाली तथा अर्जुनकी मृत्यु स्वरूप जानके अपने चित्तसे हर्ष सुख त्याग किया था, मुझे इस ही चिन्तामें रात्रिको नींद नहीं लगती थी ॥ ३९–४१

आज घटोत्कचके ऊपर वह शक्ति छूटकर कर्णके निकटसे पृथक् हुई है। उसे देखकर अब मैं अर्जुनको मृत्युके मुखसे छूटा हुआ ही समझ रहा हूं ॥ अधिक क्या कहूं, युद्धभूमिमें अर्जुन मुझे जैसे रक्षणीय हैं; पिता माता, तुम लोग तथा भाई बन्धु आदि कोई भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैलोक्यराज्याद्यत्किञ्चिद्भवेदन्यत्सुदुर्लभम् ।
नेच्छेयं सात्वताऽहं तद्विना पार्थं धनञ्जयम् ॥ ४४ ॥
अतः प्रहर्षः सुमहान्युयुधानाऽद्य मेऽभवत् ।
मृतं प्रत्यागतमिव दृष्ट्वा पार्थं धनञ्जयम् ॥ ४५ ॥
अतश्च प्रहितो युद्धे मया कर्णाय राक्षसः ।
न ह्यन्यः समरे रात्रौ शक्तः कर्णं प्रबाधितुम् ॥ ४६ ॥
सञ्जय उवाच— इति सात्यकये प्राह तदा देवकिनन्दनः ।
धनञ्जयहिते युक्तस्तत्प्रिये सततं रतः ॥ ४७ ॥ [८२९९]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे कृष्णवाक्ये द्व्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१८२॥

धृतराष्ट्र उवाच—कर्णदुर्योधनादीनां शकुनेः सौबलस्य च ।
अपनीतं महत्तात तव चैव विशेषतः ॥ १ ॥
यदि जानीथ तां शक्तिमेकघ्नीं सततं रणे ।
अनिवार्यामसह्यां च देवैरपि सवासवैः ॥ २ ॥

वैसा रक्षणीय नहीं है, अधिक क्या कहूं मुझे अपना प्राण भी वैसा प्रिय नहीं है ॥ हे सात्यकि! यदि! तीनों लोककी राज्यसे भी दुर्लभ कोई दूसरी वस्तु होवे तौ भी मैं अर्जुनको त्यागके उस पदार्थको भी ग्रहण करनेकी इच्छा नहीं करता ॥ (४२-४४)

इससे मैं आज मृत्युके मुखमें पडे हुएके समान अर्जुनको कर्णके हाथसे मुक्त हुआ देखकर इस प्रकारसे हर्षित और आनन्दित होरहा हूं ॥ इसके अतिरिक्त मैंने जो आज घटोत्कचको युद्ध करनेके वास्ते कर्णके सम्मुख भेजा था उसका कारण अपनी बुद्धिसे मैंने यही विचारके देखा था, कि आज रात्रिके समय कर्णको कोई भी वीर निवारण करनेमें समर्थ न होगा ॥ (४५-४६)

सञ्जय बोले, महाराज! अर्जुनको अत्यन्त ही प्रिय और सदा ही उसके हितकार्यमें रत कृष्णने उस समय सात्यकिसे ऐसेही वचन कहे थे ॥ (४७) [८२९९]

द्रोणपर्वमें एकसौ बियासी अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ तिरासी अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे तात! हे सञ्जय! कर्ण, दुर्योधन और सुबलपुत्र शकुनि और विशेष करके तुमने अत्यन्त ही अन्याय कार्य किया है ॥ क्योंकि जब तुम लोगोंने निश्चय करके जाना था, कि कर्णके हाथकी अनिवार्य शक्ति इन्द्र आदि देवतोंसे भी असह्य है और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा किमर्थं तु कर्णेन प्रवृत्ते समरे पुरा।
न देवकीसुते मुक्ता फाल्गुने वाऽपि सञ्जय ॥ ३ ॥

सञ्जय उवाच— संग्रामाद्विनिवृत्तानां सर्वेषां नो विशाम्पते ॥ ४ ॥
रात्रौ कुरुकुलश्रेष्ठ मन्त्रोऽयं समजायत।
प्रभातमात्रे श्वोभूते केशवायार्ज्जुनाय वा।
शक्तिरेषा हि मोक्तव्या कर्ण कर्णेति नित्यशः ॥ ५ ॥
ततः प्रभातसमये राजन्कर्णस्य दैवतैः।
अन्येषां चैव योधानां सा बुद्धिर्नाश्यते पुनः ॥ ६ ॥
दैवमेव परं मन्ये यत्कर्णो हस्तसंस्थया।
न जघान रणे पार्थं कृष्णं वा देवकीसुतम् ॥ ७ ॥
तस्य हस्तस्थिता शक्तिः कालरात्रिरिवोद्यता।
दैवोपहतबुद्धित्वान्न तां कर्णो विमुक्तवान् ॥ ८ ॥
कृष्णे वा देवकीपुत्रे मोहितो देवमायया।
पार्थे वा शक्रकल्पे वै वधार्थं वासवीं प्रभो ॥ ९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच— दैवेनोपहता यूयं स्वबुद्ध्या केशवस्य च।

रणभूमिके बीच एक महावीरका नाश करनेवाली है, तब कर्णने पहिले युद्धमें प्रवृत्त हुए अर्जुन अथवा देवकीपुत्र कृष्णके ऊपर उस अमोघ शक्तिको क्यों नहीं चलाया ? (१–३)

सञ्जय बोले, हे कुरुकुलश्रेष्ठ महाराज! हम लोग प्रतिदिन युद्धसे निवृत्त होने पर शिबिरमें आके रात्रिके समय इसी प्रकार मन्त्रणा करके कर्णसे कहते थे, हे कर्ण! तुम कल्ह सबेरा होते ही श्रीकृष्ण वा अर्जुनके ऊपर अवश्य इस अमोघ शक्तिको छोडना ॥ परन्तु भोर होते ही दैवके प्रभावसे कर्ण तथा दूसरे सम्पूर्ण योद्धाओंकी बुद्धि भ्रष्ट होजाती थी ॥ (४–६)

अधिक क्या कहा जावे, जब कर्णके हाथमें वैसी अमोघ शक्तिके रहते भी देवकीपुत्र कृष्ण वा अर्जुन नहीं मारे गये; तब मेरे विचारमें प्रारब्ध ही बलवान् मालूम होती है ॥ हे राजेन्द्र! कर्णने निश्चय ही देवमायाके प्रभावसे बुद्धि भ्रष्ट और मोहित होके देवकीपुत्र कृष्ण और महावीर इन्द्रके समान पराक्रमी अर्जुनके ऊपर इन्द्रकी दी हुई अमोघशक्ति नहीं चलायी ॥ (७–९)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! तुम लोग अवश्य ही देवमाया, कृष्णकी युक्ति और अपनी बुद्धिके दोषसे पराजित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गता हि वासवी हत्वा तृणभूतं घटोत्कचम् ॥ १० ॥
कर्णश्च मम पुत्राश्च सर्वे चाऽन्ये च पार्थिवाः।
तेन वै दुष्प्रणीतेन गता वैवस्वतक्षयम् ॥ ११ ॥
भूय एव तु मे शंस यथा युद्धमवर्तत।
कुरूणां पाण्डवानां च हैडिम्बौ निहते तदा ॥ १२ ॥
ये च तेऽभ्यद्रवन्द्रोणं व्यूढानीकाः प्रहारिणः।
सृञ्जयाः सह पञ्चालैस्तेऽप्यकुर्वन्कथं रणम् ॥ १३ ॥
सौमदत्तेर्वधाद् द्रोणमायान्तं सैन्धवस्य च।
अमर्षाज्जीवितं त्यक्त्वा गाहमानं वरूथिनीम् ॥ १४ ॥
जृम्भमाणमिव व्याघ्रं व्यात्ताननमिवाऽन्तकम्।
कथं प्रत्युद्ययुर्द्रोणमस्यन्तं पाण्डुसृञ्जयाः ॥ १५ ॥
आचार्यं ये च तेऽरक्षन्दुर्योधनपुरोगमाः।
द्रौणिकर्णकृपास्तात ते वा कुर्वन्किमाहवे ॥ १६ ॥
भारद्वाजं जिघांसन्तौ सव्यसाचिवृकोदरौ।

होके नष्ट हुए, क्योंकि इन्द्रकी दी हुई वैसी अमोघ शक्ति कर्णके हाथसे छूटकर तृणके समान घटोत्कचको नाश करके निष्फल होगई॥ इस ही दुर्नीतिके दोषसे मैं अपने पुत्रोंको कर्ण तथा अपनी सेनाके सम्पूर्ण राजाओंको मृत्युके मुखमें पडे ही समझ रहा हूं॥ जो हो हिडिम्बापुत्र घटोत्कचके मारे जानेपर कौरव और पाण्डवोंका कैसा संग्राम हुआ वह सब वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो; और उस समय पाण्डवोंकी ओरके कौन कौन योद्धा व्यूहबद्ध सेनाके साहित द्रोणाचार्यकी ओर दौडे। और सृञ्जय तथा पाञ्चाल योद्धाओंने भी द्रोणाचार्यके सङ्ग किस भांतिसे युद्ध किया? (१०-१३)

हे सञ्जय! द्रोणाचार्य सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा और सिन्धुराज जयद्रथके मारे जानेसे अत्यन्त ही क्रुद्ध हुए थे; उन्होंने अपने प्राणकी आशाको छोडके क्रोधी सिंह तथा दण्डधारी यमराजकी भांति जब पाण्डवोंकी सेनाके बीच प्रवेश करके अपने प्रचण्ड धनुषको फेरते हुए लगातार बाणोंको वर्षाने लगे उस समय पाण्डव और सृञ्जय लोग किस प्रकार द्रोणाचार्यके सम्मुख स्थित हुए? १४-१५

हे तात सञ्जय! उस महाघोर युद्धके समय मेरी सेनाके किन किन योद्धाओंने द्रोणाचार्यकी रक्षा करी थी? और कृपाचार्य अश्वत्थामा कर्ण तथा दुर्योधन आदि मेरी सेनाके महारथी योद्धाओंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचर्छन्मामका युद्धे कथं सञ्जय शंस मे ॥ १७ ॥
सिन्धुराजवधेनेमे घटोत्कचवधेन ते ।
अमर्षिताः सुसंक्रुद्धा रणं चक्रुः कथं निशि ॥ १८ ॥
सञ्जय उवाच— हते घटोत्कचे राजन्कर्णेन निशि राक्षसे ।
प्रणदत्सु च हृष्टेषु तावकेषु युयुत्सुषु ॥ १९ ॥
आपतत्सु च वेगेन वध्यमाने बलेऽपि च ।
विगाढायां रजन्यां च राजा दैन्यं परं गतः ॥ २० ॥
अब्रवीच्च महाबाहुर्भीमसेनमिदं वचः ।
आवारय महाबाहो धार्तराष्ट्रस्य वाहिनीम् ॥ २१ ॥
हैडिम्बेश्चैव घातेन मोहो मामाविशन्महान् ।
एवं भीमं समादिश्य स्वरथे समुपाविशत् ॥ २२ ॥
अश्रुपूर्णमुखो राजा निःश्वसंश्च पुनः पुनः ।
कश्मलं प्राविशद्घोरं दृष्ट्वा कर्णस्य विक्रमम् ॥ २३ ॥
तं तथा व्यथितं दृष्ट्वा कृष्णो वचनमब्रवीत् ।

उस समय किस कार्यका अनुष्ठान किया? द्रोणाचार्यके वधकी इच्छा करनेवाले भीमसेन और अर्जुनको मेरी सेनाके वीरोंने किस प्रकार निवारण किया ? उस समय जयद्रथ वधके कारण कौरवों और घटोत्कचके मारे जानेसे पाण्डवोंने अत्यन्त दुःखित और क्रुद्ध होके उस रात्रिके समय किस प्रकार युद्ध किया वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो ॥ (१६–१८)

संजय बोले, महाराज ! उस महाघोर रात्रिके समय जब कर्णके हाथसे घटोत्कच राक्षस मारा गया, तब तुम्हारी ओरके योद्धा लोग युद्धकी अभिलाषासे हर्षित होकर सिंहनाद करते हुए महा वेगपूर्वक पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौडे। अनन्तर समूहके समूह अपनी सेनाके पुरुषोंका नाश होते देख राजा युधिष्ठिर अत्यन्तही दुःखित होके भीमसेनसे बोले, हे महाबाहु भीमसेन ! मैं हिडिम्बापुत्र घटोत्कचके मारे जानेसे दुःखित और मोहित होरहा हूं इससे तुम इस समय अकेले ही कौरवोंकी सेनाको निवारण करो । राजा युधिष्ठिर भीमसेनको ऐसी आज्ञा देकर रथमें बैठकर आंसू बहाते हुए बार बार लम्बी सांस छोडने लगे; और कर्णके भयानक पराक्रमको देखकर विह्वल होगये ॥ (१९–२३)

श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिरको इस प्रकार विकल देखकर उनसे यह वचन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा व्यथां कुरु कौन्तेय नैतत्त्वय्युपपद्यते ॥ २४ ॥
वैक्लव्यं भरतश्रेष्ठ यथा प्राकृतपूरुषे ।
उत्तिष्ठ राजन्युध्यस्व वह गुर्वीं धुरं विभो ॥ २५ ॥
त्वयि वैक्लव्यमापन्ने संशयो विजये भवेत् ।
श्रुत्वा कृष्णस्य वचनं धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ २६ ॥
विमृज्य नेत्रे पाणिभ्यां कृष्णं वचनमब्रवीत् ।
विदिता मे महाबाहो धर्माणां परमा गतिः ॥ २७ ॥
ब्रह्महत्याफलं तस्य यः कृतं नाऽवबुध्यते ।
अस्माकं हि वनस्थानां हैडिम्बेन महात्मना ॥ २८ ॥
बालेनाऽपि सता तेन कृतं साह्यं जनार्दन ।
अस्त्रहेतोर्गतं ज्ञात्वा पाण्डवं श्वेतवाहनम् ॥ २९ ॥
असौ कृष्ण महेष्वासः काम्यके मामुपस्थितः ।
उषितश्च सहाऽस्माभिर्यावन्नाऽऽसीद्धनञ्जयः ॥ ३० ॥
गन्धमादनयात्रायां दुर्गेभ्यश्च स्म तारिताः ।
पाञ्चाली च परिश्रान्ता पृष्ठेनोढा महात्मना ॥ ३१ ॥

बोले, महाराज ! तुम ऐसी कातरता परित्याग करो क्योंकि साधारण पुरुषों-की भांति तुम्हें इस प्रकार शोकित होना उचित नहीं है। आप उठके खडे हो-जाइये और इस बहुत भारी युद्धके भारको उठाइये ॥ इस समयमें यदि तुम इस प्रकार विह्वल होके शोक करते हुए रुदन करोगे तो तुम्हारी विजय होनेमें संशय उत्पन्न होगा। (२४-२६)

धर्मराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णके वचनको सुनकर हाथसे आंसू पोंछकर उनसे यह वचन बोले, हे महाबाहु जनार्दन कृष्ण! धर्मकी परम गति मुझे मालूम है, जो पुरुष दूसरेके किये हुए उपकारको स्मरण नहीं करता उसे अवश्य ही ब्रह्महत्याके समान पाप लगता है, मैं इसे जानकर भी कैसे स्थिर रह सकता हूं ? हम लोगोंको वनवासके समय हिडिम्बापुत्र घटोत्कचने बालक होके भी बहुत ही सहायता किया था। जिस समय श्वेत-वाहन अर्जुन अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या सीख-नेके वास्ते स्वर्गमें गये थे उस समय इस महाधनुर्द्धर घटोत्कचने हम लोगोंके समी-प उपास्थित होकर जबतक अर्जुन स्वर्गसे नहीं आये तब तक हम लोगोंके सङ्ग काम्यक वनमें वास किया था ॥२६-३०

गन्धमादन पर्वतकी यात्रामें महात्मा घटोत्कचने हम लोगोंको बहुतसे दुर्गम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भाचैव युद्धानां यदेष कृतवान्प्रभो ।
मदर्थे दुष्करं कर्म कृतं तेन महाहवे ॥ ३२ ॥
स्वभावाद्या च मे प्रीतिः सहदेवे जनार्दन ।
सैव मे परमा प्रीती राक्षसेन्द्रे घटोत्कचे ॥ ३३ ॥
भक्तश्च मे महाबाहुः प्रियोऽस्याऽहं प्रियश्च मे ।
तेन विन्दामि वार्ष्णेय कश्मलं शोकतापितः ॥ ३४ ॥
पश्य सैन्यानि वार्ष्णेय द्राव्यमाणानि कौरवैः ।
द्रोणकर्णौ तु संयत्तौ पश्य युद्धे महारथौ ॥ ३५ ॥
निशीथे पाण्डवं सैन्यमेतत्सैन्यप्रमर्दितम् ।
गजाभ्यामिव मत्ताभ्यां यथा नलवनं महत् ॥ ३६ ॥
अनादृत्य बलं बाह्वोर्भीमसेनस्य माधव ।
चित्रास्त्रतां च पार्थस्य विक्रमन्ति स्म कौरवाः ॥ ३७ ॥
एष द्रोणश्च कर्णश्च राजा चैव सुयोधनः ।

तथा कठिन मार्गोंसे पार किया था; विशेष करके थकी हुई द्रौपदीको पीठ पर उठाके मार्गमें हम लोगोंके सङ्ग गमन करता था ॥ इसके अतिरिक्त इस युद्धके आरम्भ होनेके समयमें महात्मा घटोत्कचने इस महासंग्राममें मेरे वास्ते जिन सम्पूर्ण कठिन कर्मोंको किया है उन सम्पूर्ण कर्मोंको मैं दूसरे पुरुषसे असाध्य समझता हूं ॥ हे जनार्दन कृष्ण ! अधिक कहनेसे क्या होगा, सहदेवके ऊपर मेरी जैसी प्रीति है वैसी ही राक्षसराज घटोत्कचके ऊपर भी मेरी परम प्रीति थी ॥ वह महाबाहु घटोत्कच मेरा अत्यन्त भक्त और परम प्रिय था तथा हम लोग भी उसके अत्यन्त ही प्रिय पात्र थे। इस ही कारण मैं शोकसे व्याकुल और मोहित होरहा हूं ॥ (३१--३४)

हे वृष्णिनन्दन कृष्ण ! यह देखो मेरी सेनाके पुरुष कौरवोंकी सेनाके योद्धाओंके अस्त्रोंसे पीडित होकर चारों ओर युद्धभूमिमें भाग रहे हैं; द्रोणाचार्य और कर्ण अत्यन्त ही यत्न परायण होकर मेरी सेनाके योद्धाओंका नाश कर रहे हैं । जैसे मतवारा हाथी वेणुवनको मर्दन करता है वैसे ही ये दोनों वीर हमारी सेना के पुरुषों का नाश कर रहे हैं ॥ हे कृष्ण ! यह देखो राजा दुर्योधन द्रोणाचार्य और कर्ण आदि योद्धा अर्जुनके अस्त्रकौशल और भीमसेन के बाहुबलका अनादर करके युद्धभूमि में घटोत्कच को मार कर आनन्द-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहत्य राक्षसं युद्धे हृष्टा नर्दन्ति संयुगे ॥ ३८ ॥
कथं वाऽस्मासु जीवत्सु त्वयि चैव जनार्दन।
हैडिम्बिः प्राप्तवान्मृत्युं सूतपुत्रेण सङ्गतः ॥ ३९ ॥
कदर्थीकृत्य नः सर्वान्पश्यतः सव्यसाचिनः।
निहतो राक्षसः कृष्ण भैमसेनिर्महाबलः ॥ ४० ॥
यदाऽभिमन्युर्निहतो धार्तराष्ट्रैर्दुरात्मभिः।
नाऽऽसीत्तत्र रणे कृष्ण सव्यसाची महारथः ॥ ४१ ॥
निरुद्धाश्च वयं सर्वे सैन्धवेन दुरात्मना।
निमित्तमभवद् द्रोणः सपुत्रस्तत्र कर्मणि ॥ ४२ ॥
उपदिष्टो वधोपायः कर्णस्य गुरुणा स्वयम्।
व्यायच्छतश्च खड्गेन द्विधा खड्गं चकार ह ॥ ४३ ॥
व्यसने वर्तमानस्य कृतवर्मा नृशंसवत्।
अश्वाञ्जघान सहसा तथोभौ पार्ष्णिसारथी ॥ ४४ ॥
तथेतरे महेष्वासाः सौभद्रं युध्यपातयन्।

पूर्वक सिंहनाद कर रहे हैं ॥ ३५--३८

हे कृष्ण! तुम तथा हम लोगोंके जीवित रहते सूतपुत्र कर्ण किस प्रकार घटोत्कचका वध करनेमें समर्थ हुआ? हाय! कर्णने हम लोगोंको अस्त्र-रहित करके सव्यसाची अर्जुनके संमुख ही महाबलवान् घटोत्कचका संहार किया है ॥ (३९-४०)

हे जनार्दन कृष्ण! जिस समय दुष्टात्मा कौरवोंने अभिमन्युका वध किया था, उस समय अर्जुन युद्धभूमिके बीच वहां पर उपस्थित नहीं थे और हम सब लोग दुष्टात्मा जयद्रथसे निवारित होकर चक्रव्यूहके भीतर न जासके; उस समय अश्वत्थामाके सहित द्रोणाचार्य ही अभिमन्युकी मृत्युके कारण हुए थे क्योंकि द्रोणाचार्यने स्वयं अभिमन्युके वधके उपायको कर्णके समीप वर्णन किया था, विशेष करके जब वह केवल एक मात्र तलवारको ग्रहण करके ही युद्ध करता था, उस समय आचार्यने ही अपने बाणोंसे उसके तलवारको काटके दो टुकडे किया था ॥ (४१-४३)

कृतवर्माने नीच पुरुषोंकी भांति कार्य करके विपदमें पडे हुए उस बालकके रथके घोडे और दोनों पृष्ठ रक्षक वीरोंका वध किया ॥ फिर अन्तमें दूसरे कई एक महाधनुर्द्धर योद्धाओंने एकत्रित होके इसी प्रकार नाना भांतिसे सुभद्रा-पुत्र अभिमन्युको अस्त्र रहित करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पे च कारणे कृष्ण ततो गाण्डीवधन्वना ॥ ४५ ॥
सैन्धवो यादवश्रेष्ठ तच्च नाऽतिप्रियं मम ।
यदि शत्रुवधो न्याय्यो भवेत्कर्तुं हि पाण्डवैः ॥ ४६ ॥
कर्णद्रोणौ रणे पूर्वं हन्तव्याविति मे मतिः ।
एतौ हि मूलं दुःखानामस्माकं पुरुषर्षभ ॥ ४७ ॥
एतौ रणे समासाद्य समाश्वस्तः सुयोधनः ।
यत्र वध्यो भवेद् द्रोणः सूतपुत्रश्च सानुगः ॥ ४८ ॥
तत्राऽवधीन्महाबाहुः सैन्धवं दूरवासिनम् ।
अवश्यं तु मया कार्यः सूतपुत्रस्य निग्रहः ॥ ४९ ॥
ततो यास्याम्यहं वीर स्वयं कर्णजिघांसया ।
भीमसेनो महाबाहुर्द्रोणानीकेन सङ्गतः ॥ ५० ॥
एवमुक्त्वा ययौ तूर्णं त्वरमाणो युधिष्ठिरः ।
स विस्फार्य महच्चापं शङ्खं प्राध्माप्य भैरवम् ॥ ५१ ॥
ततो रथसहस्रेण गजानां च शतैस्त्रिभिः ।

युद्धभूमिमें मारा था। हे कृष्ण! गाण्डीव धनुर्द्धारी अर्जुनने बहुत थोडे अपराधसे सिन्धुराज जयद्रथका वध किया है। इससे जयद्रथके वधसे मेरा विशेष प्रिय कार्य नहीं हुआ है। (४४-४६)

हे यादव श्रेष्ठ कृष्ण! पाण्डवोंको यदि शत्रुओंका नाश करना ही कर्त्तव्य कार्य होवे तो मेरे विचारमें सबसे पहिले द्रोणाचार्य और कर्णका नाश करना ही उचित है। ये दोनों वीर ही मेरे समस्त दुःखोंके मूल हैं॥ इन्ही दोनों वीरोंके आसरेसे दुर्योधन अपनेको बलवान् समझता है। ओहो! कैसे आक्षेपका विषय है कि हम लोगोंने समझा था कि, महाबाहु अर्जुन अनुयाइयोंके सहित द्रोणाचार्य और कर्णका नाश करेंगे! उसे न करके अर्जुनने दूर देशवासी सिन्धुराज जयद्रथका वध किया। ४६-४९

जो हो हम लोगोंको अवश्य ही सूतपुत्र कर्णको पराजित करना पडेगा॥ इस समय महाबाहु भीमसेन द्रोणाचार्य की सेनाके सङ्ग युद्ध कर रहे हैं इससे मैं स्वयं ही कर्णके वधके निमित्त उसके समीप गमन करूंगा॥ राजा युधिष्ठिर ऐसा वचन कहके अत्यन्त वेगपूर्वक अपने बडे धनुषको फेरते और भयङ्कर शंख बजाते हुए कर्णकी ओर गमन करने लगे॥ (४९-५१)

तिसके अनन्तर पाञ्चाल राजपुत्र शिखण्डी एक हजार रथी, तीनसौ हाथी,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाजिभिः पञ्चसाहस्रैः पञ्चालैः सप्रभद्रकैः ॥ ५२ ॥
वृतः शिखण्डी त्वरितो राजानं पृष्ठतोऽन्वयात् ।
ततो भेरीः समाजघ्नुः शङ्खान्दध्मुश्च दंशिताः ॥ ५३ ॥
पञ्चालाः पाण्डवाश्चैव युधिष्ठिरपुरोगमाः ।
ततोऽब्रवीन्महाबाहुर्वासुदेवो धनञ्जयम् ॥ ५४ ॥
एष प्रयाति त्वरितः क्रोधाविष्टो युधिष्ठिरः ।
जिघांसुः सूतपुत्रस्य तस्योपेक्षा न युज्यते ॥ ५५ ॥
एवमुक्त्वा हृषीकेशः शीघ्रमश्वानचोदयत् ।
दूरं प्रयान्तं राजानमन्वगच्छज्जनार्दनः ॥ ५६ ॥
तं दृष्ट्वा सहसाऽऽयान्तं सूतपुत्रजिघांसया ।
शोकोपहतसङ्कल्पं दह्यमानमिवाऽग्निना ॥ ५७ ॥
अभिगम्याऽब्रवीद्व्यासो धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् ।
व्यास उवाच— कर्णमासाद्य संग्रामे दिष्ट्या जीवति फाल्गुनः ॥५८॥
सव्यसाचिवधाकांक्षी शक्तिं रक्षितवान्हि सः ।
न चाऽगाद् द्वैरथं जिष्णुर्दिष्ट्या तेन महारणे ॥ ५९ ॥

पांच हजार पाञ्चाल और प्रभद्रक सेनाके योद्धाओंको सङ्ग लेकर शीघ्रताके सहित युधिष्ठिरके अनुगामी हुए। उसी समय राजा युधिष्ठिरके सहित पाण्डव और पाञ्चालसेनाके योद्धा लोग सैकडों शङ्ख और भेरी आदि बाजोंको बजाते हुए सिंहनाद करने लगे ॥ (५२-५४)

श्रीकृष्णचन्द्र राजा युधिष्ठिरको स्वयं कर्णकी ओर गमन करते देखकर अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन ! यह देखो धर्मराज युधिष्ठिर सूतपुत्र कर्णको नाश करनेके वास्ते स्वयं उनकी ओर गमन कर रहे हैं इससे इस विषयमें अब उपेक्षा करना उचित नहीं है ॥ श्रीकृष्णचन्द्र ऐसा वचन कहके शीघ्रगामी अर्जुनके रथके घोडोंको दौडाकर दूर गये हुए युधिष्ठिर के पीछे पीछे गमन करने लगे ॥ ५४-५६

उस ही समय भगवान् वेदव्यास अग्निसे जलते हुए वज्रकी भांति राजा युधिष्ठिरको दुःखित और शोकित चित्तसे सहसा कर्णके वधकी अभिलाषासे उसकी ओर गमन करते देख उनके संमुख उपस्थित होकर यह वचन बोले, हे तात युधिष्ठिर ! भाग्यसे ही अर्जुन कई बार कर्णके संमुख उपस्थित होकर भी जीवित है क्योंकि कर्ण अर्जुनके वधके ही वास्ते इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिको यत्न पूर्वक रक्खे हुआ था ! भाग्यसे ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृजेतां स्पर्धिनावेतौ दिव्यान्यस्त्राणि सर्वशः ।
वध्यमानेषु चाऽस्त्रेषु पीडितः सूतनन्दनः ॥ ६० ॥
वासवीं समरे शक्तिं ध्रुवं मुञ्चेद्युधिष्ठिर ।
ततो भवेत्ते व्यसनं घोरं भरतसत्तम ॥ ६१ ॥
दिष्ट्या रक्षो हतं युद्धे सूतपुत्रेण मानद ।
वासवीं कारणं कृत्वा कालेनोपहतो ह्यसौ ॥ ६२ ॥
तवैव कारणाद्रक्षो निहतं तात संयुगे ।
मा क्रुधो भरतश्रेष्ठ मा च शोके मनः कृथाः ॥ ६३ ॥
प्राणिनामिह सर्वेषामेषा निष्ठा युधिष्ठिर ।
भ्रातृभिः सहितः सर्वैः पार्थिवैश्च महात्मभिः ॥ ६४ ॥
कौरवान्समरे राजन्प्रतियुध्यस्व भारत ।
पञ्चमे दिवसे तात पृथिवी ते भविष्यति ॥ ६५ ॥
नित्यं च पुरुषव्याघ्र धर्ममेवाऽनुचिन्तय ।
आनृशंस्यं तपो दानं क्षमां सत्यं च पाण्डव ॥ ६६ ॥

अर्जुन आजतक कर्णके सङ्ग द्वैरथ युद्ध में प्रवृत्त नहीं हुए; यदि दोनोंका द्वैरथ युद्ध होता, तो दोनों ही क्रुद्ध होकर दिव्य अस्त्रोंको चलाना आरम्भ करते इसमें कुछ सन्देह नहीं है । (५७-६०)

तिसके अनन्तर अर्जुनके अस्त्रोंके प्रभावसे जब बार बार सम्पूर्ण दिव्य अस्त्र निष्फल होते और वह स्वयं भी अर्जुनके अस्त्रोंसे पीडित होता तो कर्ण इन्द्रकी अमोघ शक्तिको अवश्यही अर्जुनके ऊपर चलाता; तो अर्जुनके मरनेसे तुम्हें महा घोर विपदमें फंसना पडता॥ हे युधिष्ठिर ! तुम्हारी प्रारब्धसे ही सूतपुत्र कर्णने अमोघशक्तिसे घटोत्कच राक्षसका नाश किया है, इन्द्रकी शक्ति घटोत्कचकी मृत्युके विषयमें केवल निमित्त मात्र है यथार्थमें कालने ही उसका संहार किया है॥ हे तात ! तुम्हारे कल्याणके ही वास्ते घटोत्कच मारा गया है, इससे तुम अपने मानसिक शोक और क्रोधको दूर करो; क्योंकि प्राणिमात्रकी यही गति है अर्थात् मृत्यु सम्पूर्ण प्राणियोंका नाश करती है । (६०-६४)

इस समय तुम महात्मा भ्राताओंके और सम्पूर्ण राजाओंके साहित एकत्रित होके कौरवोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होजाओ । हे पुरुषश्रेष्ठ ! आजसे पांचवें दिन अवश्य ही यह पृथ्वी तुम्हारे हाथमें होजावेगी । तुम सदा धर्मके कार्योंमें रत रहते हो, और अनृशंसता, तपस्या,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवेथाः परमप्रीतो यतो धर्मस्ततो जयः।
इत्युक्त्वा पाण्डवं व्यासस्तत्रैवाऽन्तरधीयत ॥६७॥ [८३६६]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि घटोत्कचवधपर्वणि रात्रियुद्धे व्यासवाक्ये व्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१८३॥ समाप्तं च घटोत्कचवधपर्व।

अथ द्रोणवधपर्व।

सञ्जय उवाच— व्यासेनैवमथोक्तस्तु धर्मराजो युधिष्ठिरः।
स्वयं कर्णवधाद्वीरो निवृत्तो भरतर्षभ ॥ १ ॥
घटोत्कचे तु निहते सूतपुत्रेण तां निशाम्।
दुःखामर्षवशं प्राप्तो धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ २ ॥
दृष्ट्वा भीमेन महतीं वार्यमाणां चमूं तव।
धृष्टद्युम्नमुवाचेदं कुम्भयोनिं निवारय ॥ ३ ॥
त्वं हि द्रोणविनाशाय समुत्पन्नो हुताशनात्।
सशरः कवची खड्गी धन्वी च परतापनः ॥ ४ ॥
अभिद्रव रणे हृष्टो मा च ते भीः कथञ्चन।
जनमेजयः शिखण्डी च दौर्मुखिश्च यशोधरः ॥ ५ ॥

दान और क्षमा गुण तुममें सदा विराजमान रहते हैं। जहां धर्म है, वहीं विजय होती है ॥ (६४-६७)

सञ्जय बोले, महाराज! सत्यवती पुत्र भगवान् व्यासदेव राजा युधिष्ठिरसे ऐसा वचन कहके उसी समय वहां ही अन्तर्द्धान होगये। (६७) [८३६६]

द्रोणपर्वमें एकसौ तिरासी अध्याय और घटोत्कच वधपर्व समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ चौरासी अध्याय और द्रोणवधपर्व।

सञ्जय बोले, हे भरतश्रेष्ठ महाराज! धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर वेदव्यासके वचनोंको सुनकर कर्णके वधकी इच्छा त्यागकर शान्त होकर उसकी ओर गमन करनेसे निवृत्त हुए॥ परन्तु उस रात्रिके समय सूतपुत्रके हाथसे घटोत्कचके मारे जानेसे वह दुःख राजा युधिष्ठिरसे नहीं सहा गया ॥ (१-२)

उस समय वह भीमसेनको अकेले ही कुरुसेनाके योद्धाओंको निवारण करते देख धृष्टद्युम्नसे बोले, हे वीर! तुम द्रोणाचार्यको निवारण करो। हे शत्रुनाशन! तुम द्रोणाचार्यके वध करनेके निमित्त ही धनुष बाण तलवार और कवचके सहित अग्निसे उत्पन्न हुए हो; इससे द्रोणाचार्यसे तुम्हें कुछ भी भय नहीं है; तुम प्रसन्नताके सहित उत्साह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिद्रवन्तु संहृष्टाः कुम्भयोनिं समन्ततः ।
नकुलः सहदेवश्च द्रौपदेयाः प्रभद्रकाः ॥ ६ ॥
द्रुपदश्च विराटश्च पुत्रभ्रातृसमन्वितौ ।
सात्यकिः केकयाश्चैव पाण्डवश्च धनञ्जयः ॥ ७ ॥
अभिद्रवन्तु वेगेन कुम्भयोनिवधेप्सया ।
तथैव रथिनः सर्वे हस्त्यश्वं यच्च किञ्चन ॥ ८ ॥
पदाताश्च रणे द्रोणं पातयन्तु महारथम् ।
तथाऽऽज्ञप्तास्तु ते सर्वे पाण्डवेन महात्मना ॥ ९ ॥
अभ्यद्रवन्त वेगेन कुम्भयोनिवधेप्सया ।
आगच्छतस्तान्सहसा सर्वोद्योगेन पाण्डवान् ॥ १० ॥
प्रतिजग्राह समरे द्रोणः शस्त्रभृतां वरः ।
ततो दुर्योधनो राजा सर्वोद्योगेन पाण्डवान् ॥ ११ ॥
अभ्यद्रवत्सुसंक्रुद्ध इच्छन्द्रोणस्य जीवितम् ।
ततः प्रववृते युद्धं श्रान्तवाहनसैनिकम् ॥ १२ ॥

पूर्वक द्रोणाचार्यकी ओर दौडो, और जममेजय शिखण्डी तथा दौर्मुखि आदि शूरवीर योद्धा लोग यशकी अभिलाषा करके द्रोणाचार्यके विरुद्ध युद्ध करनेके वास्ते उनके समीप गमन करें। (३-६)

तिसके अनन्तर नकुल, सहदेव, द्रौपदीके पांचों पुत्र, प्रभद्रक योद्धा लोग और भाई तथा पुत्रोंके सहित राजा विराट, द्रुपद सात्यकि और पाण्डुपुत्र अर्जुन द्रोणाचार्यके वधके निमित्त उनके सम्मुख गमन करें ॥ अधिक क्या कहूं, मेरी सेनाके जितने रथी, गजपति, घुडसवार और पैदल सेनाके योद्धा हैं, वे सब कोई इकट्ठे होकर युद्धभूमिमें द्रोणाचार्यका वध करें। (६-९)

महाराज ! जब महात्मा राजा युधिष्ठिरने ऐसी आज्ञा दी, तब सम्पूर्ण सेनाके योद्धा लोगों ने सेनापतियोंके सहित अत्यन्त वेगपूर्वक द्रोणाचार्यके वधके निमित्त उनकी ओर गमन किया ॥ पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग यत्नपूर्वक सहसा द्रोणाचार्यकी ओर गमन करने लगे, तब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्यने उस ही समय अपने अस्त्र प्रभावसे उन लोगोंको आगे बढनेसे रोक दिया; और राजा दुर्योधन भी सब भांतिके उद्योगके सहित द्रोणाचार्यकी रक्षा करनेकी अभिलाषासे क्रुद्ध होकर पाण्डवोंकी सेनाकी ओर दौडे। (९-१२)

अनन्तर थके हुए वाहन और थके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डवानां कुरूणां च गर्जतामितरेतरम् ।
निद्रान्धास्ते महाराज परिश्रान्ताश्च संयुगे ॥ १३ ॥
नाऽभ्यपद्यन्त समरे काश्चिच्चेष्टां महारथाः ।
त्रियामा रजनी चैषा घोररूपा भयानका ॥ १४ ॥
सहस्रयामप्रतिमा बभूव प्राणहारिणी ।
वध्यतां च तथा तेषां क्षतानां च विशेषतः ॥ १५ ॥
अर्धरात्रिः समाजज्ञे निद्रान्धानां विशेषतः ।
सर्वे ह्यासन्निरुत्साहाः क्षत्रिया दीनचेतसः ॥ १६ ॥
तव चैव परेषां च गतास्त्रा विगतेषवः ।
ते तदा पारयन्तश्च ह्रीमन्तश्च विशेषतः ॥ १७ ॥
स्वधर्ममनुपश्यन्तो न जहुः स्वामनीकिनीम् ।
अस्त्राण्यन्ये समुत्सृज्य निद्रान्धाः शेरते जनाः ॥ १८ ॥
रथेष्वन्ये गजेष्वन्ये हयेष्वन्ये च भारत ।
निद्रान्धा नो बुबुधिरे काश्चिच्चेष्टां नराधिप ॥ १९ ॥

हुए दोनों सेनाके पुरुषोंका आपसमें गर्जते हुए सिंहनाद शब्दके सहित महा-घोर युद्ध आरंभ हुआ। महाराज! दोनों सेनाके महारथी योद्धा लोग पहिले तो दिन रात थके हुए थे; उस पर अब रात्रिके समय निद्राके वशमें होके चेत-रहितके समान नींदसे युक्त होगये; उस समय वह महाभयङ्करी शूरवीरोंके प्राणको हरण करनेवाली त्रियामा रात्रि उन योद्धा ओंके वास्ते सहस्र रात्रिके समान बोध होने लगी। (१२–१५)

जो हो, इसी प्रकार निद्रासे झुमते हुए योद्धाओंको युद्ध करते करते आधी रात बीत गई। परन्तु उस समय क्या कौरवोंकी सेनाके योद्धा और क्या पाण्ड-वोंकी ओरके वीर लोग इस प्रकार निद्राके वशमें होगये, कि उन लोगोंके हाथसे अस्त्र शस्त्र छूट छूट कर पृथ्वीमें गिरने लगे और कितने ही पुरुष चेतरहितके समान नींदसे मतवारे होकर इधर ऊधर सेनाके बीच गिर पडे। तो भी पराक्रमी मुख्य मुख्य शूरवीर योद्धाओंने वीर धर्मको स्मरण करके अपनी सेनाके व्यूहको परित्याग नहीं किया। परन्तु और सम्पूर्ण योद्धा लोग निद्राके वशमें होके अस्त्र शस्त्रोंको त्याग कर कोई रथ, कोई हाथी और कोई घोडोंके ऊपर शयन करने लगे। (१५–१९)

उस समय बहुतसे राजा लोग भी ऐसे निद्रित होगये, कि दूसरे योद्धाओंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तानन्ये समरे योधाः प्रेषयन्तो यमक्षयम् ।
स्वप्नायमानांस्त्वपरे परानतिविचेतसः ॥ २० ॥
आत्मानं समरे जघ्नुः स्वानेव च परानपि ।
नानावाचो विमुञ्चन्तो निद्रान्धास्ते महारणे ॥ २१ ॥
अस्माकं च महाराज परेभ्यो बहवो जनाः।
योद्धव्यमिति तिष्ठन्तो निद्रासंरक्तलोचनाः ॥ २२ ॥
संसर्पन्तो रणे केचिन्निद्रान्धास्ते तथाऽपरान् ।
जघ्नुः शूरा रणे शूरांस्तस्मिंस्तमसि दारुणे ॥ २३ ॥
हन्यमानमथाऽऽत्मानं परेभ्यो बहवो जनाः ।
नाऽभ्यजानन्त समरे निद्रया मोहिता भृशम् ॥ २४ ॥
तेषामेतादृशीं चेष्टां विज्ञाय पुरुषर्षभः ।
उवाच वाक्यं बीभत्सुरुच्चैः सन्नादयन्दिशः ॥ २५ ॥
श्रान्ता भवन्तो निद्रान्धाः सर्व एव सवाहनाः ।
तमसा चाऽऽवृते सैन्ये रजसा बहुलेन च ॥ २६ ॥

उनका प्राण नाश किया, तौ भी वे लोग कुछ न जान सके। उस महा संग्राममें और कितने ही योद्धा नींदमें पडे हुए स्वप्न देखकर शत्रुओंको सम्मुख उपस्थित हुए समझके अज्ञानताके कारण कोई अपनेको कोई अपनी ओरके ही पुरुषोंको और कोई कोई शत्रु सेनाके योद्धाओंका वध करने लगे और नींदसे अंध होकर अनेक प्रकारके वचनोंको कहने लगे ॥ (१९–२१)

महाराज ! उस समय शत्रुओंकी अपेक्षा तुम्हारी सेनाके अनगिनत योद्धा लोग निद्रित होकर भी युद्ध करनेकी इच्छासे रणभूमिके बीच स्थिर थे। उस महाघोर रात्रिके समय नींदमें पडे हुए बहुतेरे शूरवीर योद्धा रणभूमिमें घूमते हुए शत्रुओंके अनेक शूरवीरोंको मारने लगे ॥ बहुतेरे योद्धा ऐसे नींदमें पडके चेत रहितके समान होगये थे, कि शत्रुओंके हाथसे मारे जाने पर भी कुछ न मालूम कर सके ॥ (२२–२४)

महाराज ! उस ही समय पराक्रमी अर्जुन दोनों सेनाके योद्धाओंका इस प्रकार नाश होते देख ऊंचे स्वर से सम्पूर्ण दिशाओंको अनुनादित करते हुए यह वचन बोले, हे कौरव और पाण्डवोंकी ओरके शूरवीर पुरुषो ! तुम लोग अपने वाहनोंके सहित बहुतही थके तथा निद्रा से युक्त होगये हो और सेनाके सम्पूर्ण पुरुष धूलिके उडने और अन्धकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते यूयं यदि मन्यध्वमुपारमत सैनिकाः।
निमीलयत चाऽत्रैव रणभूमौ मुहूर्तकम् ॥ २७ ॥
ततो विनिद्रा विश्रान्ताश्चन्द्रमस्युषिते पुनः।
संसाधयिष्यथाऽन्योन्यं संग्रामं कुरुपाण्डवाः ॥ २८ ॥
तद्वचः सर्वधर्मज्ञा धार्मिकस्य विशाम्पते।
अरोचयन्त सैन्यानि तथा चाऽन्योन्यमब्रुवन् ॥ २९ ॥
चुक्रुशुः कर्ण कर्णेति तथा दुर्योधनेति च।
उपारमत पाण्डूनां विरता हि वरूथिनी ॥ ३० ॥
तथा विक्रोशमानस्य फाल्गुनस्य ततस्ततः।
उपारमत पाण्डूनां सेना तव च भारत ॥ ३१ ॥
तामस्य वाचं देवाश्च ऋषयश्च महात्मनः।
सर्वसैन्यानि चाऽक्षुद्रां प्रहृष्टाः प्रत्यपूजयन् ॥ ३२ ॥
तत्सम्पूज्य वचोऽक्रूरं सर्वसैन्यानि भारत।
मुहूर्तमस्वपन्राजञ्श्रान्तानि भरतर्षभ ॥ ३३ ॥
सा तु सम्प्राप्य विश्रामं ध्वजिनी तव भारत।

से छिप गये हैं, इस से यदि इच्छा होवे तो थोडी देरके वास्ते युद्धसे निवृत्त होके इसी रणभूमिके बीच सो सकते हो और चन्द्रमाके उदय होने पर तुम लोग निद्रासे सावधान होकर स्वर्ग प्राप्त होनेकी अभिलाषासे फिर युद्ध करना ॥ (२५–२८)

हे प्रजानाथ! धर्मात्मा सेनापति और सेनाके शूरवीर योद्धा लोग दयालु अर्जुनका वचन सुनकर सब कोई इस विषयमें संमत हुए; और सब कोई ऊंचे स्वरसे पुकारके कहने लगे, हे कर्ण! हे महाराज दुर्योधन! यह देखो पाण्डवोंकी सम्पूर्ण सेना युद्धसे निवृत्त होरही है, इससे आप लोग युद्ध करनेसे शान्त होइये ॥ (२९–३०)

संजय बोले, महाराज! इसी भांति अर्जुनके वचनके अनुसार कौरव और पाण्डवोंकी सेना युद्धभूमिसे निवृत्त हुई॥ उस समय देवता महात्मा ऋषि लोग और सेनाके सम्पूर्ण पुरुष आनन्दित होके अर्जुनके वचनकी अत्यन्त ही प्रशंसा करने लगे॥ विशेष करके थके हुए योद्धाओंने अर्जुनके दयायुक्त वचनोंकी अत्यन्त ही प्रशंसा करी और थोडे समयके वास्ते सो गये ॥ (३१–३३)

महाराज! तुम्हारी सेनाके पुरुष सुख पूर्वक विश्राम करके इस प्रकार अर्जुनकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखमाप्नवती वीरमर्जुनं प्रत्यपूजयत् ॥ ३४ ॥
त्वयि वेदास्तथाऽस्त्राणि त्वयि बुद्धिपराक्रमौ ।
धर्मस्त्वयि महाबाहो दया भूतेषु चाऽनघ ॥ ३५ ॥
यच्चाऽऽश्वस्तास्तवेच्छामः शर्म पार्थ तदस्तु ते ।
मनसश्च प्रियानर्थान्वीर क्षिप्रमवाप्नुहि ॥ ३६ ॥
इति ते तं नरव्याघ्रं प्रशंसन्तो महारथाः ।
निद्रया समवाक्षिप्तास्तूष्णीमासन्विशाम्पते ॥ ३७ ॥
अश्वपृष्ठेषु चाऽप्यन्ये रथनीडेषु चाऽपरे ।
गजस्कन्धगताश्चाऽन्ये शेरते चाऽपरे क्षितौ ॥ ३८ ॥
सयुधाः सगदाश्चैव सखड्गाः सपरश्वधाः ।
सप्रासकवचाश्चाऽन्ये नराः सुप्ताः पृथक्पृथक् ॥ ३९ ॥
गजास्ते पन्नगाभोगैर्हस्तैर्भूरेणुगुण्ठितैः ।
निद्रान्धा वसुधां चक्रुर्घ्राणनिःश्वासशीतलाम् ॥ ४० ॥
सुप्ताः शुशुभिरे तत्र निःश्वसन्तो महीतले ।
विकीर्णा गिरयो यद्वन्निःश्वसद्भिर्महोरगैः ॥ ४१ ॥

प्रशंसा और मङ्गलकामना करने लगे ॥ हे महाबाहु अर्जुन ! हे वीर ! तुममें ही सम्पूर्ण वेद, बुद्धि, पराक्रम, धर्म और समस्त अस्त्रशस्त्र भली भांतिसे विराजमान हैं; और सम्पूर्ण प्राणियोंके ऊपर तुम्हारे शरीरमें दया है; हे पृथापुत्र अर्जुन ! हम लोग विश्राम करके सुखी होकर जिस भांति तुम्हारे मङ्गल कामनाकी अभिलाषा करते हैं, वह अवश्य ही सिद्ध होवेगी; अधिक क्या कहा जावे तुम्हारी शीघ्रही अभीष्ट-कामना पूर्ण होवेगी ॥ (३४-३६)

इसी भांति वे महारथी योद्धा लोग अर्जुनकी प्रशंसा करते हुए निद्रित होगये । अनन्तर कोई हाथी, कोई घोडे, कोई रथोंमें और कितने ही योद्धा पृथ्वीपर शयन करने लगे । उस समय वे सम्पूर्ण योद्धा लोग कवच, आभूषण और अस्त्रशस्त्रोंको धारण किये हुए ही पृथक् पृथक् रणभूमिके बीच शयन करने लगे ॥ (३७-३९)

निद्रासे मतवारे होकर कितने ही हाथी सर्पसमान अपने सूण्डोंसे सांस लेते तथा सांस छोडते हुए पृथ्वीको शीतल करने लगे ॥ जब वे सम्पूर्ण हाथी निद्रित होकर रणभूमिके बीच बार बार सांस छोडने लगे उस समय सूण्डोंके सहित उनके शरीर मानो सर्पोंसे युक्त पर्वतकी भांति दिखाई देने लगे ॥ और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समां च विषमां चक्रुः खुराग्रैर्विकृतां महीम् ।
हयाः काञ्चनयोक्त्रास्ते केसरालम्बिभिर्युगैः ॥ ४२ ॥
सुषुपुस्तत्र राजेन्द्र युक्ता वाहेषु सर्वशः ।
एवं हयाश्च नागाश्च योधाश्च भरतर्षभ ।
युद्धाद्विरम्य सुषुपुः श्रमेण महताऽन्विताः ॥ ४३ ॥
तत्तथा निद्रया मग्नमबोधं प्रास्वपद्बलम् ।
कुशलैः शिल्पिभिर्न्यस्तं पटे चित्रमिवाऽद्भुतम्॥ ४४ ॥
ते क्षत्रियाः कुण्डलिनो युवानः परस्परं सायकविक्षताङ्गाः ।
कुम्भेषु लीनाः सुषुपुर्गजानां कुचेषु लग्ना इव कामिनीनाम्॥ ४५ ॥
ततः कुमुदनाथेन कामिनीगण्डपाण्डुना ।
नेत्रानन्देन चन्द्रेण माहेन्द्री दिगलंकृता ॥ ४६ ॥
दशशताक्षककुन्दरिनिःसृतः किरणकेसरभासुरपिञ्जरः ।
तिमिरवारणयूथविदारणः समुदियादुदयाचलकेसरी ॥ ४७ ॥
हरवृषोत्तमगात्रसमद्युतिः स्मरशरासनपूर्णसमप्रभः ।

सुवर्णभूषित कवचोंसे युक्त घोडे अपने पांवसे पृथ्वीको खोदते और लोटते हुए श्रमरहित हुए और वे सम्पूर्ण घोडे रथोंमें जुते हुए ही निद्रित होगये । इसी प्रकार अत्यन्त ही थके हुए हाथी घोडे और सेनाके योद्धा लोग युद्धसे निवृत्त होकर रणभूमिके बीच शयन करने लगे ॥ (४०—४३)

महाराज! उस समय जब वे सम्पूर्ण योद्धा वाहनोंके सहित इस प्रकार शयन करने लगे, उस समय ऐसा बोध होता था, मानो उत्तम शिल्पी पुरुषोंने हाथी घोडे और मनुष्योंके सहित चित्रपटमें चित्र खींच रक्खा है ॥ आपसमें एक दूसरेके बाणोंसे क्षत-विक्षत शरीरसे युक्त और सुन्दर कुण्डलोंसे शोभित क्षत्रिय योद्धा लोग हाथियोंके ऊपर शयन करते हुए इस प्रकार दीख पडते थे मानो कामिनियोंके कुचोंके ऊपर शयन कर रहे हैं ॥ (४४—४५)

तिसके अनन्तर नेत्रोंको आनन्द देनेवाले कामिनी गल्लके समान पाण्डुर वर्ण चन्द्रमा पूर्वदिशाकी ओरसे उदय होते दीख पडे ॥ उससे पूर्व दिशा शोभा युक्त हुई। वह उदयाचलवासी केशरीकी भांति पूर्व दिशारूपी गुफासे बाहर होकर किरण केशरसे सम्पूर्ण दिशाओंको प्रकाशित करके हस्ति यूथरूपी अन्धकारको नष्ट करते हुए उदय हुए ॥ महाराज! हर-वृषाङ्ग समान श्वेतवर्णवाले नवीन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नववधूस्मितचारुमनोहरः प्रविसृतः कुमुदाकरबान्धवः ॥ ४८ ॥
ततो मुहूर्ताद्भगवान्पुरस्ताच्छशलक्षणः ।
अरुणं दर्शयामास ग्रसञ्ज्योतिःप्रभां प्रभुः ॥ ४९ ॥
अरुणस्य तु तस्याऽनु जातरूपसमप्रभम् ।
रश्मिजालं महचन्द्रो मन्दं मन्दमवासृजत् ॥ ५० ॥
उत्सारयन्तः प्रभया तमस्ते चन्द्ररश्मयः ।
पर्यगच्छच्छनैः सर्वा दिशः खं च क्षितिं तथा॥ ५१ ॥
ततो मुहूर्ताद्भुवनं ज्योतिर्भूतमिवाऽभवत् ।
अप्रख्यमप्रकाशं च जगामाऽऽशु तमस्तथा ॥ ५२ ॥
प्रतिप्रकाशिते लोके दिवाभूते निशाकरे ।
विचेरुर्न विचेरुश्च राजन्नक्तञ्चरास्ततः ॥ ५३ ॥
बोध्यमानं तु तत्सैन्यं राजंश्चन्द्रस्य रश्मिभिः ।
बुबुधे शतपत्राणां वनं सूर्यांशुभिर्यथा ॥ ५४ ॥
यथा चन्द्रोदयोद्भूतः क्षुभितः सागरोऽभवत् ।
तथा चन्द्रोदयोद्भूतः स बभूव बलार्णवः ॥ ५५ ॥

वधूके हांसीकी भांति प्रकाशित अत्यन्त मनोहर कामदेवके कान पर्यन्त खिंचे हुए धनुषकी भांति मण्डलाकार रूपसे उदय होकर भगवान कुमुदबन्धु चन्द्रमा मुहूर्त्त भरके बीच सम्पूर्ण ज्योति वाले पदार्थोंके प्रकाशको हरण करके शशचिन्हके अग्रभागको लालवर्णसे प्रदर्शित करने लगे । तिसके अनन्तर सुवर्णवर्णवाली अपनी किरणोंको धीरे धीरे चारों ओर फैलाने लगे ॥ (४६ – ५०)

इसी भांति चन्द्रमाका प्रकाश अन्धकारको नष्ट करता हुआ धीरे धीरे सम्पूर्ण दिशा और पृथ्वीमें व्याप्त होगया ॥ चन्द्रमाके उदय होनेसे सम्पूर्ण दिशा प्रकाशमय होगई और अन्धकार उस समय एकबारगी दूर हो गया ॥ इसी भांति जब चन्द्रमाके उदय होनेपर जगत् प्रकाशमय होगया तब रात्रिचारी जीवजन्तुओंमेंसे कितने ही इधर उधर भ्रमण करनेसे निवृत्त होगये और कितनेही जीवजन्तु रणभूमिमें घूमते हुए भी दीख पडते थे ॥ (५१-५३)

जैसे सूर्यकी किरण पडनेसे कमलका वन प्रफुल्लित होता है वैसे ही निद्रित हुए सेनाके सम्पूर्ण योद्धालोग चन्द्रमाके प्रकाशसे निद्रासे जागके सावधान होगये ॥ जैसे पूर्णमासीके दिन चन्द्रमाके उदय होनेसे समुद्रकी भयङ्कर तरङ्ग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः प्रववृते युद्धं पुनरेव विशाम्पते।
लोके लोकविनाशाय परं लोकमभीप्सताम् ॥५६॥ [८४२२]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि रात्रियुद्धे सैन्यनिद्रायां चतुरशीत्यधिकशततमोऽध्यायः॥ १८४॥

सञ्जय उवाच— ततो दुर्योधनो द्रोणमभिगम्याऽब्रवीदिदम्।
अमर्षवशमापन्नो जनयन्हर्षतेजसी ॥ १ ॥

दुर्योधन उवाच—न मर्षणीयाः संग्रामे विश्रमन्तः श्रमान्विताः।
सपत्ना ग्लानमनसो लब्धलक्षा विशेषतः ॥ २ ॥
यत्तु मर्षितमस्माभिर्भवतः प्रियकाम्यया।
त एते परिविश्रान्ताः पाण्डवा बलवत्तराः ॥ ३ ॥
सर्वथा परिहीनाः स्म तेजसा च बलेन च।
भवता पाल्यमानास्ते विवर्धन्ते पुनः पुनः ॥ ४ ॥
दिव्यान्यस्त्राणि सर्वाणि ब्राह्मादीनि च यानि ह।
तानि सर्वाणि तिष्ठन्ति भवत्येव विशेषतः ॥ ५ ॥
न पाण्डवेया न वयं नाऽन्ये लोके धनुर्धराः।

बहुत ऊंची उठती हुई दीख पडती है, वैसे ही वह सेनारूपी समुद्र चन्द्रमाके उदयसे वेगपूर्वक बढने लगा॥ अनन्तर स्वर्ग लोकके गमन करनेकी इच्छासे योद्धाओंका आपसमें फिर महाघोर युद्ध आरम्भ हुआ॥ (५४—५६)८४२२

द्रोणपर्वमें एकसौ चौरासी अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ पचासी अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! राजा दुर्योधन इसही समय क्रोधपूर्वक द्रोणाचार्यके समीप जाकर उनके तेज और हर्षको बढाते हुए यह वचन बोले, हे आचार्य! युद्धभूमिके बीच यदि शत्रुलोग मन मलिन होकर तथा आन्तरिक थकके विश्राम करनेके वास्ते प्रार्थना करें तो लब्धलक्ष्य पुरुषोंको उस समय किसी प्रकारसे भी क्षमा करनी उचित नहीं है; परन्तु बलवान् पाण्डव लोग युद्धभूमिमें थक गये थे तौभी हम लोगोंने तुम्हारे प्रिय कामनाकी इच्छासे ही उन लोगोंके विषयमें क्षमा किया है॥ देखिये तुमसे रक्षित होकर पाण्डव लोगोंके पराक्रमकी बार बार वृद्धि होरही है और हम लोग क्रमसे तेज तथा बलसे सब भांति हीन हुए जाते हैं॥ (१–४)

मुझे यह निश्चय है, कि इस जगत्के बीच ब्राह्म और दिव्य जितने अस्त्र शस्त्र हैं वे सम्पूर्ण तुममें विराजमान हैं॥ इससे मैं तुम्हारे समीप शपथ करके यह वचन कहता हूं कि आप यदि दृढरूपसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युध्यमानस्य ते तुल्याः सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ६ ॥
ससुरासुरगन्धर्वानिमाँल्लोकान्द्विजोत्तम ।
सर्वास्त्रविद्ब्रुवान्हन्याद्दिव्यैरस्त्रैर्न संशयः ॥ ७ ॥
स भवान्मर्षयत्येतांस्त्वत्तो भीतान्विशेषतः ।
शिष्यत्वं वा पुरस्कृत्य मम वा मन्दभाग्यताम् ॥ ८ ॥
सञ्जय उवाच— एवमुद्धर्षितो द्रोणः कोपितश्च सुतेन ते ।
समन्युरब्रवीद्राजन्दुर्योधनमिदं वचः ॥ ९ ॥
स्थविरः सन्परं शक्त्या घटे दुर्योधनाऽऽहवे ।
अतः परं मया कार्यं क्षुद्रं विजयगृद्धिना ॥ १० ॥
अनस्त्रविदयं सर्वो हन्तव्योऽस्त्रविदा जनः ।
यद्ब्रवान्मन्यते चापि शुभं वा यदि वाऽशुभम् ॥ ११ ॥
तद्वै कर्ताऽस्मि कौरव्य वचनात्तव नाऽन्यथा ।
निहत्य सर्वपञ्चालान्युद्धे कृत्वा पराक्रमम् ॥ १२ ॥

युद्धमें प्रवृत्त होवें तो क्या पाण्डव और क्या हम लोग तथा पृथ्वीके बीच और भी जो धनुर्द्धारियों में अग्रणी वीर हैं, वे कोई भी तुम्हारे समान नहीं हो सकते ॥ हे द्विजसत्तम ! अधिक मैं क्या कहूं आप जिस भांति सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंको जानते हैं; उससे निश्चय ही देवता असुर और गन्धर्वोंके सहित सम्पूर्ण लोकको अपने दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे नष्ट करनेमें समर्थ हैं ॥ पाण्डव लोग आपसे विशेष रूपसे हीन हैं तौभी उन्हें अपना शिष्य समझके वा मेरे अभाग्यके कारणसे ही आप सदा सर्वदा पाण्डवोंके विषयमें क्षमा किया करते हैं ॥ (५-८)

सञ्जय बोले, महाराज ! द्रोणाचार्य तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके इसी प्रकार बहुत से वचनोंको सुनके कोपित और उत्तेजित होकर क्रोधपूर्वक उनसे ऐसे वचन बोले, हे दुर्योधन ! मैं वृद्ध होकर भी परम शक्तिके अनुसार युद्ध करता हूं तौभी तुम मेरे विषयमें शङ्का कर रहे हो ॥ जो हो इसके अनन्तर अब मैं तुम्हारे विजयकी अभिलाषासे नीच कर्म करनेमें प्रवृत्त होऊंगा । ये सब सेनाके पुरुष विशेष रूपसे अस्त्र शस्त्रोंकी विद्याको नहीं जानते, मैं अस्त्रज्ञ होकर भी इन लोगोंका नाश करूंगा ॥ जब तुम मुझे आज्ञा देते हो तो चाहे शुभ हो अथवा अशुभ ही होवे मैं अवश्य ही उस कार्यको करनेमें तत्पर होऊंगा । (९-१२)

हे राजन् ! मैं इन अस्त्रोंको स्पर्श

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमोक्ष्ये कवचं राजन्सत्येनाऽऽयुधमालभे ।
मन्यसे यच्च कौन्तेयमर्जुनं श्रान्तमाहवे ॥ १३ ॥
तस्य वीर्यं महाबाहो शृणु सत्येन कौरव ।
तं न देवा न गन्धर्वा न यक्षा न च राक्षसाः ॥ १४ ॥
उत्सहन्ते रणे जेतुं कुपितं सव्यसाचिनम् ।
खाण्डवे येन भगवान्प्रत्युद्यातः सुरेश्वरः ॥ १५ ॥
सायकैर्वारितश्चापि वर्षमाणो महात्मना ।
यक्षा नागास्तथा दैत्या ये चाऽन्ये बलगर्विताः ॥ १६ ॥
निहताः पुरुषेन्द्रेण तच्चाऽपि विदितं तव ।
गन्धर्वा घोषयात्रायां चित्रसेनादयो जिताः ॥ १७ ॥
यूयं तैर्ह्रियमाणाश्च मोक्षिता दृढधन्वना ।
निवातकवचाश्चापि देवानां शत्रवस्तथा ॥ १८ ॥
सुरैरवध्याः संग्रामे तेन वीरेण निर्जिताः ।

करके शपथ करता हूं कि आज मैं पराक्रम प्रकाशित करके युद्धभूमिके बीच समस्त पाञ्चाल योद्धाओंका नाश करके तब पीछे अपना कवच उतारूंगा। हे कुरुराज दुर्योधन! तुम जो कुन्तीपुत्र अर्जुनको थका हुआ समझ रहे हो वह तुम्हारा केवल भ्रम मात्र है, मैं यथार्थ रूपसे उसके बल और पराक्रमके विषयको वर्णन करता हूं चित्त लगा कर सुनो ॥ (१२-१४)

उस सव्यसाची अर्जुनके क्रुद्ध होने पर देवता गन्धर्व यक्ष वा राक्षस कोई भी उसे पराजित करनेका उत्साह नहीं कर सकते। खाण्डव वन जलानेके समय जब भगवान् इन्द्र जलकी वर्षा करने लगे उस समय जिस महात्मा अर्जुनने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे उन्हें निवारण किया था और उस समय यक्ष सर्प तथा दैत्य आदि जो कोई अपने बलसे मतवारे होकर उसके संमुख उपस्थित हुए, पुरुषश्रेष्ठ अर्जुनने उस समय संमुख उपस्थित हुए उन सम्पूर्ण प्राणियोंका नाश किया था वह सब वृत्तान्त तुम्हें भी विदित है। (१४-१७)

देखिये घोषयात्राके समय जब चित्रसेन आदि गन्धर्व तुम लोगोंको हरण करना चाहते थे तब दृढ धनुर्द्धारी अर्जुनने ही उनको पराजित करके तुम्हे छुडाया था। निवातकवच दैत्य सदासे देवतोंके शत्रु थे, देवता लोग किसी प्रकारसे भी उन दैत्योंका नाश नहीं कर सके परन्तु पुरुषश्रेष्ठ अर्जुनने उन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानवानां सहस्राणि हिरण्यपुरवासिनाम् ॥ १९ ॥
विजिग्ये पुरुषव्याघ्रः स शक्यो मानुषैः कथम् ।
प्रत्यक्षं चैव ते सर्वं यथा बलमिदं तव ॥ २० ॥
क्षपितं पाण्डुपुत्रेण चेष्टतां नो विशाम्पते ।
सञ्जय उवाच— तं तदाऽभिप्रशंसन्तमर्जुनं कुपितस्तदा ॥ २१ ॥
द्रोणं तव सुतो राजन्पुनरेवेदमब्रवीत् ।
अहं दुःशासनः कर्णः शकुनिर्मातुलश्च मे ॥ २२ ॥
हनिष्यामोऽर्जुनं संख्ये द्विधा कृत्वाऽद्य भारतीम् ।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा भारद्वाजो हसन्निव ॥ २३ ॥
अन्ववर्तत राजानं स्वस्ति तेऽस्त्विति चाऽब्रवीत् ।
को हि गाण्डीवधन्वानं ज्वलन्तमिव तेजसा ॥ २४ ॥
अक्षयं क्षपयेत्कश्चित्क्षत्रियः क्षत्रियर्षभम् ।
तं न वित्तपतिर्नेन्द्रो न यमो न जलेश्वरः ॥ २५ ॥
नाऽसुरोरगरक्षांसि क्षपयेयुः सहायुधम् ।

निवातकवच दैत्योंका तथा हिरण्यपुरवासी सहस्रों दानवोंका वध किया था; इससे ऐसे पराक्रमी अर्जुनको मनुष्य किस भांति पराजित करनेमें समर्थ हो सकेगा! हे प्रजानाथ दुर्योधन! हमलोग विशेष रूपसे यत्नपूर्वक युद्ध कर रहे हैं तौ भी अर्जुन जिस प्रकार तुम्हारी सेनाका नाश कर रहा है उसे तुम प्रत्यक्ष देख रहे हो ॥ (१७-२१)

सञ्जय बोले, महाराज! द्रोणाचार्य जब इसी भांति अर्जुनकी प्रशंसा करने लगे; तब दुर्योधन क्रुद्ध होकर फिर उनसे यह वचन बोले, आज मैं दुःशासन कर्ण और मेरे मामा शकुनि, हम लोग एकत्रित होकर सेनाको दो हिस्सेमें विभक्त करके युद्धभूमिमें अर्जुनका नाश करेंगे ॥ (२१-२३)

महाराज! भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य दुर्योधनके वचनको सुन कर कुछ भी प्रतिवाद न करके हंसते हंसते उनसे यह बोले, महाराज! तुम्हारा मङ्गल होवे, परन्तु प्रभावमें जलती हुई अग्निके समान युद्धमें अक्षय स्वरूप क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ गाण्डीव धनुष धारण करनेवाले अर्जुनका वध कर सके पृथ्वीके बीच ऐसा क्षत्रिय योद्धा कौन है? कोई भी तो नहीं दीख पडता है। मनुष्योंकी तो कुछ बात ही नहीं है, यदि अर्जुन अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके युद्धभूमिके बीच स्थित रहे तो यक्षोंके स्वामी कुबेर, इन्द्र,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूढास्त्वेतानि भाषन्ते यानीमान्यात्थ भारत ॥ २६ ॥
युद्धे ह्यर्जुनमासाद्य स्वस्तिमान्को व्रजेद्गृहान् ।
त्वं तु सर्वाभिशङ्कित्वान्निष्ठुरः पापनिश्चयः ॥ २७ ॥
श्रेयसस्त्वद्धिते युक्तांस्तत्तद्वक्तुमिहेच्छसि ।
गच्छ त्वमपि कौन्तेयमात्मार्थे जहि मा चिरम् ॥२८॥
त्वमप्याशंससे योद्धुं कुलजः क्षत्रियो ह्यसि ।
इमान्किं क्षत्रियान्सर्वान्घातयिष्यस्यनागसः ॥ २९ ॥
त्वमस्य मूलं वैरस्य तस्मादासाद्याऽर्जुनम् ।
एष ते मातुल प्राज्ञः क्षत्रधर्ममनुव्रतः ॥ ३० ॥
दुर्द्यूतदेवी गान्धारे प्रयात्वर्जुनमाहवे ।
एषोऽक्षकुशलो जिह्मो द्यूतकृत्कितवः शठः ॥ ३१ ॥
देविता निकृतिप्रज्ञो युधि जेष्यति पाण्डवान् ।
त्वया कथितमत्यर्थं कर्णेन सह हृष्टवत् ॥ ३२ ॥

यमराज, वरुण, असुर, सर्प और राक्षस आदि कोई भी अर्जुनका वध करनेमें समर्थ नहीं हैं। (२३-२६)

हे राजन्! तुमने जो कुछ कहे मूढ पुरुष ही ऐसे वचनोंको कहा करते हैं। कौन पुरुष अर्जुनके सङ्ग युद्धमें प्रवृत्त होकर कुशलपूर्वक लौट कर घर जा सकता है? परन्तु तुम अत्यन्त ही पाप-बुद्धिसे युक्त क्रूर और सबके ऊपर शङ्का करते रहते हो; इस ही कारण जो पुरुष तुम्हारे हितके कार्योंमें रत हैं, उनके विषयमें इसी प्रकार कटूक्ति किया करते हो। हे राजेन्द्र! तुम भी तो श्रेष्ठक्षत्रिय कुलमें उत्पन्न हुए हो; और उस कुन्ती-पुत्र अर्जुनके सङ्ग सदा युद्ध करनेकी इच्छा करते रहते हो; इससे तुम रणभूमिमें उसके सम्मुख जाकर शीघ्रही उसका नाश करो, विशेष करके तुम ही इस शत्रुताके मूल स्वरूप हो; तब इन निरपराधी राजाओंके नाशकी क्या आवश्यकता है? तुम स्वयं युद्धभूमिके बीच अर्जुन के सङ्ग युद्ध करने में प्रवृत्त हो जाओ। (२६—३०)

हे गान्धारी पुत्र! सम्पूर्ण अनिष्टके मूल स्वरूप जुआडी बुद्धिमान् और क्षत्रिय धर्ममें रत तुम्हारा मामा शकुनि अर्जुनके विरुद्ध युद्ध करनेको गमन करे। वह कुटिल, कपटी, शठ, दुष्टोंमें अग्रणी है; उसीने बाजी लगाके जूआ खेला था; इस समय युद्धमें भी शकुनि पाण्डवोंको पराजित करेगा इसमें सन्देह नहीं है! और तुमने हर्ष पूर्वक कर्णके सङ्ग अज्ञा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असकृच्छून्यवन्मोहाद्धृतराष्ट्रस्य शृण्वतः।
अहं च तात कर्णश्च भ्राता दुःशासनश्च मे ॥ ३३ ॥
पाण्डुपुत्रान्हनिष्यामः सहिताः समरे त्रयः।
इति ते कत्थमानस्य श्रुतं संसदि संसदि ॥ ३४ ॥
अनुतिष्ठ प्रतिज्ञां तां सत्यवाग्भव तैः सह।
एष ते पाण्डवः शत्रुरविशङ्कोऽग्रतः स्थितः ॥ ३५ ॥
क्षत्रधर्ममवेक्षस्व श्लाघ्यस्तव वधो जयात्।
दत्तं भुक्तमधीतं च प्राप्तमैश्वर्यमीप्सितम् ॥ ३६ ॥
कृतकृत्योऽनृणश्चाऽसि मा भैर्युध्यस्व पाण्डवम्।
इत्युक्त्वा समरे द्रोणो न्यवर्तत यतः परे।
द्वैधीकृत्य ततः सेनां युद्धं समभवत्तदा ॥ ३७ ॥ [८४५९]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि द्रोणदुर्योधनभाषणे पञ्चाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१८५॥

सञ्जय उवाच— त्रिभागमात्रशेषायां रात्र्यां युद्धमवर्तत।

नताके कारण बार बार राजा धृतराष्ट्रके समीप जैसे व्यर्थ बडाई की थी, कि "हे पिता ! मैं, कर्ण और मेरा भाई दुःशासन, हम तीन पुरुष युद्धभूमिमें पाण्डुपुत्रोंका नाश करेंगे।" पहिले प्रायः प्रति सभामें ही तुम इसी भांति अपनी बडाई किया करते थे; इस समय कर्ण आदि वीरोंके सङ्ग मिलके उस प्रतिज्ञाको पूर्ण करके अपना वचन सत्य करो। (३१—३५)

यह देखो अजेय शत्रु पाण्डुपुत्र अर्जुन तुम्हारे अगाडी स्थित है। यदि तुम क्षत्रिय धर्मकी रक्षा करो, तो इस युद्धमें विजयलाभकी अपेक्षा तुम्हारी मृत्यु भी प्रशंसनीय गिनी जावेगी। हे दुर्योधन! इस पृथ्वी पर तुमने दान; अध्ययन और भोग आदि बहुत कुछ किया है, अधिक क्या कहा जावे, तुमने इच्छानुसार सम्पूर्ण ऐश्वर्य लाभ किया है, तुम देवता और पितरोंके ऋणसे मुक्त होकर एक प्रकार कृतकार्य भी होगये हो। इससे अब भय मत करो, स्वयं अर्जुनके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हो जाओ।३५-३७

द्रोणाचार्य ऐसा वचन कहके जिस स्थान पर शत्रु लोग युद्धके वास्ते तैयार थे, वहां पर उपस्थित हुए; और राजा दुर्योधन भी सेनाके दोभाग बनाकर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए॥ (३७) [८४५९]

द्रोणपर्वमें एकसौ पचासी अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ छियासी अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज ! रात्रिके तीन भाग व्यतीत हुए और एक भाग बाकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरूणां पाण्डवानां च संहृष्टानां विशाम्पते ॥ १ ॥
अथ चन्द्रप्रभां मुष्णन्नादित्यस्य पुरःसरः ।
अरुणोऽभ्युदयाञ्चक्रे ताम्रीकुर्वन्निवाऽम्बरम् ॥ २ ॥
प्राच्यां दिशि सहस्रांशोररुणेनाऽरुणीकृतम् ।
तापनीयं यथा चक्रं भ्राजते रविमण्डलात् ॥ ३ ॥
ततो रथाश्वांश्च मनुष्ययानान्युत्सृज्य सर्वे कुरुपाण्डुयोधाः ।
दिवाकरस्याऽभिमुखं जपन्तः सन्ध्यागताः प्राञ्जलयो बभूवुः ॥४॥
ततो द्वैधीकृते सैन्ये द्रोणः सोमकपाण्डवान् ।
अभ्यद्रवत्सपञ्चालान्दुर्योधनपुरोगमः ॥ ५ ॥
द्वैधीकृतान्कुरून्दृष्ट्वा माधवोऽर्जुनमब्रवीत् ।
सपत्नान्सव्यतः कृत्वा अपसव्यमिमं कुरु ॥ ६ ॥
स माधवमनुज्ञाय कुरुष्वेति धनञ्जयः ।
द्रोणकर्णौ महेष्वासौ सव्यतः पर्यवर्तत ॥ ७ ॥
अभिप्रायं तु कृष्णस्य ज्ञात्वा परपुरञ्जयः ।
आजिशीर्षिगतं पार्थं भीमसेनोऽभ्युवाच ह ॥ ८ ॥

था; उस समयमें फिर हर्षित होके कौरव और पाण्डवलोग महाघोर संग्राम करने लगे ॥ तिसके अनन्तर सूर्यके अगाडी स्थित अरुण चन्द्रमाका सम्पूर्ण प्रकाश हरण करते हुए सूर्यको लाल वर्ण करके उदय हुए, उस समय आकाशमें अरुणाई छागई ॥ इसी समय पूर्वदिशामें सहस्रांशु भगवान् सूर्यका मण्डल दीखने लगा। अरुणसे अरुणवर्णवाला वह सूर्य मण्डल तपे हुए सोनेके चक्रके समान शोभित होने लगा ॥ तब वहांके कौरव और पाण्डवोंकी ओर के सब योद्धा लोग रथ, अश्व, पालकी आदि अपने अपने वाहनोंको छोडकर भगवान् सूर्यके संमुख मुंह करके सन्ध्योपासना पूर्वक हाथ जोडकर जप जपने लगे ॥ जब कौरवोंकी सेना दो हिस्सोंमें विभक्त हुई, तब द्रोणाचार्य दुर्योधनको अगाडी करके सोमक पाण्डव और पाञ्चाल योद्धाओंकी ओर दौडे ॥ (१-५)

श्रीकृष्णचन्द्र कौरवोंकी सेनाको दो हिस्सोंमें विभक्त हुई देखकर अर्जुनसे बोले, हे सव्यसाची अर्जुन ! तुम इन शत्रुओंको बांयी ओर कर दो ॥ अर्जुन श्रीकृष्णसे "ऐसा ही होवे" यह वचन कहके धनुर्द्धारियोंमें अग्रगण्य द्रोणाचार्य और कर्णको बायीं ओरकी सेनामें किया ॥ (६-७)

युद्धभूमिके बीच स्थित शत्रुनाशन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमसेन उवाच- अर्जुनाऽर्जुन बीभत्सो शृणुष्वैतद्वचो मम ।
यदर्थं क्षत्रिया सूते तस्य कालोऽयमागतः ॥ ९ ॥
अस्मिंश्चेदागते काले श्रेयो न प्रतिपत्स्यसे ।
असम्भावितरूपस्त्वं सुनृशंसं करिष्यसि ॥ १० ॥
सत्यश्रीधर्मयशसां वीर्येणाऽऽनृण्यमाप्नुहि ।
भिन्ध्यनीकं युधां श्रेष्ठ अपसव्यमिमान्कुरु ॥ ११ ॥
सञ्जय उवाच— स सव्यसाची भीमेन चोदितः केशवेन च ।
कर्णद्रोणावतिक्रम्यसमन्तात्पर्यवारयत् ॥ १२ ॥
तमाजिशीर्षमायान्तं दहन्तं क्षत्रियर्षभान् ।
पराक्रान्तं पराक्रम्य ततः क्षत्रियपुङ्गवाः ॥ १३ ॥
नाऽशक्नुवन्वारयितुं वर्धमानमिवाऽनलम् ।
अथ दुर्योधनः कर्णः शकुनिश्चाऽपि सौबलः ॥ १४ ॥
अभ्यवर्षञ्छरव्रातैः कुन्तीपुत्रं धनञ्जयम् ।
तेषामस्त्राणि सर्वेषामुत्तमास्त्रविदां वरः ॥ १५ ॥

भीमसेन श्रीकृष्णके अभिप्रायको समझ कर अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन ! मैं जो कुछ कहता हूं, उसे सुनो । क्षत्रियोंकी माता जिस कार्यके वास्ते पुत्र उत्पन्न करती है उसका समय अब उपस्थित हुआ है । हे योद्धाओंमें श्रेष्ठ अर्जुन ! ऐसा समय प्राप्त होने पर भी यदि तुम अपने कल्याणके वास्ते उपाय नहीं करोगे; तो अत्यन्त नृशंसताका कार्य कहा जावेगा; और पृथ्वीके बीच तुम्हारी अकीर्ति होवेगी, इससे वामभागमें स्थित कौरवोंकी सेनाको भेद करके अपने पराक्रमके अनुसार सत्य धर्म यश और लक्ष्मीके समीप अऋणी होजाओ॥८-११

संजय बोले, महाराज ! श्रीकृष्ण और भीमसेनकी आज्ञासे अर्जुनने द्रोणाचार्य और कर्णको अतिक्रम करके सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओं को आक्रमण किया ॥ जब वह पराक्रमी वीर अपने अस्त्ररूपी अग्निसे तुम्हारी सेनाके शूरवीर क्षत्रिय योद्धाओंको भस्म करते हुए तुम्हारी सेनाके बीच प्रविष्ट हुए, उस समय तुम्हारी सेनाके मुख्य मुख्य योद्धा लोग अपनी शक्तिके अनुसार पराक्रमको प्रकाशित करके भी बढे हुए अग्निके समान उसे निवारण करनेमें समर्थ नहीं हुए ॥ (१२-१४)

तब दुर्योधन, कर्ण और सुबलपुत्र शकुनि कुन्तीपुत्र अर्जुनके ऊपर अनगिनत बाणोंकी वर्षा करने लगे । अस्त्र-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदर्थीकृत्य राजेन्द्र शरवर्षैरवाकिरत् ।
अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य लघुहस्तो जितेन्द्रियः ॥ १६ ॥
सर्वानविध्यन्निशितैर्दशभिर्दशभिः शरैः ।
उद्धूता रजसो वृष्टिः शरवृष्टिस्तथैव च ॥ १७ ॥
तमश्च घोरं शब्दश्च तदा समभवन्महान् ।
न द्यौर्न भूमिर्न दिशः प्राज्ञायन्त तथागते ॥ १८ ॥
सैन्येन रजसा मूढं सर्वमन्धमिवाऽभवत् ।
नैव ते न वयं राजन्प्राज्ञासिष्म परस्परम् ॥ १९ ॥
उद्देशेन हि तेन स्म समयुध्यन्त पार्थिवाः ।
विरथा रथिनो राजन्समासाद्य परस्परम् ॥ २० ॥
केशेषु समसज्जन्त कवचेषु भुजेषु च ।
हताश्वा हतसूताश्च निश्चेष्टा रथिनो हताः ॥ २१ ॥
जीवन्त इव तत्र स्म व्यदृश्यन्त भयार्दिताः ।
हतान्गजान्समाश्लिष्य पर्वतानिव वाजिनः ॥ २२ ॥

शस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले अर्जुन उन लोगोंके चलाये हुए बाणोंको अपने बाणजालसे निवारण करके लगातार उन लोगोंके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। इसी प्रकार हस्तलाघवके सहित अर्जुनने उन लोगोंके चलाये हुए अस्त्रशस्त्रोंको निवारण करके उन हर एक योद्धाओंको दश दश बाणोंसे विद्ध किया। (१४–१७)

उस समय धूलिके उडने बाणोंके चलने और शूरवीरोंके सिंहनादसे वह रणभूमि अन्धकारमय होकर भयङ्कर बोध होने लगी। उस समय सम्पूर्ण दिशा, आकाश तथा पृथ्वी कुछ भी नहीं दीख पडते थे॥ विशेष करके सेनाके पुरुषोंके पांवके धक्केसे जो धूलि उडी उससे सब कोई रणभूमिके बीच अन्धेकी भांति आंखोंको मूंद के युद्धभूमिमें स्थित हुए। उससमय क्या शत्रुसेनाके पुरुष और क्या अपनी सेनाके पुरुष कोई भी नहीं दीख पडते थे; उस समय राजा लोग केवल अनुमानसे ही युद्ध करने लगे। (१७–२०)

रथी योद्धा रथ-रहित होके आपसमें बाहु वर्म और केशोंको आकर्षण करते हुए युद्ध करने लगे। कितने ही रथी घोडे सारथीसे रहित होनेपर भयभीत होकर पृथ्वीपर गिरके चेष्टारहित हुएकी भांति मालूम होते थे। इसी भांति घुडसवार योद्धा लोग भी घोडोंके सहित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतसत्वा व्यदृश्यन्त तथैव सह सादिभिः ।
ततस्त्वभ्यवसृत्यैव संग्रामादुत्तरां दिशम् ॥ २३ ॥
आतिष्ठदाहवे द्रोणो विधूमोऽग्निरिव ज्वलन् ।
तमाजिशीर्षादेकान्तमपक्रान्तं निशम्य तु ॥ २४ ॥
समकम्पन्त सैन्यानि पाण्डवानां विशाम्पते ।
भ्राजमानं श्रिया युक्तं ज्वलन्तमिव तेजसा ॥ २५ ॥
द्रोणं दृष्ट्वा परे त्रेसुश्चेरुर्मम्लुश्च भारत ।
आह्वयन्तं परानीकं प्रभिन्नमिव वारणम् ॥ २६ ॥
नैनमाशंसिरे जेतुं दानवा वासवं यथा ।
केचिदासन्निरुत्साहाः केचित्क्रुद्धा मनस्विनः ॥ २७ ॥
विस्मिताश्चाऽभवन्केचित्केचिदासन्नमर्षिताः ।
हस्तैर्हस्ताग्रमपरे प्रत्यपिंषन्नराधिपाः ॥ २८ ॥
अपरे दशनैरोष्ठानदशन्क्रोधमूर्च्छिताः ।
व्याक्षिपन्नायुधान्यन्ये ममृदुश्चाऽपरे भुजान् ॥ २९ ॥
अन्ये चाऽन्वपतन्द्रोणं त्यक्तात्मानो महौजसः ।

पर्वतके समान मरेहुए हाथियोंके समूह में छिपकर मरे हुए की भांति दिखाई देते थे । (२०–२३)

इस ही समय द्रोणाचार्य संग्रामभूमि में उत्तर ओर गमन करके धूएंसे रहित जलती अग्निकी भांति मालूम होने लगे; पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष द्रोणाचार्यको युद्धभूमिसे पृथक् देखकर उनसे भयभीत होकर कांपने लगे । महाराज ! उस समय शत्रु लोग द्रोणाचार्यको दिव्यश्रीसे युक्त जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी देखकर भयभीत उत्साह रहित होकर युद्धभूमिसे विचलित होने लगे । जैसे दानव लोग देवराज इन्द्रको पराजित करनेमें उत्साह रहित होगये थे, वैसे ही पाण्डवोंने शत्रुसेनाको आवाहन करनेवाले मदचूते हाथीकी भांति द्रोणाचार्यको पराजित करनेकी आशा नहीं किया । (२३–२७)

राजाओंके बीच कितने ही योद्धा उत्साह रहित और भयभीत होगये थे; परन्तु कोई कोई निर्भयचित्तवाले शूरवीर पुरुष अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर ओंठ काटते दांत कटकटाते और अस्त्रोंको चलाते हुए उनकी ओर गमन करने लगे । कितने ही महाबलवान् शूरवीर योद्धा लोग अपने प्राणकी आशा त्यागके वेगपूर्वक द्रोणाचार्यकी ओर दौडे ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाञ्चालास्तु विशेषेण द्रोणसायकपीडिताः ॥ ३० ॥
समसज्जन्त राजेन्द्र समरे भृशवेदनाः ।
ततो विराटद्रुपदौ द्रोणं प्रति ययू रणे ॥ ३१ ॥
तथा चरन्तं संग्रामे भृशं समरदुर्जयम् ।
द्रुपदस्य ततः पौत्रास्त्रय एव विशाम्पते ॥ ३२ ॥
चेदयश्च महेष्वासा द्रोणमेवाऽभ्ययुर्युधि ।
तेषां द्रुपदपौत्राणां त्रयाणां निशितैः शरैः ॥ ३३ ॥
त्रिभिर्द्रोणोऽहरत्प्राणांस्ते हया न्यपतन्भुवि ।
ततो द्रोणोऽजयद्युद्धे चेदिकैकेयसृञ्जयान् ॥ ३४ ॥
मत्स्यांश्चैवाऽजयत्कृत्स्नान्भारद्वाजो महारथान् ।
ततस्तु द्रुपदः क्रोधाच्छरवर्षमवासृजत् ॥ ३५ ॥
द्रोणं प्रति महाराज विराटश्चैव संयुगे ।
तन्निहत्येषुवर्षं तु द्रोणः क्षत्रियमर्दनः ॥ ३६ ॥
तौ शरैश्छादयामास विराटद्रुपदावुभौ ।
द्रोणेन च्छाद्यमानौ तु क्रुद्धौ संग्राममूर्धनि ॥ ३७ ॥

विशेष करके पाञ्चालयोद्धा द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित तथा भयभीत होकर भी महाघोर संग्राम करने लगे । २७-३१

इसी समय युद्धदुर्मद द्रोणाचार्य जब इस प्रकार प्रबल वेगके सहित युद्धभूमिमें घूमने लगे, तब पाञ्चालराज द्रुपद और मत्स्यराज विराट युद्ध करनेके वास्ते उनके संमुख उपस्थित हुए । महाराज ! तिसके अनन्तर राजा द्रुपदके तीन पौत्र और महाधनुर्द्धर चेदिदेशीय योद्धा लोग द्रोणाचार्यकी ओर दौडे । उन लोगोंको संमुख आते देख द्रोणाचार्यने अपने तेजबाणोंसे राजा द्रुपदके तीनों पौत्रोंको प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिरा-दिया । (३१-३४)

तिसके अनन्तर भरद्वाजपुत्र महारथी द्रोणाचार्यने युद्धभूमिमें स्थित चेदी, केकय, सृञ्जय और सम्पूर्ण मत्स्यदेशीय योद्धाओंको पराजित किया । सेनाके पुरुषोंको भागते देख राजा द्रुपद और विराट क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्यके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे । अनन्तर क्षत्रियोंके नाश करनेवाले द्रोणाचार्यने उन लोगोंकी बाण वर्षाको निवारण करके राजा द्रुपद और विराटको अपने बाणजालसे छिपा दिया । तब क्रुद्ध स्वभाववाले वे दोनों राजा अत्यन्त क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्यको अन-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोणं शरैर्विव्यधतुः परमं क्रोधमास्थितौ ।
ततो द्रोणो महाराज क्रोधामर्षसमन्वितः ॥ ३८ ॥
भल्लाभ्यां भृशतीक्ष्णाभ्यां चिच्छेद धनुषी तयोः ।
ततो विराटः कुपितः समरे तोमरान्दश ॥ ३९ ॥
दश चिक्षेप च शरान्द्रोणस्य वधकांक्षया ।
शक्तिं च द्रुपदो घोरामायसीं स्वर्णभूषिताम् ॥ ४० ॥
चिक्षेप भुजगेन्द्राभां क्रुद्धो द्रोणरथं प्रति ।
ततो भल्लैः सुनिशितैश्छित्त्वा तांस्तोमरान्दश ॥४१॥
शक्तिं कनकवैदूर्यां द्रोणश्चिच्छेद सायकैः ।
ततो द्रोणः सुपीताभ्यां भल्लाभ्यामरिमर्दनः ॥ ४२ ॥
द्रुपदं च विराटं च प्रेषयामास मृत्यवे ।
हते विराटे द्रुपदे केकयेषु तथैव च ॥ ४३ ॥
तथैव चेदिमत्स्येषु पञ्चालेषु तथैव च ।
हतेषु त्रिषु वीरेषु द्रुपदस्य च नप्तृषु ॥ ४४ ॥
द्रोणस्य कर्म तद् दृष्ट्वा कोपदुःखसमन्वितः ।
शशाप रथिनां मध्ये धृष्टद्युम्नो महामनाः ॥ ४५ ॥

गिनत बाणोंसे विद्ध करने लगे।३४-३८

महाराज ! उस समय द्रोणाचार्यने अत्यन्त क्रुद्ध होकर तीक्ष्ण धारवाले भालेसे उन दोनों राजाओंके धनुषको काट दिया। धनुष कटनेपर वे दोनों पराक्रमी राजा बहुत ही क्रुद्ध हुए। अनन्तर विराटने दश तोमर और दश बाण चलाये; राजा द्रुपदने सर्पके समान सुवर्णभूषित लौहमयी एक शक्ति लेकर द्रोणाचार्यकी ओर चलाई। (३८-४१)

उसे देखकर द्रोणाचार्यने तेज धारवाले भालोंसे राजा विराटके बाण और तोमरोंको काटके फिर अनगिनत बाणों से राजा द्रुपदकी भुजासे छूटी हुई सुवर्णभूषित उस प्रकाशमान शक्तिको निवारण किया। तिसके अनन्तर शत्रुनाशन द्रोणाचार्यने तेज धारवाले दो भल्लोंसे राजा विराट और द्रुपदका वध करके उन दोनों वीरोंको यमपुरीमें भेज दिया ॥ (४१-४३)

महाराज ! जब राजा द्रुपद और विराट, अनगिनत केकय, चेदी, मत्स्य, पाञ्चालदेशीय बहुतेरे शूरवीर योद्धा तथा राजा द्रुपदके तीन पौत्र मारे गये, तब महाबली धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्यके इस भयङ्कर कर्मको देखकर दुःख और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इष्टापूर्तात्तथा क्षात्राद्ब्राह्मण्याच्च स नश्यतु।
द्रोणो यस्याऽद्य मुच्येत यं वा द्रोणः पराभवेत्॥ ४६॥
इति तेषां प्रतिश्रुत्य मध्ये सर्वधनुष्मताम्।
आयाद् द्रोणं सहानीकः पाञ्चाल्यः परवीरहा॥ ४७॥
पञ्चालास्त्वेकतो द्रोणमभ्यघ्नन्पाण्डवैः सह।
दुर्योधनश्च कर्णश्च शकुनिश्चाऽपि सौबलः॥ ४८॥
सोदर्याश्च यथामुख्यास्तेऽरक्षन्द्रोणमाहवे।
रक्ष्यमाणं तथा द्रोणं सर्वैस्तैस्तु महारथैः॥ ४९॥
यतमानास्तु पञ्चाला न शेकुः प्रतिवीक्षितुम्।
तत्राऽक्रुध्यद्भीमसेनो धृष्टद्युम्नस्य मारिष॥ ५०॥
स एनं वाग्भिरुग्राभिस्ततक्ष पुरुषर्षभः।
भीमसेन उवाच- द्रुपदस्य कुले जातः सर्वास्त्रेष्वस्त्रवित्तमः॥ ५१॥
कः क्षत्रियो मन्यमानः प्रेक्षेताऽरिमवस्थितम्।
पितृपुत्रवधं प्राप्य पुमान्कः परिपालयेत्॥ ५२॥

क्रोधसे परिपूर्ण होके सम्पूर्ण महारथियोंके बीच इस प्रकार प्रतिज्ञा की, "आज यदि मैं युद्धभूमिमें द्रोणाचार्यके निकटसे पराजित होऊं, अथवा यदि आज द्रोणाचार्य मेरे हाथसे मुक्त होसकें; तो मैं इष्ट, आपूर्त, तथा ब्राह्मण्य और क्षात्र धर्मसे भ्रष्ट होऊंगा।" इसी भांति जब पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने सम्पूर्ण धनुर्धारियोंके सम्मुख ऐसी प्रतिज्ञा करके द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिमें गमन किया॥(४३-४७)

उस ही समय पाण्डव और पाञ्चाल सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग इकट्ठे होकर द्रोणाचार्यके ऊपर प्रहार करने लगे। उसे देखकर अपने मुख्य मुख्य बलवान् भाइयोंके सहित राजा दुर्योधन कर्ण और सुबलपुत्र शकुनि द्रोणाचार्यकी रक्षा करनेमें प्रवृत्त हुए, जब द्रोणाचार्य रणभूमिमें तुम्हारी ओरके महारथी योद्धाओंसे रक्षित हुए उस समय पाञ्चाल योद्धा लोग यत्नवान् होकर भी द्रोणाचार्यकी ओर देखनेमें समर्थ न हुए। (४८-५०)

तब भीमसेन अत्यन्त क्रुद्ध होकर कठोर वचनोंसे मानो धृष्टद्युम्नको उत्तेजित करते हुए कहने लगे, महाराज द्रुपदके कुलमें उत्पन्न होकर और सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जानके तथा क्षत्रिय धर्म अवलम्बन करनेवाला कौन पुरुष सम्मुख स्थित शत्रुओंके विषयमें उपेक्षा कर सकता है? विशेष करके पिता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषतस्तु शपथं शापित्वा राजसंसदि ।
एष वैश्वानर इव समिद्धः स्वेन तेजसा ॥ ५३ ॥
शरचापेन्धनो द्रोणः क्षत्रं दहति तेजसा ।
पुरा करोति निःशेषां पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ ५४ ॥
स्थिताः पश्यत मे कर्म द्रोणमेव व्रजाम्यहम् ।
इत्युक्त्वा प्राविशत्क्रुद्धो द्रोणानीकं वृकोदरः ॥ ५५ ॥
शरैः पूर्णायतोत्सृष्टैर्द्रावयंस्तव वाहिनीम् ।
धृष्टद्युम्नोऽपि पाञ्चाल्यः प्रविश्य महतीं चमूम् ॥ ५६ ॥
आससाद रणे द्रोणं तदासीत्तुमुलं महत् ।
नैव नस्तादृशं युद्धं दृष्टपूर्वं न च श्रुतम् ॥ ५७ ॥
यथा सूर्योदये राजन्समुत्पिञ्जोऽभवन्महान् ।
संसक्तान्येव चाऽदृश्यन्रथवृन्दानि मारिष ॥ ५८ ॥
हतानि च विकीर्णानि शरीराणि शरीरिणाम् ।
केचिद्न्यत्र गच्छन्तः पथि चाऽन्यैरुपद्रुताः ॥ ५९ ॥

और पुत्रोंके वधको देखकर राजाओंके बीच प्रतिज्ञा करके भी कौन शत्रुको युद्धभूमिके बीच परित्याग कर सकता है ? (५०–५३)

इस समय द्रोणाचार्य धनुष बाणरूपी काष्ठोंसे अग्निके समान प्रज्वलित होकर जलती हुई अग्निकी भाँति क्षत्रियोंको भस्म कर रहे हैं। इससे तुम लोग इस ही स्थानपर स्थित होके मेरा पराक्रम देखो। पाण्डवोंकी सेनाको निःशेषित करनेके पहिले ही मैं स्वयं द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते उनके समीप गमन करूंगा, ऐसा वचन कहके भीमसेनने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपने बाणजालसे कुरुसेनाके योद्धाओंको तितर बितर करके व्यूह के बीच प्रवेश किया। (५३–५६)

इस ही समय पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न भी उस महाव्यूहके बीच प्रवेश करनेमें प्रवृत्त हुए; उस समय दोनों ओरके वीरोंका महाघोर भयङ्कर संग्राम होने लगा। महाराज ! उस सूर्य उदय होनेके समय जैसा युद्ध आरम्भ हुआ मैंने पहिले वैसा युद्ध न कभी देखा और न सुना ही था। उस समय बहुतेरे रथी और पैदल योद्धाओंके मरनेसे लोथके ऊपर लोथ गिरने लगी; कितने ही पुरुषोंके शरीरकी हड्डियें छितरा गयीं; कितने ही योद्धा युद्धभूमिमें भागते हुए दूसरे वीरोंके अस्त्रोंकी चोटसे मरकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमुखाः पृष्ठतश्चाऽन्ये ताड्यन्ते पार्श्वतः परे ।
तथा संसक्तयुद्धं तदभवद् भृशदारुणम् ।
अथ सन्ध्यागतः सूर्यः क्षणेन समपद्यत ॥ ६० ॥ [८५१९]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि संकुलयुद्धे षडशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८६ ॥

सञ्जय उवाच— ते तथैव महाराज दंशिता रणमूर्धनि ।
सन्ध्यागतं सहस्रांशुमादित्यमुपतस्थिरे ॥ १ ॥
उदिते तु सहस्रांशौ तप्तकाञ्चनसप्रभे ।
प्रकाशितेषु लोकेषु पुनर्युद्धमवर्तत ॥ २ ॥
द्वन्द्वानि तत्र यान्यासन्संसक्तानि पुरोदयात् ।
तान्येवाऽभ्युदिते सूर्ये समसज्जन्त भारत ॥ ३ ॥
रथैर्हया हयैर्नागाः पादातैश्चाऽपि कुञ्जराः ।
हयैर्हयाः समाजग्मुः पादाताश्च पदातिभिः ॥ ४ ॥
रथा रथैरिभैर्नागास्तथैव भरतर्षभ ।
संसक्ताश्च वियुक्ताश्च योधाः संन्यपतन्रणे ॥ ५ ॥
ते रात्रौ कृतकर्माणः श्रान्ताः सूर्यस्य तेजसा ।

पृथ्वीमें गिरने लगे। कितने ही पुरुष पीछे और दाहिने बायें स्थित शत्रुसेनाके योद्धाओंके अस्त्रोंसे पीडित होने लगे। इसी भांति उस समय महाघोर संग्राम होने लगा, तब क्षण भरके बीच सूर्यदेव प्रकाशित हुए ॥ (५६-६०) [८५१९]

द्रोणपर्वमें एकसौ छियासी अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ सतासी अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! सहस्र किरणधारी भगवान सूर्यको उदय होते देख, युद्धभूमिमें स्थित कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा व्यूहबद्ध होकर ही सूर्य देवकी उपासना करने लगे ॥ उस समय तपाये हुए सुवर्णके समान प्रकाशसे युक्त सूर्यके उदय होने पर सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित हुआ; और दोनों सेनाके वीरोंका आपसमें फिर महाघोर संग्राम होने लगा ॥ सूर्यके उदय होनेके पहिले जो पुरुष जिसके सङ्ग द्वैरथ युद्धमें प्रवृत्त थे फिर वह लोग उस ही पुरुषके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए ॥ (१-३)

घुडसवार रथियोंके सङ्ग, गजसवार घुडसवारोंके सङ्ग, कितने ही पैदल सेनाके योद्धा लोग गजसवारोंके सङ्ग और कितने ही पैदल सेनाके पुरुष पैदल सेनाके योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, उस समय महाघोर संग्राम होने लगा ॥ महाराज! सम्पूर्ण योद्धा लोग रातके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षुत्पिपासापरीताङ्गा विसंज्ञा बहवोऽभवन् ॥ ६ ॥
शङ्खभेरीमृदङ्गानां कुञ्जराणां च गर्जताम् ।
विस्फारितविकृष्टानां कार्मुकाणां च कूजताम् ॥ ७ ॥
शब्दः समभवद्राजन्दिविस्पृग्भरतर्षभ ।
द्रवतां च पदातीनां शस्त्राणां पततामपि ॥ ८ ॥
हयानां ह्रेषतां चापि रथानां च निवर्तताम् ।
क्रोशतां गर्जतां चैव तदासीत्तुमुलं महत् ॥ ९ ॥
विवृद्धस्तुमुलः शब्दो द्यामगच्छन्महांस्तदा ।
नानायुधनिकृत्तानां चेष्टतामातुरः स्वनः ॥ १० ॥
भूमावश्रूयत महांस्तदासीत्कृपणं महत् ।
पतितां पात्यमानानां पत्त्यश्वरथदन्तिनाम् ॥ ११ ॥
तेषु सर्वेष्वनीकेषु व्यतिषक्तेष्वनेकशः ।

समय अपनी शक्तिके अनुसार युद्ध करके थक गये थे इस समय सूर्यकी धूपसे अत्यन्त ही उत्तापित होके भूख प्याससे विकल हो कर एकबारगी विह्वल होगये ॥ (४-६)

उस समय लगातार शङ्ख मृदङ्ग भेरी आदि बाजे बजने लगे, हाथी चिंग्घाडने लगे, शूरवीरोंके सिंहनाद और धनुषटङ्कार सुनाई देने लगे । पैदल चलनेवाले योद्धा सिंहनाद करके अस्त्र चलाते हुए शत्रुओंकी ओर दौडने लगे; उस समय चलते हुए अस्त्र शस्त्रोंके खटपटाहटका महाघोर शब्द सुन पडता था । घोडे हिनाहिनाते हुए इधर उधर दौडने लगे और रथोंकी घरघराहटका शब्द इन सम्पूर्ण शब्दोंके सङ्ग मिलकर आकाश मण्डल और सम्पूर्ण दिशामें परिपूरित होगया । (७-१०)

महाराज ! उस समय अनेक भांतिके अस्त्रोंकी चोटसे कितने ही पुरुषोंके शरीर क्षतविक्षत होनेसे वे भूमिपर गिरकर चेष्टा पूर्वक आर्त नाद कर रहे थे तथा पैदल, घुडसवार, रथी, और गजसवार घायल होके गिरते थे और दूसरेसे गिराये जाते थे तब वे सब के सब लोग और घायल हुए हाथी घोडे आदि चिल्ला रहे थे; उस समय रणभूमिमें चारों ओर आर्त्तनाद सुनाई पडता था; उससे वह रणभूमि अत्यन्त ही भयङ्कर दीख पडती थी । इसी भांति जब दोनों सेनाके सम्पूर्ण योद्धा युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए, तब दोनों ओरके शूरवीर पुरुष इस भांति मोहित होगये, कि उस समय किसीको अपनी ओर शत्रुसेनाके पुरुषों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वे स्वाञ्जघ्नुः परे स्वांश्च स्वान्परेषां परे परान् ॥ १२ ॥
वीरबाहुविसृष्टाश्च योधेषु च गजेषु च ।
राशयः प्रत्यदृश्यन्त वाससां नेजनेष्विव ॥ १३ ॥
उद्यतप्रतिपिष्टानां खड्गानां वीरबाहुभिः ।
स एव शब्दस्तद्रूपो वाससां निर्ज्यतामिव ॥ १४ ॥
अर्धासिभिस्तथा खड्गैस्तोमरैः सपरश्वधैः ।
निकृष्टयुद्धं संसक्तं महदासीत्सुदारुणम् ॥ १५ ॥
गजाश्वकायप्रभवां नरदेहप्रवाहिनीम् ।
शस्त्रमत्स्यसुसम्पूर्णां मांसशोणितकर्दमाम् ॥ १६ ॥
आर्तनादस्वनवतीं पताकाशस्त्रफेनिलाम् ।
नदीं प्रावर्तयन्वीराः परलोकौघगामिनीम् ॥ १७ ॥
शरशक्त्यर्दिताः क्लान्ता रात्रिमूढाल्पचेतसः ।
विष्टभ्य सर्वगात्राणि व्यतिष्ठन्गजवाजिनः ॥ १८ ॥

का विचार भी न रहा; जिसने उस समयमें जिसको अपने सम्मुख पाया उसीके ऊपर अस्त्र शस्त्रोंसे प्रहार करने लगा ॥ (१०–१२)

हाथियोंके और योद्धाओंके शरीर पर शूरवीर योद्धा लोग तलवारसे प्रहार करने लगे। उससे धोनेके स्थान पर वस्त्रोंके ढेरके समान उस स्थानपर खड्गोंका ढेर होगया। जब दोनों सेनाके शूरवीर हाथसे तलवार आदि अस्त्र चलाने लगे, तब उन अस्त्र शस्त्रोंका वस्त्रोंके धोनेके समय जैसा शब्द सुनाई देता है वैसा ही खटपटाहट शब्द सुनाई देने लगा; क्रमसे दोनों सेनाके वीर लडते लडते एकधारवाली तलवार तोमर परशु आदि अस्त्रोंको चलाते हुए महाघोर युद्ध करने लगे ॥ (१३–१५)

अनन्तर हाथी, घोडे और मनुष्यके रुधिरसे प्रकट होकर अस्त्र शस्त्ररूपी मछलियोंसे युक्त मांस मज्जारूपी कीचडसे परिपूरित एक नदी उत्पन्न हुई। शूरवीरोंका आर्त्तनाद ही नदीके प्रवाहका शब्दरूपी बोध होता था, शस्त्र और पताका उसमें फेन रूपी दीख पडते थे, यमलोक रूपी समुद्र पर्यन्त इस नदीकी सीमा थी; उसमें मृत पुरुषोंके शरीर बहते हुए दिखाई दे रहे थे ॥ (१६–१७)

महाराज ! हाथी घोडे आदि सम्पूर्ण वाहन रात्रिके युद्धमें बाण शक्ति आदि अस्त्रोंसे पीडित होकर विकल हो गये थे; इससे सवेरेके समय वे सम्पूर्ण वाहन थकावटके कारण चलने फिरनेसे रहित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहुभिः कवचैश्चित्रैः शिरोभिश्चारुकुण्डलैः ।
युद्धोपकरणैश्चाऽन्यैस्तत्र तत्र चकाशिरे ॥ १९ ॥
क्रव्यादसङ्घैराकीर्णं मृतैरर्धमृतैरपि ।
नाऽऽसीद्रथपथस्तत्र सर्वमायोधनं प्रति ॥ २० ॥
मज्जत्सु चक्रेषु रथान्सत्वमास्थाय वाजिनः ।
कथञ्चिदवहञ्श्रान्ता वेपमानाः शरार्दिताः ॥ २१ ॥
कुलसत्वबलोपेता वाजिनो वारणोपमाः ।
विह्वलं तूर्णमुद्भ्रान्तं सभयं भारताऽऽतुरम् ॥ २२ ॥
बलमासीत्तदा सर्वमृते द्रोणार्जुनावुभौ ।
तावेवाऽऽस्तां निलयनं तावार्तायनमेव च ॥ २३ ॥
तावेवाऽन्ये समासाद्य जग्मुर्वैवस्वतक्षयम् ।
आविग्नमभवत्सर्वं कौरवाणां महद्बलम् ॥ २४ ॥
पञ्चालानां च संसक्तं न प्राज्ञायत किञ्चन ।

होकर जहां तहां खडे होकर स्थित हुए। उस समय कटी हुई भुजा कवच और कुण्डलोंसे भूषित बहुतेरे शूरवीरोंके सिर अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र मरे और अधमरे पुरुषोंका शरीर तथा अनेक मांसभक्षी जीव जंतुओंसे वह रणभूमि एकबारगी इस प्रकार परिपूरित होगई कि उस समय रथके चक्के भी नहीं दीख पडते थे और उस समय रुधिर तथा मांसमय कीचडोंमें रथके चक्र इधर ऊधर फंसने लगे तब महाबलवान हाथीके समान पराक्रमी उत्तम घोडे बाणोंसे पीडित तथा इधर उधर दौडनेसे थक गये थे; तौ भी यथा शक्ति अपने पराक्रमके अनुसार अत्यन्त कष्टके साहित उन रथोंको खींचते हुए गमन करने लगे। (१८-२२)

महाराज ! उस समय केवल द्रोणाचार्य और अर्जुनको छोडके दोनों सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग थकके तथा अस्त्रोंकी चोटसे पीडित होकर भयभीत होगये। उस समय ऊपर कहे हुए वे दोनों वीर सम्पूर्ण प्राणियोंके संहार करनेवाले और भयभीत पुरुषोंके आश्रय स्वरूप हुए; और उन दोनों वीरोंके अस्त्र शस्त्रोंसे मरके दोनों सेनाके योद्धा लोग यमपुरीमें गमन करने लगे। हे राजेन्द्र ! कौरव और पाञ्चाल योद्धाओंकी वह बडी सेना उन दोनों महावीर पुरुषोंके अस्त्र प्रहारसे व्याकुल होकर भी महाघोर संग्राम करनेमें प्रवृत्त हुई ! उस समय अंधेरेके कारण किसीको कुछभी दीखता नहीं था। (२२-२५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तकाक्रीडसदृशं भीरूणां भयवर्धनम् ॥ २५ ॥
पृथिव्यां राजवंश्यानामुत्थिते महति क्षये ।
न तत्र कर्णं द्रोणं वा नाऽर्जुनं न युधिष्ठिरम् ॥ २६ ॥
न भीमसेनं न यमौ न पाञ्चाल्यं न सात्यकिम् ।
न च दुःशासनं द्रौणिं न दुर्योधनसौबलौ ॥ २७ ॥
न कृपं मद्रराजं च कृतवर्माणमेव च ।
न चाऽन्यान्नैव चाऽऽत्मानं न क्षितिं न दिशस्तथा॥२८॥
पश्याम राजन्संसक्तान्सैन्येन रजसाऽऽवृतान् ।
सम्भ्रान्ते तुमुले घोरे रजोमेघे समुत्थिते ॥ २९ ॥
द्वितीयामिव सम्प्राप्तामन्यन्त निशां तदा ।
न ज्ञायन्ते कौरवेया न पाञ्चाला न पाण्डवाः ॥ ३० ॥
न दिशो द्यौर्न चोर्वी च न समं विषमं तथा ।
हस्तसंस्पर्शमापन्नान्परानप्यथवा स्वकान् ॥ ३१ ॥
न्यपातयंस्तदा युद्धे नराः स्म विजयैषिणः ।
उद्धूतत्वात्तु रजसः प्रसेकाच्छोणितस्य च ॥ ३२ ॥

यमराजके क्रीडास्थलके समान तथा कादरोंके भयको बढानेवाले दोनों सेनाके शूरवीरोंके भयङ्कर संग्रामके समय वीर पुरुषोंके पांवके धक्केसे जो धूलि उडी उससे वह रणभूमि परिपूरित होगई। उस समय कर्ण, द्रोणाचार्य, अर्जुन, युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, पांचालराजपुत्र शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, सात्यकि, दुःशासन, अश्वत्थामा, दुर्योधन, सुबलपुत्र शकुनि, कृपाचार्य, मद्रराज शल्य, कृतवर्मा, सम्पूर्ण दिशा, पृथ्वी, अपना शरीर तथा दूसरे पुरुषोंका शरीर इत्यादि कुछभी नहीं दीख पडते थे। (२५–२९)

उस समय सम्पूर्ण प्राणियोंको विस्मित करनेवाले अत्यन्त भयङ्कर धूलिके बादल प्रकट हुए तब फिर सब कोई निशा कालका समय ही बोध करने लगे। उससे वहां कौरव पाण्डव पाञ्चाल सम्पूर्ण दिशा आकाश पृथ्वी समानभूमि तथा ऊंची नीची भूमि इत्यादि उस समय कुछ भी नहीं मालूम होते थे। उस समय विजयकी इच्छा करनेवाले योद्धा लोग अपनी ओरके पुरुषों तथा शत्रुसेनाके योद्धाओंने अपने हाथसे टटोलके जिसको पाया उसहीका प्राणनाश किया। (२९–३२)

अनन्तर वायु वेगपूर्वक बहने लगा, और धूलिसे आकाशमण्डल परिपूरित होगया था; परन्तु शूरवीर पुरुषोंके रुधिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राशाम्यत रजो भौमं शीघ्रत्वादनिलस्य च ।
तत्र नागा हया योधा रथिनोऽथ पदातयः ॥ ३३ ॥
पारिजातवनानीव व्यरोचन्रुधिरोक्षिताः ।
ततो दुर्योधनः कर्णो द्रोणो दुःशासनस्तथा ॥ ३४ ॥
पाण्डवैः समसज्जन्त चतुर्भिश्चतुरो रथाः ।
दुर्योधनः सह भ्रात्रा यमाभ्यां समसज्जत ॥ ३५ ॥
वृकोदरेण राधेयो भारद्वाजेन चार्जुनः ।
तद्घोरं महदाश्चर्यं सर्वे प्रैक्षन्त सर्वतः ॥ ३६ ॥
रथर्षभाणामुग्राणां सन्निपातममानुषम् ।
रथमार्गैर्विचित्रैस्तैर्विचित्ररथसंकुलम् ॥ ३७ ॥
अपश्यन्रथिनो युद्धं विचित्रं चित्रयोधिनाम् ।
यतमानाः पराक्रान्ताः परस्परजिगीषवः ॥ ३८ ॥
जीमूता इव घर्मान्ते शरवर्षैरवाकिरन् ।
ते रथान्सूर्यसङ्काशानास्थिताः पुरुषर्षभाः ॥ ३९ ॥
अशोभन्त यथा मेघाः शारदाश्चलविद्युतः ।

बहनेसे रणभूमिमें धूलिका उडना बन्द हुआ । उस समय हाथी, घोडे, रथी और पैदल सेनाके योद्धा लोग रुधिर पूरित शरीरसे युक्त होकर फूले हुए पारिजात वृक्षोंके वनकी भांति शोभित होने लगे । (३२-३४)

महाराज ! दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन और द्रोणाचार्य, तुम्हारी सेनाके ये चारों महारथी योद्धा पाण्डवोंकी ओरके चार महारथियोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए । अपने भाई दुःशासनके सहित राजा दुर्योधन नकुलसहदेवके सङ्ग, कर्ण भीमसेनके साथ और द्रोणाचार्य अर्जुनके सङ्ग युद्धको करनेमें प्रवृत्त हुए । उस समय सम्पूर्ण सेनाके शूरवीर योद्धा लोग उन महारथियोंके समीप स्थित होकर उन लोगोंके महाभयङ्कर अलौकिक युद्धको देखने लगे ॥ (३४-३७)

सम्पूर्ण रथी लोग विस्मित होकर महापराक्रमी महारथ योद्धाओंके अस्त्र कौशल और रथ चलानेकी गतिके सहित महाघोर विचित्र युद्धको देखने लगे । ऊपर कहे हुए द्रोणाचार्य आदि महारथी योद्धा लोग यत्नवान् होकर वर्षाकालके बादलोंकी भांति अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे । वे सब पुरुषश्रेष्ठ महाबलवान महात्मा योद्धा लोग सूर्यकिरणके समान प्रकाशमान रथोंपर चढके बिजली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योधास्ते तु महाराज क्रोधामर्षसमन्विताः ॥ ४० ॥
स्पर्धिनश्च महेष्वासाः कृतयत्ना धनुर्धराः ।
अभ्यगच्छंस्तथाऽन्योन्यं मत्ता गजवृषा इव ॥ ४१ ॥
न नूनं देहभेदोऽस्ति काले राजन्ननागते ।
यत्र सर्वे न युगपद्यशीर्यन्त महारथाः ॥ ४२ ॥
बाहुभिश्चरणैश्छिन्नैः शिरोभिश्च सकुण्डलैः ।
कार्मुकैर्विशिखैः प्रासैः खड्गैः परशुपट्टिशैः ॥ ४३ ॥
नालीकैः क्षुद्रनाराचैर्नखरैः शक्तितोमरैः ।
अन्यैश्च विविधाकारैर्धौतैः प्रहरणोत्तमैः ॥ ४४ ॥
विचित्रैर्विविधाकारैः शरीरावरणैरपि ।
विचित्रैश्च रथैर्भग्नैर्हतैश्च गजवाजिभिः ॥ ४५ ॥
शून्यैश्चैव नगाकारैर्हतयोधध्वजै रथैः ।
अमनुष्यैर्हयैस्त्रस्तैः कृष्यमाणैस्ततस्ततः ॥ ४६ ॥
वातायमानैरसकृद्धतवीरैरलंकृतैः ।
व्यजनैः कङ्कटैश्चैव ध्वजैश्च विनिपातितैः ॥ ४७ ॥
छत्रैराभरणैर्वस्त्रैर्माल्यैश्च ससुगन्धिभिः ।
हारैः किरीटैर्मुकुटैरुष्णीषैः किङ्किणीगणैः ॥ ४८ ॥

से युक्त शरत्कालके मेघोंकी भांति शोभित होते लगे। (३७—४०)

महाराज ! उस समय और भी बहुतेरे महाधनुर्द्धारी योद्धा क्रुद्ध होकर धनुष चढाके यत्नपूर्वक मतवारे हाथीकी भांति एक दूसरेकी ओर दौडे ॥ परन्तु विना समयके पहुंचे किसी पुरुषकी मृत्यु नहीं होती इस कारण एकबारगी सबका नाश नहीं हुआ ॥ (४१-४२)

उस समय कहीं कटी हुई भुजा, कुण्डलभूषित बहुतेरे सिर, धनुष बाण, प्रास, तलवार, फरशे, पट्टिश, क्षुर, नाराच शक्ति, तोमर तथा और भी बहुतसे भांति भांतिके अस्त्र शस्त्र, मृत पुरुषोंके शरीर, टूटे हुए रथ, और मरे हुए हाथी घोडोंके शरीर इधर उधर पडे थे ॥ कहींपर नाना भांतिके आभूषणोंसे भूषित शूरवीर योद्धा और सारथीके मारे जानेसे उनके रथके घोडे वायुतुल्य वेगसे छूटे रथको लेकर रणभूमिके बीच इधर उधर दौडते हुए दीख पडते थे। (४३-४७)

कहीं कहीं चंवर, कवच, ध्वजा, छत्र, अनेक भांतिके आभूषण, अस्त्र, सुगन्धित माला, किरीट, मुकुट, किङ्किणि, मणि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरःस्थैर्मणिभिर्निष्कैश्चूडामणिभिरेव च।
आसीदायोधनं तत्र नभस्तारागणैरिव ॥ ४९ ॥
ततो दुर्योधनस्याऽऽसीन्नकुलेन समागमः।
अमर्षितेन क्रुद्धस्य क्रुद्धेनाऽमर्षितस्य च ॥ ५० ॥
अपसव्यं चकाराऽथ माद्रीपुत्रस्तवाऽऽत्मजम्।
किरञ्छरशतैर्हृष्टस्तत्र नादो महानभूत् ॥ ५१ ॥
अपसव्यं कृतं संख्ये भ्रातृव्यं नाऽत्यमर्षिणा।
नाऽमृष्यत तमप्याजौ प्रतिचक्रेऽपसव्यतः ॥ ५२ ॥
पुत्रस्तव महाराज राजा दुर्योधनो द्रुतम्।
ततः प्रतिचिकीर्षन्तमपसव्यं तु ते सुतम् ॥ ५३ ॥
न्यवारयत तेजस्वी नकुलश्चित्रमार्गवित्।
स सर्वतो निवार्यैनं शरजालेन पीडयन् ॥ ५४ ॥
विमुखं नकुलश्चक्रे तत्सैन्याः समपूजयन्।
तिष्ठतिष्ठेति नकुलो बभाषे तनयं तव।
संस्मृत्य सर्वदुःखानि तव दुर्मन्त्रितं च तत् ॥५५॥ [८५७४]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि नकुलयुद्धे सप्ताशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८७ ॥

जटित कण्ठा, मुहर और चूडामणि आदि नाना भांतिकी वस्तुओंके पडे रहनेसे वह रणभूमि तारासमूहसे आकाशमण्डलकी भांति शोभित होने लगी ॥ ४७-४९

अनन्तर अभिमानी राजा दुर्योधन क्रुद्ध होकर क्रोधी नकुलके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ महाराज! माद्रीपुत्रने तुम्हारे पुत्र दुर्योधनको बाईं ओर करके उन्हें एक सौ बाणोंसे विद्ध किया; उस समय वहांपर महाघोर तुमुल कोलाहल होने लगा ॥ तिसके अनन्तर क्रुद्धस्वभाववाले दुर्योधनने नकुलके बाईं ओर होकर उनके पराक्रमको सहन नहीं किया; बल्कि उन्होंने शीघ्र ही नकुलको बाईं ओर करनेकी चेष्टा करी ॥ (४९–५३)

उस समय युद्धविद्या जाननेवाले पराक्रमी नकुल दुर्योधनको निवारण करने लगे ॥ अनन्तर नकुलने कुरुराज दुर्योधनको सब भांतिसे निवारित और अपने बाणजालसे पीडित करके उन्हें युद्धभूमिसे पराजित किया; और तुम्हारी दुष्टनीतिके कारण उन्होंने पहिले जो कुछ क्लेश सहन किया था, उसे स्मरण करके दुर्योधनको खडा रह! खडा रह! कहके आवाहन करने लगे; उससे सम्पूर्ण योद्धा लोग नकुल की प्रशंसा करने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— ततो दुःशासनः क्रुद्धः सहदेवमुपाद्रवत ।
रथवेगेन तीव्रेण कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥ १ ॥
तस्याऽऽपतत एवाऽऽशु भल्लेनाऽमित्रकर्शनः ।
माद्रीपुत्रः शिरो यन्तुः सशिरस्त्राणमच्छिनत् ॥ २ ॥
नैनं दुःशासनः सूतं नाऽपि कश्चन सैनिकः ।
कृत्तोत्तमाङ्गमाशुत्वात्सहदेवेन बुद्धवान् ॥ ३ ॥
यदा त्वसंगृहीतत्वात्प्रयान्त्यश्वा यथासुखम् ।
ततो दुःशासनः सूतं बुबुधे गतचेतसम् ॥ ४ ॥
स हयान्सन्निगृह्याऽऽजौ स्वयं हयविशारदः ।
युयुधे रथिनां श्रेष्ठो लघु चित्रं च सुष्ठु च ॥ ५ ॥
तदस्याऽपूजयन्कर्म स्वे परे चापि संयुगे ।
हतसूतरथेनाऽऽजौ व्यचरच्चदभीतवत् ॥ ६ ॥
सहदेवस्तु तानश्वांस्तीक्ष्णैर्बाणैरवाकिरत ।
पीड्यमानाः शरैश्चाऽऽशु प्राद्रवंस्ते ततस्ततः ॥ ७ ॥

लगे ॥ (५३—५५) [८५७४]

द्रोणपर्वमें एकसौ सतासी अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ अठासी अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! तिसके अनन्तर दुःशासन क्रुद्ध होकर अपने रथके वेगसे पृथ्वीको कंपाते हुए नकुलकी ओर दौडे ॥ पराक्रमी दुःशासनको वेगपूर्वक अपनी ओर आते देख, माद्रीपुत्र नकुलने शीघ्रताके सहित एक भल्लास्त्रसे शिरस्त्राण सहित उनके सारथीका सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ महाराज दुःशासनके सारथीका शिर नकुलके अस्त्रसे किस समय कटके पृथ्वीमें गिर पडा, उसे दुःशासन तथा सेनाके कोई पुरुष भी न जान सके ॥ जब सारथीसे रहित होकर घोडे इधर उधर दौडने लगे, तब दुःशासनने समझा, कि मेरा सारथी मारा गया ॥ (१–४)

उस समय घोडोंकी विद्या जाननेवाले दुःशासन हस्तलाघवके सहित स्वयं घोडोंको चलाते हुए युद्ध करने लगे। उस समय जब दुःशासन सारथीसे रहित होनेपर भी स्वयं घोडोंको चलाते हुए रणभूमिमें निर्भयचितसे भ्रमण करते हुए युद्ध करने लगे, तो तुम्हारी सेना तथा शत्रुसेनाके सम्पूर्ण योद्धालोग उनके इस कठिन कर्मकी प्रशंसा करने लगे ॥ उस समय सहदेवने शीघ्रताके सहित अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उनके घोडोंके शरीरमें प्रहार किया; तब दुःशासन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स रश्मिषु विषक्तत्वादुत्ससर्ज शरासनम् ।
धनुषा कर्म कुर्वंस्तु रश्मींश्च पुनरुत्सृजत् ॥ ८ ॥
छिद्रेष्वेतेषु तं बाणैर्माद्रीपुत्रोऽभ्यवाकिरत् ।
परीप्सन्स्त्वत्सुतं कर्णस्तदन्तरमवापतत् ॥ ९ ॥
वृकोदरस्ततः कर्णं त्रिभिर्भल्लैः समाहितः ।
आकर्षपूर्णैरभ्यघ्नन्बाह्वोरुरसि चाऽनदत् ॥ १० ॥
स निवृत्तस्ततः कर्णः सङ्घट्टित इवोरगः ।
भीममावारयामास विकिरन्निशिताञ्छरान् ॥ ११ ॥
ततोऽभूत्तुमुलं युद्धं भीमराधेययोस्तदा ।
तौ वृषाविव नर्दन्तौ विवृत्तनयनावुभौ ॥ १२ ॥
वेगेन महताऽन्योन्यं संरब्धावभिपेततुः ।
अभिसंश्लिष्टयोस्तत्र तयोराहवशौण्डयोः ॥ १३ ॥
विच्छिन्नशरपातत्वाद्गदायुद्धमवर्तत ।
गदया भीमसेनस्तु कर्णस्य रथकूबरम् ॥ १४ ॥
बिभेद शतधा राजंस्तदद्भुतमिवाऽभवत् ।

के रथके घोडे सहदेवके बाणोंसे अत्यन्त पीडित होकर वेगपूर्वक चारों ओर दौडने लगे ॥ (५–७)

उस समय दुःशासनको घोडोंकी रास ग्रहण करनेके समय धनुष त्यागना पडा और धनुष ग्रहण करनेके समय घोडोंकी बागडोर छोडनी पडी; इतने ही समयके बीच माद्रीपुत्र सहदेवने दुःशासनके ऊपर अनेक बाण चलाये; तब कर्ण दुःशासनकी रक्षाके वास्ते सहदेवके समीप स्थित हुए ॥ कर्णको सहदेवकी ओर गमन करते देख भीमसेनने तीन भल्लोंसे कर्णके बाहु और वक्षस्थलमें प्रहार करके सिंहनाद किया ॥ (८–१०)

अनन्तर कर्ण विद्ध सर्पके समान अत्यन्त क्रुद्ध होकर सहदेवके समीपसे लौटके सैकडों बाणोंसे भीमसेन को विद्ध करके उन्हें निवारण करने लगे; उस समय उन दोनों वीरों का महाघोर तुमुल संग्राम होने लगा । वे दोनों क्रोधसे नेत्र लाल कर के सिंहनाद करते हुए एक दूसरेकी ओर दौडे । उस समय उन दोनों वीरोंके रथ इस भांति एक ही स्थान पर मिल गये कि उन लोगोंको बाण चलानेका बीचमें स्थान भी न रहा । इससे उन दोनोंको गदायुद्धमें प्रवृत्त होना पडा, अनन्तर भीमसेनने अपनी गदासे कर्णके रथको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो भीमस्य राधेयो गदामाविध्य वीर्यवान्॥ १५॥
अवासृजद्रथे तां तु विभेद गदया गदाम्।
ततो भीमः पुनर्गुर्वीं चिक्षेपाऽऽधिरथेर्गदाम्॥ १६॥
तां गदां बहुभिः कर्णः सुपुङ्खैः सुप्रवेजितैः।
प्रत्यविध्यत्पुनश्चाऽन्यैः सा भीमं पुनराव्रजत्॥ १७॥
व्यालीव मन्त्राभिहता कर्णबाणैरभिद्रुता।
तस्याः प्रतिनिपातेन भीमस्य विपुलो ध्वजः॥ १८॥
पपात सारथिश्चाऽस्य मुमोह च गदाहतः।
स कर्ण सायकानष्टौ व्यसृजत्क्रोधमूर्च्छितः॥ १९॥
तैस्तस्य निशितैस्तीक्ष्णैर्भीमसेनो महाबलः।
चिच्छेद परवीरघ्नः प्रहसन्निव भारत॥ २०॥
ध्वजं शरासनं चैव शरावापं च भारत।
कर्णोऽप्यन्यद्धनुर्गृह्य हेमपृष्ठं दुरासदम्॥ २१॥
ततः पुनस्तु राधेयो हयानस्य रथेषुभिः।
ऋक्षवर्णाञ्जघानाऽऽशु तथोभौ पार्ष्णिसारथी॥ २२॥

खण्ड खण्ड कर दिया वह भीमसेनका पराक्रम अद्भुत रूपसे दीख पडा।११-१५

तब महाबलवान् राधापुत्र कर्णने एक भयङ्करी गदाको घुमाके भीमसेनकी ओर चलायी; भीमसेनने गदासे कर्ण की चलायी हुई गदा को निवारण किया और एक भारी गदा उठाके अधिरथपुत्र कर्णकी ओर चलाई। उसे देखकर कर्णने पंखयुक्त महावेगशील दश बाणोंसे और उसके अनन्तर अनगिनत बाणोंसे भीमसेनकी चलाई हुई गदामें प्रहार किया; मन्त्रसे प्रभावित सांपिनीके समान कर्णके बाणोंके प्रहारसे वह गदा फिर वेगपूर्वक भीमसेनकी ओर चली। महाराज! जब वह गदा कर्णकी ओरसे घूमकर भीमसेनके रथपर गिरी; तब उस गदाकी चोटसे भीमसेनका सारथी मूर्च्छित हुआ और उनके रथकी ध्वजा टूटकर पृथ्वीमें गिर पडी॥ (१५–१९)

तब शत्रुनाशन भीमसेनने क्रुद्ध होकर आठ बाण ग्रहण कर कर्णके धनुष बाण और ध्वजाको लक्ष्य करके चलाये, और उन चोखे बाणोंसे सूतपुत्र कर्णके बाण सहित धनुष और रथकी ध्वजाको काटके गिरा दिया। अनन्तर पराक्रमी कर्णने दूसरा धनुष ग्रहण करके रथशक्ति चलाकर भीमसेनके भालू वर्णवाले चारों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स विपन्नरथो भीमो नकुलस्याऽऽप्लुतो रथम् ।
हरिर्यथा गिरेः शृङ्गं समाक्रामदरिन्दमः ॥ २३ ॥
तथा द्रोणार्जुनौ चित्रमयुध्येतां महारथौ ।
आचार्यशिष्यौ राजेन्द्र कृतप्रहरणौ युधि ॥ २४ ॥
लघुसन्धानयोगाभ्यां रथयोश्चरणेन च ।
मोहयन्तौ मनुष्याणां चक्षूंषि च मनांसि च ॥ २५ ॥
उपारमन्त ते सर्वे योधा भरतसत्तम ।
अदृष्टपूर्वं पश्यन्तस्तद्युद्धं गुरुशिष्ययोः ॥ २६ ॥
विचित्रान्पृतनामध्ये रथमार्गानुदीर्य तौ ।
अन्योन्यमपसव्यं च कर्तुं वीरौ तदेषतुः ॥ २७ ॥
पराक्रमं तयोर्योधा ददृशुस्ते सुविस्मिताः ।
तयोः समभवद्युद्धं द्रोणपाण्डवयोर्महत् । ॥ २८ ॥
आमिषार्थे महाराज गगने श्येनयोरिव ।
यद्यचक्रार द्रोणस्तु कुन्तीपुत्रजिगीषया ॥ २९ ॥

घोडे और दोनों पृष्ठ रक्षक योद्धाओंका वध किया ॥ घोडोंके मरने और पृष्ठरक्षकोंसे रहित होने पर शत्रुनाशन भीमसेन इस प्रकार अपने रथसे कूदके नकुलके रथपर चढ गये जैसे सिंह एक स्थानसे उछलके दूसरे स्थानपर चला जाता है ॥ (१९-२३)

महाराज ! इधर सब अस्त्रशस्त्रोंके जाननेवाले महाबलवान् गुरु शिष्य द्रोणाचार्य और अर्जुन शीघ्रताके सहित अस्त्र साधते, धनुषपर रखते, एक दूसरेकी ओर चलाते और रथकी विचित्र गतिसे युद्धभूमिके बीच घूमते तथा इन्द्रजालकी भांति अपने युद्ध कौशलसे सबके चित्तको मोहित करते हुए आश्चर्यमय युद्ध करने लगे । उस समय सम्पूर्ण योद्धा लोग द्रोणाचार्यके उस अद्भुत तथा आश्चर्यमय संग्रामको देखने लगे; परन्तु महावीर द्रोणाचार्य और अर्जुन अपने रथकी विचित्र गतिसे भ्रमण करते हुए एक दूसरेको बाईं ओर करनेकी इच्छा करने लगे ॥ (२४-२७)

उस समय दोनों सेनाके योद्धा लोग विस्मित होकर उन दोनों वीरोंके पराक्रमको देखने लगे । मांसकी इच्छा करनेवाले आकाशमें स्थित दो बाज पक्षियोंकी भांति द्रोणाचार्य और अर्जुनका महाघोर संग्राम होने लगा ॥ उस समय द्रोणाचार्यने अर्जुनकी पराजयके निमित्त जिन जिन अस्त्रोंको प्रकट किया अर्जुनने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्तत्प्रतिजघानाऽऽशु प्रहसंस्तस्य पाण्डवः ।
यदा द्रोणो न शक्नोति पाण्डवं स्म विशेषितुम् ॥३०॥
ततः प्रादुश्चकाराऽस्त्रमस्त्रमार्गविशारदः ।
ऐन्द्रं पाशुपतं त्वाष्ट्रं वायव्यमथ वारुणम् ॥ ३१ ॥
मुक्तं मुक्तं द्रोणचापात्तज्जघान धनञ्जयः ।
अस्त्राण्यस्त्रैर्यदा तस्य विधिवद्धन्ति पाण्डवः ॥ ३२ ॥
ततोऽस्त्रैः परमैर्दिव्यैर्द्रोणः पार्थमवाकिरत् ।
यद्यदस्त्रं स पार्थाय प्रयुंक्ते विजिगीषया ॥ ३३ ॥
तस्य तस्य विघाताय तत्तद्धि कुरुतेऽर्जुनः ।
स वध्यमानेष्वस्त्रेषु दिव्येष्वपि यथाविधि ॥ ३४ ॥
अर्जुनेनाऽर्जुनं द्रोणो मनसैवाऽभ्यपूजयत् ।
मेने चाऽऽत्मानमधिकं पृथिव्यामधि भारत ॥ ३५ ॥
तेन शिष्येण सर्वेभ्यः शस्त्रविद्भ्यः परन्तपः ।
वार्यमाणस्तु पार्थेन तथा मध्ये महात्मनाम् ॥ ३६ ॥

अपने अस्त्रोंके प्रभावसे उनके सम्पूर्ण अस्त्रोंको निवारण किया। (२८–३०)

महाराज! जब द्रोणाचार्य किसी भांति भी पाण्डुपुत्र अर्जुनसे अधिक न हो सके, तब उन्होंने दिव्य अस्त्रोंको चलाना आरम्भ किया। उस समय ऐन्द्र, वायव्य, पाशुपत, त्वाष्ट्र और वारुणास्त्र आदि जितने अस्त्र द्रोणाचार्यके धनुषसे छूटकर अर्जुनकी ओर चले, पराक्रमी अर्जुनने उन सम्पूर्ण अस्त्रोंको अपने दिव्य अस्त्रोंसे निवारण किया। इसी भांति पाण्डुपुत्र अर्जुनने जब अपने अस्त्रोंके प्रभावसे द्रोणाचार्यके दिव्य अस्त्रोंको निवारण किया, तब द्रोणाचार्यने परम दिव्यास्त्रोंको चला कर अर्जुनको छिपा दिया, अधिक क्या कहा जावे, उस समय द्रोणाचार्यने अर्जुनको पराजित करनेकी इच्छासे जिन जिन अस्त्रोंको अर्जुनकी ओर चलाया, अर्जुनने उन अस्त्रोंके निवारण करने योग्य अपने दिव्य अस्त्रोंको प्रकट करके आचार्यके चलाये हुए सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंको निष्फल कर दिया। (३०–३४)

अर्जुनके अस्त्रोंसे अपने अस्त्रोंको निष्फल होते देख द्रोणाचार्यने मनही मन अपने शिष्य अर्जुनकी प्रशंसा किया और अपने शिष्य अर्जुनको युद्धविद्यामें अत्यन्त ही निपुण देखकर पृथ्वीके सम्पूर्ण अस्त्रज्ञ पुरुषोंसे अपनेको अधिक समझने लगे; और द्रोणाचार्य युद्धभूमि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यतमानोऽर्जुनं प्रीत्या प्रत्यवारयदुत्स्मयन् ।
ततोऽन्तरिक्षे देवाश्च गन्धर्वाश्च सहस्रशः ॥ ३७ ॥
ऋषयः सिद्धसङ्घाश्च व्यतिष्ठन्त दिदृक्षया ।
तदप्सरोभिराकीर्णं यक्षगन्धर्वसंकुलम् ॥ ३८ ॥
श्रीमदाकाशमभवद्भूयो मेघाकुलं यथा ।
तत्र स्माऽन्तर्हिता वाचो व्यचरन्त पुनः पुनः ॥ ३९ ॥
द्रोणपार्थस्तवोपेता व्यश्रूयन्त नराधिप ।
विसृज्यमानेष्वस्त्रेषु ज्वालयत्सु दिशो दश ॥ ४० ॥
अब्रुवंस्तत्र सिद्धाश्च ऋषयश्च समागताः ।
नैवेदं मानुषं युद्धं नाऽऽसुरं न च राक्षसम् ॥ ४१ ॥
न दैवं न च गान्धर्वं ब्राह्मं ध्रुवमिदं परम् ।
विचित्रमिदमाश्चर्यं न नो दृष्टं न च श्रुतम् ॥ ४२ ॥
अति पाण्डवमाचार्यो द्रोणं चाऽप्यति पाण्डवः ।
नाऽनयोरन्तरं शक्यं द्रष्टुमन्येन केनचित् ॥ ४३ ॥
यदि रुद्रो द्विधाकृत्य युध्येताऽऽत्मानमात्मना ।

में स्थित थे तौभी महात्मा राजाओंके बीच अर्जुनसे निवारित होकर प्रसन्न हुए और विस्मित होकर प्रेमसे उसे निवारण करनेका यत्न करने लगे ॥ (३४-३६)

तिसके अनन्तर देवता, गन्धर्व, सहस्रों ऋषि और सिद्ध लोग युद्ध देखनेकी अभिलाषासे आकाशमें विमानों पर स्थित हुए । उस समय आकाशमण्डल धीरे धीरे अप्सरा यक्ष और राक्षसोंसे परिपूर्ण होकर अत्यन्त ही शोभित होने लगा; उस समय आकाशमण्डलसे बार बार महात्मा द्रोणाचार्य और अर्जुनके स्तुतिसूचक आकाश वाणी सुनाई देने लगी । (३७-४०)

जब उन दोनों महात्माओंके धनुषसे छूटे अस्त्र सम्पूर्ण दिशामें प्रकाशित होने लगे, तब उस समय आकाशमें इकट्ठे हुए ऋषि और सिद्ध लोग आपसमें कहने लगे, "इस युद्धको न मानुष न आसुर न राक्षस और न गान्धर्व युद्ध ही कहा जा सकता है, यह निश्चय परम ब्राह्म युद्ध है। ऐसा विचित्र और विस्मय उत्पन्न करनेवाला संग्राम न कभी देखा गया और न सुना ही गया था । (४०-४२

कभी द्रोणाचार्य अर्जुनको और कभी अर्जुन द्रोणाचार्यको अतिक्रम करते थे; उस समय रणभूमिके बीच कोई पुरुष उन दोनों महाबलवान् महात्मा पुरुषोंके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्र शक्योपमा कर्तुमन्यत्र तु न विद्यते ॥ ४४ ॥
ज्ञानमेकस्थमाचार्ये ज्ञानं योगश्च पाण्डवे ।
शौर्यमेकस्थमाचार्ये बलं शौर्यं च पाण्डवे ॥ ४५ ॥
नेमौ शक्यौ महेष्वासौ युद्धे क्षपयितुं परैः ।
इच्छमानौ पुनरिमौ हन्येतां सामरं जगत् ॥ ४६ ॥
इत्यब्रुवन्महाराज दृष्ट्वा तौ पुरुषर्षभौ ।
अन्तर्हितानि भूतानि प्रकाशानि च सर्वशः ॥ ४७ ॥
ततो द्रोणो ब्राह्ममस्त्रं प्रादुश्चक्रे महामतिः ।
सन्तापयन्रणे पार्थं भूतान्यन्तर्हितानि च ॥ ४८ ॥
ततश्चचाल पृथिवी सपर्वतवनद्रुमा ।
ववौ च विषमो वायुः सागराश्चाऽपि चुक्षुभुः ॥ ४९ ॥
ततस्त्रासो महानासीत्कुरुपाण्डवसेनयोः ।

छिद्रको देखनेमें समर्थ नहीं हुए। यदि भगवान् रुद्र अपनेको दो हिस्सोंमें विभक्त करके अपने सङ्ग आप ही युद्ध करें तो उस युद्धकी उपमा हो सकती है; इसके अतिरिक्त और किसीके युद्धकी उपमा नहीं हो सकती जिस भांति सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंका ज्ञान अकेले द्रोणाचार्यमें विद्यमान है, उसी भांति ज्ञान और योग दोनों ही अर्जुनमें प्रतिष्ठित हैं, जैसे द्रोणाचार्य शूरताके आधार हैं; वैसे ही अर्जुन भी बल और शूरताके आधार हैं। (४३–४५)

इससे इन दोनों महाधनुर्द्धारी पुरुषोंको रणभूमिके बीच कोई भी शत्रु पराजित करनेमें समर्थ नहीं है। परन्तु ये लोग यदि इच्छा करें तो देवतोंके सहित इस सम्पूर्ण जगत्का नाश कर सकते हैं॥ महाराज! उन दोनों पुरुष श्रेष्ठ महाधनुर्धर पराक्रमी वीरों के अलौकिक युद्धको देखकर आकाशवासी देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सिद्ध, ऋषि, तथा पृथ्वी पर स्थित सम्पूर्ण प्राणी द्रोणाचार्य और अर्जुनके विषयमें इसी भांतिके वचन आपसमें कहते हुए उन दोनों महात्माओं की प्रशंसा करने लगे॥ (४६–४७)

अनन्तर महाबुद्धिमान् द्रोणाचार्यने अर्जुन तथा आकाशवासी सम्पूर्ण प्राणियोंको संतप्त करके ब्राह्म अस्त्र चलाया; उससे पर्वत वन और समुद्रके सहित सम्पूर्ण पृथ्वी कांपने लगी, वायु प्रबल वेगसे बहने लगा और समुद्रका जल उथलित होने लगा॥ अधिक क्या कहा जावे उससमय जब द्रोणाचार्यने ब्रह्मअस्त्र चलाया, तब कौरव और पाण्डवों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वेषां चैव भूतानामुद्यतेऽस्त्रे महात्मना ॥ ५० ॥
ततः पार्थोऽप्यसम्भ्रान्तस्तदस्त्रं प्रतिजघ्निवान् ।
ब्रह्मास्त्रेणैव राजेन्द्र ततः सर्वमशीशमत् ॥ ५१ ॥
यदा न गम्यते पारं तयोरन्यतरस्य वा ।
ततः संकुलयुद्धेन तद्युद्धं व्याकुलीकृतम् ॥ ५२ ॥
नाऽऽज्ञायत ततः किञ्चित्पुनरेव विशाम्पते ।
प्रवृत्ते तुमुले युद्धे द्रोणपाण्डवयोर्मृधे ॥ ५३ ॥
शरजालैः समाकीर्णे मेघजालैरिवाऽम्बरे ।
नाऽपतच्च ततः कश्चिदन्तरिक्षचरस्तदा ॥ ५४ ॥ [८६२८]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि संकुलयुद्धे अष्टाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८८ ॥

सञ्जय उवाच— तस्मिंस्तथा वर्तमाने गजाश्वनरसंक्षये ।
दुःशासनो महाराज धृष्टद्युम्नमयोधयत् ॥ १ ॥
स तु रुक्मरथासक्तो दुःशासनशरार्दितः ।
अमर्षात्तव पुत्रस्य शरैर्वाहानवाकिरत् ॥ २ ॥

की सेनाके शूरवीर योद्धा तथा सम्पूर्ण प्राणी भयभीत होगये ॥ परन्तु अर्जुन युद्ध भूमिसे तनिकभी विचलित नहीं हुए, बल्कि द्रोणाचार्यके चलाये हुए ब्राह्मअस्त्रको ब्रह्मास्त्रसे ही निवारण किया। ब्राह्म अस्त्रके निवारित होने पर सम्पूर्ण दिशा फिर प्रकाशित हुई ॥ (४८–५१)

इसी भांति वे दोनों पराक्रमी वीर जब दिव्य अस्त्रोंको चलाकर एक दूसरेसे अधिक न हो सके तब फिर संकुल युद्ध शूरू हुआ, शीघ्र ही एक दूसरेके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। महाराज ! उस समय जब अस्त्र शस्त्रोंसे द्रोणाचार्य और अर्जुनका संग्राम होने लगा, तब वहां पर कुछ भी मालूम नहीं होता था ॥ उस समय आकाशमण्डल बादलोंके समूह की भांति द्रोणाचार्य और अर्जुनके बाणोंसे परिपूरित होगया; उस समय आकाशचारी प्राणी भी आकाशमण्डलमें गमन करनेमें समर्थ नहीं हुए ॥ (५२–५४) [८६२८]

द्रोणपर्वमें एकसौ अठासी अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ नवासी अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! हाथी घोडे और मनुष्योंके नाश करनेवाले उस महाघोर संग्रामके समय पराक्रमी दुःशासन धृष्टद्युम्नके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए ॥ उस समय धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्ध कर रहे थे, परन्तु तुम्हारे पुत्र दुःशासनके बाणोंसे पीडित होकर उन्हों-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षणेन स रथस्तस्य सध्वजः सहसारथिः।
नाऽदृश्यत महाराज पार्षतस्य शरैश्चितः ॥ ३ ॥
दुःशासनस्तु राजेन्द्र पाञ्चाल्यस्य महात्मनः।
नाऽशकत्प्रमुखे स्थातुं शरजालप्रपीडितः ॥ ४ ॥
स तु दुःशासनं बाणैर्विमुखीकृत्य पार्षतः।
किरञ्छरसहस्राणि द्रोणमेवाऽभ्ययाद्रणे ॥ ५ ॥
अभ्यपद्यत हार्दिक्यः कृतवर्मा त्वनन्तरम्।
सोदर्याणां त्रयश्चैव त एनं पर्यवारयन् ॥ ६ ॥
तं यमौ पृष्ठतोऽन्वैतां रक्षन्तौ पुरुषर्षभौ।
द्रोणायाऽभिमुखं यान्तं दीप्यमानमिवाऽनलम् ॥ ७ ॥
सम्प्रहारमकुर्वंस्ते सर्वे च सुमहारथाः।
अमर्षिताः सत्त्ववन्तः कृत्वा मरणमग्रतः ॥ ८ ॥
शुद्धात्मानः शुद्धवृत्ता राजन्स्वर्गपुरस्कृताः।
आर्यं युद्धमकुर्वन्त परस्परजिगीषवः ॥ ९ ॥
शुक्लाभिजनकर्माणो मतिमन्तो जनाधिप।

ने घोडे और रथके सहित दुःशासनको अपने बाणोंसे छिपा दिया। क्षण भरके बीच धृष्टद्युम्नके बाणजालसे ध्वजा सारथी और घोडों के सहित दुःशासनका रथ ऐसा परिपूरित होगया, कि उस समय तनिक भी न दीख पडा॥ अधिक क्या कहा जावे, उस समय दुःशासन धृष्टद्युम्नके बाणोंसे पीडित होकर उनके सम्मुख खडे होनेमें भी समर्थ नहीं हुए॥ (१-४)

पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न दुःशासनको पराजित करके सहस्रों बाण चलाते हुए द्रोणाचार्यकी ओर गमन करने लगे॥ उसे देख हृदीकपुत्र कृतवर्मा और दुर्योधनके तीन भाइयोंने इकट्ठे होकर धृष्टद्युम्नको घेर लिया॥ उस समय जलती हुई अग्निकी भांति धृष्टद्युम्नको द्रोणाचार्यकी ओर गमन करते देख, पराक्रमी नकुल और सहदेव धृष्टद्युम्नकी रक्षा करनेके वास्ते उनके अनुगामी हुए॥ (५-७)

महाराज! इसी भांति दोनों सेनाके सात महारथी योद्धा लोग क्रोधपूर्वक प्राणकी आशा छोडके आपसमें महाघोर संग्राम करने लगे॥ एक दूसरेको जीतनेकी इच्छा करनेवाले वे महाबलवान् महात्मा सदाचारसे युक्त पराक्रमी योद्धा लोग स्वर्ग प्राप्तिकी अभिलाषा करके न्यायपूर्वक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मयुद्धमयुध्यन्त प्रेप्सन्तो गतिमुत्तमाम् ॥ १० ॥
न तत्राऽऽसीदधर्मिष्ठमशस्तं युद्धमेव च ।
नाऽत्र कर्णी न नालीको न लिप्तो न च बस्तिकः ॥ ११ ॥
न सूची कपिशो नैव न गजास्थिर्गजास्थिजः ।
इषुरासीन्न संश्लिष्टो न पूतिर्न च जिह्मगः ॥ १२ ॥
ऋजून्येव विशुद्धानि सर्वे शस्त्राण्यधारयन् ।
सुयुद्धेन परांल्लोकानीप्सन्तः कीर्तिमेव च ॥ १३ ॥
तदासीत्तुमुलं युद्धं सर्वदोषविवर्जितम् ।
चतुर्णां तव योधानां तैस्त्रिभिः पाण्डवैः सह ॥ १४ ॥
धृष्टद्युम्नस्तु तान्दृष्ट्वा तव राजन्रथर्षभान् ।
यमाभ्यां वारितान्वीराञ्छीघ्रास्त्रो द्रोणमभ्ययात् ॥ १५ ॥
निवारितास्तु ते वीरास्तयोः पुरुषसिंहयोः ।
समसज्जन्त चत्वारो वाताः पर्वतयोरिव ॥ १६ ॥

आपसमें युद्ध करने लगे॥ वे सब उत्तम वंश में उत्पन्न हुए धर्मात्मा बुद्धिमान् और मनुष्यों के राजा थे, इससे उत्तम गति पानेकी अभिलाषासे सब कोई आपसमें धर्मयुद्ध करने लगे ॥ (८-१०)

उस स्थलमें शठतापूर्ण और शस्त्ररहित युद्ध नहीं हुआ ! अधिक क्या कहा जावे, उस समय वहांपर कर्णी, विषमें बुझाये हुए नालीकास्त्र, बस्तिकास्त्र, अनेक कांटोंसे युक्त सूची अस्त्र, बन्दरकी हड्डीसे बने हुए कपिश नामक अस्त्र, गोशृङ्ग तथा हाथीकी हड्डीके बने हुए किसी भांतिके भी दूषित अस्त्र नहीं थे; बल्कि उन सम्पूर्ण वीरोंने धर्मयुद्धमें कीर्ति और परलोक प्राप्त होनेकी अभिलाषासे शुद्ध और सरल अस्त्र शस्त्रोंको धारण किया था ॥ (११-१३)

उस समय पाण्डवोंकी ओरके तीन महारथियोंके सङ्ग तुम्हारी सेनाके चार महारथियोंका धर्मयुद्ध होने लगा ॥ अनन्तर धृष्टद्युम्नने देखा, कि केवल नकुल सहदेव ही कुरुसेनाके चार महारथियोंको निवारण कर रहे हैं; उसे देख महापराक्रमी धृष्टद्युम्न हस्तलाघवके सहित अपने बाणोंको चलाते हुए द्रोणाचार्यकी ओर गमन किया ॥ परन्तु तुम्हारी ओरके कृतवर्मा आदि चार महारथी योद्धाओंने नकुल सहदेवके संमुखसे निवारित होकर अपना अपमान समझा; अनन्तर वे लोग इस भांति वेगपूर्वक नकुल सहदेवकी ओर दौडे, जैसे प्रचण्ड वायु प्रबल वेगसे दो पर्वतोंके ऊपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वाभ्यां द्वाभ्यां यमौ सार्धं रथाभ्यां रथपुङ्गवौ ।
समासक्तौ ततो द्रोणं धृष्टद्युम्नोऽभ्यवर्तत ॥ १७ ॥
दृष्ट्वा द्रोणाय पाञ्चाल्यं व्रजन्तं युद्धदुर्मदम् ।
यमाभ्यां तांश्च संसक्तांस्तदन्तरमुपाद्रवत् ॥ १८ ॥
दुर्योधनो महाराज किरञ्छोणितभोजनान् ।
तं सात्यकिः शीघ्रतरं पुनरेवाऽभ्यवर्तत ॥ १९ ॥
तौ परस्परमासाद्य समीपे कुरुमाधवौ ।
हसमानौ नृशार्दूलावभीतौ समसज्जताम् ॥ २० ॥
बाल्यवृत्तानि सर्वाणि प्रीयमाणौ विचिन्त्य तौ ।
अन्योन्यं प्रेक्षमाणौ च स्मयमानौ पुनः पुनः ॥ २१ ॥
अथ दुर्योधनो राजा सात्यकिं समभाषत ।
प्रियं सखायं सततं गर्हयन्वृत्तमात्मनः ॥ २२ ॥
धिक् क्रोधं धिक्सखे लोभं धिङ् मोहं धिगमर्षितम् ।
धिगस्तु क्षात्रमाचारं धिगस्तु बलमौरसम् ॥ २३ ॥
यत्र मामभिसन्धत्से त्वां चाऽहं शिनिपुङ्गव ।

चलते हुए दीख पडते हैं ॥ (१४-१६)

महाराज ! नकुल सहदेव दोनों भाई क्रमसे दो दो महारथियोंके सङ्ग और धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए ॥ उस ही समय राजा दुर्योधन कृतवर्मा आदि चार महारथियोंको नकुलसहदेवके सङ्ग और धृष्टद्युम्नको द्रोणाचार्यके साथ युद्ध करते देख अपने तीक्ष्ण बाणोंको वर्षाते हुए वहांपर उपस्थित हुए ॥ दुर्योधनको धृष्टद्युम्न और नकुल सहदेवकी ओर गमन करते देख महारथी सात्यकि शीघ्रताके सहित दुर्योधनकी ओर दौडे ॥ (१७-१९)

वृष्णि और कुरुवंशीय सात्यकि और राजा दुर्योधन आपसमें एक दूसरेके समीपमें संग्रामभूमिमें संमुख उपस्थित होके निर्भयचित्तसे युद्ध करने लगे ॥ महाराज वे दोनों पुरुषसिंह बालक अवस्थाके सम्पूर्ण वृत्तान्तोंको स्मरण करके अत्यन्त ही प्रसन्न हुए और आपसमें एक दूसरेको देखकर बार बार हंसने लगे ॥ २०-२१

अनन्तर राजा दुर्योधन अपने क्षत्रियधर्मकी निन्दा करके अपने प्रिय सखा सात्यकिसे बोले ॥ हे मित्र ! क्रोध मोह लोभ और ईर्षाको धिक्कार है; और हम लोगोंके क्षत्रीय आचार तथा बल पुरुषार्थको भी धिक्कार है क्योंकि इस समय हम दोनों ही एक दूसरेके ऊपर बाण चलानेके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं हि प्राणैः प्रियतरो ममाऽहं च सदा तव ॥ २४ ॥
स्मरामि तानि सर्वाणि बाल्यवृत्तानि यानि नौ।
तानि सर्वाणि जीर्णानि साम्प्रतं नो रणाजिरे॥ २५ ॥
किमन्यत्क्रोधलोभाभ्यां युद्धमेवाऽद्य सात्वत।
तं तथावादिनं तत्र सात्यकिः प्रत्यभाषत ॥ २६ ॥
प्रहसन्निशितांस्तीक्ष्णानुद्यम्य परमास्त्रवित्।
नेयं सभा राजपुत्र नाऽऽचार्यस्य निवेशनम् ॥ २७ ॥
यत्र क्रीडितमस्माभिस्तदा राजन्समागतैः।
दुर्योधन उवाच- क्व सा क्रीडा गताऽस्माकं बाल्ये वै शिनिपुङ्गव॥ २८ ॥
क्व च युद्धमिदं भूयः कालो हि दुरतिक्रमः।
किन्तु नो विद्यते कृत्यं धनेन धनलिप्सया ॥ २९ ॥
यत्र युद्धामहे सर्वे धनलोभात्समागताः।
सञ्जय उवाच— तं तथावादिनं तत्र राजानं माधवोऽब्रवीत् ॥ ३० ॥

वास्ते उद्यत हुए हैं ॥ मैं अपने बाल्य-वृत्तान्तको स्मरण करके देखता हूं, कि उस समय हम दोनों ही एक दूसरेको प्राणसे भी बढके प्रिय थे; परन्तु इस रणभूमि-में उपस्थित होनेसे हम लोगोंके बाल्य अवस्थाकी मित्रता एकबारगी नष्ट होगई क्योंकि इस समय हम लोग आपसमें युद्ध कर रहे हैं; इसमें क्रोध और लोभसे बढके हानिकारक वस्तु और कौनसी है ? (२२-२६)

राजा दुर्योधनके वचनोंको सुनकर परम अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले सात्यकिके तीक्ष्ण शस्त्रोंको ग्रहण करके हंसते हंसते उन्हें यह उत्तर दिया; हे राजपुत्र ! पहिले हम लोग जिस स्थानमें इकठ्ठे होकर खेलते थे यह वह सभास्थान तथा आचार्यालय नहीं है। (२६-२८)

सात्यकिके वचनको सुनकर दुर्योधन बोले, हे शिनिपौत्र सात्यकि ! हम लोगोंके बाल्य अवस्थाके खेल कहां चले गये ? हा ! इस समय सम्पूर्ण शूरवीरोंको नाश करनेवाला महाघोर युद्ध होरहा है; इससे कालको अतिक्रम करना बहुत असाध्य कार्य है। देखो धनलाभकी इच्छासे हम लोगोंके निमित्त कैसा भयङ्कर कार्य उपस्थित हुआ है। धनके लोभसे ही सब कोई रणभूमिके बीच इकठ्ठे होकर युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए हैं ॥ (२८-३०)

सञ्जय बोले, महाराज ! राजा दुर्योधनने जब ऐसा कहा, तब यदुवंशीय सात्यकि उनसे यह वचन बोले, हे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं वृत्तं सदा क्षात्रं युध्यन्तीह गुरूनपि ।
यदि तेऽहं प्रियो राजञ्जहि मां मा चिरं कृथाः ॥ ३१ ॥
त्वत्कृते सुकृताँल्लोकान्गच्छेयं भरतर्षभ ।
या ते शक्तिर्बलं यच्च तत्क्षिप्रं मयि दर्शय ॥ ३२ ॥
नेच्छामि तदहं द्रष्टुं मित्राणां व्यसनं महत् ।
इत्येवं व्यक्तमाभाष्य प्रतिभाष्य च सात्यकिः ॥ ३३ ॥
अभ्ययात्तूर्णमव्यग्रो दयां नाऽकुरुताऽऽत्मनि ।
तमायान्तं महाबाहुं प्रत्यगृह्णात्तवाऽऽत्मजः ॥ ३४ ॥
शरैश्चाऽवाकिरद्राजञ्शैनेयं तनयस्तव ।
ततः प्रववृते युद्धं कुरुमाधवसिंहयोः ॥ ३५ ॥
अन्योन्यं क्रुद्धयोर्घोरं यथा द्विरदसिंहयोः ।
ततः पूर्णायतोत्सृष्टैः सात्वतं युद्धदुर्मदम् ॥ ३६ ॥
दुर्योधनः प्रत्यविध्यत्कुपितो दशभिः शरैः ।
तं सात्यकिः प्रत्यविध्यत्तथैवाऽवाकिरच्छरैः ॥ ३७ ॥
पञ्चाशता पुनश्चाऽऽजौ त्रिंशता दशभिश्च ह ।

राजेन्द्र ! क्षत्रियोंका यही आचार है क्षत्रीय पुरुष रणभूमिके बीच गुरुके ऊपर भी अस्त्रशस्त्रोंसे प्रहार किया करते हैं॥ हे भरतश्रेष्ठ ! यदि मैं तुम्हारा प्रिय मित्र हूं, तो तुम शीघ्र ही मेरा वध करो, ऐसा होनेसे मैं तुम्हारे हाथसे मरकर स्वर्ग लोकमें गमन करूंगा। हे दुर्योधन ! अधिक क्या कहूं तुम्हारी जहांतक शक्ति और बल है तुम शीघ्र ही मुझे अपना सम्पूर्ण पराक्रम दिखाओ; मैं अब मित्रोंके इस बहुत बडे व्यसनको नहीं देख सकता हूं। (३०–३२)

सात्यकि राजा दुर्योधनसे ऐसा वचन कहके निष्ठुर और निर्भयचित्तसे दुर्योधनकी ओर दौडे। महाबाहु शिनिपौत्र सात्यकिको अपनी ओर वेगपूर्वक आते देख तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधन अनगिनत बाणोंको चलाकर उन्हें निवारण करने लगे। महाराज ! कौरव और यदुवंशकी कीर्त्तिको बढानेवाले वे दोनों पुरुषसिंह क्रोधी सिंह तथा मतवारे हाथीकी भांति महाघोर संग्राम करने लगे। (३३–३५)

अनन्तर राजा दुर्योधनने क्रुद्ध होकर कान पर्यन्त धनुष खींचकर दश चोखे बाणोंसे युद्ध दुर्मद सात्यकिको विद्ध किया। इसी भांति सात्यकिने भी पहिले पचास उसके अनन्तर तीस और पीछे दस बाणोंसे कुरुराज दुर्योधनको विद्ध करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात्यकिं तु रणे राजन्प्रहसंस्तनयस्तव ॥ ३८ ॥
आकर्णपूर्णैर्निशितैर्विव्याध त्रिंशता शरैः ।
ततोऽस्य सशरं चापं क्षुरप्रेण द्विधाऽच्छिनत् ॥ ३९ ॥
सोऽन्यत्कार्मुकमादाय लघुहस्तस्ततो दृढम् ।
सात्यकिर्व्यसृजच्चापि शरश्रेणीं सुतस्य ते ॥ ४० ॥
तामापतन्तीं सहसा शरश्रेणीं जिघांसया ।
चिच्छेद बहुधा राजा तत उच्चुक्रुशुर्जनाः ॥ ४१ ॥
सात्यकिं च त्रिसप्तत्या पीडयामास वेगितः ।
स्वर्णपुङ्खैः शिलाधौतैराकर्णापूर्णनिःसृतैः ॥ ४२ ॥
तस्य सन्दधतश्चेषुं संहितेषु च कार्मुकम् ।
आच्छिनत्सात्यकिस्तूर्णं शरैश्चैवाऽप्यवीविधत् ॥ ४३ ॥
स गाढविद्धो व्यथितः प्रत्यपायाद्रथान्तरे ।
दुर्योधनो महाराज दाशार्हशरपीडितः ॥ ४४ ॥
समाश्वस्य तु पुत्रस्ते सात्यकिं पुनरभ्ययात् ।

फिर अनगिनत बाणोंसे उन्हें छिपा दिया । सात्यकिके पराक्रमको देखकर तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधनने तीस चोखे बाणोंसे सात्यकिको विद्ध करके एक क्षुरप्र अस्त्र से बाण के सहित उन के धनुष को दो टुकडे कर के पृथ्वी में गिराया ॥ (३५–३९)

अनन्तर शिनिपौत्र सात्यकिभी हस्त-लाघवके सहित एक दृढ धनुष ग्रहण कर के तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके ऊपर अनगिनत बाण चलाने लगे ॥ सात्यकिके धनुषसे छूटे हुए उन तेज बाणोंको अपनी ओर आते देख राजा दुर्योधनने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे टुकडे टुकडे करके पृथ्वीमें गिरा दिया; दुर्योधनके ऐसे कठिन कर्मको देखकर सेनाके सम्पूर्ण योद्धा सिंहनाद करने लगे ॥ इसी समय दुर्योधनने कान पर्यन्त धनुष खींचके शिलापर घिसे हुए स्वर्णपंखवाले तिहत्तर बाणोंको चला कर सात्यकिको पीडित किया और फिर धनुष पर बाण रखके सात्यकिकी ओर चलानेका विचार किया; उस समय बाण साधनेके समयमें ही पराक्रमी सात्यकिने शीघ्रता पूर्वक बाणके सहित उनके धनुषको काटके फिर उन्हें अनेक बाणोंसे विद्ध किया ॥ (४०–४३)

कुरुराज दुर्योधन सात्यकिके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध और पीडित होकर उसके सम्मुखसे रथ लोटा कर वहांसे पृथक् होगये ॥ तिसके अनन्तर थोडी देरके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विसृजन्निषुजालानि युयुधानरथं प्रति ॥ ४५ ॥
तथैव सात्यकिर्बाणान्दुर्योधनरथं प्रति ।
सततं विसृजन्राजंस्तत्संकुलमवर्तत ॥ ४६ ॥
तत्रेषुभिः क्षिप्यमाणैः पतद्भिश्च शरीरिषु ।
अग्नेरिव महाकक्षैः शब्दः समभवन्महान् ॥ ४७ ॥
तयोः शरसहस्रैश्च सञ्छन्नं वसुधातलम् ।
अगम्यरूपं च शरैराकाशं समपद्यत ॥ ४८ ॥
तत्राऽप्यधिकमालक्ष्य माधवं रथसत्तमम् ।
क्षिप्रमभ्यपतत्कर्णः परीप्संस्तनयं तव ॥ ४९ ॥
न तु तं मर्षयामास भीमसेनो महाबलः ।
सोऽभ्ययात्त्वरितः कर्णं विसृजन्सायकान्बहून ॥५० ॥
तस्य कर्णः शितान्बाणान्प्रतिहन्य हसन्निव ।
धनुः शरांश्च चिच्छेद सूतं चाऽभ्याहनच्छरैः ॥ ५१ ॥

बाद राजा दुर्योधन फिर अपने बाणोंको वर्षाते हुए सात्यकिकी ओर गमन करने लगे ॥ दुर्योधनको अपनी ओर आते देख सात्यकि लगातार उनके रथके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे; उससे दुर्योधनका रथ सात्यकिके बाणोंसे परिपूरित होगया ॥ (४४-४६)

उस समय उन दोनों पुरुषसिंहोंके धनुषसे छूटे हुए सम्पूर्ण बाण सेनाके पुरुषोंके ऊपर पडने लगे, उस समय जलती हुई अग्निके शब्दकी भांति बाणोंके गिरनेका शब्द सुनाई देने लगा ॥ अधिक क्या कहा जावे उस समय उन दोनों पराक्रमी वीरोंके सहस्रों बाणोंके इधर उधर गिरनेसे वह रणभूमि बाणोंसे परिपूरित होगई और आकाशमण्डल भी उन दोनों पुरुषोंके बाणजालसे इस भांति परिपूर्ण होगया, कि उस समय आकाशचारी प्राणी आकाशमार्गसे गमन करने में समर्थ नहीं हुए ॥ (४७-४८)

अनन्तर रथियोंमें मुख्य यदुवंशीय सात्यकिको अधिक पराक्रम प्रकाशित करते देखकर कर्ण तुम्हारे पुत्रके जीवनरक्षाकी अभिलाषासे वहां पर शीघ्रताके सहित उपस्थित हुए, परन्तु महाबलवान् भीमसेन सात्यकिकी रक्षा करनेके वास्ते अनेक बाणोंको चलाते हुए शीघ्रताके सहित कर्णकी ओर दौडे ॥ (४९-५०)

कर्णने हंसते हंसते भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए बाणोंको अपने बाणोंसे निवारण करके बाणके सहित उनका धनुष काट दिया, फिर कर्ण भीमसेनके सारथी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमसेनस्तु संक्रुद्धो गदामादाय पाण्डवः ।
ध्वजं धनुश्च सूतं च सम्ममर्दाऽऽहवे रिपोः ॥ ५२ ॥
रथचक्रं च कर्णस्य बभञ्ज स महाबलः ।
भग्नचक्रं रथे तिष्ठदकम्पः शैलराडिव ॥ ५३ ॥
एकचक्रं रथं तस्य तमूहुः सुचिरं हयाः ।
एकचक्रमिवार्कस्य रथं सप्तहया यथा ॥ ५४ ॥
अमृष्यमाणः कर्णस्तु भीमसेनमयुध्यत ।
विविधैरिषुजालैश्च नानाशस्त्रैश्च संयुगे ॥ ५५ ॥
भीमसेनस्तु संक्रुद्धः सूतपुत्रमयोधयत ।
तस्मिंस्तथा वर्तमाने क्रुद्धो धर्मसुतोऽब्रवीत् ॥ ५६ ॥
पञ्चालानां नरव्याघ्रान्मत्स्यांश्च पुरुषर्षभान् ।
ये नः प्राणाः शिरो ये च ये नो योधा महारथाः ॥५७॥
त एते धार्तराष्ट्रेषु विषक्ताः पुरुषर्षभाः ।
किं तिष्ठत यथा मूढाः सर्वे विगतचेतसः ॥ ५८ ॥

के ऊपर अपने बाणोंसे प्रहार करने लगे ॥ तब भीमसेनने क्रुद्ध होकर गदा ग्रहण करके राधापुत्र कर्णके ध्वजा धनुष सारथीको विनष्ट करके उनके रथके चक्रको एक गदाके प्रहारसे भङ्ग कर दिया । (५१-५३)

कर्ण दूसरे शैलराजकी भांति उस एक चक्र टूटे हुए रथही पर स्थित रहे । महाराज ! उस समय कर्णके रथके घोडे उनके एक चक्र रहित रथहीको खींचते हुए युद्धभूमिमें भ्रमण करने लगे; उस समय सात घोडोंसे युक्त सूर्यके एक चक्रवाले रथकी भांति कर्णका रथ दीख पडता था ॥ रथ चक्र भङ्ग होनेसे सूतपुत्र कर्ण अत्यन्त क्रुद्ध होकर अनेक भांतिके अस्त्रशस्त्रोंको चलाते हुए भीमसेनके सङ्ग युद्ध करने लगे । क्रुद्ध स्वभाववाले भीमसेन भी उसी भांति कर्णके सङ्ग युद्ध करने लगे । (५३-५६)

जब इस भांतिसे महाघोर युद्ध आरंभ हुआ, तब पुरुषश्रेष्ठ धर्मराज युधिष्ठिर मत्स्य और पाञ्चाल देशीय योद्धाओंसे यह वचन बोले, हे शूरवीर पुरुषो ! जो सब पुरुष श्रेष्ठ महारथी योद्धा हम लोगोंके प्राण और मस्तक स्वरूप हैं, वे सब कोई कौरवोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए हैं । अब तुम लोग मोहित होकर किस वास्ते युद्धभूमिमें जड वस्तुकी भांति स्थित हो ! जिस स्थान पर मेरी ओरके महारथी योद्धा लोग कौरवोंके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्र गच्छत यत्रैते युध्यन्ते मामका रथाः ।
क्षत्रधर्मं पुरस्कृत्य सर्व एव गतज्वराः ॥ ५९ ॥
जयन्तो वध्यमानाश्च गतिमिष्टां गमिष्यथ ।
जित्वा वा बहुभिर्यज्ञैर्यजध्वं भूरिदक्षिणैः ॥ ६० ॥
हता वा देवसाद्भूत्वा लोकान्प्राप्स्यथ पुष्कलान् ।
ते राज्ञा चोदिता वीरा योत्स्यमाना महारथाः ॥ ६१ ॥
क्षात्रधर्मं पुरस्कृत्य त्वरिता द्रोणमभ्ययुः ।
पाञ्चालास्त्वेकतो द्रोणमभ्यघ्नन्निशितैः शरैः ॥ ६२ ॥
भीमसेनपुरोगाश्चाऽप्येकतः पर्यवारयन् ।
आसंस्तु पाण्डुपुत्राणां त्रयो जिह्मा महारथाः ॥ ६३ ॥
यमौ च भीमसेनश्च प्राक्रोशंस्ते धनञ्जयम् ।
अभिद्रवाऽर्जुन क्षिप्रं कुरून्द्रोणादपानुद ॥ ६४ ॥
तत एनं हनिष्यन्ति पञ्चाला हतरक्षिणम् ।

संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हैं तुम लोग शीघ्रताके सहित उस ही स्थान पर गमन करो। (५६—५९)

तुम लोग क्षत्रीय धर्मके अनुसार निर्भयचित्तसे युद्ध करके युद्धभूमिके बीच मारे जाओगे तौ भी जययुक्त होकर अपनी इच्छाके अनुसार श्रेष्ठ गति पाओगे। इससे यदि हो सके तो तुम लोग युद्धभूमिमें शत्रुओंको पराजित करके बहुतसी दक्षिणासे युक्त यज्ञोंको पूर्ण करते हुए जीवनका समय व्यतीत करो; अथवा शत्रुओंके हाथ से मरके दिव्य शरीर धारण कर पवित्र लोक में गमन करो। (५९-६१)

महाराज ! उन सम्पूर्ण महारथी योद्धाओंने राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा सुनके क्षत्रीय धर्म अवलम्बन करके युद्ध करनेके वास्ते शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्यके समीप गमन किया। इसी समय पाञ्चाल योद्धा लोग दो हिस्सोंमें विभक्त होकर भीमसेनको अगाडी करके एक ओरसे द्रोणाचार्यको निवारण और दूसरी ओरसे उनके सङ्ग युद्ध करने लगे। (६१-६३)

अनन्तर पाण्डवोंकी ओरसे नकुल सहदेव और भीमसेन, ये तीनों महारथी कौटिल्य व्यवहार अवलम्बन करके ऊंचे स्वरसे अर्जुनको आवाहन करने लगे, हे अर्जुन ! हे अर्जुन ! शीघ्रही यहांपर आके द्रोणाचार्यके समीपसे कौरवोंको पृथक् करो; क्योंकि जब द्रोणाचार्य अरक्षित होंगे, तो पाञ्चाल योद्धा लोग अनायास ही उनका वध कर सकेंगे। (६३-६५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौरवेयांस्ततः पार्थः सहसा समुपाद्रवत् ॥ ६५ ॥
पञ्चालानेव तु द्रोणो धृष्टद्युम्नपुरोगमान् ।
ममर्दुस्तरसा वीराः पञ्चमेऽहनि भारत ॥ ६६ ॥ [८६९४]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि संकुलयुद्धे ऊननवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८९ ॥

सञ्जय उवाच— पाञ्चालानां ततो द्रोणोऽप्यकरोत्कदनं महत् ।
यथा क्रुद्धो रणे शक्रो दानवानां क्षयं पुरा ॥ १ ॥
द्रोणास्त्रेण महाराज वध्यमानाः परे युधि ।
नाऽत्रसन्त रणे द्रोणात्सत्त्ववन्तो महारथाः ॥ २ ॥
युध्यमाना महाराज पाञ्चालाः सृञ्जयास्तथा ।
द्रोणमेवाऽभ्ययुर्युद्धे योधयन्तो महारथाः ॥ ३ ॥
तेषां तु च्छाद्यमानानां पाञ्चालानां समन्ततः ।
अभवद्भैरवो नादो वध्यतां शरवृष्टिभिः ॥ ४ ॥
वध्यमानेषु संग्रामे पञ्चालेषु महात्मना ।
उदीर्यमाणे द्रोणास्त्रे पाण्डवान्भयमाविशत् ॥ ५ ॥

उन लोगोंके वचनको सुनकर अर्जुन कौरवोंकी ओर दौडे; और द्रोणाचार्य भी धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते उनकी ओर दौडे ॥ उस पांचवें दिनके युद्धमें योद्धा लोग एक दूसरेको शीघ्रताके सहित मर्दन करने लगे ॥ (६५–६६) [८६९४]

द्रोणपर्वमें एकसौ नवासी अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ नव्वे अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! जैसे पहिले समयमें देवराज इन्द्रने क्रुद्ध होकर दानवोंका नाश किया था, वैसे ही पराक्रमी द्रोणाचार्य लगातार पाञ्चाल योद्धाओंका वध करने लगे; परन्तु पराक्रमी महारथी पाञ्चाल योद्धा लोग द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित होकर भी भयभीत नहीं हुए । अनन्तर पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग इकठे होकर तुम्हारी ओरके सम्पूर्ण रथियोंको मोहित करके द्रोणाचार्यकी ओर दौडे ॥ द्रोणाचार्यकी बाणवर्षासे पाञ्चाल योद्धा लगातार मरने लगे, तब उस समय भयङ्कर कोलाहल होने लगा ॥ (१—४)

इसी भांति जब पाञ्चाल योद्धा महात्मा द्रोणाचार्यके अस्त्रोंसे पीडित तथा व्याकुल होके इधर उधर दौडने लगे; उस समय पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भयभीत होगये । उस समय रथ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्ट्वाऽश्वनरयोधानां विपुलं च क्षयं युधि ।
पाण्डवेया महाराज नाऽऽशंसुर्जयं तदा ॥ ६ ॥
कश्चिद् द्रोणो न नः सर्वान्क्षपयेत्परमास्त्रवित् ।
समिद्धः शिशिरापाये दहन्कक्षमिवाऽनलः ॥ ७ ॥
न चैनं संयुगे कश्चित्समर्थः प्रतिवीक्षितुम् ।
न चैनमर्जुनो जातु प्रतियुध्येत धर्मवित् ॥ ८ ॥
त्रस्तान्कुन्तीसुतान्दृष्ट्वा द्रोणसायकपीडितान् ।
मतिमाञ्श्रेयसे युक्तः केशवोऽर्जुनमब्रवीत् ॥ ९ ॥
नैष युद्धेन संग्रामे जेतुं शक्यः कथञ्चन ।
सधनुर्धन्विनां श्रेष्ठो देवैरपि सवासवैः ॥ १० ॥
न्यस्तशस्त्रस्तु संग्रामे शक्यो हन्तुं भवेन्नृभिः ।
आस्थीयतां जये योगो धर्ममुत्सृज्य पाण्डवाः ॥११॥
यथा नः संयुगे सर्वान्न हन्याद्रुक्मवाहनः ।
अश्वत्थाम्नि हते नैष युध्येदिति मतिर्मम ॥ १२ ॥

हाथी घोडे आदि पाण्डवोंकी चतुरङ्गिणी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग अपनी ओरके योद्धाओंको द्रोणाचार्यके अस्त्रोंसे मरते देख इकबारगी विजयकी आशासे निराश होगये; और मन ही मन चिन्ता करने लगे, कि जैसे ग्रीष्म ऋतुमें जलती हुई अग्नि तृण समूहको भस्म कर देती है वैसे ही परम अस्त्रोंके जाननेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य आज हम सब लोगोंका नाश कर देंगे। इस समय कोई पुरुष उनकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं है और धर्मात्मा अर्जुन कदापि द्रोणाचार्यके सङ्ग युद्ध नहीं करेंगे ॥ (५—८)

उस समय पाण्डवोंके हितकी अभिलाषा करनेवाले बुद्धिमान् श्रीकृष्णचन्द्र कुन्तीपुत्रोंको द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित और भयभीत देखकर अर्जुनसे यह वचन बोले ॥ हे पाण्डवश्रेष्ठ! यदि धनुर्द्धारियोंमें अग्रणी द्रोणाचार्य हाथमें धनुष ग्रहण करके युद्धभूमिके बीच स्थित रहें तो इन्द्रादि देवताभी उन्हें पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं, परन्तु अस्त्र रहित होने पर सामान्य मनुष्य भी उन का वध कर सकेगा। इस वास्ते इस समय धर्म युद्ध त्याग कर जिस भांति लालवर्णके घोडोंसे युक्त रथमें स्थित द्रोणाचार्य तुम सब लोगोंका नाश न कर सकें, वैसाही उपाय अवलम्बन करो। मुझे निश्चय होता है, कि अश्वत्थामाका मरना सुनके द्रोणाचार्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं हतं संयुगे कश्चिदस्मै शंसतु मानवः।
एतन्नाऽरोचयद्राजन्कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ॥ १३ ॥
अन्ये त्वरोचयन्सर्वे कृच्छ्रेण तु युधिष्ठिरः।
ततो भीमो महाबाहुरनीके स्वे महागजम् ॥ १४ ॥
जघान गदया राजन्नश्वत्थामानमित्युत।
परप्रमथनं घोरं मालवस्येन्द्रवर्मणः ॥ १५ ॥
भीमसेनस्तु सव्रीडमुपेत्य द्रोणमाहवे।
अश्वत्थामा हत इति शब्दमुच्चैश्चकार ह ॥ १६ ॥
अश्वत्थामेति हि गजः ख्यातो नाम्ना हतोऽभवत्।
कृत्वा मनसि तं भीमो मिथ्या व्याहृतवांस्तदा ॥१७॥
भीमसेनवचः श्रुत्वा द्रोणस्तत्परमाप्रियम्।
मनसा सन्नगात्रोऽभूद्यथा सैकतमम्भसि ॥ १८ ॥
शङ्कमानः स तन्मिथ्या वीर्यज्ञः स्वसुतस्य वै।
हतः स इति च श्रुत्वा नैव धैर्यादकम्पत ॥ १९ ॥

युद्ध करनेमें समर्थ न होंगे; इससे कोई पुरुष उनके समीप जाकर अश्वत्थामाके मरनेका वृत्तान्त उन्हें सुनावे। ९–१३

जब श्रीकृष्णने ऐसा वचन कहा, तब अर्जुनने किसी प्रकार उनके वचनोंको स्वीकार नहीं किया; परन्तु दूसरे सम्पूर्ण योद्धा लोग और राजा युधिष्ठिरने भी अत्यन्त कष्ट से श्रीकृष्ण के वचन को स्वीकार किया। इस ही समय भीमसेन तुम्हारी सेनाके बीच प्रवेश करके मालवदेशीय राजा इन्द्रवर्माके अश्वत्थामा नामक हाथीको गदाके प्रहारसे मारकर लज्जासे सिर नीचा करके द्रोणाचार्यके समीप जाकर अश्वत्थामा मारे गये; ऐसा वचन कहके ऊंचे स्वरसे सिंहनाद करने लगे॥ भीमसेन ऐसा वचन कहने के समय अश्वत्थामा नामक हाथी मारा गया, इस वचनको अपने मनहीमें कहके प्रकट रूपसे 'अश्वत्थामा मारे गये' यह मिथ्या वचन कहने लगे॥ (१३–१७)

महाराज! द्रोणाचार्य भीमसेनके उस कठोर तथा अप्रिय वचनको सुनके जलयुक्त वालुकामय भूमि की भांति अपने मनही मन शोकित होके मूर्च्छित हुए, परन्तु द्रोणाचार्य अपने पुत्रके बल पराक्रमको जानते थे इस ही कारण अपने मनमें तर्क वितर्क करके अश्वत्थामाके मरनेका संवाद सुनके भी धैर्यरहित नहीं हुए। क्षण भरके बीच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स लब्ध्वा चेतनां द्रोणः क्षणेनैव समाश्वसत्।
अनुचिन्त्याऽऽत्मनः पुत्रमविषह्यमरातिभिः ॥ २० ॥
स पार्षतमभिद्रुत्य जिघांसुर्मृत्युमात्मनः।
अवाकिरत्सहस्रेण तीक्ष्णानां कङ्कपत्रिणाम् ॥ २१ ॥
तं विंशतिसहस्राणि पाञ्चालानां नरर्षभाः।
तथा चरन्तं संग्रामे सर्वतोऽवाकिरञ्छरैः ॥ २२ ॥
शरैस्तैराचितं द्रोणं नाऽपश्याम महारथम्।
भास्करं जलदै रुद्धं वर्षास्विव विशाम्पते ॥ २३ ॥
विधूय तान्बाणगणान्पाञ्चालानां महारथः।
प्रादुश्चके ततो द्रोणो ब्राह्ममस्त्रं परन्तपः ॥ २४ ॥
वधाय तेषां शूराणां पाञ्चालानाममर्षितः।
ततो व्यरोचत द्रोणो विनिघ्नन्सर्वसैनिकान् ॥ २५ ॥
शिरांस्यपातयच्चापि पाञ्चालानां महाम्रधे।
तथैव परिघाकारान्बाहून्कनकभूषणान् ॥ २६ ॥
ते वध्यमानाः समरे भारद्वाजेन पार्थिवाः।

द्रोणाचार्य सावधान होकर अपने पुत्रके पराक्रमको शत्रुओंसे असह्य समझकर धनुष बाण ग्रहण करके युद्धभूमिमें स्थित, और अपनी मृत्युस्वरूप पृषत-पुत्र धृष्टद्युम्नके संमुख जाकर उनके वधकी अभिलाषासे कङ्कपत्रयुक्त सहस्रों बाणों को उन की ओर चलाने लगे ॥ (१८—२१)

जब द्रोणाचार्य इस प्रकार रणभूमिके बीच भ्रमण करने लगे, तब उस समय बीस हजार पाञ्चाल योद्धाओंने अपने बाणोंकी वर्षासे उन्हें छिपा दिया ॥ महारथी द्रोणाचार्य उन सम्पूर्ण योद्धाओंके बाणजालसे इस प्रकार छिप गये, जैसे सूर्य वर्षा कालमें बादलोंके समूहमें छिप जाते हैं, उस समय हम लोग द्रोणाचार्यको न देख सके ॥ (२२-२३)

अनन्तर शत्रुनाशन महारथी द्रोणाचार्यने क्रुद्ध होकर उन योद्धाओंके चलाये हुए बाणोंके समूहको निवारण करके उन पाञ्चाल योद्धाओंके नाश करनेकी इच्छासे भयङ्कर ब्राह्म अस्त्र प्रकट किया॥ उस महाघोर संग्रामके समयमें सब सैनिकोंको मारते हुए द्रोणाचार्य शोभा युक्त दीखने लगे ॥ उस समय द्रोणाचार्य पाञ्चाल योद्धाओंके सुवर्णवर्म युक्त परिघ समान भुजा और उनके शिर काट काटके पृथ्वीमें गिराने लगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेदिन्यामन्वकीर्यन्त वातनुन्ना इव द्रुमाः ॥ २७ ॥
कुञ्जराणां च पततां हयौघानां च भारत ।
अगम्यरूपा पृथिवी मांसशोणितकर्दमा ॥ २८ ॥
हत्वा विंशतिसाहस्रान्पाञ्चालानां रथव्रजान् ।
अतिष्ठदाहवे द्रोणो विधूमोऽग्निरिव ज्वलन् ॥ २९ ॥
तथैव च पुनः क्रुद्धो भारद्वाजः प्रतापवान् ।
वसुदानस्य भल्लेन शिरः कायादपाहरत् ॥ ३० ॥
पुनः पञ्चशतान्मत्स्यान्षट्सहस्रांश्च सृञ्जयान् ।
हस्तिनामयुतं हत्वा जघानाऽश्वायुतं पुनः ॥ ३१ ॥
क्षत्रियाणामभावाय दृष्ट्वा द्रोणमवस्थितम् ।
ऋषयोऽभ्यागतास्तूर्णं हव्यवाहपुरोगमाः ॥ ३२ ॥
विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः ।
वसिष्ठः कश्यपोऽत्रिश्च ब्रह्मलोकं निनीषवः ॥ ३३ ॥
सिकताः पृश्नयो गर्गा वालखिल्या मरीचिपाः ।
भृगवोऽङ्गिरसश्चैव सूक्ष्माश्चाऽन्ये महर्षयः ॥ ३४ ॥

क्षत्रीय योद्धालोग द्रोणाचार्यके अस्त्रोंके प्रहारसे लगातार प्राणरहित होकर पृथ्वीमें गिरने लगे । जैसे प्रचण्ड वायुके प्रबल वेगसे वृक्ष टूट टूटके पृथ्वीमें गिर पडते हैं, इसी भांति मरे हुए हाथी घोडे और मनुष्योंके शरीरसे वह रणभूमि परिपूर्ण होके रुधिर और मांससे कीचडमयी होकर अत्यन्त ही भयङ्कर बोध होने लगी ॥ (२४-२८)

इसी भांति भरद्वाज पुत्र प्रतापी द्रोणाचार्य क्षणभरके बीच पाञ्चाल देशीय बीस हजार रथी योद्धाओंका वध करके धूएंसे रहित जलती हुई अग्निकी भांति युद्धभूमिमें स्थित हुए ॥ तिसके अनन्तर उन्होंने क्रुद्ध होकर भल्लास्त्रसे वसुदानका सिर काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ और पांच सौ मत्स्यदेशीय योद्धा, छः हजार सृञ्जय, दस हजार हाथी और दश हजार घुडसवारोंको प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिरा दिया । (२९-३१)

महाराज ! उस समय ऋषिलोग द्रोणाचार्यको क्षत्रियोंके नाश करनेमें प्रवृत्त देखकर भगवान् अग्निको आगे करके शीघ्रताके सहित द्रोणाचार्यके निकट उपस्थित हुए । विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि, सिकत, पृश्नि, गर्ग, वालखिल्य, मरीचिप, भृगु, और अङ्गिरा गोत्रीय तथा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त एनमब्रुवन्सर्वे द्रोणमाहवशोभिनम् ।
अधर्मतः कृतं युद्धं समयो निधनस्य ते ॥ ३५ ॥
न्यस्याऽऽयुधं रणे द्रोण समीक्षाऽस्मानवस्थितान् ।
नाऽतः क्रूरतरं कर्म पुनः कर्तुमिहाऽर्हसि ॥ ३६ ॥
वेदवेदाङ्गविदुषः सत्यधर्मरतस्य ते ।
ब्राह्मणस्य विशेषेण तवैतन्नोपपद्यते ॥ ३७ ॥
त्यजाऽऽयुधममोघेषो तिष्ठ वर्त्मनि शाश्वते ।
परिपूर्णश्च कालस्ते वस्तुं लोकेऽद्य मानुषे ॥ ३८ ॥
ब्रह्मास्त्रेण त्वया दग्धा अनस्त्रज्ञा नरा भुवि ।
यदेतदीदृशं विप्र कृतं कर्म न साधु तत् ॥ ३९ ॥
न्यस्याऽऽयुधं रणे विप्र द्रोण मा त्वं चिरं कृथाः ।
मा पापिष्ठतरं कर्म करिष्यसि पुनर्द्विज ॥ ४० ॥
इति तेषां वचः श्रुत्वा भीमसेनवचश्च तत् ।
धृष्टद्युम्नं च सम्प्रेक्ष्य रणे स विमनाऽभवत् ॥ ४१ ॥
सन्दिह्यमानो व्यथितः कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ।
अहतं वा हतं वेति पप्रच्छ सुतमात्मनः ॥ ४२ ॥

सूक्ष्म शरीर धारण करनेवाले महर्षि लोग द्रोणाचार्यको ब्रह्मलोकमें ले चलनेकी इच्छासे यह वचन बोले। हे द्रोण! तुम अधर्म युद्ध कर रहे हो, अब तुम्हारा मरणकाल उपस्थित हुआ है, इस समय अस्त्रशस्त्र परित्याग करके हम लोगोंकी ओर देखो; इसके अनन्तर इस क्रूरकर्ममें प्रवृत्त न होना ॥ (३२-३६)

तुम वेद वेदाङ्गके जाननेवाले विशेष करके सत्यधर्ममें रत ब्राह्मण हो; इससे यह युद्धका क्रूर कर्म तुम्हारे करने योग्य नहीं है ॥ हे अमोघास्त्र! तुम्हारा मनुष्य लोकमें निवास करनेका समय पूर्ण होगया, इससे अस्त्र त्यागके सत्यपथमें स्थित होजाओ ॥ हे विप्र! तुम जो अस्त्र विद्या न जाननेवाले मनुष्योंको ब्रह्मास्त्रसे भस्म कर रहे हो; वह तुम उत्तम कार्य नहीं करते हो ॥ इस लिये तुम शीघ्र अस्त्रोंको परित्याग करो, अब ऐसे पापयुक्त कार्य को करनेमें प्रवृत्त न होना॥ (३७-४०)

महाराज! द्रोणाचार्यने ऋषियोंके उपदेश और भीमसेनके पूर्वोक्त वचनोंको सुनके विशेष करके धृष्टद्युम्नको सम्मुख स्थित देख, युद्धसे अपना मन हटा लिया ॥ इस ही समय द्रोणाचार्यने शोकरूपी अग्निसे भस्म तथा कातर होके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिरा बुद्धिर्हि द्रोणस्य न पार्थो वक्ष्यतेऽनृतम् ।
त्रयाणामपि लोकानामैश्वर्यार्थे कथञ्चन ॥ ४३ ॥
तस्मात्तं परिपप्रच्छ नाऽन्यं कञ्चिद् द्विजर्षभः ।
तस्मिंस्तस्य हि सत्याशा बाल्यात्प्रभृति पाण्डवे ॥४४॥
ततो निष्पाण्डवामुर्वीं करिष्यन्तं युधाम्पतिम् ।
द्रोणं ज्ञात्वा धर्मराजं गोविन्दो व्यथितोऽब्रवीत् ॥४५॥
यद्यर्धदिवसं द्रोणो युध्यते मन्युमास्थितः ।
सत्यं ब्रवीमि ते सेना विनाशं समुपैष्यति ॥ ४६ ॥
स भवांस्त्रातु नो द्रोणात्सत्याज्ज्यायोऽनृतं वचः ।
अनृतं जीवितस्याऽर्थे वदन्न स्पृश्यतेऽनृतैः ॥ ४७ ॥
तयोः संवदतोरेवं भीमसेनोऽब्रवीदिदम् ॥ ४८ ॥
श्रुत्वैवं तु महाराज वधोपायं महात्मनः ।
गाहमानस्य ते सेनां मालवस्येन्द्रवर्मणः ॥ ४९ ॥

कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरको पुकारके उनसे पूछा, कि "हे युधिष्ठिर ! मेरा पुत्र अश्वत्थामा जीवित है, या मारा गया ?" ब्राह्मण श्रेष्ठ द्रोणाचार्यको यह निश्चय था, कि "युधिष्ठिर तीनों लोकके ऐश्वर्य मिलनेके वास्ते भी कदापि मिथ्या वचन नहीं कहेंगे ॥ क्योंकि द्रोणाचार्य बालक अवस्थासे ही युधिष्ठिरको सत्यवादी समझते थे; इस ही कारण और किसीके वचनका विश्वास न करके उन्होंने राजा युधिष्ठिरसे ही अश्वत्थामाके विषयमें प्रश्न किया । (४१-४४)

उस ही समय श्रीकृष्ण योद्धाओंमें अग्रणी द्रोणाचार्यको, 'ये यदि थोडे समय तक और जीवित रहेंगे, तो पृथ्वीको पाण्डवोंसे सूनी कर देंगे,' ऐसा विचारके कातरताके सहित युधिष्ठिरसे यह वचन बोले, महाराज ! मैं तुमसे सत्य वचन कहता हूं, कि यदि द्रोणाचार्य क्रुद्ध होकर अर्ध दिवस और युद्ध करेंगे; तौ तुम्हारी सम्पूर्ण सेनाके योद्धाओंका नाश कर देंगे ॥ इससे द्रोणाचार्यसे अपना परित्राण करनेके वास्ते तुम्हें सत्यकी अपेक्षा मिथ्या वचन बोलना कल्याणकारी है; प्राण रक्षा के वास्ते मिथ्या वचन बोलनेसे पाप नहीं लगता ॥ ४५-४७

महात्मा द्रोणाचार्यके विषयमें श्रीकृष्ण और राजा युधिष्ठिर इसी भांतिसे वार्त्तालाप कर रहे थे; उस ही समय उनके वचनोंको सुनकर भीमसेन राजा युधिष्ठिरसे बोले, महाराज ! मैंने महात्मा द्रोणाचार्यके वधका उपाय सुनकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वत्थामेति विख्यातो गजः शक्रगजोपमः ।
निहतो युधि विक्रम्य ततोऽहं द्रोणमब्रुवम् ॥ ५० ॥
अश्वत्थामा हतो ब्रह्मन्निवर्तस्वाऽऽहवादिति ।
नूनं नाऽश्रद्दधद्वाक्यमेष मे पुरुषर्षभः ॥ ५१ ॥
स त्वं गोविन्दवाक्यानि मानयस्व जयैषिणः ।
द्रोणाय निहतं शंस राजञ्शारद्वतीसुतम् ॥ ५२ ॥
त्वयोक्तो नैव युध्येत जातु राजन्द्विजर्षभः ।
सत्यवान्हि त्रिलोकेऽस्मिन्भवान्ख्यातो जनाधिप॥५३॥
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कृष्णवाक्यप्रचोदितः ।
भावित्वाच्च महाराज वक्तुं समुपचक्रमे ॥ ५४ ॥
तमतथ्यभये मग्नो जये सक्तो युधिष्ठिरः ।
अव्यक्तमब्रवीद्राजन्हतः कुञ्जर इत्युत ॥ ५५ ॥
तस्य पूर्वं रथः पृथ्व्याश्चतुरंगुलमुच्छ्रितः ।
बभूवैवं च तेनोक्ते तस्य वाहाः स्पृशन्महीम् ॥ ५६ ॥

तेरी सेनाके बीच प्रविष्ट हुए मालव देशीय इन्द्रवर्मा राजाके ऐरावत हाथीके समान विख्यात अश्वत्थामा नामक हाथीका वध करके, द्रोणाचार्यके समीप गमन करके उनसे यह वचन कहा था, कि "हे ब्राह्मण ! अश्वत्थामा मारे गये इससे अब आप युद्धसे निवृत्त होइये" ॥ (४८-५१)

परन्तु ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्यने मेरे वचनका विश्वास नहीं किया। इससे आप हम लोगोंके विजयकी इच्छा करनेवाले श्रीकृष्णके वचनको मानके द्रोणाचार्यके समीप "अश्वत्थामा मारे गये" ऐसा वचन प्रकाश रूपसे कहिये; जब आप ऐसा कहेंगे, तब सम्भव है, कि द्रोणाचार्य कदापि युद्ध न करेंगे; क्योंकि तीनों लोकके बीच आप सत्यवादी कहके विख्यात हैं ॥ (५१-५३)

राजा युधिष्ठिर भीमसेनके वचनको सुनके विशेष करके श्रीकृष्णकी अनुमति और अवश्यम्भावीके कारणसे मिथ्या बोलनेमें प्रवृत्त हुए ॥ महाराज ! उस समय धर्मराज युधिष्ठिर मिथ्या वचन बोलनेके भयसे व्यग्र और विजयकी आशासे आसक्त होकर मनमें हाथीका नाम लेकर प्रकटमें "अश्वत्थामा मारे गये" ऐसा वचन बोले ॥ पहिले राजा युधिष्ठिरके रथके पहिये पृथ्वीसे चार अंगुल ऊपर उठे रहते थे, परन्तु इस समय ऐसा मिथ्या भाषण करनेके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिरात्तु तद्वाक्यं श्रुत्वा द्रोणो महारथः ।
पुत्रव्यसनसन्तप्तो निराशो जीवितेऽभवत् ॥ ५७ ॥
आगस्कृतमिवाऽऽत्मानं पाण्डवानां महात्मनाम् ।
ऋषिवाक्येन मन्वानः श्रुत्वा च निहतं सुतम् ॥ ५८ ॥
विचेताः परमोद्विग्नो धृष्टद्युम्नमवेक्ष्य च ।
योद्धुं नाऽशक्नुवद्राजन्यथापूर्वमरिन्दमः ॥ ५९ ॥ [८७५३]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि युधिष्ठिरासत्यकथने नवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९० ॥

सञ्जय उवाच— तं दृष्ट्वा परमोद्विग्नं शोकोपहतचेतसम् ।
पञ्चालराजस्य सुतो धृष्टद्युम्नः समाद्रवत् ॥ १ ॥
य इष्ट्वा मनुजेन्द्रेण द्रुपदेन महामखे ।
लब्धो द्रोणविनाशाय समिद्धाद्धव्यवाहनात् ॥ २ ॥
स धनुर्जैत्रमादाय घोरं जलदनिःस्वनम् ।
दृढज्यमजरं दिव्यं शरं चाऽऽशीविषोपमम् ॥ ३ ॥
सन्दधे कार्मुके तस्मिंस्ततस्तमनलोपमम् ।

कारण उनके रथके पहिये पृथ्वीको स्पर्श करके भूमिपर चलने लगे ॥ (५४-५६)

इधर महारथी द्रोणाचार्य युधिष्ठिरके मुखसे पुत्रके विषयमें ऐसी विपदवार्त्ता सुनके शोक रूपी अग्निसे जलते हुए जीनेकी आशाको त्याग दिया ॥ विशेष करके उन्होंने ऋषियोंके वचनको सुनकर पाण्डवोंके निकट अपनेको अपराधी समझा; और अपने पुत्रके मरनेका वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त ही व्याकुल और चेत रहित समान होगये थे, उस पर भी धृष्टद्युम्नको सम्मुख देखकर पहिलेकी भांति युद्ध करनेमें समर्थ नहीं हुए ॥ (५७-५९) [८७५३]

द्रोणपर्वमें एकसौ नव्वे अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ एकानव्वे अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! राजा द्रुपदने देवताओंकी आराधना करके महायज्ञमें जिस पुत्रको पाया था; जो द्रोणाचार्यके वधके वास्ते जलती हुई यज्ञकी अग्निसे उत्पन्न हुए, वही पाञ्चालराज पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यको पुत्रशोकसे अत्यन्त व्याकुल और चेतरहितके समान देखकर इन्द्रधनुषके समान भयङ्कर टङ्कार शब्दसे युक्त दिव्य धनुष और शत्रुओंको नाश करनेवाले विषधर सर्पके समान भयङ्कर बाणोंको ग्रहण करके द्रोणाचार्यकी ओर दौडे ॥ (१-३)

अनन्तर जलती हुई प्रचण्ड अग्निके समान द्रोणाचार्यके वधकी इच्छा करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोणं जिघांसुः पाञ्चाल्यो महाज्वालमिवाऽनलम् ॥४॥
तस्य रूपं शरस्याऽऽसीद्धनुर्ज्यामण्डलान्तरे।
द्योततो भास्करस्येव घनान्ते परिवेषिणः ॥ ५ ॥
पार्षतेन परामृष्टं ज्वलन्तमिव तद्धनुः।
अन्तकालमनुप्राप्तं मेनिरे वीक्ष्य सैनिकाः ॥ ६ ॥
तमिषुं संहतं तेन भारद्वाजः प्रतापवान्।
दृष्ट्वाऽमन्यत देहस्य कालपर्यायमागतम् ॥ ७ ॥
ततः प्रयत्नमातिष्ठदाचार्यस्तस्य वारणे।
न चाऽस्याऽस्त्राणि राजेन्द्र प्रादुरासन्महात्मनः ॥ ८ ॥
तस्य त्वहानि चत्वारि क्षपा चैकाऽस्यतो गता।
तस्य चाऽहस्त्रिभागेन क्षयं जग्मुः पतत्रिणः ॥ ९ ॥
स शरक्षयमासाद्य पुत्रशोकेन चाऽर्दितः।
विविधानां च दिव्यानामस्त्राणामप्रसादतः ॥ १० ॥
उत्स्रष्टुकामः शस्त्राणि ऋषिवाक्यप्रचोदितः।
तेजसा पूर्यमाणश्च युयुधे न यथा पुरा ॥ ११ ॥

धृष्टद्युम्नने अग्निके समान प्रकाशमान एक भयङ्कर बाणको धनुषपर चढाया। महाराज! उस समय धृष्टद्युम्नके रौंदे युक्त धनुषके बीचमें स्थित वह भयानक बाण तीक्ष्ण किरणधारी शरद्कालके सूर्यकी भांति शोभित हुआ॥ तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंने धृष्टद्युम्नको उन भयङ्कर धनुष और बाण ग्रहण करते देख समझा, कि अब द्रोणाचार्यका अन्तिम समय उपस्थित हुआ है॥ अधिक क्या कहूं, प्रतापी भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्यने भी उस भयङ्कर बाणको धृष्टद्युम्नके धनुषपर स्थित देखकर अपनी मृत्युको समीप पहुंची हुई स्थिर की॥ (४-७)

अनन्तर महात्मा द्रोणाचार्य उस बाणको निवारण करनेके वास्ते विशेष यत्न करने लगे; परन्तु उनके अस्त्र उस समय प्रकट नहीं हुए॥ महाराज! उन्होंने चार दिन और एक रात्रि लगातार अपने बाणोंको चलाया था, पाचवें दिनके तीनभाग बीतनेपर उनके बाण निःशेषित हुए। इसी भांति वह बाणरहित, पुत्रशोकसे दुःखित और चित्तकी व्यग्रताके कारण अनेक भांतिके दिव्य अस्त्रोंको भूल गये; और ऋषियोंकी आज्ञाके अनुसार शस्त्र परित्याग करनेकी इच्छा करके द्रोणाचार्यने पहिलेकी भांति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूयश्चाऽन्यत्समादाय दिव्यमाङ्गिरसं धनुः ।
शरांश्च ब्रह्मदण्डाभान्धृष्टद्युम्नमयोधयत् ॥ १२ ॥
ततस्तं शरवर्षेण महता समवाकिरत् ।
व्यशातयच्च संक्रुद्धो धृष्टद्युम्नममर्षणम् ॥ १३ ॥
शरांश्च शतधा तस्य द्रोणश्चिच्छेद सायकैः ।
ध्वजं धनुश्च निशितैः सारथिं चाऽप्यपातयत् ॥ १४ ॥
धृष्टद्युम्नः प्रहस्याऽन्यत्पुनरादाय कार्मुकम् ।
शितेन चैनं बाणेन प्रत्यविध्यत्स्तनान्तरे ॥ १५ ॥
सोऽतिविद्धो महेष्वासोऽसम्भ्रान्त इव संयुगे ।
भल्लेन शितधारेण चिच्छेदाऽस्य पुनर्धनुः ॥ १६ ॥
यच्चाऽस्य बाणविक्षतं धनूंषि च विशाम्पते ।
सर्वं चिच्छेद दुर्धर्षो गदां खड्गं च वर्जयन् ॥ १७ ॥
धृष्टद्युम्नं च विव्याध नवभिर्निशितैः शरैः ।
जीवितान्तकरः क्रुद्धः क्रुद्धरूपः परन्तपः ॥ १८ ॥

अपने तेज तथा पराक्रमके अनुसार युद्ध नहीं किया ॥ (८-११)

उस समय द्रोणाचार्य अङ्गिराके दिये हुए दिव्य धनुष और ब्रह्मदण्डके समान बाणोंको ग्रहण करके धृष्टद्युम्नके सङ्ग युद्ध करने लगे ॥ द्रोणाचार्यने मुहूर्त्त भरके बीच क्रुद्धस्वभाववाले धृष्टद्युम्नको अपने बाणोंकी वर्षासे छिपाकर उसे क्षत विक्षत कर दिया ॥ तिसके अनन्तर द्रोणाचार्यने अपने चोखे बाणोंके प्रभाव से पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नके चलाये हुए सहस्रों बाणोंको सैकडों खण्ड करके काटके गिराया फिर उनके रथकी ध्वजा धनुष और सारथीको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (१२-१४)

तब धृष्टद्युम्नने दूसरा दृढ धनुष ग्रहण करके तेज धारवाले बाणोंसे द्रोणाचार्यके वक्षस्थलमें प्रहार किया ॥ महाधनुर्द्धारी द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्नके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध होकर क्षणभरतक व्याकुल रहे । परन्तु क्षण भरके बाद पराक्रमी द्रोणाचार्यने तेज धारवाले भल्लसे फिर धृष्टद्युम्नके धनुषको काट दिया अधिक क्या कहूं उस समय शत्रुनाशन द्रोणाचार्यने धृष्टद्युम्नकी गदा और तलवारको छोडके सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रों तथा धनुष बाणको अपने अस्त्रोंके प्रभावसे काटके गिरा दिये, फिर क्रुद्ध होकर धृष्टद्युम्नके वधकी इच्छासे उन्हें नौ बाणोंसे विद्ध किया ॥ (१५-१८)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृष्टद्युम्नोऽथ तस्याऽश्वान्स्वरथाश्वैर्महारथः ।
व्यामिश्रयदमेयात्मा ब्राह्ममस्त्रमुदीरयन् ॥ १९ ॥
ते मिश्रा बह्वशोभन्त जवना वातरंहसः ।
पारावतसवर्णाश्च शोणाश्च भरतर्षभ ॥ २० ॥
यथा सविद्युतो मेघा नदन्तो जलदागमे ।
तथा रेजुर्महाराज मिश्रिता रणमूर्धनि ॥ २१ ॥
ईषाबन्धं चक्रबन्धं रथबन्धं तथैव च ।
प्राणाशयदमेयात्मा धृष्टद्युम्नस्य स द्विजः ॥ २२ ॥
स च्छिन्नधन्वा पाञ्चाल्यो निकृत्तध्वजसारथिः ।
उत्तमामापदं प्राप्य गदां वीरः परामृशत् ॥ २३ ॥
तामस्य विशिखैस्तीक्ष्णैः क्षिप्यमाणां महारथः ।
निजघान शरैर्द्रोणः क्रुद्धः सत्यपराक्रमः ॥ २४ ॥
तां तु दृष्ट्वा नरव्याघ्रो द्रोणेन निहतां शरैः ।
विमलं खड्गमादत्त शतचन्द्रं च भानुमत् ॥ २५ ॥
असंशयं तथाभूतः पाञ्चाल्यः साध्वमन्यत ।
वधमाचार्यमुख्यस्य प्राप्तकालं महात्मनः ॥ २६ ॥

तिसके अनन्तर महाबलवान् महात्मा धृष्टद्युम्नने ब्रह्मास्त्र चलाकर अपने रथके घोडोंको द्रोणाचार्यके रथके घोडोंके संग मिला दिया ॥ महाराज ! उस समय पारावत और लाल वर्णके रथके घोडे एकही स्थलपर मिलके अत्यन्त ही शोभित हुए॥ शरद् ऋतुके आरम्भमें बिजलीसे युक्त गर्जते हुए बादलोंकी जैसी शोभा होती है, वैसे ही रणभूमिके बीच उन दोनों महात्माओंके घोडोंके एक ही स्थानपर मिलनेसे अत्यन्त ही शोभा हुई ॥ (१९–२१)

इस ही समय द्रोणाचार्यने धृष्टद्युम्नके रथकी धुरी और चक्रको टुकडे टुकडे कर दिया ॥ तब महावीर पराक्रमी पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने धनुष, ध्वजा, सारथीसे रहित होकर उस भयङ्कर विपद के समय में गदा ग्रहण किया, सत्य पराक्रमी द्रोणाचार्यने क्रुद्ध होकर अपने तेज बाणोंसे धृष्टद्युम्नकी गदाको भी काटके गिरा दिया ॥ (२२–२४)

गदाको कटती देख पुरुषसिंह धृष्टद्युम्नने प्रकाशमान तलवार और एकसौ चन्द्र प्रतिमाभूषित ढालको ग्रहण किया॥ महाराज ! वैसी अवस्थामें पडके भी धृष्टद्युम्न भयभीत नहीं हुए, और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः स रथनीडस्थं स्वरथस्य रथेषया ।
अगच्छदसिमुद्यम्य शतचन्द्रं च भानुमत् ॥ २७ ॥
चिकीर्षुर्दुष्करं कर्म धृष्टद्युम्नो महारथः ।
इयेष वक्षो भेत्तुं स भारद्वाजस्य संयुगे ॥ २८ ॥
सोऽतिष्ठद्युगमध्ये वै युगसन्नहनेषु च ।
जघनार्धेषु चाऽश्वानां तत्सैन्याः समपूजयन् ॥ २९ ॥
तिष्ठतो युगपालीषु शोणानप्यधितिष्ठतः ।
नाऽपश्यदन्तरं द्रोणस्तदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ ३० ॥
क्षिप्रं श्येनस्य चरतो यथैवाऽऽमिषगृद्धिनः ।
तद्बभासीदभीसारो द्रोणपार्षतयो रणे ॥ ३१ ॥
तस्य पारावतानश्वान्रथशक्त्या पराभिनत् ।
सर्वानेकैकशो द्रोणो रक्तानश्वान्विवर्जयन् ॥ ३२ ॥
ते हता न्यपतन्भूमौ धृष्टद्युम्नस्य वाजिनः ।
शोणास्तु पर्यमुच्यन्त रथबन्धाद्विशाम्पते ॥ ३३ ॥
तान्हयान्निहतान्दृष्ट्वा द्विजाग्र्येण स पार्षतः ।

महात्मा द्रोणाचार्यके वधका यही समय है, ऐसा विचारके उनके वधकी अभिलाषासे उस प्रकाशमान तलवार और ढालको ग्रहण करके रथके दण्डके सहारेसे द्रोणाचार्यके समीप गमन करनेमें प्रवृत्त हुए ॥ (२५–२७)

हे राजेन्द्र ! महारथी धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यके वक्षस्थल भेदनेकी इच्छा करके कभी पीछे, कभी घोडोंके बीच और कभी रथ पर चढते हुए द्रोणाचार्यके समीप चारों ओर भ्रमण करने लगे;धृष्टद्युम्नके इस कठिन कर्मको देखकर योद्धा लोग उनकी प्रशंसा करने लगे । अधिक क्या कहूं, उस समय धृष्टद्युम्नको अपने रथ तथा घोडोंके ऊपर चढनेके समय स्वयं द्रोणाचार्य भी उसके छिद्रको देखनेमें समर्थ नहीं हुए; उस समय धृष्टद्युम्नका पराक्रम अद्भुतरूपसे दीख पडा; जैसे बाजपक्षी मांसकी इच्छासे इधर उधर भ्रमण करते हुए दीख पडता है, वैसे ही धृष्टद्युम्न भी द्रोणाचार्यके वधकी अभिलाषासे उनकी ओर झपटते हुए दीख पडे ॥ (२८–३१)

अनन्तर द्रोणाचार्यने रथशक्तिके प्रहारसे धृष्टद्युम्नके पारावतवर्ण समान घोडोंको प्राणरहित करके पृथ्वीमें गिरा दिया, जब धृष्टद्युम्नके रथके घोडे मरकर पृथ्वीमें गिर पडे, तब द्रोणाचार्यके घोडे रथ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाऽमृष्यत युधां श्रेष्ठो याज्ञसेनिर्महारथः ॥ ३४ ॥
विरथः स गृहीत्वा तु खड्गं खड्गभृतां वरः।
द्रोणमभ्यपतद्राजन्वैनतेय इवोरगम् ॥ ३५ ॥
तस्य रूपं बभौ राजन्भारद्वाजं जिघांसतः।
यथा रूपं पुरा विष्णोर्हिरण्यकशिपोर्वधे ॥ ३६ ॥
स तदा विविधान्मार्गान्प्रवरांश्चैकविंशतिम्।
दर्शयामास कौरव्य पार्षतो विचरन्रणे ॥ ३७ ॥
भ्रान्तमुद्भ्रान्तमाविद्धमाप्लुतं प्रसृतं सृतम्।
परिवृत्तं निवृत्तं च खड्गं चर्म च धारयन् ॥ ३८ ॥
सम्पातं समुदीर्णं च दर्शयामास पार्षतः।
भारतं कौशिकं चैव सात्वतं चैव शिक्षया ॥ ३९ ॥
दर्शयन्व्यचरद्युद्धे द्रोणस्याऽन्तचिकीर्षया।
चरतस्तस्य तान्मार्गान्विचित्रान्खड्गचर्मिणः ॥ ४० ॥
व्यस्मयन्त रणे योधा देवताश्च समागताः।
ततः शरसहस्रेण शतचन्द्रमपातयत् ॥ ४१ ॥

बन्धनसे मुक्त हुए॥ द्विजसत्तम द्रोणाचार्यके शस्त्रसे अपने रथके घोडोंको मरते देख तलवार युद्ध जाननेवाले योद्धाओंमें मुख्य धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्यके पराक्रमको सहन नहीं किया; और रथ भ्रष्ट होकर भी केवल तलवारको ही ग्रहण करके इस प्रकार द्रोणाचार्यकी ओर दौडे, जैसे गरुड सर्पकी ओर दौडता है॥ (३२-३५)

महाराज! जैसे पहिले समयमें हिरण्यकश्यपके वधके समय विष्णुका भयङ्कर स्वरूप दीख पडा था, द्रोणाचार्यके वधकी इच्छा करनेवाले धृष्टद्युम्नका भी उस समय वैसाही भयङ्कर रूप दिखाई देने लगा॥ उस समय धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यके वधकी इच्छा करके ढाल तलवार ग्रहण करके नाना प्रकारकी गति विशेषसे चारों ओर घूमते, दौडते, उछलते, आगे बढते, लौटते, तलवार चलाते, उठाते, घुमाते हुए भारत कौशिक और सात्वत आदि इक्कीस प्रकारकी तलवार युद्धकी गति प्रकाशित करते हुए युद्ध भूमिके बीच भ्रमण करने लगे। (३६-३९)

उस समय युद्धभूमिमें स्थित सम्पूर्ण योद्धा और आकाशमें विमानों पर चढके युद्ध देखनेवाले देवता लोग ढाल तलवार ग्रहण करनेवाले धृष्टद्युम्नको इस प्रकार गति विशेषसे द्रोणाचार्यके सम्मुख

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्म खड्गं च सम्बाधे धृष्टद्युम्नस्य स द्विजः ।
ये तु वैतस्तिका नाम शरा आसन्नयोधिनः ॥ ४२ ॥
निकृष्टयुद्धे द्रोणस्य नाऽन्येषां सन्ति ते शराः ।
ऋते शरद्वतात्पार्थाद् द्रौणेर्वैकर्तनात्तथा ॥ ४३ ॥
प्रद्युम्नयुयुधानाभ्यामभिमन्योश्च भारत ।
अथाऽस्येषुं समाधत्त दृढं परमसमतम् ॥ ४४ ॥
अन्तेवासिनमाचार्यो जिघांसुः पुत्रसंमितम् ।
तं शरैर्दशभिस्तीक्ष्णैश्चिच्छेद शिनिपुङ्गवः ॥ ४५ ॥
पश्यतस्तव पुत्रस्य कर्णस्य च महात्मनः ।
ग्रस्तमाचार्यमुख्येन धृष्टद्युम्नममोचयत् ॥ ४६ ॥
चरन्तं रथमार्गेषु सात्यकिं सत्यविक्रमम् ।
द्रोणकर्णान्तरगतं कृपस्याऽपि च भारत ॥ ४७ ॥

घूमते देखकर विस्मित हुए । तिसके अनन्तर द्विजसत्तम द्रोणाचार्यने एक हजार बाणोंको चलाकर धृष्टद्युम्नके हाथमें स्थित उस प्रकाशमान तलवार और एक सौ चन्द्र प्रतिमाभूषित ढालको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया। (३९-४२)

उस समय द्रोणाचार्यने जिन सम्पूर्ण बाणोंको धृष्टद्युम्नकी ओर चलाये वे सब बाण बारह अंगुलके परिमाण वाले थे, उनका नाम वितस्तिक बाण था, जब कोई शत्रु अत्यन्त ही निकट पहुंच जाता है, और उस समय उसके ऊपर बाण चलानेकी कुछ उपाय नहीं रहती, उस ही समय वितस्तिक बाणोंको चलाना पडता है। निकटवर्ती शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करनेवाले पुरुषोंके बीच ये वितस्तिक नामक बाण केवल द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कुन्तीपुत्र अर्जुन, अश्वत्थामा, सात्यकि और प्रद्युम्नके समीप उपस्थित हैं और अभिमन्यु भी इन बाणोंका प्रयोग करना जानता था, इन पुरुषोंके अतिरिक्त और दूसरे किसी पुरुषके निकट ये बाण उपस्थित नहीं थे । (४२-४५)

द्रोणाचार्यने अपने शिष्य पाञ्चाल राजपुत्र धृष्टद्युम्नके वधकी इच्छा करके एक दृढ दिव्यास्त्रको ग्रहण किया परन्तु शिनिपौत्र सात्यकिने महात्मा कर्ण और राजा दुर्योधनके सम्मुखमें ही उस अस्त्रको दश बाणोंसे निवारण करके द्रोणाचार्यके अस्त्रसे धृष्टद्युम्नको बचा लिया ॥ उस समय महात्मा कृष्ण और अर्जुन वहां पर उपस्थित हुए । और सत्यपराक्रमी सात्यकिको द्रोणाचार्य कर्ण और कृपाचार्य आदि महारथियोंकी मण्डलीके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपश्येतां महात्मानौ विष्वक्सेनधनञ्जयौ ।
अपूजयेतां वार्ष्णेयं ब्रुवाणौ साधुसाध्विति ॥ ४८ ॥
दिव्यान्यस्त्राणि सर्वेषां युधि निघ्नन्तमच्युतम् ।
अभिपत्य ततः सेनां विष्वक्सेनधनञ्जयौ ॥ ४९ ॥
धनञ्जयस्ततः कृष्णमब्रवीत्पश्य केशव ।
आचार्यरथमुख्यानां मध्ये क्रीडन्मधूद्वहः ॥ ५० ॥
आनन्दयति मां भूयः सात्यकिः परवीरहा ।
माद्रीपुत्रौ च भीमं च राजानं च युधिष्ठिरम् ॥ ५१ ॥
यच्छिक्षयाऽनुद्धतः सन्रणे चरति सात्यकिः ।
महारथानुपक्रीडन्वृष्णीनां कीर्तिवर्धनः ॥ ५२ ॥
तमेते प्रतिनन्दन्ति सिद्धाः सैन्याश्च विस्मिताः ।
अजय्यं समरे दृष्ट्वा साधुसाध्विति सात्यकिम् ॥
योधाश्चोभयतः सर्वे कर्मभिः समपूजयन् । ॥ ५३॥ [८८०६]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि संकुलयुद्धे एकनवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९१ ॥

सञ्जय उवाच— सात्वतस्य तु तत्कर्म दृष्ट्वा दुर्योधनादयः ।

बीच रथ पर चढके भ्रमण करते और उन लोगोंके चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको निवारण करते हुए देखकर धन्य धन्य करके उसकी प्रशंसा करने लगे ॥ ४५-४९

अनन्तर अर्जुन श्रीकृष्णसे बोले, हे कृष्ण ! यह वृष्णिवंशी शत्रुनाशन सात्यकि द्रोणाचार्य आदि महारथियोंके सङ्ग युद्ध करते हुए नकुल, सहदेव, भीमसेन, राजा युधिष्ठिर और मुझको अत्यन्त ही आनन्दित कर रहा है, यह वृष्णिवंशकी कीर्त्तिको बढानेवाला सात्यकि सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या जाननेवाले शत्रुसेनाके महारथियोंके सङ्ग मानो खेलवाडकी भांति युद्ध करते हुए युद्धभूमिके बीच भ्रमण कर रहा है ॥ यह देखो, सम्पूर्ण सिद्ध और सेनापति लोग सात्यकिको अपराजित समझकर धन्य धन्य कहके उसकी प्रशंसा कर रहे हैं; तथा दोनों सेनाके योद्धा भी सात्यकिके अलौकिक युद्धको देखकर उसकी अत्यन्त ही प्रशंसा कर रहे हैं ॥ (५०—५३) [८८०६]

द्रोणपर्वमें एकसौ एकानव्वे अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ बानव्वे अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! अनन्तर कृपाचार्य, कर्ण और दुर्योधन आदि तुम्हारे पुत्र लोग सात्यकिके ऐसे कठिन कर्मको देखकर अपने तेजबाणोंकी वर्षा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैनेयं सर्वतः क्रुद्धा वारयामासुरञ्जसा ॥ १ ॥
कृपकर्णौ च समरे पुत्राश्च तव मारिष ।
शैनेयं त्वरयाऽभ्येत्य विनिघ्नन्निशितैः शरैः ॥ २ ॥
युधिष्ठिरस्ततो राजा माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ ।
भीमसेनश्च बलवान्सात्यकिं पर्यवारयन् ॥ ३ ॥
कर्णश्च शरवर्षेण गौतमश्च महारथः ।
दुर्योधनादयस्ते च शैनेयं पर्यवारयन् ॥ ४ ॥
तां वृष्टिं सहसा राजन्नुत्थितां घोररूपिणीम् ।
वारयामास शैनेयो योधयंस्तान्महारथान् ॥ ५ ॥
तेषामस्त्राणि दिव्यानि संहितानि महात्मनाम् ।
वारयामास विधिवद्दिव्यैरस्त्रैर्महामृधे ॥ ६ ॥
क्रूरमायोधनं जज्ञे तस्मिन्राजसमागमे ।
रुद्रस्येव हि क्रुद्धस्य निघ्नतस्तान्पशून्पुरा ॥ ७ ॥
हस्तानामुत्तमाङ्गानां कार्मुकाणां च भारत ।
छत्राणां चाऽपविद्धानां चामराणां च सञ्चयैः ॥ ८ ॥
राशयः स्म व्यदृश्यन्त तत्र तत्र रणाजिरे ।
भग्नचक्रै रथैश्चापि पातितैश्च महाध्वजैः ॥ ९ ॥

करते हुए, उसे निवारण करनेमें प्रवृत्त हुए ॥ उसे देखकर राजा युधिष्ठिर पराक्रमी भीमसेन माद्रीपुत्र नकुल सहदेव सात्यकिकी रक्षा करनेकी अभिलाषासे उसे घेरकर युद्धभूमि में स्थित हुए ॥ (१-३)

गौतमनन्दन कृपाचार्य कर्ण और दुर्योधनने अपने भयङ्कर बाणोंकी वर्षाकर सात्यकिको छिपा दिया ॥ शिनिपौत्र सात्यकि उस भयङ्कर बाणवर्षाको निवारण करते हुए उन सम्पूर्ण महारथियोंके संग युद्ध करने लगे; और उन महारथियों के चलाये हुए दिव्य अस्त्रोंको अपने दिव्य अस्त्रके प्रभावसे निवारण करने लगे ॥ उस महाघोर संग्रामके समय वह रणभूमि सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करनेवाले रुद्रदेवके क्रीडास्थलके समान बोध होने लगी ॥ (४—७)

इधर कटे पडे हुए बहुतेरे पुरुषोंके सिर, भुजा, धनुष, चंवर, टूटे हुए रथके चक्के, टूटे हुए रथ, रथकी ध्वजा, मरे हुए हाथी घोडे और मनुष्योंके शरीरसे वह रणभूमि परिपूरित होगई । उस समय अस्त्र शस्त्रों की चोट से घायल होके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सादिभिश्च हतैः शूरैः सङ्कीर्णा वसुधाऽभवत् ।
बाणपातनिकृत्तास्तु योधास्ते कुरुसत्तम ॥ १० ॥
चेष्टन्तो विविधाश्चेष्टा व्यदृश्यन्त महाहवे ।
वर्तमाने तथा युद्धे घोरे देवासुरोपमे ॥ ११ ॥
अब्रवीत्क्षत्रियांस्तत्र धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
अभिद्रवत संयत्ताः कुम्भयोनिं महारथाः ॥ १२ ॥
एषो हि पार्षतो वीरो भारद्वाजेन सङ्गतः ।
घटते च यथाशक्ति भारद्वाजस्य नाशने ॥ १३ ॥
यादृशानि हि रूपाणि दृश्यन्तेऽस्य महारणे ।
अद्य द्रोणं रणे क्रुद्धो घातयिष्यति पार्षतः ॥ १४ ॥
ते यूयं सहिता भूत्वा युध्यध्वं कुम्भसम्भवम् ।
युधिष्ठिरसमाज्ञप्ताः सृञ्जयानां महारथाः ॥ १५ ॥
अभ्यद्रवन्त संयत्ता भारद्वाजजिघांसवः ।
तान्समापततः सर्वान्भारद्वाजो महारथः ॥ १६ ॥
अभ्यवर्तत वेगेन मर्तव्यमिति निश्चितः ।

बहुतेरे योद्धा रणभूमिमें पडे हुए विविध प्रकारसे हल चल करते हुए दिखाई देने लगे । (८-११)

उस देवासुर संग्रामके समान भयङ्कर युद्धके समय धर्मराज युधिष्ठिर युद्धभूमि में क्षत्रीय योद्धाओंको आवाहन करके उनसे यह वचन बोले, हे शूरवीर महारथी योद्धा लोगो ! तुम सब कोई यत्नवान् होकर कुम्भसे उत्पन्न हुए महारथी द्रोणाचार्यकी ओर दौडो ॥ (११-१२)

यह देखो, पृषतकुल भूषण धृष्टद्युम्न भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यके संग युद्ध करने में प्रवृत्त होकर उन्हें अपने वशमें करने की अभिलाषासे शक्तिके अनुसार युद्ध कर रहे हैं ॥ इस समय धृष्टद्युम्नका रूप जैसा भयङ्कर दीख पडता है, उससे यह मुझे निश्चय बोध होरहा है, कि धृष्टद्युम्न आज रणभूमिके बीच क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्यका वध करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है; इससे तुम सब कोई इकट्ठे होकर द्रोणाचार्यके संग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होजाओ । (१२-१५)

महाराज ! जब राजा युधिष्ठिरने अपनी सेनाके पुरुषोंको ऐसी आज्ञा दिया तब महारथी पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा लोग अत्यन्त यत्नवान् होकर द्रोणाचार्यकी ओर दौडे । जब वे सम्पूर्ण योद्धा इस प्रकार द्रोणाचार्यकी ओर गमन करने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयाते सत्यसन्धे तु समकम्पत मेदिनी ॥ १७ ॥
ववुर्वाताः सनिर्घातास्त्रासयाना वरूथिनीम् ।
पपात महती चोल्का आदित्यान्निश्चरन्त्युत ॥ १८ ॥
दीपयन्ती उभे सेने शंसन्तीव महद्भयम् ।
जज्वलुश्चैव शस्त्राणि भारद्वाजस्य मारिष ॥ १९ ॥
रथाः स्वनन्ति चाऽत्यर्थं हयाश्चाऽश्रूण्यवासृजन् ।
हतौजा इव चाऽप्यासीद्भारद्वाजो महारथः ॥ २० ॥
प्रास्फुरन्नयनं चाऽस्य वामबाहुस्तथैव च ।
विमनाश्चाऽभवद्युद्धे दृष्ट्वा पार्षतमग्रतः ॥ २१ ॥
ऋषीणां ब्रह्मवादानां स्वर्गस्य गमनं प्रति ।
सुयुद्धेन ततः प्राणानुत्सृष्टुमुपचक्रमे ॥ २२ ॥
ततश्चतुर्दिशं सैन्यैर्द्रुपदस्याऽभिसंवृतः ।
निर्दहन्क्षत्रियव्रातान्द्रोणः पर्यचरद्रणे ॥ २३ ॥
हत्वा विंशतिसाहस्रान्क्षत्रियानरिमर्दनः ।

लगे, तब भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य मरनेका निश्चय करके वेगपूर्वक उन योद्धाओंकी ओर बढे । (१५—१७)

सत्यपराक्रमी द्रोणाचार्यके पाञ्चाल और सृञ्जयोंकी सेनाकी ओर गमन करनेके समय सम्पूर्ण प्राणियोंको भयभीत करते हुए वायु प्रचण्ड वेगसे बहने लगा और पृथ्वी कांपने लगी । इस ही समय दोनों सेनाके पुरुषोंको सन्तापित करते हुए सूर्यमण्डलसे उल्का पात होने लगा; और भरद्वाजपुत्र महात्मा द्रोणाचार्यके सम्पूर्ण अस्त्र उस समय प्रज्वलित होने लगे, उनके रथका भयङ्कर शब्द सुनाई देने लगा, और रथके घोडोंकी आंखोंसे आंसूकी धारा बहती हुई दिखाई देती थी । (१७–२०)

उस समय पराक्रमी द्रोणाचार्य स्वयं भी निस्तेज होगये; उस समय उनकी बायीं आंख और बायीं भुजा फडकने लगी; विशेष करके धृष्टद्युम्नको अपने संमुख स्थित देखकर द्रोणाचार्य युद्धसे विरत हुए; और ब्रह्मवादी ऋषियोंके गमन करने योग्य स्वर्ग लोक प्राप्त होनेकी इच्छासे धर्मयुद्धके अनुसार प्राण त्यागनेमें प्रवृत्त हुए ॥ (२०–२२)

पाञ्चालसेनाके योद्धाओंने उन्हें चारों ओरसे घेर लिया ॥ उस समय पराक्रमी द्रोणाणार्य अनगिनत क्षत्रिय योद्धाओंको अपने अस्त्रोंके प्रभावसे भस्म करके रणभूमिमें चारों ओर घूमने लगे ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशायुतानि करिणामवधीद्विशिखैः शितैः ॥ २४ ॥
सोऽतिष्ठदाहवे यत्तो विधूमोऽग्निरिव ज्वलन् ।
क्षत्रियाणामभावाय ब्राह्ममस्त्रं समास्थितः ॥ २५ ॥
पाञ्चाल्यं विरथं भीमो हतसर्वायुधं बली ।
सुविषण्णं महात्मानं त्वरमाणः समभ्ययात् ॥ २६ ॥
ततः स्वरथमारोप्य पाञ्चाल्यमरिमर्दनः ।
अब्रवीदभिसम्प्रेक्ष्य द्रोणमस्यन्तमन्तिकात् ॥ २७ ॥
न त्वदन्य इहाऽऽचार्यं योद्धुमुत्सहते पुमान् ।
त्वरस्व प्राग्वधायैव त्वयि भारः समाहितः ॥ २८ ॥
स तथोक्तो महाबाहुः सर्वभारसहं धनुः ।
अभिपत्याऽऽददे क्षिप्रमायुधप्रवरं दृढम् ॥ २९ ॥
संरब्धश्च शरानस्यन्द्रोणं दुर्वारणं रणे ।
विवारयिषुराचार्यं शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ३० ॥
तौ न्यवारयतां श्रेष्ठौ संरब्धौ रणशोभिनौ ।

उस समय क्षत्रियोंको नाश करनेवाले द्रोणाचार्यने अपने तेज धारवाले अस्त्र शस्त्रोंको चलाकर एक लाख हाथी और बीस हजार योद्धाओंका वध किया। तिसके अनन्तर वह क्षत्रिय पुरुषोंके नाशकी इच्छा करके ब्राह्म अस्त्र प्रकट करके धूएंसे रहित जलती हुई अग्निकी भांति युद्धभूमिमें विराजमान हुए ॥ (२३-२५)

इधर महाबली शत्रुनाशन भीमसेन शीघ्रताके सहित रथ और अस्त्रशस्त्रोंसे रहित विपदग्रस्त धृष्टद्युम्नके समीप अपना रथ बढाकर उपस्थित हुए और उन्हें शीघ्र ही अपने रथपर चढा लिया। अनन्तर भीमसेन उस समय द्रोणाचार्यको लगातार अस्त्र शस्त्रोंकी वर्षा करते देख धृष्टद्युम्नसे बोले, हे वीर! इस समय तुम्हें छोडके और कोई पुरुष भी ऐसा नहीं है, जो युद्धभूमिमें द्रोणाचार्यके अस्त्र प्रहारको सह सके। इससे तुम शीघ्र ही द्रोणाचार्यके वधके निमित्त उनके समीप गमन करो; क्योंकि इस युद्धका सम्पूर्ण भार तुम्हारे ही ऊपर अर्पित हुआ है ॥ (२६-२८)

भीमसेनके वचनको सुनकर महाबाहु पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने उस ही समय एक दृढ धनुष और अस्त्र शस्त्रोंको ग्रहण करके अत्यन्त पराक्रमी द्रोणाचार्यके निवारण करनेकी इच्छासे क्रोधपूर्वक अपने बाणोंको वर्षाकर उन्हें छिपा दिया ॥ (२९-३०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदीरयेतां ब्राह्माणि दिव्यान्यस्त्राण्यनेकशः ॥ ३१ ॥
स महास्त्रैर्महाराज द्रोणमाच्छादयद्रणे ।
निहत्य सर्वाण्यस्त्राणि भारद्वाजस्य पार्षतः ॥ ३२ ॥
स वसातीञ्शिबींश्चैव बाल्हीकान्कौरवानपि ।
रक्षिष्यमाणान्संग्रामे द्रोणं व्यधमदच्युतः ॥ ३३ ॥
धृष्टद्युम्नस्तथा राजन्गभस्तिभिरिवांऽशुमान् ।
बभौ प्रच्छादयन्नाशाः शरजालैः समन्ततः ॥ ३४ ॥
तस्य द्रोणो धनुश्छित्त्वा विद्ध्वा चैनं शिलीमुखैः ।
मर्माण्यभ्यहनद्भूयः स व्यथां परमामगात् ॥ ३५ ॥
ततो भीमो दृढक्रोधो द्रोणस्याऽऽश्लिष्य तं रथम् ।
शनकैरिव राजेन्द्र द्रोणं वचनमब्रवीत् ॥ ३६ ॥
यदि नाम न युध्येरञ्शिक्षिता ब्रह्मबन्धवः ।
स्वकर्मभिरसन्तुष्टा न स्म क्षत्रं क्षयं व्रजेत् ॥ ३७ ॥
अहिंसां सर्वभूतेषु धर्मं ज्यायस्तरं विदुः ।

युद्धविद्याके जाननेवाले वे दोनों वीर क्रुद्ध होकर रणभूमिके बीच अत्यन्त ही शोभित हुए; अनन्तर उन दोनों वीरोंने उस समय दिव्य और ब्राह्म अस्त्रोंको प्रकट किया ॥ अनन्तर धृष्टद्युम्नने अपने अस्त्रोंके प्रभावसे द्रोणाचार्यके चलाये हुए अस्त्रोंको निवारण करके उन्हें अनगिनत बाणोंसे छिपा दिया । तिसके अनन्तर पराक्रमी धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यकी रक्षाके वास्ते युद्धभूमिमें स्थित शिबि, वसाति, बाह्लिक और कुरुसेनाके योद्धाओंको भस्म करने लगे ॥ (३१-३३)

इस ही समय पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न अपने बाणोंसे सम्पूर्ण दिशाओंको परिपूरित करके किरणधारी प्रचण्ड सूर्यकी भांति रणभूमिके बीच प्रकाशित होने लगे ॥ तिसके अनन्तर द्रोणाचार्यने धृष्टद्युम्नके धनुषको काटके अपने तेज बाणोंसे उनके मर्मस्थानोंमें प्रहार किया। उस समय धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यके बाणोंसे पीडित होकर अत्यन्त ही कातर हुए । (३४-३५)

इसी समय भीमसेन अत्यन्त क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्यके रथको पकडके मृदुस्वरसे उनसे कहने लगे, यदि अस्त्र शस्त्रोंकी विद्या जानने वाले अधम ब्राह्मण लोग अपने जातीय कर्त्तव्य कर्मोंके अनुष्ठानसे विरत होकर युद्ध न करते तो कदापि क्षत्रियोंके कुलका नाश न होता ॥ हे ब्राह्मण ! देखो सब शास्त्रोंमें अहिंसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्य च ब्राह्मणो मूलं भवांश्च ब्रह्मवित्तमः ॥ ३८ ॥
श्वपाकवन्म्लेच्छगणान्हत्वा चाऽन्यान्पृथग्विधान् ।
अज्ञानान्मूढवद्ब्रह्मन्पुत्रदारधनेप्सया ॥ ३९ ॥
एकस्याऽर्थे बहून्हत्वा पुत्रस्याऽधर्मविद्यया ।
स्वकर्मस्थान्विकर्मस्थो न व्यपत्रपसे कथम् ॥ ४० ॥
यस्यार्थे शस्त्रमादाय यमपेक्ष्य च जीवसि ।
स चाऽद्य पतितः शेते पृष्टेनाऽऽवेदितस्तव ॥ ४१ ॥
धर्मराजस्य तद्वाक्यं नाऽभिशङ्कितुमर्हसि ।
एवमुक्तस्ततो द्रोणो भीमेनोत्सृज्य तद्धनुः ॥ ४२ ॥
सर्वाण्यस्त्राणि धर्मात्मा हातुकामोऽभ्यभाषत ।
कर्ण कर्ण महेष्वास कृप दुर्योधनेति च ॥ ४३ ॥
संग्रामे क्रियतां यत्नो ब्रवीम्येष पुनः पुनः ।
पाण्डवेभ्यः शिवं वोऽस्तु शस्त्रमभ्युत्सृजाम्यहम् ॥ ४४ ॥
इति तत्र महाराज प्राक्रोशद् द्रौणिमेव च ।

ही को पण्डितोंने श्रेष्ठ धर्म कहके वर्णन किया है, ब्राह्मण ही उस धर्मके आश्रयस्वरूप हैं और आप भी ब्रह्मज्ञ पुरुषोंमें अग्रगण्य ब्राह्मण हैं ॥ (३६–३८)

तब पुत्र, स्त्री और धनकी अभिलाषामें रत होकर आप अज्ञानताके कारण मूर्ख चाण्डालकी भांति म्लेच्छ आदि जातिके पुरुषोंको विशेष करके एक पुत्रके निमित्त अधर्मियोंकी भांति क्षत्रिय धर्ममें रत बहुतेरे क्षत्रियोंका अधर्मपूर्वक वध करके क्यों नहीं लज्जित होते हैं ? आप जिसके वास्ते शस्त्र धारण तथा जिसके मुखको देखकर जीवन धारण करते हैं; आज वही तुम्हारे पुत्र अश्वत्थामा मरकर पृथ्वीमें शयन कर रहे हैं ॥ आप धर्मराज युधिष्ठिरके कहे हुए इस वचनमें तनिक भी सन्देह न कीजिये । (३९–४२)

महाराज ! धर्मात्मा द्रोणाचार्य भीमसेनके इन सम्पूर्ण वचनोंको सुनकर शस्त्र परित्याग करनेकी इच्छासे अपना धनुष फेंककर यह वचन बोले, हे महाधनुषधारी कर्ण ! हे कृपाचार्य ! हे दुर्योधन! तुम सब कोई रणभूमिमें यत्नवान् होके युद्ध करो; मैं बार बार कहता हूं पाण्डवोंसे तुम लोगोंका अमंगल न होवे । परन्तु मैंने अब अपने इन शस्त्रोंको परित्याग किया ॥ हे राजेन्द्र ! उस समय द्रोणाचार्य ऐसा वचन कहके अश्वत्थामाका नाम लेकर ऊंचे स्वरसे रोदन करने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्सृज्य च रणे शस्त्रं रथोपस्थे निविश्य च ॥ ४५ ॥
अभयं सर्वभूतानां प्रददौ योगमीयिवान् ।
तस्य तच्छिद्रमाज्ञाय धृष्टद्युम्नः प्रतापवान् ॥ ४६ ॥
सशरं तद्धनुर्घोरं संन्यस्याऽथ रथे ततः ।
खड्गी रथादवप्लुत्य सहसा द्रोणमभ्ययात् ॥ ४७ ॥
हाहाकृतानि भूतानि मानुषाणीतराणि च ।
द्रोणं तथागतं दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नवशङ्गतम् ॥ ४८ ॥
हाहाकारं भृशं चक्रुरहो धिगिति चाऽब्रुवन् ।
द्रोणोऽपि शस्त्राण्युत्सृज्य परमं सांख्यमास्थितः ॥ ४९ ॥
तथोक्त्वा योगमास्थाय ज्योतिर्भूतो महातपाः ।
पुराणं पुरुषं विष्णुं जगाम मनसा परम् ॥ ५० ॥
मुखं किञ्चित्समुन्नाम्य विष्टभ्य उरसाग्रतः ।
निमीलिताक्षः सत्वस्थो निक्षिप्य हृदि धारणाम् ॥ ५१ ॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ज्योतिर्भूतो महातपाः ।
स्मरित्वा देवदेवेशमक्षरं परमं प्रभुम् ॥ ५२ ॥

लगे और उस रणभूमिमें शस्त्र परित्याग करके रथमें बैठकर योगयुक्त पुरुषकी भाँति परमेश्वरके ध्यानमें रत होकर सम्पूर्ण प्राणियोंको अभय दान किया । (४२–४६)

प्रतापी धृष्टद्युम्नने यह अच्छा अवसर पाया; उस समय वह बाण सहित भयङ्कर धनुषको रथमें रखके तलवार ग्रहण करके रथसे कूदकर द्रोणाचार्यकी ओर दौडे । महाराज ! द्रोणाचार्यको इस प्रकार धृष्टद्युम्नके वशमें होते देखकर मनुष्य तथा सम्पूर्ण प्राणी 'ओहो ! धिक्कार है । धिक्कार है !' ऐसे ही वचन कहते हुए हाहाकार करने लगे । (४६–४९)

इधर महातपस्वी द्रोणाचार्यने भी कर्ण आदि ऊपर कहे हुए वीरोंको सावधान करके शस्त्र परित्याग कर परम शान्त भाव अवलम्बन किया; और योगबलसे तेजोमय रूप धारण करके परम पुरुष सनातन विष्णु भगवान्का मनही मन ध्यान करने लगे ॥ तिसके अनन्तर वह ज्योतिर्मयी मूर्तिवाले महा तपस्वी द्रोणाचार्य अगाडी सिर नवाके वक्षस्थल स्तम्भित और आंख मूंदके शुद्ध भावसे हृदयमें धृति अवलम्बनपूर्वक सृष्टि पालक और लयकर्त्ता देवोंके देव अविनाशी ओंकार रूप एकाक्षर परब्रह्मको स्मरण करके पूर्वोक्त ऋषियोंके संग दुर्लभ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवमाक्रामदाचार्यः साक्षात्सद्भिर्दुराक्रमाम् ।
द्वौ सूर्याविति नो बुद्धिरासीत्तास्मिंस्तथा गते ॥ ५३ ॥
एकाग्रमिव चाऽऽसीच्च ज्योतिर्भिः पूरितं नभः ।
समपद्यत चाऽऽर्काभे भारद्वाजदिवाकरे ॥ ५४ ॥
निमेषमात्रेण च तज्ज्योतिरन्तरधीयत ।
आसीत्किलकिलाशब्दः प्रहृष्टानां दिवौकसाम् ॥५५॥
ब्रह्मलोकगते द्रोणे धृष्टद्युम्ने च मोहिते ।
वयमेव तदाऽद्राक्ष्म पञ्च मानुषयोनयः ॥ ५६ ॥
योगयुक्तं महात्मानं गच्छन्तं परमां गतिम् ।
अहं धनञ्जयः पार्थो भारद्वाजस्य चाऽऽत्मजः ॥ ५७ ॥
वासुदेवश्च वार्ष्णेयो धर्मपुत्रश्च पाण्डवः ।
अन्ये तु सर्वे नाऽपश्यन्भारद्वाजस्य धीमतः ॥ ५८ ॥
महिमानं महाराज योगयुक्तस्य गच्छतः ।
ब्रह्मलोकं महादिव्यं देवगुह्यं हि तत्परम् ॥ ५९ ॥
गतिं परमिकां प्राप्तमजानन्तो नृयोनयः ।
नाऽपश्यन्गच्छमानं हि तं सार्धमृषिपुङ्गवैः ॥ ६० ॥

स्वर्ग लोकको गया। (४९–५३)

महाराज! जब उन्होंने इस भांति स्वर्ग लोकमें गमन किया, उस समय उनके रथसे लेकर आकाशमार्ग दिव्य प्रकाशसे परिपूरित होगया; और हम लोगोंने भी उस समय समझा, कि आकाशमें दो सूर्य उदय हुए हैं। बरन द्रोणाचार्य के मरने के समय सूर्यकी ज्योतिके समान एक दूसरी ज्योति अधिक प्रकाशयुक्त दीख पडी थी; परन्तु निमेषभरके बीच वह ज्योति अन्तर्द्धान होगई। (५३–५५)

इसी भांति द्रोणाचार्य जब ब्रह्म लोकको गये और धृष्टद्युम्न मोहित हुए, तब उस समय देवता लोग प्रसन्नचितसे युक्त तथा आनन्दित हुए। जिस समय योगयुक्त महात्मा द्रोणाचार्य परमगतिको प्राप्त हुए; उस समय मनुष्योंके बीचमें केवल मैं, पृथापुत्र अर्जुन, भारद्वाजपुत्र अश्वत्थामा, वृष्णिनन्दन कृष्ण और धर्मपुत्र युधिष्ठिर हम लोग पांच पुरुषोंने उनका दर्शन किया था। देवताओंको भी कठिनतासे मालूम होने योग्य ब्रह्मलोकमें गमन करनेवाले योगयुक्त बुद्धिमान भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यकी उस महिमाको दूसरे कोई पुरुष भी जाननेमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्यं योगमास्थाय ब्रह्मलोकमरिन्दमम् ।
वितुन्नाङ्गं शरव्रातैर्न्यस्तायुधमसृक्क्षरम् ॥ ६१ ॥
धिक्कृतः पार्षतस्तं तु सर्वभूतैः परामृशत् ।
तस्य मूर्धानमालम्ब्य गतसत्त्वस्य देहिनः ॥ ६२ ॥
किञ्चिदब्रुवतः कायाद्विचकर्ताऽसिना शिरः ।
हर्षेण महता युक्तो भारद्वाजे निपातिते ॥ ६३ ॥
सिंहनादरवं चक्रे भ्रामयन्खड्गमाहवे ।
आकर्णपलितश्यामो वयसाऽशीतिपञ्चकः ॥ ६४ ॥
त्वत्कृते व्यचरत्संख्ये स तु षोडशवर्षवत् ।
उक्तवांश्च महाबाहुः कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ॥ ६५ ॥
जीवन्तमानयाऽऽचार्यं मा वधीर्द्रुपदात्मजः ।
न हन्तव्यो न हन्तव्य इति ते सैनिकाश्च ह ॥ ६६ ॥
उत्क्रोशन्नर्जुनश्चैव सानुक्रोशस्तमाव्रजत् ।
क्रोशमानेऽर्जुने चैव पार्थिवेषु च सर्वशः ॥ ६७ ॥

समर्थ नहीं हुए । मनुष्य लोग शत्रु-नाशन द्रोणाचार्यके परम गति प्राप्त होने के विषय को भी नहीं जान सके । (५५-६१)

अनन्तर धृष्टद्युम्नने जब अस्त्ररहित बाणोंसे क्षतविक्षत और उनके रुधिरपूरित शरीरको आक्रमण किया, उस समय सम्पूर्ण प्राणी उसे धिक्कार प्रदान करने लगे। पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने मौनावलम्बी प्राणरहित शरीरवाले द्रोणाचार्य के केशको ग्रहण करके तलवारसे उनका सिर काट डाला । इसी भांति जब द्रोणाचार्य मारे गये, तब धृष्टद्युम्न हर्षपूर्वक अपने तलवारको घुमाते हुए भयङ्कर सिंहनाद करने लगे । (६१-६४)

महाराज ! उस श्यामवर्ण रूपवाले आचार्यके केश पक गये थे और उनकी अवस्था भी पचासी वर्षकी थी; तौभी वह तुम्हारे हितकी अभिलाषासे सोलह वर्षवाले युवा पुरुषकी भांति युद्धभूमिमें भ्रमण करते थे । उनके वधके समय कुन्तीपुत्र अर्जुनने बार बार धृष्टद्युम्न से कहा था कि हे द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न ! आचार्यका वध मत करो; तुम उनको जीते ही ले आओ, और उस समय सम्पूर्ण सेनापति लोग भी आचार्यका वध मत करो, ऐसे ही वचनोंको कहते हुए धृष्टद्युम्नकी ओर दौडे । (६४-६७)

महाराज ! अर्जुन और सम्पूर्ण राजा लोग इसी भांति धृष्टद्युम्नको पुकारके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृष्टद्युम्नोऽवधीद् द्रोणं रथतल्पे नरर्षभम् ।
शोणितेन परिक्लिन्नो रथाद्भूमिमथाऽपतत् ॥ ६८ ॥
लोहिताङ्ग इवाऽऽदित्यो दुर्धर्षः समपद्यत ।
एवं तं निहतं संख्ये ददृशे सैनिको जनः ॥ ६९ ॥
धृष्टद्युम्नस्तु तद्राजन्भारद्वाजशिरोऽहरत् ।
तावकानां महेष्वासः प्रमुखे तत्समाक्षिपत् ॥ ७० ॥
ते तु दृष्ट्वा शिरो राजन्भारद्वाजस्य तावकाः ।
पलायनकृतोत्साहा दुद्रुवुः सर्वतोदिशम् ॥ ७१ ॥
द्रोणस्तु दिवमास्थाय नक्षत्रपथमाविशत् ।
अहमेव तदाऽद्राक्षं द्रोणस्य निधनं नृप ॥ ७२ ॥
ऋषेः प्रसादात्कृष्णस्य सत्यवत्याः सुतस्य च ।
विधूमामिह सयान्तीमुल्कां प्रज्वलितामिव ॥ ७३ ॥
अपश्याम दिवं स्तब्धा गच्छन्तं तं महाद्युतिम् ।
हते द्रोणे निरुत्साहाः कुरुपाण्डवसृञ्जयाः ॥ ७४ ॥

उन्हें द्रोणाचार्यके वध करनेसे निवारण कर रहे थे, तौभी पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने रथमें बैठे हुए द्रोणाचार्यका वध किया। हे राजेन्द्र ! जब द्रोणाचार्य रुधिरपूरित शरीरसे युक्त होकर रथसे पृथ्वी पर गिरे, उस समय ऐसा मालूम हुआ मानो अरुणकान्तिवाले महातेजस्वी सूर्य पृथ्वीपर पडे हुए है। इसी प्रकार सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंने द्रोणाचार्यको रणभूमिके बीच मरते हुए देखा ॥ (६७—६९)

इधर महाधनुर्द्धर धृष्टद्युम्नने भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्यके सिरको काटके तुम्हारी सेनाके पुरुषोंकी ओर फेंक दिया ॥ कौरव लोग द्रोणाचार्यके कटे हुए सिरको देख कर उत्साहरहित होकर रणभूमिसे चारों ओर भागने लगे ॥ इसही समय द्रोणाचार्य आकाश मार्ग अतिक्रम करके धीरे धीरे नक्षत्रमण्डलमें प्रविष्ट हुए। उनके मृत्युके इस अद्भुत व्यापारको सत्यवतीपुत्र भगवान् वेदव्यासकी कृपासे मैंने भी अवलोकन किया था। जब महातेजस्वी द्रोणाचार्य धूएंसे रहित प्रज्वलित लुक्कीकी भांति प्रकाशित होते हुए आकाशमार्गसे गमन करने लगे, तब हम लोग इकटक नेत्रसे आकाश मार्गकी ही ओर देखने लगे। (७०-७४)

द्रोणाचार्यके मरने पर कौरव, पाण्डव और सृञ्जय लोग उत्साह रहित होगये, और क्षण भरके बीच तुम्हारी सेनाके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यद्रवन्महावेगास्ततः सैन्यं व्यदीर्यत ।
निहता हतभूयिष्ठाः संग्रामे निशितैः शरैः ॥ ७५ ॥
तावका निहते द्रोणे गतासव इवाऽभवन् ।
पराजयमथाऽवाप्य परत्र च महद्भयम् ॥ ७६ ॥
उभयेनैव ते हीना नाऽविन्दन्धृतिमात्मनः ।
अन्विच्छन्तः शरीरं तु भारद्वाजस्य पार्थिवाः॥ ७७ ॥
नाऽन्वगच्छन्महाराज कबन्धायुतसंकुले ।
पाण्डवास्तु जयं लब्ध्वा परत्र च महद्यशः ॥ ७८ ॥
बाणशङ्खरवांश्चक्रुः सिंहनादांश्च पुष्कलान् ।
भीमसेनस्ततो राजन्धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ ७९ ॥
वरूथिन्यामनृत्येतां परिष्वज्य परस्परम् ।
अब्रवीच तदा भीमः पार्षतं शत्रुतापनम् ॥ ८० ॥
भूयोऽहं त्वां विजयिनं परिष्वज्यामि पार्षत ।
सूतपुत्रे हते पापे धार्तराष्ट्रे च संयुगे ॥ ८१ ॥

सम्पूर्ण योद्धा लोग छिन्न भिन्न होकर चारों ओर भागने लगे ॥ भागनेके समय तुम्हारी सेनाके कितने ही पुरुष शत्रुओंके तेज बाणोंसे मर गये और कितनेही घायल होके पृथ्वी पर गिरने लगे ॥ अधिक क्या कहा जावे, द्रोणाचार्यके मरनेसे तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग उत्साहरहित होकर चेत रहितकी भांति दिखाई देने लगे । उस समय कुरुसेनाके सम्पूर्ण वीर अपनी पराजय और परिणाममें महाभय उपस्थित हुआ समझके इस प्रकार निस्तेज होगये, कि किसी भांति युद्धभूमिमें खडे न होसके। उस समय सेनापति तथा राजा लोग अनगिनत कबन्धोंसे युक्त रणभूमिके बीच द्रोणाचार्यके मृत शरीरको चारों ओर खोजके भी न पासके।(७४-७८)

इधर पाण्डव लोग उस समय विजय लाभ और भविष्यमें बहुत बडा यश विस्तार हुआ, ऐसा समझके धनुष टङ्कार करते हुए शंख बजा कर महाघोर सिंहनाद करने लगे । इस ही समय पृषत्पुत्र धृष्टद्युम्न पाण्डवोंकी व्यूहबद्ध सेनाके बीच प्रवेश करके भीमसेनसे मिले और उन दोनोंने आपसमें उस समय एक दूसरेको आलिङ्गन करके आनन्दसे नृत्य किया । अनन्तर भीमसेन शत्रुनाशन धृष्टद्युम्नसे बोले, हे पाञ्चालराजपुत्र ! जब पापी सूतपुत्र और दुर्योधनके मरने पर तुम विजय लाभ करोगे; तब मैं फिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतावदुक्त्वा भीमस्तु हर्षेण महता युतः ।
बाहुशब्देन पृथिवीं कम्पयामास पाण्डवः ॥ ८२ ॥
तस्य शब्देन वित्रस्ताः प्राद्रवंस्तावका युधि ।
क्षत्रधर्मं समुत्सृज्य पलायनपरायणाः ॥ ८३ ॥
पाण्डवास्तु जयं लब्ध्वा हृष्टा ह्यासन्विशाम्पते ।
अरिक्षयं च संग्रामे तेन ते सुखमाप्नुवन् ॥ ८४ ॥ [८८९०]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि द्रोणवधे द्विनवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९२ ॥ समाप्तं द्रोणवधपर्व ॥

अथ नारायणास्त्रमोक्षपर्व ।

सञ्जय उवाच— ततो द्रोणे हते राजन्कुरवः शस्त्रपीडिताः ।
हतप्रवीरा विध्वस्ता भृशं शोकपरायणाः ॥ १ ॥
उदीर्णांश्च परान्दृष्ट्वा कम्पमानाः पुनः पुनः ।
अश्रुपूर्णेक्षणास्त्रस्ता दीनास्त्वासन्विशाम्पते ॥ २ ॥
विचेतसो हतोत्साहाः कश्मलाभिहतौजसः ।

तुम्हें आलिङ्गन करूंगा । (७८–८१)

ऐसा वचन कहके भीमसेनने अत्यन्त हर्षके सहित ताल ठोंका, उस समय भीमसेनके बाहुशब्दसे पृथ्वी कांपने लगी ॥ तुम्हारी ओरके योद्धा लोग भीमसेनकी भुजाके शब्दसे भयभीत होकर क्षत्रिय धर्मको त्याग कर युद्धभूमिमें चारों ओर भागने लगे ॥ महाराज! इसी भांति पाण्डव लोग विजय लाभ करके तथा उन लोगोंके प्रबलशत्रु द्रोणाचार्य युद्धभूमिमें मारे गये, इस कारण अत्यन्तही हर्षित होकर अपार सुख अनुभव करने लगे ॥ (८२–८४) [८८९०]

द्रोणपर्वमें एकसौ बानव्वे अध्याय और द्रोणवधपर्व समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ तिरानव्वे अध्याय और नारायणास्त्रमोक्षपर्व ।

सञ्जय बोले, महाराज ! द्रोणाचार्य तथा मुख्य मुख्य शूरवीरोंके मारे जाने पर शत्रुओंके अस्त्रोंसे पीडित कुरुसेनाके पुरुषोंका नाश होने लगा, और वे लोग महाघोर शोकरूपी समुद्रमें डूबने लगे। विशेष करके शत्रुसेनाके पुरुषोंको बार बार हर्षपूर्वक अपनी ओर दौडते देख, तुम्हारी सेनाके पुरुष भयभीत होगये, उस समय उन लोगोंकी आखोंमें आंसू भर आये और वे सम्पूर्ण लोग, द्रोणाचार्यके मरनेके शोकसे अत्यन्त ही कातर और त्रस्त हुए ॥ (१–२)

महाराज ! जैसे पहिले समय में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्तस्वरेण महता पुत्रं ते पर्यवारयन् ॥ ३ ॥
रजस्वला वेपमाना वीक्षमाणा दिशो दश ।
अश्रुकण्ठा यथा दैत्या हिरण्याक्षे पुरा हते ॥ ४ ॥
स तैः परिवृतो राजा त्रस्तैः क्षुद्रमृगैरिव ।
अशक्नुवन्नवस्थातुमपायात्तनयस्तव ॥ ५ ॥
क्षुत्पिपासापरिम्लानास्ते योधास्तव भारत ।
आदित्येनेव सन्तप्ता भृशं विमनसोऽभवन् ॥ ६ ॥
भास्करस्येव पतनं समुद्रस्येव शोषणम् ।
विपर्यासं यथा मेरोर्वासवस्येव निर्जयम् ॥ ७ ॥
अमर्षणीयं तद् दृष्ट्वा भारद्वाजस्य पातनम् ।
त्रस्तरूपतरा राजन्कौरवाः प्राद्रवन्भयात् ॥ ८ ॥
गान्धारराजः शकुनिस्त्रस्तस्त्रस्ततरैः सह ।
हतं रुक्मरथं श्रुत्वा प्राद्रवत्सहितो रथैः ॥ ९ ॥
वरूथिनीं वेगवतीं विद्रुतां सपताकिनीम् ।

हिरण्याक्ष नामक दैत्य के मारे जाने पर असुर लोग मलिन, उत्साहरहित और दुःखित होकर आखोंसे आंसू बहाते और दशों दिशाको अवलोकन करते हुए, हिरण्यकश्यपको घेरकर स्थित हुए थे, वैसे ही कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग द्रोणाचार्यके मरनेसे तेजरहित और उत्साह शून्य होकर आर्त्तनाद करते हुए तुम्हारे पुत्र दुर्योधनको घेरकर स्थित हुए ॥ (३-४)

पुरुषसिंह राजा दुर्योधन त्रस्त हुए क्षुद्र मृगोंके समान उन योद्धाओंके बीचमें घिरकर द्रोणाचार्यके मरनेसे त्रस्त हो कर युद्धभूमिमें स्थित न होसके; और शीघ्रताके सहित भागने लगे ॥ उस समय सेनाके योद्धा लोग पहिलेसे ही भूख प्याससे कातर होरहे थे, उसपर भी सूर्यकी प्रचण्ड किरणोंसे उत्तप्त होकर अत्यन्त ही व्याकुल हुए ॥ अधिक क्या कहूं, समुद्र सूखने, सूर्यके पृथ्वीपर गिरने, सुमेरपर्वतके धरतीसे मिल जाने तथा देवराज इन्द्रकी पराजयकी भांति भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्यकी मृत्युरूपी असम्भव व्यापार को देख कर कुरुसेना के मुख्य सेनापति भी भयभीत होकर युद्धभूमिसे भागने लगे ॥ (५-८)

गान्धारराज शकुनि द्रोणाचार्यके मरनेका वृत्तान्त सुनके अत्यन्त भयभीत होके भयातुर रथियोंकी सेनाके सहित भागे ॥ सूतपुत्र कर्ण युद्धभूमिसे भागने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिगृह्य महासेनां सूतपुत्रोऽपयाद्द्रुतम् ॥ १० ॥
रथनागाश्वकलिलां पुरस्कृत्य तु वाहिनीम् ।
मद्राणामीश्वरः शल्यो वीक्ष्यमाणोऽपयाद्द्रुतम् ॥११॥
हतप्रवीरैर्भूयिष्ठैर्ध्वजैर्बहुपताकिभिः ।
वृतः शारद्वतोऽगच्छत्कष्टं कष्टमिति ब्रुवन् ॥ १२ ॥
भोजानीकेन शिष्टेन कालिङ्गारट्टवाह्लिकैः ।
कृतवर्मा वृतो राजन्प्रायात्सुजवनैर्हयैः ॥ १३ ॥
पदातिगणसंयुक्तस्त्रस्तो राजन्भयार्दितः ।
उलूकः प्राद्रवत्तत्र दृष्ट्वा द्रोणं निपातितम् ॥ १४ ॥
दर्शनीयो युवा चैव शौर्येण कृतलक्षणः ।
दुःशासनो भृशोद्विग्नः प्राद्रवद्गजसंवृतः ॥ १५ ॥
रथानामयुतं गृह्य त्रिसाहस्रं च दन्तिनाम् ।
वृषसेनो ययौ तूर्णं दृष्ट्वा द्रोणं निपातितम् ॥ १६ ॥
गजाश्वरथसंयुक्तो वृतश्चैव पदातिभिः ।
दुर्योधनो महाराज प्रायात्तत्र महारथः ॥ १७ ॥
संशप्तकगणान्गृह्य हतशेषान्किरीटिना ।

की इच्छा करनेवाली व्यूहबद्ध महासेना के योद्धाओंको युद्धसे निवृत्त करके युद्धभूमिसे भागने लगे ॥ मद्रराज शल्य हाथी, घोडे और रथोंसे युक्त अपनी सेनाको आगे करके चारों ओर देखते हुए भयभीत होके भागने लगे ॥ शरद्वतपुत्र कृपाचार्य अनेक पताकाओंसे शोभित, जिसके शूरवीर मारे गये हैं ऐसी सेनामें घिरकर हा कष्ट ! हा कष्ट ! ऐसे ही वचनको कहते हुए भागनेमें प्रवृत्त हुए ॥ (९-१२)

कृतवर्मा युद्धविद्यामें शिक्षित भोज, कलिंग, अरट्ट और बाह्लिकदेशीय सेनाके सहित महावेगगामी घोडोंसे युक्त रथपर चढके युद्धभूमिसे भागे ॥ शकुनिपुत्र उलूक द्रोणाचार्यको मरते देख, पैदल सेनाके योद्धाओंके सहित अत्यन्त भयभीत होके युद्धभूमिसे भागे ॥ पराक्रमी राजपुत्र वीर दुःशासन अत्यन्त ही व्याकुल हुए और गजसेनाके सहित वेगपूर्वक भागने लगे ॥ (१३-१५)

कर्णपुत्र वृषसेनने द्रोणाचार्यको मरते देख, दश हजार रथ और तीन हजार हाथियोंकी सेनाके सहित युद्धभूमिसे प्रस्थान किया ॥ अधिक क्या कहूं, महारथी राजा दुर्योधन हाथी, घोडे, रथी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशर्मा प्राद्रवद्राजन्दृष्ट्वा द्रोणं निपातितम् ॥ १८ ॥
गजान्रथान्समारुह्य व्युदस्य च हयाञ्जनाः।
प्राद्रवन्सर्वतः संख्ये दृष्ट्वा रुक्मरथं हतम् ॥ १९ ॥
त्वरयन्तः पितॄनन्ये भ्रातॄनन्येऽथ मातुलान्।
पुत्रानन्ये वयस्यांश्च प्राद्रवन्कुरवस्तदा ॥ २० ॥
चोदयन्तश्च सैन्यानि स्वस्त्रीयांश्च तथाऽपरे।
सम्बन्धिनस्तथाऽन्ये च प्राद्रवन्त दिशो दश ॥ २१ ॥
प्रकीर्णकेशा विध्वस्ता न द्वावेकत्र धावतः।
नेदमस्तीति मन्वाना हतोत्साहा हतौजसः ॥ २२ ॥
उत्सृज्य कवचानन्ये प्राद्रवंस्तावका विभो।
अन्योन्यं ते समाक्रोशन्सैनिका भरतर्षभ ॥ २३ ॥
तिष्ठ तिष्ठेति न च ते स्वयं तत्राऽवतस्थिरे।
धुर्यानुन्मुच्य च रथाद्धतसूतास्त्वलंकृतान्।
अधिरुह्य हयान्योधाः क्षिप्रं पद्भिरचोदयन् ॥ २४ ॥

आदि चतुरङ्गिणी सेनाके सहित युद्ध-भूमिसे भागने लगे ॥ संशप्तक सेनाके नायक सुशर्माने द्रोणाचार्यको मरे हुए देखकर अर्जुनके अस्त्रोंके प्रहारसे मरने से बची हुई संशप्तक सेना के सहित युद्धभूमिसे प्रस्थान किया ॥ (१६-१८)

इसी भांति द्रोणाचार्यको मरते देख, कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंने युद्धभूमिके बीच दूसरे पुरुषोंके हाथी घोडे और रथ आदि जो वाहन सम्मुख पाये, उस ही पर चढके पिता, पुत्र, भाई, मामा, मित्र, भानजे और कोई अपनी सेनाके पुरुषों तथा कोई कोई अपने सम्बन्धीय पुरुषोंको युद्धभूमिसे लौटाकर शीघ्रतापूर्वक रण-भूमिसे भागने लगे ॥ (१९-२१)

भागनेके समय किसीके केशबंध मुक्त हुए तथा दो इकट्ठे होकर भी गमन न कर सके; केवल अब "किसीकी रक्षा नहीं हो सकेगी," ऐसा विचारके तेज और उत्साहसे हीन होगये तथा कवच उतार ऊंचे स्वरसे एक दूसरेको आवाहन करते हुए वेगपूर्वक भागने लगे। महाराज ! वे सम्पूर्ण योद्धा लोग दूसरे पुरुषोंके "ठहरो ठहरो !" ऐसे वचनोंको सुन कर क्षण भर भी युद्धभूमिके बीच खडे न होसके। अधिक क्या कहा जावे उस समय सेनाके शूरवीर योद्धा लोग ऐसे व्याकुल हो गये थे, कि सारथि रहित अपने रथोंके सुन्दर अलङ्कारोंसे भूषित घोडोंको ही रथसे खोलके उसीपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रवमाणे तथा सैन्ये त्रस्तरूपे हतौजसि ।
प्रतिस्रोत इव ग्राहो द्रोणपुत्रः परानियात् ॥ २५ ॥
तस्याऽऽसीत्सुमहद्युद्धं शिखण्डिप्रमुखैर्गणैः ।
प्रभद्रकैश्च पञ्चालैश्चेदिभिश्च सकेकयैः ॥ २६ ॥
हत्वा बहुविधाः सेनाः पाण्डूनां युद्धदुर्मदः ।
कथञ्चित्सङ्कटान्मुक्तो मत्तद्विरदविक्रमः ॥ २७ ॥
द्रवमाणं बलं दृष्ट्वा पलायनकृतक्षणम् ।
दुर्योधनं समासाद्य द्रोणपुत्रोऽब्रवीदिदम् ॥ २८ ॥
किमियं द्रवते सेना त्रस्तरूपेव भारत ।
द्रवमाणां च राजेन्द्र नाऽवस्थापयसे रणे ॥ २९ ॥
त्वं चापि न यथापूर्वं प्रकृतिस्थो नराधिप ।
कर्णप्रभृतयश्चेमे नाऽवतिष्ठन्ति पार्थिव ॥ ३० ॥
अन्येष्वपि च युद्धेषु नैव सेनाऽद्रवत्तदा ।
कच्चित्क्षेमं महाबाहो तव सैन्यस्य भारत ॥ ३१ ॥

चढकर पांवोंसे दौडाते हुए वेगपूर्वक भागने लगे ॥ (२२-२४)

जब तेजरहित तथा भयभीत होकर तुम्हारी सेनाके सम्पूर्ण शूरवीर योद्धा लोग भागने लगे, उस समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा शत्रुओंकी ओर इस प्रकार दौडे जैसे महाबलवान् ग्राह समुद्रकी लहरके वेगमें निर्भर चित्तसे सीधा चढता है ॥ उस समय शिखण्डी आदि पाञ्चाल, प्रभद्रक, चेदी और केकय देशीय योद्धाओंके सङ्ग अश्वत्थामाका महाघोर संग्राम हुआ ॥ (२५-२६)

अनन्तर मतवारे हाथीकी भांति महापराक्रमी युद्ध दुर्मद अश्वत्थामा पाण्डवोंकी बहुतसी सेनाका नाश करके फिर अत्यन्त कष्टके सहित उस महाघोर सङ्कटसे मुक्त हुए; तिसके अनन्तर अश्वत्थामा कौरवोंकी सेनाको भागनेमें तत्पर तथा भयभीत होके चारों ओर भागती देख, दुर्योधनके समीप जाकर उनसे बोले, हे भारत ! तुम्हारी सेनाके योद्धा लोग इस प्रकारसे क्यों भयभीत होगये हैं ? और आप इन सम्पूर्ण योद्धाओंको भागते देखकर क्यों नहीं लौटाके युद्धमें प्रवृत्त करते हैं ? (२७-२९)

मैं तुम्हें भी पहिलेकी भांति सावधान नहीं देखता हूं ! विशेष करके कर्ण आदि सेनापति भी युद्धभूमिमें स्थित नहीं होते हैं; ऐसा क्यों हो रहा है ! कभी तो किसी युद्धमें सेनाके योद्धा इस प्रकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्मिन्निदं हते राजन्रथसिंहे बलं तव ।
एतामवस्थां सम्प्राप्तं तन्ममाऽऽचक्ष्व कौरव ॥ ३२ ॥
तत्तु दुर्योधनः श्रुत्वा द्रोणपुत्रस्य भाषितम् ।
घोरमप्रियमाख्यातुं नाऽशक्नोत्पार्थिवर्षभः ॥ ३३ ॥
भिन्ना नौरिव ते पुत्रो मग्नः शोकमहार्णवे ।
बाष्पेणाऽपिहितो दृष्ट्वा द्रोणपुत्रं रथे स्थितम् ॥ ३४ ॥
ततः शारद्वतं राजा सव्रीडमिदमब्रवीत् ।
शंसाऽत्र भद्रं ते सर्वं यथा सैन्यमिदं हतम् ॥ ३५ ॥
अथ शारद्वतो राजन्नार्तिमार्च्छन्पुनः पुनः ।
शशंस द्रोणपुत्राय यथा द्रोणो निपातितः ॥ ३६ ॥

कृप उवाच— वयं द्रोणं पुरस्कृत्य पृथिव्यां प्रवरं रथम् ।
प्रावर्तयाम संग्रामं पञ्चालैरेव केवलम् ॥ ३७ ॥
ततः प्रवृत्ते संग्रामे विमिश्राः कुरुसोमकाः ।
अन्योन्यमभिगर्जन्तः शस्त्रैर्देहानपातयन् ॥ ३८ ॥
वर्तमाने तथा युद्धे क्षीयमाणेषु संयुगे ।

नहीं भागे थे । हे महाबाहु महाराज दुर्योधन ! तुम्हारी सेनामें कुशल मङ्गल तो है ? किस रथिश्रेष्ठके मरनेसे सेनाके योद्धाओंकी ऐसी दशा हुई है; वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मेरे निकट प्रकाशरूपसे वर्णन करो ॥ (३०-३२)

महाराज ! राजाओंमें श्रेष्ठ कुरुराज दुर्योधन द्रोणाचार्यके मरनेसे शोकरूपी समुद्रमें स्थित गुरुपुत्र अश्वत्थामाको देखकर तथा उनके वचनोंको सुनकर द्रोणवध रूपी भयङ्कर अप्रिय वचन बोलनेमें समर्थ नहीं हुए ॥ उस समय दुर्योधन लज्जित होकर कृपाचार्यसे यह वचन बोले, कि सेनाके सम्पूर्ण पुरुष किस कारणसे भाग रहे हैं; आप उस वृत्तान्तको गुरुपुत्र अश्वत्थामाके समीप वर्णन कीजिये ॥ तब शरद्वतपुत्र कृपाचार्य बार बार शोक प्रकाश करके जिस प्रकार द्रोणाचार्य मारे गये, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त अश्वत्थामाके समीप वर्णन करने लगे ॥ (३३-३६)

कृपाचार्य बोले, हे अश्वत्थामन् । हम लोग पृथ्वीके सम्पूर्ण रथियोंमें अग्रगण्य द्रोणाचार्यको आगे कर पाञ्चाल योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए थे ॥ अनन्तर युद्धभूमिमें दोनों ओरकी सेनाके पुरुष आपसमें युद्ध करके एक दूसरेका वध कर रहे थे, उस युद्धके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्तराष्ट्रेषु संक्रुद्धः पिता तेऽस्त्रमुदैरयत् ॥ ३९ ॥
ततो द्रोणो ब्राह्ममस्त्रं विकुर्वाणो नरर्षभः ।
व्यहनच्छात्रवान्भल्लैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ४० ॥
पाण्डवाः केकया मत्स्याः पञ्चालाश्च विशेषतः ।
संख्ये द्रोणरथं प्राप्य व्यनशन्कालचोदिताः ॥ ४१ ॥
सहस्रं नरसिंहानां द्विसाहस्रं च दन्तिनाम् ।
द्रोणो ब्रह्मास्त्रयोगेन प्रेषयामास मृत्यवे ॥ ४२ ॥
आकर्णपलितश्यामो वयसाऽशीतिपञ्चकः ।
रणे पर्यचरद् द्रोणो वृद्धः षोडशवर्षवत् ॥ ४३ ॥
क्लिश्यमानेषु सैन्येषु वध्यमानेषु राजसु ।
अमर्षवशमापन्नाः पञ्चाला विमुखाऽभवन् ॥ ४४ ॥
तेषु किञ्चित्प्रभग्नेषु विमुखेषु सपत्नजित् ।
दिव्यमस्त्रं विकुर्वाणो बभूवाऽर्क इवोदितः ॥ ४५ ॥
स मध्यं प्राप्य पाण्डूनां शररश्मिः प्रतापवान् ।

समय कौरवोंकी ओरके अनगिनत योद्धाओंका नाश होने लगा; तब पुरुषश्रेष्ठ पराक्रमी द्रोण ब्रह्मास्त्रको छोडकर भल्लास्त्रसे शत्रुओंकी ओरके सैकडों सहस्रों योद्धाओंका वध करने लगे ॥ (३७-४०)

पाण्डवोंकी ओरके कैकय, मत्स्य, विशेष करके पाञ्चाल देशीय सेनाके योद्धालोग काल प्रेरित होकर द्रोणाचार्यके रथके समीप पहुंचते ही प्राण रहित होके पृथ्वीमें गिर पडे ॥ उस समय उन्होंने ब्रह्मास्त्रके प्रभावसे पाण्डवोंकी सेनाके एक हजार मुख्य मुख्य योद्धाओं और दो हजार हाथियों को यमपुरी में भेज दिया ॥ वह श्यामस्वरूपवाले द्रोणाचार्य केश पकने तथा पचासी वर्ष की अवस्था होने पर भी रणभूमिमें सोलहवर्षवाले युवापुरुषकी भांति चारों ओर घूमने लगे ॥ (४१—४३)

इसी भांति जब पाण्डवोंकी सेना नष्ट होने लगी और शूरवीर राजा लोग द्रोणाचार्यके अस्त्रोंसे पीडित हुए। तब पाञ्चाल योद्धा लोग क्रुद्ध होकर भी उनके सम्मुख खडे न होसके ॥ धीरे धीरे पाञ्चाल सेनाके बहुतसे योद्धा मारे गये और मरनेसे बाकी बचे हुए पाञ्चाल लोग उनके सम्मुखसे भाग गये। उस समय शत्रुनाशन द्रोणाचार्य दिव्यास्त्रके प्रभावसे सूर्यकी भांति प्रकाशित होने लगे। अधिक क्या कहा जावे, उस समय तुम्हारे पिता द्रोणाचार्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यं गत इवाऽऽदित्यो दुष्प्रेक्ष्यस्ते पिताऽभवत् ॥४६॥
ते दह्यमाना द्रोणेन सूर्येणेव विराजता ॥
दग्धवीर्या निरुत्साहा बभूवुर्गतचेतसः ॥ ४७ ॥
तान्दृष्ट्वा पीडितान्बाणैर्द्रोणेन मधुसूदनः ।
जयैषी पाण्डुपुत्राणामिदं वचनमब्रवीत् ॥ ४८ ॥
नैष जातु नरैः शक्यो जेतुं शस्त्रभृतां वरः ।
अपि वृत्रहणा सङ्ख्ये रथयूथपयूथपः ॥ ४९ ॥
ते यूयं धर्ममुत्सृज्य जयं रक्षत पाण्डवाः ।
यथा वः संयुगे सर्वान्न हन्याद्रुक्मवाहनः ॥ ५० ॥
अश्वत्थाम्नि हते नैष युध्येदिति मतिर्मम ।
हतं तं संयुगे कश्चिदाख्यात्वस्मै मृषा नरः ॥ ५१ ॥
एतन्नाऽरोचयद्वाक्यं कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ।
अरोचयंस्तु सर्वेऽन्ये कृच्छ्रेण तु युधिष्ठिरः ॥ ५२ ॥
भीमसेनस्तु सव्रीडमब्रवीत्पितरं तव ।

पाण्डवोंकी सेनाके बीच प्रवेश करके सहस्र किरणधारी सूर्यकी भांति शोभित हुए ॥ (४४—४६)

रणभूमिमें स्थित पाण्डवोंकी सेना द्रोणाचार्यके अस्त्ररूपी अग्निसे भस्म, तेज रहित, उत्साह शून्य और चेतरहितके समान होगयी ॥ पाण्डवोंके हितैषी श्रीकृष्ण सम्पूर्ण योद्धाओंको द्रोणाचार्यके अस्त्रोंसे मरते तथा पीडित होते देख कर उन लोगोंसे बोले, रथ यूथपतियों के भी यूथपति शस्त्रधारी पुरुषोंमें अग्रगण्य द्रोणाचार्यको मनुष्य लोग कदापि पराजित नहीं कर सकेंगे; औरकी तो कुछ बात ही नहीं है, स्वयं वज्रधारी इन्द्र भी द्रोणाचार्यको पराजित करनेमें समर्थ नहीं हैं ॥ (४७-४९)

हे पाण्डवगण ! लाल घोडेसे युक्त द्रोणाचार्य जब तक तुम लोगोंका नाश नहीं करते हैं, उससे पहिले ही तुम लोग विशेष रूपसे सावधान हो जाओ। मेरे विचारमें तुम लोगोंको इस समय धर्म त्यागके विजय प्राप्त करनेमें यत्नवान् होना उचित है, कि अश्वत्थामाका मरना सुनके द्रोणाचार्य युद्ध करनेमें समर्थ न होंगे, इससे कोई पुरुष "अश्वत्थामा मारे गये" यह मिथ्या वचन उनके समीपमें जाकर सुनावे ॥ कुन्तीपुत्र अर्जुन श्रीकृष्णके इस वचनमें सहमत नहीं हुए; परन्तु और सब कोई तथा राजा युधिष्ठिरने भी श्रीकृष्णके इस वचन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वत्थामा हत इति तं नाऽबुध्यत ते पिता ॥ ५३ ॥
स शङ्कमानस्तन्मिथ्या धर्मराजमपृच्छत ।
हतं वाऽप्यहतं वाऽऽजौ त्वां पिता पुत्रवत्सलः ॥ ५४ ॥
तमतथ्यभये मग्नो जये सक्तो युधिष्ठिरः ।
अश्वत्थामानमायोधे हतं दृष्ट्वा महागजम् ॥ ५५ ॥
भीमेन गिरिवर्ष्माणं मालवस्येन्द्रवर्मणः ।
उपसृत्य तदा द्रोणमुच्चैरिदमुवाच ह ॥ ५६ ॥
यस्याऽर्थे शस्त्रमादत्से यमवेक्ष्य च जीवसि ।
पुत्रस्ते दयितो नित्यं सोऽश्वत्थामा निपातितः ॥ ५७ ॥
शेते विनिहतो भूमौ वने सिंहशिशुर्यथा ॥ ५८ ॥
जानन्नप्यनृतस्याऽथ दोषान्स द्विजसत्तमम् ।
अव्यक्तमब्रवीद्राजा हतः कुञ्जर इत्युत ॥ ५९ ॥
स त्वां निहतमाक्रन्दे श्रुत्वा सन्तापतापितः ।
नियम्य दिव्यान्यस्त्राणि नाऽयुध्यत यथा पुरा ॥ ६० ॥

को स्वीकार किया ॥ (५०-५२)

तिसके अनन्तर भीमसेन लज्जापूर्वक तुम्हारे पिताके निकट जाके 'अश्वत्थामा मारे गये' ऐसा वचन बोले; परन्तु उन्होंने भीमसेनके वचनका विश्वास नहीं किया; परन्तु उस मिथ्या वचनसे शङ्कित होकर तुम्हारे वात्सल्य प्रेमसे मरना सत्य है, वा मिथ्या है; उसे जाननेके वास्ते उन्होंने युधिष्ठिरसे पूंछा, कि हे युधिष्ठिर ! क्या मेरा पुत्र अश्वत्थामा मारा गया ? (५३—५४)

तब मिथ्या बोलनेसे भयभीत और विजयकी आशासे आसक्तचित्त होके राजा युधिष्ठिर मालवराज इन्द्रवर्माके बडे शरीरवाले अश्वत्थामा नाम हाथीको भीमसेनके हाथसे मरा हुआ देखकर द्रोणाचार्यके समीप गमन करके ऊंचे स्वरसे उनसे यह वचन बोले, 'हे आचार्य! आप जिसके वास्ते अस्त्रशस्त्रोंको धारण किये हैं; तुम्हारे वही अत्यन्त प्रिय पुत्र अश्वत्थामा मरकर सिंह पुत्रकी भांति पृथ्वी पर शयन कर रहे हैं।' हे तात ! राजा युधिष्ठिर मिथ्या बोलनेके दोषको जानके भी द्विजसत्तम द्रोणाचार्यके निकट यह सम्पूर्ण वचन कहके अन्तमें मन ही मन धीरेसे 'हाथी मारा गया है,' ऐसा वचन बोले ॥ (५५-५९)

अनन्तर द्रोणाचार्य संग्रामभूमिमें तुम्हारा मरना सुनके अत्यन्त शोकित हुए, उस समय उन्होंने दिव्य अस्त्रोंको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं दृष्ट्वा परमोद्विग्नं शोकातुरमचेतसम् ।
पाञ्चालराजस्य सुतः क्रूरकर्मा समाद्रवत् ॥ ६१ ॥
तं दृष्ट्वा विहितं मृत्युं लोकतत्त्वविचक्षणः ।
दिव्यान्यस्त्राण्यथोत्सृज्य रणे प्रायमुपाविशत्॥ ६२ ॥
ततोऽस्य केशान्सव्येन गृहीत्वा पाणिना तदा ।
पार्षतः क्रोशमानानां वीराणामच्छिनच्छिरः ॥ ६३ ॥
न हन्तव्यो न हन्तव्य इति ते सर्वतोऽब्रुवन् ।
तथैव चाऽर्जुनो वाहादवरुह्यैनमाद्रवत ॥ ६४ ॥
उद्यम्य त्वरितो बाहुं ब्रुवाणश्च पुनः पुनः ।
जीवन्तमानयाऽचार्यं माऽवधीरिति धर्मवित् ॥ ६५ ॥
तथा निवार्यमाणेन कौरवैरर्जुनेन च ।
हत एव नृशंसेन पिता तव नरर्षभ ॥ ६६ ॥
सैनिकाश्च ततः सर्वे प्राद्रवन्त भयार्दिताः ।

परित्याग करके पहिलेकी भांति युद्ध नहीं किया ॥ तब उस समय निष्ठुर स्वभावसे युक्त पाञ्चालराज पुत्र धृष्टद्युम्न अत्यन्त व्याकुल तुम्हारे मरनेके शोकसे दुःखित द्रोणाचार्यको चेतरहित प्राय होते देख, उनकी ओर दौडा ॥ (६०-६१)

लोकतत्त्वके जाननेवाले द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्नको विधाताकी रची हुई अपनी मृत्यु स्वरूप जान कर सम्पूर्ण दिव्य अस्त्रोंको त्यागके उस रणभूमिमें अपने रथमें बैठ कर योगयुक्त चित्तसे परब्रह्म परमेश्वर का ध्यान करने लगे । अनन्तर शूरवीर पुरुष चारों ओरसे पुकारके उनका वध-करनेसे उसे निवारण कर रहे थे तौ भी धृष्टद्युम्नने बांये हाथसे उनके केश पकडके और दहिने हाथसे तलवार चलाकर सिर काट लिया ॥ उस समय सम्पूर्ण पुरुष "आचार्यका वध मत करो, वध मत करो," ऐसे ही वचनोंको कहते हुए धृष्टद्युम्नको निवारण करने लगे । विशेष करके धर्मात्मा अर्जुन शीघ्रताके सहित अपने रथसे उतरे और दोनों भुजा उठाके धृष्टद्युम्नको पुकारके "आचार्यका वध मत करो, उन्हें जीते ही ले आओ," इसी प्रकार बार बार वचन कहते हुए उस ही ओर दौडे ॥ (६२-६५)

कौरव लोग तथा अर्जुनने इस भांति से निवारण किया था; तौभी उस पापी धृष्टद्युम्नने तुम्हारे पिता द्रोणाचार्यका वध किया ॥ हे पापरहित अश्वत्थामन् ! इसी प्रकार तुम्हारे पिताके मारे जानेसे सेनाके सम्पूर्ण योद्धा तथा हम लोग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयं चापि निरुत्साहा हते पितरि तेऽनघ ॥ ६७ ॥
सञ्जय उवाच— तच्छ्रुत्वा द्रोणपुत्रस्तु निधनं पितुराहवे ।
क्रोधमाहारयत्तीव्रं पदाहत इवोरगः ॥ ६८ ॥
ततः क्रुद्धो रणे द्रौणिर्भृशं जज्वाल भारिष ।
यथेन्धनं महत्प्राप्य प्राज्वलद्धव्यवाहनः ॥ ६९ ॥
तलं तलेन निष्पिष्य दन्तैर्दन्तानुपास्पृशत् ।
निःश्वसन्नुरगो यद्वल्लोहिताक्षोऽभवत्तदा ॥ ७० ॥ [८९६०]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वणि अश्वत्थामक्रोधे त्रिनवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच- अधर्मेण हतं श्रुत्वा धृष्टद्युम्नेन संयुगे ।
ब्राह्मणं पितरं वृद्धमश्वत्थामा किमब्रवीत् ॥ १ ॥
मानवं वारुणाग्नेयं ब्राह्ममस्त्रं च वीर्यवान् ।
ऐन्द्रं नारायणं चैव यस्मिन्नित्यं प्रतिष्ठितम् ॥ २ ॥
तमधर्मेण धार्मिष्ठं धृष्टद्युम्नेन संयुगे ।
श्रुत्वा निहतमाचार्यं सोऽश्वत्थामा किमब्रवीत् ॥ ३ ॥
येन रामादवाप्येह धनुर्वेदं महात्मना ।

उत्साहरहित भयभीत और शोकित होकर युद्धभूमिसे भाग रहे हैं ॥ ६६-६७

सञ्जय बोले, महाराज ! अश्वत्थामा युद्धभूमिमें पिताके मरनेका वृत्तान्त सुनके पांवसे दबे हुए सर्पके समान अत्यन्त क्रुद्ध हुए और जैसे काष्ठके पडनेसे अग्नि अत्यन्तही प्रज्वलित होती है, वैसे ही द्रोणपुत्र अश्वत्थामा क्रोधसे ओठ काटते, और दांत कटकटाते हुए बार बार विषधर सर्पकी भांति लम्बी सांस छोडने लगे; उस समय क्रोधसे अश्वत्थामाके दोनों नेत्र लाल होगये ॥ (६८-७०) ८९६०

द्रोणपर्वमें एकसौ एकानब्बे अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें एकसौ बानब्बे अध्याय ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! अश्वत्थामाने अपने पिता ब्राह्मणश्रेष्ठ बूढे द्रोणाचार्यको अधर्म पूर्वक मरे हुए सुनके क्या कहा ? जिसमें मनुष्य वारुण, आग्नेय, ब्राह्म, ऐन्द्र और नारायण आदि अस्त्र सदा प्रतिष्ठित रहते थे, उस धर्मात्मा आचार्यका अधर्मसे धृष्टद्युम्नके हाथसे मरना सुनके उनके पुत्र अश्वत्थामाने क्या कहा ? (१-३)

जिस महात्मा द्रोणाचार्यने भृगुनन्दन परशुरामके निकटसे सम्पूर्ण धनुर्वेद सीखकर पुत्रको अपनेसे भी अधिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोक्तान्यस्त्राणि दिव्यानि पुत्राय गुणकांक्षिणा ॥ ४ ॥
एकमेव हि लोकेऽस्मिन्नात्मनो गुणवत्तरम् ।
इच्छन्ति पुरुषाः पुत्रं लोके नाऽन्यं कथञ्चन ॥ ५ ॥
आचार्याणां भवन्त्येव रहस्यानि महात्मनाम् ।
तानि पुत्राय वा दद्युः शिष्यायाऽनुगताय वा ॥ ६ ॥
स शिष्यः प्राप्य तत्सर्वं सविशेषं च सञ्जय ।
शूरः शारद्वतीपुत्रः संख्ये द्रोणादनन्तरः ॥ ७ ॥
रामस्य तु समः शस्त्रे पुरन्दरसमो युधि ।
कार्तवीर्यसमो वीर्ये बृहस्पतिसमो मतौ ॥ ८ ॥
महीधरसमः स्थैर्ये तेजसाऽग्निसमो युवा ।
समुद्र इव गाम्भीर्ये क्रोधे चाऽऽशीविषोपमः ॥ ९ ॥
स रथी प्रथमो लोके दृढधन्वा जितक्रमः ।
शीघ्रोऽनिल इवाऽऽक्रन्दे चरन्क्रुद्ध इवाऽन्तकः ॥ १० ॥
अस्यता येन संग्रामे धरण्यभिनिपीडिता ।

कृतविद्य करनेकी इच्छासे सम्पूर्ण धनुर्विद्या तथा अस्त्रशस्त्रोंकी विद्याको सिखाया था; उनके पुत्र अश्वत्थामाने उस समय किस कार्यका अनुष्ठान किया ? इस संसारमें ऐसी रीति है, कि सम्पूर्ण पुरुष सबको त्यागके निज पुत्रको अपनेसे भी अधिक गुणवान् करनेकी इच्छा करते हैं ॥ (४—५)

महात्मा आचार्य पुरुषों के समीप जो कुछ विद्याके अनेक रहस्य विषय रहते हैं, उसे वे अपने पुत्र और प्रिय शिष्यको ही सिखाते हैं ॥ पराक्रमी शारद्वतीकुमार अश्वत्थामा उनके पुत्र और शिष्य हैं, इससे वह द्रोणाचार्यके समीपसे सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंकी विद्या सीखकर पिताके समान ही धनुर्वेदमें निपुण हुए हैं ॥ (६–७)

युवा अश्वत्थामा अस्त्रशस्त्रोंके चलानेमें परशुरामके समान, युद्धमें इन्द्र, पराक्रममें कार्तवीर्य अर्जुन, बुद्धिमें बृहस्पति, स्थिरतामें हिमालय, तेजमें अग्नि, गम्भीरतामें समुद्र और क्रोधमें विषधर सर्पके समान हैं; अधिक क्या कहूं, वह युद्धमें न थकनेवाले, दृढ धनुर्द्धारी अश्वत्थामा पृथ्वीके बीच सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंमें अग्रगण्य हैं । वह युद्धभूमिके बीच क्रोधी यमराज तथा वेगगामी वायुकी भांति भ्रमण करते हैं ॥ (८–१०)

जिसके बाणोंकी वर्षासे पृथ्वी विदीर्ण हो सकती है; जो सत्यपराक्रमी वीर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो न व्यथति संग्रामे वीरः सत्यपराक्रमः ॥ ११ ॥
वेदस्नातो व्रतस्नातो धनुर्वेदे च पारगः।
महोदधिरिवाऽक्षोभ्यो रामो दाशरथिर्यथा ॥ १२ ॥
तमधर्मेण धार्मिष्ठं धृष्टद्युम्नेन संयुगे।
श्रुत्वा निहतमाचार्यमश्वत्थामा किमब्रवीत् ॥ १३ ॥
धृष्टद्युम्नस्य यो मृत्युः सृष्टस्तेन महात्मना।
यथा द्रोणस्य पाञ्चाल्यो यज्ञसेनसुतोऽभवत् ॥ १४ ॥
तं नृशंसेन पापेन क्रूरेणाऽदीर्घदर्शिना।
श्रुत्वा निहतमाचार्यमश्वत्थामा किमब्रवीत् ॥१५॥ [८९७५]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वणि धृतराष्ट्रप्रश्ने चतुर्नवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१९४॥

सञ्जय उवाच— छद्मना निहतं श्रुत्वा पितरं पापकर्मणा।
वाष्पेणाऽऽपूर्यत द्रौणी रोषेण च नरर्षभ ॥ १ ॥
तस्य क्रुद्धस्य राजेन्द्र वपुर्दीप्तमदृश्यत।
अन्तकस्येव भूतानि जिहीर्षोः कालपर्यये ॥ २ ॥
अश्रुपूर्णे ततो नेत्रे व्यपमृज्य पुनः पुनः।

युद्धभूमिमें भयभीत नहीं होता, जिसने यथा रीतिसे वेद पढके ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त किया है, जो धनुर्वेदमें दशरथ पुत्र रामचन्द्रके समान सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंके ज्ञाता और समुद्रकी भांति गम्भीर हुए हैं, वह पराक्रमी अश्वत्थामा धर्मात्मा द्रोणाचार्यको अधर्मपूर्वक धृष्टद्युम्न के हाथसे मरे हुए सुनकर क्या बोले? (११-१३)

हे सञ्जय! विधाताने धृष्टद्युम्नको द्रोणाचार्यके निमित्त मृत्युरूपी उत्पन्न किया है, वैसेही अश्वत्थामाको भी धृष्टद्युम्नकी मृत्युस्वरूप बनाया है॥ इससे उस क्रूर अदूरदर्शी पापी नीच धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्यका वध सुनकर अश्वत्थामा क्या बोले? (१४-१५) [८९७५]

द्रोणपर्वमें एकसौ चौरानव्वे अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ पचानव्वे अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! अश्वत्थामा पाण्डवोंकी कपटता और पापी धृष्टद्युम्नके हाथसे पिताका मरना सुनकर क्रोधसे परिपूरित होगये, और दोनों नेत्र आंसूसे युक्त होकर लालवर्ण होगये। उस समय क्रोधी अश्वत्थामाकी मूर्ति सम्पूर्ण प्राणियोंके नाश करने वाले प्रलय कालके समय क्रुद्ध हुए महाकाल अन्तककी भांति भयङ्कर दिखाई देने लगी॥ (१-२)

अनन्तर वह बार बार आंखोंसे आंसू

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उवाच कोपान्निःश्वस्य दुर्योधनमिदं वचः ॥ ३ ॥
पिता मम यथा क्षुद्रैर्न्यस्तशस्त्रो निपातितः ।
धर्मध्वजवता पापं कृतं तद्विदितं मम ॥ ४ ॥
अनार्यं सुनृशंसं च धर्मपुत्रस्य मे श्रुतम् ।
युद्धेष्वपि प्रवृत्तानां ध्रुवं जयपराजयौ ॥ ५ ॥
द्वयमेतद्धि वेद्राजन्वधस्तत्र प्रशस्यते ।
न्यायवृत्तो वधो यस्तु संग्रामे युध्यतो भवेत् ॥ ६ ॥
न स दुःखाय भवति तथा दृष्टो हि स द्विजैः ।
गतः स वीरलोकाय पिता मम न संशयः ॥ ७ ॥
न शोच्यः पुरुषव्याघ्र यस्तदा निधनं गतः ।
यत्तु धर्मप्रवृत्तः सन्केशग्रहणमाप्तवान् ॥ ८ ॥
पश्यतां सर्वसैन्यानां तन्मे मर्माणि कृन्तति ।
मयि जीवति यत्तातः केशग्रहमवाप्तवान् ॥ ९ ॥

पोंछ कर क्रोधसे सांस छोडते हुए दुर्योधनसे बोले । महाराज ! नीच स्वभाववाले पुरुषोंने जिस रीतिसे मेरे पिताको अस्त्र त्याग करा कर उनका वध किया है, और धर्मध्वजी युधिष्ठिरने जैसा पापाचरण किया है, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझे विदित हुए; तथा मैंने उस अनार्य कपटी युधिष्ठिरके सम्पूर्ण विवरणको श्रवण किया । युद्धमें प्रवृत्त हुए पुरुषोंकी जीत वा हार अवश्यम्भावी तथा होतव्यताके अनुसार स्वयं हुआ करती है; परन्तु पराजयकी अपेक्षा मृत्यु ही प्रशंसनीय है । (२-६)

युद्धभूमिके बीच युद्ध करनेवाले पुरुषोंकी यदि न्यायके अनुसार मृत्यु होती है, तो वह मृत्यु दुःखकी कारण नहीं होती; क्योंकि पण्डितोंने युद्ध करनेवाले पुरुषोंकी ऐसीही गतिको श्रेष्ठ करके वर्णन किया है, इससे मेरे पिताने भी निश्चय वीरलोकमें गमन किया है । हे पुरुष शार्दूल ! जब पिताने इस प्रकारसे वीरलोक प्राप्त किया है, तब उनके वास्ते शोक करना उचित नहीं है । तब जो वह अस्त्रशस्त्र परित्याग करके ईश्वरके ध्यानमें प्रवृत्त हुए थे, वैसी अवस्थामें जो धृष्टद्युम्नने सम्पूर्ण सेनाके सम्मुखमें उनका केश ग्रहण किया है उस ही को स्मरण करके मेरे मर्मस्थानोंमें पीडा होरही है । (६-९)

हाय ! मेरे जीवित रहते ही जब मेरे पिताके केशको पकडके धृष्टद्युम्नने उनका वध किया है, तब अन्य पुरुष किस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्यः पुत्रिणः स्पृहाम् ।
कामात्क्रोधादविज्ञानाद्धर्षाद्बालत्येन वा पुनः ॥ १० ॥
विधर्मकाणि कुर्वन्ति तथा परिभवन्ति च ।
तदिदं पार्षतेनेह महदाधर्मिकं कृतम् ॥ ११ ॥
अवज्ञाय च मां नूनं नृशंसेन दुरात्मना ।
तस्याऽनुबन्धं द्रष्टाऽसौ धृष्टद्युम्नः सुदारुणम् ॥ १२ ॥
अकार्यं परमं कृत्वा मिथ्यावादी च पाण्डवः ।
यो ह्यसौ छद्मनाऽऽचार्यं शस्त्रं संन्यासयत्तदा ॥ १३ ॥
तस्याऽद्य धर्मराजस्य भूमिः पास्यति शोणितम् ।
शपे सत्येन कौरव्य इष्टापूर्तेन चैव ह ॥ १४ ॥
अहत्वा सर्वपञ्चालाञ्जीवेयं न कथञ्चन ।
सर्वोपायैर्यतिष्यामि पञ्चालानामहं वधे ॥ १५ ॥
धृष्टद्युम्नं च समरे हन्ताऽहं पापकारिणम् ।
कर्मणा येन तेनेह मृदुना दारुणेन च ॥ १६ ॥
पञ्चालानां वधं कृत्वा शान्तिं लब्धास्मि कौरव ।

कार्यके वास्ते पुत्रकी इच्छा करेंगे ? मनुष्य लोग काम, क्रोध, अभिमान, लोभ, अज्ञानता और बालक भावसे युक्त होकर अधर्मके कार्योंमें प्रवृत्त होते हैं और दूसरोंको पराभूत करते हैं ॥ दुष्टात्मा धृष्टद्युम्नने भी मेरी अवज्ञा करके इस महा अधर्मके कार्यको किया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं । इससे वह थोडे ही समयके बीच इस अधर्मका फल पावेगा ॥ (९–१२)

इसके अतिरिक्त उस मिथ्यावादी धर्मपुत्र युधिष्ठिरने अत्यन्त ही असत्कार्य किया है, उसने जब कपटतासे अपने गुरुसे अस्त्र त्याग कराया है, तब आज पृथ्वी अवश्य ही उसके रुधिरको पान करेगी । महाराज ! मैं प्रतिज्ञा करता हूं, कि यदि मैं सम्पूर्ण पांचाल योद्धाओंका वध न करूं, तो सत्य सुकृत कर्म यश और धर्मसे भ्रष्ट होऊंगा । अधिक क्या कहूं, उनका वध न करके जीवित रहने की भी मैं इच्छा नहीं करता हूं ॥ पाञ्चाल योद्धाओंके वधके वास्ते मैं शक्तिके अनुसार यत्न करूंगा॥ (१३-१५)

विशेष करके पापी धृष्टद्युम्नका मैं अवश्य ही युद्धमें प्राणनाश करूंगा । हे कुरुराज ! चाहे मृदु हो अथवा कठोरतासे ही होवे अर्थात् चाहे किसी कर्मसे क्यों न होवे; मैं पाञ्चाल योद्धाओंका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदर्थं पुरुषव्याघ्र पुत्रानिच्छन्ति मानवाः ॥ १७ ॥
प्रेत्य चेह च सम्प्राप्तांस्त्रायन्ते महतो भयात् ।
पित्रा तु मम साऽवस्था प्राप्ता निर्बन्धुना यथा ॥ १८ ॥
मयि शैलप्रतीकाशे पुत्रे शिष्ये च जीवति ।
धिङ् ममाऽस्त्राणि दिव्यानि धिग्बाहू धिक्पराक्रमम् ॥ १९ ॥
यं स्म द्रोणः सुतं प्राप्य केशग्रहमवाप्तवान् ।
स तथाऽहं करिष्यामि यथा भारतसत्तम ॥ २० ॥
परलोकगतस्याऽपि भविष्याम्यनृणः पितुः ।
आर्येण हि न वक्तव्या कदाचित्स्तुतिरात्मनः ॥ २१ ॥
पितुर्वधमसृष्यंस्तु वक्ष्याम्यद्येह पौरुषम् ।
अद्य पश्यन्तु मे वीर्यं पाण्डवाः सजनार्दनाः ॥ २२ ॥
मृद्नतः सर्वसैन्यानि युगान्तमिव कुर्वतः ।
नहि देवा न गन्धर्वा नाऽसुरा न च राक्षसाः ॥ २३ ॥
अद्य शक्ता रणे जेतुं रथस्थं मां नरर्षभाः ।
मदन्यो नास्ति लोकेऽस्मिन्नर्जुनाद्वाऽस्त्रवित्क्वचित् ॥ २४ ॥

नाश करके तब शान्त होऊंगा । हे पुरुषसिंह ! मनुष्य इस लोक और परलोक में महाभयसे परित्राण पानेके वास्ते ही पुत्रकी कामना किया करते हैं; परन्तु मैं पर्वतके समान पुत्र तथा शिष्य रूपसे वर्त्तमान था; तौ भी मेरे पिता अनाथकी भांति ऐसी दशाको प्राप्त हुए । मेरे समान पुत्रको पाके भी जब मेरे पिताका केश ग्रहण किया है, तब मेरे दिव्य अस्त्र बाहुबल और पराक्रमको धिक्कार है । (१६–२०)

हे भरतसत्तम ! इस समय मैं ऐसा प्रतिकार करूंगा, जिससे परलोक प्राप्त हुए पिताके ऋणसे मुक्त हो सकूं । आर्य पुरुषोंको अपने पराक्रमकी प्रशंसा करनी उचित नहीं है, परन्तु पिताके वधसे दुःखित होके आज मैं अपने पुरुषार्थका वर्णन कर रहा हूं । आज मैं प्रलय कालके रुद्रकी भांति जब शत्रुसेनाका नाश करने लगूंगा तब कृष्णके सहित पाण्डव लोग मेरे पराक्रमको देखेंगे । (२०—२३)

हे पुरुषश्रेष्ठ ! आज मैं रथपर चढके जब युद्धभूमिमें स्थित होऊंगा, तो उस समय देवता, गन्धर्व, असुर वा राक्षस आदि कोई प्राणी भी मुझे पराजित करनेमें समर्थ न होंगे । इस पृथ्वीके बीच कोई पुरुष भी मेरे और अर्जुनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहं हि ज्वलतां मध्ये मयूखानामिवांऽशुमान् ।
प्रयोक्ता देवसृष्टानामस्त्राणां पृतनागतः ॥ २५ ॥
भृशमिष्वसनादद्य मत्प्रयुक्ता महाहवे ।
दर्शयन्तः शरा वीर्यं प्रमथिष्यन्ति पाण्डवान् ॥ २६ ॥
अद्य सर्वा दिशो राजन्धाराभिरिव संकुलाः ।
आवृताः पत्रिभिस्तीक्ष्णैर्द्रष्टारो मामकैरिह ॥ २७ ॥
विकिरञ्छरजालानि सर्वतो भैरवस्वनान् ।
शत्रून्निपातयिष्यामि महावात इव द्रुमान् ॥ २८ ॥
नहि जानाति बीभत्सुस्तदस्त्रं न जनार्दनः ।
न भीमसेनो न यमौ न च राजा युधिष्ठिरः ॥ २९ ॥
न पार्षतो दुरात्माऽसौ न शिखण्डी न सात्यकिः ।
यदिदं मयि कौरव्य सकल्यं सनिवर्तनम् ॥ ३० ॥
नारायणाय मे पित्रा प्रणम्य विधिपूर्वकम् ।
उपहारः पुरा दत्तो ब्रह्मरूप उपस्थितः ॥ ३१ ॥

समान अस्त्रवेत्ता नहीं है ॥ आज मैं शत्रुसेनाके बीच प्रवेश करके प्रचण्ड किरण धारण करनेवाले सूर्यकी भांति अपने दिव्य अस्त्रोंकी वर्षा करूंगा ॥ आज मेरे धनुषसे छूटे हुए तीक्ष्ण बाण लगातार युद्धभूमिमें शत्रुसेनाका नाश करेंगे ॥ (२३–२६)

महाराज ! आज सम्पूर्ण प्राणी सम्पूर्ण दिशाओंको मेरे बाणोंसे इस प्रकार छिपी हुई देखेंगे, जैसे जलकी वर्षा होने पर सम्पूर्ण दिशा, पृथ्वी तथा आकाश परिपूरित होजाते हैं ॥ आज मैं लगातार चारों ओर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगूंगा, तो शत्रुसेनाके शूरवीर योद्धा लोग भयानक शब्दसे चिल्लाते हुए मरके इस प्रकार पृथ्वीमें गिरने लगेंगे, जैसे प्रचण्ड वायुके वेगसे भयङ्कर शब्दके सहित वृक्ष टूट टूटके पृथ्वीमें गिर पडते हैं ॥ (२७–२८)

हे कौरवगण ! प्रयोग और प्रतिसंहारसे युक्त जो सब अस्त्र मुझमें प्रतिष्ठित हैं; उसे अर्जुन, कृष्ण, युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, शिखण्डी और पापी धृष्टद्युम्न आदि कोई भी नहीं जानते ॥ पहिले किसी समयमें भगवान् नारायण ब्राह्मण रूपसे मेरे पिताके निकट उपस्थित हुए थे, पिताने यथारीतिसे उन्हें प्रणाम करके उनकी पूजा की थी; नारायण मेरे पिताकी पूजा ग्रहण करके वर देनेके वास्ते उद्यत हुए,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं स्वयं प्रतिगृह्याऽथ भगवान्स वरं ददौ ।
वव्रे पिता मे परममस्त्रं नारायणं ततः ॥ ३२ ॥
अथैनमब्रवीद्राजन्भगवान्देवसत्तमः ।
भविता त्वत्समो नाऽन्यः कश्चिद्युधि नरः क्वचित् ॥३३॥
नत्विदं सहसा ब्रह्मन्प्रयोक्तव्यं कथञ्चन ।
नह्येतदस्त्रमन्यत्र वधाच्छत्रोर्निवर्त्तते ॥ ३४ ॥
न चैतच्छक्यते ज्ञातुं केन वध्येदिति प्रभो ।
अवध्यमपि हन्याद्धि तस्मान्नैतत्प्रयोजयेत् ॥ ३५ ॥
अथ संख्ये रथस्यैव शस्त्राणां च विसर्जनम् ।
प्रयाचतां च शत्रूणां गमनं शरणस्य च ॥ ३६ ॥
एते प्रशमने योगा महास्त्रस्य परन्तप ।
सर्वथा पीडितो हिंस्यादवध्यान्पीडयन्रणे ॥ ३७ ॥
तज्जग्राह पिता मह्यमब्रवीच्चैव स प्रभुः ।
त्वं वधिष्यसि सर्वाणि शस्त्रवर्षाण्यनेकशः ॥ ३८ ॥

तब पिताने उनके निकटसे नारायण नामक परमास्त्र ग्रहण करनेकी प्रार्थना की ॥ (२९—३२)

तब भगवान् नारायण बोले, हे द्रोण ! इस अस्त्रके प्रभावसे दूसरा कोई पुरुष भी तुम्हारे समान योद्धा नहीं होगा ॥ हे ब्रह्मन् ! यह अस्त्र सहसा किसीके ऊपर प्रयुक्त मत करना, क्योंकि यह अस्त्र जिसके ऊपर प्रयुक्त किया जाता है, उस शत्रुका वध करनेके विना निवृत्त नहीं होता है। हे विप्र ! तुम ऐसा कभी मत समझना, कि यह अस्त्र किसी प्राणी विशेषका नाश नहीं कर सकेगा; यह अस्त्र अवध्य प्राणीका भी नाश करेगा; इससे विना सङ्कट समयके उपस्थित हुए अस्त्र को चलाना उचित नहीं है ॥ (३३—३५)

हे परन्तप ! कदाचित यदि यह महाअस्त्र चलाया जावे,तो इसके निवारण करनेकी उपाय केवल रथ आदि वाहन और सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंको परित्याग करके युद्धसे विमुख होना है, अथवा शत्रु यदि प्राण दान मांगे, शरणागत होवे, तभी यह महा अस्त्र निवृत्त हो सकता है; इसके अतिरिक्त और किसी भांतिसे भी यह अस्त्र निवारित नहीं हो सकता ॥ परन्तु जब सब भांतिसे शत्रुओंके अस्त्रोंसे पीडित होगे, तब इस अस्त्रको चलानेसे ही अवध्य शत्रुका भी नाश होगा ॥ इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेनाऽस्त्रेण संग्रामे तेजसा च ज्वलिष्यसि ।
एवमुक्त्वा स भगवान्दिवमाचक्रमे प्रभुः ॥ ३९ ॥
एतन्नारायणादस्त्रं तत्प्राप्तं पितृबन्धुना ।
तेनाऽहं पाण्डवांश्चैव पाञ्चालान्मत्स्यकेकयान् ॥ ४० ॥
विद्रावयिष्यामि रणे शचीपतिरिवाऽसुरान् ।
यथा यथाऽहमिच्छेयं यथा भूत्वा शरा मम ॥ ४१ ॥
निपतेयुः सपत्नेषु विक्रमत्स्वपि भारत ।
यथेष्टमश्मवर्षेण प्रवर्षिष्ये रणे स्थितः ॥ ४२ ॥
अयोमुखैश्च विहगैर्द्रावयिष्ये महारथान् ।
परश्वधांश्च निशितानुत्सक्ष्येऽहमसंशयम् ॥ ४३ ॥
सोऽहं नारायणास्त्रेण महता शत्रुतापनः ।
शत्रून्विध्वंसयिष्यामि कदर्थीकृत्य पाण्डवान् ॥ ४४ ॥
मित्रब्रह्मगुरुद्रोही जात्मकः सुविगर्हितः ।

अस्त्रके प्रभावसे तुम रणभूमिके बीच दिव्य तेजसे प्रकाशित होकर शत्रुओंके अनेक अस्त्रोंकी वर्षाको निवारण करने में समर्थ होंगे॥ सर्व शक्तिमान् भगवान् नारायणने इसी प्रकार उपदेश देकर मेरे पिताको नारायण अस्त्र प्रदान करके उसी समय आकाशमार्गसे गमन किया। पिताने इसी भांति नारायण अस्त्र पाकर कुछ दिनके अनन्तर मुझे भी उस अस्त्रके चलाने और निवृत्त करनेकी रीतिको यथा उचित से उपदेश किया था। (३६-४०)

महाराज ! शचीपति इन्द्र जिस प्रकार दानवोंका नाश किया करते हैं, वैसे ही आज मैं भी उस नारायण अस्त्रके प्रभावसे पाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य और केकय देशीय सेनाके शूरवीरोंको युद्धभूमिमें चारों ओर छिन्नभिन्न कर दूंगा। महाराज ! आज मैं जैसी जैसी इच्छा करूंगा, उस ही प्रकार बनकर शत्रुओंके पराक्रम करनेपर भी उनके ऊपर समूहके समूह बाणजाल गिरते हुए दीख पडेंगे। और उस महाघोर नारायण अस्त्रके प्रभावसे पाण्डवोंको पराजित करके लगातार बहुतेरे पत्थरकी शिला, लोहमय आकाशगामी बाण और तेजधारवाले परशु आदि अस्त्रोंको वर्षाकर महारथी शत्रुओंको युद्धभूमि में तितरबितर करूंगा। (४०-४४)

मित्र, गुरु, और ब्राह्मण द्रोही, सर्व लोकनिन्दित कुटिलस्वभावसे युक्त पाञ्चालराज कुलकलङ्क पापी धृष्टद्युम्न आज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाञ्चालापसदश्चाऽद्य न मे जीवन्विमोक्ष्यते ॥ ४५ ॥
तच्छ्रुत्वा द्रोणपुत्रस्य पर्यवर्तत वाहिनी।
ततः सर्वे महाशङ्खान्दध्मुः पुरुषसत्तमाः ॥ ४६ ॥
भेरीश्चाऽभ्यहनन्हृष्टा डिण्डिमांश्च सहस्रशः।
तथा ननाद वसुधा खुरनेमिप्रपीडिता ॥ ४७ ॥
स शब्दस्तुमुलः खं द्यां पृथिवीं च व्यनादयत्।
तं शब्दं पाण्डवाः श्रुत्वा पर्जन्यनिनदोपमम् ॥ ४८ ॥
समेत्य रथिनां श्रेष्ठाः सहिताश्चाऽप्यमन्त्रयन्।
तथोक्त्वा द्रोणपुत्रस्तु वार्युपस्पृश्य भारत ॥ ४९ ॥
प्रादुश्चकार तद्दिव्यमस्त्रं नारायणं तदा ॥ ५० ॥ [९०२५]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वण्यश्वत्थामक्रोधे पञ्चनवत्यधिकशततमोऽध्यायः॥१९५॥

सञ्जय उवाच— प्रादुर्भूते ततस्तस्मिन्नस्त्रे नारायणे प्रभो।
प्रावात्सप्तपृषतो वायुरनभ्रे स्तनयित्नुमान् ॥ १ ॥
चचाल पृथिवी चापि चुक्षुभे च महोदधिः।

मेरे सम्मुखसे जीते जी मुक्त न होसकेगा। महाराज! भागती हुई कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके ऐसे वचनोंको सुनके फिर लौटकर युद्ध करनेके वास्ते उद्यत हुए। और पुरुष श्रेष्ठ सेनापति भी प्रसन्नचित्तसे हर्षित होकर अपने अपने शंख बजाने लगे। तिसके अनन्तर वहां सहस्रों भेरी, ढोल, मृदङ्ग और नगाडे आदि युद्धके जुझाऊ बाजे बजने लगे, और घोडोंके टाप और रथकी घरघराहटसे पृथ्वीपर ऐसा शब्द प्रकट हुआ, कि उस महाभयङ्कर तुमुल शब्दसे आकाश और पृथ्वीसे प्रतिध्वनि उत्पन्न होने लगी। (४४–४८)

पाण्डवोंकी सेनाके मुख्य मुख्य रथी योद्धा गर्जते हुए बादलके भयङ्कर शब्दकी भांति कुरुसेनाके वीरोंके भयानक शब्दको सुनके सब कोई इकट्ठे होकर आपसमें विचार करने लगे॥ इधर अश्वत्थामाने भी पवित्र होके जल स्पर्श करके नारायण नामक दिव्यास्त्रको प्रकट किया॥ (४८–५०) [९०२५]

द्रोणपर्वमें एकसौ पचानव्वे अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ छानव्वे अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! नारायण अस्त्र प्रकट होनेके समय आकाश मण्डल बादलोंसे रहित था, तौभी जलबिन्दुयुक्त महाभयङ्कर शब्दके सहित वायु प्रबल वेगसे बहने लगा, पृथ्वी कांपने लगी, समुद्रका जल उथलित होने लगा, नदियें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिस्रोतःप्रवृत्ताश्च गन्तुं तत्र समुद्यताः ॥ २ ॥
शिखराणि व्यशीर्यन्त गिरीणां तत्र भारत।
अपसव्यं मृगाश्चैव पाण्डुसेनां प्रचक्रिरे ॥ ३ ॥
तमसा चाऽवकीर्यन्त सूर्यश्च कलुषोऽभवत्।
सम्पतन्ति च भूतानि क्रव्यादानि प्रहृष्टवत् ॥ ४ ॥
देवदानवगन्धर्वास्त्रस्तास्त्वासन्विशाम्पते।
कथंकथाऽभवत्तीव्रा दृष्ट्वा तद्व्याकुलं महत् ॥ ५ ॥
व्यथिताः सर्वराजानस्त्रस्ताश्चाऽऽसन्विशाम्पते।
तद् दृष्ट्वा घोररूपं वै द्रौणेरस्त्रं भयावहम् ॥ ६ ॥
धृतराष्ट्र उवाच—निवर्तितेषु सैन्येषु द्रोणपुत्रेण संयुगे।
भृशं शोकाभितप्तेन पितुर्वधमसृष्यता ॥ ७ ॥
कुरूनापततो दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नस्य रक्षणे।
को मन्त्रः पाण्डवेष्वासीत्तन्ममाऽऽचक्ष्व सञ्जय॥ ८ ॥
सञ्जय उवाच— प्रागेव विद्रुतान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्युधिष्ठिरः।

उल्टी गतिसे बहने लगीं। पहाडोंके शिखर टूट टूटके गिरने लगे, मृगोंके समूह पाण्डवोंकी बांयी ओरसे दौडने लगे। (१–३)

धीरे धीरे सूर्यका प्रकाश मन्द होगया और सम्पूर्ण दिशा अन्धकारसे छिप गई। उस ही समय मांसभक्षी प्राणी महाभयङ्कर बोली बोलते हुए दौडे। उस भयङ्कर उत्पातको देखकर देवता, दानव और गन्धर्व आदि प्राणी भयभीत होगये और मनुष्य लोग आपसमें वार्त्तालाप करनेमें भी समर्थ नहीं हुए। विशेष करके पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण राजा लोग द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके उस महाघोर भयङ्कर अस्त्रको देखकर अत्यन्त कातर और भयभीत हुए ॥ (४–६)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! पितृवधके शोकसे दुःखित और क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा जब मेरी भागती हुई सेनाको फिर लौटाकर युद्ध करनेके वास्ते पाण्डवोंकी ओर वेगपूर्वक गमन करने लगे, तब उस समय अश्वत्थामाको युद्ध करनेके वास्ते अपनी ओर आते देख, पाण्डवोंने धृष्टद्युम्नकी रक्षा करनेके विषयमें जिस प्रकार आपसमें विचार किया, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम मेरे समीप वर्णन करो ॥ (७–८)

सञ्जय बोले, महाराज! राजा युधिष्ठिरने पहिले कुरु-सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको भागते हुए देखा था; अब फिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनश्च तुमुलं शब्दं श्रुत्वाऽर्जुनमथाऽब्रवीत् ॥ ९ ॥
युधिष्ठिर उवाच—आचार्ये निहते द्रोणे धृष्टद्युम्नेन संयुगे।
निहते वज्रहस्तेन यथा वृत्रे महासुरे ॥ १० ॥
नाऽशंसन्तो जयं युद्धे दीनात्मानो धनञ्जय।
आत्मत्राणे मतिं कृत्वा प्राद्रवन्कुरवो रणात् ॥ ११ ॥
केचिद्भ्रान्तै रथैस्तूर्णं निहतैः पार्ष्णियन्तृभिः।
विपताकध्वजच्छत्रैः पार्थिवाः शीर्णकूबरैः ॥ १२ ॥
भग्ननीडैराकुलाश्वैः प्रारुह्याऽन्यान्विचेतसः।
भीताः पादैर्हयान्केचित्त्वरयन्तः स्वयं रथान् ॥ १३ ॥
भग्नाक्षयुगचक्रैश्च व्याकृष्यन्त समन्ततः।
रथान्विशीर्णानुत्सृज्य पद्भिः केचिच विद्रुताः ॥ १४ ॥
हयपृष्ठगताश्चाऽन्ये कृष्यन्तेऽर्धच्युतासनाः।
गजस्कन्धेषु संस्यूता नाराचैश्चलितासनाः ॥ १५ ॥
शरार्तैर्विद्रुतैर्नागैर्हृताः केचिद्दिशो दश।
विशस्त्रकवचाश्चाऽन्ये वाहनेभ्यः क्षितिं गताः ॥ १६ ॥
सञ्छिन्ना नेमिभिश्चैव मृदिताश्च हयद्विपैः।

उन लोगोंके हर्षनादको सुनके अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! पहिले जैसे देवराज वज्रधारी इन्द्रने वृत्रासुरका नाश किया था, वैसेही धृष्टद्युम्नसे द्रोणाचार्यके मारे जानेपर कौरव लोग विजयसे निराश होकर कातर और भयभीत होके अपने प्राण को बचाके युद्धभूमिसे भागे थे॥ (९–११)

जिन सम्पूर्ण रथोंकी ध्वजा, छत्र, पताका, धुरी, चक्र आदि अस्त्रोंके प्रहारसे कट गये थे, उन रथोंमें बैठे हुए बहुतेरे रथी सारथी और राजा लोग व्याकुल होकर इधर उधर घूमकर युद्धभूमिसे पृथक् हुए थे। कितने ही रथी टूटे हुए रथको युद्धभूमिमें छोडके रथके घोडोंको खोलके उसीपर चढके वेगपूर्वक दौडाकर युद्धभूमिसे भागे थे; घुडसवार लोग आसनरहित होके नङ्गी पीठसे युक्त घोडोंपर ही चढे हुए रणभूमिसे भाग गये थे। कितनेही गजसवार बाणोंसे पीडित होकर हाथियोंको दौडाके इधर उधर भाग गये थे। (१२–१६)

शस्त्र और कवचसे हीन बहुतेरे योद्धा लोग अपने वाहनोंसे भूमिपर गिरके हाथी, घोडे ओर रथके पहियेके नीचे दबके मर गये। कितने ही मोहित होकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोशन्तस्तात पुत्रेति पलायन्ते परे भयात् ॥ १७ ॥
नाऽभिजानन्ति चाऽन्योन्यं कश्मलाभिहतौजसः।
पुत्रान्पितॄन्सखीन्भ्रातॄन्समारोप्य हृतक्षतान् ॥ १८ ॥
जलेन क्लेदयन्त्यन्ये विमुच्य कवचान्यपि।
अवस्थां तादृशीं प्राप्य हते द्रोणे द्रुतं बलम् ॥ १९ ॥
पुनरावर्तितं केन यदि जानासि शंस मे।
हयानां हेषतां शब्दः कुञ्जराणां च बृंहताम् ॥ २० ॥
रथनेमिस्वनैश्चाऽत्र विमिश्रः श्रूयते महान्।
एते शब्दा भृशं तीव्राः प्रवृत्ताः कुरुसागरे ॥ २१ ॥
मुहुर्मुहुरुदीर्यन्ते कम्पयन्त्यपि मामकान्।
य एष तुमुलः शब्दः श्रूयते लोमहर्षणः ॥ २२ ॥
सेन्द्रानप्येष लोकांस्त्रीन्ग्रसेदिति मतिर्मम।
मन्ये वज्रधरस्यैष निनादो भैरवस्वनः ॥ २३ ॥
द्रोणे हते कौरवार्थं व्यक्तमभ्येति वासवः।

आपसमें एक दूसरेको जानभी न सके, उस समय हे पिता! हे पुत्र! कहके चिल्लाते हुए कुरुसेनाके बहुतेरे योद्धा भयभीत होकर युद्धभूमिसे भागे थे। कोई अत्यन्त क्षत विक्षत शरीरसे युक्त पिता पुत्रको युद्धभूमिसे पृथक् करके कवच उतारके जल सेवन करते थे। १६-१९

हे अर्जुन! द्रोणाचार्यके मरनेसे कुरुसेनाके योद्धाओंकी ऐसी हीन दशा हुई थी। परन्तु अब फिर किस कारणसे कुरुसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग लौटकर हर्षपूर्वक युद्ध करनेके वास्ते हम लोगोंकी ओर बढे आते हैं? यदि तुम इस वृत्तान्तको जानते हो, तो मेरे समीप वर्णन करो। यह देखो, घोडोंकी हिनहिनाहट, हाथियोंके चिङ्घाड और रथोंकी घरघराहटके सङ्ग मिलकर कुरुसेनाके योद्धाओंके सिंहनादका शब्द अत्यन्तही भयङ्कर सुनाई दे रहा है। कुरुसेनारूपी समुद्रसे बार बार यह महाभयङ्कर शब्द प्रकट होके मेरी सेनाके योद्धाओंको कम्पित कर रहा है। (१९—२२)

जिस प्रकार यह महाघोर तुमुल रोएं को खडा करनेवाला भयङ्कर शब्द हो रहा है, उससे मुझे बोध होता है, इन्द्र आदि दिक्पालोंके सहित तीनों लोकका नाश होगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है अथवा यह भयङ्कर सिंहनाद वज्रधारी इन्द्रका भी हो सकता है॥ द्रोणाचार्यके मरनेसे मुझे निश्चय होता है, कि कौरवों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहृष्टरोमकूपाश्च संविग्ना रथपुङ्गवाः ॥ २४ ॥
धनञ्जय गुरुं श्रुत्वा तत्र नादं सुभीषणम् ।
क एष कौरवान्दीर्णानवस्थाप्य महारथः ॥ २५ ॥
निवर्तयति युद्धार्थं मृधे देवेश्वरो यथा ।
अर्जुन उवाच— उद्यम्याऽऽत्मानमुग्राय कर्मणे वीर्यमास्थिताः ॥ २६ ॥
धमन्ति कौरवाः शङ्खान्यस्य वीर्यं समाश्रिताः ।
यत्र ते संशयो राजन्न्यस्तशस्त्रे गुरौ हते ॥ २७ ॥
धार्तराष्ट्रानवस्थाप्य क एष नदतीति हि ।
हीमन्तं तं महाबाहुं मत्तद्विरदगामिनम् ॥ २८ ॥
व्याघ्रास्यमुग्रकर्माणं कुरूणामभयङ्करम् ।
यस्मिञ्जाते ददौ द्रोणो गवां दशशतं धनम् ॥ २९ ॥
ब्राह्मणेभ्यो महार्हेभ्यः सोऽश्वत्थामैष गर्जति ।
जातमात्रेण वीरेण येनोच्चैःश्रवसा यथा ॥ ३० ॥

की ओरसे युद्ध करनेके वास्ते स्वयं देवराज इन्द्र आगमन कर रहे हैं। २३-२४

हे अर्जुन! हमारी सेनाके मुख्य मुख्य रथी और महारथी योद्धा लोग भी इस अत्यन्त भयङ्कर शब्दको सुनके व्याकुल होगये हैं, तथा मेरी सेनाके सब लोग भयभीत हुए हैं और उनके शरीरके रोएं खडे होगये हैं। द्वितीय देवराज इन्द्रके समान पराक्रमी यह कौन महारथी भागती हुई कुरुसेनाके योद्धाओंको लौटाकर हम लोगोंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिकी ओर आरहा है।२४-२६

युधिष्ठिरके वचनको सुनके अर्जुन बोले, महाराज! जब अस्त्र परित्याग करनेके अनन्तर गुरु द्रोणाचार्य मारे गये, और उस समय कौरवोंकी सेना छिन्न भिन्न होकर युद्धभूमिसे भाग गई थी; अब फिर कौन महारथी उन योद्धाओंको भागनेसे निवृत्त करके सिंहनाद कर रहा है, इस विषयमें जो बात है, और जिसके पराक्रमके आसरेसे कौरव लोग इस कठिन कार्यके करनेमें उद्यत होकर पराक्रमके सहित सिंहनाद कर रहे हैं; मैं उस मतवारे हाथीके समान गमन करनेवाले कौरवोंके अभयप्रद कठिन कर्म करनेवाले श्रीमान् महाबाहु वीरके विषयको वर्णन करता हूं, सुनिये ॥ (२६-२९)

जिसके उत्पन्न होनेसे द्रोणाचार्यने ब्राह्मणोंको दश सौ गोदान किया था, ये वही अश्वत्थामा गर्जन कर रहे हैं, जिस वीरने उत्पन्न होते ही ऊच्चैःश्रवा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेषता कम्पिता भूमिर्लोकाश्च सकलास्त्रयः ।
तच्छ्रुत्वाऽन्तर्हितं भूतं नाम तस्याऽकरोत्तदा ॥ ३१॥
अश्वत्थामेति सोऽद्यैष शूरो नदति पाण्डव ।
यो ह्यनाथ इवाऽऽक्रम्य पार्षतेन हतस्तथा ॥ ३२ ॥
कर्मणा सुनृशंसेन तस्य नाथो व्यवस्थितः ।
गुरुं मे यत्र पाञ्चाल्यः केशपक्षे परामृशत् ॥ ३३ ॥
तन्न जातु क्षमेद् द्रौणिर्जानन्पौरुषमात्मनः ।
उपचीर्णो गुरुर्मिथ्या भवता राज्यकारणात् ॥ ३४ ॥
धर्मज्ञेन सता नाम सोऽधर्मः सुमहान्कृतः ।
चिरं स्थास्यति चाऽकीर्तिस्त्रैलोक्ये सचराचरे ॥ ३५ ॥
रामे वालिवधाद्वृद्धदेवं द्रोणे निपातिते ।
सर्वधर्मोपपन्नोऽयं स मे शिष्यश्च पाण्डवः ॥ ३६ ॥
नाऽयं वदति मिथ्येति प्रत्ययं कृतवांस्त्वयि ।
स सत्यकंचुकं नाम प्रविष्टेन ततोऽनृतम् ॥ ३७ ॥

घोडेकी भांति शब्द किया था, और उस शब्दसे सम्पूर्ण लोक कम्पित हुए थे, उस शब्दको सुनके किसी अलक्षित प्राणीने उनका अश्वत्थामा नाम रक्खा था ॥ इस समय वही पराक्रमी अश्वत्थामा सिंहनाद कर रहे हैं। पृषतपुत्र धृष्टद्युम्नने जिसे अनाथकी भांति आक्रमण करके अत्यन्त नीचताके सहित वध किया था; इस समय उनके सहाय स्वरूप उनका पुत्र अश्वत्थामा युद्ध करनेके वास्ते उपस्थित हुआ है। ३०-३३

पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्नने जब मेरे गुरुका अस्त्रत्याग करने पर भी केश पकड उनका वध किया है, तब आत्मपुरुषार्थके जाननेवाले अश्वत्थामा कदापि क्षमा नहीं करेंगे। महाराज ! चाहे जो हो, जब आपने धर्मात्मा होकर भी राज्यके वास्ते गुरुके समीप मिथ्या व्यवहार किया है; उससे महाघोर अधर्म हुआ है। अधिक क्या कहा जावे कपटतासे द्रोणाचार्यका वध करानेसे सदा सर्वदा इस पृथ्वी पर आपकी अकीर्त्ति इस प्रकार विद्यमान रहेगी, जैसे वालिका वध करनेसे रामचन्द्रकी अकीर्त्ति भूमण्डल पर फैल रही है। (३२-३६)

क्योंकि आचार्यने समझा था, कि युधिष्ठिर धर्मात्मा और मेरे शिष्य हैं; कभी मेरे समीपमें मिथ्या वचन नहीं कहेंगे, ऐसा ही विचारके तुम्हारा विश्वास किया। परन्तु "हाथी मारा गया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य उक्तो भवता हतः कुञ्जर इत्युत ।
ततः शस्त्रं समुत्सृज्य निर्ममो गतचेतनः ॥ ३८ ॥
आसीत्सुविह्वलो राजन्यथा दृष्टस्त्वया विभुः ।
स तु शोकसमाविष्टो विमुखः पुत्रवत्सलः ॥ ३९ ॥
शाश्वतं धर्ममुत्सृज्य गुरुः शस्त्रेण घातितः ।
न्यस्तशस्त्रमधर्मेण घातयित्वा गुरुं भवान् ॥ ४० ॥
रक्षात्विदानीं सामात्यो यदि शक्तोऽसि पार्षतम् ।
ग्रस्तमाचार्यपुत्रेण क्रुद्धेन हतबन्धुना ॥ ४१ ॥
सर्वे वयं परित्रातुं न शक्ष्यामोऽद्य पार्षतम् ।
सौहार्दं सर्वभूतेषु यः करोत्यतिमानुषः ॥
सोऽद्य केशग्रहं श्रुत्वा पितुर्धक्ष्यति नो रणे ॥ ४२ ॥
विक्रोशमाने हि मयि भृशमाचार्यगृद्धिनि ।
अपाकीर्य स्वयं धर्मं शिष्येण निहतो गुरुः ॥ ४३ ॥
यदा गतं वयो भूयः शिष्टमल्पतरं च नः ।

है," इस सत्यकंचुकता के अवलम्ब से आपने गुरुके समीप मिथ्या वचन कहा है। महाराज! आचार्य सम्पूर्ण शत्रुओंके नाश करनेमें समर्थ थे, तौ भी तुम्हारे वचनको सुनते ही अस्त्र परित्याग करके संयतेन्द्रिय होकर योगयुक्त चित्तसे ईश्वरके ध्यानमें रत हुए थे, आपने यह सब प्रत्यक्ष देखा है। हाय! आपने शिष्य होकर भी सनातन धर्म परित्याग करके पुत्रवत्सल शोकातुर और रणभूमिमें अस्त्रशस्त्र त्याग करनेपर भी गुरुका वध कराया है। (३६-४०)

आपने अधर्मसे अस्त्र रहित गुरुका वध कराया है, इस समय यदि सामर्थ होवे, तो अनुयाइयोंके सहित इकठ्ठे होकर धृष्टद्युम्नकी रक्षा करो। अधिक क्या कहूं, पिताके वधसे क्रुद्ध हुए आचार्यपुत्र अश्वत्थामासे धृष्टद्युम्नकी रक्षा करनेमें हम सब कोई इकठ्ठे होकरभी समर्थ न होगें। जो सब प्राणियोंके ऊपर दया प्रकाशित करते हैं, वह अलौकिक पराक्रमी अश्वत्थामा अपने पिताके केश ग्रहण करनेके विषयको सुनकर युद्धभूमिमें सब लोगोंको ही भस्म कर देंगे॥ मैं आचार्यके जीवन रक्षा की इच्छासे बार बार चिल्ला रहा था, तौ भी धृष्टद्युम्नने धर्म त्यागके शिष्य होकर भी गुरुका वध किया है॥ (४१-४३)

हम लोगोंकी बहुतसी अवस्था बीत गई, अब थोडीसी और बाकी है; इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्येदानीं विकारोऽयमधर्मोऽयं कृतो महान् ॥ ४४ ॥
पितेव नित्यं सौहार्दात्पितेव हि च धर्मतः ।
सोऽल्पकालस्य राज्यस्य कारणाद्घातितो गुरुः ॥ ४५ ॥
धृतराष्ट्रेण भीष्माय द्रोणाय च विशाम्पते ।
विसृष्टा पृथिवी सर्वा सह पुत्रैश्च तत्परैः ॥ ४६ ॥
सम्प्राप्य तादृशीं वृत्तिं सत्कृतः सततं परैः ।
अवृणीत सदा पुत्रान्मामेवाऽभ्याधिकं गुरुः ॥ ४७ ॥
अवेक्षमाणस्त्वां मां च न्यस्तास्त्रश्चाऽऽहवे हतः ।
नत्वेनं युध्यमानं वै हन्यादपि शतक्रतुः ॥ ४८ ॥
तस्याऽऽचार्यस्य वृद्धस्य द्रोहो नित्योपकारिणः ।
कृतो ह्यनार्यैरस्माभी राज्यार्थे लुब्धबुद्धिभिः ॥ ४९ ॥
अहो बत महत्पापं कृतं कर्म सुदारुणम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन द्रोणोऽयं साधु घातितः ॥ ५० ॥
पुत्रान्भ्रातॄन्पितॄन्दाराञ्जीवितं चैव वासविः ।
त्यजेत्सर्वं मम प्रेम्णा जानात्येवं हि मे गुरुः ॥५१ ॥

समय अन्तिम अवस्थामें धर्म विकार उत्पन्न हुआ है, महाघोर अधर्मकार्य किया गया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है ॥ महाराज ! जो सदा सुहृदतासे युक्त और धर्मानुसार हम लोगोंके पिता समान थे, इन गुरुका अस्थाई राज्यके वास्ते आपने कैसे वध कराया ॥ देखिये, राजा धृतराष्ट्र और भीष्मने द्रोणाचार्यको निज पुत्रोंके सहित सम्पूर्ण पृथ्वी समर्पण कियी थी । आचार्य ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति प्राप्त करके तथा कौरवोंसे सदा सम्मानित होकर भी हम लोगोंके ऊपर अपने पुत्रसे भी अधिक प्रीति करते थे ॥ (४४–४७)

महाराज ! आचार्यने केवल तुम्हारे विश्वासपर ही अस्त्र त्याग किया; यदि आचार्य युद्ध करते रहते, तो देवराज इन्द्र भी उनका वध न कर सकते ॥ जो हो, हम लोग अत्यन्त ही मूर्ख हैं जो राज्यके लोभसे सदा उपकारमें रत वृद्ध आचार्यका अन्याय पूर्वक वध कराके महाघोर पाप कार्य किया है ॥ ओहो ! हम लोगोंने जब राज्य और सुखके लोभसे गुरुका वध कराया है, तब हम लोगोंसे अधिक पापी और कौन होगा ? (४८–५०)

आचार्य द्रोणका यह निश्चय था, कि अर्जुन मेरे वास्ते अपने पिता, पुत्र, भ्राता, स्त्री और प्राण पर्यन्त भी त्याग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स मया राज्यकामेन हन्यमानो ह्युपेक्षितः ।
तस्मादर्वाक्शिरा राजन्प्राप्तोऽस्मि नरकं प्रभो ॥ ५२ ॥
ब्राह्मणं वृद्धमाचार्यं न्यस्तशस्त्रं महामुनिम् ।
घातयित्वाऽद्य राज्यार्थे मृतं श्रेयो न जीवितम्॥५३॥ [९०७८]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वणि अर्जुनवाक्ये षण्णवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९६॥

सञ्जय उवाच— अर्जुनस्य वचः श्रुत्वा नोचुस्तत्र महारथाः ।
अप्रियं वा प्रियं वाऽपि महाराज धनञ्जयम् ॥ १ ॥
ततः क्रुद्धो महाबाहुर्भीमसेनोऽभ्यभाषत ।
कुत्सयन्निव कौन्तेयमर्जुनं भरतर्षभ ॥ २ ॥
मुनिर्यथाऽऽरण्यगतो भाषते धर्मसंहितम् ।
न्यस्तदण्डो यथा पार्थ ब्राह्मणः संशितव्रतः ॥ ३ ॥
क्षतत्राता क्षताज्जीवन्क्षन्ता स्त्रीष्वपि साधुषु ।
क्षत्रियः क्षितिमाप्नोति क्षिप्रं धर्मं यशः श्रियः ॥ ४ ॥
स भवान्क्षत्रियगुणैर्युक्तः सर्वैः कुलोद्वहः ।

कर सकेगा। ऐसे आचार्य मेरे संमुख ही मारे गये और मैंने राज्यके लोभसे ही उस कर्मकी उपेक्षा की। हे राजन्! मैंने इस कर्मसे अधोमुख होकर नरकमें जानेकी गति ही प्राप्त की है॥ मेरे आचार्य ब्राह्मण, बूढे, महामुनि थे, उन्होंने शस्त्र त्याग किया था ऐसे ही आचार्यका मैंने राज्यके लिये घात कराया है, तो ऐसी अवस्थामें जीवित रहनेकी अपेक्षा मृत्यु ही मुझे श्रेयस्कर लगती है॥ (५१-५३) [९०७८]

द्रोणपर्वमें एकसौ छानव्वे अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ सतानव्वे अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! अर्जुनके वचनको सुनके महारथी योद्धा लोग प्रिय वा अप्रिय कुछ भी वचन न बोले, परन्तु महाबाहु भीमसेन क्रुद्ध होकर अर्जुनकी निन्दा करते हुए यह वचन बोले, हे अर्जुन! वनवासी मुनि और दण्डरहित ब्रह्मचारी परमहंस जिस प्रकार धर्म उपदेश करते रहते हैं, वैसे ही तुम भी आज धर्म उपदेश कर रहे हो। जो स्त्री और साधुओंके विषयमें क्षमा करते हैं, युद्धमें अपनेको तथा दूसरेको परित्राण करनेमें समर्थ होते हैं, वे क्षत्रिय पुरुष शीघ्र ही पृथ्वीके बीच राज्य, धर्म, यश और लक्ष्मी को प्राप्त कर सकते हैं॥ (१-४)

तुम भी इन सम्पूर्ण क्षत्रीय गुणोंसे युक्त और वीर धुरीण पुरुष हो; परन्तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविपाश्चित्यथा वाचं व्याहरन्नाऽद्य शोभसे ॥ ५ ॥
पराक्रमस्ते कौन्तेय शक्रस्येव शचीपतेः ।
न चाऽतिवर्तसे धर्मं वेलामिव महोदधिः ॥ ६ ॥
न पूजयेत्त्वां को न्वद्य यत्त्रयोदशवार्षिकम् ।
अमर्षं पृष्ठतः कृत्वा धर्ममेवाऽभिकांक्षसे ॥ ७ ॥
दिष्ट्या तात मनस्तेऽद्य स्वधर्ममनुवर्तते ।
आनृशंस्ये च ते दिष्ट्या बुद्धिः सततमच्युत ॥ ८ ॥
यत्तु धर्मप्रवृत्तस्य हृतं राज्यमधर्मतः ।
द्रौपदी च परामृष्टा सभामानीय शत्रुभिः ॥ ९ ॥
वनं प्रव्राजिताश्चाऽऽस्म वल्कलाजिनवाससः ।
अनर्हमाणास्तं भावं त्रयोदशसमाः परैः ॥ १० ॥
एतान्यमर्षस्थानानि मर्षितानि मयाऽनघ ।
क्षत्रधर्मप्रसक्तेन सर्वमेतदनुष्ठितम् ॥ ११ ॥
तमधर्ममपाकृष्टं स्मृत्वाऽद्य सहितस्त्वया ।
सानुबन्धान्हनिष्यामि क्षुद्रान्राज्यहरानहम् ॥ १२ ॥

आज वक्तृता करके मूर्खकी भांति शोभित नहीं होरहे हो ॥ हे अर्जुन ! तुम्हारा पराक्रम शचीपति इन्द्रके समान है, और जैसे समुद्र मर्यादाको उल्लङ्घन नहीं करता, वैसे ही तुम जो तेरह वर्ष वनवासके क्लेशसे उत्पन्न हुए क्रोधको त्यागके इस समय धर्मकी अभिलाषा कर रहे हो; इसमें कौन पुरुष तुम्हारी प्रशंसा नहीं करेगा ? (५-७)

हे तात ! प्रारब्धसे ही तुम्हारा मन इस समय स्वधर्ममें रत हुआ है; प्रारब्धसे ही तुम्हारी बुद्धि अनृशंसतासे विचलित नहीं होती है । महाराज युधिष्ठिर सदा धर्मके कार्योंमें रत रहते हैं, तौभी शत्रुओंने अधर्मसे हम लोगोंके राज्य को हरण किया और द्रौपदीको सभाके बीच लाके अवमानित किया था; हम लोग राज्य के यथार्थ अधिकारी थे, तौभी शत्रुओंने वल्कल वसन पहना कर तेरह वर्ष पर्यन्त हम लोगोंको वनवासी बनाया था ! इतने कष्ट तथा दुःखोंको सहके भी हम लोगोंने उन लोगोंके स्थिर किये हुए नियमोंको पालन किया है ॥ (८-१०)

हे अर्जुन ! इस समय उस अधर्मके विरुद्ध हम लोग राज्य हरण करनेवाले क्षुद्र शत्रुओंको बन्धुबान्धवोंके सहित संहार करनेके वास्ते युद्धभूमिमें उपस्थित हुए हैं, और सेना इकट्ठी करके युद्ध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वया हि कथितं पूर्वं युद्धायाऽभ्यागता वयम् ।
घटामहे यथाशक्ति त्वं तु नोऽद्य जुगुप्ससे ॥ १३ ॥
धर्ममन्विच्छसि ज्ञातुं मिथ्यावचनमेव ते ।
भयार्दितानामस्माकं वाचा मर्माणि कृन्तसि ॥ १४ ॥
वपन्व्रणे क्षारमिव क्षतानां शत्रुकर्शन ।
विदीर्यते मे हृदयं त्वया वाक्शल्यपीडितम् ॥ १५ ॥
अधर्ममेनं विपुलं धार्मिकः सन्न बुध्यसे ।
यत्त्वमात्मानमस्मांश्च प्रशंस्यान्न प्रशंससि ॥ १६ ॥
वासुदेवे स्थिते चापि द्रोणपुत्रं प्रशंससि ।
यः कलां षोडशीं पूर्णां धनञ्जय न तेऽर्हति ॥ १७ ॥
स्वयमेवाऽऽत्मनो दोषान्ब्रुवाणः किन्न लज्जसे ।
दारयेयं महीं क्रोधाद्विकिरेयं च पर्वतान् ॥ १८ ॥
आविध्यैतां गदां गुर्वीं भीमां काञ्चनमालिनीम् ।

करनेमें प्रवृत्त होरहे हैं । विशेष करके तुमने पहिले हम लोगोंको धीरज धारण कराके युद्ध करनेके वास्ते प्रतिज्ञा की थी, इसीसे हम सब कोई रणभूमिके बीच उपस्थित हुए हैं; और यथा शक्तिके अनुसार युद्ध भी कर रहे हैं; परन्तु तुम इस समय हम लोगोंकी निन्दा कर रहे हो ! इससे अब मैंने समझा, कि तुम क्षत्रीय धर्म जाननेके अभिलाषी नहीं हो, इसही कारण वृथा जल्पना कर रहे हो । इस समयमें एक तो मेरी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा भयभीत होरहे हैं, दूसरे तुम कटे हुए घावपर निमक लगानेकी भांति अपने वचन रूपी बाणसे हम लोगोंके मर्म स्थलोंको छेदन कर रहे हो ॥ हे अर्जुन ! अधिक क्या कहूं, तुम्हारे वचनरूपी शलाकासे विद्ध होकर मेरा हृदय विदीर्ण हुआ चाहता है ॥ (११-१५)

तुम अपने तथा हम सब लोगोंके प्रशंसा करनेके पात्र होकर भी जो प्रशंसा नहीं करते हो, इससे अत्यन्त अधर्मका कार्य होरहा है ॥ हे अर्जुन ! श्रीकृष्णके वर्त्तमान रहते जो अश्वत्थामा तुम्हारे सोलहवोंका एक अंश भी नहीं है, तुम वैसे द्रोणपुत्रको किस प्रकार प्रशंसा कर रहे हो; तुम्हें अपने मुखसे अपना दोष वर्णन करनेसे लज्जा नहीं होती है ! (१६-१८)

तुम धर्मात्मा होकर भी इस विषय को नहीं समझ सकते हो ! मैं क्रुद्ध होनेसे सम्पूर्ण पर्वतोंको चूर्ण और पृथ्वी-को विदीर्ण कर सकता हूं; और इस सुवर्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरिप्रकाशान्क्षितिजान्भञ्जेयमनिलो यथा ॥ १९ ॥
द्रावयेयं शरैश्चापि सेन्द्रान्देवान्समागतान् ।
सराक्षसगणान्पार्थ सासुरोरगमानवान् ॥ २० ॥
स त्वमेवंविधं जानन्भ्रातरं मां नरर्षभ ।
द्रोणपुत्राद्भयं कर्तुं नाऽर्हस्यमितविक्रम ॥ २१ ॥
अथवा तिष्ठ बीभत्सो सह सर्वैः सहोदरैः ।
अहमेनं गदापाणिर्जेष्याम्येको महाहवे ॥ २२ ॥
ततः पाञ्चालराजस्य पुत्रः पार्थमथाऽब्रवीत् ।
संक्रुद्धमिव नर्दन्तं हिरण्यकशिपुर्हरिम् ॥ २३ ॥
धृष्टद्युम्न उवाच- बीभत्सो विप्रकर्माणि विदितानि मनीषिणाम् ।
याजनाध्यापने दानं तथा यज्ञप्रतिग्रहौ ॥ २४ ॥
षष्ठमध्ययनं नाम तेषां कस्मिन्प्रतिष्ठितः ।
हतो द्रोणो मया ह्येवं किं मां पार्थ विगर्हसे ॥ २५ ॥
अपक्रान्तः स्वधर्माच्च क्षात्रधर्मं व्यपाश्रितः ।

भूषित प्रचण्ड गदाको ग्रहण करके वृक्ष लतासे युक्त पर्वतोंको तोडके पृथ्वीमें मिला सकता हूं ॥ और मैं अपने बाणोंके प्रभावसे इन्द्रके सहित देवता, दानव, यक्ष, गन्धर्व और सर्पोंके सहित मनुष्य लोकका नाश कर सकता हूं ॥ १८-२०

हे अर्जुन ! तुम स्वयं महा पराक्रमी वीर योद्धा हो, और मैं तुम्हारा ऐसा बलवान् सहोदर भ्राता वर्त्तमान हूं; इसे भली भांतिसे न जान कर द्रोणपुत्र अश्वत्थामासे भय करना तुम्हें उचित नहीं है ॥ यदि इच्छा हो तो तुम सहोदर भाइयोंके सहित इस ही स्थल पर स्थित रहो, मैं अकेले ही गदा ग्रहण करके इस महा युद्धमें अश्वत्थामाका वध करूंगा ॥ (२१-२२)

तिसके अनन्तर जैसे पहिले समयमें नरसिंह रूपधारी विष्णु भगवानको गर्जते देख, हिरण्यकशिपुने उनसे समयानुसार वचन कहा था, वैसे ही धृष्टद्युम्न भी अर्जुनसे यह वचन बोले, हे अर्जुन ! "अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह," ये छः कर्म ब्राह्मणोंके अनुष्ठान करनेके वास्ते धर्मशास्त्रमें वर्णन किये गये हैं; परन्तु बताओ तो सही, इन छः कर्मोंमें कौनसा कर्म द्रोणाचार्यमें प्रतिष्ठित था ? तब जो मैंने ऐसे धर्म रहित ब्राह्मणका वध किया है, उसके वास्ते तुम क्यों मेरी निन्दा कर रहे हो ? (२३-२५)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमानुषेण हन्त्यस्मानस्त्रेण क्षुद्रकर्मकृत् ॥ २६ ॥
तथा मायां प्रयुञ्जानमसह्यं ब्राह्मणध्रुवम् ।
माययैव निहन्यायो न युक्तं पार्थ तत्र किम् ॥ २७ ॥
तस्मिंस्तथा मया शस्ते यदि द्रौणायनी रुषा ।
कुरुते भैरवं नादं तत्र किं मम हीयते ॥ २८ ॥
न चाऽद्भुतमिदं मन्ये यद् द्रौणिर्युद्धसंज्ञया ।
घातयिष्यति कौरव्यान्परित्रातुमशक्नुवन् ॥ २९ ॥
यच्च मां धार्मिको भूत्वा ब्रवीषि गुरुघातिनम् ।
तदर्थमहमुत्पन्नः पाञ्चाल्यस्य सुतोऽनलात् ॥ ३० ॥
यस्य कार्यमकार्यं वा युध्यतः स्यात्समं रणे ।
तं कथं ब्राह्मणं ब्रूयाः क्षत्रियं वा धनञ्जय ॥ ३१ ॥
यो ह्यनस्त्रविदो हन्याद्ब्रह्मास्त्रैः क्रोधमूर्छितः ।
सर्वोपायैर्न स कथं वध्यः पुरुषसत्तम ॥ ३२ ॥

जिस नीच कर्म करनेवाले ब्राह्मणने भ्रष्ट होकर क्षत्रीय धर्म अवलम्बन किया था, जिसने अलौकिक अस्त्रोंसे मेरी सेनाके योद्धाओंका वध किया है, वैसे असह्य कपट आचार करनेवाले अधम ब्राह्मणका जो पुरुष कपटता अवलम्बन करके वध करे, क्या उसके सङ्ग सद्व्यवहार करना उचित नहीं है ? जो हो, मैंने उस दुःशील ब्राह्मणका वध किया है उस ही कारण अश्वत्थामा क्रुद्ध होकर भयङ्कर शब्द कर रहा है, और द्रोण पुत्र अश्वत्थामा जो इस समय गर्जन कर रहा है, इसे मैं कुछ आश्चर्य विषय नहीं समझता हूं ॥ (२६–२८)

वह केवल गर्जके कौरवोंको युद्ध करनेके वास्ते लौटाकर फिर युद्धभूमिमें उपस्थित करेगा; परन्तु अन्तमें उन योद्धाओंके परित्राण करनेमें असमर्थ होकर सम्पूर्ण शूरवीरोंका नाश करावेगा॥ हे अर्जुन ! तुम जो धर्मात्मा होके मुझे गुरुघाती कहके मेरी निन्दा कर रहे हो; क्या तुम इस विषयको नहीं जानते, कि मैं द्रोणवधके ही वास्ते पाञ्चालराजके पुत्र रूपसे अग्निसे उत्पन्न हुआ हूं ? हे अर्जुन ! युद्धके समयमें जिसे कार्याकार्यका ज्ञान समभावसे था; वैसे पुरुषको तुम ब्राह्मण वा क्षत्रीय किस प्रकारसे निश्चय करोगे ? (२९–३१)

विशेष करके जिन्होंने अस्त्रविद्या न जाननेवाले साधारण योद्धाओंको ब्रह्मास्त्रसे संहार किया; उसे जिस उपायसे होसके वध करना क्या उचित नहीं है ?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधर्मिणं धर्मविद्भिः प्रोक्तं तेषां विषोपमम् ।
जानन्धर्मार्थतत्त्वज्ञ किं मामर्जुन गर्हसे ॥ ३३ ॥
नृशंसः स मयाऽऽक्रम्य रथ एव निपातितः ।
तन्मामनिन्द्यं बीभत्सो किमर्थं नाऽभिनन्दसे॥ ३४ ॥
कालानलसमं पार्थ ज्वलनार्कविषोपमम् ।
भीमं द्रोणशिरश्छिन्नं न प्रशंससि मे कथम् ॥ ३५ ॥
योऽसौ ममैव नाऽन्यस्य बान्धवान्युधि जघ्निवान् ।
छित्त्वाऽपि तस्य मूर्धानं नैवाऽस्मि विगतज्वरः ॥३६॥
तच्च मे कृन्तते मर्म यन्न तस्य शिरो मया ।
निषादविषये क्षिप्तं जयद्रथशिरो यथा ॥ ३७ ॥
अथाऽवधश्च शत्रूणामधर्मः श्रूयतेऽर्जुन ।
क्षत्रियस्य हि धर्मोऽयं हन्याद्वन्येत वा पुनः ॥ ३८ ॥
स शत्रुर्निहतः संख्ये मया धर्मेण पाण्डव ।
यथा त्वया हतः शूरो भगदत्तः पितुः सखा ॥ ३९ ॥

हे धर्म अर्थके तत्त्वको जाननेवाले अर्जुन! धर्म जाननेवाले पुरुषोंने विधर्मीको विषके समान परित्याग करने योग्य कहके वर्णन किया है; तुम इन सम्पूर्ण विषयोंको जानके भी क्यों मेरी निन्दा कर रहे हो? उस दुष्ट ब्राह्मणको मैंने रथमें ही आक्रमण करके उसका वध किया है, इससे मैं प्रशंसाके योग्य हूं; तब तुम क्यों नहीं मेरी प्रशंसा करते हो? (३२-३४)

हे अर्जुन! मैंने साक्षात् प्रलय काल की अग्नि सूर्यके समान तेजस्वी होके द्रोणाचार्यका सिर काटा है, इससे तुम किस कारणसे मेरी प्रशंसा नहीं करते हो? द्रोणाचार्यने केवल मेरे ही बन्धु बान्धवोंका नाश किया है, दूसरेका नहीं; इससे मैं उनका सिर काटके भी अभीतक शोक रहित नहीं हुआ हूं॥ जयद्रथके सिरकी भांति जो मैंने द्रोणाचार्यके सिरको कुत्ते और सियारोंको समर्पण नहीं किया इससे मेरे मर्म स्थल विदीर्ण होरहे हैं॥ (३५-३७)

हे अर्जुन! यह वचन प्रसिद्ध है, कि शत्रुका वध न करनेसे अधर्म होता है; क्योंकि जिस स्थलमें शत्रुका वध न होसके, वहां पर शत्रुके हाथसे मरना ही क्षत्रिय पुरुषोंका धर्म निश्चित हुआ है॥ हे अर्जुन! तुमने जिस धर्मको अलम्बन करके पितृसखा भगदत्तका वध किया है, मैंने भी उस ही धर्मको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पितामहं रणे हत्वा मन्यसे धर्ममात्मनः।
मया शत्रौ हते कस्मात्पापे धर्मं न मन्यसे ॥ ४० ॥
सम्बन्धावनतं पार्थ न मां त्वं वक्तुमर्हसि।
स्वगात्रकृतसोपानं निषण्णमिव दन्तिनम् ॥ ४१ ॥
क्षमामि ते सर्वमेव वाग्व्यतिक्रममर्जुन।
द्रौपद्या द्रौपदेयानां कृते नाऽन्येन हेतुना ॥ ४२ ॥
कुलक्रमागतं वैरं ममाऽऽचार्येण विश्रुतम्।
तथा जानात्ययं लोको न यूयं पाण्डुनन्दनाः ॥ ४३ ॥
नाऽनृती पाण्डवो ज्येष्ठो नाऽहं वाऽधार्मिकोऽर्जुन।
शिष्यद्रोही हतः पापो युध्यस्व विजयस्तव ॥ ४४ ॥[९१२२]

इति श्रीमहाभारते० द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वणि धृष्टद्युम्नवाक्ये सप्तनवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥१९७॥

धृतराष्ट्र उवाच—साङ्गा वेदा यथान्यायं येनाऽधीता महात्मना।
यस्मिन्साक्षाद्धनुर्वेदो हीनिषेवे प्रतिष्ठितः ॥ १ ॥

अवलम्बन करके अपने शत्रुका नाश किया है ॥ इसके अतिरिक्त तुम यदि भीष्मपितामहका वध करके धर्मका कार्य समझ सकते हो, तो मैं भी अपने अनिष्टकारी शत्रुका वध करके क्यों नहीं धर्मका कार्य समझूंगा ॥ (३८-४०)

जैसे हाथी आरोहीके सम्मुख अवनत होकर अपने ही शरीरको सोपान स्वरूप कर देता है, वैसे ही मैं भी सम्बन्धके कारण तुम्हारे समीप अवनत होरहा हूं; इस ही कारण तुम मेरे विषयमें ऐसे कठोर वचनोंका प्रयोग कर रहे हो ॥ जो हो, केवल द्रौपदी और उनके पुत्रोंके अनुरोधसे मैंने तुम्हारे इस अपराधको क्षमा किया है॥ हे पाण्डव ! द्रोणाचार्यके सङ्ग हम लोगोंके कुल क्रमागत शत्रुताके विषयको ये सम्पूर्ण पुरुष जानते हैं, तुम इस विषय को नहीं जानते हो ॥ हे अर्जुन ! तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर मिथ्यावादी नहीं हैं। और मैं भी अधार्मिक नहीं हूं; पापी द्रोणाचार्य शिष्यद्रोही था, इस ही कारण मारा गया, इससे तुम युद्ध करो, तुम्हारी विजय होवेगी, इसमें सन्देह नहीं है ॥ (४१-४४) [९१२२]

द्रोणपर्वमें एकसौ सतानव्वे अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ अठानव्वे अध्याय।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! जिस महात्माने लोकानुरोधके कारण यथा रीतिसे अङ्गोंके सहित सम्पूर्ण वेदको पढा था, और जिसके समीप धनुर्वेद मूर्त्तिमान रूपसे उपस्थित था ॥ और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य प्रसादात्कुर्वन्ति कर्माणि पुरुषर्षभाः ।
अमानुषाणि संग्रामे देवैरसुकराणि च ॥ २ ॥
तस्मिन्नाकुश्यति द्रोणे समक्षं पापकर्मणा ।
नीचात्मना नृशंसेन क्षुद्रेण गुरुघातिना ॥ ३ ॥
नाऽमर्षं तत्र कुर्वन्ति धिक्क्षात्रं धिगमर्षिताम् ।
पार्थाः सर्वे च राजानः पृथिव्यां ये धनुर्धराः ॥ ४ ॥
श्रुत्वा किमाहुः पाञ्चाल्यं तन्ममाऽचक्ष्व सञ्जय ।

सञ्जय उवाच— श्रुत्वा द्रुपदपुत्रस्य ता वाचः क्रूरकर्मणः ॥ ५ ॥
तूष्णीं बभूवू राजानः सर्व एव विशाम्पते ।
अर्जुनस्तु कटाक्षेण जिह्मं विप्रेक्ष्य पार्षतम् ॥ ६ ॥
सबाष्पमतिनिःश्वस्य धिग्धिगित्येव चाऽब्रवीत् ।
युधिष्ठिरश्च भीमश्च यमौ कृष्णस्तथाऽपरे ॥ ७ ॥
आसन्सुव्रीडिता राजन्सात्यकिस्त्वब्रवीदिदम् ।
नेहाऽस्ति पुरुषः काश्चिद्य इमं पापपूरुषम् ॥ ८ ॥
भाषमाणमकल्याणं क्षिप्रं हन्यान्नराधमम् ।

जिसकी कृपासे पुरुषश्रेष्ठ राजा लोग युद्धभूमिमें देवतोंसे भी न होने योग्य कठिन और अलौकिक कार्योंको कर रहे हैं ॥ वह महर्षि भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य जब नीच प्रकृतिवाले पापी गुरुघाती तुच्छ धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गये; उस समय कोई क्षत्रिय योद्धा उस पापी धृष्टद्युम्नके ऊपर क्रुद्ध नहीं हुए, ऐसे क्रोध और क्षत्रीय कुलको धिकार है। हे सञ्जय! चाहे जो हो, उस समय धृष्टद्युम्नके वचनको सुनके महाधनुर्धर अर्जुन तथा अन्य राजाओंने उसे क्या उत्तर दिया; उस वृत्तान्तको इस समय तुम मेरे समीप वर्णन करो। (१–५)

सञ्जय बोले, महाराज! क्रूर कर्म करनेवाले धृष्टद्युम्नके वचनोंको सुनकर उस समय राजाओंने कुछ भी उत्तर नहीं किया; अर्जुन तिरछी दृष्टिसे उनकी ओर देखकर 'धिक्कार है' ऐसा वचन कहके लम्बी सांस छोडते हुए आंखोंसे आंसू बहाने लगे। युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव और श्रीकृष्णचन्द्र अत्यन्त लज्जित हुए। उस समय केवल सात्यकिने इस प्रकार उत्तर किया। (५–८)

आहो! इस स्थानमें क्या ऐसा कोई भी पुरुष वर्तमान नहीं है; जो इस अन्याय वचन बोलनेवाले अधम तथा पापी पुरुषका शीघ्रही नाश कर सके?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एते त्वां पाण्डवाः सर्वे कुत्सयन्ति विवित्सया ॥ ९ ॥
कर्मणा तेन पापेन श्वपाकं ब्राह्मणा इव ।
एतत्कृत्वा महत्पापं निन्दितः सर्वसाधुभिः ॥ १० ॥
न लज्जसे कथं वक्तुं समितिं प्राप्य शोभनाम् ।
कथं च शतधा जिह्वा न ते मूर्धा च दीर्यते ॥ ११ ॥
गुरुमाक्रोशतः क्षुद्र न चाऽधर्मेण पात्यसे ।
वाच्यस्त्वमसि पार्थैश्च सर्वैश्चाऽन्धकवृष्णिभिः ॥ १२ ॥
यत्कर्म कलुषं कृत्वा श्लाघसे जनसंसदि ।
अकार्यं तादृशं कृत्वा पुनरेव गुरुं क्षिपन् ॥ १३ ॥
वध्यस्त्वं न त्वयाऽर्थोऽस्ति मुहूर्तमपि जीवता ।
कस्त्वेतद्व्यवसेदार्यस्त्वदन्यः पुरुषाधम ॥ १४ ॥
निगृह्य केशेषु वधं गुरोर्धर्मात्मनः सतः ।
सप्ताऽवरे तथा पूर्वे बान्धवास्ते निमज्जिताः ॥ १५ ॥
यशसा च परित्यक्तास्त्वां प्राप्य कुलपांसनम् ।
उक्तवांश्चापि यत्पार्थे भीष्मं प्रति नरर्षभ ॥ १६ ॥

रे धृष्टद्युम्न! ब्राह्मण लोग जैसे चाण्डालकी निन्दा करते हैं;वैसे ही तुम्हारे पापाचरणसे पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष तुम्हारी निन्दा करते हैं। तू लोकसमाजमें इस प्रकार साधु पुरुषोंसे निन्दित अत्यन्त बृहत् पाप कर्मको करके भी निधडक वचन बोलनेमें लज्जित नहीं होता है? रे क्षुद्र! क्या तू गुरुहत्या करके अधर्मसे पतित नहीं हुआ है? इस समयभी तुम्हारा शिर तथा तुम्हारी जिह्वा! सौ टुकडे क्यों नहीं होजाती?(८-१२)

तुम जिस कर्मको करके जनसमाज के बीच अपनी बडाई कर रहे हो; उससे तुम पाण्डव, वृष्णि और अन्धकवंशीयोंके समीप पतितके समान मालूम होरहे हो, तुम जब ऐसे नीच कर्म को कर के भी आचार्य की निन्दा कर रहे हो, तो इस समय अब तुम्हारा वध करना ही उचित है, क्षणभर भी तुम्हें जीवित रखनेकी आवश्यकता नहीं है। रे अधम पुरुष! तुझे छोडके और कौन पुरुष गुरुका केश आकर्षण करके वध कर सकता है? तुम द्रुपदके वंशमें ऐसे कुलकलङ्क उत्पन्न हुए, कि तुम्हारे ही कारण से तुम्हारे वंशके सात पीढी नीचेके और सात पीढी तुमसे पहिलेके पुरुष अर्थात् चौदह पीढीके पुरुष यशसे भ्रष्ट होकर नरकमें पतित हुए हैं। (१२-१६)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथाऽन्तो विहितस्तेन स्वयमेव महात्मना।
तस्याऽपि तव सोदर्यो निहन्ता पापकृत्तमः ॥ १७ ॥
नाऽन्यः पाञ्चालपुत्रेभ्यो विद्यते भुवि पापकृत्।
स चापि सृष्टः पित्रा ते भीष्मस्याऽन्तकरः किल ॥ १८ ॥
शिखण्डी रक्षितस्तेन स च मृत्युर्महात्मनः।
पाञ्चालाश्चलिता धर्मात्क्षुद्रा मित्रगुरुद्रुहः ॥ १९ ॥
त्वां प्राप्य सहसोदर्यं धिक्कृतं सर्वसाधुभिः।
पुनश्चेदीदृशीं वाचं मत्समीपे वदिष्यसि ॥ २० ॥
शिरस्ते पोथयिष्यामि गदया वज्रकल्पया।
त्वां च ब्रह्महणं दृष्ट्वा जनः सूर्यमवेक्षते ॥ २१ ॥
ब्रह्महत्या हि ते पापं प्रायश्चित्तार्थमात्मनः।
पाञ्चालक सुदुर्वृत्त ममैव गुरुमग्रतः ॥ २२ ॥
गुरोर्गुरुं च भूयोऽपि क्षिपन्नैव हि लज्जसे।
तिष्ठ तिष्ठ सहस्वैकं गदापातमिमं मम ॥ २३ ॥

और तू जो पुरुषश्रेष्ठ अर्जुनके हाथसे भीष्मके मृत्युका विषय कह रहा था, वैसी मृत्युका महात्मा भीष्मने स्वयं ही विधान किया था; परन्तु भीष्मका भी वध करनेवाला तेरा सहोदर भ्राता पापी शिखण्डी है। इस पृथ्वीके बीच पाञ्चालराजपुत्रोंके अतिरिक्त और दूसरा ऐसा कौन पुरुष है, जो इस प्रकार अधर्मके कार्यों को करेगा? तेरे पिताने भीष्मवधके ही निमित्त शिखण्डीको उत्पन्न किया था। अर्जुनने युद्धभूमिके बीच शिखण्डीकी रक्षा करी थी, यह ठीक है; परन्तु महात्मा भीष्मकी मृत्युका कारण शिखण्डी ही है। (१६–१९)

मित्र और गुरुद्रोही नीचस्वभाववाले पाञ्चाल लोग तुझे और शिखण्डीको पुत्ररूपसे पाकर ही धर्मभ्रष्ट और जनसमाजमें धिक्कार पानेके योग्य हुए हैं। तू यदि फिर मेरे सम्मुख ऐसे अन्याययुक्त वचनोंको कहेगा, तो मैं अपनी इस वज्रके समान भयङ्कर गदासे तेरा सिर तोड दूंगा। अरे पापी! मनुष्य लोग ब्रह्महत्यारेको देखकर प्रायश्चित्तके वास्ते सूर्यका दर्शन करते हैं। तुझे भी ब्रह्महत्याका पाप लगा है, इससे तेरा मुख देखकर भी ऊपर कही हुई रीतिसे प्रायश्चित्त करना होगा। रे नीच पाञ्चालराजपुत्र! तू मेरे सम्मुख मेरे गुरु तथा गुरुके गुरुकी बार बार निन्दा करके भी लज्जित नहीं होता है? तू मेरी गदाका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव चापि सहिष्येऽहं गदापातानने कशः ।
सात्वतेनैवमाक्षिप्तः पार्षतः परुषाक्षरम् ॥ २४ ॥
संरब्धं सात्यकिं प्राह संक्रुद्धः प्रहसन्निव ।
धृष्टद्युम्न उवाच- श्रूयते श्रूयते चेति क्षम्यते चेति माधव ॥ २५ ॥
सदाऽनार्योऽशुभः साधुं पुरुषं क्षेप्तुमिच्छति ।
क्षमा प्रशस्यते लोके न तु पापोऽर्हति क्षमाम् ॥ २६ ॥
क्षमावन्तं हि पापात्मा जितोऽयमिति मन्यते ।
स त्वं क्षुद्रसमाचारो नीचात्मा पापनिश्चयः ॥ २७ ॥
आकेशाग्रान्नखाग्राच्च वक्तव्यो वक्तुमिच्छसि ।
यः स भूरिश्रवाश्छिन्नभुजः प्रायगतस्त्वया ॥ २८ ॥
वार्यमाणेन हि हतस्ततः पापतरं नु किम् ।
गाहमानो मया द्रोणो दिव्येनाऽस्त्रेण संयुगे ॥ २९ ॥
विसृष्टशस्त्रो निहतः किं तत्र क्रूर दुष्कृतम् ।
अयुध्यमानं यस्त्वाजौ तथा प्रायगतं मुनिम् ॥ ३० ॥

प्रहार एक बार सहन तो कर; मैं तेरी गदाके प्रहारको अनेक बार सहन करूंगा । (१९-२४)

महाराज ! सात्यकिने क्रुद्ध होकर जब धृष्टद्युम्नसे ऐसे कठोर वचन कहके उनका तिरस्कार किया; तब धृष्टद्युम्न अत्यन्त क्रुद्ध होकर भी उस समय सात्यकिसे यह वचन बोले, हे सात्यकि! मैंने तुम्हारे वचनोंको सुना और क्षमा भी किया क्योंकि दुष्ट तथा नीच पुरुष सदा साधुपुरुषोंको अवमानित करनेकी इच्छा किया करते हैं । इस लोकमें क्षमा ही प्रशंसनीय है, क्षमासे कोई अनिष्ट नहीं हो सकता; परन्तु पापी तथा दुष्ट लोग क्षमावान् पुरुषको ये पराजित हुए ऐसा समझने लगते हैं। तू भी उसी भांति पापी और नीच व्यवहार करनेवाला है; तेरा पांवके नखसे लेकर शिखा पर्यन्त सम्पूर्ण शरीर निन्दनीय है, उसपर भी तू दूसरेकी निन्दा करनेकी इच्छा करता है ? कैसे आश्चर्यका विषय है, कि तुझे वारंवार सब योद्धाओंने निषेध किया, तौभी अर्जुनके बाणसे भुजा कटनेपर रणभूमिके बीच योगयुक्त चित्तसे बैठे हुए अस्त्ररहित भूरिश्रवाका तूने वध किया था, इससे बढके और दूसरा पाप कर्म कौनसा होगा ? (२४-२९)

रे क्रूरस्वभाववाले ! प्रविष्ट होकर दिव्यास्त्रोंसे मेरी सेनाको पीडित करनेवाले आचार्य द्रोणने जब शस्त्रत्याग दिया तभी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिन्नबाहुं परैर्हन्यात्सात्यके स कथं वदेत् ।
निहत्य त्वां पदा भूमौ स विकर्षति वीर्यवान्॥ ३१ ॥
किं तदा न निहंस्येनं भूत्वा पुरुषसत्तमः ।
त्वया पुनरनार्येण पूर्वं पार्थेन निर्जितः ॥ ३२ ॥
यदा तदा हतः शूरः सौमदत्तिः प्रतापवान् ।
यत्र यत्र तु पाण्डूनां द्रोणो द्रावयते चमूम् ॥ ३३ ॥
किरञ्छरसहस्राणि तत्र तत्र प्रयाम्यहम् ।
स त्वमेवंविधं कृत्वा कर्म चाण्डालवत्स्वयम् ॥ ३४ ॥
वक्तुमर्हसि वक्तव्यः कस्मात्त्वं परुषाण्यथ ।
कर्ता त्वं कर्मणो ह्यस्य नाऽहं वृष्णिकुलाधम ॥ ३५ ॥
पापानां च त्वमावासः कर्मणां मा पुनर्वद ।
जोषमास्व न मां भूयो वक्तुमर्हस्यतः परम् ॥ ३६ ॥
अधरोत्तरमेतद्धि यन्मां त्वं वक्तुमर्हसि ।

मैंने उनका वध किया है; उससे क्या अधर्म हो सकता है ? हे सात्यकि! जिसने दूसरेके अस्त्रसे भुजा कटनेपर युद्धसे विरत, योगयुक्त चित्तसे मौनावलम्बन करके बैठे हुए अस्त्ररहित पुरुषका वध किया है, वह दूसरेको किस प्रकार अधर्मी कह सकता है ? पराक्रमी भूरिश्रवाने जिस समय तुझे पृथ्वीपर गिराके तेरी छातिमें लातसे प्रहार किया था; उस समय तेरा बल पुरुषार्थ कहां गया था, क्यों नहीं तू उस समय पुरुषार्थ प्रकाशित करके भूरिश्रवाका वध कर सका ? (२९—३२)

प्रतापवान् पराक्रमी सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा जब पहिले अर्जुनके बाणसे भुजा कटनेपर युद्धसे विरत होकर चित्तसे ईश्वरके ध्यानमें रत हुए, उस समय तूने नीचता प्रकाशित करके उनका वध किया है; परन्तु जिस जिस स्थलपर द्रोणाचार्य पाण्डवोंकी सेनाको छिन्नभिन्न करके भगानेमें प्रवृत्त हुए थे, मैं उन स्थानोंमें सहस्रों बाणोंको चलाते हुए उनके सम्मुख उपस्थित हुआ हूं, जो हो, स्वयं चाण्डालके समान कार्य करके जनसमाजके बीच निन्दनीय होकर तू मुझे किसकारण कठोर वचन कहनेकी इच्छा करता है ? रे वृष्णिकुलकलङ्क ! तू स्वयं पाप कर्म करनेवाला तथा कुकर्मके मार्गोंमें गमन करनेवाला है, मैं अधर्मी नहीं हूं, इससे अब मेरे विषयमें कटूक्ति न करना । (३२–३६)

नीच पुरुषोंकी भांति मेरे विषयमें जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ वक्ष्यसि मां मौर्ख्याद् भूयः परुषमीदृशम् ॥३७॥
गमयिष्यामि बाणैस्त्वां युधि वैवस्वतक्षयम् ।
न चैवं मूर्ख धर्मेण केवलेनैव शक्यते ॥ ३८ ॥
तेषामपि ह्यधर्मेण चेष्टितं शृणु यादृशम् ।
वञ्चितः पाण्डवः पूर्वमधर्मेण युधिष्ठिरः ॥ ३९ ॥
द्रौपदी च परिक्लिष्टा तथाऽधर्मेण सात्यके ।
प्रव्राजिता वनं सर्वे पाण्डवाः सह कृष्णया ॥ ४० ॥
सर्वस्वमपकृष्टं च तथाऽधर्मेण बालिश ।
अधर्मेणाऽपकृष्टश्च मद्रराजः परेरितः ॥ ४१ ॥
अधर्मेण तथा बालः सौभद्रो विनिपातितः ।
इतोऽप्यधर्मेण हतो भीष्मः परपुरञ्जयः ॥ ४२ ॥
भूरिश्रवा ह्यधर्मेण त्वया धर्मविदा हतः ।
एवं परैराचरितं पाण्डवैश्च संयुगे ॥ ४३ ॥
रक्षमाणैर्जयं वीरैर्धर्मज्ञैरपि सात्वत ।
दुर्ज्ञेयः स परो धर्मस्तथाऽधर्मश्च दुर्विदः ॥ ४४ ॥

कुछ वचन बोलनेकी इच्छा कर रहा है, उसे फिर कभी न कहना; मौनावलम्बन कर। इसके अनन्तर यदि मूर्खताके कारण ऐसे वचनोंका प्रयोग करेगा, तो मैं अपने तीक्ष्ण बाणोंके प्रहारसे तेरा वध करके तुझे यमपुरीमें भेज दूंगा। अरे मूर्ख! केवल धर्मसेही विजय लाभ नहीं होसकता। कौरवोंने जो सम्पूर्ण अधर्म आचरण किये हैं, उसे सुन। (३६–३९)

पहिले ही उन लोगोंकी कपटतासे राजा युधिष्ठिर ठगे गये और द्रौपदीने कैसे क्लेश पाये! तिसके अनन्तर पाण्डव लोग द्रौपदीके सहित छलसे राज्य नष्ट होने पर वनवासी बनाये गये। और उन लोगोंने छलसे तथा अधर्म अवलम्बन करके मद्रराज शल्यको अपनी ओर किया, तथा अधर्म युद्ध करके सुभद्रापुत्र अभिमन्युका वध किया है। (३९–४२)

वैसेही पाण्डवोंने भी अधर्मसे भीष्म पितामहका वध किया, और तू ने भी अधर्म अवलम्बन करके भूरिश्रवाका वध किया; इसी प्रकार वीर कौरव और पाण्डव लोगोंने अपनी विजयके वास्ते अधर्म आचरण किये हैं। हे सात्यकि! परम धर्म और अधर्मके विषयोंको जानना बहुतही कठिन है, इससे इस समय क्रुद्ध होकर तूं अपने पिताके समीप यम लोकमें गमन करनेकी इच्छा क्यों करता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युध्यस्व कौरवैः सार्धं मा गाः पितृनिवेशनम् ।
सञ्जय उवाच— एवमादीनि वाक्यानि क्रूराणि परुषाणि च ॥ ४५ ॥
श्रावितः सात्यकिः श्रीमानाकम्पित इवाऽभवत् ।
तच्छ्रुत्वा क्रोधताम्राक्षः सात्यकिस्त्वाददे गदाम् ॥४६॥
विनिःश्वस्य यथा सर्पः प्रणिधाय रथे धनुः ।
ततोऽभिपत्य पाञ्चाल्यं संरम्भेणेदमब्रवीत् ॥ ४७ ॥
न त्वां वक्ष्यामि परुषं हनिष्ये त्वां वधक्षमम् ।
तमापतन्तं सहसा महाबलममर्षणम् ॥ ४८ ॥
पाञ्चाल्यायाऽभिसंक्रुद्धमन्तकायाऽन्तकोपमम् ।
चोदितो वासुदेवेन भीमसेनो महाबलः ॥ ४९ ॥
अवप्लुत्य रथात्तूर्णं बाहुभ्यां समवारयत् ।
द्रवमाणं तथा क्रुद्धं सात्यकिं पाण्डवो बली ॥ ५० ॥
प्रस्पन्दमानमादाय जगाम बलिनं बलात् ।
स्थित्वा विष्टभ्य चरणौ भीमेन शिनिपुङ्गवः ॥ ५१ ॥
निगृहीतः पदे षष्ठे बलेन बलिनां वरः ।
अवरुह्य रथात्तूर्णं म्रियमाणं बलीयसा ॥ ५२ ॥

है, कौरवोंके सङ्ग युद्ध कर। (४२-४५)

सञ्जय बोले, महाराज! महारथी सात्यकि धृष्टद्युम्नके ऐसे कटूक्तियुक्त वचनोंको सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए उस समय क्रोधसे उनके दोनों नेत्र लाल होगये और वह धनुष बाणको रथमें रखके सर्पकी भांति सांस लेते हुए अपनी गदाको ग्रहण करके रथसे कूद पडे और अभिमानके सहित धृष्टद्युम्नसे यह वचन बोले, तू वधके योग्य है, इससे तुझे अब कुछ न कहके तेरा वध करूंगा। (४५-४८)

महाबलवान् सात्यकि यमराजके दण्ड समान भयङ्कर गदा ग्रहण करके वेगपूर्वक धृष्टद्युम्नकी ओर दौडे। तब महाबली भीमसेनने कृष्णकी आज्ञासे शीघ्रताके सहित रथसे कूदके अपनी दोनों भुजाओंसे सात्यकिको ग्रहण किया। बलवान् सात्यकि उस समय भीमसेनको लेकर ही गमन करने लगे। अनन्तर भीमसेनने बलपूर्वक अपने दोनों पांवोंके सहारे पृथ्वीपर बलपूर्वक स्थित होके छठें चरणमें बलवान् सात्यकिको आगे बढनेसे रोक रक्खा। (४८-५२)

महाराज! बलवान् भीमसेनने जब शीघ्रताके सहित रथसे उतरके सात्यकिको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उवाच श्लक्ष्णया वाचा सहदेवो विशाम्पते।
अस्माकं पुरुषव्याघ्र मित्रमन्यन्न विद्यते ॥ ५३ ॥
परमन्धकवृष्णिभ्यः पञ्चालेभ्यश्च मारिष।
तथैवाऽन्धकवृष्णीनां तथैव च विशेषतः ॥ ५४ ॥
कृष्णस्य च तथाऽस्माकं मित्रमन्यन्न विद्यते।
पञ्चालानां च वार्ष्णेय समुद्रान्तां विचिन्वताम् ॥ ५५ ॥
नाऽन्यदस्ति परं मित्रं यथा पाण्डववृष्णयः।
स भवानीदृशं मित्रं मन्यते च यथा भवान् ॥ ५६ ॥
भवन्तश्च यथाऽस्माकं भवतां च तथा वयम्।
स एवं सर्वधर्मज्ञ मित्रधर्ममनुस्मरन् ॥ ५७ ॥
नियच्छ मन्युं पाञ्चाल्यात्प्रशाम्य शिनिपुङ्गव।
पार्षतस्य क्षम त्वं वै क्षमतां पार्षतश्च ते ॥ ५८ ॥
वयं क्षमयितारश्च किमन्यत्र शमाद्भवेत्।
प्रशाम्यमाने शैनेये सहदेवेन मारिष ॥ ५९ ॥
पाञ्चालराजस्य सुतः प्रहसन्निदमब्रवीत्।

इस प्रकार ग्रहण किया, तब सहदेव मधुर वचनोंसे सात्यकिसे बोले, हे पुरुषसिंह सात्यकि ! वृष्णि, अन्धक तथा पाञ्चाल योद्धाओंके अतिरिक्त और कोई भी हम लोगोंको इस पृथ्वीके बीच अधिक प्रिय नहीं है। उसी भांति वृष्णि तथा अन्धक वंशियोंको विशेष करके कृष्णको हम लोगोंके अतिरिक्त और कोई भी अधिक प्रिय मित्र नहीं है; और पाञ्चाल योद्धा लोग वृष्णि तथा अन्धकवंशियोंके समान मित्र इस सम्पूर्ण पृथ्वीके बीच भी खोजके नहीं पावेंगे। इससे जैसे आप लोग हम लोगोंके और हम लोग तुम्हारे मित्र हैं, वैसे ही धृष्टद्युम्न भी हमारे तथा तुम्हारे मित्र ही हैं। (५२–५७)

हे शिनिपौत्र सात्यकि! तुम सम्पूर्ण धर्मके तत्त्वको जानते हो, इससे क्रोध त्यागके धृष्टद्युम्नके ऊपर तुम्हें प्रसन्न होना उचित है। देखिये, क्षमासे श्रेष्ठ और दूसरी कोई भी वस्तु नहीं है, इस ही निमित्त हम लोग इस विषयमें शान्त हुए हैं; इस समय आप लोग आपसमें एक दूसरेके वचनोंको क्षमा कीजिये। (५७-५९)

महाराज ! जब सहदेवने इस प्रकार सात्यकिको शान्त किया, तब पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न हंसते हुए यह वचन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुञ्च मुञ्च शिनेः पौत्रं भीम युद्धमदान्वितम् ॥ ६० ॥
आसादयतु मामेष धराधरमिवाऽनिलः।
यावदस्य शितैर्बाणैः संरम्भं विनयाम्यहम् ॥ ६१ ॥
युद्धश्रद्धां च कौन्तेय जीवितं चाऽस्य संयुगे।
किं नु शक्यं मया कर्तुं कार्यं यदिदमुद्यतम् ॥ ६२ ॥
सुमहत्पाण्डुपुत्राणामायान्त्येते हि कौरवाः।
अथवा फाल्गुनः सर्वान्वारयिष्यति संयुगे ॥ ६३ ॥
अहमप्यस्य मूर्धानं पातयिष्यामि सायकैः।
मन्यते छिन्नबाहुं मां भूरिश्रवसमाहवे ॥ ६४ ॥
उत्सृजैनमहं चैनमेष वा मां हनिष्यति।
शृण्वन्पाञ्चालवाक्यानि सात्यकिः सर्पवच्छ्वसन् ॥६५॥
भीमबाह्वन्तरे सक्तो विस्फुरत्यनिशं बली।
तौ वृषाविव नर्दन्तौ बलिनौ बाहुशालिनौ ॥ ६६ ॥
त्वरया वासुदेवश्च धर्मराजश्च मारिष।
यत्नेन महता वीरौ वारयामासतुस्ततः ॥ ६७ ॥

बोले, हे भीमसेन ! तुम इस युद्धदुर्मद शिनिपौत्र सात्यकिको छोड दो और शीघ्र परित्याग करो; जैसे वायु पर्वतमें जाके लीन होजाता है, वैसे ही वह मेरे समीप पहुंचके प्राणरहित होजावेगा। मैं इसी समय अपने तीक्ष्ण बाणोंके प्रभावसे युद्धकी अभिलाषा पूरी करके इसका प्राण नाश करूंगा। इस समय देखो कौरव लोग वेगपूर्वक मेरी सेनाकी ओर आरहे हैं, इससे अब मैं उन लोगोंका क्या कर सकूंगा; क्योंकि पाण्डुपुत्रोंका यह बहुत बडा कार्य उपस्थित हुआ है। (५९–६३)

अथवा अर्जुन अकेले ही कौरवोंको निवारण करेंगे, मैं पहिले अपने तेज बाणोंसे सात्यकिका सिर काटूंगा; सात्यकिने क्या मुझे भुजा रहित भूरिश्रवा समझा है ? हे भीमसेन ! तुम उसे छोड दो, या तो मैं ही उसका प्राण नाश करूंगा, अथवा वही मेरा वध करेगा। (६३–६५)

भीमसेनकी दोनों भुजाके बीचमें स्थित बलवान् सात्यकि धृष्टद्युम्नके ऐसे अभिमान युक्त वचनोंको सुनकर क्रोधसे कम्पित होने लगे। इसी प्रकार जब वे दोनों महाबलवान् वीर दो पराक्रमी वृषभकी भांति बार बार गर्जने लगे; तब श्रीकृष्णचन्द्र और धर्मराज युधिष्ठिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवार्य परमेष्वासौ कोपसंरक्तलोचनौ ।
युयुत्सूनपरान्संख्ये प्रतीयुः क्षात्रियर्षभाः॥ ६८ ॥ [९१९०]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वणि धृष्टद्युम्नसात्यकिक्रोधेऽष्टनवत्यधिकशततमोऽध्यायः१९८

सञ्जय उवाच— ततः स कदनं चक्रे रिपूणां द्रोणनन्दनः ।
युगान्ते सर्वभूतानां कालसृष्ट इवाऽन्तकः ॥ १ ॥
ध्वजद्रुमं शस्त्रशृङ्गं हतनागमहाशिलम् ।
अश्वकिम्पुरुषाकीर्णं शरासनलतावृतम् ॥ २ ॥
क्रव्यादपक्षिसंघुष्टं भूतयक्षगणाकुलम् ।
निहत्य शात्रवान्भल्लैः सोऽचिनोद्देहपर्वतम् ॥ ३ ॥
ततो वेगेन महता विनद्य स नरर्षभः ।
प्रतिज्ञां श्रावयामास पुनरेव तवाऽऽत्मजम् ॥ ४ ॥
यस्माद्युध्यन्तमाचार्यं धर्मकंचुकमास्थितः ।

ने शीघ्रताके सहित वहांपर उपस्थित होकर अत्यन्त यत्नपूर्वक उन दोनोंको शान्त किया ॥ अनन्तर मुख्य मुख्य पराक्रमी क्षत्रिय वीर लोग उन दोनों महाधनुर्द्धारियोंको निवारण करके कुरुसेनाके योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करने के वास्ते उनके सम्मुख उपस्थित हुए ॥ (६५–६८) [९१९०]

द्रोणपर्वमें एकसौ अठानव्वे अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें एकसौ निनानव्वे अध्याय ।

सञ्जय बोले, महाराज ! इधर द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा उस समय काल प्रेरित मृत्युकी भांति शत्रुसेनाके योद्धाओंका नाश करने लगे ॥ उस समय उन्होंने भल्लास्त्रसे शत्रुओंका नाश करके उनके मृत शरीरसे रणभूमिको परिपूरित कर दिया; उस समय शत्रुसेनाके मृतपुरुषोंके शरीर रणभूमिमें इतने अधिक परिमाणसे इकट्ठे होगये थे, कि वहां पर्वतके समान दीख पडते थे, ध्वजा पताका उस पर्वत के वृक्षस्वरूप, शस्त्र उसके शृङ्ग, मरे हुए हाथी घोडोंके शरीर ही उसमें शिलाखण्डके समान बोध होते थे; वह मृत पुरुषोंके शरीररूपी पर्वत मांसभक्षी पशुपक्षियोंके डरावनी बोलीसे युक्त और भूतप्रेत यक्ष तथा राक्षसोंसे सेवित होकर अत्यन्त भयङ्कर मालूम होने लगा ॥ (१–३)

अनन्तर पुरुषश्रेष्ठ अश्वत्थामाने भयङ्कर शब्दसे सिंहनाद करके फिर तुम्हारे पुत्र दुर्योधनसे अपनी प्रतिज्ञा सुनाई ॥ अश्वत्थामा बोले, महाराज ! धर्मध्वजी युधिष्ठिरने जब मिथ्या वचन कहके गुरुसे अस्त्रत्याग कराया है, तब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुञ्च शस्त्रमिति प्राह कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ५ ॥
तस्मात्सम्पश्यतस्तस्य द्रावयिष्यामि वाहिनीम् ।
विद्राव्य सर्वान्हन्ताऽस्मि जाल्मं पाञ्चाल्यमेव तु ॥ ६ ॥
सर्वानेतान्हनिष्यामि यदि योत्स्यन्ति मां रणे ।
सत्यं ते प्रतिजानामि परिवर्तय वाहिनीम् ॥ ७ ॥
तच्छ्रुत्वा तव पुत्रस्तु वाहिनीं पर्यवर्तयत् ।
सिंहनादेन महता व्यपोह्य सुमहद्भयम् ॥ ८ ॥
ततः समागमो राजन्कुरुपाण्डवसेनयोः ।
पुनरेवाऽभवत्तीव्रः पूर्णसागरयोरिव ॥ ९ ॥
संरब्धा हि स्थिरीभूता द्रोणपुत्रेण कौरवाः ।
उदग्राः पाण्डुपञ्चाला द्रोणस्य निधनेन च ॥ १० ॥
तेषां परमहृष्टानां जयमात्मनि पश्यताम् ।
संरब्धानां महावेगः प्रादुरासीद्विशाम्पते ॥ ११ ॥
यथा शिलोच्चये शैलः सागरैः सागरो यथा ।

मैं उसके सम्मुखही में उसकी सम्पूर्ण सेनाको युद्धभूमिसे छिन्न भिन्न करके भगा दूंगा, और सम्पूर्ण सेनाके पुरुषोंको पराजित करके उस क्रूरस्वभाववाले धृष्टद्युम्नका वध करूंगा। महाराज! आप सम्पूर्ण योद्धाओंको युद्ध करने में प्रवृत्त करो, मैं तुम्हारे समीप सत्यप्रतिज्ञा करता हूं, कि आज शत्रुसेनाके बीचसे जो पुरुष मेरे सम्मुख उपस्थित होंगे, मैं उन सबका ही वध करूंगा ॥ (४–७)

हे राजेन्द्र! तुम्हारे पुत्र राजा दुर्योधनने गुरुपुत्र अश्वत्थामाके ऐसे वचनको सुनकर हर्षपूर्वक भयङ्कर सिंहनाद करते हुए अपनी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको लौटाकर शत्रुसेनाके योद्धाओंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त किया। तिसके अनन्तर उठती हुई लहरसे युक्त दो समुद्रकी भांति कौरव और पाण्डवोंकी महासेनाका आपसमें अत्यन्तही भयङ्कर युद्ध होने लगा ॥ उस सययमें कौरव लोग अश्वत्थामाके पराक्रमसे गर्वित और पाञ्चाल योद्धा लोग द्रोणाचार्यके मरनेसे उत्साहयुक्त हुए थे, इससे उन दोनों सेनाके योद्धा लोग अपनी विजयके लक्षणको विचारके क्रोध और अभिमानके सहित महाघोर संग्राम करने लगे ॥ उस समय दोनों सेनाके बीच महाघोर भयानक कोलाहल होने लगा ॥ (८—११)

महाराज! जैसे पर्वतसे पर्वत और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिहन्येत राजेन्द्र तथाऽऽसन्कुरुपाण्डवाः ॥ १२ ॥
ततः शङ्खसहस्राणि भेरीणामयुतानि च।
अवादयन्त संहृष्टाः कुरुपाण्डवसैनिकाः ॥ १३ ॥
यथा निर्मथ्यमानस्य सागरस्य तु निःस्वनः।
अभवत्तव सैन्यस्य सुमहानद्भुतोपमः ॥ १४ ॥
प्रादुश्चक्रे ततो द्रौणिरस्त्रं नारायणं तदा।
अभिसन्धाय पाण्डूनां पाञ्चालानां च वाहिनीम्॥१५॥
प्रादुरासंस्ततो बाणा दीप्ताग्राः खे सहस्रशः।
पाण्डवान्क्षपयिष्यन्तो दीप्तास्याः पन्नगा इव ॥ १६ ॥
ते दिशः खं च सैन्यं च समावृण्वन्महाहवे।
मुहूर्ताद्भास्करस्येव लोके राजन्गभस्तयः ॥ १७ ॥
तथाऽपरे द्योतमाना ज्योतींषीवाऽमलाम्बरे।
प्रादुरासन्महाराज काष्णायसमया गुडाः ॥ १८ ॥
चतुश्चक्रा द्विचक्राश्च शतघ्न्यो बहुला गदाः।
चक्राणि च क्षुरान्तानि मण्डलानीव भास्वतः॥ १९ ॥

लहरयुक्त समुद्रसे समुद्रकी टक्कर होनेसे भयङ्कर शब्द उत्पन्न होता है, वैसेही कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके पुरुषोंके संग्रामके समय अस्त्रशस्त्रोंकी खटपटाहट से महाघोर शब्द सुनाई देने लगा ॥ अनन्तर दोनों सेनाके बीच सहस्रों तथा लक्षों शङ्ख भेरी ढोल और नगाडे आदि जुझाऊ बाजे बजने लगे॥परन्तु उस समय कुरुसेनाके बीचसे समुद्र मथनके समान महाभयङ्कर शब्द उत्पन्न हुआ॥ १२-१४

उस ही समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने जब पाण्डव और पाञ्चालसेनाको लक्ष्य करके नारायण अस्त्र चलाया; तब उस नारायण अस्त्रसे सहस्रों भांतिके प्रकाशमान विषधर सर्प समान भयङ्कर सहस्रों तथा लक्षों बाण प्रकट होने लगे, और मुहूर्त्त भरके बीच जगत्के सूर्यके किरणोंकी भांति वे बाण सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलमें परिपूरित होगये, और उस समय उन बाणोंसे शत्रुओंकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुष छिप गये। उस समय आकाशमण्डलमें ज्योति वाले पदार्थोंकी भांति प्रकाशमान लोहमय चार चक्र और दो चक्के युक्त बहुतसी शतघ्नी, गदा और सूर्यमण्डलके समान प्रकाशित क्षुरधारवाले बहुतसे भयङ्कर चक्र इधर उधर शत्रुसेनाके बीच चलते हुए दिखाई देने लगे ॥ (१५-१९)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शस्त्राकृतिभिराकीर्णमतीव पुरुषर्षभ ।
दृष्ट्वाऽन्तरिक्षमाविग्नाः पाण्डुपञ्चालसृञ्जयाः ॥ २० ॥
यथा यथा ह्ययुध्यन्त पाण्डवानां महारथाः ।
तथा तथा तदस्त्रं वै व्यवर्धत जनाधिप ॥ २१ ॥
वध्यमानास्तदाऽस्त्रेण तेन नारायणेन वै ।
दह्यमानाऽनलेनेव सर्वतोऽभ्यर्दिता रणे ॥ २२ ॥
यथा हि शिशिरापाये दहेत्कक्षं हुताशनः ।
तथा तदस्त्रं पाण्डूनां ददाह ध्वजिनीं प्रभो ॥ २३ ॥
आपूर्यमाणेनाऽस्त्रेण सैन्ये क्षीयति च प्रभो ।
जगाम परमं त्रासं धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ २४ ॥
द्रवमाणं तु तत्सैन्यं दृष्ट्वा विगतचेतनम् ।
मध्यस्थतां च पार्थस्य धर्मपुत्रोऽब्रवीदिदम् ॥ २५ ॥
धृष्टद्युम्न पलायस्व सह पाञ्चालसेनया ।
सात्यके त्वं च गच्छस्व वृष्ण्यन्धकवृतो महान् ॥२६॥

उस समय पाण्डव, और सञ्जय योद्धा लोग सम्पूर्ण दिशा और आकाशमण्डलको नाना भांतिके अस्त्रशस्त्रोंसे परिपूरित देखकर अत्यन्त ही व्याकुल हुए ॥ महाराज ! उस समय जहां पाण्डवोंकी ओरके महारथी योद्धा लोग तुम्हारी सेनाके वीरोंके सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त थे, उस ही ओर नारायण अस्त्रका भयङ्कर प्रभाव दिखाई देने लगा ॥ शत्रुसेनाके योद्धा इस प्रकार पीडित होकर भस्म होने लगे, जैसे अग्नि तृण काष्ठोंको भस्म कर देती है । अधिक क्या कहा जावे, जैसे ग्रीष्म ऋतुमें वनके बीच अग्नि प्रकट होकर जङ्गलको भस्म कर देती है वैसे ही नारायण अस्त्रके प्रभावसे अश्वत्थामा शत्रुसेनाके योद्धाओंको भस्म करने लगे ॥ (२०-२३)

महाराज ! जब इस प्रकार भयङ्कर नारायण अस्त्रके प्रभावसे शत्रु सेनाके योद्धाओंका नाश होने लगा, तब उस समय धर्म पुत्र राजा युधिष्ठिर अत्यन्त ही भयभीत हुए ॥ अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाके सम्पूर्ण योद्धाओंको अश्वत्थामाके अस्त्रसे पीडित तथा समस्त शूरवीरोंको रणभूमिसे चारों ओर छिन्न भिन्न होते और अर्जुनको मध्यस्थ पुरुषकी भांति युद्धभूमिमें स्थित देखकर यह वचन बोले॥ हे धृष्टद्युम्न ! तुम सम्पूर्ण पाञ्चाल सेनाके सहित युद्धभूमिसे भाग जाओ; हे सात्यकि ! तुम भी वृष्णि और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासुदेवोऽपि धर्मात्मा करिष्यत्यात्मनः क्षमम् ।
श्रेयो ह्युपदिशत्येष लोकस्य किमुताऽऽत्मनः ॥ २७ ॥
संग्रामस्तु न कर्तव्यः सर्वसैन्यान्ब्रवीमि वः ।
अहं हि सह सोदर्यैः प्रवेक्ष्ये हव्यवाहनम् ॥ २८ ॥
भीष्मद्रोणार्णवं तीर्त्वा संग्रामे भीरुदुस्तरे ।
विमज्जिष्यामि सलिले सगणो द्रौणिगोष्पदे ॥ २९ ॥
कामः सम्पद्यतामस्य बीभत्सोराशु मां प्रति ।
कल्याणवृत्तिराचार्यो मया युधि निपातितः ॥ ३० ॥
येन बालः स सौभद्रो युद्धानामविशारदः ।
समर्थैर्बहुभिः क्रूरैर्घातितो नाऽभिपालितः ॥ ३१ ॥
येन विब्रुवती प्रश्नं तथा कृष्णा सभां गता ।
उपेक्षिता सपुत्रेण दासभावं नियच्छती ॥ ३२ ॥
जिघांसुर्धार्तराष्ट्रश्च श्रान्तेष्वन्येषु फाल्गुनः ।
कवचेन तथा गुप्तो रक्षार्थं सैन्धवस्य च ॥ ३३ ॥

अन्धकवंशियोंकी सेनाके सहित घर चले जाओ, और धर्मात्मा कृष्ण स्वयं ही अपनी रक्षाका उपाय कर लेंगे, वह जब तीनोंलोकके कल्याणमें दत्तचित्त रहते तथा सबकी रक्षा करते हैं तब अपनी रक्षा क्यों नहीं कर सकेंगे ॥ (२४–२७)

हे शूरवीर पुरुषो ! मैं तुम सब लोगोंको कहता हूं कि अब युद्ध करनेकी कुछ भी आवश्यकता नहीं है; मैं अपने सहोदर भाइयोंके सहित अग्निमें प्रवेश करूंगा । हाय ! मैंने कादरोंकी भयको बढानेवाले भीष्म, द्रोण रूपी समुद्रसे पार होकर अब इस समय बन्धुबान्धवोंके सहित अश्वत्थामारूपी गोपद जलमें डूब रहा हूं ॥ (२८—२९)

मैंने अपने कल्याणकी इच्छा करनेवाले द्रोणाचार्यका वध कराया है, उससे अर्जुन मेरे ऊपर अत्यन्त ही विरक्त हुए हैं, इससे अब उन्हींकी इच्छा पूरी होवे । कि जिन्होंने युद्धभूमिमें बालक अभिमन्युकी रक्षा न करके कई एक युद्धदुर्मद योद्धाओंके हाथसे उसका प्राणनाश कराया था, कौरवसभाके बीच दासीकी भांतिसे युक्त होकर जब द्रौपदीने प्रश्न किया था, उस समय उपेक्षा करके जिन्होंने पुत्रके सहित कुछ भी उत्तर नहीं दिया; जिन्होंने जयद्रथवधके दिन युद्धमें प्रवृत्त और थके हुए घोडोंसे युक्त अर्जुनके वधके वास्ते अभिलाषा की थी, और जिन्होंने अमोघकवच पहनाके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येन ब्रह्मास्त्रविदुषा पाञ्चालाः सत्यजिन्मुखाः ।
कुर्वाणा मज्जये यत्नं समूला विनिपातिताः ॥ ३४ ॥
येन प्रव्राज्यमानाश्च राज्याद्वयमधर्मतः ।
निवार्यमाणेनाऽस्माभिरनुगन्तुं तदेषिताः ॥ ३५ ॥
योऽसावत्यन्तमस्मासु कुर्वाणः सौहृदं परम् ।
हतस्तदर्थे मरणं गमिष्यति सबान्धवः ॥ ३६ ॥
एवं ब्रुवति कौन्तेये दाशार्हः परितस्ततः ।
निवार्य सैन्यं बाहुभ्यामिदं वचनमब्रवीत् ॥ ३७ ॥
शीघ्रं न्यस्यत शस्त्राणि वाहेभ्यश्चाऽवरोहत ।
एष योगोऽत्र विहितः प्रतिषेधे महात्मना ॥ ३८ ॥
द्विपाश्वस्यन्दनेभ्यश्च क्षितिं सर्वेऽवरोहत ।
एवमेतन्न वो हन्यादस्त्रं भूमौ निरायुधान् ॥ ३९ ॥
यथा यथा हि युध्यन्ते योधा ह्यस्त्रमिदं प्रति ।

दुर्योधनकी रक्षा की थी ॥ जिन्होंने सिन्धुराज जयद्रथकी रक्षाके वास्ते विशेष यत्न किया था; जिन्होंने मेरे विजयकी अभिलाषा करनेवाले सत्यजित् आदि पाञ्चाल वीरोंको ब्रह्मास्त्रसे पुत्रपौत्र अनुयाइयोंके सहित समूलसे नष्ट कर दिया है ॥ (३०—३४)

कौरवोंने जब हमको राज्यसे पृथक् करके वनवासी बनाया था, उस समयमें जिन्होंने उन लोगोंको निवारण नहीं किया और युद्धके समय जिन्होंने मेरी ओर न होके कौरवोंका पक्ष ग्रहण करके युद्ध किया है; अधिक क्या कहूं, जिन्होंने ऊपर कहे हुए नानाप्रकारसे हम लोगोंके विषयमें सुहृद भाव प्रदर्शित किया था, हम लोगोंके ऐसे परम सुहृद द्रोणाचार्य मारे गये हैं; इससे इसही कारण अब हम लोगोंको बन्धु बान्धवोंके सहित यमलोकमें गमन करना पडेगा ॥ (३५—३६)

कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने जब ऐसा वचन कहा, तब यदुकुल भूषण कृष्ण उस ही समय अपने भुजाके सङ्केतसे निवृत्त करके उन लोगोंसे बोले, हे शूरवीर योद्धा लोगो ! तुम लोग शीघ्र ही अस्त्र-शस्त्रोंको परित्याग करके अपने अपने वाहनोंसे उतर के युद्धसे निवृत्त होजाओ । भगवान् नारायणने इस शस्त्रके प्रतिकारका यही उपाय स्थिर किया है। तुम सब कोई शीघ्रही अस्त्र त्याग करके हाथी घोडे आदि वाहनोंसे उतरके पृथ्वी पर स्थित हो जाओ; तब यह अस्त्र तुम लोगोंका वध नहीं करेगा॥ (३७—३९)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा तथा भवन्त्येते कौरवा बलवत्तराः ॥ ४० ॥
निक्षेप्स्यन्ति च शस्त्राणि वाहनेभ्योऽवरुह्य ये ।
तान्नैतदस्त्रं संग्रामे निहनिष्यति मानवान् ॥ ४१ ॥
यत्त्वेतत्प्रतियोत्स्यन्ति मनसाऽपीह केचन ।
निहनिष्यति तान्सर्वान्रसातलगतानपि ॥ ४२ ॥
ते वचस्तस्य तच्छ्रुत्वा वासुदेवस्य भारत ।
ईषुः सर्वे समुत्स्रष्टुं मनोभिः करणेन च ॥ ४३ ॥
तत उत्स्रष्टुकामांस्तानस्त्राण्यालक्ष्य पाण्डवः ।
भीमसेनोऽब्रवीद्राजन्निदं संहर्षयन्वचः ॥ ४४ ॥
न कथञ्चन शस्त्राणि मोक्तव्यानीह केनचित् ।
अहमावारयिष्यामि द्रोणपुत्रास्त्रमाशुगैः ॥ ४५ ॥
गदयाऽप्यनया गुर्व्या हेमविग्रहया रणे ।
कालवत्प्रहरिष्यामि द्रौणेरस्त्रं विशातयन् ॥ ४६ ॥
न हि मे विक्रमे तुल्यः कश्चिदस्ति पुमानिह ।
यथैव सवितुस्तुल्यं ज्योतिरन्यन्न विद्यते ॥ ४७ ॥
पश्यतेमौ हि मे बाहू नागराजकरोपमौ ।

युधिष्ठिरकी सेनाके योद्धालोग जिस स्थलपर युद्ध करेंगे; उन्हीं स्थानमें कुरु सेनाके योद्धा प्रबल होजावेंगे। जो लोग अपने वाहनोंसे उतरके अस्त्र परित्याग करेंगे, उन लोगोंका यह अस्त्र वध नहीं करेगा । अधिक क्या कहा जावे, यदि कोई मनसे भी इस अस्त्रके प्रतिकारकी इच्छा करेगा,तो वह पाताल लोकमें गमन करने परभी न बचेगा ॥ (४०-४२)

युधिष्ठिरकी ओरके सम्पूर्ण योद्धाओंने श्रीकृष्णके वचनोंको सुनकर अपने अन्तःकरणसे अस्त्रशस्त्र त्यागने की इच्छा किया ॥ उस समय भीमसेन उन योद्धाओंको अस्त्र त्याग करते देख, सम्पूर्ण शूरवीरोंके हर्षको बढाते हुए यह वचन बोले, हे शूरवीर पुरुषो ! तुम लोग कोई भी अस्त्रशस्त्रोंको परित्याग मत करो, मैं अपने अस्त्रके प्रभावसे द्रोणपुत्रके अस्त्रको निवारण करूंगा, अथवा सुवर्णभूषित अपनी भयङ्करी गदासे अश्वत्थामाके अस्त्रोंको नष्ट करके कालके समान होकर प्रहार करूंगा ॥ (४३-४६)

जैसे कोई प्रकाशमान वस्तुओंमें सूर्य के समान ज्योति नहीं है वैसे ही कोई पुरुष भी युद्धभूमिमें मेरे समान पराक्रम शाली नहीं है ॥ तुम लोग हाथीके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थौ पर्वतस्यापि शैशिरस्य निपातने ॥ ४८ ॥
नागायुतसमप्राणो ह्यहमेको नरेष्विह ।
शक्रो यथाऽप्रतिद्वन्द्वो दिवि देवेषु विश्रुतः ॥ ४९ ॥
अद्य पश्यत मे वीर्यं बाह्वोः पीनांसयोर्युधि ।
ज्वलमानस्य दीप्तस्य द्रौणेरस्त्रस्य वा रणे ॥ ५० ॥
यदि नारायणास्त्रस्य प्रतियोद्धा न विद्यते ।
अद्यैतत्प्रतियोत्स्यामि पश्यतां कुरुपाण्डुषु ॥ ५१ ॥
अर्जुनाऽर्जुन बीभत्सो न न्यस्यं गाण्डिवं त्वया ।
शशाङ्कस्येव ते पङ्को नैर्मल्यं पातयिष्यति ॥ ५२ ॥
अर्जुन उवाच— भीम नारायणास्त्रे मे गोषु च ब्राह्मणेषु च ।
एतेषु गाण्डिवं न्यस्यमेतद्धि व्रतमुत्तमम् ॥ ५३ ॥
एवमुक्तस्ततो भीमो द्रोणपुत्रमरिन्दमम् ।
अभ्ययान्मेघघोषेण रथेनाऽऽदित्यवर्चसा ॥ ५४ ॥
स एनमिषुजालेन लघुत्वाच्छीघ्रविक्रमः ।

शुण्डसमान मेरी इन दोनों भुजाओंको अवलोकन करो, इन भुजाओंसे मैं हिमालय पर्वतको भी तोडके पृथ्वीमें मिला सकता हूं। जैसे देवतोंमें देवराज इन्द्र सबसे अधिक पराक्रमी है, वैसे ही मनुष्योंके बीच केवल मैं ही दश हजार हाथीके समान बलवान् हूं॥ ४७—४९

आज सब कोई अश्वत्थामाके जलते हुए अस्त्रको निवारण करनेके विषयमें मेरी दोनों भुजाका पराक्रम देखेंगे, यद्यपि इस नारायण अस्त्रके विरुद्ध कोई योद्धा भी स्थित नहीं होसकता; तौ भी मैं सम्पूर्ण कौरव और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंके सम्मुखमें ही इस अस्त्रके विरुद्ध युद्धभूमिमें स्थित होके युद्ध करूंगा। हे अर्जुन! हे बीभत्सो! इस समय तुमको गाण्डीव धनुषको त्यागना अच्छा नहीं है, क्यों कि इससे शश चिन्ह से युक्त निर्मल चन्द्रके समान तेरी कीर्ति मलिन होगी॥ (५०—५२)

भीमसेनके वचनको सुनकर अर्जुन बोले, हे भीमसेन! नारायणास्त्र, गौवें और ब्राह्मण इनके लिये गाण्डीव धनुषको त्यागना ही मेरा उत्तम व्रत है॥ (५३)

अर्जुनके वचन सुनकर भीमसेन सूर्य किरणके समान प्रकाशमान बादलके समान शब्दवाले अपने रथपर चढके शत्रुनाशन द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकी ओर दौडे॥ उस समय महाबलवान् भीमसेनने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमेषमात्रेणाऽऽसाद्य कुन्तीपुत्रोऽभ्यवाकिरत् ॥५५॥
ततो द्रौणिः प्रहस्यैनं द्रवन्तमभिभाष्य च ।
अवाकिरत्प्रदीप्ताग्रैः शरैस्तैरभिमन्त्रितैः ॥ ५६ ॥
पन्नगैरिव दीप्तास्यैर्वमद्भिर्ज्वलितद्युतीन् ।
अवकीर्णोऽभवत्पार्थो न्यस्तशस्त्रास्त्रवैनैः ॥ ५७ ॥
तस्य रूपमभूद्भीमं विभीमसेनस्य संयुगे ।
खद्योतैरावृतस्येव पर्वतस्य दिनक्षये ॥ ५८ ॥
तदस्त्रं द्रोणपुत्रस्य तस्मिन्प्रतिसमस्यति ।
अवर्धत महाराज यथाऽग्निरनिलोद्धतः ॥ ५९ ॥
विवर्धमानमालक्ष्य तदस्त्रं भीमविक्रमम् ।
पाण्डुसैन्यमृते भीमं सुमहद्भयमाविशत् ॥ ६० ॥
ततः शस्त्राणि ते सर्वे समुत्सृज्य महीतले ।
अवारोहन्रथेभ्यश्च हस्त्यश्वेभ्यश्च सर्वशः ॥ ६१ ॥
तेषु निक्षिप्तशस्त्रेषु वाहनेभ्यश्च्युतेषु ।
तदस्त्रवीर्यं विपुलं भीममूर्ध्न्यथाऽपतत् ॥ ६२ ॥

निमेष भरके बीच हस्तलाघवके सहित अपने बाणजालसे अश्वत्थामाको छिपा दिया॥ (५४–५५)

द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने भीमसेनको अपनी ओर आते देख, हंसकर अग्निपुञ्जसे पूरित नारायण अस्त्रके प्रभावसे अनगिनत प्रकाशमान बाणोंको वर्षाके उन्हें छिपा दिया; उस समय भीमसेन का सम्पूर्ण शरीर सुवर्ण के समान अग्निपुञ्जसे इस प्रकार परिपूरित होगया, जैसे सन्ध्याके समय खद्योत समूहसे युक्त होकर पर्वत शोभित होता है; जब द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने उस अस्त्रको भीमसेनकी ओर चलाया, तब वह अस्त्र प्रचण्ड शिखासे युक्त जलती हुई अग्निकी भांति क्रमसे बढने लगा ॥ (५६–५९)

महाराज ! वह महाभयङ्कर नारायण अस्त्र पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण पुरुषोंको परित्याग करके केवल भीमसेनहीको लक्ष्य करके सम्पूर्ण प्राणियोंको भयभीत करने लगा। उसे देख, पाण्डवोंकी सेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग अस्त्रशस्त्र परित्याग करके हाथी, घोडे और रथोंसे नीचे उतरे, इसी प्रकार जब सम्पूर्ण योद्धा लोग अस्त्रशस्त्रोंको त्यागके वाहनोंसे नीचे उतरे, तब वह अस्त्र प्रबलवेगके सहित केवल भीमसेनके ही सिरपर गिरने लगा ॥ उस समय भीमसेनको नारायण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाहाकृतानि भूतानि पाण्डवाश्च विशेषतः ।
भीमसेनमपश्यन्त तेजसा संवृतं तथा ॥ ६३ ॥ [९२५३]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वणि पाण्डवसैन्यास्त्रत्यागे नवनवत्यधिकशततमोऽध्यायः१९९

सञ्जय उवाच— भीमसेनं तमाकीर्णं दृष्ट्वाऽस्त्रेण धनञ्जयः ।
तेज[illegible]स्य दीप्तस्य वारुणेन समावृणोत् ॥ १ ॥
नाऽलक्षयत तत्कार्श्न्यं [illegible]स्त्रेण संवृतम् ।
अर्जुनस्य लघुत्वाच्च संवृ[illegible]च्च तेजसः ॥ २ ॥
साश्वसूतरथो भीमो द्रोणपुत्रास्त्रसंवृतः ।
अग्नावग्निरिव न्यस्तो ज्वालामाली सुदुर्दृशः ॥ ३ ॥
यथा रात्रिक्षये राजञ्ज्योतींष्यस्तगिरिं प्रति ।
समापेतुस्तथा बाणा भीमसेनरथं प्रति ॥ ४ ॥
स हि भीमो रथश्चाऽस्य हयाः सूतश्च मारिष ।
संवृता द्रोणपुत्रेण पावकान्तर्गताऽभवन् ॥ ५ ॥
यथा जग्ध्वा जगत्कृत्स्नं समये सचराचरम् ।

अस्त्रसे उत्पन्न हुई प्रचण्ड अग्निमें छिपे देखकर सम्पूर्ण प्राणी विशेष करके पाण्डव लोग हाहाकार करने लगे ॥ (६०-६३) [९२५३]

द्रोणपर्वमें एकसौ निनानव्वे अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें दोसौ अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! अर्जुनने भीमसेनको नारायण अस्त्रसे छिपे हुए देखकर उस अस्त्रके तेजको किञ्चित् शान्त करनेके वास्ते उन्हें वारुणास्त्रसे छिपाया; उन्होंने जो उस अग्निपुञ्जके बीचमें वारुणास्त्रको चलाके भीमसेनको छिपाया; उसे अर्जुनके हस्तलाघव तथा विशेष करके नारायण अस्त्रके तेजसे भीमसेनके छिपे रहनेसे कोई भी उनके वारुणास्त्रको न देख सके ॥ (१-२)

इधर घोडे सारथी और रथके सहित भीमसेन द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके नारायण अस्त्रसे उत्पन्न हुए अग्निपुञ्जमें छिपकर अग्निसे युक्त ज्वालामुखी पर्वतकी भांति भयङ्कर दीख पडते थे ॥ रात्रि शेष होने पर जैसे सम्पूर्ण ज्योतिवाले पदार्थ अस्ताचल पर्वत पर गमन करते हैं, वैसेही प्रकाशमान बाणोंके समूहके समूह भीमसेनके रथ पर पडने लगे ॥ उस समय भीमसेन घोडों और सारथीके सहित द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके अस्त्रसे छिपके अग्निपुञ्जमें निवास करने लगे ॥ (३-५)

महाराज जब भीमसेन उस अस्त्रसे छिप गये तब उस समय यही मालूम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गच्छेद्वह्निर्विभोरास्यं तथाऽस्त्रं भीममावृणोत् ॥ ६ ॥
सूर्यमग्निः प्रविष्टः स्याद्यथा चाऽग्निं दिवाकरः ।
तथा प्रविष्टं तत्तेजो न प्राज्ञायत पाण्डवम् ॥ ७ ॥
विकीर्णमस्त्रं तद् दृष्ट्वा तथा भीमरथं प्रति ।
उदीर्यमाणं द्रौणिं च निष्प्रतिद्वन्द्वमाहवे ॥ ८ ॥
सर्वं सैन्यं च पाण्डूनां न्यस्तशस्त्रमचेतनम् ।
युधिष्ठिरपुरोगांश्च विमुखांस्तान्महारथान् ॥ ९ ॥
अर्जुनो वासुदेवश्च त्वरमाणौ महाद्युती ।
अवप्लुत्य रथाद्वीरौ भीममाद्रवतां ततः ॥ १० ॥
ततस्तद् द्रोणपुत्रस्य तेजोऽस्त्रबलसम्भवम् ।
विगाह्य तौ सुबलिनौ [illegible]ायया विशतां तथा ॥ ११ ॥
न्यस्तश[illegible] पाञ्चाला[illegible] तु नाऽदहत्सोऽस्त्रजोऽनलः ।
वारुणास्त्र[illegible]योगाच्च वीर्यवत्त्वाच्च कृष्णयोः ॥ १२ ॥
ततश्चकृषतुर्भीमं सर्वशस्त्रायुधानि च ।
नारायणास्त्रशान्त्यर्थं नरनारायणौ बलात् ॥ १३ ॥

होने लगा मानो प्रलयकालकी अग्नि सम्पूर्ण जगत्को भस्म करके भगवान् रुद्रके मुखमें प्रविष्ट हुई है, और जैसे सूर्यमण्डलमें अग्नि और अग्निमें सूर्यके प्रविष्ट होने पर शोभा होती है, वैसे ही भीमसेनके शरीरमें प्रवेश करती हुई नारायण अस्त्रसे उत्पन्न हुई अग्नि उसी भांति शोभित होने लगी। (६-७)

उस समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको अद्वितीय रूपसे युद्धमें अधिक पराक्रम प्रकाशित करते, पाण्डवोंकी अस्त्रहीन सेनाको चेतरहितके समान, युधिष्ठिर आदि महारथियोंको युद्धभूमिसे भागते और भीमसेनके रथपर लगातार प्रकाशमान बाणोंकी वर्षा होते देख, महातेजस्वी कृष्ण अर्जुन रथसे कूदके वेगपूर्वक भीमसेनकी ओर गमन करने लगे। उस समय महाबलवान् उन दोनों वीरोंने माया बलसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके अस्त्र प्रभावसे उत्पन्न हुई अग्निके बीच प्रवेश किया। महाराज! वे दोनों ही महात्मा अस्त्र शस्त्रोंसे रहित थे, और उन लोगोंमें असाधारण प्रभाव तथा पराक्रम था और इसके अतिरिक्त वारुणास्त्रका भी प्रयोग हुआ था, इस ही कारणसे उस-अस्त्रसे उत्पन्न हुई अग्नि उन दोनों महात्मा पुरुषोंको भस्म न कर सकी॥ (८-१२)

अनन्तर वे महाबलवान नर नारायण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकृष्यमाणः कौन्तेयो नदत्येव महारवम् ।
वर्धते चैव तद्घोरं द्रौणेरस्त्रं सुदुर्जयम् ॥ १४ ॥
तमब्रवीद्वासुदेवः किमिदं पाण्डुनन्दन ।
वार्यमाणोऽपि कौन्तेय यद्युद्धान्न निवर्तसे ॥ १५ ॥
यदि युद्धेन जेयाः स्युरिमे कौरवनन्दनाः ।
वयमप्यत्र युध्येम तथा चेमे नरर्षभाः ॥ १६ ॥
रथेभ्यस्त्ववतीर्णाः स्म सर्व एव हि तावकाः ।
तस्मात्त्वमपि कौन्तेय रथात्तूर्णमपाक्रम ॥ १७ ॥
एवमुक्त्वा तु तं कृष्णो रथाद्भूमिमवर्तयत् ।
निश्वसन्तं यथा नागं क्रोधसंरक्तलोचनम् ॥ १८ ॥
यदाऽपकृष्टः स रथा[illegible] भीमसेन[illegible]
ततो नारायणास्त्रं तत्प्र[illegible]तापनम् ॥ १९ ॥
सञ्जय उवाच— तस्मिन्प्रशान्ते विधिना तेन तेजसि दुःसहे ।

रूपी कृष्ण अर्जुन नारायण अस्त्रको शान्त करनेके वास्ते भीमसेनके निकटसे सब अस्त्र शस्त्रोंको बलपूर्वक फेंक कर उन्हें भी खींचकर रथसे नीचे उतारने लगे। कृष्ण अर्जुनने जब भीमसेनको बलपूर्वक ग्रहण करके रथसे नीचे उतारना चाहा तब भीससेन भयङ्कर शब्द के सहित चिल्लाने लगे उससे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके हाथसे छुटा हुआ महाप्रचण्ड नारायण अस्त्र औरभी अधिक प्रबल वेगसे बढने लगा॥ (१३-१४)

तब श्रीकृष्णचन्द्र बोले, हे पाण्डुपुत्र भीमसेन! तुम निवारण करनेपर शान्त नहीं होते हो, यह तुम्हें इस समय कैसा मोह उत्पन्न हुआ है? इस समय यदि कौरवोंकी पराजय होसकती, तो इन सम्पूर्ण पुरुष श्रेष्ठ राजाओंके सङ्ग मिलकर हम लोग अवश्यही युद्ध करते। यह देखो हम लोग सब कोई रथसे नीचे उतरके पृथ्वी पर स्थित हुए हैं; इससे तुम भी शीघ्रही रथसे उतरो। ऐसा वचन कहके श्रीकृष्णने सर्पके समान लम्बी सांस छोडनेवाले लालनेत्रसे युक्त भीमसेनको रथसे उतारके पृथ्वीपर स्थित किया॥ (१५—१८)

महाराज! जब कृष्ण अर्जुनने बलपूर्वक भीमसेनको अस्त्रशस्त्रोंसे रहित करके उन्हें रथसे उतारके पृथ्वीपर स्थित किया; उसही समय शत्रुओंको भस्म करनेवाला नारायण अस्त्र शान्त होगया॥ संजय बोले, इसी प्रकार उपायसे उस अत्यन्त कठिन और दुर्जय नारायण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बभूवुर्विमलाः सर्वा दिशः प्रदिश एव च ॥ २० ॥
प्रववुश्च शिवा वाताः प्रशान्ता मृगपक्षिणः ।
वाहनानि च हृष्टानि प्रशान्तेऽस्त्रे सुदुर्जये ॥ २१ ॥
व्यपोढे च ततो घोरे तस्मिंस्तेजसि भारत ।
बभौ भीमो निशापाये धीमान्सूर्य इवोदितः ॥ २२ ॥
हतशेषं बलं तत्तु पाण्डवानामतिष्ठत ।
अस्त्रव्युपरमाद्दृष्टं तव पुत्रजिघांसया ॥ २३ ॥
व्यवस्थिते बले तस्मिन्नस्त्रे प्रतिहते तथा ।
दुर्योधनो महाराज द्रोणपुत्रमथाऽब्रवीत् ॥ २४ ॥
अश्वत्थामन्पुनः शीघ्रमस्त्रमेतत्प्रयोजय ।
अवस्थिता हि पाञ्चालाः पुनरेते जयैषिणः ॥ २५ ॥
अश्वत्थामा तथोक्तस्तु तव पुत्रेण मारिष ।
सुदीनमभिनिःश्वस्य राजानमिदमब्रवीत् ॥ २६ ॥
नैतदावर्तते राजन्नस्त्रं द्विर्नोपपद्यते ।

अस्त्रका तेज शान्त हुआ; तब पहिलेकी भांति सुखजनक वायु बहने लगा। सम्पूर्ण दिशा निर्मल होगयीं, पशुपक्षी और शूरवीर योद्धाओंके हाथी घोडे आदि वाहन फिर पहिलेकी भांति स्थित हुए॥ विशेष करके जब उस नारायण अस्त्रकी अग्नि शान्त होगई, उस समय भीमसेन इस प्रकार शोभित हुए जैसे रात्रिके बीतनेपर भोरके समय सूर्य उदय होते हुए आकाशमें शोभित होते हैं॥ इसी प्रकार नारायण अस्त्र निवर्तित होने पर मरनेसे बचे हुए पाण्डव और पाञ्चाल सेनाके योद्धा लोग फिर निर्लज्ज पुरुषोंकी भांति कौरवोंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिमें स्थित हुए॥ १९-२३

महाराज! जब नारायण अस्त्रका प्रभाव शान्त होगया और पाण्डवसेनाके सम्पूर्ण योद्धा लोग कौरवोंके सङ्ग युद्ध करनेके वास्ते फिर रणभूमिके बीच स्थित हुए तब राजा दुर्योधन द्रोणपुत्र अश्वत्थामासे बोले, हे अश्वत्थामन्! यह देखो, पाञ्चाल योद्धालोग फिर युद्धकरनेके निमित्त युद्धभूमिमें स्थित हुए हैं; तुम इस समय शीघ्रताके सहित फिर उस नारायण अस्त्रको चलाओ॥ (२४-२५)

अश्वत्थामा तुम्हारे पुत्र दुर्योधनके वचनको सुनके अत्यन्त शोकके सहित लम्बी सांस छोडते हुए उनसे यह वचन बोले, हे राजेन्द्र! ऐसा नहीं हो सकता, अर्थात् नारायण अस्त्र दो बार नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवृतं हि निवर्तेत प्रयोक्तारं न संशयः ॥ २७ ॥
एष चाऽस्त्रप्रतीघातं वासुदेवः प्रयुक्तवान् ।
अन्यथा विहितः संख्ये वधः शत्रोर्जनाधिप ॥ २८ ॥
पराजयो वा मृत्युर्वा श्रेयान्मृत्युर्न निर्जयः ।
विजिताश्चाऽरयो ह्येते शस्त्रोत्सर्गान्मृतोपमाः ॥ २९ ॥
दुर्योधन उवाच—आचार्यपुत्र यद्येतद् द्विरस्त्रं न प्रयुज्यते ।
अन्यैर्गुरुघ्ना वध्यन्तामस्त्रैरस्त्रविदां वर ॥ ३० ॥
त्वयि शस्त्राणि दिव्यानि त्र्यम्बके चाऽमितौजसि ।
इच्छतो न हि ते मुच्येत्संकुद्धो हि पुरन्दरः ॥ ३१ ॥
धृतराष्ट्र उवाच—तस्मिन्नस्त्रे प्रतिहते द्रोणे चोपधिना हते ।
तथा दुर्योधनेनोक्तो द्रौणिः किमकरोत्पुनः ॥ ३२ ॥
दृष्ट्वा पार्थांश्च संग्रामे युद्धाय समुपस्थितान् ।
नारायणास्त्रनिर्मुक्तांश्चरतः पृतनामुखे ॥ ३३ ॥

चलाया जा सकता; दूसरी बार प्रयोग करनेसे यह नारायण अस्त्र चलानेवाले का ही निसन्देह प्राण नाश करता है ॥ (२६–२७)

महाराज! क्या कहूं, श्रीकृष्णने स्वयं इस अस्त्रके निवारण होनेका उपाय किया है; नहीं तो अवश्य ही सम्पूर्ण शत्रुओंका युद्धभूमिके बीच प्राण नाश हो जाता ॥ जो हो, युद्धभूमिके बीच या तो पराजय होती है, अथवा मृत्युही उत्तम है। शत्रुओंने जब पराजित होके अस्त्रशस्त्रोंको परित्याग किया है; तब उन लोगोंको मरे हुए ही समझना चाहिये ॥ (२८–२९)

दुर्योधन बोले, हे अस्त्रधारियोंमें अग्रगण्य आचार्यपुत्र अश्वत्थामन्! यदि इस अस्त्रको दो बार चलानेका उपाय नहीं है, तो अन्यान्य अस्त्रोंसे गुरुघाती शत्रुओंका आप नाश कीजिये। अत्यन्त तेजस्वी देवोंके देव महादेव और तुममें सम्पूर्ण दिव्य अस्त्र विद्यमान हैं; आप यदि इच्छा करें, तो क्रुद्ध हुए देवराज भी तुम्हारे अस्त्रोंसे मुक्त नहीं होसकते ॥ (३०–३१)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! कपटतासे द्रोणाचार्यके मारे जाने और नारायण अस्त्रके निवृत्त होने पर दुर्योधनके वचनोंको सुनके तथा नारायण अस्त्रसे मुक्त हुए पाण्डवोंको रणभूमिके बीच स्थित देखकर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने किस कार्यका अनुष्ठान किया? (३२–३३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्जय उवाच— जानन्पितुः स निधनं सिंहलांगूलकेतनः।
सक्रोधो भयमुत्सृज्य सोऽभिदुद्राव पार्षतम् ॥ ३४ ॥
अभिद्रुत्य च विंशत्या क्षुद्रकाणां नरर्षभ।
पञ्चभिश्चाऽतिवेगेन विव्याध पुरुषर्षभः ॥ ३५ ॥
धृष्टद्युम्नस्ततो राजञ्ज्वलन्तमिव पावकम्।
द्रोणपुत्रं त्रिषष्ट्या तु राजन्विव्याध पत्रिणाम् ॥३६॥
सारथिं चाऽस्य विंशत्या स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः।
हयांश्च चतुरोऽविध्यच्चतुर्भिर्निशितैः शरैः ॥ ३७ ॥
विद्ध्वा विद्ध्वा नदद् द्रौणिं कम्पयन्निव मेदिनीम्।
आददे सर्वलोकस्य प्राणानिव महारणे ॥ ३८ ॥
पार्षतस्तु बली राजन्कृतास्त्रः कृतनिश्चयः।
द्रौणिमेवाऽभिदुद्राव मृत्युं कृत्वा निवर्तनम् ॥ ३९ ॥
ततो बाणमयं वर्ष द्रोणपुत्रस्य मूर्धनि।
अवासृजदमेयात्मा पाञ्चाल्यो रथिनां वरः ॥ ४० ॥
तं द्रौणिः समरे क्रुद्धं छादयामास पत्रिभिः।

सञ्जय बोले, महाराज ! सिंहलांगूल वाली ध्वजासे शोभित रथ पर चढे हुए अश्वत्थामा पृषत्पुत्र धृष्टद्युम्नको पिताकी मृत्युका कारण समझके अत्यन्त क्रुद्ध होकर निर्भय चित्तसे उनकी ओर दौडे, पहिले वीस क्षुद्रकास्त्रसे और फिर पांच बाणोंसे उन्होंने धृष्टद्युम्नको विद्ध किया ॥ (३४-३५)

अनन्तर पराक्रमीं धृष्टद्युम्नने भी जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान अश्वत्थामाको तिरसठ बाणोंसे विद्ध किया ॥ और शिलापर घिसे हुए वीस बाणोंसे उनके सारथी और चार बाणोंसे उनके रथके चारों घोडोंको विद्ध किया ॥ इसी भांति धृष्टद्युम्न बार बार अश्वत्थामा को अपने तेज बाणोंसे विद्ध करके पृथ्वीको कंपाते हुए सिंहनाद करने लगे, उस समय ऐसा मालूम होता था, कि मानो धृष्टद्युम्न उस महाघोर संग्राम भूमिमें सम्पूर्ण प्राणियोंको ही नाश कर देंगे ॥ इस प्रकार कृतास्त्र धृष्टद्युम्नने भी अपने प्राणकी आशाको त्यागके द्रोणपुत्र अश्वत्थामा के समीप गमन किया ॥ (३६-३९)

तिसके अनन्तर महापराक्रमी रथियोंमें मुख्य पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न लगातार अश्वत्थामाके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ अनन्तर अश्वत्थामाने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विव्याध चैनं दशभिः पितुर्वधमनुस्मरन् ॥ ४१ ॥
द्वाभ्यां च सुविसृष्टाभ्यां क्षुराभ्यां ध्वजकार्मुके ।
छित्त्वा पाञ्चालराजस्य द्रौणिरन्यैः समार्दयत् ॥ ४२ ॥
व्यश्वसूतरथं चैनं द्रौणिश्चक्रे महाहवे ।
तस्य चाऽनुचरान्सर्वान्क्रुद्धः प्राद्रावयच्छरैः ॥ ४३ ॥
ततः प्रदुद्रुवे सैन्यं पञ्चालानां विशाम्पते ।
सम्भ्रान्तरूपमार्तं च न परस्परमैक्षत ॥ ४४ ॥
दृष्ट्वा तु विमुखान्योधान्धृष्टद्युम्नं च पीडितम् ।
शैनेयोऽचोदयत्तूर्णं रथं द्रौणिरथं प्रति ॥ ४५ ॥
अष्टभिर्निशितैर्बाणैरश्वत्थामानमार्दयत् ।
विंशत्या पुनराहत्य नानारूपैरमर्षणः ॥ ४६ ॥
विव्याध च तथा सूतं चतुर्भिश्चतुरो हयान् ।
धनुर्ध्वजं च संयत्तश्चिच्छेद कृतहस्तवत् ॥ ४७ ॥
स साश्वं व्यधमच्चापि रथं हेमपरिष्कृतम् ।

अत्यन्त क्रुद्ध होकर अनगिनत बाणोंसे धृष्टद्युम्नको छिपा दिया; और पिताके वधको स्मरण करके दश चोखे बाणोंसे उनके शरीरमें प्रहार किया। तिसके अनन्तर दो क्षुरप्र बाणोंसे अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नका धनुष और उनके रथकी ध्वजाको काट दिया; फिर अनेक बाणोंको चलाकर उन्हें पीडित करने लगे ॥ इसी भांति द्रोणपुत्र अश्वत्थामा पाञ्चाल राजपुत्र धृष्टद्युम्नको घोडे, सारथी और रथसे रहित करके क्रोधपूर्वक उनके अनुयाई योद्धाओंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पीडित और युद्धभूमिमें छिन्नभिन्न करके चारों ओर भ्रमण करने लगे ॥ (४०-४३)

उससे पाञ्चालसेनाके सम्पूर्ण योद्धा आर्त्त और भयभीत होके व्याकुल हो गये, उस समय वे लोग किसीकी ओर देखनेमें भी समर्थ नहीं हुए॥ उस समय शिनिपौत्र सात्यकि पाञ्चालसेनाके योद्धाओंको युद्धभूमिसे भागते और धृष्टद्युम्नको अश्वत्थामाके बाणोंसे पीडित देख, शीघ्रताके सहित अपना रथ चलाकर वहांपर उपस्थित हुए और क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा को पहिले आठ बाणोंसे विद्ध करके फिर वीस बाणोंसे विद्ध किया ॥ (४४-४६)

अनन्तर सात्यकिने अपने तेज बाणसे अश्वत्थामाके सारथीको विद्ध करके फिर चार बाणोंसे उनके चारों घोडोंको विद्ध किया ॥ फिर हस्तलाघवके सहित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदि विव्याध समरे त्रिंशता सायकैर्भृशम् ॥ ४८ ॥
एवं स पीडितो राजन्नश्वत्थामा महाबलः ।
शरजालैः परिवृतः कर्तव्यं नाऽन्वपद्यत ॥ ४९ ॥
एवं गते गुरोः पुत्रे तव पुत्रो महारथः ।
कृपकर्णादिभिः सार्धं शरैः सात्वतमावृणोत् ॥ ५० ॥
दुर्योधनस्तु विंशत्या कृपः शारद्वतस्त्रिभिः ।
कृतवर्माऽथ दशभिः कर्णः पञ्चाशता शरैः ॥ ५१ ॥
दुःशासनः शतेनैव वृषसेनश्च सप्तभिः ।
सात्यकिं विव्यधुस्तूर्णं समन्तान्निशितैः शरैः ॥ ५२ ॥
ततः स सात्यकी राजन्सर्वानेव महारथान् ।
विरथान्विमुखांश्चैव क्षणेनैवाऽकरोन्नृप ॥ ५३ ॥
अश्वत्थामा तु सम्प्राप्य चेतनां भरतर्षभ ।
चिन्तयामास दुःखार्तो निःश्वसंश्च पुनः पुनः ॥ ५४ ॥
अथो रथान्तरं द्रौणिः समारुह्य परन्तपः ।
सात्यकिं वारयामास किरञ्शरशतान्बहून् ॥ ५५ ॥

बाण चलाकर उनके धनुष और ध्वजा को काट दिया। तिसके अनन्तर सात्यकिने सुवर्णभूषित अश्वत्थामाके रथके घोडोंको प्राणरहित करके उनके वक्षस्थलमें तीस बाणोंसे प्रहार किया। महाबली अत्यन्त पराक्रमी अश्वत्थामा सात्यकिके बाणजालसे छिपकर अत्यन्तही पीडित होकर मूर्छित होगये॥ ४७-४९

महाराज ! गुरुपुत्र अश्वत्थामाको मूर्च्छित देख तुम्हारे पुत्र महारथी दुर्योधन, कृपाचार्य और कर्ण आदि सैकडों महारथी योद्धाओंने चारों ओरसे सात्यकिको घेर लिया ॥ दुर्योधनने बीस, कृपाचार्यने तीन, कृतवर्माने दश, कर्णने पचास, दुःशासनने एकसौ और वृषसेनने सात बाण सात्यकिकी ओर चलाये; इसी भांति वे सब कोई मिलकर चारों ओरसे अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करते हुए शीघ्रताके सहित सात्यकिको विद्ध करने लगे॥ (५०-५२)

उसे देख, सात्यकिने क्षण भरके बीच उन सम्पूर्ण महारथियोंको रथभ्रष्ट करके युद्धसे विमुख किया॥ उस समय अश्वत्थामा सावधान होकर दुःख और क्रोधसे बार बार लम्बी सांस छोडते हुए चिन्ता करने लगे॥ अनन्तर अश्वत्थामा शीघ्रही दूसरे रथपर चढके एक एक बार सैकडों बाणोंको चलाते हुए सात्यकि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य भारद्वाजसुतं रणे।
विरथं विमुखं चैव पुनश्चक्रे महारथः ॥ ५६ ॥
ततस्ते पाण्डवा राजन्दृष्ट्वा सात्यकिविक्रमम्।
शङ्खशब्दान्भृशं चक्रुः सिंहनादांश्च नेदिरे ॥ ५७ ॥
एवं तं विरथं कृत्वा सात्यकिः सत्यविक्रमः।
जघान वृषसेनस्य त्रिसाहस्रान्महारथान् ॥ ५८ ॥
अयुतं दन्तिनां सार्धं कृपस्य निजघान सः।
पञ्चायुतानि चाऽश्वानां शकुनेर्निजघान ह ॥ ५९ ॥
ततो द्रौणिर्महाराज रथमारुह्य वीर्यवान्।
सात्यकिं प्रति संक्रुद्धः प्रययौ तद्वधेप्सया ॥ ६० ॥
पुनस्तमागतं दृष्ट्वा शैनेयो निशितैः शरैः।
अदारयत्क्रूरतरैः पुनः पुनररिन्दम ॥ ६१ ॥
सोऽतिविद्धो महेष्वासो नानालिङ्गैरमर्षणः।
युयुधानेन वै द्रौणिः प्रहसन्वाक्यमब्रवीत् ॥ ६२ ॥
शैनेयाऽभ्युपपत्तिं ते जानाम्याचार्यघातिनि।

को निवारण करने में प्रवृत्त हुए॥ महारथी शिनिपौत्र सात्यकिने द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको युद्धभूमिमें अपनी ओर आते देखकर उन्हें फिर रथरहित करके युद्धसे विमुख किया॥ (५३–५६)

पाण्डवोंकी ओरके सम्पूर्ण योद्धा लोग सात्यकिके ऐसे असाधारण पराक्रमको देखकर हर्षित होके शंख बजाने लगे और सिंहनाद करने लगे॥ महाराज! सत्यपराक्रमी सात्यकिने इसी भांति अश्वत्थामाको रथरहित करके महारथी वृषसेनके अनुयायी तीन हजार रथी, कृपाचार्यकी दस हजार हाथियोंकी सेना और शकुनिकी सेनाके पचास हजार घुड़सवारोंका वध किया॥ (५७-५९)

उसे देखकर पराक्रमी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा अत्यन्त क्रुद्ध होके सात्यकिके वधकी अभिलाषासे फिर एक रथपर चढके युद्ध करनेके वास्ते उसके सम्मुख उपस्थित हुए॥ शत्रुनाशन सात्यकि अश्वत्थामाको फिर अपनी ओर आते देख, तेज बाणोंको चलाकर बार बार उन्हें विद्ध करने लगे। (६०—६१)

महाधनुर्धारी अश्वत्थामा सात्यकिके नानाप्रकारके बाणोंसे विद्ध होकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और हंसके सात्यकिसे यह वचन बोले, हे शिनिपौत्र सात्यकि! गुरुघाती धृष्टद्युम्नके ऊपर तुम्हारा जैसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न चैनं त्रास्यसि मया ग्रस्तमात्मानमेव च ॥ ६३ ॥
शपेऽऽत्मनाऽहं शैनेय सत्येन तपसा तथा ।
अहत्वा सर्वपाञ्चालान्यदि शान्तिमहं लभे ॥ ६४ ॥
यद्बलं पाण्डवेयानां वृष्णीनामपि यद्बलम् ।
क्रियतां सर्वमेवेह निहनिष्यामि सोमकान् ॥ ६५ ॥
एवमुक्त्वाऽर्करश्म्याभं सुतीक्ष्णं तं शरोत्तमम् ।
व्यसृजत्सात्वते द्रौणिर्वज्रं वृत्रे यथा हरिः ॥ ६६ ॥
स तं निर्भिद्य तेनाऽस्तः सायकः सशरावरम् ।
विवेश वसुधां भित्त्वा श्वसन्बिलमिवोरगः ॥ ६७ ॥
स भिन्नकवचः शूरस्तोत्रार्दित इव द्विपः ।
विमुच्य सशरं चापं भूरिव्रणपरिस्रवः ॥ ६८ ॥
सीदन्रुधिरसिक्तश्च रथोपस्थ उपाविशत् ।
सूतेनाऽपहृतस्तूर्णं द्रोणपुत्राद्रथान्तरम् ॥ ६९ ॥
अथाऽन्येन सुपुङ्खेन शरेणाऽनतपर्वणा ।

प्रेम है, उसे मैं जानता हूं; परन्तु मैं जब उसके वधके वास्ते दृढ सङ्कल्प करूंगा, तो उसकी रक्षा करनी तो दूर रही, तुम मेरे बाणोंसे अपनी भी रक्षा न कर सकोगे । मैं तुम्हारे समीप सत्य और तपस्याके प्रभावसे यह शपथ करता हूं, कि मैं सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धाओंका नाश करके तब शान्त होऊंगा । तुम इस स्थान पर पाण्डव और सोमक वंशियोंकी जितनी सेना है, उसे इकठ्ठी करके मेरे सम्मुख स्थित करो; मैं सोमक वंशी तथा पाञ्चाल योद्धाओंको अवश्यही संहार करूंगा ॥ (६२—६५)

ऐसा वचन कहके द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने सूर्यकिरणके समान प्रकाशमान एक भयङ्कर बाण ग्रहण करके सात्यकिके शरीरमें इस प्रकार प्रहार किया, जैसे इन्द्रने वृत्रासुरके ऊपर वज्र चलाया था॥ द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके हाथसे छुटा हुआ वह भयङ्कर बाण कवचके सहित सात्यकिके शरीरको भेदकर इस प्रकार पृथ्वीमें प्रविष्ट हुआ जैसे सर्प बिलके बीच प्रवेश करते हैं॥ पराक्रमी सात्यकि कवच रहित रुधिरपूरित तथा क्षत विक्षत शरीरसे युक्त होकर धनुष बाण परित्याग करके मतवारे हाथीकी भांति मूर्च्छित होकर रथमें बैठ गये । उनके सारथीने उस ही समय उन्हें द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके समीपसे पृथक् किया ॥ (६६—६९)

अनन्तर शत्रुनाशन अश्वत्थामाने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजघान भ्रुवोर्मध्ये धृष्टद्युम्नं परन्तपः ॥ ७० ॥
स पूर्वमतिविद्धश्च भृशं पश्चाच्च पीडितः।
ससादाऽथ च पाञ्चाल्यो व्यपाश्रयत च ध्वजम्॥७१॥
तं नागमिव सिंहेन दृष्ट्वा राजञ्शरार्दितम्।
जवेनाऽभ्यद्रवञ्छूराः पञ्च पाण्डवतो रथाः ॥ ७२ ॥
किरीटी भीमसेनश्च वृद्धक्षत्रश्च पौरवः।
युवराजश्च चेदीनां मालवश्च सुदर्शनः ॥ ७३ ॥
एते हाहाकृताः सर्वे प्रगृहीतशरासनाः।
वीरं द्रौणायनिं वीराः सर्वतः पर्यवारयन् ॥ ७४ ॥
ते विंशतिपदे यत्ता गुरुपुत्रममर्षणम्।
पञ्चभिः पञ्चभिर्बाणैरभ्यघ्नन्सर्वतः समम् ॥ ७५ ॥
आशीविषोपमैर्विद्ध्वा पञ्चभिस्तु शितैः शरैः।
चिच्छेद युगपद् द्रौणिः पञ्चविंशतिसायकान्॥ ७६ ॥
सप्तभिस्तु शितैर्बाणैः पौरवं द्रौणिरार्दयत्।
मालवं त्रिभिरेकेन पार्थं षड्भिर्वृकोदरम् ॥ ७७ ॥

अच्छे पंखवाले एक नतपर्व बाणसे धृष्टद्युम्नको दोनों भौंहोंके बीचमें विद्ध किया। पाञ्चालराजपुत्र पहिलेसेही अश्वत्थामाके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध हुए थे, उस समय सात्यकिके पराजित होने पर फिर अश्वत्थामाके तीक्ष्णबाणोंसे पीडित होकर मूर्छित हुए और रथ दण्ड ग्रहण करके रथमें बैठ गये ॥ महाराज ! जैसे सिंहसे हाथी भयभीत होता है वैसे ही अश्वत्थामाके बाणोंसे धृष्टद्युम्नको पीडित तथा मूर्च्छित देखकर अर्जुन, भीमसेन, पुरुवंशीय वृद्धक्षत्र चेदी देशीय युवराज और मालवराज सुदर्शन, ये पांचों महारथी धनुष ग्रहण करके हाहाकार करते हुए वेगपूर्वक अश्वत्थामाकी ओर दौडे ॥ (७०–७४)

उन वीरोंने बीस पग आगे बढके पांच पांच बाणोंको धनुष पर चढा कर एक ही बार द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकी ओर चलाया ॥ अश्वत्थामाने पच्चीस बाणोंको चला कर उन पांचों महारथियोंके चलाये हुए बाणोंको काटके दो दो टुकडे करके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ तिसके अनन्तर अश्वत्थामाने सात तेज बाणोंसे महारथी वृद्धक्षत्रको, तीन बाणोंसे मालवराजको, एक बाणसे अर्जुनको और छः बाणोंसे भीमसेनको पीडित किया ॥ (७५–७७)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततस्ते विव्यधुः सर्वे द्रौणिं राजन्महारथाः ।
युगपच्च पृथक्चैव रुक्मपुङ्खैः शिलाशितैः ॥ ७८ ॥
युवराजश्च विंशत्या द्रौणिं विव्याध पत्त्रिभिः ।
पार्थश्च पुनरष्टाभिस्तथा सर्वे त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ७९ ॥
ततोऽर्जुनं षड्भिरथाऽऽजघान द्रौणायनिर्दशभिर्वासुदेवम् ।
भीमं दशार्धैर्युवराजं चतुर्भिर्द्वाभ्यां द्वाभ्यां मालवं पौरवं च॥ ८० ॥
सूतं विद्ध्वा भीमसेनस्य षड्भिर्द्वाभ्यां विद्ध्वा कार्मुकं च ध्वजं च ।
पुनः पार्थं शरवर्षेण विद्ध्वा द्रौणिर्घोरं सिंहनादं ननाद ॥ ८१ ॥
तस्याऽऽस्यतस्तान्निशितान्पीतधारान्द्रौणेः शरान्पृष्ठतश्चाऽग्रतश्च ।
धरा वियद्द्यौः प्रदिशो दिशश्च च्छन्ना बाणैरभवन्घोररूपैः॥८२ ॥
आसन्नस्य स्वरथं तीव्रतेजाः सुदर्शनस्येन्द्रकेतुप्रकाशौ ।
भुजौ शिरश्चेन्द्रसमानवीर्यस्त्रिभिः शरैर्युगपत्सञ्चकर्त ॥ ८३ ॥
स पौरवं रथशक्त्या निहत्य च्छित्वा रथं तिलशश्चाऽस्य बाणैः ।

अनन्तर पाण्डवोंकी ओरके वे पांचों महारथी योद्धा लोग कभी एक ही बार और कभी पृथक् रूपसे शिलापर घिसे हुए अपने तेज बाणोंको धनुष पर चढाकर अश्वत्थामाकी ओर चलाने लगे ॥ फिर चेदिदेशीय युवराजने बीस, अर्जुनने आठ और अन्य महारथियोंने तीन तीन बाणोंसे अश्वत्थामाके शरीरमें प्रहार किया ॥ (७८-७९)

तब द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अर्जुनको छः, श्रीकृष्ण और भीमसेनको दश दश बाणोंसे विद्ध करके चेदीदेशीय युवराज को चार और मालवराज तथा पौरवराजको दो दो बाणोंसे पीडित किया ॥ तिसके अनन्तर पराक्रमी अश्वत्थामाने छः बाणोंसे भीमसेनके सारथी और असंख्य बाणोंसे अर्जुनको विद्ध किया, फिर दो बाणोंसे भीमसेनका धनुष और उनके रथकी ध्वजाको काटके सिंहनाद करने लगे ॥ महाराज ! जब द्रोणपुत्र अश्वत्थामा इसी भांति लगातार अपने तेज बाणोंकी वर्षा करने लगे, उस समय उनके आगे पीछे सम्पूर्ण दिशा, तथा पृथ्वी, आकाश, नक्षत्रमण्डल आदि सम्पूर्ण स्थानोंमें केवल बाणही बाण दीख पडते थे ॥ (८०-८२)

तिसके अनन्तर महापराक्रमी अत्यन्त तेजस्वी अश्वत्थामाने रथके समीप सुदर्शनको स्थित देखकर इन्द्रध्वजाकी भांति उनकी दोनों भुजा और सिरको क्षुरास्त्रसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ फिर अश्वत्थामाने पौरव वृद्धक्षत्रकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छित्वा च बाहू वरचन्दनाक्तौ भल्लेन कायाच्छिर उच्चकर्त ॥ ८४ ॥
युवानमिन्दीवरदामवर्णं चेदिप्रभुं युवराजं प्रसह्य ।
बाणैस्त्वरावान्प्रजवालिताग्निकल्पैर्विद्ध्वा प्रादान्मृत्यवे साश्वसूतम्॥८५ ॥
मालवं पौरवं चैव युवराजं च चेदिपम् ।
दृष्ट्वा समक्षं निहतं द्रोणपुत्रेण पाण्डवः ॥ ८६ ॥
भीमसेनो महाबाहुः क्रोधमाहारयत्परम् ।
ततः शरशतैस्तीक्ष्णैः संक्रुद्धाशीविषोपमैः ॥ ८७ ॥
छादयामास समरे द्रोणपुत्रं परन्तपः ।
ततो द्रौणिर्महातेजाः शरवर्षं निहत्य तम् ॥ ८८ ॥
विव्याध निशितैर्बाणैर्भीमसेनममर्षणः ।
ततो भीमो महाबाहुर्द्रौणेर्युधि महाबलः ॥ ८९ ॥
क्षुरप्रेण धनुश्छित्वा द्रौणिं विव्याध पत्त्रिणा ।
तदपास्य धनुश्छिन्नं द्रोणपुत्रो महामनाः ॥ ९० ॥
अन्यत्कार्मुकमादाय भीमं विव्याध पत्त्रिभिः ।

ओर एक शक्ति चलाकर अपने तेज बाणोंसे उनके रथको तिल तिलके परिमाणसे काट डाला और भल्लास्त्रसे उनकी चन्द्रनचर्चित भुजा और सिरको काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ तिसके अनन्तर युवा चेदिराजको आक्रमण करके जलती हुई अग्निके समान प्रकाशमान बाणोंसे विद्ध कर घोडे और सारथीके सहित प्राणनाश करके उन्हें यमपुरीमें भेज दिया ॥ (८३-८५)

पाण्डुपुत्र महाबाहु भीमसेन अपने सम्मुखमें ही मालव, पौरव और चेदीराजको अश्वत्थामाके बाणोंसे मरते देख, अत्यन्त क्रुद्ध हुए । अनन्तर शत्रुनाशन भीमसेनने क्रुद्ध सर्पके समान भयङ्कर तीक्ष्णधारवाले सैकडों बाण द्रोणपुत्र अश्वत्थामाकी ओर चलाकर उन्हें छिपा दिया । (८६—८८)

उसे देखकर महापराक्रमी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने क्रुद्ध होकर भीमसेनके चलाये हुए सम्पूर्ण बाणोंको निष्फल करके अपने तीक्ष्ण-बाणोंसे उन्हें विद्ध किया । तब महाबली भीमसेनने क्षुरप्र अस्त्रसे अश्वत्थामाके धनुषको काटके अपने तेज बाणोंसे उन्हें भी विद्ध किया । तब महाबलवान् महात्मा द्रोणपुत्र अश्वत्थामा कटे हुए धनुषको परित्याग कर दूसरा धनुष ग्रहण करके भीमसेनको असंख्य बाणोंसे विद्ध करने लगे । (८८-९१)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौ द्रौणिभीमौ समरे पराक्रान्तौ महाबलौ ॥ ९१ ॥
अवर्षतां शरवर्षं वृष्टिमन्ताविवाऽम्बुदौ ।
भीमनामाङ्किता बाणाः स्वर्णपुङ्खाः शिलाशिताः ॥९२॥
द्रौणिं सञ्छादयामासुर्घनौघा इव भास्करम् ।
तथैव द्रौणिनिर्मुक्तैर्भीमः सन्नतपर्वभिः ॥ ९३ ॥
अवाकीर्यत स क्षिप्रं शरैः शतसहस्रशः ।
स च्छाद्यमानः समरे द्रौणिना रणशालिना ॥ ९४ ॥
न विव्यथे महाराज तदद्भुतमिवाऽभवत ।
ततो भीमो महाबाहुः कार्तस्वरविभूषितान् ॥ ९५ ॥
नाराचान्दश सम्प्रैषीद्यमदण्डनिभाञ्छितान् ।
ते जत्रुदेशमासाद्य द्रोणपुत्रस्य मारिष ॥ ९६ ॥
निर्भिद्य विविशुस्तूर्णं वल्मीकमिव पन्नगाः ।
सोऽतिविद्धो भृशं द्रौणिः पाण्डवेन महात्मना॥ ९७॥
ध्वजयष्टिं समासाद्य न्यमीलयत लोचने ।
स मुहूर्तात्पुनः संज्ञां लब्ध्वा द्रौणिर्नराधिप ॥ ९८ ॥

इसी भांति महाबली पराक्रमी अश्वत्थामा और भीमसेन युद्धभूमिके बीच जलकी वर्षा करनेवाले दो बादलोंकी भांति लगातार अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे। इसही समय भीमनामसे अङ्कित शिलापर घिसे हुए स्वर्णदण्डवाले अनगिनत बाणोंसे अश्वत्थामाको इस प्रकार छिपा दिया, जैसे बादलोंके समूह सूर्यको छिपा देते हैं। उसी भांति अश्वत्थामाके धनुषसे छूटे हुए सैकडों सहस्रों बाणजालमें मुहूर्त्त भरके बीच भीमसेन भी छिप गये। (९१-९४)

महाराज ! भीमसेन युद्ध विद्या तथा अस्त्र शस्त्रोंके प्रयोगमें निपुण अश्वत्थामाके तीक्ष्ण-बाणजालमें छिप कर भी दुःखित नहीं हुए, वह भीमसेनका साहस अद्भुतरूपसे दीख पडा। अनन्तर भीमसेनने यमदण्डके समान भयङ्कर सुवर्णभूषित तेजधारवाले दश बाण अश्वत्थामाकी ओर चलाये, वे दशों बाण द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके शरीरको भेद कर इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गये जैसे सर्प बिलके भीतर प्रवेश करते हैं।९४-९७

महाराज ! अश्वत्थामा पाण्डुपुत्र भीमसेनके बाणोंसे अत्यन्त विद्ध हुए और मूर्च्छित होकर ध्वजाका दण्ड ग्रहण करके रथमें बैठ गये। परन्तु मुहूर्त्त भरके बीच सावधान होकर रुधिर पूरित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोधं परममातस्थौ समरे रुधिरोक्षितः।
दृढं सोऽभिहतस्तेन पाण्डवेन महात्मना ॥ ९९ ॥
वेगं चक्रे महाबाहुर्भीमसेनरथं प्रति।
तत आकर्णपूर्णानां शराणां तिग्मतेजसाम् ॥ १०० ॥
शतमाशीविषाभानां प्रेषयामास भारत।
भीमोऽपि समरश्लाघी तस्य वीर्यमचिन्तयत् ॥ १०१ ॥
तूर्णं प्रासृजदुग्राणि शरवर्षाणि पाण्डवः।
ततो द्रौणिर्महाराज च्छित्वाऽस्य विशिखैर्धनुः ॥ १०२ ॥
आजघानोरसि क्रुद्धः पाण्डवं निशितैः शरैः।
ततोऽन्यद्धनुरादाय भीमसेनो ह्यमर्षणः ॥ १०३ ॥
विव्याध निशितैर्बाणैर्द्रौणिं पञ्चभिराहवे।
जीमूताविव धर्मान्ते तौ शरौघप्रवर्षिणौ ॥ १०४ ॥
अन्योन्यक्रोधताम्राक्षौ छादयामासतुर्युधि।
तलशब्दैस्ततो घोरैस्त्रासयन्तौ परस्परम् ॥ १०५ ॥
अयुध्येतां सुसंरब्धौ कृतप्रतिकृतैषिणौ।

शरीरसे युक्त और महात्मा भीमसेनके द्वारा बहुत विद्ध होनेके कारण अत्यन्त क्रुद्ध होकर वेगपूर्वक भीमसेनके रथकी ओर गमन करने लगे। (९७—१००)

अनन्तर विषधर सर्पके समान भयङ्कर तीक्ष्ण धारवाले एक सौ बाणोंको धनुषपर चढाके अश्वत्थामाने भीमसेन की ओर चलाये। युद्धमें प्रशंसित भीमसेन उनके चलाये हुए बाणोंकी कुछ भी चिन्ता न करके अपने तेजस्वी बाणोंको अश्वत्थामाकी ओर चलाने लगे। उसे देख अश्वत्थामा अत्यन्तही क्रुद्ध हुए और अपने बाणसे भीमसेनके धनुषको काटके फिर तीक्ष्ण बाणोंसे उनके वक्षस्थलमें प्रहार किया। तब भीमसेनने क्रुद्ध होकर कटा धनुष त्यागके एक दृढ धनुष ग्रहण करके पांच तीक्ष्ण बाणोंसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको विद्ध किया। (१००—१०३)

इसी भांति वे दोनों वीर क्रोधसे लाल नेत्र करके जलकी वर्षा करनेवाले दो बादलोंकी भांति अपने बाणोंकी वर्षासे एक दूसरेको छिपाने लगे और क्रोधपूर्वक एक दूसरेके अस्त्रोंके प्रतिकारकी अभिलाषासे महाघोर तलत्राण और धनुषटङ्कार शब्दसे एक दूसरेको भयभीत करते हुए भयङ्कर युद्ध करने लगे॥ (१०३—१०६)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो विस्फार्य सुमहच्चापं रुक्मविभूषितम् ॥ १०६ ॥
भीमं प्रैक्षत स द्रौणिः शरानस्यन्तमान्तिकात् ।
शरद्यर्हमध्यगतो दीप्तार्चिरिव भास्करः ॥ १०७ ॥
आददानस्य विशिखान्सन्दधानस्य चाऽऽशुगान् ।
विकर्षतो मुञ्चतश्च नाऽन्तरं ददृशुर्जनाः ॥ १०८ ॥
अलातचक्रप्रतिमं तस्य मण्डलमायुधम् ।
द्रौणेरासीन्महाराज बाणान्विसृजतस्तदा ॥ १०९ ॥
धनुश्च्युताः शरास्तस्य शतशोऽथ सहस्रशः ।
आकाशे प्रत्यदृश्यन्त शलभानामिवाऽऽयतीः॥ ११०॥
ते तु द्रौणिविनिर्मुक्ताः शरा हेमविभूषिताः ।
अजस्रमन्वकीर्यन्त घोरा भीमरथं प्रति ॥ १११ ॥
तत्राऽद्भुतमपश्याम भीमसेनस्य विक्रमम् ।
बलं वीर्यं प्रभावं च व्यवसायं च भारत ॥ ११२ ॥
तां स मेघादिवोद्भूतां बाणवृष्टिं समन्ततः ।
जलवृष्टिं महाघोरां तपान्त इव चिन्तयन् ॥ ११३ ॥
द्रोणपुत्रवधप्रेप्सुर्भीमो भीमपराक्रमः ।

अनन्तर अश्वत्थामा भीमसेनको बाण चलाते देख, शरद्‌कालके दोपहरके सूर्यके समान प्रकाशित होके सुवर्णभूषित अपने प्रचण्ड धनुषको फेरते हुए क्रोध पूर्वक भीमसेनकी ओर देखने लगे ॥ तिसके अनन्तर अश्वत्थामा जब बाण ग्रहण करने, साधने और भीमसेनकी ओर चलाने लगे, तो उस समय कोई पुरुष उन्हें तनिक भी अवकाश लेते हुए न देख सके ॥ (१०६—१०८)

उस समय बाण वर्षा करनेवाले द्रोणपुत्र अश्वत्थामाका धनुष कुम्हारके चाकके समान मण्डलाकार गतिसे फिरता हुआ चारों ओर दिखाई देने लगा; उनके धनुषसे छूटे हुए सैकडों सहस्रों बाण आकाशमण्डलमें शलभसमूहकी भांति जलते हुए दिखाई देने लगे ॥ महाराज ! वे सुवर्णभूषित सम्पूर्ण बाण लगातार भीमसेनके रथके ऊपर वेगपूर्वक पडने लगे ॥ (१०९–१११)

परन्तु उस स्थलमें मैंने भीमसेनके भी बल पराक्रम वीरताका प्रभाव और असाधारण कार्यको अवलोकन किया ॥ वह चारों ओरसे अश्वत्थामाके बाणोंको अपने ऊपर गिरते देख, उसे जल वर्षाके समान ही समझने लगे; परन्तु महा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असृजच्छरवर्षाणि प्रावृषीव बलाहकः ॥ ११४ ॥
तद्रुक्मपृष्ठं भीमस्य धनुर्घोरं महारणे ।
विकृष्यमाणं विबभौ शक्रचापमिवाऽपरम् ॥ ११५ ॥
तस्माच्छराः प्रादुरासञ्छतशोऽथ सहस्रशः ।
सञ्छादयन्तः समरे द्रौणिमाहवशोभिनम् ॥ ११६ ॥
तयोर्विसृजतोरेवं शरजालानि मारिष ।
वायुरप्यन्तरा राजन्नाऽशक्नोत्प्रतिसर्पितुम् ॥ ११७ ॥
तथा द्रौणिर्महाराज शरान्हेमविभूषितान् ।
तैलधौतान्प्रसन्नाग्रान्प्राहिणोद्वधकांक्षया ॥ ११८ ॥
तानन्तरिक्षे विशिखैस्त्रिधैकैकमशातयत् ।
विशेषयन्द्रोणसुतं तिष्ठतिष्ठेति चाऽब्रवीत् ॥ ११९ ॥
पुनश्च शरवर्षाणि घोराण्युग्राणि पाण्डवः ।
व्यसृजद्बलवान्क्रुद्धो द्रोणपुत्रवधेप्सया ॥ १२० ॥
ततोऽस्त्रमायया तूर्णं शरवृष्टिं निवार्य ताम् ।
धनुश्चिच्छेद भीमस्य द्रोणपुत्रो महास्त्रवित् ॥ १२१ ॥

पराक्रमी भीमसेन भी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके वधकी इच्छा करके वर्षाकालके बादलकी भांति लगातार उनके ऊपर अपने बाणोंकी वर्षा करने लगे ॥ (११२-११४)

महाराज ! उस समय उनका सुवर्णभूषित प्रचण्ड धनुष बार बार आकर्षण करनेसे इन्द्रधनुषकी भांति शोभित होता था । भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए सैकडों सहस्रों बाणोंसे द्रोणपुत्र अश्वत्थामा छिप गये ॥ उस समय वे दोनों पराक्रमी वीर इस प्रकार अपने बाणोंको चलाने लगे, कि वायु भी उस स्थानमें इधर उधर चलनेमें समर्थ नहीं हुआ ॥ (११५—११७)

अनन्तर अश्वत्थामा भीमसेनके वधकी इच्छा करके उत्तम पानी चढेहुए तीक्ष्ण बाणोंको उनकी ओर चलाने लगे ॥ पाण्डुपुत्र बलवान् भीमसेनने अश्वत्थामासे विशेष हस्तलाघव प्रकाशित करते हुए, उनके बाणोंको आकाशमार्गमेंही अपने बाणोंके प्रभावसे तीन तीन टुकटे करके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ और क्रोधपूर्वक अश्वत्थामाको खडा रह ! खडा रह ! कहके उनके वधकी अभिलाषासे अपने महाभयङ्कर बाणोंको उनकी ओर चलाने लगे ॥ (११८—१२०)

तब महाअस्त्रशस्त्रोंकी विद्या जानने वाले द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अस्त्रमाया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरैश्चैनं सुबहुभिः क्रुद्धः संख्ये पराभिनत्।
स च्छिन्नधन्वा बलवान्रथशक्तिं सुदारुणाम् ॥१२२॥
वेगेनाऽऽविध्य चिक्षेप द्रोणपुत्ररथं प्रति।
तामापतन्तीं सहसा महोल्काभां शितैः शरैः ॥१२३॥
चिच्छेद समरे द्रौणिर्दर्शयन्पाणिलाघवम्।
एतस्मिन्नन्तरे भीमो दृढमादाय कार्मुकम् ॥ १२४ ॥
द्रौणिं विव्याध विशिखैः स्मयमानो वृकोदरः।
ततो द्रौणिर्महाराज भीमसेनस्य सारथिम् ॥ १२५ ॥
ललाटे दारयामास शरेणाऽऽनतपर्वणा।
सोऽतिविद्धो बलवता द्रोणपुत्रेण सारथिः ॥ १२६ ॥
व्यामोहमगमद्राजन्रश्मीनुत्सृज्य वाजिनः।
ततोऽश्वाः प्राद्रवंस्तूर्णं मोहिते रथसारथौ ॥ १२७ ॥
भीमसेनस्य राजेन्द्र पश्यतां सर्वधन्विनाम्।
तं दृष्ट्वा प्रद्रुतैरश्वैरपकृष्टं रणाजिरात् ॥ १२८ ॥
दध्मौ प्रमुदितः शङ्खं बृहन्तमपराजितः।

के प्रभावसे भीमसेनके धनुषसे छूटे हुए सम्पूर्ण बाणोंको शीघ्रताके सहित निवारण करके उनके धनुषको काट दिया और क्रोधपूर्वक उन्हें भी अनगिनत बाणोंसे विद्ध करने लगे ॥ बलवान् भीमसेनने धनुषरहित होकर एक महाभयङ्कर शक्ति उठाकर वेगपूर्वक अश्वत्थामाके रथकी ओर चलायी। महालुककी भांति उस शक्तिको अपनी ओर आती देख, द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने हस्तलाघवके सहित उसे दश बाणोंसे काटके पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ (१२१–१२४)

इतनेही अवसरमें भीमसेन दूसरा धनुष ग्रहण करके हंसते हंसते द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको विद्ध करने लगे। उसे देखकर अश्वत्थामाने क्रुद्ध होकर एक नतपर्व बाणसे भीमसेनके सारथीके मस्तकमें प्रहार किया। भीमसेनका सारथी बलवान् अश्वत्थामाके बाणसे अत्यन्त विद्ध होकर मूर्छित हुआ उसके हाथसे घोडोंकी रास छूट गयी। महाराज! जब भीमसेनका सारथी मूर्च्छित होगया, तब उनके रथके घोडे सम्पूर्ण धनुर्द्धारियोंके सम्मुखमें ही अश्वत्थामाके सम्मुखसे भागके भीमसेनके रथको खींचते हुए वेगपूर्वक रणभूमिमें दूसरी ओर दौडने लगे। (१२४–१२८)

शत्रुओंसे अजेय अश्वत्थामा भीमसने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः सर्वे च पञ्चाला भीमसेनश्च पाण्डवः ॥ १२९ ॥
धृष्टद्युम्नरथं त्यक्त्वा भीताः सम्प्राद्रवन्दिशः ।
तान्प्रभग्नांस्ततो द्रौणिः पृष्ठतो विकिरञ्शरान् ॥१३०॥
अभ्यवर्तत वेगेन कालयन्पाण्डुवाहिनीम् ।
ते वध्यमानाः समरे द्रोणपुत्रेण पार्थिवाः ॥
द्रोणपुत्रभयाद्राजन्दिशः सर्वाश्च भेजिरे ॥ १३१ ॥ [९३८४]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वण्यश्वत्थामपराक्रमे द्विशततमोऽध्यायः ॥ २०० ॥

सञ्जय उवाच— तत्प्रभग्नं बलं दृष्ट्वा कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ।
न्यवारयदमेयात्मा द्रोणपुत्रजयेप्सया ॥ १ ॥
ततस्ते सैनिका राजन्नैव तत्राऽवतस्थिरे ।
संस्थाप्यमाना यत्नेन गोविन्देनाऽर्जुनेन च ॥ २ ॥
एक एव च बीभत्सुः सोमकावयवैः सह ।
मत्स्यैरन्यैश्च सन्धाय कौरवान्संन्यवर्तत ॥ ३ ॥
ततो द्रुतमतिक्रम्य सिंहलाङ्गूलकेतनम् ।

को युद्धभूमिसे पृथक् होते देख, हर्ष पूर्वक अपने शङ्खको बजाने लगे। इसी प्रकार जब भीमसेन युद्धसे विमुख हुए, तब सम्पूर्ण पाञ्चाल योद्धा लोग धृष्टद्युम्न के सहित रणभूमि छोडके वेगपूर्वक चारों ओर भागने लगे। उस समय पराक्रमी अश्वत्थामा उस भागती हुई पाञ्चाल सेनाके योद्धाओंके ऊपर सहस्रों बाणोंको वर्षाते हुए उन्हें आक्रमण करके उनके पीछे पीछे दौडे। महाराज! उस समय वे सम्पूर्ण क्षत्रीय योद्धालोग द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके बाणोंसे पीडित तथा विकल और भयभीत होके चारों ओर भागने लगे॥ (१२८-१३१) [९३८४]

द्रोणपर्वमें दोसौ अध्याय समाप्त।

द्रोणपर्वमें दोसौ एक अध्याय।

सञ्जय बोले, महाराज! महापराक्रमी महात्मा कुन्तीपुत्र अर्जुन अपनी ओरके सम्पूर्ण योद्धाओंको भागते देख; द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको जीतनेकी इच्छा करके अपनी सेनाके योद्धाओंको भागनेसे निवृत्त करने लगे॥ परन्तु पाञ्चाल तथा पाण्डवोंकी सेनाके योद्धा लोग किसी प्रकारसे भी युद्धभूमिमें खडे न होसके। अनन्तर कृष्ण और अर्जुनने अत्यन्त यत्नके सहित उन शूरवीर योद्धाओंको फिर लौटा कर युद्धभूमिमें स्थित किया। उस समय अर्जुन अकेलेही सोम और मत्स्यसेनाके योद्धाओंको सङ्ग लेकर कौरवोंसे युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुए॥ (१-३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सव्यसाची महेष्वासमश्वत्थामानमब्रवीत् ॥ ४ ॥
या शक्तिर्यच्च विज्ञानं यद्वीर्यं यच्च पौरुषम् ।
धार्तराष्ट्रेषु या प्रीतिर्द्वेषोऽस्मासु च यच्च ते ॥ ५ ॥
यच्च भूयोऽस्ति तेजस्ते तत्सर्वं मयि दर्शय ।
स एव द्रोणहन्ता ते दर्पं छेत्स्यति पार्षतः ॥ ६ ॥
कालानलसमप्रख्यं द्विषतामन्तकोपमम् ।
समासाद्य पाञ्चाल्यं मां चापि सहकेशवम् ।
दर्पं नाशयितास्म्यद्य तवोद्वृत्तस्य संयुगे ॥ ७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच– आचार्यपुत्रो मानार्हो बलवांश्चापि सञ्जय ।
प्रीतिर्धनञ्जये चाऽस्य प्रियश्चापि महात्मनः ॥ ८ ॥
न भूतपूर्वं बीभत्सोर्वाक्यं परुषमीदृशम् ।
अथ कस्मात्स कौन्तेयः सखायं रूक्षमुक्तवान् ॥ ९ ॥

सञ्जय उवाच– युवराजे हते चैव वृद्धक्षत्रे च पौरवे ।

अनन्तर सव्यसाची अर्जुन सिंह-लांगूलवाली ध्वजासे शोभित रथपर चढे हुए महाधनुर्धारी अश्वत्थामाको शीघ्रताके सहित आक्रमण करके उनसे यह वचन बोले, हे अश्वत्थामन् ! तुम्हारी धृतराष्ट्रपुत्रोंके ऊपर जैसी प्रीति और हम लोगोंके ऊपर तुम्हारा जैसा द्वेषभाव तथा तुम्हारा जहांतक अस्त्रविज्ञान, शक्ति वा पुरुषार्थ है, अधिक क्या कहूं तुम्हारा जो कुछ प्रभाव है, वह सब तुम आज मुझे दिखाओ ॥ (४-६)

यह द्रोणाचार्यका वध करनेवाला धृष्टद्युम्नही तुम्हारे अभिमानको दूर कर देगा । शत्रुओंके नाश करनेवाले युद्धमें कालाग्निके समान धृष्टद्युम्न और कृष्णके सहित मेरे सङ्ग युद्ध करनेमें प्रवृत्त होजाओ ॥ तुम सबको तुच्छ समझ रहे हो, आज मैं युद्धभूमिमें तुम्हारे अभिमानको दूर कर दूंगा ॥ (६-७)

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! द्रोणपुत्र बलवान् अश्वत्थामा सम्पूर्ण क्षत्रीय पुरुषोंमें पूजनीय हैं, विशेष करके अर्जुनके ऊपर उनकी अधिक प्रीति है, और वह भी महात्मा अर्जुन को प्रिय हैं, ऐसी अवस्थामें कुन्तीपुत्र अर्जुनने अपने मित्र तथा सखा अश्वत्थामाको ऐसे कडवे वचन क्यों सुनाये ? इसके पहिले तो अर्जुनने कभी भी अश्वत्थामाके विषयमें ऐसे कडवे वचनोंका प्रयोग नहीं किया था ॥ (८-९)

सञ्जय बोले, महाराज ! चेदी देशीय युवराज पुरुवंशीय वृद्धक्षत्र और अस्त्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इष्वस्त्रविधिसम्पन्ने मालवे च सुदर्शने ॥ १० ॥
धृष्टद्युम्ने सात्यकौ च भीमे चापि पराजिते।
युधिष्ठिरस्य तैर्वाक्यैर्मर्मण्यपि च घट्टिते ॥ ११ ॥
अन्तर्भेदे च सञ्जाते दुःखं संस्मृत्य च प्रभो।
अभूतपूर्वो बीभत्सोर्दुःखान्मन्युरजायत ॥ १२ ॥
तस्मादनर्हमश्लीलमप्रियं द्रौणिमुक्तवान्।
मान्यमाचार्यतनयं रूक्षं कापुरुषं यथा। ॥ १३ ॥
एवमुक्तः श्वसन्क्रोधान्महेष्वासतमो नृप।
पार्थेन परुषं वाक्यं सर्वमर्मभिदा गिरा ॥ १४ ॥
द्रौणिश्चुकोप पार्थाय कृष्णाय च विशेषतः।
स तु यत्तो रथे स्थित्वा वार्युपस्पृश्य वीर्यवान् ॥ १५ ॥
देवैरपि सुदुर्धर्षमस्त्रमाग्नेयमाददे।
दृश्यादृश्यानरिगणानुद्दिश्याऽऽचार्यनन्दनः ॥ १६ ॥
सोऽभिमन्त्र्य शरं दीप्तं विधूममिव पावकम्।
सर्वतः क्रोधमाविश्य चिक्षेप परवीरहा ॥ १७ ॥
ततस्तुमुलमाकाशे शरवर्षमजायत।

शस्त्रोंकी विद्यामें निपुण मालवराज सुदर्शनके मारे जाने, धृष्टद्युम्न सात्यकि तथा भीमसेनके पराजित होनेसे और राजा युधिष्ठिरके आक्षेप युक्त वचनोंको सुनकर अर्जुनका चित्त विचलित हुआ था। विशेष करके अपनी सेनाके बीच अन्तर्भेदको स्मरण करके उस समय पराक्रमी अर्जुन दुःख और क्रोधके वशवर्त्ती हुए॥ इस ही कारण उन्होंने कादर पुरुषकी भांति आचार्यपुत्र अश्वत्थामाके विषय में इस प्रकारके मानहानि करनेवाले अप्रिय और अश्लील वचनोंका प्रयोग किया॥ (१०–१३)

महाराज! उनके क्रोधपूरित मर्मभेदी वचनोंको सुनकर धनुर्धारियोंमें अग्रणी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा अर्जुन और कृष्णके ऊपर अत्यन्त क्रुद्ध हुए॥ तिसके अनन्तर शत्रुओंको नाश करनेवाले महावीर पराक्रमी अश्वत्थामाने युद्धभूमिमें स्थित होकर जलस्पर्श करके दृश्य और अदृश्य शत्रुओंके वधके उद्देश्यसे देवताओंसे भी असह्य आग्नेयास्त्रको ग्रहण किया, और धूएंसे रहित अग्निकी भांति प्रकाशमान उस अस्त्रको अभिमन्त्रित करके क्रोधपूर्वक कृष्ण अर्जुन तथा उन के अनुयाई योद्धाओं की ओर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावकार्चिः परीतं तत्पार्थमेवाऽभिपुप्लुवे ॥ १८ ॥
उल्काश्च गगनात्पेतुर्दिशश्च न चकाशिरे ।
तमश्च सहसा रौद्रं चमूमवततार ताम् ॥ १९ ॥
रक्षांसि च पिशाचाश्च विनेदुरतिसङ्गताः ।
ववुश्चाऽशिशिरा वाताः सूर्यो नैव ततापच ॥ २० ॥
वायसाश्चापि चाऽऽक्रन्दन्दिक्षु सर्वासु भैरवम् ।
रुधिरं चापि वर्षन्तो विनेदुस्तोयदा दिवि ॥ २१ ॥
पक्षिणः पशवो गावो विनेदुश्चापि सुव्रताः ।
परमं प्रयतात्मानो न शान्तिमुपलेभिरे ॥ २२ ॥
भ्रान्तसर्वमहाभूतमावर्तितदिवाकरम् ।
त्रैलोक्यमभिसन्तप्तं ज्वराविष्टमिवाऽभवत् ॥ २३ ॥
अस्त्रतेजोभिसन्तप्ता नागा भूमिशयास्तथा ।
निःश्वसन्तः समुत्पेतुस्तेजो घोरं मुमुक्षवः ॥ २४ ॥
जलजानि च सत्वानि दह्यमानानि भारत ।

चलाया ॥ (१४–१७)

अनन्तर आकाशमण्डलसे अग्नि प्रबल वेगसे प्रकट हुई और उससे असंख्य बाण प्रकट होकर अर्जुनके ऊपर पडने लगे ॥ उस समय रथके सहित कृष्ण अर्जुन अश्वत्थामाके बाणजालसे इकबारगी छिप गये॥ उस ही समय आकाशमण्डलसे उल्कापात होने लगा, और व्यूहबद्ध सेनाके बीच महाघोर अन्धकार प्रकट हुआ; उससे सम्पूर्ण दिशा छिप गयीं ॥ राक्षस, पिशाच इकट्ठे होकर भयानक शब्द करने लगे, वायु अत्यन्त ही प्रबल वेगसे बहने लगी, सूर्यका प्रकाश मन्द हुआ, कौवें गिद्ध कर्कश बोली बोलने लगे ॥ आकाशसे बादलोंके समूह गर्जते हुए रुधिरकी वर्षा करने लगे ॥ (१८–२१)

उस समय पशु, पक्षी तथा स्थिर चित्तवाले मुनि भी शान्त न रह सके, सहस्र किरण धारण करनेवाले भगवान् सूर्य तेजरहित हुए और उस समय सम्पूर्ण प्राणी व्याकुल होगये; इसी प्रकार तीनों लोकमें हाहाकार मच गया और सम्पूर्ण पुरुष भयभीत होगये । उस समय युद्ध भूमिके बीच हाथियोंके समूह आग्नेयास्त्रके तेजसे विकल होकर बार बार चिंग्घाडते और लम्बी सांस छोडते हुए प्राण रहित होकर पृथ्वीमें गिरने लगे ॥ (२२–२४)

अधिक क्या कहा जावे, उस समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न शान्तिमुपजग्मुर्हि तप्यमानैर्जलाशयैः ॥ २५ ॥
दिग्भ्यः प्रदिग्भ्यः खाद्भ्यः सर्वतः शरवृष्टयः ।
उच्चावचा निपेतुर्वै गरुडानिलरंहसैः ॥ २६ ॥
तैः शरैर्द्रोणपुत्रस्य वज्रवेगैः समाहताः ।
प्रदग्धा रिपवः पेतुरग्निदग्धा इव द्रुमाः ॥ २७ ॥
दह्यमाना महाभागाः पेतुरुर्व्यां समन्ततः ।
नदन्तो भैरवान्नादाञ्जलदोपमनिःस्वनान् ॥ २८ ॥
अपरे प्रद्रुता नागा भयत्रस्ता विशाम्पते ।
त्रेसुर्दिशो यथापूर्वं वने दावाग्निसंवृताः ॥ २९ ॥
द्रुमाणां शिखराणीव दावदग्धानि मारिष ।
अश्ववृन्दान्यदृश्यन्त रथवृन्दानि भारत ॥ ३० ॥
अपतन्त रथौघाश्च तत्र तत्र सहस्रशः ।
तत्सैन्यं भयसंविग्नं ददाह युधि भारत ॥ ३१ ॥
युगान्ते सर्वभूतानि संवर्तक इवाऽनलः ।

आग्नेयास्त्रके प्रभावसे जलमें वास करनेवाले जीवजन्तु भी भस्म होने लगे, जलचारी जीव भी अग्निकी ज्वालासे ऐसे विकल होगये, कि उन्हें किसी प्रकार भी शान्ति प्राप्त न होसकी ॥ उसही समय सम्पूर्ण दिशा तथा आकाशसे गरुड और सर्पके समान वेगगामी असंख्य बाणोंकी वर्षा होने लगी ॥ शत्रुसेनाके शूरवीर योद्धा द्रोणपुत्र अश्वत्थामाके वज्रसमान तीक्ष्ण बाणोंसे पीडित तथा प्राण रहित होके इस प्रकार पृथ्वीमें गिरने लगे, जैसे अग्निके वेगसे वनके वृक्ष भस्म होके गिर पडते हैं ॥ (२५—२७)

बडे बडे मतवारे बहुतेरे हाथी अग्नितेजसे विकल होके पर्वत टूटनेकी भांति भयङ्कर शब्द करते हुए मरके पृथ्वीमें गिरने लगे ॥ कितनेही हाथी जैसे बनमें दावाग्नि लगनेसे पहिले चारों ओर भयभीत होके भ्रमण करते थे, वैसे ही इस समय आग्नेयास्त्रकी अग्निसे भयभीत होकर युद्धभूमिमें इधर उधर चारों ओर वेगपूर्वक भयभीत होके भागने लगे ॥ जैसे वनके बीच दावाग्नि प्रकट होनेसे वृक्षोंकी डाल शाखा तथा चोटी भस्म होनेसे ठूठे वृक्ष दीख पडते हैं, वैसे ही घोडोंसे युक्त ध्वजा पताकासे हीन होकर रथोंके समूह भी ठूठे वृक्षकी भांति दिखाई देने लगे ॥ (२८–३१)

महाराज ! इसी प्रकार उस आग्ने-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्ट्वा तु पाण्डवीं सेनां दह्यमानां महाहवे ॥ ३२ ॥
प्रहृष्टास्तावका राजन्निंसहनादान्विनेदिरे ।
ततस्तूर्यसहस्राणि नानालिङ्गानि भारत ॥ ३३ ॥
तूर्णमाजघ्निरे हृष्टास्तावका जितकाशिनः ।
कृत्स्ना ह्यक्षौहिणी राजन्सव्यसाची च पाण्डवः॥३४॥
तमसा संवृते लोके नाऽदृश्यन्त महाहवे ।
नैव नस्तादृशं राजन्दृष्टपूर्वं न च श्रुतम् ॥३५ ॥
यादृशं द्रोणपुत्रेण सृष्टमस्त्रममर्षिणा ।
अर्जुनस्तु महाराज ब्राह्ममस्त्रमुदैरयत ॥ ३६ ॥
सर्वास्त्रप्रतिघातार्थं विहितं पद्मयोनिना ।
ततो मुहूर्तादिव तत्तमो व्युपशशाम ह ॥ ३७ ॥
प्रववौ चाऽनिलः शीतो दिशश्च विमला बभुः ।
तत्राऽद्भुतमपश्याम कृत्स्नामक्षौहिणीं हताम् ॥३८ ॥
अनभिज्ञेयरूपां च प्रदग्धामस्त्रतेजसा ।

यास्त्रकी अग्नि सम्पूर्ण प्राणियोंको भस्म करनेवाली प्रलयाग्निकी भांति भयभीत हुए पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंको भस्म करने लगी। कौरव लोग पाण्डवोंकी सेनाको भस्म होती देख हर्षित और आनन्दित होके सिंहनाद करने लगे; और अपनी विजयका लक्षण देख प्रसन्न चित्तसे सहस्रों ढोल मेरी शंख और नगाडे आदि युद्धके जुझाऊ बाजे बजाने लगे ॥ (३१--३४)

महाराज ! जब सम्पूर्ण रणभूमि अन्धकार से परिपूरित होगई, उस समय पूरी एक अक्षौहिणी सेनाके सहित अर्जुन तनिक भी दीख न पडे। जब क्रुद्ध होकर द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने आग्नेयास्त्र प्रकट किया, उस समय जैसी घटना हुई हमलोगोंने इसके पहिले, ऐसा कभी न देखा और न सुना ही था॥ (३४–३६)

अनन्तर अर्जुनने समस्त अस्त्रोंके निवारण करनेमें समर्थ प्रजापति ब्रह्माके दिये हुए ब्रह्मास्त्रको प्रकट किया उससे क्षण भरके बीच अन्धकार दूर होगया शीतल वायु बहने लगा और सम्पूर्ण दिशा निर्मल होगई। परन्तु उस स्थलमें मैंने एक अद्भुत और आश्चर्य कार्यको अवलोकन किया कि, वह एक अक्षौहिणी सेना जो अर्जुनके सहित कौरवोंसे युद्ध करनेके वास्ते रणभूमिमें उपस्थित हुई थी; वह अश्वत्थामाके आग्नेयास्त्रके तेजसे इस प्रकार भस्म होगई, कि कोई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो वीरौ महेष्वासौ विमुक्तौ केशवार्जुनौ ॥ ३९ ॥
सहितौ प्रत्यदृश्येतां नभसीव तमोनुदौ ।
ततो गाण्डीवधन्वा च केशवश्चाऽक्षतावुभौ ॥ ४० ॥
सपताकध्वजहयः सानुकर्षवरायुधः ।
प्रबभौ स रथो युक्तस्तावकानां भयङ्करः ॥ ४१ ॥
ततः किलकिलाशब्दः शङ्खभेरीस्वनैः सह ।
पाण्डवानां प्रहृष्टानां क्षणेन समजायत ॥ ४२ ॥
हताविति तयोरासीत्सेनयोरुभयोर्मतिः ।
तरसाऽभ्यागतौ दृष्ट्वा सहितौ केशवार्जुनौ ॥ ४३ ॥
तावक्षतौ प्रमुदितौ दध्मतुर्वारिजोत्तमौ ।
दृष्ट्वा प्रमुदितान्पार्थांस्त्वदीया व्यथिता भृशम्॥ ४४ ॥
विमुक्तौ च महात्मानौ दृष्ट्वा द्रौणिः सुदुःखितः ।
मुहूर्तं चिन्तयामास किं त्वेतदिति मारिष ॥ ४५ ॥
चिन्तयित्वा तु राजेन्द्र ध्यानशोकपरायणः ।

पुरुष उस एक अक्षौहिणी सेनाके योद्धाओंको भस्म होते हुए देख भी न सके। (३६—३९)

तिसके अनन्तर एक रथ पर स्थित महाधनुर्द्धारी वीर कृष्ण-अर्जुन अन्धकार से मुक्त होकर वहां इस प्रकार शोभित हुए, जैसे बादलोंके समूहसे मुक्त होके आकाशमें सूर्य और चन्द्रमा दीख पडते हैं, और ध्वजा, पताका, घोडे तथा उत्तम अस्त्र शस्त्रोंसे परिपूरित कौरवोंकी सेनाको भयभीत करनेवाला, कपि ध्वजासे युक्त अर्जुनका दिव्य रथ भी रणभूमिके बीच प्रकाशित होने लगा। कृष्ण अर्जुनको घाव रहित शरीरसे मुक्त हुए देख, पाण्डवोंकी सेनाके पुरुष प्रसन्न और हर्षित हो के शंख भेरी आदि बाजोंको बजाते हुए सिंहनाद करने लगे॥ (३९-४२)

महाराज! पहिले कौरव और पाण्डव सेनाके शूरवीरोंने कृष्ण अर्जुनको अश्वत्थामाके चलाये हुए आग्नेयास्त्रकी अग्नि में छिपे देखकर यह समझा था, कि "ये दोनों ही आज जीते जी न बचेंगे," परन्तु इस समय उन दोनों ही महात्मा पुरुषोंको घावरहित शरीरसे मुक्त होते और पाण्डवोंकी सेनाके योद्धाओंको हर्ष पूर्वक सिंहनाद करते तथा शंख बजाते देखकर तुम्हारी सेनाके योद्धालोग अत्यन्तही दुःखित हुए। विशेष करके द्रोणपुत्र अश्वत्थामा कृष्ण अर्जुनको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःश्वसन्दीर्घमुष्णं च विमनाश्चाऽभवत्ततः ॥ ४६ ॥
ततो द्रौणिर्धनुस्त्यक्त्वा रथात्प्रस्कन्द्य वेगितः ।
धिग्धिक्सर्वमिदं मिथ्येत्युक्त्वा सम्प्राद्रवद्रणात्॥४७॥
ततः स्निग्धाम्बुदाभासं वेदावासमकल्मषम् ।
वेदव्यासं सरस्वत्यावासं व्यासं ददर्श ह ॥ ४८ ॥
तं द्रौणिरग्रतो दृष्ट्वा स्थितं कुरुकुलोद्वहम् ।
सन्नकण्ठोऽब्रवीद्वाक्यमभिवाद्य सुदीनवत् ॥ ४९ ॥
भो भो माया यदृच्छा वा न विद्मः किमिदं भवेत् ।
अस्त्रं त्विदं कथं मिथ्या मम कश्च व्यतिक्रमः॥ ५० ॥
अधरोत्तरमेतद्वा लोकानां वा पराभवः ।
यदिमौ जीवतः कृष्णौ कालो हि दुरतिक्रमः॥ ५१ ॥
नाऽसुरा न च गन्धर्वा न पिशाचा न राक्षसाः ।
न सर्पा यक्षपतगा न मनुष्याः कथञ्चन ॥ ५२ ॥
उत्सहन्तेऽन्यथा कर्तुमेतदस्त्रं मयेरितम् ।

आग्नेयास्त्रसे मुक्त होते देखकर दुःखित चित्तसे मुहूर्त भर तक "यह क्या हुआ!" इसी भांति चिन्ता करने लगे॥ (४३-४६)

तिसके अनन्तर वह शोक और चिन्तासे युक्त होके लम्बी तथा गर्म सांस छोडते हुए क्रमसे अत्यन्तही दुःखित हुए और धनुष फेंककर वेगपूर्वक रथसे कूदके "इन अस्त्रोंको धिक्कार है, ये सब मिथ्या हैं!" ऐसा वचन कहके रणभूमिसे प्रस्थान किया। महाराज! उस ही समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने अपने सम्मुखमें स्थित सजल मेघके समान कांतिमान, चारों वेदोंके विभाजक, उपवेद वेदांग, स्मृति आदिओंके निवासस्थान पापरहित श्रीवेदव्यास ऋषिका दर्शन किया॥ (४७-४८)

उन्होंने कुरुकुलके प्रवर्तक श्रीवेदव्यास ऋषिको अपने अगाडी स्थित देख, रुद्धकण्ठसे अत्यन्त दीनताके सहित प्रणाम करके यह प्रश्न किया, हे भगवन्! यह क्या दैवी माया है? वा और कोई घटना है? मैं इसे कुछ भी मालूम न कर सका? इस अस्त्रके निष्फल होनेका क्या कारण है? क्या मेरी बुद्धि विपरीत हुई थी? यह क्या सम्पूर्ण लोकोंके नाश होनेका समय उपस्थित हुआ है? क्यों कि वे दोनों कृष्ण-अर्जुन जीते ही मेरे अस्त्रसे मुक्त हुए हैं। जो हो, कालकी गति कुछ जानी नहीं जाती॥ नहीं तो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदिदं केवलं हत्वा शान्तमक्षौहिणीं ज्वलत् ॥ ५३ ॥
सर्वघाति मया मुक्तमस्त्रं परमदारुणम् ।
केनेमौ मर्त्यधर्माणौ नाऽवधीत्केशवार्जुनौ ॥ ५४ ॥
एतत्प्रब्रूहि भगवन्मया पृष्टो यथातथम् ।
श्रोतुमिच्छामि तत्त्वेन सर्वमेतन्महामुने ॥ ५५ ॥
व्यास उवाच— महान्तमेवमर्थं मां यं त्वं पृच्छसि विस्मयात् ।
तं प्रवक्ष्यामि ते सर्वं समाधाय मनः शृणु ॥ ५६ ॥
योऽसौ नारायणो नाम पूर्वेषामपि पूर्वजः ।
अजायत च कार्यार्थं पुत्रो धर्मस्य विश्वकृत् ॥ ५७ ॥
स तपस्तीव्रमातस्थे शिशिरं गिरिमास्थितः ।
उर्ध्वबाहुर्महातेजा ज्वलनादित्यसन्निभः ॥ ५८ ॥
षष्टिं वर्षसहस्राणि तावन्त्येव शतानि च ।
अशोषयत्तदाऽऽत्मानं वायुभक्षोऽम्बुजेक्षणः ॥ ५९ ॥

मेरे चलाये हुए आग्नेयास्त्रको असुर, राक्षस, गन्धर्व, पिशाच, सर्प, मनुष्य आदि कोई प्राणी भी निवारण तथा निष्फल करने में उत्साही नहीं हो सकते ॥ (४९–५३)

ऐसी अवस्थामें सम्पूर्ण प्राणियोंको संहार करनेवाली जलती हुई प्रलयकालकी अग्निके समान तेजस्वी मेरा चलाया हुआ महाभयङ्कर आग्नेयास्त्र केवल एक ही अक्षौहिणी सेना भस्म करके शान्त होगया। हे महाऋषि वेदव्यास ! मैं आपसे यह पूंछता हूं, कि कृष्ण-अर्जुन दोनोंही मर्त्यधर्मावलम्बी हैं; तब मेरे हाथसे छूटे हुए आग्नेयास्त्रने किस कारणसे उनका नाश नहीं किया ? मैं इस विषयके यथार्थ वृत्तान्तको सुननेकी इच्छा करता हूं ॥ (५३–५५)

श्रीवेदव्यास मुनि बोले, हे द्रोणपुत्र अश्वत्थामन् ! इस विषयमें जो तुम विस्मित होके मुझसे प्रश्न कर रहे हो; मैं वह सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम्हारे समीप वर्णन करता हूं, तुम चित्त लगाकर सुनो। जो प्रजापति आदि देवतोंके भी पूर्व पुरुष विश्वाधार नारायण हैं, उन्हों ने किसी प्रयोजनकी सिद्धिके निमित्त धर्मके पुत्र होकर अवतार लिया॥ कमल नेत्रवाले अग्नि और सूर्यके समान तेजस्वी उस पुरुषने मैनाक पर्वतपर गमन करके दोनों भुजा उठाकर अत्यन्त कठिन तपस्या की। उन्होंने छाछठ हजार वर्ष पर्यंत वायु भक्षण करके इसी प्रकार तपस्यासे अपने शरीरको सुखाकर फिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाऽपरं तपस्तप्त्वा द्विस्ततोऽन्यत्पुनर्महत् ।
द्यावापृथिव्योर्विवरं तेजसा समपूरयत ॥ ६० ॥
स तेन तपसा तात ब्रह्मभूतो यदाऽभवत् ।
ततो विश्वेश्वरं योनिं विश्वस्य जगतः पतिम् ॥ ६१ ॥
ददर्श भृशदुर्धर्षं सर्वदेवैरभिष्टुतम् ।
अणीयांसमणुभ्यश्च बृहद्भ्यश्च बृहत्तमम् ॥ ६२ ॥
रुद्रमीशानवृषभं हरं शम्भुं कपर्दिनम् ।
चेकितानं परां योनिं तिष्ठतो गच्छतश्च ह ॥ ६३ ॥
दुर्वारणं दुर्दृशं तिग्ममन्युं महात्मानं सर्वहरं प्रचेतसम् ।
दिव्यं चापमिषुधी चाऽऽददानं हिरण्यवर्माणमनन्तवीर्यम् ॥ ६४ ॥
पिनाकिनं वज्रिणं दीप्तशूलं परश्वधिनं गदिनं चाऽऽयतासिम् ।
शुभ्रं जटिलं मुसलिनं चन्द्रमौलिं व्याघ्राजिनं परिघिणं दण्डपाणिम् ॥ ६५ ॥
शुभाङ्गदं नागयज्ञोपवीतं विश्वैर्गणैः शोभितं भूतसङ्घैः ।
एकीभूतं तपसां सन्निधानं वयोतिगैः सुष्टुतमिष्टवाग्भिः ॥ ६६ ॥

उससे द्विगुण समयतक तपस्या करके अपने तेजसे पृथ्वी आकाशको परिपूरित किया ॥ (५६—६०)

जब वह तपस्याके प्रभावसे साक्षात् ब्रह्मरूप हुए; तब उन्होंने जगन्नियन्ता, विश्वके कारण, जगत् के पालक,अत्यन्त कठिनतासे बोध होने योग्य, सम्पूर्ण देवतोंसे वन्दित,बृहत् वस्तुओंसे भी बृहत् और सूक्ष्मसे सूक्ष्म जगत्सृष्टा विश्वेश्वरका दर्शन किया ॥ वह विश्वेश्वर, रुद्र, ईशान, वृषभ, हर, शम्भु, कपर्दी, चेतनस्वरूप और स्थावर जङ्गम आदि सम्पूर्ण भूतोंके परम कारण है ॥ ६१-६३

वह निवारण करनेके अयोग्य, नेत्रसे अगोचर, दुष्टोंके ऊपर क्रोध करनेवाले, महात्मा सर्वहर, साधुओंके विषयमें उदार चित्तवाले, दिव्य शरासन और तूणीरधारी, हिरण्यवर्मा,अत्यन्त पराक्रम तथा बलसे युक्त हैं ॥ वह पिनाक, वज्र, प्रकाशमान शूल,परश्वध,गदा और दीर्घ खड्ग धारण करनेवाले हैं; उनके ललाटपर चन्द्रमा और सिर पर जटा शोभित हैं । उनका वर्ण श्वेत है, वह व्याघ्राम्बर पहरनेवाले महादेव परिघ और दण्डधारी हैं ॥ उनके गलेमें सर्पोंका यज्ञोपवीत शोभित है और भुजा मनोहर अङ्गदसे भूषित हैं । वह सम्पूर्ण प्राणी तथाभूतोंके स्वामी हैं । वह सदा एक रूप, तपस्याके निधिस्वरूप हैं, प्राचीन ऋषि लोग उनकी इष्ट वचन तथा वेदवाक्यों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलं दिशं खं क्षितिं चन्द्रसूर्यौ तथा वाय्वग्नी प्रमिमाणं जगच्च ।
नाऽलं द्रष्टुं यं जना भिन्नवृत्ता ब्रह्मद्विषघ्नममृतस्य योनिम् ॥ ६७ ॥
यं पश्यन्ति ब्राह्मणाः साधुवृत्ताः क्षीणे पापे मनसा वीतशोकाः ।
तं निष्पतन्तं तपसा धर्ममीड्यं तद्भक्त्या वै विश्वरूपं ददर्श ।
दृष्ट्वा चैनं वाङ्मनोबुद्धिदेहैः संहृष्टात्मा मुमुदे वासुदेवः ॥ ६८ ॥
अक्षमालापरिक्षिप्तं ज्योतिषां परमं निधिम् ।
ततो नारायणो दृष्ट्वा ववन्दे विश्वसम्भवम् ॥ ६९ ॥
वरदं पृथुचार्वङ्ग्या पार्वत्या सहितं प्रभुम् ।
क्रीडमानं महात्मानं भूतसङ्घगणैर्वृतम् ॥ ७० ॥
अजमीशानमव्यक्तं कारणात्मानमच्युतम् ।
अभिवाद्याऽथ रुद्राय सद्योऽन्धकनिपातिने ।
पद्माक्षस्तं विरूपाक्षमभितुष्टाव भक्तिमान् ॥ ७१ ॥
श्रीनारायण उवाच-त्वत्सम्भूता भूतकृतो वरेण्य गोप्तारोऽस्य भुवनस्याऽऽदिदेव ।

से स्तुति करते रहते हैं ॥ (६४—६६)

जो पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, अग्नि, चन्द्र, सूर्य तथा सम्पूर्ण जगत्के परम कारण हैं, दुष्ट लोग ब्रह्मद्वेषियोंके नाश करनेवाले उस अज अविनाशी परम पुरुषके दर्शन करनेमें समर्थ नहीं होते॥ परन्तु शोकादि रहित साधु शीलवाले पापरहित ब्राह्मण लोग ज्ञान नेत्रसे उनका दर्शन कर सकते हैं। वासुदेव नारायण ऋषि उनके अत्यन्त भक्त हैं; इससे वह अपने उस तपस्याके प्रभावसे दिव्य तेजसे प्रकाशित साक्षात् धर्मरूप जगत् वन्दनीय विश्वव्यापक महादेवके दर्शन करनेमें समर्थ हुए ॥ (६७–६८)

हे अश्वत्थामन् ! कमलनेत्रवाले नारायण ऋषिने तेज स्वरूप, रुद्राक्षकी माला धारण करनेवाले, जगत्स्रष्टा वृषभवाहन अत्यन्त मनोहर अङ्गवाली पार्वतीके सङ्ग सदा क्रीडा करनेवाले, भूत प्रेतोंसे घिरे हुए अज अव्यक्त सम्पूर्ण चराचर प्राणियोंके कारणात्मा महात्मा रुद्र ईशानका दर्शन करके मन, बुद्धि और वचनसे आनन्दित होकर उनकी वन्दना की ॥ अनन्तर नारायण ऋषि अन्धकासुरके नाश करनेवाले विरूपाक्ष रुद्रदेवको नमस्कार करके भक्तिभावसे युक्त होकर इस प्रकार स्तुति करने लगे। (६९–७२)

हे वरदान करनेवाले ! हे देवोंके देव ! जो इस जगत्के रक्षक, सम्पूर्ण प्राणियोंके सृष्टिकर्त्ता, देवताओंके पूर्व प्रजापति हैं, वह तुमसे ही प्रकट होके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आविश्येमां धरणीं येऽभ्यरक्षन्पुरा पुराणीं तव देवसृष्टिम्॥ ७२ ॥
सुरासुरान्नागरक्षःपिशाचान्नरान्सुपर्णानथ गन्धर्वयक्षान् ।
पृथग्विधान्भूतसङ्घांश्च विश्वांस्त्वत्सम्भूतान्विद्म सर्वांस्तथैव ।
ऐन्द्रं याम्यं वारुणं वैत्तपाल्यं पैत्रं त्वाष्ट्रं कर्म सौम्यं च तुभ्यम् ॥ ७३ ॥
रूपं ज्योतिः शब्द आकाशवायुः स्पर्शः स्वाद्यं सलिलं गन्ध उर्वी ।
कालो ब्रह्मा ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च त्वत्सम्भूतं स्थास्नु चरिष्णु चेदम् ॥७४॥
अद्भ्यः स्तोका यान्ति यथा पृथक्त्वं ताभिश्चैक्यं संक्षये यान्ति भूयः ।
एवं विद्वान्प्रभवं चाऽप्ययं च मत्त्वा भूतानां तव सायुज्यमेति ॥ ७५ ॥
दिव्यावृतौ मानसौ द्वौ सुपर्णौ वाचा शाखाः पिप्पलाः सप्त गोपाः ।
दशाऽप्यन्ये ये पुरं धारयन्ति त्वया सृष्टास्त्वं हि तेभ्यः परो हि ॥७६॥
भूतं भव्यं भविता चाऽप्यधृष्यं त्वत्सम्भूता भुवनानीह विश्वा ।
भक्तं च मां भजमानं भजस्व मा रीरिषो मामहिताहितेन ॥ ७७ ॥

पृथ्वी प्रकृतिके बीच प्रवेश करके तुम्हारी बनाई हुई पुरातनी सृष्टिकी रचना करते हैं । देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प और पक्षी आदि सम्पूर्ण प्राणी तुम्हारेही प्रभावसे उत्पन्न होते हैं,यह मुझे विदित है । इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर और चन्द्रमा आदि दिक्पाल तथा त्वष्टा आदि प्रजापति तुम्हारे ही प्रभावसे अपने अधिकारके कार्योंका निर्वाह करते हैं । शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, काल, ब्रह्मा, वेद, ब्राह्मण और सब स्थावर जंगम ये सब तुमसे ही उत्पन्न हुए हैं॥(७२-७४)

जैसे पानीके बबूले पानीसे ही उत्पन्न होके फिर जलही में लीन होजाते हैं, वैसेही वह विश्व संसार प्रलयकालमें नष्ट होकर फिर तुम्हारे ही शरीरमें लीन होजाता है । तत्त्वज्ञानी पण्डित लोग तुम्हें प्राणियोंकी उत्पत्ति और उनके लयके कारण जानकर ही तुम्हारी कृपासे सायुज्य मुक्ति लाभ करते हैं॥ हे देवोंके देव ! तुम्हीं मानस वृक्ष पर चढे हुए जीव और ईश्वररूपी दो पक्षी और वेदमें कहेहुए अनेक शाखासे युक्त सप्त-लोग रूप फलके भोक्ता और द्रष्टा हो! सम्पूर्ण शरीरको प्रतिपालन करनेवाली जो दश इन्द्रियां हैं; तुम उन्हें उत्पन्न करके स्वयं पृथक् रूपसे निवास करते हो ॥ (७५—७६)

तुम भूत भविष्य और वर्त्तमान रूपी काल हो । यह संसार तुमसेही उत्पन्न हुआ है । मैं तुम्हारा भक्त हूं, तुम मेरे ऊपर कृपा करो । मैं तुम्हारा कैसा भक्त हूं, वह तुम्हें विदित है; इससे मुझे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मानं त्वामात्मनोऽनन्यबोधं विद्वानेवं गच्छति ब्रह्म शुक्रम्।
अस्तौषं त्वां तव सम्मानमिच्छन्विचिन्वन्वै सदृशं देववर्य।
सुदुर्लभान्देहि वरान्ममेष्टानभिष्टुतः प्रविकार्षीश्च मायाम् ॥ ७८ ॥

व्यास उवाच— तस्मै वरानचिन्त्यात्मा नीलकण्ठः पिनाकधृक्।
अर्हते देवमुख्याय प्रायच्छदृषिसंस्तुतः ॥ ७९ ॥

श्रीभगवानुवाच— मत्प्रसादान्मनुष्येषु देवगन्धर्वयोनिषु।
अप्रमेयबलात्मा त्वं नारायण भविष्यसि ॥ ८० ॥
न च त्वां प्रसहिष्यन्ति देवासुरमहोरगाः।
न पिशाचा न गन्धर्वा न यक्षा न च राक्षसाः ॥ ८१ ॥
न सुपर्णास्तथा नागा न च विश्वे वियोनिजाः।
न कश्चित्त्वां च देवोपि समरेषु विजेष्यति ॥ ८२ ॥
न शस्त्रेण न वज्रेण नाग्निना न च वायुना।
न चार्द्रेण न शुष्केण त्रसेन स्थावरेण च ॥ ८३ ॥
कश्चित्तव रुजां कर्ता मत्प्रसादात्कथञ्चन।
अपि वै समरं गत्वा भविष्यसि ममाधिकः ॥ ८४ ॥

निराश न कीजिये। चित्तमें कामादि शत्रुओंके प्रवेशसे मेरा नाश न होना चाहिये॥ हे सर्वेश्वर! तत्त्वज्ञानी पुरुष तुम्हें अपनी आत्मासे अभिन्न जान कर ही उस पवित्र ब्रह्मको प्राप्त होते हैं। मैं तुम्हें आत्मस्वरूप जानकर भी तुम्हारे संमानकी इच्छासे तुम्हारी स्तुति कर रहा हूं, तुम मेरी स्तुतिसे प्रसन्न हो मेरे अभिलषित दुर्लभ वर प्रदान करो। आप मेरे प्रतिकूल न होइये ॥ (७७–७८)

श्रीव्यास मुनि बोले, पिनाकधारी नीलकण्ठ महादेवने उस ऋषिकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर उस माननीय महर्षिको अभिलषित वर प्रदान किया, रुद्र भगवान् बोले, हे नारायण ऋषि! तुम मेरे प्रसादसे देव, गन्धर्व, सर्प और मनुष्य लोकके बीच अत्यन्त पराक्रमशाली होंगे ॥ (७९–८०)

देवता, असुर, सर्प, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस पक्षी तथा सम्पूर्ण अयोनिसे उत्पन्न हुए प्राणी भी तुम्हारे युद्धको सहन करनेमें समर्थ न होंगे। अधिक क्या कहूं, देवताओंके बीच भी कोई तुम्हें पराजित नहीं कर सकेगा॥ किसी प्रकारके अस्त्र, वज्र, अग्नि, वायु, जल आदि द्रव पदार्थ तथा सूखे पत्थर आदि स्थावर वस्तुओंसे कोई पुरुष भी मेरे प्रसादसे तुम्हें पीडित करनेमें समर्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवमेते वरा लब्धाः पुरस्ताद्विद्धि शौरिणा।
स एष देवश्चरति मायया मोहयञ्जगत् ॥ ८५ ॥
तस्यैव तपसा जातं नरं नाम महामुनिम्।
तुल्यमेतेन देवेन तं जानीह्यर्जुनं सदा ॥ ८६ ॥
तावेतौ पूर्वदेवानां परमोपचितावृषी।
लोकयात्राविधानार्थं सञ्जायेते युगे युगे ॥ ८७ ॥
तथैव कर्मणा कृत्स्नं महतस्तपसोऽपि च।
तेजो मन्युं च बिभ्रंस्त्वं जातो रौद्रो महामते ॥ ८८ ॥
स भवान्देववत्प्राज्ञो ज्ञात्वा भवमयं जगत्।
अवाकर्षस्त्वमात्मानं नियमैस्तत्प्रियेप्सया ॥ ८९ ॥
शुभ्रमत्र हविः कृत्वा महापुरुषविग्रहम्।
ईजिवांस्त्वं जपैर्होमैरुपहारैश्च मानद ॥ ९० ॥
स तथा पूज्यमानस्ते पूर्वदेहेऽप्यतूतुषत्।

न होगा। ऐसा क्या, युद्धभूमिमें तुम मुझसे भी अधिक पराक्रम प्रकाशित करोगे ॥ (८१-८४)

हे अश्वत्थामन्! पहिले नारायण ऋषिने इसी प्रकार महादेवके निकटसे वर प्राप्त किया था, इस समय वही नारायणऋषि कृष्णरूपसे अवतार लेके अपनी मायासे जगत्को मोहित करते हुए पृथ्वी पर भ्रमण कर रहे हैं; और नारायण ऋषिके ही तपस्यासे प्रकट हुए उन्हींके समान प्रभावसे युक्त जो नर ऋषि नामक महात्मा हैं, वही अर्जुनरूपसे उत्पन्न हुए हैं ॥ वे दोनों ही देवताओंके पुरातन परम ऋषि कहके सर्वत्र प्रशंसित हुए हैं। लोकयात्रा विधानके निमित्त वे दोनों महात्मा प्रतियुगमें अवतार लेते हैं॥ वैसे ही तुम भी सम्पूर्ण कर्मरूप अपने बृहत् तपस्याके प्रभावसे तेज और क्रोध धारण करके रुद्र अंशसे उत्पन्न हुए हो ॥ (८५-८८)

पहिले तुम महाबुद्धिमान् एक मुनि थे, इस जगत्को शिवमय जानकर महादेवके प्रीतिकी इच्छासे तपस्यामें रत होकर तुमने अपने शरीरको सुखा दिया था ॥ हे मानद! तुमने जप, होम और उपवास आदि व्रतसे अपने शरीरको पापरहित करके देवोंके देव महादेवकी पूजा की थी। इसी प्रकार देवोंके देव महादेव तुम्हारे पहिलेसे उत्पन्न हुए अनेक शरीरोंसे पूजित होकर तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हुए थे। हे विद्वन्! इस ही कारण भगवान् रुद्रने तुम्हारी अभि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्कलांश्च वरान्प्रादात्तव विद्वन्हृदि स्थितान्॥ ९१ ॥
जन्म कर्म तपोयोगास्तयोस्तव च पुष्कलाः।
ताभ्यां लिङ्गेऽर्चितो देवस्त्वयाऽर्चायां युगे युगे॥९२ ॥
सर्वरूपं भवं ज्ञात्वा लिङ्गे योऽर्चयति प्रभुम्।
आत्मयोगाश्च तस्मिन्वै शास्त्रयोगाश्च शाश्वताः॥ ९३॥
एवं देवा यजन्तो हि सिद्धाश्च परमर्षयः।
प्रार्थयन्ते परं लोके स्थाणुमेकं स सर्वकृत् ॥ ९४ ॥
स एष रुद्रभक्तश्च केशवो रुद्रसम्भवः।
कृष्ण एव हि यष्टव्यो यज्ञैश्चैव सनातनः ॥ ९५ ॥
सर्वभूतभवं ज्ञात्वा लिङ्गमर्चति यः प्रभोः।
तस्मिन्नभ्यधिकां प्रीतिं करोति वृषभध्वजः ॥ ९६ ॥
सञ्जय उवाच— तस्य तद्वचनं श्रुत्वा द्रोणपुत्रो महारथः।
नमश्चकार रुद्राय बहु मेने च केशवम् ॥ ९७ ॥
हृष्टरोमा च वश्यात्मा सोऽभिवाद्य महर्षये।

लाषाके अनुसार तुम्हें उत्तम वर प्रदान किया था ॥ (८९-९१)

इससे नर नारायण ऋषि और तुम्हारा अर्थात् तुम तीनों ही महात्माओंके जन्म कर्म श्रेष्ठ हैं और तुम तीनोंहीमें तपस्याका प्रभाव है, जैसे उन दोनों महात्माओंने प्रतियुगोंमें महादेवके लिङ्गकी पूजा करी है। वैसे ही तुमने भी प्रतिमा बनाकर महादेवकी पूजा की है॥ विशेष करके रुद्र भक्त कृष्णने रुद्रनिष्ठामें रत होकर निग्रहानुग्रहमें समर्थ महादेवको सम्पूर्ण विश्वकी उत्पत्ति और लयके कारण जानकर रुद्रलिङ्गकी पूजा की है; इसही कारण कृष्णमें सनातन आत्मयोग और शास्त्रयोग प्रतिष्ठित है। इसी भांति देवता, सिद्ध और परम ऋषि लोग भी महादेवकी पूजा करके परम पद पानेकी इच्छा किया करते हैं॥ परन्तु सबके स्वामी कृष्ण भी यज्ञादिकोंसे पूजित होने होग्य हैं; क्योंकि वह सर्व शक्तिमान् महादेवको सम्पूर्ण चराचर प्राणियोंकी आत्मा जानकर शिवलिङ्गकी पूजा किया करते हैं, और वृषभध्वज महादेवकी भी कृष्णके ऊपर आन्तरिक प्रीति है॥ (९२-९६)

सञ्जय बोले, महाराज! महारथी द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने वेदव्यासके वचनको सुनकर भगवान् रुद्रको नमस्कार किया और श्रीकृष्णकोभी अत्यन्त ही पूजनीय समझा॥ अनन्तर पराक्रमी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरूथिनीमभिप्रेक्ष्य ह्यवहारमकारयत ॥ २८ ॥
ततः प्रत्यवहारोऽभूत्पाण्डवानां विशाम्पते ।
कौरवाणां च दीनानां द्रोणे युधि निपातिते ॥ २९ ॥
युद्धं कृत्वा दिनान्पञ्च द्रोणो हत्वा वरूथिनीम् ।
ब्रह्मलोकं गतो राजन्ब्राह्मणो वेदपारगः ॥ १०० ॥ [९४८४]

इति श्रीमहाभारते०द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वणि व्यासवाक्ये शततम्रद्रीये एकाधिकद्विशततमोऽध्यायः२०१

धृतराष्ट्र उवाच—तस्मिन्नतिरथे द्रोणे निहते पार्षतेन वै ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वन्ततः परम् ॥ १ ॥
सञ्जय उवाच— तस्मिन्नतिरथे द्रोणे निहते पार्षतेन वै ।
कौरवेषु च भग्नेषु कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ॥ २ ॥
दृष्ट्वा सुमहदाश्चर्यमात्मनो विजयावहम् ।
यदृच्छयाऽऽगतं व्यासं पप्रच्छ भरतर्षभ ॥ ३ ॥
अर्जुन उवाच— संग्रामे न्यहनं शत्रून्शरौघैर्विमलैरहम् ।
अग्रतो लक्षये यान्तं पुरुषं पावकप्रभम् ॥ ४ ॥

अश्वत्थामाने अपने चित्तको वशमें किया और लोमाञ्चित शरीरसे युक्त होकर अपनी सेनाके बीच जाकर सम्पूर्ण योद्धाओंको युद्ध करनेसे निवृत्त किया ॥ कौरवोंकी सेनाको युद्धसे निवृत्त होती देख पाण्डवोंने भी अपनी सेनाके योद्धाओंको युद्धसे निवृत्त किया । हे प्रजानाथ ! युद्धभूमिके बीच द्रोणाचार्यके मारे जानेपर इसी भांति दीनभावसे युक्त कौरव और उत्साहयुक्त पाण्डवोंने उस दिन अपनी सेनाको युद्धसे निवृत्त किया ॥ वेदविद्या जाननेवाले ब्राह्मण द्रोणाचार्य पांच दिन युद्ध करके शत्रुओंकी सेनाके असंख्य योद्धाओंका संहार कर के अन्त में ब्रह्मलोक को गये ॥ (९७-१००) [९४८४]

द्रोणपर्वमें दोसौ एक अध्याय समाप्त ।

द्रोणपर्वमें दोसौ दोन अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! धृष्टद्युम्नसे अतिरथी द्रोणके मारेजानेपर पाण्डव और मेरी ओरके योद्धाओंने क्या किया? (१)

सञ्जय बोले, महाराज ! जब अतिरथी द्रोणाचार्य पृषत्पुत्र धृष्टद्युम्नके हाथसे मारे गये और कौरवोंकी सेना युद्धभूमिसे पराजित हुई, उस समय कुन्तीपुत्र अर्जुनने विस्मय उत्पन्न करनेवाली अपनी अद्भुत विजय देख, तथा इच्छानुसार व्यासदेवको अपने समीपमें आये हुए देखकर उनसे पूछा, हे महर्षि ! युद्धभूमिके बीच जब मैं अपने तेज बाणोंसे शत्रु-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वलन्तं शूलमुद्यम्य यां दिशं प्रतिपद्यते।
तस्यां दिशि विदीर्यन्ते शत्रवो मे महामुने ॥ ५ ॥
तेन भग्नानरीन्सर्वान्मद्भग्नान्मन्यते जनः।
तेन भग्नानि सैन्यानि पृष्ठतोऽनुव्रजाम्यहम् ॥ ६ ॥
भगवंस्तन्ममाऽऽचक्ष्व को वै स पुरुषोत्तमः।
शूलपाणिर्मया दृष्टस्तेजसा सूर्यसन्निभः ॥ ७ ॥
न पद्भ्यां स्पृशते भूमिं न च शूलं विमुञ्चति।
शूलाच्छूलसहस्राणि निष्पेतुस्तस्य तेजसा ॥ ८ ॥

व्यास उवाच- प्रजापतीनां प्रथमं तैजसं पुरुषं प्रभुम्।
भुवनं भूर्भुवं देवं सर्वलोकेश्वरं प्रभुम् ॥ ९ ॥
ईशानं वरदं पार्थ दृष्टवानसि शङ्करम्।
तं गच्छ शरणं देवं वरदं भुवनेश्वरम् ॥ १० ॥
महादेवं महात्मानमीशानं जटिलं विभुम्।

ओंको नाश करनेमें प्रवृत्त हुआ था; उस समय मैंने देखा कि मेरे अगाडी अग्निके समान तेजस्वी एक पुरुष प्रकाशमान त्रिशूल ग्रहण करके जिधर दौडने लगा, उस ही ओर शत्रुओंकी सेना छिन्न भिन्न होकर भागने लगी ॥ (२—५)

उस समय उस महातेजस्वी पुरुषके सम्मुखसे भागती हुई सेनाको सब कोई मेरे ही प्रभावसे भागती हुई समझने लगे। परन्तु मैंने केवल भागती हुई सेनाके योद्धाओंके पीछे पीछे गमन करके उसके ऊपर बाण चलाया था ॥ उस महा तेजस्वी पुरुषने न अपने पावोंसे पृथ्वीको स्पर्श किया और न अपना प्रकाशमान त्रिशूल ही चलाया था; उनके तेज प्रभावसे उस हाथमें स्थित शूलसे ही सहस्रों शूल निकलने लगे। हे भगवन्! सूर्यसमान तेजस्वी अलौकिक प्रभाव युक्त त्रिशूलधारी वह तेजस्वी पुरुषोत्तम कौन हैं? आप मेरे समीप वर्णन कीजिये ॥ (६—८)

श्रीवेदव्यास मुनि बोले, हे अर्जुन! जो प्रजापतिसे भी पहिले निग्रहानुग्रह करनेमें समर्थ, सम्पूर्ण प्राणी तथा सम्पूर्ण लोकोंके आदि कारण, सब लोकोंके सृष्टिकर्त्ता, सर्वव्यापी, तेजस्वरूप, शङ्कर, ईशान, वरदाता और तैजस पुरुष हैं, तुमने उन्हींका दर्शन किया है, इससे उस वृषभवाहन सम्पूर्ण जगत्के स्वामी देवोंके देव महादेव के शरणागत हो ॥ (९—१०)

वह महादेव, महात्मा, ईशान, जटि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्र्यक्षं महाभुजं रुद्रं शिखिनं चीरवाससम् ॥ ११ ॥
महादेवं हरं स्थाणुं वरदं भुवनेश्वरम् ।
जगत्प्रधानमजितं जगत्प्रीतिमधीश्वरम् ॥ १२ ॥
जगद्योनिं जगद्बीजं जयिनं जगतो गतिम् ।
विश्वात्मानं विश्वसृजं विश्वमूर्तिं यशस्विनम् ॥ १३ ॥
विश्वेश्वरं विश्वनरं कर्मणामीश्वरं प्रभुम् ।
शम्भुं स्वयम्भुं भूतेशं भूतभव्यभवोद्भवम् ॥ १४ ॥
योगं योगेश्वरं सर्वं सर्वलोकेश्वरेश्वरम् ।
सर्वश्रेष्ठं जगच्छ्रेष्ठं वरिष्ठं परमेष्ठिनम् ॥ १५ ॥
लोकत्रयविधातारमेकं लोकत्रयाश्रयम् ।
शुद्धात्मानं भवं भीमं शशाङ्ककृतशेखरम् ॥ १६ ॥
शाश्वतं भूधरं देवं सर्ववागीश्वरेश्वरम् ।
सुदुर्जयं जगन्नाथं जन्ममृत्युजरातिगम् ॥ १७ ॥
ज्ञानात्मानं ज्ञानगम्यं ज्ञानश्रेष्ठं सुदुर्विदम् ।
दातारं चैव भक्तानां प्रसादविहितान्वरान् ॥ १८ ॥
तस्य पारिषदा दिव्या रूपैर्नानाविधैर्विभोः ।

ल, विभु, त्रिनेत्र, महाभुज, रुद्र, शिखी, चीरवासा, महादेव, हर, स्थाणु, वरद, भुवनेश्वर, जगत्प्रधान, अजेय, जगत् को आनन्द देनेवाले और सम्पूर्ण प्राणियोंके ईश्वर हैं ॥ (११—१२)

वही इस सम्पूर्ण जगत्के उत्पन्न करनेवाले, मूलस्वरूप, सर्वजयी, जगत्की गतिस्वरूप, विश्वात्मा, विश्वस्रष्टा विश्वमूर्ति, यशस्वी, विश्वेश्वर, विश्वनर, सम्पूर्ण कर्मोंके नियोगकर्त्ता, प्रभु, शम्भू स्वयम्भू, समस्त भूतोंके स्वामी, भूत भविष्यत् और वर्तमान कालके अधिष्ठान, योगमूर्ति, योगेश्वर, सर्वमय और सर्वलोकोंके ईश्वरके भी नियन्ता है। वह सर्वश्रेष्ठ, जगत् श्रेष्ठ, वरिष्ठ, परमेष्ठी, तीनों लोकके विधाता और तीनों लोकके अद्वितीय आश्रय स्वरूप हैं ॥ १२-१६

वही शुद्धात्मा, भव, भीम, शिरमें चंद्र धारण करनेवाले, शाश्वत, भूमिको धारण करनेवाले, देव सब वाणीके अधिपतियोंका भी ईश्वर है। वह सुदुर्जय जगन्नाथ जन्म, मृत्यु और जरा अवस्थासे रहित है॥ वह ज्ञानात्मा, ज्ञानगम्य, ज्ञानप्रधान, और कठिनाईसे जानने योग्य है, वही प्रसन्न होके भक्तोंको अभिलषित वर प्रदान करते हैं ॥ (१६—१८)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वामना जटिला मुण्डा ह्रस्वग्रीवा महोदराः ॥ १९ ॥
महाकाया महोत्साहा महाकर्णास्तथाऽपरे ।
आननैर्विकृतैः पादैः पार्थ वेषैश्च वैकृतैः ॥ २० ॥
ईदृशैः स महादेवः पूज्यमानो महेश्वरः ।
स शिवस्तात तेजस्वी प्रसादाद्याति तेऽग्रतः ॥ २१ ॥
तस्मिन्घोरे सदा पार्थ संग्रामे लोमहर्षणे ।
द्रौणिकर्णकृपैर्गुप्तां महेष्वासैः प्रहारिभिः ॥ २२ ॥
कस्तां सेनां तदा पार्थ मनसाऽपि प्रधर्षयेत् ।
ऋते देवान्महेष्वासाद्बहुरूपान्महेश्वरात् ॥ २३ ॥
स्थातुमुत्सहते कश्चिन्न तस्मिन्नग्रतः स्थिते ।
नहि भूतं समं तेन त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ २४ ॥
गन्धेनापि हि संग्रामे तस्य क्रुद्धस्य शत्रवः ।
विसंज्ञा हतभूयिष्ठा वेपन्ति च पतन्ति च ॥ २५ ॥
तस्मै नमस्तु कुर्वन्तो देवास्तिष्ठन्ति वै दिवि ।

वामन, जटिल, मुण्ड, हयग्रीव, महोदर, महाकाय, महोत्साह और महाकर्ण आदि विकृतानन, विकृत चरण, विकृत वेष, अनेक रूपधारी दिव्य मूर्तिवाले उनके बहुतसे पारिषद हैं॥ वह महादेव अपने उन पारिषदोंसे सदा पूजित हुआ करते हैं। हे तात अर्जुन! वह तेजस्वी महादेवही प्रसन्नताके सहित रणभूमिमें तुम्हारे आगे आगे गमन करते हैं॥ (१९—२१)

धनुर्द्धर वीरोंमें अग्रगण्य अनेक रूपधारी देवोंके देव महादेवके अतिरिक्त इस महाघोर रोएंको खडा करनेवाले भयङ्कर रणभूमिके बीच भीष्म, द्रोण, कर्ण और कृपाचार्य आदि युद्धमें प्रशंसित महाधनुर्द्धर वीरोंसे रक्षित कौरवोंको क्या कोई मनसे भी पराजित करनेका उत्साह कर सकता है? परन्तु महादेवको सम्मुख स्थित देख कोई भी उनके विरुद्ध साहसी नहीं हो सकता; क्योंकि तीनों लोकके बीच कोई भी भगवान् रुद्रके समान पराक्रमी नहीं है॥ (२२—२४)

अधिक क्या कहूं, संग्रामभूमिमें यदि भगवान् शम्भु क्रुद्ध होकर स्थित होवें, तो शत्रुलोग उन्हें देखकर ही कांपते हुए चेतरहितके समान पृथ्वीमें गिर पडते और कितने ही चेतरहित के समान होजाते हैं। देवता, मर्त्य और स्वर्ग लोकवासी मनुष्य लोग सब कोई उसही महादेवको नमस्कार करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये चाऽन्ये मानवा लोके ये च स्वर्गजितो नराः ॥ २६ ॥
ये भक्ता वरदं देवं शिवं रुद्रमुमापतिम् ।
अनन्यभावेन सदा सर्वेशं समुपासते ॥ २७ ॥
इह लोके सुखं प्राप्य ते यान्ति परमां गतिम् ।
नमस्कुरुष्व कौन्तेय तस्मै शान्ताय वै सदा ॥ २८ ॥
रुद्राय शितिकण्ठाय कनिष्ठाय सुवर्चसे ।
कपर्दिने करालाय हर्यक्षवरदाय च ॥ २९ ॥
याम्यायाऽव्यक्तकेशाय सद्वृत्ते शङ्कराय च ।
काम्याय हरिनेत्राय स्थाणवे पुरुषाय च ॥ ३० ॥
हरिकेशाय मुण्डाय कृशायोत्तारणाय च ।
भास्कराय सुतीर्थाय देवदेवाय रंहसे ॥ ३१ ॥
बहुरूपाय सर्वाय प्रियाय प्रियवाससे ।
उष्णीषिणे सुवक्त्राय सहस्राक्षाय मीढुषे ॥ ३२ ॥
गिरिशाय प्रशान्ताय पतये चीरवाससे ।
हिरण्यबाहवे राजन्नुग्राय पतये दिशाम् ॥ ३३ ॥
पर्जन्यपतये चैव भूतानां पतये नमः ।
वृक्षाणां पतये चैव गवां च पतये नमः ॥ ३४ ॥
वृक्षैरावृतकायाय सेनान्ये मध्यमाय च ।

स्वर्ग लोकमें वास करते हैं ॥ अधिक क्या कहूं, जो लोग अत्यन्त ही भक्ति-पूर्वक वरदाता रुद्रदेव, उमापति शिवको प्रणाम करते हैं, वे इस लोकमें परम सुख पाके अन्त समय परम गति प्राप्त करते हैं। (२५—२८)

हे अर्जुन ! तुम उस शान्त, रुद्र, शितिकण्ठ, कनिष्ठ, महातेजस्वी, कपर्दी, कराल, हरिनेत्र, वरदाता, याम्य, अव्यक्त केश, सदाचार, शङ्कर, काम्यदेव, पिङ्गल नेत्र, स्थाणु, पुरुष, पिङ्गल केश, मुण्ड, कृश, उद्धारकर्त्ता, भास्कर, सुतीर्थ, वेगवान्, बहुरूप, सर्व, प्रिय, प्रियवासा, देवोंके देव महादेवको नमस्कार कर। उस उष्णीष धारी, सुवस्त्र, सहस्राक्ष, पूजनीय, गिरिश, प्रशान्त, पतिस्वरूप, चीरवासा, हिरण्यबाहु, उग्र, दिक्पति, पर्जन्यपति; भूतस्वामी को नमस्कार है। (२८–३४)

वृक्षपति, गोपति, जिसके विश्राम करनेका स्थान नाना भांतिके वृक्षोंसे शोभित है, उस सेनानायक, मध्यम,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवहस्ताय देवाय धन्विने भार्गवाय च ॥ ३५ ॥
बहुरूपाय विश्वस्य पतये मुञ्जवाससे ।
सहस्रशिरसे चैव सहस्रनयनाय च ॥ ३६ ॥
सहस्रबाहवे चैव सहस्रचरणाय च ।
शरणं गच्छ कौन्तेय वरदं भुवनेश्वरम् ॥ ३७ ॥
उमापतिं विरूपाक्षं दक्षयज्ञनिबर्हणम् ।
प्रजानां पतिमव्यग्रं भूतानां पतिमव्ययम् ॥ ३८ ॥
कपर्दिनं वृषावर्तं वृषनाभं वृषध्वजम् ।
वृषदर्पं वृषपतिं वृषशृङ्गं वृषर्षभम् ॥ ३९ ॥
वृषाङ्कं वृषभोदारं वृषभं वृषभेक्षणम् ।
वृषायुधं वृषशरं वृषभूतं वृषेश्वरम् ॥ ४० ॥
महोदरं महाकायं द्वीपिचर्मनिवासिनम् ।
लोकेशं वरदं मुण्डं ब्रह्मण्यं ब्राह्मणप्रियम् ॥ ४१ ॥
त्रिशूलपाणिं वरदं खड्गचर्मधरं प्रभुम् ।
पिनाकिनं खड्गधरं लोकानां पतिमीश्वरम् ॥ ४२ ॥
प्रपद्ये शरणं देवं शरण्यं चीरवाससम् ।
नमस्तस्मै सुरेशाय यस्य वैश्रवणः सखा ॥ ४३ ॥
सुवाससे नमस्तुभ्यं सुव्रताय सुधन्विने ।

सुवहस्त, देव, धन्वी, भार्गव, बहुरूप, विश्वपति, मुंजवासा, सहस्र सिर, सहस्रनेत्र, सहस्रबाहु, सहस्र चरण महादेवको नमस्कार है। हे अर्जुन! तुम उस ही दक्षयज्ञके नाश करनेवाले विरूपाक्ष, वरदाता, त्रिलोकेश्वर उमापतिके शरणागत हो। (३४–३८)

मैं भी उस प्रजापति, अव्यग्र, अव्यय, भूतपति, कपर्दी, वृषावर्त्त, वृषनाभ, वृषध्वज, वृषदर्प, वृषपति, वृषशृङ्ग, वृषश्रेष्ठ, वृषाङ्क, वृषभोदार, वृषभ, वृषभेक्षण, वृषायुध, वृषशर, वृषभूत, वृषेश्वर, महोदर, महाकाय, बाघाम्बर धारण करनेवाले, लोकेश्वर, वरदाता, मुण्ड, ब्रह्मण्यदेव, ब्राह्मण प्रिय, त्रिशूलपाणि, वरप्रद, तलवार ढाल ग्रहण करने वाले, निग्रहानुग्रहमें समर्थ, पिनाकी, खड्गधारी लोकोंके पति, चीरवासा, शरण्यदेवके शरणापन्न हुआ हूं। (३८–४२)

उस वैश्रवणसखा सुरेश्वरको नमस्कार है। सुवासा, सुधन्वी, सुव्रतको सर्वदा नमस्कार है। उस धनुर्द्धर, प्रियधन्वा,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुर्धराय देवाय प्रियधन्वाय धन्विने ॥ ४४ ॥
धन्वन्तराय धनुषे धन्वाचार्याय ते नमः ।
उग्रायुधाय देवाय नमः सुरवराय च ॥ ४५ ॥
नमोऽस्तु बहुरूपाय नमोऽस्तु बहुधन्विने ।
नमोऽस्तु स्थाणवे नित्यं नमस्तस्मै तपस्विने ॥ ४६ ॥
नमोऽस्तु त्रिपुरघ्नाय भगघ्नाय च वै नमः ।
वनस्पतीनां पतये नराणां पतये नमः ॥ ४७ ॥
मातॄणां पतये चैव गणानां पतये नमः ।
गवां च पतये नित्यं यज्ञानां पतये नमः ॥ ४८ ॥
अपां च पतये नित्यं देवानां पतये नमः ।
पूष्णो दन्तविनाशाय त्र्यक्षाय वरदाय च ॥ ४९ ॥
नीलकण्ठाय पिङ्गाय स्वर्णकेशाय वै नमः ।
कर्माणि यानि दिव्यानि महादेवस्य धीमतः ॥ ५० ॥
तानि ते कीर्तयिष्यामि यथाप्रज्ञं यथाश्रुतम् ।
न सुरा नाऽसुरा लोके न गन्धर्वा न राक्षसाः ॥ ५१॥
सुखमेधन्ति कुपिते तस्मिन्नपि गुहागताः ।
दक्षस्य यजमानस्य विधिवत्सम्भृतं पुरा ॥ ५२ ॥

धन्वन्तर, धनुराचार्य और धनुमूर्ति देवको नमस्कार है। उस उग्रायुध देवतों में श्रेष्ठ महादेवको नमस्कार है॥ बहुमूर्ति बहुधन्वा को नमस्कार है। स्थाणु और नित्यतपस्वी देवको नमस्कार है॥ उस त्रिपुर और भगहन्ताको नमस्कार है। उस वनस्पति प्रभु और मनुष्यपतिको नमस्कार है॥ (४३-४७)

उस मातृपति और गणोंके पति देवको नमस्कार है। उस गोपति और यज्ञपतिको सर्वदा नमस्कार है॥ पूषाके दांतको तोडनेवाले त्रिनेत्र, वरदाता, नीलकण्ठ, पिंगलवर्ण, सुवर्ण केश शिवको नमस्कार है। जलपति और सुरपतिको सर्वदा नमस्कार है। हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! उस बुद्धिमान् महादेवके जिन सम्पूर्ण दिव्य कर्मोंको मैंने सुना है, उसे मैं अपनी बुद्धिके अनुसार तुम्हारे समीप वर्णन करता हूं; तुम सुनो। (४८ ५१)

उनके कोपित होनेसे देव, गन्धर्व, राक्षस आदि प्राणी यदि पर्वतकी कन्दरामें प्रवेश करें, तौ भी सुखी नहीं रह सकते। पहिले जब दक्षप्रजापति यज्ञकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विव्याध कुपितो यज्ञं निर्दयस्त्वभवत्तदा ।
धनुषा बाणमुत्सृज्य सघोषं विननाद च ॥ ५३ ॥
ते न शर्म कुतः शान्तिं लेभिरे स्म सुरास्तदा ।
विद्रुते सहसा यज्ञे कुपिते च महेश्वरे ॥ ५४ ॥
तेन ज्यातलघोषेण सर्वे लोकाः समाकुलाः ।
बभूवुर्वशगाः पार्थ निपेतुश्च सुरासुराः ॥ ५५ ॥
आपश्चुक्षुभिरे सर्वाश्चकम्पे च वसुन्धरा ।
पर्वताश्च व्यशीर्यन्त दिशो नागाश्च मोहिताः ॥५६॥
अन्धेन तमसा लोका न प्राकाशन्त संवृताः ।
जग्मिवान्सह सूर्येण सर्वेषां ज्योतिषां प्रभाः ॥ ५७ ॥
चुक्षुभुर्भयभीताश्च शान्तिं चक्रुस्तथैव च ।
ऋषयः सर्वभूतानामात्मनश्च सुखैषिणः ॥ ५८ ॥
पूषाणमभ्यद्रवत शङ्करः प्रहसन्निव ।

सम्पूर्ण सामग्रियोंको इकट्ठी करके वेद-विधिसे यज्ञ करने लगे, तब उसमें महादेव अपना भाग न देखकर उनके यज्ञको विध्वंस करनेमें प्रवृत्त हुए। उस समय जब भगवान् रुद्र अपने प्रचण्ड धनुषको ग्रहण करके भयङ्कर बाणोंको चलाने और महाभयानक शब्दके सहित सिंहनाद करने लगे, तब उस समय देवता लोग सम्पूर्ण स्थानोंमें भ्रमण करके भी किसी स्थानमें सुखपूर्वक निवास करनेमें समर्थ नहीं हुए। (५१-५४)

इसी भांति जब महादेव क्रुद्ध होकर सहसा यज्ञको नाश करनेमें प्रवृत्त हुए; तब उनके धनुषके टङ्कार और तलत्राण शब्दसे सम्पूर्ण लोक व्याकुल होगये। हे अर्जुन! अधिक क्या कहा जावे, उस समय देवता, असुर आदि सम्पूर्ण प्राणी उनके वशवर्ती होके इधर उधर चेतरहितके समान गिरने लगे। समुद्रका जल उथलने लगा और पृथ्वी कांपने लगी। इसके अतिरिक्त पर्वतोंके शिखर टूट टूट के गिरने लगे, चारों दिशाके दिग्गज मोहित हुए और सम्पूर्ण दिशा अन्धकारसे इस प्रकार छिप गयीं, कि उस समय कुछ भी नहीं दीख पडता था। (५४—५७)

तिसके अनन्तर उन्होंने सूर्य आदि देवताओंके प्रभाव तथा तेजको हीन कर दिया। उसे देख ऋषि लोग पहिले भयभीत होकर कोलाहल मचाने लगे, फिर अपने और सम्पूर्ण प्राणियोंके हितैषी होकर प्रशान्त हुए॥ उस ही समय पूषाने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरोडाशं भक्षयतो दशनान्वै व्यशातयत् ॥ ५९ ॥
ततो निश्चक्रमुर्देवा वेपमाना नताः स्म ते।
पुनश्च सन्दधे दीप्तान्देवानां निशिताञ्शरान् ॥ ६० ॥
सधूमान्सस्फुलिङ्गांश्च विद्युत्तोयदसन्निभान्।
तं दृष्ट्वा तु सुराः सर्वे प्रणिपत्य महेश्वरम् ॥ ६१ ॥
रुद्रस्य यज्ञभागं च विशिष्टं ते त्वकल्पयन्।
भयेन त्रिदशा राजञ्छरणं च प्रपेदिरे ॥ ६२ ॥
तेन चैवाऽतिकोपेन स यज्ञः सन्धितस्तदा।
भग्नाश्चापि सुरा आसन्भीताश्चाऽद्यापि तं प्रति॥६३॥
असुराणां पुराण्यासंस्त्रीणि वीर्यवतां दिवि।
आयसं राजतं चैव सौवर्णं परमं महत् ॥ ६४ ॥
सौवर्णं कमलाक्षस्य तारकाक्षस्य राजतम्।
तृतीयं तु पुरं तेषां विद्युन्मालिन आयसम् ॥ ६५ ॥
न शक्तस्तानि मघवान्भेत्तुं सर्वायुधैरपि।
अथ सर्वे सुरा रुद्रं जग्मुः शरणमर्दिताः ॥ ६६ ॥

यज्ञकी हविको भक्षण किया, इस ही कारण महादेव क्रुद्ध होकर उनका दांत तोड दिया ॥ उसे देखकर सम्पूर्ण देवता लोग भयभीत होकर कांपते हुए महादेवके सम्मुखसे भागने लगे। (५७-६०)

तब महादेव फिर अपने प्रचण्ड धनुषको ग्रहण करके जलते हुए अग्निके लुक तथा बिजलीके समान प्रकाशमान भयङ्कर तथा तीक्ष्ण बाणोंको देवताओंकी ओर चलाने लगे। तब सम्पूर्ण देवता लोग भगवान् रुद्रसे भयभीत होकर विशेष रूपसे उनके वास्ते यज्ञका भाग स्थापित करके उन्हींके शरणापन्न हुए। तब महादेवका क्रोध शान्त हुआ और उस समय दक्ष प्रजापतिकी नष्टप्राय यज्ञको पूर्ण करके देवताओंको यथायोग्य स्थानोंमें फिर स्थित किया। पर देवता लोग अब भी महादेवके क्रोधसे भयभीत हैं ॥ (६०-६३)

पहिले आकाशमें महाबलवान् असुरोंकी लोहे, सोने और चांदीसे बनी हुई तीन नगरी थीं; उनमेंसे सुवर्णकी पुरी कमलाक्षकी, चांदीकी पुरी तारकाक्षकी और तीसरी लोहमयी नगरी विद्युन्मालीकी बनाई हुई थी ॥ देवराज इन्द्र अपने सम्पूर्ण अस्त्रशस्त्रोंको चलाकर भी असुरोंकी तीनों पुरी को नष्ट करनेमें समर्थ नहीं हुए। (६४-६६)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते तमूचुर्महात्मानं सर्वे देवाः सवासवाः।
ब्रह्मदत्तवरा ह्येते घोरास्त्रिपुरवासिनः ॥ ६७ ॥
पीडयन्त्यधिकं लोकं यस्मात्ते वरदर्पिताः।
त्वदृते देवदेवेश नाऽन्यः शक्तः कथञ्चन ॥ ६८ ॥
हन्तुं दैत्यान्महादेव जहि तांस्त्वं सुरद्विषः।
रुद्र रौद्रा भविष्यन्ति पशवः सर्वकर्मसु ॥ ६९ ॥
निपातयिष्यसे चैतानसुरान्भुवनेश्वर।
स तथोक्तस्तथेत्युक्त्वा देवानां हितकाम्यया ॥ ७० ॥
गन्धमादनविन्ध्यौ च कृत्वा वंशध्वजौ हरः।
पृथ्वीं ससागरवनां रथं कृत्वा तु शङ्करः ॥ ७१ ॥
अक्षं कृत्वा तु नागेन्द्रं शेषं नाम त्रिलोचनः।
चक्रे कृत्वा तु चन्द्रार्कौ देवदेवः पिनाकधृक् ॥ ७२ ॥
अणीकृत्वैलपत्रं च पुष्पदन्तं च त्र्यम्बकः।
यूपं कृत्वा तु मलयमवनाहं च तक्षकम् ॥ ७३ ॥

अनन्तर असुरोंसे पीडित इन्द्रके सहित सम्पूर्ण देवता लोग इकट्ठे होकर भगवान् रुद्रके शरणमें आके यह वचन बोले, हे देवोंके देव महादेव! त्रिपुरवासी भयङ्कर असुरोंने ब्रह्माके निकटसे वर प्राप्त किया है, उस ही वरके प्रभावसे सम्पूर्ण प्राणियोंको अत्यन्त पीडित कर रहे हैं। हे देवोंके प्रभु महादेव! तुम्हारे अतिरिक्त और ऐसा कोई भी पुरुष विद्यमान नहीं है, जो उन असुरोंका वध कर सके, इससे आप उन देवद्रोही असुरोंका नाश कीजिये॥ हे रुद्र! हे सम्पूर्ण प्राणियोंके ईश्वर! आप यदि इन भयङ्कर असुरोंका नाश करेंगे, तो वे असुर सब कर्मोंमें रौद्र पशु होंगे। (६६—७०)

महाप्रतापी पिनाकधारी महादेवने देवताओंके ऐसे वचनको सुनकर "ऐसा ही होगा" कहकर उन लोगोंके वचनको स्वीकार किया। अनन्तर उन लोगोंके हितकी अभिलाषासे उस त्रिनेत्र महादेवने समुद्र और अरण्योंके सहित पृथ्वीको रथ स्वरूप करके गन्धमादन और विन्ध्याचल पर्वतको उस रथकी क्रमसे वंश और ध्वजा बनाई। सापोंके राजा अनन्त नाग उस रथके अक्षकाष्ठ हुए। चन्द्र सूर्य उस रथके चक्र हुए, ऐलपत्र और पुष्पदन्त उस रथके अणी स्वरूप हुए, मलयाचल पर्वत उस रथका यूपकाष्ठ हुआ; तक्षक सर्प उस काठके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योक्त्राङ्गानि च सत्वानि कृत्वा शर्वः प्रतापवान् ।
वेदान्कृत्वाऽथ चतुरश्चतुरश्वान्महेश्वरः ॥ ७४ ॥
उपवेदान्खलीनांश्च कृत्वा लोकत्रयेश्वरः ।
गायत्रीं प्रग्रहं कृत्वा सावित्रीं च महेश्वरः ॥ ७५ ॥
कृत्वोङ्कारं प्रतोदं च ब्रह्माणं चैव सारथिम् ।
गाण्डीवं मन्दरं कृत्वा गुणं कृत्वा तु वासुकिम् ॥७६॥
विष्णुं शरोत्तमं कृत्वा शल्यमग्निं तथैव च ।
वायुं कृत्वाऽथ वाजाभ्यां पुङ्खे वैवस्वतं यमम् ॥ ७७ ॥
विद्युत्कृत्वाऽथ निर्याणं मेरुं कृत्वा च वै ध्वजम् ।
आरुह्य स रथं दिव्यं सर्वदेवमयं शिवः ॥ ७८ ॥
त्रिपुरस्य वधार्थाय स्थाणुः प्रहरतां वरः ।
असुराणामन्तकरः श्रीमानतुलविक्रमः ॥ ७९ ॥
स्तूयमानः सुरैः पार्थ ऋषिभिश्च तपोधनैः ।
स्थानं माहेश्वरं कृत्वा दिव्यमप्रतिमं प्रभुः ॥ ८० ॥
अतिष्ठत्स्थाणुभूतः स सहस्रं परिवत्सरान् ।

जोडने के वास्ते बन्धन स्वरूप हुए ॥ (७०—७३)

सम्पूर्ण भूत उसके योक्त्राङ्ग, चारों वेद उस रथके चारों घोडे और उपवेद उस घोडोंकी लगाम हुए। गायत्री और सावित्री उन घोडोंके साज तथा बागडोर, ओंकार कोडा और ब्रह्मा सारथी हुए॥ अनन्तर वह सर्व देवोंमें श्रेष्ठ तीनों लोकोंके स्वामी सम्पूर्ण देवोंके देव महा देवने मन्दरगिरिको गाण्डीव, वासुकी नागको उस धनुषका रोंदा, विष्णुको श्रेष्ठ बाण, अग्निको शल्य, वायुको ऊपर कहे हुए बाणके दोनों पंख, वैवस्वत यमको उस बाणकी पूंछ, बिजली को निर्याण और सुमेरु पर्वतको रथके अगाडी स्थित होने वाली ध्वजा बनाया। (७४–७८)

अनन्तर भगवान् रुद्रने ऊपर कहे हुए उस ही दिव्य रथ पर चढके त्रिपुर नाश करनेके वास्ते यात्रा किया। हे अर्जुन! उस समय असुरोंके नाश करनेवाले अत्यन्त पराक्रमी श्रीमान् महादेवने तपस्यामें रत ऋषि और देवताओंके स्तुतिको सुनते हुए माहेश्वर नामक एक दिव्यस्थान निर्माण करके असुरोंकी तीनों पुरियोंका उस एकही स्थानमें रहकर नाश करनेकी इच्छासे एक हजार वर्ष तक वहां ही स्थाणुके समान निवास

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदा त्रीणि समेतानि अन्तरिक्षे पुराणि च ॥ ८१ ॥
त्रिपर्वणा त्रिशल्येन तदा तानि बिभेद सः।
पुराणि न च तं शेकुर्दानवाः प्रतिवीक्षितुम् ॥ ८२ ॥
शरं कालाग्निसंयुक्तं विष्णुसोमसमायुतम्।
पुराणि दग्धवन्तं तं देवी याता प्रवीक्षितुम् ॥ ८३ ॥
बालमङ्कगतं कृत्वा स्वयं पञ्चशिखं पुनः।
उमा जिज्ञासमाना वै कोऽयमित्यब्रवीत्सुरान् ॥ ८४ ॥
असूयतश्च शक्रस्य वज्रेण प्रहरिष्यतः।
बाहुं सवज्रं तं तस्य क्रुद्धस्याऽस्तम्भयत्प्रभुः ॥ ८५ ॥
प्रहस्य भगवांस्तूर्णं सर्वलोकेश्वरो विभुः।
ततः स स्तम्भितभुजः शक्रो देवगणैर्वृतः ॥ ८६ ॥
जगाम ससुरस्तूर्णं ब्रह्माणं प्रभुमव्ययम्।
ते तं प्रणम्य शिरसा प्रोचुः प्राञ्जलयस्तदा ॥ ८७ ॥
किमप्यङ्कगतं ब्रह्म पार्वत्या भूतमद्भुतम्।

किया। (७८-८१)

जिस समय वह त्रिपुर आकाशमें एक ही स्थान पर मिलित हुआ; उस समय उन्होंने त्रिपर्व और त्रिशल्य युक्त बाणसे उसका नाश किया। दानव लोग विष्णु और सोम संयुक्त प्रलय कालकी अग्निके समान उस बाण वा आकाश-स्थित त्रिपुरको देखनेमें भी समर्थ न हुए। त्रिपुर भस्म होनेके समय देवी भगवती पांच शिखासे शोभित एक बालकको गोदी (क्रोड) में लेकर वहां पर कौतुक देखने गयी थीं। ८१-८४

अनन्तर उमाने देवताओंसे पूछा, कि यह बालक कौन है? उस समय देवराज इन्द्र पाप तथा क्रोधके वशमें होके उस बालकके ऊपर वज्र चलानेमें उद्यत हुए। तब निग्रहानुग्रहमें समर्थ सम्पूर्ण लोकोंके स्वामी भगवान् त्रिलोचन महादेवने हंसके क्रोधी इन्द्रकी वज्रके सहित भुजाको उस ही समय स्तम्भित कर दिया। (८४-८६)

जब इन्द्रकी भुजा स्तम्भित हो गई, तब वह शीघ्रताके सहित सम्पूर्ण देवताओंको सङ्ग लेकर सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माके निकट गमन करके उनके शरणागत हुए, सबने पृथ्वी पर सिर रखके उन्हें प्रणाम किया और हाथ जोडके उनसे यह वचन बोले, हे ब्राह्मण! पार्वतीके क्रोडमें बालक रूपधारी एक अद्भुत मूर्त्तिवाले पुरुषको देखकर हम लोग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालरूपधरं दृष्ट्वा नाऽस्माभिरभिलक्षितः ॥ ८८ ॥
तस्मात्त्वां प्रष्टुमिच्छामो निर्जिता येन वै वयम् ।
अयुध्यता हि बालेन लीलया सपुरन्दराः ॥ ८९ ॥
तेषां तद्वचनं श्रुत्वा ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ।
ध्यात्वा स शम्भुं भगवान्बालं चाऽमिततेजसम्॥९०॥
उवाच भगवान्ब्रह्मा शक्रादींश्च सुरोत्तमान् ।
चराचरस्य जगतः प्रभुः स भगवान्हरः ॥ ९१ ॥
तस्मात्परतरं नाऽन्यत्किञ्चिदस्ति महेश्वरात् ।
यो दृष्टो ह्युमया सार्धं युष्माभिरमितद्युतिः ॥ ९२ ॥
स पार्वत्या कृते शर्वः कृतवान्बालरूपताम् ।
ते मया सहिता यूयं प्रापयध्वं तमेव हि ॥ ९३ ॥
स एष भगवान्देवः सर्वलोकेश्वरः प्रभुः ।
न सम्बुबुधिरे चैनं देवास्तं भुवनेश्वरम् ॥ ९४ ॥
सप्रजापतयः सर्वे बालार्कसदृशप्रभम् ।
अथाऽभ्येत्य ततो ब्रह्मा दृष्ट्वा स च महेश्वरम्॥ ९५ ॥

यह न जान सके कि वह कौन हैं। उन्होंने बालक होके भी इन्द्र आदि देवताओं अर्थात् हम लोगोंको खेलवाडकी भांति पराजित किया है; इससे हम लोग आपसे पूंछते हैं, कि वह बालक कौन है ? (८६--८९)

अनन्तर ब्रह्मज्ञ पुरुषोंमें अग्रगण्य भगवान् स्वयम्भू ब्रह्मा उन अत्यन्त तेजस्वी देवताओंके वचनको सुनके थोडी देर तक चिन्ता करके उन लोगों से बोले, हे देवता लोगो ! तुम सब लोगोंने पार्वतीके सहित जिस अमित तेजस्वी पुरुषका दर्शन किया है, वेही इस सचराचर जगत्का स्वामी भगवान् हर हैं॥ उस महेश्वरसे श्रेष्ठ लोकमें कोई भी वस्तु नहीं है। उस ही सर्वेश्वर महादेवने पार्वतीके निमित्त बालक रूप धारण किया था। (९०—९३)

वह सबके प्रभु, षडैश्वर्य शाली, आनन्द और सम्पूर्ण जगतके नियन्ता हैं, इससे चलो हम सब कोई उनके समीप गमन करके उनके शरणागत होवें। प्रजापति आदि सम्पूर्ण देवताओंके बीच कोई भी उस बाल-सूर्यके समान तेजस्वी जगत्प्रभुके प्रभावको नहीं जान सकते। अनन्तर पितामह ब्रह्मा वहां पर उपस्थित होके महादेवका दर्शन करके "येही श्रेष्ठ हैं" ऐसा जानके उनकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयं श्रेष्ठ इति ज्ञात्वा ववन्दे तं पितामहः ।
ब्रह्मोवाच— त्वं यज्ञो भुवनस्याऽस्य त्वं गतिस्त्वं परायणम् ॥९६॥
त्वं भवस्त्वं महादेवस्त्वं धाम परमं पदम् ।
त्वया सर्वमिदं व्याप्तं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ ९७ ॥
भगवन्भूतभव्येश लोकनाथ जगत्पते ।
प्रसादं कुरु शक्रस्य त्वया क्रोधार्दितस्य वै ॥ ९८ ॥
व्यास उवाच— पद्मयोनिवचः श्रुत्वा ततः प्रीतो महेश्वरः ।
प्रसादाभिमुखो भूत्वा अट्टहासमथाऽकरोत् ॥ ९९ ॥
ततः प्रसादयामासुरमां रुद्रं च ते सुराः ।
अभवच्च पुनर्बाहुर्यथाप्रकृति वाऽग्रिणः ॥ १०० ॥
तेषां प्रसन्नो भगवान्सपत्नीको वृषध्वजः ।
देवानां त्रिदशश्रेष्ठो दक्षयज्ञविनाशनः ॥ १०१ ॥
स वै रुद्रः स च शिवः सोऽग्निः सर्वश्च सर्ववित् ।
स चेन्द्रश्चैव वायुश्च सोऽश्विनौ च स विद्युतः ॥१०२॥
स भवः स च पर्जन्यो महादेवः सनातनः ।
स चन्द्रमाः स चेशानः स सूर्यो वरुणश्च सः॥ १०३॥

वन्दना करने लगे। (९३—९६)

ब्रह्मा बोले, हे देवोंके देव! तुम ही इस लोकके बीच यज्ञस्वरूप, गति और सबके आश्रय हो। तुम ही महादेव, भव, परमधाम, परम पद हो, यह स्थावर जङ्गमात्मक सम्पूर्ण जगत् तुमसे ही व्याप्त होरहा है। तुम भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान कालके ईश्वर, लोकनाथ और जगत्पति हो। हे देवोंके देव! इन्द्र तुम्हारी क्रोधरूपी अग्निसे दग्धप्राय होरहे हैं; इससे इन्द्रके ऊपर आप प्रसन्न होइये॥ (९६—९८)

वेदव्यास मुनि बोले, महादेव पद्मयोनि ब्रह्माके इस प्रकार स्तुतियुक्त वचनोंको सुनके प्रसन्न हुए; और प्रसन्नताके सहित अट्टहास किया॥ उसे देखकर सम्पूर्ण देवता लोग पार्वतीके सहित रुद्रदेवको प्रसन्न करनेमें प्रवृत्त हुए; तब इन्द्रकी भुजा पहिलेकी भांति फिर प्रकृतिस्थ हुई॥ (९९—१००)

हे अर्जुन! इसी प्रकार सम्पूर्ण देवोंमें श्रेष्ठ, दक्ष यज्ञको नाश करनेवाले, पार्वतीके सहित भगवान् वृषभध्वज देवता ओंसे प्रसन्न हुए थे॥ वह रुद्र, शिव, अग्नि, सर्वज्ञ, शर्व, इन्द्र, वायु, दोनों अश्विनीकुमार और विद्युतरूप हैं; वही भव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स कालः सोऽन्तको मृत्युः स यमो रात्र्यहानि तु ।
मासार्धमासा ऋतवः सन्ध्ये संवत्सरश्च सः॥ १०४ ॥
धाता च स विधाता च विश्वात्मा विश्वकर्मकृत् ।
सर्वासां देवतानां च धारयत्यवपुर्वपुः ॥ १०५ ॥
सर्वदेवैः स्तुतो देवः सैकधा बहुधा च सः ।
शतधा सहस्रधा चैव भूयः शतसहस्रधा ॥ १०६ ॥
द्वे तनू तस्य देवस्य वेदज्ञा ब्राह्मणा विदुः ।
घोरा चाऽन्या शिवा चाऽन्या ते तनू बहुधा पुनः॥१०७॥
घोरा तु यातुधानस्य सोऽग्निर्विष्णुः स भास्करः ।
सौम्या तु पुनरेवाऽस्य आपो ज्योतींषि चन्द्रमाः॥ १०८॥
वेदाः साङ्गोपनिषदः पुराणाध्यात्मनिश्चयाः ।
यदत्र परमं गुह्यं सर्वदेवो महेश्वरः ॥ १०९ ॥
ईदृशश्च महादेवो भूयांश्च भगवानजः ।
नहि सर्वे मया शक्या वक्तुं भगवतो गुणाः ॥११० ॥
अपि वर्षसहस्रेण सततं पाण्डुनन्दन ।

पर्जन्य, महादेव, सनातन, ईशान, चन्द्र, सूर्य, और वरुण हैं; वही कालरूपी अन्तक, मृत्यु, यम, रात्रि, और दिन हैं । वही पक्ष, मास, ऋतु, दोनों सन्ध्या और संवत्सर हैं ॥ (१०१—१०४)

वही धाता, विश्वाता, विश्वात्मा और विश्वको उत्पन्न करनेवाले हैं। वह शरीर रहित होकर भी सम्पूर्ण देवतोंके रूपसे स्थित रहते हैं ॥ इस ही कारण देवता लोग उन्हें शत, सहस्र, लक्ष और अनेक रूपधारी कहके उनकी स्तुति किया करते हैं । वेद जाननेवाले ब्राह्मण लोग उस देवोंके देव महादेवकी "घोरा" और "शिवा" नाम्नी दोनों मूर्त्तियोंको जानते हैं; परन्तु वही दोनों मूर्त्ति अनेक रूपसे विस्तृत होती हैं॥ (१०५–१०७)

यातुधानोंकी उपास्य विष्णु, अग्नि और सूर्य उनकी घोर मूर्त्ति और चन्द्रमा जल तथा ज्योतिवाले अन्य पदार्थ उनकी सौम्य मूर्त्ति हैं ॥ पुराण, वेदाङ्ग और अध्यात्म निश्चयात्मक उपनिषत् जो कुछ गोपनीय वस्तु हैं, वह सम्पूर्ण स्वप्रकाश महेश्वररूप हैं ॥ हे अर्जुन ! जन्म मृत्यु रहित भगवान् महादेव इसी प्रकार तथा इससे भी परे हैं । हे पाण्डु-पुत्र अर्जुन ! मैं सहस्र वर्ष पर्यन्त वर्णन करके भी भगवान् शङ्करके गुणोंको वर्णन न कर सकूंगा । (१०८–१११)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वैर्ग्रहैर्गृहीतान्वै सर्वपापसमन्वितान् ॥ १११ ॥
स मोचयति सुप्रीतः शरण्यः शरणागतान्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं वित्तं कामांश्च पुष्कलान्॥ ११२ ॥
स ददाति मनुष्येभ्यः स चैवाऽऽक्षिपते पुनः।
सेन्द्रादिषु च देवेषु तस्य चैश्वर्यमुच्यते ॥ ११३ ॥
स चैव व्यापृतो लोके मनुष्याणां शुभाशुभे।
ऐश्वर्याच्चैव कामानामीश्वरश्च स उच्यते ॥ ११४ ॥
महेश्वरश्च महतां भूतानामीश्वरश्च सः।
बहुभिर्बहुधा रूपैर्विश्वं व्याप्नोति वै जगत् ॥ ११५ ॥
तस्य देवस्य यद्वक्त्रं समुद्रे तदधिष्ठितम्।
वडवामुखेति विख्यातं पिबत्तोयमयं हविः ॥ ११६ ॥
एष चैव श्मशानेषु देवो वसति नित्यशः।
यजन्त्येनं जनास्तत्र वीरस्थान इतीश्वरम् ॥ ११७ ॥
अस्य दीप्तानि रूपाणि घोराणि च बहूनि च।

मनुष्य लोग यदि सम्पूर्ण ग्रहोंसे पीडित और अनेक पापोंसे युक्त होकर भी उनके शरणागत होते हैं, तौ भी महात्मा शिव अपने शरणागत भक्तोंके ऊपर प्रसन्न होके उन्हें सम्पूर्ण विपज्जालसे मुक्त कर देते हैं। वह प्रसन्न होनेपर मनुष्योंको आयु, आरोग्यता, ऐश्वर्य, धन और उत्तम उत्तम अभिलषित भोग वस्तु प्रदान करते हैं; और कोपित होकर विपतके भंवरमें डाल देते हैं। इन्द्रादिक देवताओंका जो कुछ ऐश्वर्य दीख पडता है, वह सब भगवान् शम्भु काही ऐश्वर्य कहा जाता है; क्योंकि वही मनुष्योंके शुभाशुभ कर्मोंके परिचालक हैं। वह अपने ऐश्वर्यके प्रभावसे मनुष्योंकी सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण करनेमें समर्थ हैं, वही महाभूतोंके नियन्ता हैं; सम्पूर्ण प्राणी उन्हेंही ईश्वर तथा महेश्वर कहके उनके चरित्रोंको गाया करते हैं। वह नाना भांतिके असंख्य रूप धारण करके इस जगत्में स्थित हैं॥ (१११—११५)

उसही महादेवका जो मुख समुद्रमें स्थित होकर जलरूपी हविको पान कर रहा है, वही वडवानल नामसे विख्यात हुआ है॥ वह महातेजस्वी रुद्र सदा श्मशान में निवास करते हैं; मनुष्य लोग वहांपर उन्हें वीर स्थानमें स्थित ईश्वर कहके उनकी पूजा किया करते हैं॥ उनके अनगिनत प्रकाशमान और भयङ्कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोके यान्यस्य पूज्यन्ते मनुष्याः प्रवदन्ति च ॥११८॥
नामधेयानि लोकेषु बहून्यस्य यथार्थवत् ।
निरुच्यन्ते महत्त्वाच्च विभुत्वात्कर्मणस्तथा ॥ ११९ ॥
वेदे चाऽस्य समाम्नातं शतरुद्रियमुत्तमम् ।
नाम्ना चाऽनन्तरुद्रेति ह्युपस्थानं महात्मनः॥ १२० ॥
स कामानां प्रभुर्देवो ये दिव्या ये च मानुषाः ।
स विभुः स प्रभुर्देवो विश्वं व्याप्नोति वै महत्॥१२१॥
ज्येष्ठं भूतं वदन्त्येनं ब्राह्मणा मुनयस्तथा ।
प्रथमो ह्येष देवानां मुखादस्याऽनलोऽभवत् ॥ १२२ ॥
सर्वथा यत्पशून्पाति तैश्च यद्रमते पुनः ।
तेषामधिपतिर्यच्च तस्मात्पशुपतिः स्मृतः ॥ १२३ ॥
दिव्यं च ब्रह्मचर्येण लिङ्गमस्य यथास्थितम् ।
महयत्येष लोकांश्च महेश्वर इति स्मृतः ॥ १२४ ॥
ऋषयश्चैव देवाश्च गन्धर्वाप्सरसस्तथा ।
लिङ्गमस्याऽर्चयन्ति स्म तच्चाऽप्यूर्ध्वं समास्थितम् ॥१२५॥

रूप हैं; मनुष्य लोग सदाही उनकी पूजा करके भगवान् रुद्रके गुणोंको गाया करते हैं ॥ (११६—११८)

कर्ममहत्त्व और ईश्वरत्वसे सम्पूर्ण प्राणी उन्हें अनगिनत सार्थक नामोंसे उनका गुणगान करते हैं ॥ वेदमें उस महात्मा रुद्रदेवका शतरुद्रि अनन्तरुद्रि नामसे उत्तम उपस्थान वर्णित है ॥ वह मनुष्य और देवताओंको इच्छानुसार फल देनेवाले हैं। वह विश्वव्यापक, महत्, निग्रहानुग्रहमें समर्थ, स्वयंप्रभु और विभु हैं ॥ वही देवताओंके आदि पुरुष हैं; उन्हींके मुखसे अग्नि आदि वस्तु उत्पन्न हुई हैं। इसही कारण ब्राह्मण और मुनि लोग उन्हें सबसे श्रेष्ठ ज्येष्ठ तथा आदि कारण कहके उनके गुणोंका वर्णन करते हैं ॥ ११९–१२२

वह सब भांतिसे पशु अर्थात् जीवोंका पालन, उनके सङ्ग क्रीडा और उनके ऊपर ऐश्वर्य विस्तार करते हैं, इस ही कारण सब कोई पशुपति नामसे उनका गुणानुवाद करते हैं ॥ उनकी एक मूर्ति सदा ब्रह्मचर्य व्रतमें तत्पर तथा लोकमें स्थित होकर सबको आनन्दित कर रही है, इस ही कारण वह महेश्वर नामसे विख्यात हुए हैं ॥ देवता, गन्धर्व, और ऋषि लोग सदा उस लिंग मूर्तिकी पूजा अर्चना करते हैं; वह मूर्ति ऊर्ध्वमुखसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूज्यमाने ततस्तस्मिन्मोदते स महेश्वरः ।
सुखी प्रीतश्च भवति प्रहृष्टश्चैव शङ्करः ॥ १२६ ॥
यदस्य बहुधा रूपं भूतभव्यभवत्स्थितम् ।
स्थावरं जङ्गमं चैव बहुरूपस्ततः स्मृतः ॥ २७ ॥
एकाक्षो जाज्वलन्नास्ते सर्वतोऽक्षिमयोऽपि वा ।
क्रोधाद्यश्चाऽऽविशल्लोकांस्तस्मात्सर्व इति स्मृतः ॥२८॥
धूम्ररूपं च यत्तस्य धूर्जटिस्तेन चोच्यते ।
विश्वे देवाश्च यत्तस्मिन्विश्वरूपस्ततः स्मृतः ॥ १२९ ॥
तिस्रो देवीर्यदा चैव भजते भुवनेश्वरः ।
व्यापः पृथिवीं चैव त्र्यम्बकश्च ततः स्मृतः॥ १३० ॥
स मेधयति यन्नित्यं सर्वार्थान्सर्वकर्मसु ।
शिवमिच्छन्मनुष्याणां तस्मादेष शिवः स्मृतः॥१३१॥
सहस्राक्षोऽयुताक्षो वा सर्वतोऽक्षिमयोऽपि वा ।
यच्च विश्वं महत्पाति महादेवस्ततः स्मृतः ॥ १३२ ॥
महत्पूर्वं स्थितो यच्च प्राणोत्पत्तिस्थितश्च यत् ।

जगत्में स्थित है। उनकी लिंगमूर्तिकी पूजा करनेवाला पुरुष सुख और प्रीतिको प्राप्त करता है, तथा शंकर भी उसके ऊपर संतुष्ट होते हैं ॥ (१२३—१२६)

भूत, वर्तमान, भविष्य और स्थावर जङ्गमात्मक उनके अनेक रूप हैं; इस ही कारण वह बहुरूप नामसे विख्यात हुए हैं॥ वह एक चक्षु, वा सर्वचक्षु होकर प्रकाशमान रूपसे विराजमान हैं। क्रोध से उन्होंने इस लोकके बीच प्रवेश किया है इसहीसे उनका नाम सर्व हुआ है। धूम्रवर्णवाली उनकी एक मूर्ति है, इस ही कारण वह धूर्जटि नामसे प्रसिद्ध हुए हैं। सम्पूर्ण देवता लोग उन्हींमें प्रतिष्ठित हैं, इसीसे उनका विश्वरूप नाम हुआ है॥ (१२७–१२९)

पृथ्वी, जल आकाश इन तीन देवमूर्तियोंका यह सदा आश्रय करता है,इसी से उनका त्र्यम्बक नाम प्रसिद्ध हुआ है॥ वह मनुष्योंको मङ्गल कामनासे सम्पूर्ण कार्योंके अर्थको परिवर्धित करते हैं, इससे उनका शिव नाम प्रसिद्ध है॥ वह सहस्राक्ष, अयुताक्ष और सर्वतश्चक्षु नाम से प्रसिद्ध हैं। वह इस बडे जगत्को पालन करते हैं, इसहीसे उनका नाम महादेव हुआ है॥ (१३०–१३२)

वह महत्रूपमें स्थित होकर अपने तेजसे प्रज्वलित हो रहे हैं, वही प्राणकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थितालिङ्गश्च यन्नित्यं तस्मात्स्थाणुरिति स्मृतः॥ १३३ ॥
सूर्याचन्द्रमसोर्लोके प्रकाशन्ते रुचश्च याः ।
ताः केशसंज्ञितास्त्र्यक्षे व्योमकेशस्ततः स्मृतः॥१३४ ॥
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं जगदशेषतः ।
भव एव ततो यस्माद्भूतभव्यभवोद्भवः ॥ १३५ ॥
कपिः श्रेष्ठ इति प्रोक्तो धर्मश्च वृष उच्यते ।
स देवदेवो भगवान्कीर्त्यतेऽतो वृषाकपिः ॥ १३६ ॥
ब्रह्माणमिन्द्रं वरुणं यमं धनदमेव च ।
निगृह्य हरते यस्मात्तस्माद्धर इति स्मृतः ॥ १३७ ॥
निमीलिताभ्यां नेत्राभ्यां बलादेवो महेश्वरः ।
ललाटे नेत्रमसृजत्तेन त्र्यक्षः स उच्यते ॥ १३८ ॥
विषमस्थः शरीरेषु समश्च प्राणिनामिह ।
स वायुर्विषमस्थेषु प्राणोऽपानः शरीरिषु ॥ १३९ ॥
पूजयेद्विग्रहं यस्तु लिङ्गं चापि महात्मनः ।
लिङ्गं पूजयिता नित्यं महतीं श्रियमश्नुते ॥ १४० ॥

उत्पत्ति, स्थितिके कारण और सदा स्थिर रूप हैं; इसही कारणसे वह स्थाणु नामसे विख्यात है ॥ सूर्य और चन्द्रमाके प्रकाशित होकर अन्धकारको दूर करने वाले किरण उस त्र्यम्बकके केश हैं, उस हीसे उनका नाम व्योमकेश हुआ है ॥ भूत, भविष्य और वर्त्तमानकाल उसही महादेवसे उत्पन्न होते हैं इसहीसे वह भूत, भविष्य और वर्त्तमान कालके आधारभूत भव नामसे विख्यात हुए हैं ॥(१३३-१३५)

श्रेष्ठको कपि कहते हैं और वृष धर्मका नाम है वह श्रेष्ठ धर्म होनेसे उनको वृषाकपि नाम हुआ है॥ वह ब्रह्मा, इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर आदिको निगृहीत करके हरण अर्थात् उनका संहार करते हैं, इस ही कारण उनका नाम हर प्रसिद्ध हुआ है ॥ (१३६-१३७)

उस महेश्वरने अपने दोनों उन्मीलित नेत्रोंसे पृथक् निज मस्तकके बीच बलपूर्वक एक तीसरे नेत्रको उत्पन्न किया है; इस ही कारण उनका नाम त्र्यक्ष विख्यात हुआ है ॥ वह प्राणियोंके शरीरमें सम और विषमस्थ वायु तथा शरीरके प्राण और अपान वायु नामसे प्रसिद्ध हुए हैं ॥ जो पुरुष महादेवके लिङ्गमूर्त्तिकी पूजा करते हैं, वह सदा सर्वदा बडी सम्पत्तिको लाभ करते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊरुभ्यामर्धमाग्नेयं सोमोऽर्धं च शिवा तनुः ।
आत्मनोऽर्धं तथा चाऽग्निः सोमोऽर्धं पुनरुच्यते॥१४१॥
तैजसी महती दीप्ता देवेभ्योऽस्य शिवा तनुः ।
भास्वती मानुषेष्वस्य तनुर्घोराऽग्निरुच्यते ॥ १४२ ॥
ब्रह्मचर्यं चरत्येष शिवा याऽस्य तनुस्तया ।
याऽस्य घोरतरा मूर्तिः सर्वानत्ति तयेश्वरः ॥ १४३ ॥
यन्निर्दहति यत्तीक्ष्णो यदुग्रो यत्प्रतापवान् ।
मांसशोणितमज्जादो यत्ततो रुद्र उच्यते ॥ १४३ ॥
एष देवो महादेवो योऽसौ पार्थ तवाऽग्रतः ।
संग्रामे शात्रवान्निघ्नंस्त्वया दृष्टः पिनाकधृक्॥ १४५ ॥
सिन्धुराजवधार्थाय प्रतिज्ञाते त्वयाऽनघ ।
कृष्णेन दर्शितः स्वप्ने यस्तु शैलेन्द्रमूर्धनि ॥ १४६ ॥
एष वै भगवान्देवः संग्रामे याति तेऽग्रतः ।
येन दत्तानि तेऽस्त्राणि यैस्त्वया दानवा हताः॥१४७॥

उनके दोनों पावोंके अर्द्धभाग आग्नेय और अर्धभाग सौम्य हैं; शेष शिवामूर्त्ति है। ऐसा भी वर्णन किया गया है, कि उनके सम्पूर्ण शरीरका अर्द्धभाग आग्नेय और अर्द्धभाग सौम्यमूर्त्ति है, परन्तु उनकी जो महातेजसे युक्त मूर्त्ति देवलोकमें विराजमान है, वही शिवा मूर्त्ति है; और सूर्यके समान तेजसे युक्त जो मूर्त्ति मनुष्य लोकमें प्रतिष्ठित है, वही अग्निमय मूर्त्ति घोरा नामसे प्रसिद्ध है ॥ (१३८–१४२)

वह परमेश्वर अपनी शिवा मूर्त्तिसे सदा ब्रह्मचर्य व्रत और दूसरी घोरा मूर्त्तिसे सम्पूर्ण लोकका संहार करते हैं॥ क्योंकि वह महादेव अग्नि, तीक्ष्ण और उग्र मूर्त्ति हैं और इन्हीं मूर्त्तियोंसे वह मांस रुधिर तथा मज्जा भक्षण करते हैं; इस ही कारणसे उनका नाम रुद्र कहके जगत्में विख्यात है ॥ (१४३–१४४)

हे पापरहित अर्जुन! युद्धभूमिके बीच तुमने जिस देवको अपने अगाडीमें शत्रुओंकी सेनाको संहार करते देखा था और सिन्धुराज जयद्रथ वधकी प्रतिज्ञाके दिन कृष्णने स्वप्नयोगमें कैलास पर्वतके शिखर पर जाके जिनका दर्शन कराया था; वे वही पिनाकधारी महादेव हैं, जो तुम्हारे रथके आगे आगे गमन करते रहते हैं, और जिन्होंने तुम्हें पाशुपत आदि अस्त्र प्रदान किये थे; जिससे कि तुमने दुर्जय दानवकुलका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्यं यशस्यमायुष्यं पुण्यं वेदैश्च संमितम् ।
देवदेवस्य ते पार्थ व्याख्यातं शतरुद्रियम् ॥ १४८ ॥
सर्वार्थसाधनं पुण्यं सर्वकिल्बिषनाशनम् ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखभयापहम् ॥ १४९ ॥
चतुर्विधमिदं स्तोत्रं यः शृणोति नरः सदा ।
विजित्य शत्रून्सर्वान्स रुद्रलोके महीयते ॥ १५० ॥
चरितं महात्मनो नित्यं सांग्रामिकमिदं स्मृतम् ।
पठन्वै शतरुद्रीयं शृण्वंश्च सततोत्थितः ॥ १५१ ॥
भक्तो विश्वेश्वरं देवं मानुषेषु च यः सदा ।
वरान्कामान्स लभते प्रसन्ने त्र्यम्बके नरः ॥ १५२ ॥
गच्छ युद्धयस्व कौन्तेय न तवाऽस्ति पराजयः ।
यस्य मन्त्री च गोप्ता च पार्श्वस्थो हि जनार्दनः॥१५३॥
सञ्जय उवाच— एवमुक्त्वाऽर्जुनं संख्ये पराशरसुतस्तदा ।
जगाम भरतश्रेष्ठ यथागतमरिन्दम ॥ १५४ ॥
युद्धं कृत्वा महद्घोरं पञ्चाऽहानि महाबलः ।

संहार किया है वे वही भगवान् शिव हैं ॥ (१४५—१४७)

हे अर्जुन ! मैंने इस लोकमें यशको बढानेवाली तथा आयुको बढानेवाली, धन्य और पवित्र वेदसम्मत इस शतरुद्रिकी व्याख्या की है॥ यह अत्यन्त ही पुण्यदायक, सम्पूर्ण अर्थोंको सिद्ध करनेवाली, समस्त पापोंकी नाशक और अज्ञान, दुःख तथा भयको नाश करनेवाली है॥ जो मनुष्य इन चार प्रकारके स्तोत्रोंको सुनते हैं, वह शत्रुओंको जीत कर अन्त समयमें रुद्रलोकमें गमन करते हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं है॥ १४८-१५०

जो पुरुष महात्मा महादेवके इस दिव्य और मङ्गलजनक सांग्रामिक कथा तथा शतरुद्रीको पढते हैं, उनकी सदा उन्नति होती है; मनुष्यलोकमें जो भक्त महादेवको प्रसन्न कर सकता है, वह शीघ्र ही अपनी अभिलषित वस्तु पाता है ॥ हे कुन्तीनन्दन ! जनार्दन कृष्ण जब तुम्हारे रक्षक, सहायक और मन्त्री हुए हैं, तब कभी भी तुम्हारी पराजय न होगी; इससे जाओ, और युद्ध करो ॥ (१५१—१५३)

सञ्जय बोले, व्यासदेवने युद्धभूमिमें अर्जुनसे ऐसा कहके अपने स्थान पर गमन किया ॥ महाराज ! महाबलवान् ब्राह्मण द्रोणाचार्य इसी भांति पांच दिन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणो निहतो राजन्ब्रह्मलोकमवाप्तवान् ॥ १५५ ॥
स्वधीते यत्फलं वेदे तदस्मिन्नपि पर्वणि।
क्षत्रियाणामभीरूणां युक्तमत्र महद्यशः ॥ १५६ ॥
य इदं पठते पर्व शृणुयाद्वाऽपि नित्यशः।
स मुच्यते महापापैः कृतैर्घोरैश्च कर्मभिः ॥ १५७ ॥
यज्ञावाप्तिर्ब्राह्मणस्येह नित्यं घोरे युद्धे क्षत्रियाणां यशश्च।
शेषौ वर्णौ कामामिष्टं लभेते पुत्रान्पौत्रान्नित्यमिष्टांस्तथैव॥१५८॥[९६४२]

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्रोणपर्वणि नारायणास्त्रमोक्षपर्वणि द्व्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥ २०२ ॥ समाप्तं नारायणास्त्रमोक्षपर्व।

द्रोणपर्व च समाप्तम्।

अस्यानन्तरं कर्णपर्व भविष्यति तस्यायमाद्यः श्लोकः-

वैशम्पायन उवाच-ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनमुखा नृपाः।
भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपाद्रवन् ॥ १ ॥

पर्यन्त महाभयङ्कर युद्ध करके रणभूमिके बीच मरके ब्रह्मलोकको गये॥१५४-१५५

इस पर्वमें युद्ध करनेवाले क्षत्रियोंके महत् यश और मुक्तिके विषय वर्णित हैं; इस पर्वको पढनेसे वेद अध्ययन करनेका फल मिलता है। भीतिरहित क्षत्रियोंको इसके पठनसे बडा यश मिलता है। जो सदा नित्य नेमसे इस पर्वको पढते वा सुनते हैं; वह भयानक कर्म और महापापसे छूट जाते हैं॥ इसके पढनेसे ब्राह्मणोंको सदा यज्ञ करनेका फल, क्षत्रियोंको भयङ्कर युद्धमें विजय लाभ होता है और वैश्य आदि शेष वर्ण अपनी इच्छानुसार पुत्र, पौत्र प्रभृति अभिलषित वस्तुओंको पाते हैं॥ (१५६—१५८) [९६४२]

द्रोणपर्वमें दोसौ दोन अध्याय और नारायणास्त्रमोक्षपर्व समाप्त।

इति द्रोणपर्व समाप्तम्।

भीष्मपर्वके अन्ततक श्लोक संख्या- ३८०८५
द्रोणपर्वकी श्लोक संख्या- ९६४२
सर्वयोग— ४७७२७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोणपर्वकी विषयसूची।

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	१ द्रोणाभिषेकपर्व।	
१	मंगलाचरण, जनमेजयका वैशम्पायन से प्रश्न, धृतराष्ट्रका प्रश्न, भीष्मकी रक्षाका विधान करके दोनों पक्षके वीरोंका युद्धके लिये सज्जित होना।	१
२	कर्णका रणभूमिमें आके कौरवोंको धीरज देना।	१०
३	कर्णका भीष्मके समीप जाना और भीष्मसे वार्तालाप।	१६
४	कर्णको युद्ध करनेके लिये भीष्मकी अनुमति मिलना।	१९
५	नूतन सेनापति बनानेके लिये विचार, द्रोणाचार्यको सेनापतिपदपर अभिषिक्त करनेके लिये कर्णकी सम्मति।	२२
६	दुर्योधनका द्रोणाचार्यसे सेनापति होनेके लिये कहना।	२५
७	द्रोणाचार्यका सेनापतिपद पर अभिषेक।	२६
८	धृतराष्ट्रके समीप सञ्जयका संक्षेपमें द्रोणवधवृत्तान्त कथन।	३३
९	धृतराष्ट्रका शोक।	३९
१०	धृतराष्ट्रका वचन।	४५
११	धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णके कर्मोंका कीर्तन।	५५
१२	सञ्जयके द्वारा द्रोणाचार्यका युद्धवृत्तान्तवर्णन।	६२
	द्रोणाचार्य का युधिष्ठिर को पकडनेके विषयमें छलपूर्वक वर देना।	६५
१३	द्रोणाचार्यकी प्रतिज्ञा सुनके युधिष्ठिर का भयभीत होना और अर्जुनका युधिष्ठिरको धीरज देना, दोनों ओरकी सेनाका युद्धारम्भ।	६७
१४	दोनों सेनाके वीरोंका द्वैरथयुद्ध।	७०
	अभिमन्युका पराक्रम।	७७
१५	शल्य और भीमसेनका युद्ध।	८२
	शल्यका मूर्छित होना और कृतवर्मा के द्वारा शल्यका युद्धभूमिसे जाना।	८६
१६	प्रथम दिनका युद्ध समाप्त।	८७
	२ संशप्तकवधपर्व।	
१७	द्रोणाचार्य के वचनको	

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनके त्रिगर्तराज का संशप्तक वीरोंके सहित युद्धसे न भागनेकी शपथ करके अर्जुनको रणभूमिमें पृथक् आह्वान करना और अर्जुनका उनके संग युद्ध के लिये जाना तथा अर्जुन से युधिष्ठिरकी वार्तालाप । ९५

१८ अर्जुनका त्रिगर्तोंके सङ्ग युद्ध और सुधन्वाका वध । १०१

२९ अर्जुनका संशप्तकोंके साथ युद्ध और वायव्यास्त्रका प्रयोग । १०६

२० कौरवोंकी सेनाका व्यूह बनना, संकुल युद्ध । १११

२१ द्रोणाचार्यके हाथसे सत्यजित् का वध होनेपर युधिष्ठिरका रणभूमिसे भागना । १२०

पाण्डव पक्षीय योद्धाओंका द्रोणाचार्य को आक्रमण करना और द्रोणाचार्यके हाथसे पाण्डवोंकी सेनाका विनाश १२३

२२ भीमसेनके विषयमें कर्णके संग दुर्योधन की वार्तालाप । १२९

२३ पाण्डवपक्षीय भीमप्रभृति योद्धाओंके अश्व ध्वज रथ आदि चिन्हवर्णन । १३३

२४ धृतराष्ट्रका आक्षेप १४६

२५ दोनों सेनाके योद्धाओंका द्वन्द्वयुद्ध । १४९

२६ भीमसेनके संग युद्धमें दुर्योधनकी पराजय और भीमके हाथसे हाथी सहित राजा अंगका मारा जाना । १५८

भगदत्तके संग युद्धमें भीमादिकी पराजय, दशार्णराजका मारा जाना तथा भगदत्तके हाथीके द्वारा पाण्डवोंकी सेनाका नाश १६१

२७ भगदत्तके हाथीका शब्द सुनके अर्जुनकी संशप्तकोंके संग युद्ध त्यागके भगदत्तके समीप जानेकी चेष्टा और संशप्तकोंका उन्हें बाधा देना, फिर ब्रह्मास्त्रसे संशप्तकों को मारके अर्जुनका भगदत्तके समीप जानेके लिये श्रीकृष्णसे कहना । १६८

२८ अर्जुनके द्वारा सुशर्माकी सेनाका नाश और भगदत्तार्जुन युद्ध । १७३

२९ भगदत्तके चलाये हुए वैष्णवास्त्र को कृष्णके द्वारा निज वक्ष स्थल पर धारण करना, वैष्णवास्त्रविषयमें कृष्णके संग अर्जुनकी वार्तालाप, अर्जुनके हाथसे भगदत्तका वध । १७७

३० अर्जुनके पराक्रमसे शकुनिके दो भाइयोंका मारा जाना और शकुनि का युद्धभूमिसे पलायन १८४

३१ अश्वत्थामाके हाथसे नील

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजाका मारा जाना । १९०
३२ संकुल संग्राम, दूसरे दिन का युद्ध समाप्त । १९४
३ अभिमन्युवधपर्व ।
३३ दुर्योधन और द्रोणाचार्य की वार्तालाप । २०६
संक्षेपमें अभिमन्युका वध । २०८
३४ तीसरे दिनके युद्धमें कौरवोंकी ओर चक्रव्यूह बनना । २१०
३५ चक्रव्यूह भेद करनेके विषयमें अभिमन्युकी प्रतिज्ञा । २१३
३६ सारथीके वचनका अनादर करके अभिमन्युका चक्रव्यूह में प्रवेश । २१७
३७ अभिमन्युका पराक्रम, अभिमन्यु के हाथसे दीर्घलोचन आदियोंका वध और शल्यका मूर्छित होना । २२४
३८ अभिमन्युके हाथसे शल्यके छोटे भाईका वध । २२९
३९ द्रोणाचार्यके द्वारा अभिमन्युकी प्रशंसा, अभिमन्युको मारनेके लिये दुर्योधनकी आज्ञासे दुःशासन प्रभृति महारथोंका उसकी ओर युद्ध करनेके लिये गमन करना । २३२
४० अभिमन्युके संग युद्धमें दुःशासन की मूर्च्छा और पराजय । २३७
४१ अभिमन्युके हाथसे कर्णके छोटे भाई का मारा जाना २४१
४२ शंकरसे जयद्रथको वर मिलने का वृत्तान्त । २४५
४३ चक्रव्यूहके द्वार पर जयद्रथके सङ्ग युद्धमें सेनाके सहित पाण्डवोंकी पराजय । २४८
४४ अभिमन्युके हाथसे वसातिराज तथा मुख्य मुख्य क्षत्रियोंका मारा जाना । २५१
४५ अभिमन्युके हाथसे रुक्मरथ, और अनेक राजपुत्रोंका वध तथा दुर्योधनका पराजय । २५४
४६ अभिमन्युके द्वारा लक्ष्मण का तथा क्राथपुत्रका वध । २५८
४७ अभिमन्युके हाथसे बृहद्बलका वध । २६२
४८ कर्णादिके द्वारा अभिमन्युको धनुर्वाण तथा रथहीन करना । २६६
४९ दुःशासनके पुत्रके हाथसे अभिमन्युका माराजाना । २७२
५० तृतीय दिनका युद्धसमाप्त और समरभूमि वर्णन । २७७
५१ युधिष्ठिरका विलाप । २८०
५२ युधिष्ठिरके समीप कृष्णद्वैपायन मुनिका आगमन और उन्हें उपदेश करना । २८३
नारद और राजा अकम्पन का उपाख्यान । २८६

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मा और महादेवकी वार्तालाप। २८८
५३ मृत्यु तथा ब्रह्माकी कथा। २९०
५४ मृत्यु ब्रह्मदेवका संवाद। २९३
५५ राजा सृञ्जय नारद और पर्वत ऋषिकी कथा। ३०२
राजा सृञ्जयका पुत्रशोक छुडानेके निमित्त नारदमुनिके द्वारा षोडशराजकीय वृत्तांत कथन, मरुत्त की कथा। ३०७
५६ राजा सुहोत्रकी कथा। ३०९
५७ राजा पौरवकी कथा। ३११
५८ राजा शिबिकी कथा। ३१२
५९ दाशरथि रामकी कथा। ३१५
६० राजा भगीरथकी कथा। ३१८
६१ राजा दिलीपकी कथा। ३२१
६२ राजा मान्धाताकी कथा। ३२३
६३ राजा ययातिकी कथा। ३२६
६४ राजा अम्बरीषकी कथा। ३२७
६५ राजा शशबिन्दुकी कथा। ३३०
६६ राजा गयकी कथा। ३३२
६७ राजा रन्तिदेवकी कथा। ३३५
६८ राजा भरतकी कथा। ३३८
६९ राजा पृथुकी कथा। ३४०
७० जामदग्न्य रामकी कथा। ३४५
७१ संजयके पुत्रका पुनः संजीवन। ३४८
युधिष्ठिरका शोक छुडाके व्यास देवका अन्तर्धान होना। ३५२

४ प्रतिज्ञा पर्व।

७२ अशगुन देखके अर्जुनका शंकित होना। ३५३
कृष्णका अर्जुनको धीरज देना। कृष्णार्जुनका डेरे पर जाना और स्वजनोंको दुःखी देखना। ३५४
अर्जुनका अभिमन्युको न देख कर विलाप। ३५५
कृष्णका अर्जुनको धीरज देना। ३६२
७३ युधिष्ठिरके द्वारा अर्जुनके समीप अभिमन्यु वधवृत्तान्तका वर्णन ३६५
जयद्रथको मारनेके विषयमें अर्जुनकी प्रतिज्ञा। ३६८
७४ अर्जुनकी प्रतिज्ञा सुनके जयद्रथका भयभीत होना, तथा दुर्योधन और द्रोणाचार्यका वचन सुनके निर्भय होना। ३७३
७५ श्रीकृष्णका वचन। ३७७
७६ अर्जुनका वचन। ३८२
७७ उत्पातदर्शन और अर्जुन के कहनेसे कृष्णका सुभद्राको धीरज देना। ३८६
७८ सुभद्राका विलाप। ३८९
७९ पाण्डवोंकी सेनामें अर्जुन की प्रतिज्ञा पूरी होनेके विषयमें सब लोगोंका चिन्तित होना और कृष्णका अपना रथ सज्जित करनेके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये दारुकको आज्ञा देना। ३९६
८० अर्जुनका सपना देखना, सपनेमें महादेवकी प्रसन्नता। ४०२
८१ अर्जुनको महादेवसे पाशुपताप्रास्त्राप्ति। ४१०
८२ चौथे दिन निद्रासे सावधान होकर युधिष्ठिरका स्नानादि कार्य करना और युधिष्ठिर के समीप श्रीकृष्णका आना। ४१४
८३ युधिष्ठिरका कृष्णको धीरज देना। ४१९
८४ युधिष्ठिरके निकट अर्जुन का आना और सपनेका वृत्तान्त निवेदन करना, तथा अर्जुन और अन्य सब योद्धाओंका युद्धके लिये सज्जित होना। ४२३
राजा युधिष्ठिरकी रक्षाके लिये अर्जुनका सात्यकिको आज्ञा करना। ४२७

९ जयद्रथवधपर्व।

८५धृतराष्ट्रका सञ्जयके समीप युद्धवृत्तान्त पूछना तथा विलाप। ४२८
८६ धृतराष्ट्रके विषयमें सञ्जयका आक्षेप ४३५
८७ चौथे दिन सवेरे जयद्रथके विषयमें द्रोणाचार्यका उपदेश और चक्रशकटव्यूह बनाना। ४३९
८८ अर्जुनका युद्ध करनेके लिये जाना और उत्तम शकुन देखना तथा कौरवोंकी ओर अशकुन देखना। ४४३
८९ अर्जुनका कौरवोंके साथ युद्ध करना। ४४७
९० दुःशासनकी सेनाका पराभव ४५२
९१ द्रोणाचार्यके सङ्ग अर्जुन का युद्ध और कौशल क्रमसे द्रोणाचार्यको अतिक्रम करके अर्जुनका जयद्रथकी ओर जाना ४५७
९२ अर्जुनका युद्धमें कृतवर्मा को पराजित करके काम्बोज सेनाकी ओर जाना और उनके दोनों पृष्ठरक्षकों का कृतवर्माके द्वारा निवारित होना तथा श्रुतायुध और सुदक्षिणका वध। ४६३
९३ अर्जुनका पराक्रम, अम्बष्ठ का वध। ४७३
९४ दुर्योधन और द्रोणाचार्यकी वार्तालाप। ४८३
द्रोणाचार्यका दुर्योधनको अभेद कवच पहना कर युद्ध करने के लिये अर्जुन के निकट भेजना। ४८८
९५ संकुल युद्ध। ४९४
९६ व्यूहके द्वारपर दोनों ओरकी सेनाका द्वन्द्वयुद्ध। ५०१
९७ धृष्टद्युम्न तथा उनकी रक्षा के लिये आये हुए सात्यकि प्रभृतिके सङ्ग द्रोणाचार्य का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमुल युद्ध। ५०५
९८ द्रोण और सात्यकिका युद्ध। ५१०
९९ अर्जुनके हाथसे युद्धमें विन्द और अनुविन्दका मारा जाना तथा उनकी बहुतसी सेनाका विनाश। ५१८
अर्जुनका अस्त्रप्रभावसे रणभूमिमें तालाव बनाना। ५२५
१०० अर्जुनके बनाये हुए तालावमें कृष्णका घोडोंको नहलाना, तथा जल पिलाना और भूमिपर खडे हुए अर्जुनके सङ्ग रथमें बैठे हुए कौरवोंका युद्ध। ५२६
अर्जुनका रथपर चढके जयद्रथकी ओर जाना और कौरवोंका विस्मित होना। ५२९
१०१ चलतेहुए कृष्णार्जुनकी वार्तालाप और जयद्रथको दूरसे देखना। ५३२
द्रोणाचार्यके द्वारा अभेद कवच पहन कर दुर्योधनका अर्जुनके निकट जाके युद्ध करना। ५३७
१०२ कृष्ण और अर्जुनकी वार्तालाप। ५३८
१०३ दुर्योधनका पराजय। ५४३
१०४ जयद्रथकी रक्षा करनेवाले महारथ वीरोंके संग अर्जुनका युद्ध। ५५०
१०५ दोनों ओरके रथियोंकी रथध्वजा विवरण। ५५४
१०६ व्यूहके द्वारपर द्रोणाचार्यके पराक्रमसे युधिष्ठिर का भागना। ५६०
१०७ व्यूहके द्वारपर दोनों सेनाका द्वैरथ युद्ध और क्षेमधूर्त्ति प्रभृतिका माराजाना। ५६६
१०८ द्रौपदी पुत्रोंके हाथसे सोमदत्त पुत्रका माराजाना और भीमसेन के सङ्ग युद्धमें अलम्बुष का पराजित होकर भागना। ५७१
१०९ घटोत्कचके सङ्ग अलम्बुषका युद्ध और अलम्बुषका वध। ५७६
११० द्रोणाचार्यके सङ्ग सात्यकि आदि पाण्डवपक्षीय वीरोंका युद्ध। ५८१
युधिष्ठिरका सात्यकिकी प्रशंसा करके अर्जुनके समीप जानेके लिये आज्ञा देना। ५८७
१११ युधिष्ठिर और सात्यकिका संवाद। ५९५
११२ युधिष्ठिरकी आज्ञासे सात्यकि का अर्जुनकी ओर जाना। ६०२
११३ द्रोणाचार्यके सङ्ग सात्यकि का युद्ध और कौशलक्रमसे द्रोणाचार्यको अतिक्रम करके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे बढना। ६१३
सात्यकिके सङ्ग कृतवर्माका युद्ध और कृतवर्माको पराजित करके सात्यकिका काम्बोज सेनामें प्रवेश करना। ६१९
११४ धृतराष्ट्रका आक्षेप। ६२२
सञ्जयके द्वारा धृतराष्ट्रके पहले असावधानीसे किये कर्मोंका फल वर्णन। ६२८
भीमादिके सङ्ग युद्धमें कृतवर्मा का विजय। ६३०
११५ सात्यकिके सङ्ग युद्धमें कृतवर्माका पराजय। ६३५
सात्यकिके सङ्ग युद्धमें जलसन्धका माराजाना। ६३९
११६ सात्यकिके सङ्ग युद्धमें दुर्योधन का पराभव। ६४४
सात्यकिके सङ्ग युद्धमें कृतवर्मा का पराजय। ६४७
११७ द्रोणाचार्यका निवारण। ६४९
११८ सात्यकिके सङ्ग युद्धमें सुदर्शनका मारा जाना। ६५४
११९ सारथीसे सात्यकिकी वार्तालाप ६५७
सात्यकिका यवन तथा काम्बोज सेनामें प्रवेश। ६६२
१२० दुर्योधनका अपमान। ६६५
१२१ सात्यकिके सङ्ग युद्धमें दुःशासन प्रभृतिकी पराजय। ६७१
१२२ द्रोणाचार्य द्वारा दुःशासनका उपहास। ६७९
दुःशासनका फिर सात्यकिके निकट जाना। ६८२
व्यूहके द्वारपर द्रोणाचार्यके संग पाण्डवसेनाके वीरोंका युद्ध और वीरकेतु प्रभृतिका मारा जाना। ६८३
१२३ सात्यकिके संग युद्धमें दुःशासन की पराजय। ६८८
१२४ व्यूहके द्वारपर दोनों ओरकी सेनाका युद्ध।
दुर्योधनका पराक्रम। ६९६
दुर्योधन और युधिष्ठिरका युद्ध। ६९८
१२५ द्रोणाचार्य के हाथसे बृहत्क्षत्र प्रभृति का मारा जाना। ७०१
१२६ युधिष्ठिरकी चिन्ता, सात्यकि की सहायताको जानेके लिये भीमसेनके विषयमें युधिष्ठिरकी आज्ञा। ७११
१२७ भीमसेनका कौरवोंकी सेनामें प्रवेश। ७१८
भीमसेनका द्रोणाचार्यको पराजित करके व्यूहके बीच प्रवेश। ७२४
भीमके हाथसे दुर्योधनके नव भाईयोंका मारा जाना। ७२५
१२८ द्रोणाचार्यका फिर भीमसेनको निवारण करनेके लिये बाण वर्षाना, फिर द्रोणाचार्यको पराजित करना और भोजसेना-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अतिक्रम करके भीमसेन का अर्जुनको देखके सिंहनाद करना और युधिष्ठिरका हर्ष। ७२७

१२९ भीमसेन और कर्णका संग्राम तथा कर्णकी पराजय। ७३५

१३० द्रोणाचार्यके सङ्ग दुर्योधन का वार्तालाप। ७४०

दुर्योधन के सङ्ग अर्जुन के पृष्ठरक्षक युधामन्यु और उत्तमौजाका युद्ध तथा उनकी पराजय। ७४४

१३१ कर्णका भीमसेनके सङ्ग दूसरी बार युद्ध करना और कर्ण की पराजय। ७४६

१३२ भीमके संग तीसरी बार कर्ण का संग्राम और पराजय। ७५४

१३३ भीमके हाथसे दुर्जयका मारा जाना और भीमके संग चौथी बार युद्धमें कर्णकी पराजय। ७५९

१३४ भीमके हाथसे दुर्मुखका मारा जाना तथा भीमके साथ युद्धमें कर्णकी पांचवी बार पराजय। ७६५

१३५ धृतराष्ट्रका आक्षेप। ७७०

धृतराष्ट्रके विषयमें सञ्जयके वचन। ७७३

भीमके साथ युद्ध करके दुर्मर्षण प्रभृति पांच भाइयोंका मारा जाना। ७७४

१३६ भीमके साथ युद्धमें छठीं बार कर्णकी पराजय और चित्र प्रभृति दुर्योधनके भाइयोंका मारा जाना। ७७५

१३७ भीमके साथ कर्णका युद्ध और शत्रुंजय प्रभृति दुर्योधनके सात भाइयोंका मारा जाना। ७८१

भीमसेनका सिंहनाद सुनके युधिष्ठिरकी प्रसन्नता और दुर्योधनका चिन्तायुक्त होना। ७८५

१३८ कर्णका भीमसेनके साथ युद्ध। ७८८

१३९ कर्णके साथ भीमसेन का युद्ध और भीमसेनका पराजित होना। ७९२

कर्णके द्वारा भीमसेन का युद्धभूमिमें तिरस्कृत होना। ८०४

अर्जुनके अस्त्र प्रभावसे कर्णका भीमसेनके समीप से पृथक् होना। ८०७

१४० धृतराष्ट्रका आक्षेप और सात्यकिके साथ युद्धमें अलम्बुष का मारा जाना। ८०८

१४१ सात्यकिका दुःशासन प्रभृति धृतराष्ट्रके पुत्रों तथा बहुतसी सेनाको पराजित करके कृष्णार्जुनको देखना और सात्यकि के विषयमें कृष्णार्जुन की वार्तालाप, अर्जुनकी चिन्ता। ८१२

१४२ सात्यकिके संग भूरिश्रवाका युद्ध और सात्यकिको भूमि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर गिराके लात मारना। ८१७
कृष्णकी आज्ञासे अर्जुनका अस्त्रसे भूरिश्रवाकी भुजा काटना। ८२५
१४३ भूरिश्रवाके द्वारा अर्जुन और वृष्णिवंशकी निन्दा। ८२७
भूरिश्रवाकी निन्दा सुनके अर्जुनका प्रत्युत्तर। ८२९
सात्यकिके हाथसे योगयुक्त भूरिश्रवाका सिर काटा जाना। ८३४
१४४ भूरिश्रवाका सात्यकिको पटकके लातसे मारनेका कारण वर्णन। ८३७
वृष्णिकुलकी प्रशंसा। ८४०
१४५ अर्जुनका जयद्रथ वधके निमित्त यत्न करना और कर्णके सङ्ग दुर्योधन की वार्तालाप। ८४१
दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य और जयद्रथके सङ्ग अर्जुनका युद्ध। ८४७
१४६ तुमुल युद्ध, जयद्रथके वधविषय में अर्जुन के समीप कृष्णकी उक्ति तथा योगमायासे सूर्यको छिपाना और जयद्रथकी रक्षा करनेवाले योद्धाओंके समीप अर्जुनका पराक्रम प्रकाशित करना। ८५५
कृष्णके उपदेशके अनुसार अर्जुनका जयद्रथके सिरको काटके समन्तपञ्चकमें उनके पिताकी गोदीमें फेंकना। ८६९
१४७ कृपाचार्य और अश्वत्थामाके सङ्ग अर्जुनका युद्ध और कृपाचार्यको बाणोंकी चोटसे मूर्छित देखकर अर्जुनका विलाप। ८७४
कृष्णके रथपर चढके सात्यकिका कर्णके सङ्ग युद्ध करना। ८८०
१४८ भीमसेनकी बात सुनके अर्जुन का कर्णके विषयमें तिरस्कारयुक्त वचन और वार्तालाप। ८८६
कृष्णका अर्जुनसे रणभूमि दिखाना। ८९१
१४९ कृष्णार्जुनका युधिष्ठिरके समीप जाना, जयद्रथवध वृत्तान्त सुनके युधिष्ठिरका हर्षित होना और कृष्णप्रभृतिके सङ्ग वार्तालाप। ८९५
१५० दुर्योधनका विषाद और द्रोणाचार्य के सङ्ग दुर्योधनकी वार्तालाप। ९०३
१५१ द्रोणाचार्यका वचन। ९०९
१५२ दुर्योधन और कर्णकी वार्तालाप, पुनः युद्धारंभ। ९१४
६ घटोत्कचवधपर्व।
१५३ प्रदोषके समय दोनों ओरकी सेनाका घोर संग्राम और युधिष्ठिरसे युद्धमें दुर्योधनकी पराजय। ९२०
१५४ रात्रिके समय युद्ध। ९२६

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५५द्रोणाचार्यसे युद्ध करके धृष्टद्युम्नके पुत्रों, केकयगणों तथा शिबिराजका मारा जाना । ९३२
भीमसेनके हाथसे कलिङ्गराज प्रभृतिका मारा जाना । ९३५
भीमसेनके हाथसे दुर्योधनके दुर्मद और दुष्कर्ण नामक दो भाइयोंका मारा जाना । ९३७
१५६ सोमदत्तका वचन । ९३९
सात्यकिका वचन । ९४०
सात्यकिके साथ युद्धमें सोमदत्तका मूर्छित होना, और सारथिके द्वारा रणभूमिसे अपयान । ९४२
द्रोणाचार्यका पराक्रमवर्णन । ९४५
घटोत्कच का युद्ध भूमिमें गमन तथा उसके रथका वर्णन । ९४७
अश्वत्थामाके हाथसे घटोत्कचपुत्र अंजनपर्वाका वध । ९५०
अश्वत्थामासे घटोत्कचका तुमुल संग्राम और घटोत्कचकी पराजय । ९५७
अश्वत्थामाके हाथसे सुरथ आदि द्रुपदपुत्रोंका मारा जाना । ९६४
१५७ सात्यकि तथा भीमसेनके सङ्ग सोमदत्त और बाल्हिकका युद्ध, सोमदत्तका मूर्छित होना और बाल्हिकका वध । ९६६
भीमसेनके हाथसे नागदत्त आदि दुर्योधनके दस भाइयोंका मारा जाना । ९६८
भीमसेनके हाथसे कर्णके भाई वृकरथ, तथा शकुनिके शतचन्द्र और गवाक्ष आदि सात भाइयों का मारा जाना । ९६९
युधिष्ठिर और द्रोणाचार्यका युद्ध । ९७०
१५८ दुर्योधनके समीप कर्णके अभिमान युक्त वचन । ९७२
कर्ण और कृपाचार्यका विवाद । ९७४
१५९ अश्वत्थामा और कर्णका विवाद तथा दुर्योधनके द्वारा दोनोंका शान्त होना । ९८२
पाण्डवोंकी सेनाका कर्णसे युद्ध । ९८५
कर्णका पराक्रम और कर्णका पराभव । ९८७
दुर्योधनका सन्ताप और अर्जुनकी ओर युद्धके लिये जाना । ९९१
कृपाचार्य और अश्वत्थामाकी वार्तालाप, तथा अश्वत्थामाके सङ्ग दुर्योधनकी वार्तालाप । ९९२
१६० धृष्टद्युम्नादि के सङ्ग युद्धमें अश्वत्थामा का पराक्रम प्रकाशित करना । ९९६
१६१ दोनों पक्षकी सेनाका संकुल युद्ध । १००५
१६२ सात्यकिके सङ्ग युद्ध करके सोमदत्तका मारा जाना । १००७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोणाचार्यके साथ युधिष्ठिरका युद्ध और श्रीकृष्णकी संमतिसे युधिष्ठिरका दुर्योधनकी ओर जाना तथा भीमसेनकी पृष्ठरक्षा करना । १०१२

१६३ दोनों ओरकी सेनामें दीपक जलाके युद्धारम्भ । १०१४

१६४दोनों सेनाकी रथियोंका द्वैरथ युद्ध । १०२०

१६५ कृतवर्मासे युद्ध करके युधिष्ठिरका पराजित होना । १०२६

१६६सात्यकिके हाथसे युद्धमें भूरिका मारा जाना । १०३१

अश्वत्थामाके सङ्ग युद्ध करके घटोत्कच का पराभव । १०३३

भीमसेनसे युद्ध करके दुर्योधन की पराजय । १०३७

१६७ कर्णसे युद्ध करके सहदेव का पराजय । १०४०

मद्रराज शल्यके संग विराटका युद्ध, विराटके भाई शतानीकका वध तथा अलम्बुषका पराभव । १०४३

१६८ नकुल पुत्र शतानीक और चित्रसेनका युद्ध । १०४६

कर्णपुत्र वृषसेन और द्रुपद का युद्ध । १०४९

युधिष्ठिरपुत्र प्रतिविन्ध्य और दुःशासनका युद्ध । १०५१

१६९ नकुलके संग युद्धमें शकुनिकी पराजय । १०५३

शिखण्डी और कृपाचार्यका युद्ध, तथा संकुल युद्ध । १०५५

१७० धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रुमसेन का वध और दुर्योधनसे कर्णकी सलाह । १०५९

१७१ सात्यकिका पराक्रम । १०६९

अर्जुनका पराक्रम । १०७२

१७२ दुर्योधन के वचन के अनुसार द्रोणाचार्य और कर्ण का अत्यन्त पराक्रम प्रकाशित करना । १०७६

१७३ कर्णका पराक्रम देखके युधिष्ठिर कृष्ण और कर्णकी वार्तालाप । १०८२

कृष्णार्जुनका कर्णको मारनेके लिये घटोत्कचको आज्ञा देना । १०८८

१७४ घटोत्कचसे युद्ध करके अलंबुष का मारा जाना । १०९२

१७५ घटोत्कच का वर्णन, कर्णके सङ्ग घटोत्कचका युद्ध । १०९८

१७६ अलायुध राक्षसका युद्ध के लिके आगमन । १११४

१७७ अलायुध राक्षसका घटोत्कच और भीमसेन से युद्ध । १११७

१७८ घटोत्कच के हाथसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलायुध का मारा जाना। ११२३
१७९ कर्णके सङ्ग घटोत्कच का भयङ्कर युद्ध। ११२९
कर्णका इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्ति से घटोत्कचको मारना। ११३७
१८० घटोत्कचके मरनेसे पाण्डवों का दुःखित तथा कृष्ण-का हर्षित होना और अर्जुनके पूछनेपर हर्षका हेतु वर्णन। ११३९
१८१ श्रीकृष्णका भाषण। ११४४
१८२ धृतराष्ट्रका प्रश्न सुनके सञ्जयका इन्द्रकी दीहुई अमोघशक्तिको कर्णका कृष्णार्जुन के ऊपर न चलानेका कारण वर्णन तथा श्रीकृष्ण वचन कथन। ११४९
१८३ धृतराष्ट्र और संजयकी वार्तालाप। ११५६
घटोत्कचके मरनेसे युधिष्ठिरका विलाप और कृष्णसे युधिष्ठिरकी वार्तालाप। ११५९
युधिष्ठिरका कर्णवधके निमित्त युद्धभूमिमें स्वयं जाना और व्यासदेवके वचन सुन कर धीरज धरके निवृत्त होना। ११६४

७ द्रोणवधपर्व।

१८४ युद्धभूमि में दोनों ओर के योद्धाओं का निद्रित होना। ११६६
१८५ दुर्योधन और द्रोणाचार्यकी वार्तालाप और कुरुसेनाका दोभाग करना। ११७४
१८६ पाण्डवोंकी सेना दो भागमें विभक्त होनी और दोनों ओरकी सेनाका युद्ध। ११७९
द्रोणाचार्यके हाथसे विराट और द्रुपदका मारा जाना। ११८५
१८७ दोनों ओरकी सेनाका संकुल युद्ध और नकुलके संग युद्धमें दुर्योधनकी पराजय। ११८८
१८८ सहदेव और दुःशासनका युद्ध, भीमसेन और कर्णका युद्ध, तथा द्रोणाचार्यके संग अर्जुन का तुमुल युद्ध। ११९६
१८९ दोनों ओरकी सेनाका संकुल युद्ध, तथा दुर्योधन और सात्यकिका युद्ध। १२०३
१९० द्रोणवध विषयमें कृष्णका प्रस्ताव और उपाय प्रदर्शित करना, द्रोणाचार्यके विषय में ऋषियोंका उपदेश। १२१३
युधिष्ठिरके मुखसे अपने पुत्र के मरनेका वृत्तान्त सुनके द्रोणाचार्यका प्राण त्यागनेका निश्चय करना। १२२०
१९१ दोनों ओरसे तुमुल युद्ध होना तथा द्रोणाचार्यका पराक्रम प्रकाशित करना। १२२१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९२ द्रोणाचार्यका पराक्रम, भीमसेनके वचन सुनके द्रोणाचार्यका शस्त्र त्यागके योगयुक्त होना और धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्यका सिर काटा जाना। १२२९

८ नारायणास्त्रमोक्षपर्व।

१९३ कौरवसेनाका भागना और द्रोणाचार्यके वधका वृत्तान्त अश्वत्थामासे कथन करना। १२४०

१९४ धृतराष्ट्रका संजयके समीप पितृवधसे क्रुद्ध हुए अश्वत्थामाके कार्यका वृत्तान्त पूछना। १२५०

१९५ अश्वत्थामाकी पांचाल सेनाको मारनेकी प्रतिज्ञा। १२५२

१९६ अश्वत्थामाका नारायणास्त्र चलाना, युधिष्ठिरका कौरवोंको फिर युद्ध करनेके लिये लौटते देखकर कारण पूछना, युधिष्ठिरसे अर्जुनके आक्षेपयुक्त वचन। १२५९

१९७ अर्जुनके विषयमें भीमसेनके आक्षेपयुक्त वचन, धृष्टद्युम्नका वचन। १२६७

१९८ धृष्टद्युम्न और सात्यकिका विवाद और श्रीकृष्णके द्वारा शान्त होना। १२७३

१९९ अश्वत्थामाका पराक्रम और नारायणास्त्रका प्रभाव। १२८३

भीमसेनका अर्जुनसे निवारित होनेपरही अश्वत्थामा की ओर युद्धके लिये जाना। १२८९

२०० कृष्णार्जुनकेद्वारा नारायणास्त्रसे भीमसेनका परित्राण। १२९२

पाण्डवोंकी सब सेनाके रणभूमिमें शस्त्रादि त्यागने पर नारायणास्त्रकी निवृत्ति। १२९४

धृष्टद्युम्न और सात्यकिके संग अश्वत्थामाका युद्ध। १२९७

अश्वत्थामाके निकट सात्यकिको पराजित होते देखकर अर्जुन का उस के निकट जाना। १३००

अश्वत्थामासे युद्ध करके भीमसेनका पराजित होना। १३०८

२०१ अर्जुनका अश्वत्थामासे युद्धके लिये आह्वान। १३१०

अश्वत्थामासे आग्नेयास्त्रका प्रयोग, अर्जुनसे प्रयुक्त ब्रह्मास्त्रसे आग्नेयास्त्रकी शान्ति। १३१३

अश्वत्थामाको वेदव्यास मुनिका दर्शन, अश्वत्थामा और वेदव्यास की वार्तालाप, नारायणका पूर्व वृत्त, नारायणकृत ईशस्तुति, नारायणको वर मिलना, अश्वत्थामाका पूर्ववृत्त, लिङ्गका माहात्म्यवर्णन और सैन्यावहार। १३१७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०२ अर्जुनके पूछनेसे व्यास देवसे रुद्रमाहात्म्यवर्णन, रुद्रस्तुति रुद्रमहिमा, दक्षयज्ञ विध्वंसकी कथा, त्रिपुर नाशकी कथा, रुद्रदेवके रथका वर्णन, इन्द्रका गर्व नाश, शतरुद्रियस्तोत्रकी फलश्रुति। १३२५

द्रोणाचार्यके पाठका फलवर्णन तथा द्रोणपर्वकी समाप्ति। १३४६

द्रोणपर्वकी विषयसूची। १३४७

द्रोणपर्वकी विषयसूची समाप्त।

आदितः श्लोकसंख्या—

१ आदिपर्व—८७०९

२ सभापर्व—२७६२

३ वनपर्व—११८९२

४ विराटपर्व—२२६२

५ उद्योगपर्व—६५९०

६ भीष्मपर्व—५८७०

७ द्रोणपर्व—९६४२

सर्वयोगः—४७७२७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक यज्ञ संस्था।

प्रथम भाग। मूल्य १) रु. डा. व्य.।)

इस पुस्तक में निम्न लिखित विषयों का विचार हुआ है।

प्राचीन संस्कृत निबंध।

१-३ पिष्ट-पशुमीमांसा। लघु-पुरोडाश-मीमांसा।

भाषाके लेख (ले०-श्री० पं० बुद्धदेवजी)

४ दर्श और पौर्णमास, ५ अद्भुत कुमार संभव। (ले०-श्री० पं० चंद्रमणिजी) ६ बुद्धके यज्ञ विषयक विचार। (संपादकीय) ७ यज्ञका महत्त्व, ८ यज्ञका क्षेत्र, ९ यज्ञका गूढ तत्त्व, १० औषधियोंका महामख, (ले० श्री० पं० धर्मदेवजी) ११ वैदिक यज्ञ और पशु-हिंसा। (ले० श्री० पं० पुरुषोत्तम लालजी) १२ क्या वेदोंमें यज्ञों में पशुओंका बलि करना लिखा है?

वैदिक यज्ञ संस्था द्वितीय भाग। मूल्य १) रु. डा. व्य।)

इस द्वितीय भागमें निम्न लिखित विषयोंका विचार हुआ है- (ले०-श्री. पं. देवशर्माजी विद्यालंकार)

भारतवर्षमें यज्ञकी कमी, यज्ञकी महिमा, यज्ञसे जो चाहे सो प्राप्त कर लो, यज्ञपुरुष का वर्णन, हवन प्रक्रिया, यज्ञशेष और उच्छेष, राजसूय, विश्वजित्, अश्वमेध, गोमेध, सर्वमेध, वाजपेय, पंचमहायज्ञ, यज्ञ संसारकी नाभि है।

पं. बुद्धदेवजी लिखित-संज्ञपन और अवदान।

संपादकीय-नरमेध का वैदिक तात्पर्य।

इतने विषयोंका विचार इस पुस्तक में हुआ है। प्रत्येक विषयके प्रतिपादनके लिये वेदके अनेक प्रमाण दिये हैं और विषयका प्रतिपादन अति सुगम है। मूल्य १) डा. व्य.।)

वैदिक यज्ञ संस्था तृतीय भाग गोमेध।

इस पुस्तकमें निम्न लिखित विषयोंका विचार हुआ है—

योगमें गोमांस, प्रकरणानुकूल अर्थ विचार, ऋषिपंचमी, वेदका महासिद्धान्त, यज्ञकी पूर्व और उत्तरवेदी, मधुपर्क, कलिवर्ज्यप्रकरण, बृहदारण्यक का वचन, गौका वैदिक नाम, गोमेधका विचार, चरक की साक्षी, विवाहमें गोमांस, अतिथिके लिये गौ, यज्ञमें मांस, अन्त्य यज्ञ, वेदमें अहिंसा, अवध्य गौ और बैल, यज्ञका तत्त्व, गौको खाना। गौ दान लेने का अधिकारी, रक्षक और पाचक गौका महत्त्व, राष्ट्ररक्षक गौ, गौके लिये सोमरस, सबकी माता गौ।

इत्यादि अनेक विषय इसमें आगये हैं। हरएक विषयका प्रतिपादन करनेके लिये अनेक वेदमंत्रोंके प्रमाण दिये हैं। जो कहते हैं कि 'वैदिक समयमें गोमांस भक्षण की प्रथा थी," उनके लिये यह उत्तम उत्तर है। यह पुस्तक पढनेके पश्चात् उक्त विषयमें कोई शंका नहीं रहेगी।

मूल्य१) रु. डा व्य०।)

मुद्रक तथा प्रकाशक— श्री० दा० सातवलेकर, भारतमुद्रणालय, औंध, (जि० सातारा)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Acc. 47716

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar